राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६६

क्रमांक ..२३३५....

गजगुणरूपक-बन्ध

सम्पादक
श्री सीताराम लालस
सम्पादक
राजस्थानी सबद कोस

प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR
१९६८ ई०

प्रथमावृत्ति १०००

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ९९

गजगुणरूपक-बन्ध

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान - सम्पादकीय

श्री सीतारामजी लालस द्वारा सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ का मुद्रण सन् १९६५ में प्रारंभ हो गया था, परन्तु संभवत इस ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण बनाने की लालसा से निरन्तर नये परिशिष्टों को जोड़ने का कार्य चलता रहा और साथ ही हमारे विद्वान् सम्पादक को 'राजस्थानी सबद कोस' के विराट् प्रयत्न में भी लगा रहना पड़ा; इसीलिये ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब हो गया है।

कवि केशवदास के इतिहास-प्रसिद्ध चरित-नायक महाराजा गजसिंह उन अमर वीरों में से एक जगमगाते रत्न हैं जिनके अलौकिक शौर्य पर भारत माता गर्व कर सकती है। परन्तु इन वीरों के शौर्य का लाभ भारत भूमि को न मिल कर दूसरों को मिला यह जान कर विहारी के दोहे के उस बाज की याद आती है जो दूसरों के लिये ही अपनों का संहार करता रहा। फिर भी महाराजा गजसिंह पर लिखित यह प्रशस्ति-काव्य उनके अनुपम वीरता का अत्यन्त हृदय-ग्राही चित्रण करने के कारण हमारे सैनिकों के लिये स्फूर्ति और प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

अपने वर्तमान रूप में यह ग्रन्थ केवल 'गजगुणरूपक-बन्ध' काव्य ही नहीं है, अपितु इसके चार बहुमूल्य परिशिष्टों में उन अनेक वीरों की अमर प्रशस्तियाँ भी हैं जिनका उल्लेख गजगुणरूपक-बन्ध में हुआ है। ये प्रशस्तियाँ राजस्थानी-साहित्य की अमरनिधि है जो सहस्रों की संख्या में हमारे प्रतिष्ठान में तथा अन्यत्र संगृहीत हुई हैं और जिन में से कुछ का प्रकाशन श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के सम्पादन में पृथक् रूप से हमारे द्वारा हो रहा है। यदि सम्पादक महोदय के शब्दों में 'इन गीतों ने इतिहास की उन महान् विभूतियों की स्मृति को अपने अंचल में आश्रय देकर जीवित रखा है जिनको कि इतिहास तक ने भुला दिया। स्यात् ही ऐसा कोई वीर योद्धा इन गीतों द्वारा प्रशंसित तथा सम्मानित होने से बचा हो।' इन गीतों का सम्पादन करते हुए प्रत्येक गीत के साथ विस्तृत शब्दार्थ तथा बहुमूल्य टिप्पणियां दी गई हैं और गीतों को सुबोध बनाने का स्तुत्य प्रयास किया गया है।

गजगुणरूपक-बन्ध नामक मुख्य ग्रन्थ का सम्पादन चार प्रतियों के आधार पर किया गया है और पाद-टिप्पणी में विस्तारपूर्वक पाठान्तर दिये गये हैं। राजस्थानी सबद कोस के सुयोग्य निर्माता द्वारा निर्धारित पाठ निःसंदेह अत्यन्त प्रामाणिक होगा और विद्वत्समुदाय में प्रशंसा प्राप्त करेगा। ग्रन्थ के प्रारंभ में जो शोधपूर्ण भूमिका दी गई है, उसमें कवि के जीवन तथा ग्रन्थ-सम्बन्धो महत्त्व-पूर्ण विषयों का समावेश हो गया है। कवि के विषय में लिखते हुए सम्पादक महोदय ने कुछ नये तथ्यों के आधार पर अपने उस मत को भी बदल दिया है जो उन्होंने राजस्थानी सबद कोस की प्रस्तावना में पृ. १४२ पर कवि की जन्म-भूमि के विषय में व्यक्त किया था। उदयपुर की शोध-पत्रिका (वर्ष १८, अंक १) में श्री सौभाग्यसिंह शेखावत ने संभवतः सर्वप्रथम कवि के पिता सदमल की छत्री पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर कवि की जन्मभूमि छींडिया-नामक ग्राम में बतलाई थी, श्री लालसजी ने इस लेख के अतिरिक्त उस ताम्रपत्र का भी उल्लेख किया है जो जोधपुर के तत्कालीन महाराजा शूरसिंह ने सदमल को उक्त ग्राम प्रदान करते हुए जारी किया था। भूमिका और परिशिष्ट में और भी बहुत सी उपादेय सामग्री दी जा सकती थी, परन्तु ग्रन्थ का कलेवर बढ़ने के भय से तथा ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होने की आशंका से उसका देना संभव नहीं हो सका है।

ग्रन्थ के सुन्दर सम्पादन के लिये विद्वान् सम्पादक को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक भी ग्रन्थ के सुन्दर मुद्रण के लिये बधाई के पात्र हैं।

माघ शुक्लापूर्णिमा सं. २०२४ —फतहसिंह
जोधपुर

विषय - सूची

		पृष्ठांक
	भूमिका	१ - ६४
	मूल ग्रंथ	१ - २४३
१	पंचदेव मंगलाचरणम्	१
२	पूरववंस वरणण	२
३	राव सीहा री द्वारका जात्रा ग्रौर लाखा फूलांणी नैं मारणो	३
४	राव सीहा रा पुत्रां री वरणण-गजसिंघ तक माड़वाड़ रा राठौड़ राजाग्रां री वंसावली	३ - ४
५	महाराजकुमार गजसिंघ री जन्म	४
६	महाराजकुमार गजसिंघ री वरणण	५ - १०
७	सवाई महाराजा सूरसिंघ तथा महाराजकुमार गजसिंघ री वरणण	१०
८	राज्यवैभवादि वरणण	११ - १४
९	महाराजकुमार गजसिंघ री बड़ा महाराजा री ग्रनुपस्थिति में राज्य भार सम्हालणी	१५
१०	महाराजा सवाई सूरसिंघ री दक्षिण में गमन	१५
११	महाराजकुमार गजसिंघ री नाडूल पर ग्रधिकार करणो	१६ - १८
१२	महारांणा री पराजय	१८
१३	महाराजकुमार गजसिंघ री सिरोही पर ग्राक्रमण	१८ - १९
१४	महाराजकुमार री सिरोही पर विजय	१९
१५	बादशाह जहांगीर री ग्रजमेर ग्रागमन ग्रौर राजा सूरसिंघ री बुलाणी	२० - २१
१६	सवाई राजा सूरसिंघ री विजय	२१
१७	सवाई राजा सूरसिंघ री महाराज कुमार गजसिंघ नैं पत्र लिखनैं बुलाणो	२१
१८	महाराजा सवाई सूरसिंघ री महारांणा नैं समझानैं बादशाह सूं सुलह कराणी	२१ - २२
१९	साहजादा खुरम री विजयी होनैं बादशाह रै पास महाराजकुमार करण री लेनैं ग्रजमेर में ग्रागमण	२२ - २३
२०	बादशाह जहांगीर री कुमार करणसिंघ री सनमान करणो	२३
२१	राठौड़ां री बढती सूं बादशाह री संकित होणी	२३ - २४
२२	बादशाह री किसनसिंघ नैं भड़काणी	२४
२३	महाराजकुमार गजसिंघ री किसनसिंघ नैं पडूतर	२५ - २६
२४	किसनसिंघ री ग्रापरी परजै सूं परामरस	२६ - २७

पृष्ठांक

२५	सांमातां री तैयारी	२७
२६	प्रभात री गोंइंद पर आक्रमण तथा गोंइंद री जुद्ध वरणण	२८ - २६
२७	महाराजा सवाईसिंघ री युद्धारथ तैयार होणो	२६
२८	महाराजकुमार गजसिंघ री आगमण और जुद्ध वरणण	२६ - ३०
२६	किसनसिंघ री साथियां सहित वीरगति प्राप्त होणो	३१ - ३२
३०	महाराजा सूरसिंघ री जोधपुर आगमण	३२ - ३३
३१	महाराजा सूरसिंघ री दखण में जाणो तथा महाराजकुमार गजसिंघ री सासण भार सम्हालणो	३३ - ३४
३२	बादशाह री जालोर रा सासक पहाड़ खां सूं नाराज होणो तथा जालोर री प्रदेश महाराजा सूरसिंघ नै मिलणो	३४
३३	महाराजकुमार गजसिंघ री जालोर विजय करण री तैयारी	३५ - ३६
३४	सामंतां री और सेना री वरणण	३६ - ४२
३५	महाराजकुमार गजसिंघ री वरणण	४२
३६	जोधारां री नामावली तथा वरणण	४२ - ४५
३७	महाराजकुमार री स-सेना जालोर पहुंचणो	४६
३८	जुध और महाराजकुमार री विजय	४६ - ५०
३६	वीरगति प्राप्त खास खास पठांण जोधाम्रां री नामावली	५० - ५१
४०	जालोर विजय कर महाराजकुमार री जोधपुर पहुंचणो	५१ - ५३
४१	महाराजा सवाई सूरसिंघ री सुरगवास	५४ - ५५
४२	गजसिंघ री वरणण और राजतिलक	५५ - ६१
४३	दिल्ली-मण्डल में दरोल	६२
४४	महाराजा गजसिंघ री दखणाध में दरोल मेटण सारू गमन	६३ - ६५
४५	मलिक अंबर	६५ - ६६
४६	आकूत खां री बीड़ो उठांणो	६६
४७	सेना री वरणण और फौज री कूच	६६ - ६६
४८	दखणी सेना री वरणण	६६
४६	खांनखांना री महाराज गजसिंघ नै विनवाणी	६६
५०	महाराजा गजसिंघ री जोस में आणो	७० - ७४
५१	राठौड़ां री जुदी जुदी साखाम्रां री और भाटियां री साखाम्रां री नामावली	७३ - ७५
५२	दोनूं तरफां री सेना री वरणण	७५ - ७७
५३	महाराजा गजसिंघ री जुध और विजय	७७ - ८०
५४	पुन: अंबर री आक्रमण	८०
५५	बादशाही सेना में गजसिंघ री हरावल में होणो	८१ - ८२
५६	दखणी सेना री पराजय	८३ - ८७

पृष्ठांक

५७	दखणी सेना रो फेर आक्रमण महाराजा गजसिंघ रो विजय	८७ - ८६
५८	विजय प्राप्त कर महाराजा गजसिंघ रो बुरहानपुर में आगमन और बुरहानपुर पर घेरो	८६ - ६०
५६	खांनखांना रो महाराणा गजसिंघ नूं विरुदाणो	६० - ६१
६०	महाराजा गजसिंघ रो जोस में आणो	६१
६१	सेना रो जुध वरणण और गजसिंघ री विजय	६१ - ६२
६२	वीरगति प्राप्त प्रमुख वीरां री नामावली	६३
६३	बादशाह नूं खांन-खांन रो जुध री विजय रो पत्र। महाराजा गजसिंघ नैं दलथंभण रो पदवी मिलणी	६३ - ६४
६४	दखण में फेर बरोल साहजादा खुरम नै सेनापति बणाय भेजणो	६४
६५	बादशाह सूं खुरम री सेर खां री मांग करणी	६४
६६	दखणी दळ रो पलायन	६५ - ६७
६७	जुध में विजय प्राप्त, बादशाह रो खुस होणो, महाराजा गजसिंघ नूं पचहजारी रो पद तथा जालोर, सांचोर रा परगना मिलणा	६७
६८	सेना रो वरणण	६७ - ६६
६६	खिड़की गढध्वंस और ध्वस्त नगर रो वरणण	६६ - १०१
७०	दखणी बळ रो फ़ेर हल्लो	१०१
७१	सेना रो कूच, जुध और महाराजा गजसिंघ री विजय	१०१ - १०६
७२	खुरम रो मांडव आगमन	१०७ - १०६
७३	महाराजा गजसिंघ रो जोधपुर आगमन ओण सुवागत	१०८ - १०६
७४	महाराजा रो जोधपुर में निवास	११० - ११२
७५	खुरम रो विद्रोह	११२
७६	खुरम रा विद्रोही री खबर फैलणी	११२ - ११३
७७	बादशाह रो खुरम रै विरुध आदेस	११३ - ११४
७८	साही सेना रो कूच और सेना रो पड़ाव	११४ - १२१
७६	खुरम री सेना रो कूच	१२१ - १२४
८०	भीम सीसोदिया री सेना रो वरणण	१२४ - १२६
८१	सादूलसिंघ रो पलायन	१२६ - १२८
८२	खुरम री सेना रो दिल्ली री ओर कूच	१२८ - १२६
८३	फोज रो पड़ाव	१३० - १३२
८४	सीसोदिया भीम री तैयारी और जुध वरणण	१३२ - १४२
८५	कवि-वाच	१४२ - १४४
८६	बादशाह रो विचार में पड़णो	१४४ - १४५
८७	बादशाह रो महाराजा गजसिंघ नैं सहायता सारु बुलावणो	१४५ - १४६
८८	महाराजा गजसिंघ रा सामतां री सभा	१४६ - १५७

		पृष्ठांक
८९	कवि-वाच	१५७
९०	महाराजा गजसिंघ रो सामंतां रो और अंतेपुर रो वरणण	१५७ - १६४
९१	महाराजा गजसिंघ रै पुत्रां रो वरणण	१६६ - १६८
९२	महाराजा गजसिंघ रो दरबार में पधारणो जोसियां सू मूहरत पूछणो	१६८ - १६९
९३	इस्टदेव पूजा	१६९ - १७०
९४	महाराजा रो घुड़सवार होणो	१७० - १७१
९५	महाराजा गजसिंघ रा दळ रो वरणण और कूच	१७१ - १७६
९६	महाराजा रो बादशाह सूं मिळाप	१७६ - १७७
९७	महाराजा रो खुरम सूं जुध करण रो बीड़ो उठाणो	१७८ - १७९
९८	घोड़ा नै देसांस नांम	१७९ - १८३
९९	साही सेना रो कूच	१८३ - १८६
१००	अब्दुररहीम खानखांना रो कैंद होणो	१८६ - १८७
१०१	साहा दळ रो वरणण	१८७ - १९०
१०२	महाराजा गजसींघ रो चढाई करणी	१९० - १९१
१०३	खुरम रो भीम सीसोदिया नै बिरुदाणो	१९१ - १९३
१०४	भीम सीसोदिया रो वरणण	१९३ - १९५
१०५	खुरम रो वरणण	१९५ - २००
१०६	भीम रो हरोळ में होणो	२०० - २०५
१०७	साहजादा रो महाराजा गजसिंघ नै बिरुदाणो	२०५ - २०७
१०८	महाराजा गजसिंघ रो और सेना रो वरणण	२०७ - २१३
१०९	साही अमीरां रो नामावळी	२१३ - २१५
११०	जुधप्रिय देवां रो वरणण	२१५ - २१६
१११	जुध वरणण	२१६ - २१९
११२	भीम सीसोदिया रो जुध वरणण	२१९ - २२३
११३	भीम सीसोदिया अने गजसिंघ रो जुध	२२३ - २४३
	परिशिष्ट	
	१. जोधपुर राज-वंश के गीत	२४४ - ३०४
	२. अन्य राठोड़ वीरों के गीत	३०५ - ३३३
	३. सीसोदिया के गीत	३३४ - ३४०
	४. ग्रन्थ में वर्णित अन्य वीरों के गीत	३४१ - ३४४

भूमिका

ग्रन्थ-परिचय

राजस्थानी भाषा को समृद्ध बनाने वालों में केसोदास गाडण का प्रमुख स्थान है। तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के बीच राजस्थानी में वीर-काव्य-परम्परा में आपने भी अपने आश्रयदाता जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह के अद्भुत पराक्रम, रण-कौशल एवं गुण-गरिमा के चित्रण के लिए 'गज-गुण-रूपक-बन्ध' वीर-काव्य की रचना की। इसमें महाराजा गजसिंह द्वारा किये गये सभी युद्धों का (विशेष रूप से सम्राट् जहांगीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध संवत् १६८१ में हाजीपुर पाटन के पास टोंस नदी के किनारे उसके वीर सेनापति भीम सीसोदिया के साथ किए गए युद्ध का) सांगोपांग वर्णन है। वीररस-निरूपण में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। रण-सज्जा, फौज की चढ़ाई, सैनिकों का वर्णन, घोड़ों का वर्णन एवं योद्धाओं के पारस्परिक युद्ध का वर्णन विस्तृत एवं विविध स्थानों पर होने के कारण ग्रंथ का कलेवर अवश्य बढ़ गया है, परन्तु भाषा की प्रौढता एवं ओजस्विता के कारण यह वर्णन भार नहीं प्रतीत होता। युद्धों के अंगों एवं उपांगों का वर्णन करते हुए कवि ने तत्कालीन सामाजिक जीवन एवं राजनीतिक स्थितियों का भी चित्रण किया है और प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख होने से, यह ग्रंथ इतिहास के लिये भी महत्त्वपूर्ण हो गया है।

ग्रंथसार

ग्रंथारम्भ में पंचदेव—सरस्वती, गणेश, महादेव, विष्णु और सूर्य्य की वन्दना की गई है तथा राठौड़-वंश का सम्बन्ध रघुवंश से मान कर कवि ने राव सीहा के पुत्रों का वर्णन किया है। कन्नौज-नरेश जयचन्द राठौड़ के पौत्र राव सीहा के पुत्र—आसथान, अज और सोनग थे। आसथान ने मारवाड़ में खेड पर, अज ने शंखोद्धार (द्वारिका के निकट) पर तथा सोनग ने ईडर (गुजरात) पर अधिकार करके अपने-अपने राज्य स्थापित किए। इसका उल्लख करने के पश्चात् कवि ने महाराजा गजसिंह तक राठौड़ों की संक्षिप्त वंशावलि भी देदी है।

उक्त प्रस्तावना के पश्चात् कवि ने बलिष्ठ ग्रहों के योग में कुंअर गजसिंह के जन्म[1] का वर्णन किया है और साथ ही उनकी बाल्यकाल की सुन्दरता का

१—कुंअर गजसिंह की जन्म-तिथि—वि० सं० १६५२ (ई० सन् १५९५) कार्तिक शुक्ला ८ गुरुवार।

संकेत करते हुए, उनकी तरुणावस्था, पुरुषार्थ, दानवीरता, विद्वत्ता, संगीत-प्रियता आदि गुणों का उल्लेख किया है।

सवाई राजा शूरसिंह तथा कुंअर गजसिंह के राज्य-वैभव के भव्य वर्णन के साथ कवि ने राज-प्रसादों, बाजारों, तालाबों, उपवनों आदि का भी सुन्दर वर्णन किया हैं। तत्पश्चात् ग्रंथ में सवाई राजा शूरसिंह के, बादशाही राज्य के रक्षार्थ, दक्षिण में जाने[1] तथा उनकी अनुपस्थिति में उनके राज्य का कार्य-भार कुंअर गजसिंह द्वारा संभाले जाने का उल्लेख है।

शाही अफसर अब्दुल्ला खाँ के आग्रह पर महाराज-कुमार गजसिंह ने मेवाड़-राज्यान्तर्गत नाडोल-प्रान्त पर अधिकार करके उसकी रक्षा का कार्य-भार सम्हाला[2]। राजकुमार ने इस अवसर पर नाडोल, जोजावर, चांमळोद (चाणोद) खोड, सादड़ी, कुम्भलमेर आदि में विजय प्राप्त कर सोलंको, बालेसा, सींधल, सीसोदिया आदि राजपूतों का दमन किया।

महाराणा अमरसिंह के पुत्र राजकुमार कर्णसिंह ने अपने साथियों सहित अहमदाबाद से ऊँटों पर शाही खजाने को लेकर आगरे जाने वाली व्यापारियों की एक कतार का मारवाड़ के गाँव दूनाड़े तक पीछा किया। दैवयोग से कतार पहले निकल गई और ये निराश होकर वापिस लौट रहे थे। इसकी खबर भाटी गोविंददास को लगी जो उस समय नाडोल के थाने पर था। उसने मालगढ़ और भाद्राजून के पास इनका सामना किया। कुछ समय तक लड़ाई हुई; दोनों ओर के कई योद्धा काम आये। अन्त में कुंअर कर्णसिंह को भागना पड़ा[3]।

१—तुजुक जहांगीरी (पृ० ७४, अनुवादक-ब्रजरत्नदास) में शूरसिंह का वि० सं० १६६५ (ई० सन् १६०८) में खानखाना अब्दुर्रहीम के साथ दक्षिण की तरफ जाना लिखा है। इसकी पुष्टि वीर-विनोद भाग २, पृ० २६६ तथा डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" खण्ड १, पृ० ३७१ में भी होती है।

२—तुजुक जहांगीरी, पृ० ७५ के अनुसार मेवाड़ के लिए वि० सं० १६६६ की आषाढ़ वदि ५ (ई० सन् १६०९ के जून में) को महाबत खां के स्थान पर अब्दुल्ला खां नियुक्त हुआ। इसी अब्दुल्ला खां ने उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन से सोजत छुड़ाकर इस शर्त पर राजकुमार गजसिंह को दे दिया कि वे नाडोल के थाने का प्रबन्ध करें। डॉ० ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७२ से भी इसकी पुष्टि होती है।

३—(अ) वीर विनोद; भाग २, पृ० २२६

(ब) पं० रामकर्ण आसोपा का "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० १३६

(स) पं० विश्वेश्वर नाथ रेऊ का "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० ११८

(द) डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७३,

"गोइंद पेखि जैसळगिरी, बाघ वीसमौ वीरवर।
रिणवार रांण "अमरेस" रा, कुरंगां जेम गया कुंअर"। (पृ० १८)

महाराज-कुमार ने पुराना (सिरोही के राव सुरतांण द्वारा रायसिंह को मारने का) बदला लेने के लिए सिरोही पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की[1]।

महाराणा अमरसिंह को अधीन करने के उद्देश्य से बादशाह जहांगीर स्वयं एक बड़ी सेना लेकर अजमेर आया[2]। महाराणा ने शाही सेना का बहादुरी से मुकाबिला किया। तब बादशाह ने फरमान भेज कर राजा शूरसिंह को मेवाड़-विजय करने के लिए बुलाया। शूरसिंह ने शाही फौज के साथ मिल कर मेवाड़ वालों को पहाड़ों में भगा दिया। इसी बीच राजा शूरसिंह के बुलाने पर राज-कुमार गजसिंह भी भाटी गोविंददास को लेकर उदयपुर पहुँच गये जिससे उसका बल और भी बढ़ गया। पिता ने राजकुमार गजसिंह को बादशाह से मिलाने के उद्देश्य से ही बुलाया था। महाराज ने महाराणा को संधि करने के लिए तैयार किया तथा संधि की बातें तय करवा कर गोगूंदे में शाहजादे खुर्रम व महाराणा को मिलाया। तत्पश्चात् महाराणा के ज्येष्ठ पुत्र राजकुमार कर्ण-सिंह को साथ लेकर शाहजादा खुर्रम बादशाह के पास अजमेर पहुँचा। बादशाह ने राजकुमार करणसिंह का यथोचित सत्कार किया[3]।

मेवाड़-विजय के उपरान्त बादशाह राठौड़ वीरों—महाराजा शूरसिंह, राजकुमार गजसिंह, केहरि (राजा कृष्णसिंह जो महाराजा शूरसिंह के भ्राता, करमैत या कर्मसेन करन राजा कृष्णसिंह का भतीजा) और भाटी गोविंददास आदि की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई शक्ति से सशंकित हुआ। उसने उनको परस्पर लड़ाकर निर्बल करने का विचार किया और एक दिन, जब राजकुमार गजसिंह बादशाह के दरबार में मुजरा करने आये, तब बादशाह ने उनके सामने ही

१—दूसरे ग्रन्थों में यह घटना इस प्रकार मिलती है कि सिरोही के राव की ओर से ऐसा प्रस्ताव हुआ कि पुराने वैर को समाप्त कर दिया जाय—
(अ) पं० रामकर्ण आसोपा "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० ३३७
(ब) पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ का "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० १८९.

२—मेरे निजी संग्रह में संगृहीत ग्रथ (कवि हेम सांमोर कृत) "भाखा चरित्र" में बादशाह का उस समय ज्यारत के बहाने से अजमेर आना लिखा है—

३—डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७८, वीर विनोद भाग २, पृ० २३७, २३८;—

केहरि (कृष्णसिंह) को भाटी गोविन्ददास को मारने के लिए उकसाया। यह देख कर राजकुमार गजसिंह ने क्रोधित होकर कहा कि भाटी गोविन्ददास को मारने का प्रयत्न करने वाला स्वयं अपने काल को बुलायेगा। अंत में बहुत कहा-सुनी के बाद दोनों अपने-अपने निवास-स्थान को चले गये। तत्पश्चात् कृष्णसिंह ने एक दिन अपने सामन्तों से सलाह करके भतीजे करन तथा चुने हुए साथियों-सहित पिछली रात को गोविन्ददास के मकान पर आक्रमण कर किया। गोविन्ददास ने जाग कर शत्रुओं का मुकाबिला किया और कई योद्धाओं को मारकर स्वयं वीरगति को प्राप्त हुआ। पास के ही मकान में सोये हुए महाराजा शूरसिंह भी हल्ला सुन कर जाग गये और तलवार लेकर बाहर आ गये। उसी समय महाराजकुमार गजसिंह भी अपने साथियों सहित पहुंच गये। युद्ध हुआ; केहरि (कृष्णसिंह) और करन मारे गये, किन्तु कर्मसेन भाग गया। इस युद्ध में दोनों ओर के कई योद्धा काम आये[1]।

बादशाह ने सम्मानपूर्वक सवाई राजा शूरसिंह को अपनी राजधानी जोधपुर जाने के लिए विदा किया। फिर बादशाह ने महाराजा शूरसिंह को कुछ ही समय पश्चात् घोड़ा व शिरोपाव देकर दक्षिण में उपद्रवों को दबाने के लिए भेज दिया[2]। जहां पर उन्हें बराबर सफलता मिलती रही।

जालोर के शासक पहाड़ खां पर बादशाह नाराज हो गया और उसे मरवा डाला तथा जालोर का प्रान्त राजा शूरसिंह को दे दिया[3]। सवाई राजा शूरसिंह

१—वीर विनोद भाग २, पृ० ५२३
डॉ० ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७९
पं० रामकर्ण आसोपा कृत "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० ३४१-३४२
पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० १९२-१९३ के अनुसार वि० सं० १६७२, ज्येष्ठ सुदी ९ (ई० सन् १६१५ की २६ मई) की रात्रि के पिछले प्रहर में यह घटना हुई।

२—डॉ० ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३८२ के अनुसार शूरसिंह ने वि० सं० १६७२ मार्गशीर्ष वदी ३ (ई० सन् १६१५ की अक्टोबर) को दक्षिण जाने की आज्ञा प्राप्त की; शूरसिंह के दक्षिण में जाने की पुष्टि पं० रेऊ के मारवाड़ इतिहास पृ० १९३ व आसोपा के 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृष्ठ ३४४ से भी होती है।

३—"तारीख पालनपुर" सैयद गुलाब मियां-कृत; पृ० १५०-१६०, नवाबसर ताले मुहम्मद खां, पालणपुर राज्य नो इतिहास (गुजराती) भाग १, पृ० ५४-६२
डॉ० ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" पृ० ३९३; पं० रेऊ कृत मारवाड़ का इतिहास—पृ० १९४-१९५; पं० आसोपा कृत "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास"—पृ० ३४५;

उन दिनों दक्षिण में थे और शासन का कार्य-भार राजकुमार सम्हाल रहे थे। उन्होंने राजकुमार को जालोर पर अधिकार कर लेने के लिए सूचित किया। जालोर पर उस समय बिहारी पठानों का अधिकार था। गजसिंह ने अपने सामन्तों को बुलाकर सेना इकट्ठी की और जालोर पर आक्रमण कर दिया। बिहारियों की ओर के नारायणदास काबा और कुछ अन्य राजपूत महाराज-कुमार गजसिंह की ओर मिल गये और उन्होंने उस जालोर गढ़ को कुछ ही दिनों में फतह कर लिया जिसके लिये अलाउद्दीन को १२ वर्ष लगे थे। एक प्राचीन दोहा प्रचलित है;—

"बारै बरस अलाउदी, खंप छूटो पड (फीटो) पतसाह।
चढियां घोड़ां सोनगढ़, तैं लीनो गजसाह।"

जालोर-विजय के बाद गजसिंह ने उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन पर जो लाडनू में था, चढाई कर दी। कर्मसेन निर्जल प्रदेशों में भटकता हुआ अरावली पर्वत की ओर चला गया। गजसिंह उसके पीछे लगे हुए थे; वे सोजत पहुँचे। वहां विजय-दशमी के दिन देवी का पूजन करके उन्होंने कर्मसेन पर चढ़ाई कर दी। वह भाग कर मेरों की शरण में चला गया। गजसिंह पहाड़ों में उसके पीछे लगे रहे और उन्होंने मेरों को दण्ड देना शुरू किया। इस पर कर्मसेन अपने प्राण लेकर हाडोती में चला गया।

सवाई राजा शूरसिंह अपनी अन्तिम अवस्था में दक्षिण में ही थे और वहीं महकर के थाने पर वि० सं० १६७६ की भाद्रपद शुक्ला नवमी (ई०सन् १६१९ को १९ तिम्बर) को उनका देहान्त हुआ[१]।

पिता के देहावसान पर गजसिंह आसोप-ठाकुर कूंपावत राजसिंह पर राज्य की रक्षा का भार डालकर स्वयं दक्षिण में बुरहारनपुर चले गये और वहीं पर विजयदशमी को उनका राजतिलक हुआ[२]।

"झाझा झूळ सुभट्टां पासैं।
बैठो बाप तणैं आं भासैं॥
ब्राहनपुर दसरावौ थप्पै।
जोसी तिलक मुहूरत अप्पै॥

१—वीर विनोद भाग २, पृ० ८१८।

२—पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' तथा पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ-कृत 'मारवाड़ का इतिहास' के अनुसार वि० सं० १६७६ की आश्विन शुक्ला १० (ई० सन् १६१९ को ८ अक्तूबर) राज्याभिषेक हुआ।

विजै दसम्मी होम करावं ।
विप्रां कन्ता वेद वचावे ।।
निध नृप तिलक दियण खत्र - धोडं ।
मिळ मंगळीक किया राठोडे ।।१।।"

महाराजा गजसिंह ने अपने पिता के समान दक्षिण के उपद्रवों को दबाने में बहुत सफलता प्राप्त की । अहमदनगर के बादशाह का मंत्री तथा दक्षिणी फौज का संचालक 'अंबर' बड़ा वीर और चालाक पुरुष था । इसने अस्सी हजार सवारों की फौज को शाही सेना के सामने भेजा । इसी फौज में याकूत खाँ-नामक एक वीर ने बादशाह जहाँगीर की सेना को परास्त करने का बीड़ा उठाया था । इसके साथ महाराष्ट्र, बंगाल, कर्णाटक; खान-देश, गोलकुण्डा, बीजापुर तथा कन्नड के हब्सी योद्धा भी थे ।

महाराजा गजसिंह को बादशाद ने खांनखांनान् अब्दुर्रहीम के साथ दक्षिण के उपद्रव को दबाने के लिए नियुक्त किया था । महाराजा ने सेना के अग्रभाग (हरावळ) में स्थान-ग्रहण करके उक्त प्रचण्ड दक्षिणी सेना का बड़ी बहादुरी से मुकाबिला किया । खांनखांनान् समय-समय पर मुक्त-कण्ठ से इनकी प्रशंसा करके इन्हें उत्साहित करता रहता था ।

यद्यपि वरसिंह बुंदेला रतनसिंह हाड़ा, चांदा सीसोदिया तथा खानखांनान् के पुत्र दाराब खाँ ने महकर के थाने पर मलिक अंबर को विशाल और शक्ति-शाली सेना का मुकाबिला करने से मुंह-फेर लिया[१] किन्तु जोधपुर-नरेश महा-राजा गजसिंह ने दो प्रहर तक उससे युद्ध किया और उसके ५०० योद्धाओं को मार कर विजयश्री प्राप्त की ।

मलिक अंबर का बार-बार आक्रमण होता रहता था । कवि ने ठीक ही

१— मेरे निजी संग्रह में संगृहीत कवि हेम सांमोर कृत ग्रंथ 'भाखा चरित्र' से भी इस बात की पुष्टि होती है :—

'साह तणा ऊमरा, काटि पैठा ले कांना ।
आवै दळ आवरत, तणा दखिणाध दिवांना ।।
कुहुक बांण जंबूर, हुए हथनाळि हवाई ।
धर गिरवर थरहरं, करं दिनमांन लड़ाई ।।
तिण वार सहुं हींदू तुरक, राजासाहि जिहंगीर रा ।
राखिहो तुझ भोलै रहां, अंतखंभ जोधपुर ।।१।।
(पृ० १५ B)

लिखा है कि आषाढ़-मास में जिस प्रकार वर्षा के बादल (ओमें) समय-समय पर उठते रहते हैं, उसी प्रकार दक्षिणी सेना बार-बार आक्रमण करती रहती थी और हर बार महाराजा गजसिंह हरावळ में स्थान-ग्रहण करके उसे परास्त करते थे[1]। एक बार मलिक अंबर ने अचानक शाही सेना को घेर लिया। रसद, ईंधन आदि सब वस्तुओं की कमी पड़ गई।

ऐसे अवसर पर महाराजा गजसिंह ने हरावळ में ऐसी वीरता का परिचय दिया कि दक्षिणियों को घेरा उठाने पर मजबूर होना पड़ा।

मेहकर के थाने पर यह घेरा[2] इस ग्रंथ के अनुसार चार मास तक रहा तथा प्रत्येक ओर के सात-सात सौ सुभट मारे गये। दूसरा घेरा तीन माह तक रहा। मेहकर के उपद्रवों को समाप्त कर महाराजा गजसिंह बुरहानपुर गये। यहाँ भी काली घटाओं के समान दक्षिणी सेना इन पर छा गई। बुरहानपुर घिर गया। खांनखांनान् आदि ने पुनः महाराजा गजसिंह की ओर आशा-भरी नजरों से देखा और उन्हीं की वीरता द्वारा रक्षा हुई।

अब्दुर्रहीम खांनखांनान् ने अपनी ओर से बादशाह जहाँगीर को एक प्रशंसा-युक्त पत्र लिखा कि राठोड़ वीर महाराजा गजसिंह ने हर स्थान पर दक्षिणी सेना को रोका है और विजय प्राप्त की है। इस पर महाराजा गजसिंह को बादशाह की ओर से "दळ-थंभण" (दल – सेना को रोकने वाला) की उपाधि मिली[3]।

१—मेरे निजी संग्रह में संगृहीत—कवि हेम सामोर कृत ग्रंथ 'भाखा चरित्र' के अनुसार भी शाही सेना को जरा भी चैन नहीं मिलती थी :

'नित जरद पैहरिजै, नित पाखरीजै हैमर।
नित राग सिंधवौ, नित निसांण तणा सुर॥
नित ढोवा ढूकड़ा, वळे हुवै देठाळा।
नित वीर नारद चिरत, मंडूर सचाळा॥
आवाज हुवै गाजै अनड़ वहै नाळि, गोळा वहै।
राजा हजूरि राजा तणां, रावत निरछरिया रहै।४॥ (पृ० १५ B)

२—पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ के अनुसार भी घेरा तीन माह तक रहा :—
(मारवाड़ का इतिहास, पृ० २००)

३—ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृष्ठ ३९०; रेऊ, पृ० २०० तथा २०१ के अनुसार महाराजा गजसिंह ने युद्ध में मलिक अंबर (चपू) का लाल झंडा छीन लिया था। इस घटना की यादगार के उपलक्ष में तब से जोधपुर के राजकीय झंडे में लाल रंग की पट्टी लगाई जाने लगी, वि० सं० १६७८ में "दलथंभण" की उपाधि मिली।

"साह दिस्स मेलिया, खांनखांनां लिख कागल।
ऐ अजीत रट्ठवड, किता जैं जीता कदल॥
सबळा सत्र संघरे, छले सबले पडि-गिरिया।
जेथ भिडे दलि पडे, तेथ आडा भुज धरिया॥
कळि मूळ निभंभरा, कलि मथरा, ऊभौ सिरि "अंबर" इहै।
पतिसाह परीछे ए प्रसिघ, "दल थंभरा" राजा कहै॥४॥"
रट्ठोड रूप राए दीनो, सुरतांण नांम दलथंभण।
हिंदुवै मुसलमांणौ, विरदाविय जोध विरदंता॥३॥

यद्यपि खानखांनान् महाराजा गजसिंह आदि की सहायता से दक्षिणी सेनाओं की दाल नहीं गलने दे रहा था, किन्तु वह फिर भी बार-बार विभिन्न स्थानों पर उपद्रव करती रहती थी। अतः बादशाह ने शाहजादे खुर्रम को उक बहुत बड़ी सेना का सेनापति बना कर दक्षिण में जाने का हुक्म दिया जिससे वहां के उपद्रव हमेशा के लिए समाप्त हो जायें।[1]

शाहजादा खुर्रम ने जो उन दिनों बागी होने की सोच रहा था, बनावटीपन से बादशाह के प्रति बहुत भक्ति-भाव दिखा कर उससे शेर सुलतान को मांग लिया और दक्षिण फतह करने का वादा किया। खुर्रम अपनी विशाल सेना के साथ बुरहानपुर पहुँचा। उसने महाराजा गजसिंह को सेनापति बनाया; दक्षिणी सेना भाग गई:—

"ताबीन दीन हिंदु तुरक, अजब पेख आतम सकति।
'दलथंभ' दळा विच थप्पियौ, जंतखभ सेनाघपति॥"

इस सफलता पर महाराजा गजसिंह का मंसब ५००० जात का कर दिया[2] साथ ही उन्हें नक्कारा, तोग, सुनहरी साज के घोड़े तथा जालोर तथा साँचोर के परगने दिये:—

१—वीर विनोद, भाग २, पृष्ठ ८१६; डॉ० ओझा– "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३६० तथा आसोपा पृ० ३५२ के अनुसार वि० स० १६७६ (ई० सन् १६२२) में बादशाह ने खुर्रम को भेजा।

२—तुजुक जहांगीरी, जहाँगीरनामा, वीर विनोद तथा अन्य ग्रंथों में इस अवसर पर गजसिंह का मसब ४००० सवार का किया जाना लिखा है।

३—वीर-विनोद भाग २, पृ० ३०५। डॉ० ओझा–जोधपुर राज्य–भाग १, पृ० ३ ६०, रेऊ– "मारवाड़ का इतिहास" पृ० २०१ के अनुसार बादशाह ने महाराजा की दक्षिण की इन वीरताओं से प्रसन्न हो कर वि० स० १६७६ को चैत्र सुदि ६ (ई० सन् १६२२ को ११ मार्च) को इन्हें नक्कारा उपहार में दिया।

"महुण-रम्भ मत्थियो, तेग तुडि दक्खण मारी।
पातिसाह हुइ प्रसन, हुकम किय पंच हजारी॥
मंडोवर नर-समंद, सीस मनसप वध्धारे।
दे नग्गारा तोग, तुरी साकति सिंगारे॥
फुरमास सुपारसि मोकली, दिढ़ राजा "दलथंभ" तूं।
जागीर दीध जोगणि-पुरे, कणिया-गिर सांचोर सूं॥"

तत्पश्चात् महाराजा गजसिंह ने मलिकापुर, रोहिण-खेड़ा, बालापुर महकर, निरोह, खिड़की, दौलताबाद, मुग्गीपट्टन, खानदेश, महाराष्ट्र, बराड़, अहमदनगर तथा सेतुबंध रामेश्वर तक सब स्थानों पर दक्षिणी सेना को परास्त कर दिया। इस पर सम्पूर्ण दक्षिणी सेना ने संगठित होकर पुनः महाराजा पर आक्रमण किया। इन्होंने बड़े जोश के साथ अपनी सेना को तैयार कर के प्रत्याक्रमण किया जिससे दक्षिणी सेना भाग गई।

महाराजा गजसिंह ने वैसे तो दक्षिण में कई स्थानों पर विजय प्राप्त की किन्तु उनमें निम्न पाँच स्थान अतिमहत्त्वपूर्ण थे— १ महकर, २ मेल्हाना, ३ बालापुर, ४ बुरहानपुर तथा ५ दक्षिण के शेष प्रान्त। जब साल भर तक दक्षिणी सेनाएँ महाराजा से लगातार परास्त होती रहीं, तो "अंबर" ने सभा कर के कहा कि उत्तरी सेना के सामने अपना पुरुषार्थ नहीं चलेगा और उसने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर के संधि करली।

इस प्रकार महाराजा गजसिंह के सेनापतित्व में शाहजादे खुर्रम ने लगभग ढ़ाई-तीन मास में ही दक्षिणियों को अपने अधीन कर लिया और उसने भीम सीसोदिया[1] को भी विदा कर दिया। बादशाह का नूरजहाँ के बहकावे में आ कर खुर्रम को बादशाहत से वञ्चित करने के प्रयत्न करने के कारण शाहजादे खुर्रम के दिल में बादशाह के प्रति विद्रोह की अग्नि जल रही थी, अतः जिस "शेर सुलतान" (शाहजादे खुसरो) को बादशाह से मांग कर अपने साथ लाया था, उसे उसने मरवा डाला:—

"आणियो द्रोह अंतहकरण, पाछो खुरमह पंतरण।
ततकाल "सेर" सुरतांण रो, कीधो अज्जुगतो मरण॥२॥ (पृ० १०७)

१—'रेऊ' ने "मारवाड़ के इतिहास" पृ० २०३ में लिखा है:—

"भीम मेवाड़ की उस सेना का सेनापति था, जो उस समय महाराणा कर्णसिंह की तरफ से बादशाही सेना में रहा करती थी। जहाँगीर ने भीम को राजा की पदवी तथा टोडे की जागीर दी थी। कुछ समय बाद ही वह बादशाह की कृपा से पांच हजारी मसब तक पहुँच गया था।"

'शेर सुलतान' (शाहजादे खुसरो) का वध करवा कर शाहजादा खुर्रम खांनखांनान् के साथ बुरहानपुर से मांडव आया। खुर्रम के साथ एक कुशाग्र-बुद्धि ब्राह्मण मंत्री था। इसका नाम सुन्दर था। बाद में इसकी वीरता से प्रसन्न होकर बादशाह ने इसे राजा विक्रमाजीत रायरायान की उपाधि दी थी। शाहजादे खुसरो (शेर सुरतांण) को मरवाने में इसका भी हाथ था।

मांडव पहुंच कर खुर्रम ने महाराजा गजसिंह को अपने पास बुलाया तथा उनकी वीरता की प्रशंसा करते हुये इन से गले मिला। फिर इन्हें जोधपुर जाने के लिए विदा कर दिया। महाराजा अपनी राजधानी लौटे[1]। जहां प्रजा ने उनका हृदय से स्वागत किया।

महाराजा गजसिंह लगभग छः मास तक अपनी राजधानी जोधपुर में बड़े ठाट-बाट से रहे। उन्हीं दिनों खबर मिली कि शाहजादा खुर्रम बागी हो गया जिससे शाही-क्षेत्रों में बड़ी उथल-पुथल हो रही है तथा खुर्रम के इस व्यवहार पर बहुत दुःखी व क्रोधित होकर[2] बादशाह ने उसे पकड़ने की आज्ञा दे दीः—

१—डॉ० ओझा 'जोधपुर राज०' भाग १, पृ० ३९०; पं० रामकर्ण आसोपा 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३५२ के अनुसार महाराजा गजसिंह खुर्रम से विदाई लेकर बादशाह के पास गये और बादशाह से आज्ञा लेकर वि० सं० १६७९ (ई० सन् १६२२) के भाद्रपद शुक्ला १० को जोधपुर लौटे।

२—वीर विनोद, भाग २, पृ० २८१, २८२ के अनुसार —बादशाह खास अपनी तुजुक जहांगीरी नामक किताब में निहायत रंज से लिखता है :—

"वह पर्वरिशें और मिहर्बानियें, जो उस (खुर्रम) के हक में मुझ से जुहूर में आई हैं, मैं कह सकता हूं कि अब तक किसी बादशाह ने अपने बेटे पर न की होगी; जो कुछ मेरे बाप ने मेरे भाइयों को उहदे दिये थे, मैंने उसके नौकरों को इनायत किये, और खिताब व नेजा और नक्कारा उनको दिया गया, जैसा में सिलसिलेवार इस किताब में पहले लिख आया हूं, पढ़ने वालों से पोशीदा न रहेगा; जिस कदर तवज्जुह और मिहर्बानी उस पर की गई, कलम को उसके लिखने की ताकत नहीं हैं, जियादा रंज के सबब नहीं लिखा जा सकता, इस वक्त में जब कि सफर की थकान और मिजाज की कमजोरी और आबहवा की ना मुवाफ़कत मौजूद है, मुझको सवार होकर ऐसे नालायक बेटे की तरफ़ चलना पड़ता है, बहुत से नौकर जिनको बहुत वर्षों तक मैंने पाला था, और अमीरी के दरजे पर पहुंचाया था और वह आज के दिन उज़बक या कज़लबाश कौम की लड़ाई में काम आते, वे बेदौलत (खुर्रम के लिए बादशाह द्वारा कुपित होकर रखा हुआ नाम) की बदबख्ती से बेफायदा सजा को पहुंचे, और मेरे हाथ से खराब हुए; लेकिन में खुदा का शुक्र करता हूं कि उस बुजुर्ग और पाक ने इस कदर हिम्मत और बुर्दबारी मुझको बख्शी है कि इन तमाम तक्लीफ़ों को उठा लूंगा, और

हठ-वादा हजरति, कोपि हटियो काळ'ग्नळ।
प्रळै-काळ उतपात, जांण बंधी वड मंडळ ॥
आप मुख कियो हुकम, चोट हुई नग्गारां।
चडे मीच चंचळे, कूच कीयो दळकारां॥

जिहंगीर कहै जमरूप हुई. खुरम कहां जाइ बप्पडो।
पैसै पयाळ अंबर चडै, जिहां जाइ तहां पक्कडो ॥३॥

एक विशाल शाही-सेना खुर्रम के विरुद्ध रवाना हुई। खुर्रम भी मांडव से दल-बल सहित रवाना[1] हुआ। वह अजमेर से सांभर होता हुआ रणथम्भोर आया।

खुर्रम ने भीम सीसोदिया[2] के पास मेड़ते[3] हुक्म भेजा कि तुम सादूल को हराकर अजमेर पर कब्जा कर लो। खुर्रम की आज्ञानुसार भीम ने अजमेर पर चढ़ाई कर दी। सादूल कायर की तरह पहाड़ों में भाग गया किन्तु भीम उसे पकड़ कर खुर्रम के पास ले गया :—

उतारै अजमेर सूं, खुरम सनमुख आंण।
कर साहै 'सादूळ' नुं, खेलायो खूमांण ॥३॥

खुर्रम अपनी सेना के साथ सीकरी पहुंचा। वहाँ के जूझारों ने खुर्रम से युद्ध करने के लिए तलवार चलाने के स्थान पर अपने आपको गढ़ में छुपा लिया।

अपनी उम्र के दूसरे अहवाल की तरह पर पूरा करके आसान कर लूंगा, लेकिन जो बात मेरे दिल पर भारी गुजरती है, और मेरे गैरत्दार मिजाज़ को परेशानी में डालती है, वह यह है कि ऐसे वक्त में मुनासिब था कि मेरे नेकबख्त लड़के और साफ़ दिल सर्दार आपस में एक इरादा होकर कन्धार और खुरासान की कारगुज़ारी को, जो हिन्दुस्तान की बादशाहत के लिये इज्जत है, इख्तियार करते, इस बे-नसीब ने अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार कर, इस इरादे को रोक दिया और कन्धार के मुआमले की गिरह मेरे दिल में पड़ी रह गई, जिसका सुलझना देर में होगा, मैं उम्मेद रखता हूं कि बुजुर्ग खुदा इन फिक्रों को मेरे दिल से दूर करेगा।"

१—जहाँगीर का आत्मचरित—जहाँगीरनामा (तुजुक जहाँगीरी) पृ० ७६२, अनुवादक—ब्रजरत्नदास। प्रकाशक-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, संवत् २०१४—देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तक माला २१ के अन्तर्गत।

२—भीम सीसोदिया महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था। शाहजादे खुर्रम के बागी होने पर यह बादशाह की सेवा से हटकर खुर्रम की ओर मिल गया।

३—मुहणोत नैंणसी री ख्यात भाग १, पृ० ३०-३१ के अनुसार उस समय मेड़ता बादशाह की ओर से भीम को जागीर में दिया हुआ था।

खुरम पौहतौ सीकरी, है खढिए इळकार ।
झूझारे गढ़ झल्लिया, नह झल्ली तरवार ।।१।। पृ० १२७

खुर्रम ने खानखानान् अब्दुर्रहीम तथा अपनी विशाल सेना के साथ दिल्ली की ओर कूच किया। जब बादशाह से तीन योजन दूर रहा तब उसने अपनी सेना के तीन भाग किये—१. भीम सीसोदिया के सेनापतित्व में, २. सुंदर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायांन) के सेनापतित्व में और ३. अब्दुर्रहीम खानखानान् के पुत्र दाराब खाँ के सेनापतित्व में। घमासान लड़ाई हुई[1]। दोनों ओर के कई योद्धा काम आये। भीम सीसोदिया ने शाही सेना का बहुत संहार किया। उसी समय खुर्रम का सेनापति सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायांन) मारा गया[2]।

यद्यपि अब्दुल्ला खां का खुर्रम की फौज में मिल जाने के कारण शाही फौज की पराजय निश्चित थी, किन्तु खुर्रम के मंत्री सुन्दर ब्राह्मण के गोली लगते ही उसकी सेना में खलबली मच गई और उसकी विजय पराजय में परिणत हो गई। दोनों ओर से युद्ध बन्द हो गया। यद्यपि बादशाह की विजय[3] हुई किन्तु वह विजय किन परिस्थितियों में हुई इसके लिए बादशाह विचार में पड़ गया। अब्दुल्ला खां जैसा विश्वस्त सेनाध्यक्ष भी शाही सेवा को छोड़ कर खुर्रम की ओर मिल गया तो दूसरों द्वारा भी उसका अनुकरण करने की सम्भावना थी:—

१—वीरविनोद भाग २, पृ० २८३।

२—जहाँगीर का आत्मचरित:— जहाँगीरनामा (तुजुक जहाँगीरी)—अनुवादक-व्रजरत्नदास, पृष्ठ ७६६ से ७७३ तक में सम्पूर्ण घटना चक्र का सविस्तार वर्णन है। तथा:— मुगल दरबार भाग १— मआसिरुल उमरा (मुगल दरबार के हिन्दू सरदारों की जीवनियां) अनुवादक-व्रजरत्नदास, प्रकाशक-नागरी प्रचारिणी सभा काशी, देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला ६ के अन्तर्गत, प्रथम संस्करण संवत् १९८८ वि०, पृष्ठ ३८३ से ३९५ तक के अनुसार जहाँगीर के अठारवें जलूसी वर्ष हि० सं० १०३२ में परगना कोटला में शाही सेना और शाहजादे खुर्रम की सेना में मुठभेड़ हुई जिसमें शाही सेना के हरावल में नियुक्त अब्दुल्ला खां दस सहस्र फौज के साथ सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायांन) के साथ बनाई हुई पूर्व योजना के अनुसार शाही सेना को छोड़ कर शाहजादे की सेना में मिलने के लिए दौड़ा। सुन्दर ब्राह्मण भी उसकी तरफ बढ़ रहा था कि एकाएक एक गुप्त गोली आकर उसके शिर में लगी जिससे उसका काम तमाम हो गया।

वीर विनोद भाग २, पृ० ३०६ से भी इसकी पुष्टि होती है।

३—जहाँगीर का आत्मचरित- जहाँगीर नामा (तुजुक जहाँगीरी) अनुवादक व्रजरत्नदास, पृ० ७६६ से ७७३ तक।

घर फूटो घर कारणैं, घर में लग्गी लाहि।
जे जीतो तो हारियौं, दिल्लीवै पतिसाह ॥२॥ (पृ० १४२)

बादशाह का खुर्रम के उपद्रव से दुःखी व चिंतित रहने के कारण, उसके वजीरों ने सलाह दी कि विश्वासपात्र राठौड नरेश महाराजा गजसिंह को बुलाया जाय तो कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ेगा:—

वडे वजीरे मंत्रिए, कहियौ बयण विचार।
जो आवै राठोड नृप, तौ नह आवै हार ॥३॥

बादशाह ने इस सलाह से पूर्ण सहमत होते हुए महाराजा गजसिंह को अपने पास बुलाने के लिए फरमान भेजा जिसमें महाराजा से अपनी लज्जा रखने की प्रार्थना की:—

आप कहै पतसाह अचनग्गल। 'गाजीसाह' कमण तो जांमल।
तूं खुरसांण हिंदुवां आगल। किलवां-रांइ लिखे इम कागल ॥१॥
खांडै-राव सिरै नव खंडां। मारू तौ सिर भारथ मडां।
भारथ भलायौ तो भूम्र डंडां। मांडे तूं थांभां ब्रह्मंडां ॥२॥
तूं राजा दलथंभ कहायौ। ए भर भार भुजें तौ आयौ।
इल साईजादै दुंप उठायौ। पातसाह फुरमांण पठायौ ॥३॥
हुकम लिखे मोकलियौ हजरति। तांय पहूंतौ जोधां तख्तति।
कमध वडी तो पासि करामति। पति मो रखी कहै दिल्लीपति ॥४॥

महाराजा गजसिंह, अपने राज्य का प्रबन्ध करके वि० सं० १६८० के चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादसी को रवाना होकर, वि० सं० १६८० वैसाख सुदि १२, ई० सन् १६२३ ता० १ मई को बादशाह के पास पहुँचे[1]:—

दे नीसांणां घाऊ, चैत सुदी एकादसी।
चढे कमंधां-राऊ, दिल्लीवै सुरतांण दिस ॥३॥ (पृ० १७१)

महाराजा गजसिंह अपने साथ निम्न सुभटों को लेकर जोधपुर से रवाना हुए। जब महाराजा गजसिंह बादशाह के पास पहुचे तो वह भुजायें पसार कर इनसे गले मिला[2] और कुशल-मंगल पूछ कर इनकी बहुत प्रशंसा की। बादशाह

१—"जोधपुर राज्य का इतिहास" डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, पृ० ३९१

२—पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अपने 'जोधपुर राज्य के इतिहास' पृ० ३९२ में जोधपुर राज्य की ख्यात के आधार पर लिखा है कि बादशाह जहांगीर उन दिनों अजमेर में था। उसने शाहजादे परवेज को खुर्रम पर भेजने का निश्चय कर आगरे की तरफ प्रस्थान किया और गजसिंह को भी बुलवाया जो चाडसू (चाटसू) नामक स्थान पर जाकर उससे मिल गया।

ने महाराजा गजसिंह को शाहजादे खुर्रम से युद्ध करने का बीड़ा देकर, शाहजादे परवेज के साथ जाने का हुक्म दिया[१] :—

'परवेज' साह सत्थे, दे कमधज लज भूडंडे ।
सुरतांण खुरम मत्थे, दे बीड़ो कीध फुरमांण ।।७।। (पृ० १७८)

शाहजादे परवेज़ और महाबत खां की फौज के साथ महाराजा गजसिंह आगे बढ़े । बराड़ के पास युद्ध हुआ जिसमें खानखांनान् अब्दुर्रहीम को कैद किया गया[२] ।

१—वीर विनोद भाग २ पृ० ३०६ तथा भाग २ के ही पृ० ८१९ के अनुसार बादशाह से शाहजादा खुर्रम बागी हुआ, उसके मुकाबले के लिए शाहज़ादा पर्वेज और महाबत खां के साथ विक्रमी १६८० ज्येष्ठ कृष्ण ५ (हि० १०३२ ता० १९ रजब = ई० १६२३ ता० १९ मई) को यह (राजा गजसिंह) पांच हजारी जात व चार हजार सवार का मंसब पाकर मुकर्रर हुए, और इनको पहली तरक्की के साथ जालोर और दूसरी तरक्की के साथ फलोदी का पर्गनह मिला, इसी वर्ष में मेड़ता भी मिल गया । जहांगीर का आत्म चरित—जहांगीरनामा (तुजक जहांगीरी), पृ० ७७७ में बादशाह जहांगीर ने बागी खुर्रम का पीछा करने के लिए शाहजादे पर्वेज के साथ भेजे जाने वा सुभटों में गजसिंह को 'महाराजा गजसिंह लिखा है । अतः इन्हें महाराज की उपाधि पहले मिल चुकी थी या उस समय दी गई होगी ।

२—वीर वीनोद पृ० २८४, २८५, २८६ में खानखांनान् अब्दुर्रहीम के क़ैद होने की घटनाओं का वर्णन निम्न है :—

'शाहजादा पर्वेज बंगाले से शाही खिदमत में हाजिर हुवा । बादशाह जहांगीर ने उसको शाही फ़ौज़ का अफसर बनाकर शाहजादे खुर्रम के पीछे रवाना किया और पर्वेज का मददगार महाबतखां हुआ । शाही फौज जब मालवे में पहुंची तो शाहजादे शाहजहां ने भी अपनी फौज उसके मुकाबले को रवाना की, लेकिन रुस्तमखां (जिसको शाहजादे शाहजहां ने अदना दरजे से पच हजारी मंसब देकर गुजरात का सूबेदार बनाया था) भाग कर महाबतखां व पर्वेज की फौज से गए अपने साथियों से जा मिला, जिससे शाहजहां की फौज का इन्तिजाम बिल्कुल बिगड़ गया और कुछ अपने साथी सरदारों से शाहजादे का एतिबार उठ गया, तो जो अपनी फौज थी उसको बुलाकर किले मांडू से नर्मदा के पार होकर बैरमबेग बख्शी को थोड़ी फौज के साथ नर्मदा के किनारे छोड़कर आप किले आसिरगढ़ व बुर्हानपुर की तरफ चला गया, किसी कदर नर्मदा पार जो किश्तियां थीं वे बैरमबेग ने अपने कब्जे में कर ली । इस वक्त मुहम्मद तकी बख्शी ने एक चिट्ठी पकड़कर शाहजादे खुर्रम को नज़् की, जो खानखांनान् अब्दुर्रहीम की तरफ से महाबतखां के नाम लिखी गई थी, उसमें शिअर दर्ज था—

सद् कस्ब नजर निगाह मेदारन्दम् ।
वरना विपरीदमे ज़ि बं आरामी ।।

आमा फिरि गजदळ उपडिया। खूंदालम कट्टक इम खड़िया॥
राडि बरारी भूंभे पडिया। खांनखांन जंजीरे जडिया॥१॥'
(पृष्ठ १८६)

शाहजादा खुर्रम वहाँ से भागकर किले आसेरगढ़ व बुरहानपुर होता हुआ उड़ीसा, ढाका (बंगाल) में आया और वहाँ से वह इलाहाबाद व जौनपुर की ओर बढ़ा। इधर महाराजा गजसिंह भी शाही सेना के साथ हरावल (अग्रभाग)

अर्थ :—मुझको सैकड़ों आदमी निगाह रखते हैं, नहीं तो बेकरारी से निकल भागता।

जब यह चिट्ठी खानखांनान् को मय उसके लड़के के तलब करके शाहजादे ने दिखलाई तो उससे कुछ जबाब न दिया गया, इसलिए कैद किया गया।

शाहजहाँ किले आसेर में बहुतसा खटला मय लोण्डी बंदियों के छोड़ कर गोपालदास राजपूत को वहां का हाकिम बनाने के बाद आप बुरहानपुर की तरफ चला गया।

पीछे से शाहजादा पर्वज मय महाबतखाँ के शाही फौज को लेकर नर्मदा नदी पर आया लेकिन बैरमबेग शाहजादे खुर्रम का मुलजिम पेश्तर से ही किश्तियों को अपने कब्जे में कर लेने से दक्षिणी किनारे को तोपखाने व अपने बहादुर सिपाहियों से मजबूत करके लड़ाई को तय्यार था। महाबतखां ने नदी उतरना मुश्किल जान कर खानखांनान् अब्दुर्रहीम को पोशीदा लिखावट से अपनी तरफ मिलाया। उस बूढ़े ने भी महाबतखाँ के दाव में आकर शाहजादे को फरेब से कहा कि अब सुलह इख्तियार करना बिहतर है, मैं आपका खैरख्वाह हूँ, अगला कुसूर मुआफ कर दीजिए अब हरिज खिदमत गुजारी में फर्क न आवेगा। शाहजादा खुर्रम उसके कहने को सच मान गया और कुरआन की सौगन्द दिलाने पर उसको महाबतखां की तरफ रवाना किया, और उसके बेटों को अपने कब्जे में रक्खा, उसको चलते वक्त लाचारी से यह भी कहा कि हर तरह इज्जत हाथ से न देना चाहिए। खानखांनां दक्षिणी किनारे से हुक्म के मुवाफिक सुलह के लिए तहरीरी शर्तें कर रहा था जिससे जंगी लोग मय बैरमबेग के सुस्त हो गये। रात के वक्त शाही फौज के मुलाजिम नदी उतर आये और खानखांनां उनसे मिल गया। बैरमबेग ने भाग कर शाहजादे को इस हाल की खबर दी, शाही फौज ने बुर्हानपुर तक पीछा किया और शाहजादा खुर्रम गोलकुण्डा वगैरह गैर अमल्दारी में होता हुआ उड़ीसा की तरफ पहुँचा।

बादशाह जहांगीर ने शाहजादे पर्वेज मय शाही लश्कर व बड़े अमीरों के बुर्हानपुर की तरफ से इलाहाबाद जाने का हुक्म दिया और पर्वेज को यह भी लिखा है कि—'खानखांनान् अब्दुर्रहीम नजरबन्द रक्खा जावे क्योंकि उसका बेटा दाराबखां शाहजहाँ के पास है, पर्वेज ने वैसा ही किया।

जहांगीर का आत्मचरित—जहांगीरनामा (तुजुक-जहांगीरी) पृ० ७७७, ७७८, ७९१ से ८०१ तक में भी इसका उल्लेख है।

में रहकर खुर्रम का सामना (मुकाबिला) करने इलाहाबाद, काशी, गया की यात्रा करते हुए टोंस नदी के किनारे कोरटा में पहुँच कर ठहर गये। उस समय खुर्रम का पड़ाव खैरगढ़ में था। इससे दोनों की सेनाओं के बीच केवल दो कोस का फासला रह गया। खुर्रम की सेना के अग्रभाग में महाराणा अमरसिंह का पुत्र सीसोदिया भीम अपने चुने हुए साथियों सहित नियत हुआ। इसके अतिरिक्त अब्दुलाखाँ, दरियाखाँ, पहाड़खाँ, कल्याणसिंह का पुत्र भीमसिंह राठौड़, बलु का पुत्र पृथ्वीसिंह, रामा का पुत्र हरदास तथा खुर्रम की सेना के अनेक योद्धा थे। शाहज़ादे खुर्रम ने बड़े जोश के साथ विशाल शाही सेना का सामना करने की तैयारी की।

शाहजादे खुर्रम ने अपनी सेना के सेनापति भीम सीसोदिया की वीरता का बखान करते हुए उसे उत्साहित किया और युद्ध का सारा उत्तरदायित्व उस पर डाला :—

'ताम राण सीसोद, खुरम सुरतांण पडिग्गर।
मुझ सेन दळ-थंभ, आज कुंण तूझ बराबर।।
दिल्ली दावा-मुदी, तूं हिज आगळ है रांणा।
तो दादो 'संग्राम', ग्रहण मोखण सुरतांणां।।
खूंमांण दळे सुरतांण सूं, कमण जुद्ध मंडै बियो।
'भीमेण' ऊठि 'अमरेस' रा, तो सिरि नेत परट्ठियो।।५।।

भीम सीसोदिया ने भी बड़े उत्साह के साथ क्षत्रियोचित शौर्य का परिचय दिया।

शाही सेना के अग्रभाग में शाहजादे परवेज और महाबत खाँ की सलाह से महाराजा गजसिंह रखे गये।

अवपत्ति चढ़े देव मैं अंस। रजपूत चढ़े छत्तीस वंस।।
मंडोवर राजा मुहरि मंड। डावै ली जोगणि भुजाडंड।।४७।।
राठोड बधे मेळसी राड। मुहरावत खिगळै मारवाड़।
गयणाग लागि ऊससै गात। हूओ हरोळ हिंदुवां छात।।४८।।

महाराजा गजसिंह के साथ आंबेर के राजा जयसिंह, बीकानेर के राजा सूरजसिंह, बुंदेला वरसिंघ देव, सारंगदेव, बहलोल खान, आलम खान आदि सुभट थे। अन्त में घमासान युद्ध प्रारम्भ हुआ। सीसोदिया भीम और महाराजा गजसिंह का मुकाबिला हुआ[२]। सीसोदिया भीम ने बड़ी वीरता

२—पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ 'मारवाड़ का इतिहास' प्रथम भाग पृ० २०३; पं० रामकर्ण आसोपा कृत मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३५३, ३५४, ३५५ तथा

दिखलाई। उसने जटाजूट (जोताजोत) नामक एक भयंकर हाथी का भी काम तमाम कर दिया। सीसोदिया भीम और महाराजा गजसिंह में परस्पर भयंकर युद्ध हुआ। भीम का शरीर छलनी होगया। उसकी वीरता की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। अन्तिम समय तक लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। भीम के साथ मानसिंघ सीसोदिया (शक्तावत)[1] कल्याणसिंह सीसोदिया, हरिदास राठोड़, कचरा कूंपावत, हरिसिंह भाटी आदि सुभट भी वीरगति को प्राप्त हुए:—

मानसिंघ सीसोद, भिडे रहियौ भांणावत।
गोकळ[2] जीवत-संभ, विढ़ हूऔ वड रावत॥
सीसोदौ, 'कल्यांण' रहे रावत निम्भंयण।
हरीदास रट्ठवड, रहें 'कचरौ' रिण डोहण॥
हरिसिंघ हेक भाटी रहै, दुल्लह सुरतांणी घडा।
'भीमेण' रहतै 'अमर' रै, रहिया रावत अेतडा॥१०॥ (पृ० २४०)

भीम के मरते ही पहाड़खांन, दरियावखांन, अब्दुलाखां, हृदयनारायण हाडा, सादूळसिंह प्रमार[3], गयासबीर खोजा आदि भी खुर्रम के साथ कायरों की भांति भाग गये। यह युद्ध वि० सं० १६८१ की कार्तिक की पूर्णिमा शनिवार को हुआ था:—

सोळह सै संमंत्त, हुऔ जोगणपुर चाळै।
सम्मै एकासियै, मास काती वडाळै॥
पूनम थावरवार, सरद रित है पाळट्टी।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रघट्टी॥
सुरतांण खुरम भागौ भिडे, चाढि चकथां चक्कवै।
गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियौ, बहै भीम चीतोडवै॥२०॥

कोपि तांम कमधज पछै उरि कूंत पहारै।
पयोधरा खडहडै हंस आया बळ हारै॥
—भाखा चरित्र पृ० २२A।

१—वीर विनोद, भाग २, पृ० २८६।

२—यह गोकळदास उक्त मानसिंह शक्तावत का भाई था। भीम के साथ बादशाह की सेना से मुकाबिला करते हुए यह भी पूर्ण घायल हो गया था। महाराजा गजसिंह द्वारा घायल अवस्था में युद्धस्थल से हटा लिया गया, जिससे बच गया। यह महाराजा गजसिंह के भूवा का लड़का भाई था। बाद में महाराजा ने इसे अपने राज्य में जागीर दी।
—मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग १, पृ० २६

३—वीर विनोद भाग २ पृ० २८७।

कवि केसोदास गाडण—एक परिचय

'गाडण' चारण-जाति के अन्तर्गत एक शाखा है। इस शाखा के चारणों एवं उनके निजी गांव 'गाडणां' के सम्बन्ध में कवि बांकीदास ने अपनी ख्यात[1] में लिखा है—'पसायत (फरसारांम) गाडण री बेटी नाम मेळी (महळी) आढ़ा नूं परणायी—मेळी री सावको बेटो हो जिण नूं मारने पसायत (फरसरांम) रा बेटा आढां री जमी अपणाय गाडणां नामक नगरी बसायी वाप कनै (जयसलमेर में)।' गाडण शाखा के सभी चारण इसी गाडणां गांव से निकले माने जाते हैं। यह भी सत्य है कि इस गांव पर अद्यावधि गाडण-शाखा के चारणों का ही अधिकार रहा है। पुष्कर (अजमेर) में करणी-मंदिर के पुजारी और चारणों के गुरु महाराज श्री रामदासजी पाराशर ब्राह्मण की बही पृष्ठ २४५ पर गाडणों की वंशावली[2] दी है जो यहाँ उद्धृत की जाती है :—

गाडण (दूसरा नाम जसराज)
- गंगव
  - गड़सी (घड़सी)
    - अभेड़
      - सांवतसिंह
        - देवराजसिंघ
          - मेघराव (मेगराज)
            - दूदो
              - सदमल
                - केसवदास
                - लिखमीदास
                - किसनराम
                - माधोदास

उपर्युक्त वंशावली के आधार पर गाडण की नवमी पीढ़ी में सदमल हुआ। वह बड़ा ही योग्य व्यक्ति था। इसकी योग्यता और कुशाग्रबुद्धि से प्रभावित

१—बांकीदास ख्यात-बात संख्या २१८७, पृ० १८०।

२—इसी प्रकार की वंशावली चारणों के राव (भाट) हीरदानजी रामासणी वालों की बही में बताई गई है।

होकर तत्कालीन लवेरा के ठाकुर गोविंददास भाटी ने उसे अपने पास रख लिया। गोविंददास भाटी उस समय मारवाड़ राज्य का प्रधान था। वह सदमल को अपने साथ जोधपुर-नरेश के पास ले आया। यहां आकर सदमल ने अपनी काव्य-रचना एवं विद्वत्ता के आधार पर जोधपुर-महाराजा शूरसिंहजी से विशिष्ट सम्मान प्राप्त किया। सदमल को दरबारी कवियों के मध्य स्थान मिलने के साथ-साथ संवत् १६५३ में महाराजा द्वारा लवेरा के निकट छींडिया-नामक ग्राम जागीर में प्राप्त हुआ जो अद्यावधि सदमल के वंशजों के अधिकार में है। छीडिया-ग्राम की जागीर के प्रमाण में महाराजा शूरसिंहजी ने ताम्रपत्र बनवा कर दिया जिसकी नकल निम्न है :—

श्री परमेश्वरजी

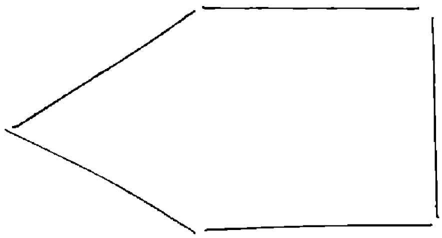

सही

श्रीकृष्णजी

सिधश्री महाराजाधिराज श्री सुरिजसिघजी बचनातु चारण सदू (सदमल) गांडण नूं मया करै गांव १ छींडीयौ उदकी अंबा रै पत्र लिखी दियौ। षेत्र २ वो सोयलामां है। षेत्र २ वो चाराळिया मां है छीडोया भेळा घाती देसी संवत् १६५३ वृषे वदि १२ दुवे श्रीमुख

गाडण-वंशावली से स्पष्ट है कि कवि केसोदास गाडण प्रसिद्ध कवि सदमल गाडण का सब से बड़ा पुत्र था। लिखमीदास, किसनदास और माधोदास इनके तीन और छोटे भाई थे। प्रारम्भ में कवि केसोदास अपने पिता को जागीर में प्राप्त ग्राम छींडिया में ही रहे। उनके पिता सदमल गाडण का देहावसान संवत् १६६९ में हो गया। गांव छींडिया की श्मशान-भूमि में सदमल गाडण की स्मृति में छतरी बनी हुई है जिसके शिला-लेख को यहां उद्धृत करना उपयुक्त ही होगा—

"स्वस्ति श्री आईनाथ सत्य संवत् १६६९ पोह सुदी १३ सोमवार दिन छत्रड़ो गाडण सदूजी सिर केसव लिखमीदास किसना माधवदास कांम करायौ ....देवलोक"

पिता की भांति कवि केसोदास ने भी अपने काव्य-चातुर्य एवं व्यक्तित्व के प्रभाव से जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह जी का राज्याश्रय प्राप्त किया।

महाराजा गजसिंहजी को अपने जीवन-काल में अनेक युद्ध लड़ने पड़े। कवि केसोदास ने इन युद्धों में प्राय: महाराजा के साथ ही रहे और उन्होंने महाराजा के रण-कौशल एवं उनकी शूरवीरता की प्रशंसा की। कवि केसोदास गाडण स्वामिभक्त तो थे ही परन्तु इसके साथ-साथ ईश्वरभक्त भी थे। ईश्वर में इनकी अटूट आस्था एवं अनुपम श्रद्धा थी। इनके समकालीन कवि महात्मा ईसरदास ने जिस प्रकार 'हरिरस' की रचना की है उसी प्रकार केसोदास गाडण ने भक्ति-विषयक 'विवेकवारता' ग्रंथ की रचना की। 'हरिरास' के सम्बन्ध में कवि केसोदास ने महात्मा ईसरदास की प्रशंसा करते हुए निम्न सोरठा कहा है—

जग प्राजळ तौ जांण अक दावानळ ऊपरा।
राचियौ रोहड़ रांण समंद हरि सूर वत॥

इसके प्रत्युत्तर में महात्मा ईसरदास ने कवि केसोदास की कविता से प्रभावित होकर कहा कि १२० शाखाओं के चारण-कवियों ने अपने परमार्थ के लिए ही 'विवेकवारता' (नीसांणी छंद) की रचना की है। इसके सम्बन्ध में महात्मा ईसरदास का निम्न सोरठा प्रसिद्ध है :—

नीसांणंद नीसांण केसव परमारथ कियौ।
पोह स्वारथ परमांण, सौ वीसोतर वरण सिर॥

महात्मा केसोदास के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि वे गेरुवे वस्त्र ही धारण करते थे और अपने आप को गोरखनाथ की शिष्य-परम्परा में मानते थे।[1]

१—इतिहास-प्रसिद्ध नेता मुंहता नैणसी अपनी संगृहीत गांवों की तवारीख में छीड़िया ग्राम के विषय में निम्न प्रकार से लिखा है—

छीड़ीयौ राजा श्री सूरसिंघजी रौ दत्त गाडण।
सदूं दूदावत नूं हमैं माधोदास बेटो सदू रो चारण॥

इसी पृ० १—यह किंवदंती प्रचलित है कि बाल्यकाल में खेलते हुए एक स्थान पर कवि केसोदास की भेंट एक साधु से हुई। चारण-जाति का जान कर साधु ने बालक केसोदास से कुछ कविता कहने के लिए कहा, तब उसने अपने पिता द्वारा रचित महाराजा शूरसिंघजी की प्रशंसा का एक गीत सुनाया। इस पर साधु के यह पूछने पर कि वह किसी साधु के बारे में भी कुछ जानता है तब केसोदास ने निम्न दोहा सुनाया—

सोहे मुदा सोवनी मुकुट जटा सिर माथ।
अमर हूओ घर ऊपरै रंग हो गोरखनाथ॥

इस सम्बन्ध में यह बात प्रचलित है कि एक समय राव रतन हाडा के निमन्त्रण पर वे बूंदी गए। इस समय उनके साथ एक अन्य कवि भी था। केसोदास साधु के समान ही गेरुवे वस्त्र धारण किए हुए थे और साथ वाला व्यक्ति सुन्दर वेश-भूषा में था। इसलिए राव रतन ने इसे ही प्रसिद्ध केसोदास समझकर उसका अत्यधिक मान-सम्मान किया और कवि केसोदास खड़े ही रह गए। केसोदास वहां से शीघ्र लौट पड़े। लौटते समय महल की सीढ़ियों से उतरते हुए, उन्होंने राव रतन के सम्बन्ध में अनेक दोहे कहे जिनमें से बहुत से अप्राप्य हैं। एक दो दोहे यहाँ द्रष्टव्य हैं—

गीतां दूहां कवतडां मूळ न राचै मन्न।
कपड़ो नूर खुदाय रो रीझे राव 'रतन्न'॥

कवि के जन्म-संवत् पर विचार —

पर्याप्त खोज के अनुसार आज भी प्रसिद्ध कवि केसोदास गाडण के जन्म-संवत् के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। ईश्वर-काव्य-गुम्फिका प्रथम भाग के अन्तर्गत प्रकाशित हरिरस की भूमिका में सम्पादक ठा० किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने यह प्रमाणित किया है कि ईसरदासजी का जन्म संवत् १५९५ में हुआ था। जैसा कि पूर्व के पृष्ठों में कहा जा चुका है, कवि केसोदास ने महात्मा ईसरदास के हरिरस की प्रशंसा की और ईसरदास ने कवि केसोदास-कृत विवेकवारता की प्रशंसा की।

केसोदास ने अपने 'गजगुण-रूपक-बंध' की रचना 'विवेक-वारता' के बाद में ही की, क्योंकि कवि गज-गुण-रूपक-बंध में मेवाड़ के राणा भीम सीसोदिया की मृत्यु-संवत् १६८१ लिखता है जो प्रामाणिक है, जब कि विवेक-वारता की प्रशंसा करने वाले महात्मा ईसरदास की मृत्यु के पश्चात् भी केसोदास अनेक वर्षों तक जीवित रहे। इस सम्बन्ध में एक यह भी प्रमाण है कि संवत् १६८३ में जोधपुर-नरेश गजसिंह ने केसोदास को सोबड़ास-नामक गांव जागीर में दिया था। अतः यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि केसोदास महात्मा ईसरदास के समकालीन होते हुए भी आयु में उनसे छोटे थे। ईसरदास की मृत्यु-संवत् १६७५ के आस-पास मानी जाती है और इस समय उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी

यह दोहा सुनकर साधु बड़ा प्रसन्न हुआ। कहते हैं कि यही साधु के आशीर्वाद से केसोदास को बाबा गोरखनाथ के दर्शन हुए। उन्होंने मन ही मन समझ लिया कि यही साधु गोरखनाथ है।

तो यह स्वाभाविक ही है कि संवत् १६८३ में महाराजा गजसिंहजी से ग्राम प्राप्त करने वाले कवि केसोदास का जन्म ईसरदास के जन्म-संवत् १५९५ के बाद ही हुआ होगा।

कवि केसोदास गाडण के पिता की मृत्यु-संवत् १६६९ के पूर्व ही हो चुकी थी, जैसा कि उनकी छतरी (स्मारक चिन्ह) के शिलालेख से प्रकट है और ईसरदास की मृत्यु-संवत् १६७५ के आस-पास मानी जाती है। दोनों ही के मृत्यु संवत् में कोई विशेष अन्तर नहीं है। कवि ईसरदास और केसोदास के पिता सदमल गाडण भी समकालीन ही थे। स्व० श्री किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने हरिरस की भूमिका में महात्मा ईसरदास का जन्म-संवत् १५९५ सिद्ध किया है। इसके आधार पर सदमल गाडण का जन्म-संवत् अनुमानतः १५८५ और १५९० के मध्य ही ठहरता है। केसोदास सदमल के सब से बड़े पुत्र थे और यदि २५ वर्ष की आयु में सदमल के प्रथम पुत्र का जन्म माना जाय, तो कवि केसोदास का जन्म संवत् १६१० से १६१५ के बीच ही माना जा सकता है।

कवि केसोदास के जन्म-संवत् के निर्णयार्थ एक अन्य घटना भी विचारणीय है। केसोदास के समसामयिक कवि पृथ्वीराज राठौड द्वारा प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेलि किसन रुकमणी री' की रचना-संवत् १६३७ में की गई। ग्रंथ की उच्चता एवं उसमें प्रकट अद्भुत कवित्व-शक्ति ने तत्कालीन कवि-समाज में उक्त रचना को पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रुचि होने में सन्देह उत्पन्न कर दिया। यह शंका की जाने लगी कि इस प्रकार की रचना किसी चारण कवि द्वारा ही की जा सकती है। इस पर महाकवि पृथ्वीराज राठौड ने इस शंका के निवारणार्थ कवियों का सम्मेलन किया जिसमें मारवाड़ के चार प्रसिद्ध चारणों को आमन्त्रित किया। ये चार कवि[1] माधोदास दधवाड़िया, केसोदास गाडण, माला सांदू तथा दुरसां आढा थे। चूंकि वेलि की रचना-संवत् १६३७ में हुई और १६५७ में इस ग्रंथ के ग्रंथकार पृथ्वीराज राठौड का स्वर्गवास हो गया। अतः यह सम्मेलन निश्चय ही संवत् १६४५ के आस-पास ही हुआ होगा; क्योंकि जब ग्रन्थ की रचना संवत् १६३७ में हुई तो इसके पश्चात् कुछ समम इसकी प्रतियाँ लिखने में लगा होगा और फिर इसकी प्रसिद्धि फैलने में ८-१० वर्ष का समय तो अवश्य ही लगा होगा।

१—'वेलि क्रिसन रुकमणी री' राठौड महाराज पृथ्वीराज-कृत, सम्पादक—ठा० रामसिंह व पं० सूर्यकरण पारीक, प्रकाशक हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग सन् १९३१ प्रथम संस्करण भूमिका पृ० ४६, ४७, ४८।

कार राठौड पृथ्वीराज का जन्म संवत् १६०६ में हुआ था और वेलि की रचना उन्होंने ३१ वर्ष की आयु में संवत् १६३७ में की थी। यदि चारण-कवियों के सम्मेलन को संवत् १६४५ के आस पास होना तथा उसमें कवि केसोदास की आयु ३०-३५ वर्ष के मध्य मानी जाय, तो उनका जन्म संवत् १६१० व १६१५ के मध्य ही ठहरता है। कवि केसोदास वेलि से बहुत प्रभावित हुए और इन्होंने इसकी प्रशंसा की।[1] इस पर महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ ने गाडण की प्रशंसा उन्हें गोरखनाथ का अनुयायी मान कर की—

केसो गोरखनाथ कवि, चेलो कियो चकार।
सिध-रूपी रहता सबद, 'गाडण' गुण-भंडार ।।

कवि केसोदास गाडण की मृत्यु कब हुई इसके सम्बन्ध में भी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हुई है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कवि लगभग १०० वर्ष तक जीवित अवश्य रहा है, क्योंकि वि० सं० १७०१ में आगरे में अमरसिंह राठौड़ अपनी कटार का जौहर दिखाकर वीरगति को प्राप्त हुआ तब कवि ने अमरसिंह राठौड तथा उसके लिए लड़कर वीरगति प्राप्त करने वाले बलू चांपावत आदि के लिए गीत कहे हैं[2]। इससे यह तो स्पष्ट ही है कि संवत् १७०१ तक तो कवि के जीवित होने के ठोस प्रमाण-प्राप्त हैं।

साहित्यिक विवेचना

गाडण केसोदास-कृत 'गज-गुण-रूपक-बंध' में तत्कालीन जोधपुर महाराजा शूरसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंहजी के शौर्य-वर्णन द्वारा वीर-भाव-निरूपण का ही मुख्य लक्ष्य रहा है। महाराजा गजसिंहजी अद्वितीय वीर पुरुष थे। कवि को ऐसे पराक्रमी वीर के आश्रय में रहने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

१—कवि केसोदास गाडण द्वारा 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' की प्रशंसा में कहा हुआ छप्पय यहां उद्धृत है—

वेद बीज जळ विमल सकति जिण रोपि सद्धर।
पत्र दोहा गुणपुहुप, वास लोभी लखमीवर ।।
पसरी दीप प्रदीप, अधिक गहरी आडंबर।
जिकै सुद्ध मन जपै तेउ फल पामै अम्मर ।।
विस्तार कीध जुग जुग विमळ धन्य क्रिस्ण कणहार घन।
अम्रत वेलि पीथळ अचळ, तैं रोपी कल्याण तन ।।

२—अमरसिंह राठौड़ व बलू चांपावत की मृत्यु पर केसोदास गाडण द्वारा रचित गीत इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में दिए गए हैं।

काव्य के प्रारम्भ में कवि-कर्म-परम्परानुसार मंगलाचरण-हेतु पंचदेव की स्तुति की गई है। तत्पश्चात् वीर-काव्य के नायक महाराजा गजसिंहजी की वंशावली का वर्णन है। मरुधर-नरेश शूरसिंहजी के कुल में उत्पन्न गजसिंहजी के बाल्य-काल का मनोहर वर्णन किया गया है। धीर-वीर गजसिंह जी में वीरता के लक्षण बाल्य-काल में ही प्रकट होने लगते हैं—

गात मेर गज भीम, महाजोधा ऊतळी बळ।
भुजां·डंड परचंड, जेम गंगाजळ ऊजळ।।
किरण कळकळ कमळ सकळ झाळाहळ निम्मल।
तेज-पूंज राजांन, धीर कांधोधर धम्मळ।।

महाराजा शूरसिंहजी बादशाही साम्राज्य के विरोधी शत्रुओं के दमन के लिए जब दक्षिण में चले गए तो उनकी अनुपस्थिति में कुंअर गजसिंहजी राज्य-कार्य-भार स्वयं सम्हालते हैं और अपनी इस प्रारम्भिक अवस्था में ही बालेसा, सींघल, सीसोदिया आदि राजपूतों को परास्त कर अपने राज्य का विस्तार कर लेते हैं—

सोलंकी सारे मछर मारे ढंढोळै पहाड़।
बालीसा बोए फौजां ढ़ोए मळवट्टै मेवाड़।।
सींधळ संघारे बोल उतारे, मेले दळ कळि मूल।
खागै खूमांणां रेहलि रांणा निज थांणा नाडूळ।।

इसी बीच अवसर निकाल कर कवि नगर, बाजार, तालाब व उपवन-वर्णन द्वारा वस्तु-वर्णन का चमत्कार भी प्रस्तुत करता है।

काव्य का समस्त कथानक युद्धमय वातावरण से ही परिपूर्ण है। उदात्त नायक गजसिंहजी के शौर्य का वर्णन कर कवि ने उनका चरित्र पूर्णरूप से उभारा है। बादशाह जहाँगीर स्वयं युवराज गजसिंहजी के अद्भुत शौर्य-प्रदर्शन से प्रभावित थे। उन्होंने शाही दरबार में युवराज का सम्मान किया। बादशाह जालोर के शासक से नाराज थे अतः उन्होंने जालोर का प्रांत शूरसिंहजी को दे दिया। राजकुमार गजसिंहजी ने जालोर को अपने अधिकार में करने के लिए चढ़ाई की और वहाँ बिहारी पठानों के साथ घमासान युद्ध कर अनेक पठानों को खेत रखा और विजय प्राप्त की—

भिळै कोट खग चोट बडा कमधां वरियांमां।
पड़ै राडि पट्टांण, चंद रवि चाडे नांमां।।
जाळंधर पलटियौ, बडो रिण जंग भारथ करि।
बीहारी बिढ़ दियौ, कियौ साको किणियागिरि।।

महाराजा शूरसिंहजी के निधन पर वि० सं० १६७६ में गजसिंहजी राज्य गद्दी पर आसीन हुए। महाराजा शूरसिंहजी अपनी अन्तिम अवस्था में दक्षिण के उपद्रवियों का दमन करने गए हुए थे अतः पिताजी के कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से गजसिंहजी भी अपने राज्य का कार्यभार आसोप ठाकुर राजसिंह को सौंप दक्षिण में बुरहानपुर चले गए। वहाँ रहते हुए आप बादशाही-विद्रोहियों को दबाने में पूर्ण सफल हुए। प्रत्येक युद्ध में महाराजा गजसिंहजी की हरावळ (सेना के अग्रभाग) में स्थिति उनके अद्‌भुत पराक्रम का ही परिचायक है—

खीन बरावा खड़कियो, ले मत्थै भर भार।
'गजण' कटक्कां हुई मुहिर, कळि मध्यण जोधार॥

× × ×

महम्मद चढ़े बहलो लखां, अं बं पिट्ठांण अणी।
चालिया चढे चतुरंग दळ, मुहि दे मंडोवर धणी॥

× × ×

सुहड़ साखेत सगळो समोधा।
हुआ हरवल्ल 'रिणमल्ल' 'जोधा'॥

× × ×

गज-गुण-रूपक-बंध महाराजा गजसिंहजी के दक्षिण के युद्धों के वर्णन का ही काव्य है। युद्धों में महाराजा की रणसज्जा, उनका हरावल में स्थान, रण-कौशल और अरि-दल का संहार ही कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है—

दळ भंजे दिखणाधरा, की गज बंध हटक्क।
गा नर सिंघ संपेखियो भूतां तण कटक्क॥
दल भंजे डेरा फरळि गमि दखणीं दहवाट।
गज केसरी घांसाडियो दोइणां वाळे दाट॥

× × ×

दक्खणी सेन आया अवांहं, पक्खरे तुरी पहिरै सनांहं॥
फाबि चतुरंग फौजां अचाळं, छप्पन कोडी फिरै मेघमाळं॥

राजस्थानी साहित्य के वीर-काव्यों में सेना-वर्णन के लिए विशेष रूप से जोगियों की जमात से उपमा दी जाती है। यह मौलिक सूझ कवि केसोदास गाडण की है। कवि ने इसी वीर-काव्य में—

असरंग विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस सिंघार लियं।
सिध बारह पंथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरखरूप कियं॥
कमधज्ज तजे मनमोह कायाचो, वीर तिसोह विसतयरियं।
ततले निरबांण क राजतियाग, गोपीचंद भरत्थरियं॥

जोगियों की जमात के साथ रूपक बांध योद्धाओं का सिद्ध-पुरुषों के अनुकूल वर्णन कर सेना का सजीव चित्र ही प्रस्तुत नहीं किया है, अपितु सैनिकों की अन्तर्भावनाओं को भी मुखरित कर दिया है। साधु-समाज के सिद्ध-पुरुषों को जिस प्रकार संसार के प्रति कोई मोह नहीं रह जाता और वे सांसारिक वृत्तियों से निर्लिप्त होकर ईश-आराधना में लवलीन हो जाते हैं उसी प्रकार युद्ध की ओर कूच करने वाले सैनिक भी सांसारिक मोह माया से पूर्ण विमुख हो जाते हैं। स्थूल संसार के प्रति विमुख होने की यह भावना ही उन्हें विजयश्री प्राप्त करने में सफल करती है—

बड रावत ऊससिया तिण वेळा, एम सुणे भुज आंमळता।
ललकार हुवो भड आवे लासां, छोड़े तेज तुरी छिलता॥
वरियांम लगांण पलांण बणावो, अेस उपाड़ै ऊकड़ता।
परचंड हुसंड किया तहि पक्खर, अंबर सांमा ऊछलता॥

कवि ने काव्य की निरन्तरता में देश-काल की परिस्थितियों को भी प्रकट किया है। बादशाही साम्राज्य का जहाँ तहाँ विद्रोह हो ही जाता था। जालोर के पठानों का उपद्रव, दक्षिण के अफगान सरदारों का विरोध बादशाही साम्राज्य के प्रति असंतोष ही प्रकट करता है। शासक-वर्ग में वीरों के प्रति सम्मान की भावना भी विद्यमान थी। स्वयं बादशाह जहाँगीर ने गजसिंह की सफलता पर प्रसन्न हो पुरस्कार प्रदान किया था—

महण रंभ मत्थियो, तेग तुडि दक्खन मारो।
पातिसाह हुइ प्रसन, हुकम किय पंच हजारी॥

× × ×

मंडोवर नर-समंद सीस मनसप वढारे।
दे नगारा तोग तुरी साकति सिंगारे॥
फुरमास सुपारसि मोकळी दिढ रामा दळथंभ तूं।
जागीर दीध जोगिणपुरै कणियागिर सांचोर सूं॥

सेना के कूच के वर्णन के साथ-साथ कवि ने रण में उन्मत्त बाजि-सेना का भी जो ओजस्वी वर्णन किया है वह भी द्रष्टव्य है—

चढ़िवा काज चंचळ। वाळि छूट वेंगागळ।
हरड़ किहाड़ा हीर। मांणके बोर हमीर।
गुरड़ सीहा गुलाल। चीतला चोरंगी चाल।
कविला काला केकांण। कमेत पंच किल्यांण।

× × ×

चौरंग दंत गयंदा चडंत, पाखांण भीत आंठूं पडंत।
धूनी विसाल चौड़ी धडेय, आंणां गुण घाते आपड़ेय॥

सेनावर्णन, युद्धवर्णन आदि से कवि को अवकाश ही नहीं मिलता। अनायास ही जोधपुर में महाराजा के स्वागत के समय कवि शृङ्गार रस को भी छू लेता है—

गजबंधी गढ़ आवियौ, मेरी घाड वळेय।
जोवै मांही जाळियां, गोरी गोख चढ़ेय।
गजबंधी बाधा विजै, मोती उच्छाळेय।
लूंण उतारै राइ-धी, चडियै अट्टाळेय।

इसमें, मिलन की सहज स्वाभाविक प्रफुल्लता को प्रकट किया गया है। इसी समय कवि ने नख-शिख वर्णन कर उक्ति-चातुर्य का परिचय भी दिया है—

के बाळा राइ-कुंअरि, केय मुग्धा कुळवंती।
के मध्या मांणणी, जिसी सूरज भायंती॥
पूगळभा पदमणी, कठिण असतन गज कुंभह।
चंपकवरनी तरणि, जंघ विपरीतक रंभह॥

पिक बांण जांण वेंणी पनंग, हिरणाखी हंसा-गयणि।
रंगमहल सिघ राजांन सुर, रमति राज-पुत्री रमणि॥

महाराजा गजसिंहजी जिस थोड़े से काल के लिए जोधपुर में आकर निवास करते हैं तभी तक के लिए कवि युद्ध से अवकाश पाकर शृंगार रस में रम जाता है। लेकिन शृंगार वर्णन के लिए कवि को अधिक समय नहीं मिलता। बादशाह जहांगीर के पुत्र खुर्रम का विद्रोह पुनः महाराजा को रण के लिए आमन्त्रित कर देता है। कवि पुनः वीर रस का सहारा लेकर अपने काव्य को आगे बढ़ाता है।

विद्रोही खुर्रम अपने दल-बल सहित सीकरी पहुँच कर अपनी सेना सुनियोजित करता है और वहाँ से दिल्ली की ओर कूच करता है। महाराजा गजसिंहजी के नेतृत्व में एक विशाल सेना खुर्रम को मार्ग में ही रोक लेती है। यहीं दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध होता है। युद्धवर्णन में कवि सिद्ध-हस्त है। कवि ने

शब्द-चित्रों द्वारा युद्ध को पाठकों के समक्ष सजीव बना दिया है। वर्ण-संयोजन एवं शब्द-सौष्ठव से ऐसा प्रतीत होता है मानो पाठक स्वयं युद्ध देखते हुए शस्त्रों की झनकार और रक्तधारा के बहाव को सुन रहे हैं—

खळहळे रत्त परनाळ खाळ, डोळियां पड़ै घड जूह डाळ।
फरड के कंध संधाए घट्ट, फरडक्कै फीफरां प्राळ फट्ट॥

× × ×

है तूट तुंड रुळि रुंड मुंड।
भाजै भुसुंड गै हाड गुंड॥

घोर-घमासान युद्ध में अनेक यशस्वी योद्धा खेत रह जाते हैं। अन्त में खुर्रम की फौज में खलबली मच जाती है और बागी शाहज़ादे की फौज भाग छूटती है। महाराजा गजसिंहजी को युद्ध में विजयश्री प्राप्त होती है।

समस्त काव्य में कवि गाडण ने जहाँ एक ओर सजीव युद्ध-चित्रण करते हुए काव्य के प्रमुख नायक महाराजा गजसिंहजी के अद्‌भुत रण-कौशल एवं अपूर्व पराक्रम का दिग्दर्शन कराया है वहाँ इतिहासप्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन-नियोजन भी उचित रीति से किया है। घटनाओं से सम्बन्धित स्थलों एवं व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ जहाँ तिथियों का वर्णन हुआ है उससे इतिहास-निर्माण में भी सहयोग प्राप्त होता है—

सोलह सै संमंत्त हूओ जोगणपुर चाळै।
सम्मै एकासिये मासा काती वहाळै॥
पूनम थावर वार सरद रित है पालट्टी।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रवट्टी॥
सुरतांण खुरम भागो भिड़ै, चाडि चकथी चक्कवै।
गजसिंघ प्रवाड़ो खट्टियौ, वहै भीम चीतोड़वै॥

रसास्वादन

'गज-गुण-रूपक-बंध' के वस्तु-विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत वीर-काव्य के कथानक का मूल आधार जोधपुर महाराज गजसिंहजी की दक्षिण फतह एवं शाहजादा खुर्रम के साथ युद्ध की घटनायें हैं। समस्त कथानक आदि से अन्त तक युद्ध के वातावरण से ही आवेष्ठित है। अतः यह स्वीकार्य ही है कि इस वीर-काव्य का प्रमुख रस वीररस है। रीतिकालीन कवियों की परम्परा रही है कि वे अपने स्वरचित ग्रन्थों में प्रायः सभी रसों का समावेश करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। राजस्थानी में रचित साहित्य भी इस

परम्परा से अछूता नहीं रह सकता। राजस्थान में अभी तक अधिकांश साहित्य राज्याश्रय में ही विकसित हो रहा था। कविगण वीर-रस की भूमिका पर ही साहित्य-सृजन कर रहे थे, फिर भी नवों रसों को अपने एक ही कथानक में एकत्रित करने से चूकते नहीं थे। कवि केसोदास गाडण ने भी अपने वीर काव्य 'गज-गुण-रूपक-बंध' के कथा-सूत्र में नवों रसों का नामोल्लेख कर इस परम्परा को निभाया है। यह तो मान्य है कि मात्र रस-नामोल्लेख से रस की निष्पत्ति सम्भव नहीं, काव्य-मर्मज्ञों के अनुसार तो यह ग्रंथ में दोष ही हो सकता है, अतः गज-गुण-रूपक-बंध में काव्य के प्रमुख वीर-रस के अतिरिक्त जिन अन्य रसों की परिगणना हो गई है उनकी विवेचना आगे की पंक्तियों में की जायेगी।

वीर रस—

गज-गुण-रूपक-बंध वीर-रस-प्रधान काव्य है। भरत मुनि ने वीर-रस की गणना शृंगार, रौद्र तथा बीभत्स आदि मूल रसों के साथ ही की है। वीर-रस का सम्बन्ध उत्तम प्रकृति वालों के साथ है। इसका स्थायी भाव उत्साह है—

'अथ वीरो नाम उत्तमप्रकृतिरुत्साहात्मकः।'

—ना० शा० ६ : ६६ ग

स्थायीभाव उत्साह का उदय, वीर आश्रय के हृदय में प्रतिनायक, शत्रु आदि आलम्बन विभावों के दर्शन से उत्पन्न होता है और उद्दीप्त होकर अनुभवों द्वारा प्रकट होकर एवं अनेकानेक संचारियों द्वारा पुष्ट होकर रस निष्पन्न होता है। यद्यपि वीर चार प्रकार के माने गए हैं—युद्धवीर, दयावीर, दानवीर और धर्म-वीर, तथापि युद्धवीर की परिस्थितियाँ अन्य सभी से भिन्न हैं। यह होते हुए भी स्थायी भावउत्साह सभी का एक ही है।

गज-गुण-रूपक-बंध महाराजा गजसिंहजी के युद्धों के वर्णन का ग्रंथ है। इसका प्रमुख नायक उदात्तधीर, उत्तम-प्रकृति-पुरुष वीरवर गजसिंहजी हैं। ग्रंथ में गजसिंह तथा इनके प्रतिनायक केहरि (कृष्णसिंह) करन, कर्मसेन, खुर्रम, सीसोदिया भीम, पहाड़खां, कल्याणसिंह सीसोदिया, हरिदास राठौड़, हरिसिंह भाटी आदि के युद्धोत्साह का सांगोपांग वर्णन हुआ है।

उठियौ तिणवार वडो उतळो बळ सूरजसिंघ सह बळ।
कोपनळ काळ भुजाळ कमंधज दोमजि भंजण सत्रुदळ।।
किरणावळि सूरजि जेम कळक्कळ धूण धजब्बड़ खेड़ धणी।
चख लाल कियां मुखचोळ बरम्रह मेळे भूहां मूंछ अणी।।

तथा

ऊठियौ 'गजरा' बरजागि आगि। जुड़िवा जडागि गयरागि लागि ॥
नीमभ्रँ भुज्ज नव सहस नाद। सादूळ सुरो किरि मेघ-साद ॥
वीरत्ति विढ़ेवा विळकुळेय। मुख राग मूछ भ्रूंहां मिळेह ॥
चख लाल कीध मुख कीध चोळ। कळकळं तेज विकसै कपोळ ॥

आदि छन्दों से स्पष्ट है कि वीरनायकों के हृदय वीरोत्साह से किस प्रकार परिपूरित हैं। योद्धा युद्धातुर प्रतीत हो रहे हैं। हो भी क्यों नहीं, स्थायीभाव के आलम्बन प्रतिनायक शत्रु के विभाव समक्ष है—

"केहरि" कहियौ सांभलौ ए खत्रीपरा राह।
बोल न जाये सूरिमां काया जाइ त जाह ॥

× × ×

उठियौ राउ भाटी लागे, अंबरि दोमजि वासिग खांड डहै।
जुध सूतौ कुंभकरन्न जगायौ, "गोइंददास" बाजांस ग्रहै ॥

× × ×

तवै 'भीम' वांका 'वचन्न' तिपारं।
खुमांणं आदू जुद्ध सूं खूंदकारं ॥
हुवै 'भांण' रा भीच आगै दुभल्लं।
'मनो' गोकळाणंद आखाड़ मल्लं ॥

अर्थात् शत्रु युद्ध के लिए ललकार रहा हो, सेना गज-बाजि सुसज्जित है—

गरजंत गजदल जूह सब्बळ करै मैंगल सारसी।
बंधंत चम्मर कसै हैमर पुट्ठि पक्खर आरसी ॥
पक्खरां रोल जला बोल किरि हिलोल सिंध ए।
चतुरंग फवजा चींघ धज्जां पुठि गज्जां बंध ए ॥

और धौंसा बज रहा हो—

वे घुरति नौबत्ति, तूर दम्मांग त्रिघाई।
तवल ताल कंसाळ, भरे बरघू सहनाई ॥

\+ + +

गडि गडि निसांण मेघ मंडांण अंबर भांण रज छाया।

\+ + +

गड गडै त्रंबक गोडि, रिणतूर कज्जे रोडि।
त्रंबक रोड़ि खड़े रिण तूरह, कायर कंपति रस्से सूरह ॥

श्रौर साथ ही युद्धभूमि में—

गरजंति धनख गुण बांण वरण घण खांडा।
खडि खडि खाट खडँ खडाखड़ झाट झडाझड खग्ग······ ॥

शस्त्रों की खनखनाहट श्रौर झनझनाहट हृदय को रोमांचित कर रही हो तो वीरों के हृदय में उत्साह क्यों नहीं जागृत होगा। वीर-हृदयों में उमड़ा हुश्रा उत्साह शीघ्र ही वीरोचितकृत्यरूपी श्रनुभवों से प्रकट होता है—

गज हैमर पक्खरैं, सिलह सुहर्डा पहरावैं।
श्राप कवच श्रोपवैं, सत्रै संग्राम रचावैं॥
डाब लोह खटत्रीस, श्राभ उपाड़ँ ऊंडल़।
तांणि निलै तिरसलो, भाग तीजैं ग्रहि साबल़॥

श्रारूढ हुए 'जैं' नांम श्रसि, रवि उग्गमाणि परगड़ँ।
गजसिंघ दमांमा गाजतां, चढ़ि श्रायौ तब चापड़ँ॥

इसी प्रकार—

खीजिया जोध वाहै खड्ग।
वहै विपरीत वेला करारी, गजबंधी ऊठियौ तेग भूडंड उभारैं।
कटे कड़ियाल वहै करमाल़, जुटत बहादर बाहु श्र जुद्ध······।

श्रादि श्रनुभाव वीरों के हृदय में उमड़े उत्साह को प्रकट करने के लिए पर्याप्त हैं। इस प्रकार श्रनेकानेक श्रनुभावों के द्वारा युद्ध के लिए परम उत्साह प्रकट करते हुए योद्धा रणोन्मत्त हो युद्ध में जुट जाते हैं—

जोधपुरो राजा जम्म जाल़। केवियां कूंत बाहै कराल़॥
है थाट पड़ँ पाधरी हीच। भारत्थ भिड़ँ गजसिंघ भीच॥

श्रौर युद्ध भयंकर रूप धारण कर लेता है—

रिण ताल़ खाल़ रत्त। श्रारांण हू श्राव्रत्त॥
जम जाल़ जूटै काल़। करि-माल़ काल़ कराल़॥

× × ×

खाल़ रत्त खलहल़ँ, जांण वरसाल़ नदी जल़।
गज तुरंग गुड्डिया, गुडँ भड हूवा गूंछल़॥
रुंडमुंड रोलिया, भीम पाडियौ भुजाल़ौ।
भारथ कुर-खेत रैं, हुश्रौ जुध लंका वाल़ौ॥

× × ×

सीसोदा कमधजां, जुद्ध मातौ जोधारां।
छाई घोर श्रंधार, धमस धारा श्रंगारां॥

पक्खरिया है पडै, ढहै ढँचाल् घँघगर।
जोण साल् ऊजडै, पडै सुहड़ा पंचाहर॥

× × ×

गज गाह 'भीम' 'गाजी' व्याहक लाडी लाडलै॥

और दुर्दान्त युद्ध की विकरालता को देख कवि को विवश होकर निम्न उदाहरणों का सहारा लेना पड़ता है—

जिम अरजण जुध करण, जेम भीम दूसासण।
जिम हणवंत जुध अखै, रामचदह जिमि रावण॥

+ + +

लखमण इंद्र जितह कियौ, साखि ससि सूरज।
'सूर' उत कियौ जिम 'अमर' सुत जुड गजपत्ती भीम जुध।

इस प्रकार आलम्बनों से उद्दीप्त और अनुभवों से प्रकट वीरोत्साह 'धन्न पराक्रम सूरतन' सुनने की चाह और 'वरे बड़ा वर अच्छरा' आदि संचारियों द्वारा पूर्ण पुष्ट हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में वीर-रस निष्पत्ति को प्राप्त होकर पूर्णोत्कर्ष को पहुँचा है।

महाराजा गजसिंहजी के सभी युद्धों का वर्णन कवि की वीररस वर्णन की निपुणता तो प्रकट करता ही है परन्तु काव्य ग्रंथ के अन्तिम भाग में महाराजा गजसिंह और मेवाड़ के राणा अमरसिंह के पुत्र भीम सीसोदिया के बीच युद्ध का वर्णन सर्वोच्च है—

सीसोदा कमधजां जुद्ध मातो जोधारो
…………………लाडी लाडलै॥

युद्धोन्मत्त गजसिंह जी को अर्जुन और भीम की उपमायें उस युद्ध-वर्णन को और सत्य बना देती हैं—

जिम अरजण जुध करण जेम भीम दूसासण
………………………गजपती भीमजुध॥

रौद्र रस—

सांगोपांग वीर-रस-वर्णन के बीच रौद्र को पहिचानना कठिन सा हो जाता है। कारण भी स्पष्ट ही है कि वीर-रस के स्थायीभाव क्रोध के लिए आलम्बन शत्रु अथवा प्रतिनायक एवं उद्दीपन उनकी चेष्टायें हैं। दोनों के अनुभावों में भी सादृश्य है। कभी कभी रौद्रता में वीरत्व और वीरत्व में रौद्रता का आभास मिलता है। इतना होते हुए भी स्थायीभावों में अन्तर होता है।

इसी कारण से इसकी गणना प्रधान रसों में की गई है। राजस्थानी वीर-रस-काव्यों में वीर-रस के साथ रौद्र-रस के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। प्रस्तुत काव्य में युद्ध की विशेष परिस्थितियों में युद्ध-नायकों में उत्पन्न होने वाली खीझ एवं उनमें उत्पन्न कुपित भाव को कवि ने यथास्थान पर प्रकट किया है।

शाही दरबार में जब स्वयं बादशाह गोविन्ददास को मारने के लिए सरदार केहरि को उकसाता है तो केहरि उत्तेजित होकर गोविन्ददास को ललकारता है—

"केहरि" कहियौ पैज करि, ग्रहिए चंद-पहास।
'गोइंद' गिणिया मारियौ, पख एकरिण काइ मास।

तो गजसिंह का कुपित होना स्वाभाविक ही है—

"गज बंधो" इस आखियो कवि धूणे करमाल।
"गोइंद" माथै आवसी त्यां सिर आयो काल॥

जहांगीर बादशाह को अपने पुत्र खुर्रम के बागी होने की सूचना मिलने पर उसे क्रोध उत्पन्न हुआ है उसका चित्रण कवि ने अनूठा किया है—

जले पट्ट जहांगीर, दुक्ख लगो दावानल।
घड़ हड़ि पौरसि विखै, घ्रित आहुज का मंगल॥

और

हठ वादा हजरति, कोपि हठियौ कालन्नल।
प्रलैकाल उतपात, जाण बंधी वड मंडल॥
आप मुख कियौ हुकम, चोट हुइ नग्गारां।
चडे भीच चचलै, कूच कियौ दलकारां॥

जिहगीर कहै जमरूप हुई, खुरम कहों जाइ बप्पड़ौ।
पैसे पयाल अंबर चडै, जिहां जाइ तहां पक्कड़ौ॥

बीभत्स रस—

युद्ध-वर्णन में जहाँ वीर-कर्म प्रकट करने के भाव से कवि नाना प्रकार के आलम्बनों, उद्दीपनों के द्वारा वीर-नायकों में उत्पन्न उत्साह को विभिन्न अनुभावों से प्रकट कराता हुआ विविध संचारियों से पुष्ट कराता है तब प्रसंगवश बीभत्स के दृश्यों का उपस्थित होना स्वाभाविक हो जाता है। गज-गुण-रूपक-बंध का अधिकांश भाग युद्ध-वर्णन का ही है। रणक्षेत्र में जहां वीर-नायक वीर-रस के स्थायीभाव उत्साह से परिपूरित हो 'भ्रूहां मूछ अणी कर चख लाल' और 'मुख चोल' कर स्वयं काल का विकराल-रूप धारण कर परस्पर बल तोलते हैं—

खग हुए खंडा खंड करि डंडी हड, रिण भूइ रींहड़ रत रिड़ै ।
वीहारी वडि वडि तूटै घड़ि घड़ि अणियां चढि चहि अञ्भ अडै ।
झलरि कवि झणिहण दिसि गंणंगणि तोमछ छणमण तेग तणै ।
असमांन अथर बण रचै रांमाइण रांम रांवण उभै रिणै॥

वहां—

रिण ताल् खाल् रगत, आरांण हूं आवत ।
खल कंत स्रोणी खाल् पावस्स करि परनाल् ॥
वैताल् वीर मिलिया विहह ।
सीकोतरि सांकरिण महा सह ॥

और

हेकठा हुआ वलि् तणै हेत, पल्हारि वेंतर भूत प्रेत ।
खेचरा भूचरा खेतपाल्, कालि्का पुत्र भैरव कंकाल् ।

का दृश्य उपस्थित होता ही है ।

जालोर के पठाणों से युवराज गजसिंह के हुए युद्ध का बीभत्स दृश्य यहां देखिये:—

हसि जोगणि हड हड, गोलीरत गड गड, मंडै खफर पत्र मिल्ँ ।
तिल तिल हुइ टूकड़, वेलं तुर भड़, मच्छक तडफड़ तुच्छ जल्ँ ।
जंबक जख प्रघल मिलिया सम्मल् होऊं हूकल्रत हिल्ँ ।
डाइणि मख डल् डल् चूंपै चल् वल् पल् भैरववल् वल् भूत भिल्ँ ।

बागी खुर्रम की सेना के साथ महाराजा गजसिंह ने घोर घमासान युद्ध किया । अनेक शूरवीर धराशायी हुए । रक्त की नदियां प्रवाहित हो गईं । ऐसे स्थल पर कवि द्वारा वर्णित बीभत्स दृश्य दृष्टव्य है:—

नवै कोडि कतियोंण छप्पन कोडी चौमंडा ।
चौसट्ठी जोगणी, बीस चहे भुज डंडा ॥
रगत पिद्ध वलि् लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती ।
कियो संकर सिंगार रुंडमाल्ा गल् घत्ती ॥
कौतग्गि दीठ भासंकरह वरे वडा वर अच्छरां ।
राठोड़ दीध रण चाचरहि घूहड़ धवड़ पलच्चरां ॥

भयानक रस—

काव्य का कथानक जब युद्ध की घटनाओं से पूर्ण आवेष्टित है और जहां घनघोर युद्ध के दृश्य उपस्थित हैं वहां भयानक रस की सृष्टि होना संभव ही है । वीर नायक युद्धातुर हो रण के लिए एक दूसरे को ललकारते हैं, धौंसों और तुरही से गगन गूंज उठता है तो प्रस्तुत काव्य का कवि युद्ध में उत्पन्न भयानक स्थितियों के साथ हमारे सम्मुख आ ही जाता है ।

गुढै जूह मद-गंध सेन अनमंघ सुभट्टह ।
घड बेहड करड कटै को पट्ट भ्रिकुट्टह ॥
रगत खाल् परिनाल् लगै पग्गां पायाहल् ।
नवै कुली नागिंद्र हुआ खोणी बंबाहल् ॥
ऊजलै हूंत हूओ अरण सेसनाग सेहस - फुणी ।
तिण वार डरै तिण कारणैं, पेख पदमण नागणी ॥

फौज के कूच के समय नगाड़ों की घोर गड़गड़ाहट—

बे घुरत्ति नौबत्ति, तूर दम्मांम त्रिघाई ।
तबल् ताल् कंसाल् भरे बरघू सहनाई ॥

समुद्र की तरह फौज उमड़ना, आकाश में धूल के बवंडर छा जाना है—

खुर रज ऊछली, रजी लग्गी रवि मंडल् ।
घडी सेस सिरहत्थ पुहवि गाहट पग्गांतल् ॥
कमठ भार कसमस्स दाढ बाराह खडक्कै ।
मंडल् मेर मेखला धमस धूली खि ढक्के ॥

और सेना का पर्वताकार एवं विशाल मेघकाय होना—

फाबि चतुरंग फौजां अचाल् ।
छपन कोडी किरै मेघमाल् ॥

निश्चय ही भयानक स्थिति प्रकट करते हैं ।

बागी खुर्रम के विरुद्ध महाराजा गजसिंह के नेतृत्व में शाही सेना का कूच देखिये—

गोधूल् गयण लग्गं, साहण उलट्टि सेन समूहं ।
है-पाइ गाहि बंका, सर पघरी कीय पहाडहं ॥
सरपां नव कुल्।णिय, महि मंडल मेर मेखला ।
परबत अस्ट-कुलीस, धरणी-धर धूजिया त्रिण ऐ ॥

श्रृंगार रस—

युद्धभूमि में अपूर्व रण-कौशल दिखा विजयश्री वरण कर और शाही दरबार में सम्मान प्राप्त कर वीरनायक का गर्व से अपने रनिवास में प्रवेश करना और वहाँ अपनी लावण्यमयी रानियों से स्वागत में प्रेम-पुष्प एवं प्रेमालिंगन प्राप्त करना अप्रासांगिक नहीं हुआ है। वीर काव्य गज-गुण-रूपक-बंध के प्रणेता कवि गाडण ने अपने काव्य में वीर रस का अजस्र स्रोत बहाते हुए यहीं श्रृंगार रस-वर्णन का अवसर प्राप्त कर ही लिया। यद्यपि महाराजा गजसिंह के शौर्य-

वर्णन के साथ श्रृंगार-वर्णन का कवि का उद्देश्य नहीं रहा है फिर भी स्थिति उपस्थित होने पर कवि ने काव्य-खण्ड में सरसता लाने के लिए स्थिति का लाभ लेते हुए श्रृंगार-रस का वर्णन कर ही दिया है। प्रारम्भ में कवि ने अन्तः पुर की सुकुमारियों के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया है—

वप सोलह सिणगार वनित्ता। लखण बतीस संजुगत ललित्ता।
सोभा सारिख किरण सवित्ता। दीपै मंदर राज-दुहित्ता।
कनक-लता पत्र वसन्नक कांमणि। भूंहा भमर विराजै भांमिणि।
चपल-नयण प्रफुलत चंदांणण। किरि पेखे हि-मिगो कमोदणि।

काव्य के नायक महाराज गजसिंह के रनिवास का वर्णन करते हुए कवि वीर-नायक की वीर-रमणी के नख-शिख-वर्णन का अवसर निकाल ही लेता है। यह नख-शिख वर्णन समीचीन एवं प्रसंगानुकूल ही प्रतीत होता है। अनावश्यक ठेल-पेल नहीं हुई है—

चपल नेत्र सारंग, रेख भ्रूहा मकरंद।
दीपक नासा दिपंत, सरदरैणी मुख-इंदह।
डंसण बीज दाडंम, वेणि-वासंग-भुयंगम।
भटियांणी वर कमध-समद गंगानदि संगम॥

"कलियांण" सघू मोटै कुलहि सुवत महातम सुरपुरी।
इधकार सील अधिक वडै, जमलि कंत जैसल गिरि॥

कवि ने रूप-सौन्दर्य एवं नख-शिख वर्णन के लिए जहाँ विविध उत्प्रेक्षाओं एवं उपमाओं का सहारा लिया वहाँ वीरोचित नायक के कुल की मर्यादा का भी पूरा पूरा ध्यान रखा है—

लोयण चंचल चपल, अचल घू जिम मन धारण।
कडि मयंद मुख इंद दीरघ वंणी अहि दारण॥
मद गयंद गतिमंद, काया जांणै प्रभ कदलि।
वपि चंपक दल वरण सीस गुंजार करै अलि॥

सत्र साल पठोजै वीरभद्र प्रघट जांम है मह प्रथी।
जाइ धीज 'जसवंत' जांम घु जिसी गंगा भागीरथी॥

महाराजा गजसिंहजी के अन्तःपुर में आगमन के समय कवि ने वीर-नायक की वीर-रमणियों के रूप-वर्णन के साथ मिलन-सुख का भी मनहारी वर्णन किया है। संयोग की कल्पना में अपार सुख का अनुभूति स्वाभाविक ही है—

आज हुआ किल्लांण सह, आज हसंदा मुक्ख।
आप पधारे आंगणै साहिब दीना सुक्ख॥

राजा झूलरि रांणियां सोहै ईहीं भंति।
किरि वेधांणै किरतियां चंदो पूनम रति ॥

प्रियतम के पाते ही प्रिया के सभी मनोरथ पूर्ण हो गए और मन-कमल खिल उठा—

सर्वं मनोरथ पूरिया, सव्वं पूरी आस।
जांण कमोदणि सिस उदै, तन मन हुआ विकास ॥

इस प्रकार कवि ने अपने वीर काव्य में शृंगार की परम्परा को निभाते हुए तत्कालीन सामंती-परम्परा एवं राजमहलों के जीवन की झलक भी प्रस्तुत की है—

एक खड़ी मुख-रूप निहालै । एक खड़ी सिर चम्मर ढ़ालै ।
कांमलता पिण कणक वरन्नी । पास खड़ी सुख रास पतन्नी ।

\+ \+ \+

दे सोतां धूहड़ भूलक्की । चंपक वरन कली किरि पक्की ।
सांम सनमुख आवी सक्की । सह बैठी सिणगार चवक्की ॥

अलंकार

काव्य में चित्ताकर्षक रमणीयता के उत्पादक अलंकार ही हैं, यह निर्विवाद मान्य है। कविता-कामिनी सभी अंगों-उपांगों से परिपूर्ण होने पर भी अलंकारों के अभाव में सौभाग्यशालिनी हो ही नहीं सकती। गज-गुण-रूपक-बंध में यद्यपि कवि का कर्म अलंकार-निरूपण नहीं रहा है फिर भी वर्णनानुकूल काव्य में अलंकारों का समावेश हो ही गया है। प्रस्तुत रूपकबंध आद्योपान्त पढ़ने से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि अलंकारों के प्रति ग्रंथकार की न तो उत्सुकता ही रही है और न उदासीनता ही। ग्रंथ के मूल चरित्र महाराजा गजसिंह की वीरता का वर्णन ही कवि का लक्ष्य रहा है। अतः वर्ण्य विषय के साथ अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हो गया है। समूचे काव्य में वस्तुवर्णन की धारा अबाध गति से प्रवाहित हुई है। उसी में नाना प्रकार के अलंकारों की उपस्थिति से कविता सौन्दर्याभिमुख हो गई है।

राजस्थानी काव्य-परम्परा का शब्दालंकार वयण-सगाई तो सर्वत्र छाया हुआ है। प्रायः प्रत्येक छद में, यहाँ तक कि छन्द के हर चरण में वयण-सगाई का पालन हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वयण-सगाई का पालन कवि-कर्म का प्रमुख अंग बन गया है। काव्य में यमक और श्लेष के भी पर्याप्त

उदाहरण प्रस्तुत हुए हैं। इनके अतिरिक्त शब्दालंकार में पुनरुक्तवदाभास तथा वीप्सा के उदारण प्राप्य हैं।

काव्य-ग्रंथ में अर्थालंकारों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं तथा रूपक की बहुलता रही है। यथास्थान एवं अवसरानुकूल कवि ने अपने उक्ति चातुर्य का भी परिचय दिया है। काव्य में उक्तियों का प्रयोग प्रसंगानुकूल एवं स्वाभाविक हुआ है। काव्य में अलंकार कहीं भी बोझ-स्वरूप नहीं हुए हैं और न ही उनके प्रयोग से वर्णन में कहीं अवरोध ही उपस्थित हुआ है। अनेकानेक स्थलों पर स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त अलंकारों के मध्य काव्य-प्रवाह अनवरतरूप से प्रवाहित होता रहा है। रूपक-बंध में प्रयुक्त अलंकारों के कतिपय उदाहरण यहां समीचीन ही होंगे—

अनुप्रास—

'गज-गुण-रूपक-बंध' समस्त काव्य ही अनुप्रास की छटा से आच्छादित है। दोहे और छन्दों आदि के प्रत्येक चरण में अनुप्रास अलंकार किसी न किसी रूप में मिल ही जाता है—

कटै कडियाल वहै करमाल़। कुटक्के कोपर कंध कपाल़॥

\+ \+ \+

विप्पल़ां पल़ां आवल़ां बाढ़। ग्रीघल़ां खल़ां सावल़ां गाढ़॥
साबल़ां हुल़ां मैंगल़ा सल्ल। ढैचल़ां ढल़ां तूलाह ढल्ल॥

वयण सगाई—

राजस्थानी काव्य-साहित्य का यह अनिवार्य शब्दलंकार है। कवि ने मुक्त भाव से इसका प्रयोग अपने काव्य में किया है—

हेम में जडित हीर। जूमल़ै मौजा जंजीर।
दूसरे गंगा दवाढ़। जडी कडी जमदाढ़॥

\+ \+ \+

कुंजरां ढूंहरी ढाल कुंभा-थलं।
वादल़ा जांण फाबत वींजा-चाल़ं॥
घम्मल़ी पीयल़ी लाल नीली धजं।
गाजता जांण गोरंभ दीसै गजं॥

वीप्सा—

घडहडि घक घोम वलिक खग घड़ि घड़ि ।
रावत वडि वडि रोस चडै ।
गडि गडि नीसांण गयण किरि गडि-अड ।
खांडा खडि खडि खाट खडै ।।

यमक—

अणुहार अखाडौ इंद्र रौ जोघहपुरी इंद्रपुरी ।
'गजसिंघ' इंद्र राजंद्र गति सरब इंद्र सांमग्गरी ।।

उपमा—

कवि ने काव्य-ग्रंथ में वस्तु-वर्णन के लिए अनेक उपमाओं का सुसंयोजन किया है—

जिम घायौ जोगेस, बसहु दिख ज्याग विधूसण ।
जिम घायौ ग्रह बांण पत्थ गौ ग्रह छाडावण ।।
जिम घायौ हणमंत द्रोण - पब्बै उत्पाडण ।
जिम घायौ भीमेण दंत लंक मीर विभाडण ।।

पित वैरक घायौ फरस - घर संघारण सहसा - रजण ।
घायौ कमहुघ ढिल्ली दलां, जिम अनंत गज - उग्रहण ।।

\+ \+ \+

चख चंचल मन अचल कमल चख भुहां अलीअल ।
तन ऊजल पति रत्त रूप भरता रुचि मंझल ।।
केहरी जिम कडि क्रिस्स लगति चालंती गजिंद्रह ।
सोभति वैणी सरप हरै घीरज्ज खगिंद्रह ।।
कुल मोटे बहुवाँ कुल घुवाँ मांन महातम निरवहै ।
कण सूप जिहीं औगण तजै, गुण मोताहल जिम ग्रहै ।।

रूपक—

करिमरि कंकण सुकरि नेत्र बाधो सिखरालह ।
वार रस्स वरसोह कंठ लज्जी वरमालह ।।
विकट रूप वीदणी, खुरम घड़ कीघ आडंबर ।
लगन प्रब्ब रणताल घमल मंगल सिंधु-सूर ।।
अघपती बहुतरि ऊमरा सतरि - खांन सुरतांण रा ।
दलथंम 'गजण' दुल्लह हुऔ जांन सैन जोगणपुर ।।

\+ \+ \+

चपल नेत्र सारंग, रेख भूहाँ - मकरंद ।
दीपक - नासा दिपंत, सरद वेणी मुख इंद्रह ।।
डंसण - बीज दाडंम वेणि - वासंग - भुयंगम ।
भटियाणी वर कमध समद गंगा-नदि संगम ।।

उत्प्रेक्षा —

प्रचंडै गोलॅ नाल प्रचंड । बहंते है कंपियो ब्रहमंड ।
जुडंत खुरंम अने जिहगीर । तिडां किरि अंबर उड्डै तीर ।।

+　　　+　　　+

त्रिज्जडां त्रिजड वाजै नित्रीठ । डंडे हड गेहरि जांण दीठ ।।
उड्डै तिभच्छ खागां अघात । आकास जाँण उल्लका-पात ।।

छंद—

मध्यकालीन साहित्य में छंद-वैविध्य का प्रचुर प्रयोग रहा । हिन्दी-साहित्य के रीतिकाल में लाक्षणिक ग्रंथों की रचना एवं पांडित्य-प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा के कारण तत्कालीन कवियों ने संस्कृत और हिन्दी के अनेकानेक छंदों में काव्य-ग्रन्थों की रचना की । इसका प्रभाव राजस्थानी-साहित्य पर भी पड़ा । यद्यपि राजस्थानी-साहित्य में संस्कृत एवं प्राकृत के छंदों का प्रयोग पूर्वकाल से ही चला आ रहा था परन्तु मध्यकाल में राजस्थानी एवं हिन्दी के अनेकानेक छंदों का प्रचुरता से प्रयोग किया जाने लगा । "गज-गुण-रूपक-बंध" में भी कवि ने पचास से अधिक छंदों का प्रयोग किया है । संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी एवं हिन्दी के अनेक छंदों के प्रयोग से यह तो स्पष्ट ही है कि कवि छंदशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे । विभिन्न छंदों की शैली में वीरकाव्य की रचना करने के पीछे कवि द्वारा आचार्यत्व प्रकट करने की भावना नहीं है । कवि का मूल लक्ष्य अपने आश्रयदाता का वीरवैभव एवं पराक्रमपूर्ण उज्ज्वल चरित्र ही चित्रित करने का रहा है ।

अपने ग्रन्थ में कवि ने संस्कृत के त्रोटक, काइव (काव्य) विद्युतमाला, भुजंगी, मोतीदाम, संयुक्ता छंदों का प्रयोग किया है । विदून्माला, विज्जूमाला, विदूमाला, विद्युतमाला के ही रूपभेद हैं । हिन्दी के बेअखरी, बैताल, पद्धड़ी, भ्रमरावली, अडिल, अर्द्धनाराच, ऊधोर, चांद्रायण, चौपाई, त्रिभंगी, नाराच, मोदिक, रूपक गति, लीलावती, विराज, हणूफाल छदों का प्रयोग अधिकार-पूर्ण ढ़ंग से हुआ है । डिंगल के छंदों की रचना में कवि सिद्धहस्त थे । अपने रूपक-बंध में गाथा, गाहा, झंपताली, डंडीयल, तवत, दुपइ, दुमला, पोमावती,

मथांण, मेहांणी, रंगिका, रेड़को, रसाउला, सिंहावलोकण, सारसी, हाकुटिया छंदों का सफल प्रयोग किया है। विषयानुकूल छंदचयन कवि की विशेषता रही है।

पुस्तक के आकार में अवांछनीय वृद्धि के भय के कारण ग्रंथ में प्रयुक्त छंदों का मात्र नामोल्लेख ही हो पाया है। छंदों की परिभाषा एवं लक्षण के अभाव में जिज्ञासु पाठकों को छंद-परिचय में कठिनाई अवश्य होगी परन्तु सुविधा की दृष्टि से छंदों की जानकारी के लिए आवश्यकतानुसार छंदग्रंथों का सहारा लिया जा सकता है। पाठकगण मेरी विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

भाषा - शैली

'गज-गुण-रूपक-बंध' युद्धों में प्रदर्शित नायक गजसिंह के अद्भुत पराक्रम एव रण-कौशल के वर्णन का वीरकाव्य है। सम्पूर्ण काव्य में वस्तु-वर्णन की ही प्रधानता रही है इसलिए ग्रंथ में वर्णनात्मक-शैली का ही प्रयोग हुआ है। ग्रंथ में विविध परिस्थितियों के बीच भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रसंग उपस्थित हुए हैं। वहाँ कवि ने बड़ी चतुराई के साथ अपना भाषाधिकार प्रगट किया है। वीररस-प्रधान काव्य में जिस उत्तम-शैली की अपेक्षा की जाती है उसके दर्शन निश्चय ही हमें प्रस्तुत ग्रंथ में होते हैं। शत्रु को रण की चुनौती, संघर्ष की विकट स्थिति, वीरों की रणोन्मत्त दशा एवं भयंकर रण-स्थल का जिस प्रसंगोचित भाषा में वर्णन हुआ है उसमे कवि की रस-निष्पादन की अपूर्व क्षमता स्वीकार करनी ही पड़ती है। संघर्ष-रत वीरों का वर्णन तदनुरूप शब्दावलि में देखिये—

भट्टकै भोर फार्ट झराड। झीकी पडंत आसुरां झराड।
मरगडां जूह मुरडंत माड। चूनौ हुइत चौसट्ठि हाड॥
त्रिज्जंडा त्रिजड बाजै निश्रीठ। डांडे-हड गेहरि जांण दीठ।
उड्डै तिमच्छ खागां अघात। आकाश जांण उल्लकापात॥

प्रसंगानुकूल कोमल-कान्त पदावलि भी द्रष्टव्य है :—

कमल् सयण बिलकुलै, मज्झि उर कमल् विकासै।
कमलि कमलि सुभ वदण, कमलि दुरिजण निकासै॥
कमल् पेख उणहार, कमल्वदनी - मुख मोहै।
कमल् - नाभ थिय क्रिया, छभा परि कंमल् सोहै॥

(५८-१)

पिक - बांण जांण वैणी पनंग, हिरणाखी हंसा - गमणि।
रंग - महल सिध राजान सुर, रमति राज - पुत्री रमणि॥

(१११-४)

प्रायः चारण कवियों के ग्रंथों में द्वित्व वर्णों की अधिकता का दोषारोपण किया जाता है परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। ध्वनिविशेष के ज्ञानाभाव एवं ग्रंथों का गहन अध्ययन न कर पाने के कारण यह मात्र अनुमान सा ही प्रतीत होता है। रूपक-बंध इस बात के लिए प्रमाण है। विविध प्रसंगों में शब्द-वैविध्य अवश्य है परन्तु द्वित्व-दोष नहीं आया है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं :—

वर तुरंग उत्तंग, करण साकति विराजित।
मदोमत्त मातंग जांण, जल् बादल् गरजित॥
पहरावै सपिया, पटासन पैरावत्ता।
मौड बंधां ठाकुरां बडा सोहडी सामंतां॥
दे गांम तुरी द्रव लाख दे, हसत वंध कीया सुकवि।
कुरियंद 'गजैसी' कापियौ, गयौ समंद पै'लौ पहवि॥

(५ -६)

स्रोण झील कमकमै, कियै करिमरां चडाए।
रचे सेज रिण-भोम, कुसम अरि कमल् बिछाए॥
नखस तिक्ख सरकूंत, सहै अन-मंघ अवग्गल्।
पांण पयोहर कठण, मथै मैंगल् कुंभा-थल्॥

(१४१-५)

सपत दीप नवखंड, सपत दधि जल् थल् महिअल्।
एक भाग हुज रत्त, मारि लीयौ महि मंडल्॥
पछिम देस पारंभ, लियौ लोहां उप्पाडं।
पूरब दिसि पतिसाह, लियौ लखदल् बिढ्भाडं॥
उतराध खंड असपति लियौ, दखण राज जोगणपुरै।
अकबर जलाल खाटी इला, जिती साह जिहगीर रै॥

(६२-२)

सम्पूर्ण ग्रंथ में कवि ने शुद्ध साहित्यिक राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया है। ग्रंथ वीररस-प्रधान होने के कारण भाषा ओजपूर्ण तो है ही, फिर भी प्रसादगुण ने भाषा को पूर्ण प्रवाहमयी बना दिया है। बोल-चाल के सामान्य शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण भाव-दुरूहता बिल्कुल नहीं रह गई है। प्रसाद-गुण-युक्त भाषा-प्रवाह का उदाहरण देखिए—

राजा राणा मेलिया, कीध उकीलां वत्त।
वाद वडां सूं छंडियै, एहस आदू मत्त॥१॥
राणै राजा नूं कह्यो, मेल्हे परधांनांह।
साह पगै धुन मोकलूं, जो थे अप्पौ बांह॥२॥

(२१-१-२)

देशी भाषाओं पर राजनैतिक प्रभाव के कारण अरबी-फारसी का प्रभाव पड़ चुका था। कवि की भाषा इस प्रभाव से वंचित न रह सकी। रूपक-बंध की शुद्ध राजस्थानी में कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्द प्रयुक्त हो गये हैं, परन्तु उन सभी का प्रयोग जन-साधारण की बोल-चाल की भाषा में सामान्य प्रयोग होने के प्रभाव से अनायास ही हुआ है जान-बूझ कर विदेशी शब्दों को भरने की वृत्ति कवि की नहीं रही है। जरद, असमांण, स्याह, सबज, जोरदार, लसकर, हसम, हजरत, कूच, दरकूच, उकील, खिजमती, मुकाम, रहमांन, खुरसांण, खबरदार, दरबार, हुकम, सरहद, फौज, मीर, बहादर, फजर, सुल्तांन आदि जिन अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है, वे जन-भाषा में व्यवहृत हो रहे थे।

काव्य-रचना में पाद-पूर्ति की प्रथा प्रचलित है। संस्कृत-साहित्य में भी इसके उदाहरण विद्यमान हैं। अमरकोश-कार ने, तु, हि, च, स्म, ह, वै, पादपूरणे—कह कर तु, हि, च, स्म, ह, वै को पादपूरक अव्यय शब्द ही बतलाया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में यद्यपि पादपूर्ति की बहुलता नहीं है, फिर भी यत्र-तत्र, क, ह, स वर्ण पाद-पूर्ति के लिए प्रयुक्त हुए हैं। यथा:—

गुजर मांडव खंघार, प्रगट गढ़ परबत भाल्ह ।
रोहितास उड्डीस, गोलकूंडो बंगाल्ह ।।

(६२-१)

गाइत्ति एक आप ग्रेह, मांणसीस मंगल्ं ।
चमीर हीर हार चीर कांन हेम कुंडल्ं ।।

(१३-१०)

डोहंत सूंडा डंड ए । स्रीखंड सरपक हिड ए।
गज-वाग मत्थै मैंगलां । बल्कत्त बीजक बद्दलां ।।

(७२-४)

प्राचीन राजस्थानी कवियों की यह परम्परा रही है कि वे व्यक्ति एवं स्थानविशेष के नामों को तोड़-मोड़ कर नाना रूप में प्रकट कर देते थे। इस रूप-भेद के पीछे प्रायः शब्द का महत्ववाची अर्थ एवं अल्पार्थ का ही आधार था। प्रस्तुत ग्रंथ में जो नामविशेष के रूप-भेद प्रयुक्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं-

राव गांगा के लिए निम्न रूपभेदों का प्रयोग किया गया है—

गंग, गंगा, गंगे गंगेव, गांगे, गांगौ।

महाराजा गजसिंह के लिए निम्न प्रयोग किये गये हैं—

गज, गजणं, गजण, गजपति, गजपत्ती, गजबंध, गजबंधी, गजमल्ल, गज-साह, गजसिंघ, गजसींघ, गजसींह, गजसीह, गजेसा, गजैसी, गज्जण, गज्जणवै, गाजो, गाजीसाह ।

इसी प्रकार खुर्रम के लिए निम्न हैं—

खुरम, खुरमि, खुरम्म, खूरंम, खूरम ।

उपर्युक्त रूपभेद की सूची से स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे शब्दों या स्थानों को राजस्थानी भाषा-विज्ञान, व्याकरण, राजस्थानी संस्कृति आदि के पूर्ण ज्ञान के बिना समझना दुरूह हो जाता है ।

काव्य-ग्रंथ में प्रयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों ने जहाँ भाषा की सरलता एवं प्रवाह को बढ़ाया है वहाँ उसे प्रौढ़ एवं प्रांजल बनाने में भी सहयोग दिया है। स्थान-स्थान पर भावानुकूल मुहावरों के प्रयोग से कवि-कर्म चमत्कृत हुआ है—

आदीत अमूंझी छींक ज्यूं, जांणीजै जोधहपुरा ।
भरभार आज थारै भुजै, सहू काज सुरतांण रा ।।
(६१-५)

यहाँ पर रेखांकित पंक्ति में मुहावरे का प्रयोग हुआ है ।

त्रिकाल्ल-दरस्सी जोइसी,कहै एम आगम-कहा ।
असमांन उपद्रह थाइसै, उठी आग पांणी महा ।।
(११३-२)

यहां पर भी रेखांकित स्थान मुहावरेयुक्त भाषा में है ।

मूल न भावै मारका, दोय खंडा इक म्यांन ।

यहाँ पर एक म्यांन में दो तलवारों के न समा सकने का मुहावरा है ।

ग्रंथ की भाषा-शैली के विश्लेषण के आधार पर अधिकारपूर्वक कहा जा सकता है कि कवि केसोदास गाडणकृत 'गज-गुण-रूपक-बंध' निश्चय ही सहज, सरल, स्वाभाविक, ओज-मिश्रित प्रसादगुणपूर्ण प्रांजल राजस्थानी भाषा का ग्रंथ है जिसमें सशक्त भावों को छन्द-वैविध्य द्वारा अवसरानुकूल शब्दावली में प्रकट किया गया है। शब्द-लालित्य एवं रस-निष्पादन ग्रंथ की अपनी विशेषता है।

ऐतिहासिक मूल्यांकन[1]

कवि केसोदास गाडण जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह और उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराजा गजसिंह का समकालीन था । कवि युद्ध में प्रायः महाराजा के साथ

१. ऐतिहासिक मूल्याङ्कन में हमने ग्रंथ की प्रायः उन्हीं घटनाओं पर अधिक प्रकाश डाला है जिनके सम्बन्ध में इतिहासकार या तो मौन रहे हैं या पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं दे सके हैं। अतः किसी पाठक को प्रारम्भ से अन्त तक सभी घटनाओं की जानकारी करना हो तो उन्हें ग्रंथसार देखना चाहिए ।

रहता था और उसने प्रायः आँखों-देखा हाल ही लिखा है, जब कि ख्यातों आदि की रचना सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही हुई है। वि० सं० १६८१, ई० सन् १६२४ में महाराजा गजसिंह द्वारा भीम सीसोदिया के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की भी समाप्ति हो जाती है, जब कि इस घटना के बाद भी स्वयं कवि, महाराजा गजसिंह, बादशाह जहाँगीर और बाद में बादशाह शाहजहाँ आदि सभी जीवित थे और महाराजा गजसिंह ने महत्वपूर्ण लड़ाइयां भी लड़ी थीं। अतः इससे यह प्रकट होता है कि ग्रंथ की रचना भी कवि ने संवत् १६८१–८२ में करली थी और ग्रंथ की समाप्ति के बाद उसने इसमें किसी भी घटना को जोड़ना उचित नहीं समझा। ग्रंथ में कवि ने कई ऐसे ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत किया है जो अभी तक गुप्त थे तथा जिनके बारे में गलत धारणाएँ बन गई थीं। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रंथ की महत्ता में शंका करने की कोई गुंजायश नहीं रहती।

सर्वप्रथम कवि ने राठौड़-वंश का सम्बन्ध रघुवंश से जोड़ा है जिसका आधार पौराणिक है, इसके साथ ही इतिहास-प्रसिद्ध जयचन्द राठौड़ (सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का समकालीन) के पौत्र सीहा के नाम का उल्लेख है और फिर सीहा के तीन पुत्र--आसथान, अज और सोनग का वर्णन है; जिन्होंने क्रमशः मारवाड़ में खेड़ द्वारका के पास में शंखोद्धार तथा गुजरात में ईडर-नामक स्थानों पर अपने राज्य स्थापित किए। इसके बाद महाराजा गजसिंह तक मारवाड़ नरेशों की वंशावली दी है। यह सब वर्णन इतिहास-सम्मत है।

वंशावली आदि के वर्णन के पश्चात् घटनाओं के उल्लेख के अन्तर्गत कवि ने सर्वप्रथम महाराजा शूरसिंह की गुजरात पर विजय का संकेत दिया है—

सूरसिघ दिगपाल, एक पक्खर लख पक्खर।
गूजरवें अरबद्द, कीध वंकासुर पधर।।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात पूर्ण सत्य है। संवत् १६५२, ई० सन् १५९५ में बादशाह अकबर ने महाराज को गुजरात की सूबेदारी दी थी क्योंकि वहाँ का सूबेदार मुजफ्फर शाही आज्ञाओं का उल्लंघन करने लग गया था। अतः महाराजा शूरसिंह शाही सेना को लेकर पहले जोधपुर आये और वहाँ से अपनी सेना लेकर गुजरात की ओर रवाना हुए। चूंकि सिरोही के महाराव सुलतान ने महाराजा शूरसिंह के चाचा जोधपुर-नरेश राव चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को जो दत्ताणी में रात को सोये हुए थे, आक्रमण करके धोखे से मार दिया था। अतः मार्ग में महाराजा शूरसिंह को सिरोही वालों से बदला लेने का स्मरण हुआ और इन्होंने (जैसा कि कवि ने उक्त पंक्तियों में गूजरवै गुजरात के साथ सिरोही

के लिए अरबद्=आबू=सिरोही) वहाँ लूटमार करने की आज्ञा दे दी। वहाँ के महाराज राजसिंह ने बहुत-सा धन देकर उस समय के लिए तो अपने ऊपर आई हुई भयंकर आपत्ति को टाला। वहाँ से महाराजा शूरसिंह अपनी सेना लेकर गुजरात पहुँचे। मुजफ्फर भी बड़ा बहादुर व्यक्ति था। उससे घोर युद्ध करना पडा। अन्त में इनकी विजय हुई। फिर इन्होंने मुजफ्फर के बेटे बागी बहादुर को भी जो उस इलाके में लूटमार कर रहा था, भगा दिया[1]।

तत्पश्चात् ग्रंथ में कवि ने, बादशाह द्वारा महाराजा शूरसिंह को दक्षिण में भेजे जाने का संकेत दिया है:—

पछिम पुरब उतराध, इला दखणाधह आगल।
हिंदूवांण खुरसांण, दुहूं भुज्जे दुन्है छल।
सूरसिंघ दिगपाल, एक पक्खर लख पक्खर।
गूजरवै अरबद्द, कीध वंका सूर पधर।
दळथंभ देखि दिल्ली-धणी, दखण दीध आडो दळां।
तिणवार भलावे नियतणो, 'गाजीसाह' भुअब्बलां॥

पृ० १५, १६

यह बात भी इतिहास-सम्मत है। वि० सं० १६५६ ई०, सन् १५९९ में सुलतान मुराद की मृत्यु हो गई। तब शाहजादे दानयाल को दक्षिण की सूबेदारी दी गई और राजा शूरसिंह उसके साथ भेजे गये[2]।

ग्रथ में महाराजकुमार गजसिंह द्वारा मेवाड़-राज्यान्तर्गत नाडोल थाने पर अधिकार करने का वर्णन है।

"वळो जूह विब्भाड़, डसण नाडूलउ पट्टं।
जोजावर चांमलोद, खोड आंमिख गल घट्टं॥
गिलं गूंद सादड़ी, सयल साब्ज मन रजं।
कोलर तोडि करंक, गूह गरजी खत भंजे॥

---

१. पं० रामकरण आसोपाकृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३२५, ३२६; डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३६४, ३६५; पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८१-१८२।

२. मआसिरुल उमरा, भा २, पृ० १८२; पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८३-१८४; डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३६६

गोढवाड़ बरड़ संघांण सह, कूंभ अंजि कूंभेण गिरि।
गजसिंघ कियौ गजकेसरी, सिंघनाद मेवाड़ सिरि।

इतिहास से यह वर्णन मेल खाता है। वि० सं० १६६५, ई० सन् १६०८ में महावतखां को मेवाड़ पर भेजा गया। उसने राणा के परिवार का सोजत में होने की शंका से सोजत को राजा शूरसिंह से हटवा कर राव चन्द्रसेन के पौत्र व उग्रसेन के पुत्र करमसेन को दिलवा दी। किन्तु महाबतखां के मेवाड़ में असफल होने के कारण उसके स्थान पर अब्दुल्लाखां को भेजा गया। उसने सोजत राजकुमार गजसिंह को इस शर्त पर लौटा दिया कि वे नाडोल के थाने की रक्षा का प्रबन्ध करें। महाराजकुमार गजसिंह ने ऐसा ही किया[१]।

जिस समय राठोड़ नाडोल के थाने पर तैनात थे, उन्हीं दिनों व्यापारियों द्वारा अहमदाबाद से शाही खजाने को लेकर मारवाड़ होते हुए आगरा जाने वाली ऊंटों की कतार को लूटने के लिए महाराणा अमरसिंह के पुत्रों (ज्येष्ठ कुमार कर्णसिंह आदि) ने अपने चुने हुए साथियों सहित मारवाड़ के गाँव दूनाड़े तक पीछा किया—

कमधज्जां नाडूल लसक्कर। लोहोडो खुरसांण मंडोवर॥
हेरि कतार नयर दूनाडै। मांडै डांण रांण मेवाड़ै॥—पृ० १७

जब नाडोल के थाने पर महाराजकुमार गजसिंह द्वारा नियुक्त भाटी गोविंद-दास को इसकी सूचना मिली तो उसने खाली हाथ लौटते हुए (क्योंकि खजाना तो पहले ही आगे निकल चुका था) महाराणा अमरसिंह के पुत्रों एवं सरदारों पर अचानक धावा बोल दिया। इस अचानक धावे से कुछ समय के संघर्ष के पश्चात् महाराणा अमरसिंह के पुत्र तथा सरदारों ने अपनी कुशल रण-नीति के अनुसार युद्धस्थल छोड़ना उचित समझा तथा वे वहाँ से पहाड़ों में चले गये—

भाटी राउ गज भीम, जुडे जांमलि रट्ठौडां।
जीता जोधपुराह, हारि हुई चीतोड़ां॥
देसपत्ती राउत्त, अमुह केतौ ऊजांणां।
ईसर सांमलदास, खेत रहिया खूमांणां॥
'गोइंद' पेखि जैसलगिरी, बाघ वीसमो बीरवर।
रिणवार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगा जेम गया कुंअर॥—पृ० १८

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भा० १, पृ० ३७२; पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भा० १, पृ० १८७-१८८; 'वीर विनोद' भा० २, पृ० २२५–२२६।

यह घटना भी पूर्ण सत्य है। महाराणा अमरसिंह मय अपने परिवार के पहाड़ों में भटक रहे थे। अब्दुल्लाखाँ एक बहुत बड़े शाही लश्कर के साथ मेवाड़ में घूम रहा था। राणा के पास लूट-खसोट के अलावा कोई चारा नहीं था। यह लड़ाई वि० सं १६६८, ई० सन् १६११ में मारवाड़ के भाद्राजून और मालगढ़ इलाके के पास हुई[1]।

जब महाराजकुमार गजसिंह और भाटी गोविन्ददास नाडोल के थाने पर थे, तब महाराजकुमार ने सिरोही पर चढ़ाई कर दी। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि महाराजकुमार गजसिंह के पितामह के छोटे भाई (जो जोधपुर के शासक राय चंद्रसेन थे) के पुत्र रायसिंह को सिरोही के शासक महाराव सुरतांण ने दतांणी में रात को धोखे से आक्रमण करके मार डाला था। अतः महाराजकुमार गजसिंह द्वारा यह चढाई सिरोही वालों से पुराना बदला लेने के लिए की गई। सिरोही वालों ने आधीनता स्वीकार कर ली। कवि ने इस घटना का उल्लेख संक्षेप में किया है—

"मछरीकां सिर मछरियो, राइजादो राठोड़।
वैर पुरांणा वाळिवा, करं नवल्ली दौड़॥
गजबंधी दळ मेल्हिया, पहरे जोध जरद्द।
मारि मनांउ देवडा, हुव गंजूं अरवद्द॥२॥

सेन मेल सिवपुरी, फौज घेर धांसोहर।
जैतहत्थ कळिमत्थ, साथि भाटी रिण धोयर॥
कटि इम पहिगी रैं(ण) धणी मद्धार गिरंदर।
लाया पाइ रकेब, कीध मछरीक रैहबर॥

राठोड़ कुंअर पक्खर खंद, कवण(फ) समवड करै।
जमदाढ़ छोड़ विज्जै लई, कना राउ अरबद्द रै॥१॥
(पृ० १९-२०)

यह घटना सही मानी जाती है, किन्तु इसके बारे में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार सिरोही के महाराज राजसिंह का छोटा भाई शूरसिंह देवड़ा सिरोही की गद्दी हासिल करना चाहता था; इसलिए उसने जोधपुर के राजा शूरसिंह को अपने पक्ष में लेने के लिए यह प्रपंच रचा। पं० विश्वेश्वर नाथ रेउ तथा पं० रामकर्ण आसोपा के अनुसार

---

१. 'वीर विनोद' भा० २, पृ० २२६।

सिरोही के महाराज राजसिंह ने पुरानी शत्रुता को समाप्त करने के लिए जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह से भाटी गोविंददास के द्वारा प्रार्थना की थी।

तीनों इतिहासज्ञों के मतों का अध्ययन करने के बाद जब कवि के विचारों पर दृष्टि डाली जाती है, तो स्पष्ट प्रकट होता है कि महाराजकुमार गजसिंह द्वारा चढाई करने पर सिरोही का महाराज राजसिंह घबरा गया और उसने संधि कर ली। जो अहदनामा (तहरीर) वि० सं० १६६८, ई० सन् १६११ में सिरोही के महाराज राजसिंह तथा जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह के बीच लिखा गया था उस पर राजसिंह के हस्ताक्षर भी मौजूद हैं। यद्यपि इस तहरीर पर बाद में अमल नहीं हुआ, किन्तु यह लिखा-पढी सिरोही के महाराज राजसिंह की इच्छा से ही की गई थी[1]।

इसके बाद ग्रंथ में बादशाह द्वारा महाराणा अमरसिंह को अधीन करने के उद्देश्य से अजमेर आने का वर्णन है तथा शाहजादे खुर्रम के साथ महाराजा शूरसिंह को राणा पर चढाई करने के लिए भेजने का उल्लेख है —

तांम साह जिहगीर, लिखै मूक्यौ परमांणौ।
पळ खूटौ खुरसांण, सब्बळा अजुं खूमांणौ ॥
मेर मेर सारिखौ, हुऔ इक इक्क पहाडह।
तौ पक्खै कमधज्ज, कमठ गंजै मेवाडह ॥

सूरज्जमल्ल सुरतांण बळि, ग्रहे खाग लागौ अरस।
आयौ अभंग नव साहसौ, खडि तुरंग सिरि दस सहस ॥३॥

महाराजा शूरसिंह ने चिट्ठी लिखकर अपने पुत्र गजसिंह को भी गोविंददास मंत्री के साथ मेवाड़ में बुला लिया —

राजा कागळ लिखै कुंअर, तेडे निय कन्हाळि।
मिळण मनोरथ करै, साह जाहगीर तणै छळि ॥
चडै तांम गजपती, करे लसकर आडंबर।
भडवंका वर तुरी, लिया मदमत्ता कुंजर ॥

जूहार उदैपुर जाइ किय, साथि मीच 'गोइंद' सगल।
इके रास हुआ किरी एकठा, सूरज थावर बिनै ग्रह ॥५॥

---

१. पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३३७, ३३८, ३३९। पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८८, १८९, १९०। डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३७३, ३७४।

महाराजा शूरसिंह ने राणा को संधि के लिए तैयार करकेगो गूंदे में शाहजादे खुर्रम और राणा की भेंट करवाई। तत्पश्चात् महाराणा के ज्येष्ठ पुत्र कर्ण को लेकर खुर्रम अजमेर आया और बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ, जहां बादशाह ने उसका अच्छा स्वागत किया[१] —

राजा बोल समप्पियो, कहियो रांण प्रमांण।
बे चोघूंदे मेलिया, खूंदालम खूमांण॥
खिजमति करण कबूला की, बळ छंडे समसेर।
खरम फतै कर हल्लियो, साह पगे अजमेर॥४॥ (—पृ० २२)

साहिजादो अजमेर 'करन' हजरत पै लाए।
जर है गै सिर पाउ, वगसि खिजमति फुरमाए॥
कहै साह जिहगीर, खुरम सुरतांण (सुणे ग्हंत)।
तम सूर हम खुदाई, पीर पक्कंबर मुद्दत॥१॥

उक्त घटनाओं में प्रथम बादशाह के अजमेर आने की घटना के बारे में बादशाह जहांगीर स्वयं लिखता है– "इस (अजमेर) यात्रा में हमें दो कार्य विशेष रूप से करने थे, प्रथम तो मुइनुद्दीन चिश्ती के विशाल मकबरे का दर्शन करना था जिसकी प्रसिद्ध आत्मा की दुआ से इस प्रभावशाली परिवार को बहुत लाभ पहुंचा था और जिनकी दरगाह की हमने अपनी राजगद्दी के बाद जियारत नहीं की थी। दूसरा कार्य विद्रोही राजा अमरसिंह को परास्त कर भगाना था जो हिन्दुस्तान के राजाओं तथा जमींदारों में सबसे बड़ा था और जिसके नेतृत्व एवं प्राधान्य को उस प्रान्त के सभी राजाओं ने अंगीकार कर लिया था[२]।"

महाराणा अमरसिंह पर चढाई करने के लिए खुर्रम के साथ महाराजा शूरसिंह को भी भेजा जाना इतिहास-सम्मत है। ब्रजरत्नदास रचित "मआसिरुल उमरा" पृ० ४५५ में जहांगीर के ८वें राज्य वर्ष में शूरसिंह का खुर्रम के साथ महाराणा अमरसिंह पर जाना लिखा है। वीर विनोद, भाग २, पृ० २२९ से इसकी पुष्टि होती है।

---

१. पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३३९, ३४०।
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १९०।

२. (अ) जहांगीर का आत्म चरित्र (जहांगीरनामा) अनुवादक—ब्रजरत्नदास, पृ० ३१७. १८.
(ब) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने जोधपुर राज्य के इतिहास भाग १, पृ० ३७५ में लिखा है कि बादशाह वि०सं० १६७० के आश्विन सुदि ३, ई० सन् १६१३ ता० ७ सितम्बर को आगरे से रवाना होकर मार्गशीर्ष सुदि ७, ता० ८ नवम्बर को अजमेर पहुँचा।

महाराजा शूरसिंह द्वारा चिट्ठी लिखकर महाराजकुमार गजसिंह को बुलाया जाना इस बात से प्रमाणित करता है कि शाहजादे खुर्रम ने महाराणा को परास्त करने के लिए पहाड़ी प्रदेश में जगह-जगह शाही थाने बैठा दिये थे। सादड़ी के थाने पर (जो बहुत विकट था) महाराजा शूरसिंह को नियत किया गया[1]। शाही सेना उन पहाड़ी स्थानों से अपरिचित थी। अतः स्पष्ट है कि वहां पर महाराजा को अपने अनुभवी वीरों की आवश्यकता थी, इसीलिए उन्होंने चिट्ठी लिख कर कुंअर गजसिंह को बुला लिया जो गोविन्ददास आदि चुने हुए साथियों सहित वहाँ पहुँच गया। गजसिंह को बुलाने का दूसरा उद्देश्य, जैसा कि कवि ने संकेत किया है, यह था कि इस बहाने ज्येष्ठ कुंअर की बादशाह से भेंट करवा दी जायेगी।

"राजा कागल लिखै कुंअर तेडे निय कन्हलि।
मिलन मनोरथ करै, साह जहांगीर एँ छलि।।

संधि की बातें तय करवाने में राजा शूरसिंह का कितना हाथ था इसके सम्बन्ध में यद्यपि विस्तृत वर्णन नहीं मिलता है किन्तु गोगूंदे में महाराणा को सम्मानपूर्वक खुर्रम के पास लाना,[2] संधि के समय महाराणा शूरसिंह का उनके पास मौजूद रहना[3] आदि बातें इस बात की द्योतक हैं कि मामले को तय करवाने में महाराज का सक्रिय योग रहा होगा।

संधि की शर्त के अनुसार खुर्रम द्वारा महाराणा के ज्येष्ठ कुँअर कर्ण को अजमेर लेजाया गया तथा बादशाह की सेवा में उपस्थित करने पर बादशाह ने उसको इनाम इकरार खिल्लअत आदि दी और सहर्ष अपनी सेवा में लिया[4]।

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १
—पृ० ३७३ (फुट नोट ५)

२. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३७८ साथ ही यहाँ डॉ० ओझा ने संधि की तिथि वि०सं० १६७१ फाल्गुन वदि २, ई० सन् १६१५ ता० ५ फरवरी दी है। तथा कर्ण को साथ लेकर खुर्रम के अजमेर पहुँचने की तिथि रविवार वि०सं० १६७१ फाल्गुन सुदि २, ई० सन् १६१५ ता० १६ फरवरी दी है।

३. राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला, ग्रंथाङ्क २१, पं० नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा संपादित "बांकीदास री ख्यात" पृ० ६५ पर "अमरसिंघ प्रतापसिंघोत" शीर्षक के अन्तर्गत संख्या १०६७, १०६८ व १०६९ देखिए। संख्या १०६८ में जो संवत् १६७४ दिया है उसके स्थान पर १६७१ होना चाहिए।

४. जहाँगीर का आत्मचरित (जहांगीरनामा) अनुवादक—व्रजरत्नदास, पृ० ३४० ३४१, ३४३-३४६, ३४६, ३५३, ३५७, एवं ३६१।

तत्पश्चात कवि ने राठौड़ों की बढ़ती हुई शक्ति से बादशाह जहांगीर के शंकित होने का संकेत दिया है। महाराजा शूरसिंह, कुंअर गजसिंह, भाटी गोविंददास, शूरसिंह के अनुज कृष्णसिंह, करमसेन उग्रसेनोत (जो जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का पौत्र था) राव कर्णसिंह शक्तिसिहोत (जो जोधपुर नरेश मोटा राजा उदय-सिंह का पौत्र था और शूरसिंह व कृष्णसिंह का भतीजा था) तथा अन्य सामंत बड़े प्रबल थे। बादशाह किसी भी उपाय से इन्हें निर्बल बना देना चाहता था। वह यह जानता था कि जहां ये शाही साम्राज्य के स्तम्भ हैं वहां ये पुराना वैर भी नहीं भूलते हैं और बदला लेना अपनी शान समझते है[१]। अतः बादशाह जहाँगीर ने इनके इसी स्वभाव (बदला लेने का) से फायदा उठाने के लिए मन ही मन योजना बनाई—

हठियो सिर हिंदुवां माड मेले खूमांणां।
आदि वैर संभरै सरस दिल्ली सुरतांणां॥
राजा सूरजसिंघ जोध गजसिंघ जमज्जब।
किसनसिंघ करमैत 'करन' संपेख महाभड॥
गुण दोस गिणै इक सारिखा घडै घाट मन भज घड।
असपति तणै सह एकठा, हियै न मावै रट्ठवड॥२॥—पृ० २३

यद्यपि बादशाह की इस शंका का संकेत किसी भी इतिहासकार ने नहीं दिया है, किन्तु इस ग्रंथ का रचयिता उन दिनों मौजूद था और इसकी पैनी नजर, कुशाग्र बुद्धि और चतुराई ने बादशाह के बुरे इरादों और राठौड़ों के प्रति शंका को भांप लिया। दूसरे, राजपूत जाति एक लड़ाकू, खूंखार और अपनी आन पर मर मिटने वाली जाति थी। मेवाड़ को अधीन करने में बाद-शाह अकबर और बादशाह जहाँगीर को लोहे के चने चबाने पडे थे। महाराजा शूरसिंह के चाचा और मोटाराजा उदयसिंह के छोटे भाई जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने भी राणा प्रताप की तरह ही मुगल साम्राज्य से बराबर लोहा लिया था[२]। अतः राठौड़ों के पुनः शक्तिशाली हो जाने पर बादशाह का शंकित होना स्वाभाविक ही था। इस ग्रंथ के प्रकाशन से इतिहास का यह गुप्त तथ्य प्रकट हुआ है। अतः इस दृष्टि से ग्रन्थ की महत्ता और भी बढ़ जाती है।

---

१. जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने जीवन भर बादशाह अकबर से टक्कर ली थी।

२. पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १६०।
इस सम्बन्ध में किसी कवि ने क्या ही यथार्थ कहा है—

अणरगिया तुरी ऊजला असमर, चाकर रहण न डिगियो चीत।
सारै हिंदुस्तांन तणै सिर, पातळ नै चंद्रसेन प्रवीत॥

यद्यपि जहांगीरनामा में बादशाह ने इस घटना को अनजान बनकर लिखा है, किन्तु कोई भी मनुष्य स्वयं रचित षड्यंत्र को कैसे प्रकट कर सकता है।

चूंकि महाराजा शूरसिंह के वीर और चतुर मंत्री गोविन्ददास भाटी ने पहले कृष्णसिंह के भतीजे गोपालदास को अपने भाई के मार देने के कारण मार डाला था[1]। अतः बादशाह ने दरबार में कुंअर गजसिंह के सामने ही इसलिए उकसाया कि वह भाटी गोविन्ददास को मार कर अपने भतीजे का बदला ले।

"साह लगाडै रट्ठवड दोहो ढिल्ली डग्ग।
वाढ़ चढ़ै खुरसांण सूं, करि खुरसांणी खग्ग ॥१॥
'गाजीसाह' पधारियौ, चढ़ि मुजरै दरबार।
दिल्लीपति दीनो हुकम, केहरि गोइंद' मार ॥२॥—पृ० २४

गोविन्ददास को १५ दिन या एक महिने में मार देने का आश्वासन जब कृष्णसिंह द्वारा बादशाह को दिया गया, तब अपने क्षत्रियोचित स्वभाव के अनुसार राजकुमार गजसिंह अपने चाचा पर उबल पड़े और चेतावनी दे दी कि गोपालदास को मारने में भाटी गोविन्ददास के साथ मैं भी था, अतः गोविन्ददास

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७९ के फुटनोट में जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार गोपालदास के मारे जाने का वृत्तांत नीचे लिखे अनुसार दिया है—

वि० सं० १६६९ (चैत्रादि १६७०) ज्येष्ठ सुदि ७, ई० सन् १६१३ ता: १६ मई को भाटी गोविन्ददास के भाई सुरतांण पर राठौड सुन्दरदास, सूरसिंह (रामसिंहोत), राठौड़ नरसिंहदास (कल्याणदासोत) तथा गोपालदास* (भगवानदासोत) ने आक्रमण किया। सुरतांण मारा गया और गोपालदास घायल होकर निकल गया। इस पर कुंअर गजसिंह (और) तथा गोविन्दास ने उसका पीछा किया और मेड़ते के पास गांव खाखड़की में उसे मार डाला।

---

*पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ने "मारवाड़ के इतिहास" भाग १, पृ० १९२ के फुटनोट में लिखा है कि गोपालदास पर आक्रमण होने पर सुरतांण ने उसका पक्ष लिया। जब सुरतांण मारा गया तो गोपालदास जख्मी होकर भाग गया। यह बात भाटी गोविदास को अच्छी नहीं लगी क्योंकि उसके भाई ने तो उसके लिए प्राण दिये और वह प्राणों के मोह से भाग गया। अतः उसने कुंअर गजसिंह को साथ लेकर, गोपालदास का पीछा करके उसे मार डाला। गोपालदास राजा सूरसिंह व कृष्णसिंह का भतीजा था किन्तु भाटी गोविन्ददास राजा शूरसिंह का प्रधानामात्य था। अतः उन्होंने उसका बदला नहीं लिया किन्तु उसके अनुज कृष्णसिंह ने गोविन्ददास को मार कर भतीजा गोपालदास का बदला लिया किन्तु कृष्णसिंह को भी अपने प्राण खोने पड़े।

को मारने के लिए आने वाला पहले मुझसे लड़कर अपनी मृत्यु को निमंत्रित करेगा। इस प्रकार बादशाह ने अपनी नारद-बुद्धि से दरबार में अपने ही सामने चाचा (कृष्णसिंह) और भतीजे (कुंअर गजसिंह) के बीच एक खाई उपस्थित कर दी—

"सनमुख साह निविद्धियौ कीधौ नारद कांम।
कळि लग्गी रठौड़ हर, मरसी के वरियांम ॥६॥ पृ० २५

जब कृष्णसिंह ने भतीजे कर्ण, कर्मसेन उग्रसेनोत तथा अपने कुछ चुने हुए साथियों सहित रात्रि को ऊषाकाल से पूर्व अजमेर में ही भाटी गोविन्ददास के डेरे (मकान) पर हमला कर दिया। गोविन्ददास भाटी नींद से जग गया और कई शत्रुओं का काम तमाम कर देने के बाद वीरगति को प्राप्त हुआ[१]। पास ही के महल में सोये हुए राजा शूरसिंह भी युद्ध के शोर-गुल से जग गये और नंगी तलवार लेकर बाहर आ गये और उसी समय राजकुमार गजसिंह भी वहां पहुँच गये। भयंकर युद्ध हुआ। कृष्णसिंह उसका भतीजा कर्णसिंह तथा अन्य कई योद्धा मारे गये किन्तु, जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का पौत्र और उग्रसेन का पुत्र कर्मसेन युद्धस्थल छोड़कर भाग गया। दोनों ओर के कई वीर काम आये[२] —

किसनसिंघ कमधज्ज, मुओ गोअरधन मारे।
कमरसेन नीकळै कूंत गज कूंभ पहारे।
सकतसिंघ अंगरुह 'करन' रहियौ पग मंडे।
सूर वीर नेठाहै, गया काइर बल छंडे।
आव्रत हुओ एकं घड़ी, हुआ सुभट्टां सत्थरा।
संग्राम चक्रव्रहा सभां, सूरसिंघ चक्रव्रत्तरा ॥२॥ —पृ०३१

बादशाह द्वारा राजा शूरसिंह को जालोर का हाकिम नियुक्त करना और गजसिंह का बिहारी पठानों से जालोर छीनना इतिहाससम्मत है[३]।

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने "जोधपुर राज्य के इतिहास" भाग १, पृ० ३७९ में तुजक-इ-जहांगिरी के आधार पर इस घटना की तिथि ता० १५ खुरदाग (वि०सं० १६७२ ज्येष्ठ सुदि ६, ई. सन् १६१५ ता० २६ मई) दी है।

२. जहांगीर का आत्मचरित (जहांगीरनामा) अनुवादक—व्रजरत्नदास, पृ० ३६० के अनुसार बादशाह जहांगीर लिखता है कि 'कुल मिलाकर इस लड़ाई में छासठ आदमी मारे गये, जिसमें राजा की ओर के तीस तथा कृष्णसिंह के छत्तीस मनुष्य थे।

३. "तारीख पालनपुर" सैयद गुलाम मियां कृत, पृ० १५०-१६०; नवाब सर ताले मुहम्मद खां, पालणपुर राज्य नो इतिहास (गुजराती) भाग १ पृ० ५४–६२।
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० १९४, १९५
पं० रामकर्ण आसोपा कृत "मारवाड़ का इतिहास" पृ० ३४५

तत्पश्चात कवि ने राजकुमार गजसिंह द्वारा राव चन्द्रसेन के पौत्र और उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन का पीछा करना लिखा है। इस घटना का वर्णन मारवाड़-जोधपुर राज्य का इतिहास लिखने वाले किसी लेखक ने नहीं दिया है। कर्मसेन लाडनू से भाग कर थली (निर्जल प्रदेशों) में भटकता हुआ अरावली की ओर गया। वहां से वह मेवों की शरण में गया। जब गजसिंह ने वहां भी उसका पीछा नहीं छोड़ा तो उसने हाड़ौती में जाकर अपने प्राण बचाये।

घटना की सत्यता के बारे में प्रथम तो इतना ही कहा जा सकता है कि कर्मसेन का पीछा करने के समय में ग्रंथ का रचयिता जीवित था। अब पीछा करने का कारण मुख्यतया यही हो सकता है कि कर्मसेन राजपूतों के नियम के अनुसार राज्य का असली हकदार था। जोधपुर के स्वामी राव चन्द्रसेन के तीन पुत्र थे, रायसिंह, उग्रसेन तथा आसकरण, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। रायसिंह को सिरोही के महाराव सुरतांण ने दतांणी में रात को आक्रमण करके धोखे से मार डाला था। दूसरे दो भाई उग्रसेन और आसकरण चौसर खेलते हुए किसी बात पर क्रुद्ध होकर मारे गये। रायसिंह के कोई पुत्र नहीं था अतः उग्रसेन का बड़ा पुत्र व राव चन्द्रसेन का पौत्र कर्मसेन की गद्दी का असली हकदार था। किन्तु कर्मसेन को गद्दी न देकर बादशाह अकबर ने राव चन्द्रसेन के भाई (मोटा राजा) उदयसिंह को जोधपुर की गद्दी दी जिसके पुत्र शूरसिंह व पौत्र गजसिंह थे। राव चन्द्रसेन का पौत्र कर्मसेन भी कुमार गजसिंह का समकालीन था। अतः राज्य के लिए आपसी अनबन होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त शाही दरबार में कर्मसेन अपने असली हकदार होने का रोना रो चुका था। उसी के अनुसार कर्मसेन को शाही मंसब और मारवाड़ का सोजत इलाका मिल चुका था जो बाद में महाराजकुमार गजसिंह को नाडोल के थाने की रक्षा करने पर पुनः मिल गया था। इसके अतिरिक्त भाटी गोविंददास को मारने में भी कर्मसेन ने कृष्णसिंह का साथ दिया था और बाद में रण-स्थल से बचकर भाग गया। चूंकि महाराजा शूरसिंह का पुत्र महाराजकुमार गजसिंह जोधपुर का स्वामी बनने वाला था, अतः उसके पास अधिक दलबल होने से उसको वहां से आगे भागकर अपनी जान बचानी पड़ी।

सवाई राजा शूरसिंह की मृत्यु, गजसिंह का राज्याभिषेक दक्षिण में होना, महाराजा गजसिंह द्वारा दक्षिण में निरन्तर शाही सेना के अग्रभाग (हरावल) में स्थान-ग्रहण करके वीरता दिखाना तथा दक्षिणियों को हर स्थान पर पराजित करके पीछे खदेड़ना, खुर्रम का दक्षिण में आना, शाही सेना की विजय

होना, गजसिंह का खुर्रम के पास से विदा होकर बादशाह के पास आना और वहां से विदा होकर अपनी राजधानी जोधपुर लौटना, खुर्रम का बाग़ी होना आदि घटनाएँ सभी इतिहास-सम्मत हैं।

इस सम्बन्ध में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महाराजा गजसिंह अपने राठौड़ वीरों के साथ, शाही अफसरों खांनखांनान् अब्दुर्रहीम, उसके पुत्र दाराबखाँ आदि के साथ थे। यद्यपि राठौड़ों ने सेना के अग्रभाग में लड़ कर हर स्थान पर दक्षिणियों को पीछे खदेड़ा, किन्तु शाही अफसरों ने सारा यश स्वयं लिया। इसी कारण फारसी-तवारीखों में इनकी वीरता का अधिक उल्लेख नहीं मिलता है।

बाग़ी होने पर खुर्रम मांडव से अजमेर, साँभर, रणथम्भोर, सीकरी होता हुआ आगरे और दिल्ली की ओर जाने का प्रयत्न करने लगा। इसी बीच खुर्रम ने महाराणा अमरसिंह के पुत्र भीम सीसोदिया को (जो उसके पक्ष में था और उस समय मेड़ते में था) यह हुकम भेजा कि तुम सादूळ को हरा कर अजमेर को अपने अधिकार में करलो।

"मूक्यौ खुरम हुकम मेडत्तै। रांणै भीम दिसा रिण रत्तै।
वपि वांकम "सादूल" वहत्तै। तूं अजमेर करै गढ फत्तै।
—पृ० १२४

उक्त सादूळ कौन था? उसका अजमेर की रक्षा से क्या सम्बन्ध था? इसके लिए इतिहासकार मौन हैं। यद्यपि वीरविनोद भाग २, पृ० २८७ में शार्दूलसिंह परमार का जिक्र है किन्तु वहाँ पर प्रसंग दूसरा है। वहाँ पर शार्दूलसिंह भीम सीसोदिया के साथ होता है और टोंस नदी के किनारे जब सेनापति महाबतखाँ और शाहजादे पर्वेज की अध्यक्षता में शाही सेना बाग़ी शाहजादे खुर्रम की सेना से (जिसके हरावल में भीम सीसोदिया था) भिड़ती है तो यह शार्दूलसिंह युद्ध-स्थल से भीम का साथ छोड़ कर भाग जाता है। साथ ही वीरविनोद में यह भी लिखा है कि यह भीम सीसोदिया का साला था। यह सब वृत्तान्त ठीक हो सकता है किन्तु किसी भी इतिहासकार ने यह स्पष्टीकरण नहीं दिया कि अजमेर की रक्षा करने वाला 'सादूळ' कौन था? जो खुर्रम के हुक्म से भीम सीसोदिया द्वारा मेड़ता से चढ़ाई करके हराया गया और पकड़ कर सीकरी में खुर्रम के सामने पेश किया गया। हमारी खोज के अनुसार इसके सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है :—

इसका शुद्ध नाम शार्दूलसिंह परमार था और श्रीनगर (अजमेर) के स्वामी कर्मचन्द परमार का वंशज था। इसके पिता का नाम मालदेव था जो राणा

उदयसिंह की सेवा में था और उसको राणा की ओर से जागीर मिली हुई थी। किसी कारण से यह राणा को छोड़कर अकबर के पास चला गया। अकबर ने इसका सम्मान किया और जागीर दी, किन्तु जब अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण करना चाहा, तब उसने अपने कर्त्तव्य को समझा और राणा के पास पुनः आ गया। राणा ने इसका सम्मान किया और पहले से भी अच्छी जागीर दी। फिर यह महाराणा की ओर से शाही सेना का सामना करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

इसी मालदेव के छः पुत्र थे जिनमें शार्दूलसिंह भी एक था। इसके एक भाई का नाम सांगा था। यह अपने उसी भाई के साथ महाराणा को छोड़कर बादशाह के पास चला गया। बादशाह ने उन्हें बदनोर (मेवाड़) की सनद जागीर में दी। अतः वे सकुटुम्ब आकर मसूदे में रहने लगे। बदनोर में पहले से ही राठोड़ रहते थे, अतः परमारों ने उन पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त की।

ये श्रीनगर (अजमेर) के कर्मचन्द के वंशज थे और उन दिनों बादशाह उन पर महाराणा की सेवा छोड़ देने के कारण खुश था, अतः अजमेर की रक्षा का भार बादशाह द्वारा या उसके शाहजादे पर्वेज जिसकी जागीर में उन दिनों अजमेर था) द्वारा शार्दूलसिंह को दिया गया। चूंकि शाहजादा खुर्रम बाग़ी हो चुका था, अतः वह शाही इलाकों पर अधिकार कर लेना चाहता था। इसीलिए उसने अपने पक्ष के भीम सीसोदिया को हुक्म भेजा कि तुम 'सादूल' (शार्दूलसिंह परमार) को हराकर अजमेर पर कब्जा करलो। भीम उस समय मेड़ते में था, क्योंकि मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग १, पृ० ३०-३१ के अनुसार प्रकट होता है कि मेड़ता उन दिनों भीम सीसोदिया को जागीर में दिया हुआ था, अतः उसने बाग़ी शाहजादे खुर्रम की आज्ञानुसार अजमेर पर चढ़ाई करके शार्दूलसिंह को परास्त किया और पहाड़ों में भागते हुए शार्दूलसिंह को पकड़ कर सीकरी में खुर्रम के सामने पेश किया। वीरविनोद के अनुसार चूंकि यह भीम सीसोदिया का साला था, अतः संभव है सीकरी में साला-बहनोई में मेल हो गया हो और यह शार्दूलसिंह परमार भी भीम सीसोदिया के साथ बाग़ी शाहजादे खुर्रम का पक्षपाती हो गया होगा। वीर-विनोद के संदर्भ से जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है जब वि० सं० १६८१, ई० सन् १६२४ में भीम सीसोदिया का युद्ध टोंस नदी के किनारे शाही सेना से हुआ, तो वह अपने बहनोई भीम का साथ छोड़कर कायर की तरह भाग गया।

कवि ने ग्रंथ के अन्त में भीम सीसोदिया और महाराजा गजसिंह के युद्ध का

वर्णन किया है। भीम बागी शाहजादे खुर्रम की सेना के अग्रभाग (हरावल) में था और महाराजा गजसिंह शाहजादे परवेज और महाबतखां की सेना में थे।

अब प्रश्न यह है कि युद्ध में भीम सीसोदिया की मृत्यु किसके हाथ से हुई। इस ग्रंथ के प्रकाशन से पूर्व इस सम्बन्ध में इतिहासकारों ने पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं किया था। हमारी खोज के अनुसार भीम सीसोदिया को महाराजा गजसिंह ने ही मारा था; निम्न प्रमाणों से यह बात पूर्ण स्पष्ट हो जायगी—

प्रथम प्रमाण तो यही है कि वि० सं० १६८१ ई० सन् १६२४ में जब टोंस नदी के किनारे यह इतिहास-प्रसिद्ध महायुद्ध हुआ तब इस ग्रन्थ का रचयिता जीवित था। अतः उससे अधिक जानकारी दूसरा कौन दे सकता है ?
कवि के निम्न छप्पयों पर दृष्टिपात कीजिये—

चीतोडी चालणी भंग हुओ आरम्भह।
कुरव्व दल अंतरै, जांण भीखम पितामह।
आरुहता मगदंत आसो रांणं चाडंतो।
गै जूहा गोड तो, खग्ग भुबलि झाडंतो।
भूडंड वधे ब्रहमंड लग, घन्न पराक्रम सूरतन।
पाडियो जोध आउट्टमो, दौढ़ो रावत कुंभक्रन ॥८॥

—पृ० २३९

खाल रत्त खलहलं, जांण वरसाल नदी जल।
गज तुरंग गुड्डिया, गुडै भड डूवा गूंछल।
रुंडमुंड रोलिया, "भीम" पाडियो भुजालो।
भारत कुरखेत रै, हुओ जुध लंका वालो।
गजसिंघ गिरंदां कमधजां, माहि मेर माझी खडो।
पतसाह दुहूं गजसाह अब, हुद नीमडियो हेकडो ॥१२॥

—पृ० २४१

रांमायण रांमचंद, वहै कूंभक्रन रांमण।
हणमंत खोडो हुओ, मरै जीवियो लखंमण ॥
अरजण भारत कियो, लियण हथणापुर ढूको।
जै-दसरथ अहि-वन्न करन मरियो घड्को ॥
गजसिंघ कियो गजगाहणी, "भीम" मारि भागो खुरम।
कमधज्ज पखै जीतो कमण, साजै नाद संग्रांम इम ॥१७॥

—पृ० २४२

जिसो पत्थ भारत्थ, रांम जीतो रांमायण।
जिसो लखण इंद्रजीत, भीम भग्गं दुज्जोधण।
जिसो जोध बलिभद्र, पलंब दांणव संहारियै।
जिसो वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप वंहरियै।

साझियँ तिपुर संकर जिसो, वामण चंपि पयाल् वलि् ।
गजसिंघ 'भीम' गोडठिवयौ, तिसो दीठ रवि चक्र तलि् ।।१८।।

—पृ० २४३

"सोल्ह सै संमंत, हूम्रो जोगणपुर चाल् ।
सम्मै एकातियँ मास काती वडाल् ।
पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी ।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमन्त प्रघट्टी ।
सुरतांण खुरम भागौ भिडै, चाडि चकथा चक्कवै ।
गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियौ, वहै भीम चीतौडवै ।।२०।।

—पृ० २४३

उपर्युक्त छप्पयों के अनुसार यही सिद्ध होता है कि भीम सीसोदिया महाराजा गजसिंह द्वारा ही मारा गया। यहाँ पर यह शंका पैदा हो सकती है कि कवि महाराजा का आश्रित था, यद्यपि अभी तक किसी भी इतिहासकार ने इस ग्रंथ का संदर्भ देकर शंका प्रकट नहीं की है, तथापि ख्यातों और फारसी तवारीखों में मेल नहीं होने के कारण वीरविनोदकार तथा डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने गजसिंह द्वारा भीम का मारा जाना नहीं लिखा है और ख्यातों के आधार पर इस घटना को एकांगी और पक्षपातपूर्ण बतलाया गया है[1]। इसके जवाब में यह कहा जा सकता है कि स्थान-विशेष के एक या दो राज्याश्रित कवि तो पक्षपातपूर्ण तथा झूठ लिख सकते हैं, किन्तु गजसिंह द्वारा भीम को मारे जाने के विभिन्न स्थानों के कवियों के विभिन्न गीत मिलते हैं, क्या उन सभी ने (जो गजसिंह के आश्रित नहीं थे) पक्षपातपूर्ण तथा झूठ लिखा है ? प्रमाण के लिए उनमें से कुछ गीतों को (परिशिष्ट में न देकर) यहां उद्धृत किया जाता है।

गीत वडो सांणोर

मथै ज्याग रिण महण असुरां सुरां मारकां,
बाघियौ मंडोवर खाग वाहे ।
पियालौ जहर रो "अमर" रो विरद-पत,
"सूर" रौ महारुद्र लियौ साहे ।।१।।
जुध समंद विरोल् देव दांणव जिहीं,
दूसरां नरां नह भाग दीधौ ।
"सूर" तण सगह विख हुतौ सीसोदियौ,
कमध श्रय नयण गरकाव कीधौ ।।२।।

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १, पृ० ३९४; वीरविनोद भाग २, पृ० २८८

हीलोळ् समर समदर गहर हेकठा,
दरसियो आहाड़ो हळाहळ् दाय ।
जटाधर जेम गजसाह राजा जुड़े,
घूंट कीधो भलो हेकणी छाप ।।३।।
अखाड़ो महोदध डोहते ऊकठो,
पंथ अन सुपह विमुहा पधारै ।
"भीम" सिरखा कहर "माल" हर भयंकर,
जहर "गाजो" संकर तूं हीज जारै ।।४।।

(किसनो आढो)

वेलियो सांणोर

गजबंधी हंस अभिनमैं "मांगै,"
सुज निज हेत खेध कर साथ ।
जळ् जिम खळ् मूके साहिजादो,
"भीमैं" दूध भखियो भाराथ ।।१।।
मलप मुणाल जिहीं जुध माथै,
दाखै दुनी वदै दंसोत ।
घगतां वार मार चाळ्वियो,
गिळियो पैं मिळियो गहलोत ।।२।।
सावक सूरजसिंघ समोभ्रम,
पैं म वेंर जांणो सप्रमांण ।
नीर टाळ् जहांगीर सुनंदण,
खोर जिहीं भखियो "खूंमांण ।।३।।
भाल हरै वध सुछळ् महारिण
आखै सह मांनव सुर-ईस ।
पांणी असुर विरोळ् पीधो,
भारी दूध तणी पर भीम ।।४।।

(कल्यांणदास महडू)

गीत-वेलियो सांणोर

कुर-खेत अनै बांणा-रस कळ्हण,
धारां मार वडाड़ै धींग ।
खाधा "भीम" अढ़ारै खोयण,
सोईज 'भीम' खाधो गजसींग ।।१।।
जुजठळ् अनै दुजोयण जुड़िया,
दाव खुरमं जांहगीर दियो ।
मंडोवरै वीकोदर नांमी,
कर तंडळ् आचमन कियो ।।२।।

बंधवां वेध खेव चढ़ बैठे,
खेटै धरती तणै खरैं ।
"सांगा' हरो सालियो समहर,
हुवां वेढ़ रिडमाल हरैं ॥३॥

पोरस प्रभत निमो जोधपुरा,
वडा प्रवाडा भुजां वणैं ।
अमरावत भखियो आखाडै,
तिजडां मुहडै "सूर" तणे ॥४॥

(चतरो-मोतीसर)

पं० रामकर्ण आसोपा ने अपने 'मारवाड़ के संक्षिप्त इतिहास' में पृ० ३५४-५५ के अनुसार सीसोदिया भीम हाथी पर सवार था। महाराजा ने उसी को लक्ष्य बनाया। उस समय महाराजा के साथ तीन सामंत वीर थे। कूंपावत गोरधन, खींची शंकरदास और गोविंददास जो हाथी से कुछ दूर रह गया और शत्रुओं से लड़ता मारा गया। कूंपावत गोरधन तलवार चलाता हुआ महाराजा के आगे बढ़ा। खींची शंकरदास दोनों हाथों में दो तलवार रखता और दोनों तलवारों से काम लेता था। कूंपावत गोरधन शंकरदास से हमेशा मजाक किया करता कि यह दुगना लोहे का भार क्यों उठाते हो? वह उत्तर में हंस कर कहता कि कभी काम पड़े तब देख लेना। यहां तलवार चलाते-चलाते महाराजा की तलवार टूट गई तब शंकरदास ने अपने बांये हाथ की तलवार महाराजा को दे दी। यद्यपि सिलहखाने (शस्त्रागार) का दरोगा लवेरा ठाकुर साथ में था, परन्तु वह उस मारामारी में पीछे रह गया था। महाराज ने भीम को पीछे से हाथी पर से गिरा कर उसी खींची को तलवार से भीम का काम तमाम किया। बाहशाह की विजय हुई। खुर्रम भाग गया। महाराजा ने उस सेवा से प्रसन्न होकर खींचियों के अधिकार में सिलहखाना (शस्त्रागार) दिया। वह अब तक खींचियों के अधिकार में रहा।

प्रसिद्ध इतिहासकार पं० आसोपा साहब के उक्त लेख को भी यदि कोई शंका की दृष्टि से देखे, तो उक्त लेख में वर्णित दो तथ्यों के अन्य प्रमाण दिये जाते हैं जिनमें से पहला तथ्य है—भीम सीसोदिया का युद्ध में हाथी पर सवार होना (महाराजा गजसिंह ने भाला फेंक कर भीम को हाथी पर से गिराया और फिर मारा), इसकी पुष्टि उदयपुर के बाबू रामनारायण दूगड़ के "महाराजा-भीम सीसोदिया" निबंध से (जो नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १, संवत् १९७७ के पृ० १८२ से १९० पर छपा है) होती है। इस लेख में यह भी लिखा गया

है कि महाराजा गजसिंह ने ही युद्ध के परिणाम को पलट दिया और शाही हार को जीत में परिणति कर दिया तथा भीम को मार कर बागी शाहजादे खुर्रम को भगा दिया।

भीम को महाराजा गजसिंह द्वारा हाथी पर से गिराये जाने का प्रमाण एक अन्य ग्रंथ (जो मेरे निजी संग्रह में संगृहीत है) में मिलता है। यह ग्रंथ कवि हेम सांमोरकृत 'भाखा-चरित्र' है। इसके अनुसार:—

कोपि तांम कमधज पछै उरि कुंत प्रहारं।
पयोधरा खडहडै हंस आया बल् हारं॥

—पृ० २२ (A)

अर्थात् कमधज (राठोड़ गजसिंह) ने तब कोप करके कुंत (भाले) से सीने पर प्रहार किया, तो बादल जैसे काले रंग के समान हाथी पर से भीम नीचे गिरा और गिरते समय उसका प्राण (हंस) बलहीन हो गया।

दूसरा तथ्य जो पं० आसोपा के उक्त लेख में है, वह है भीम से लड़ते हुए महाराजा गजसिंह की तलवार टूटना और खीची शंकरदास द्वारा अपनी दूसरी तलवार देना, जिससे भीम का काम तमाम हुआ था। इस तलवार के टूटने का उल्लेख मेरे निजी संग्रह में संगृहीत जोधपुर के स्व० किशोरदानजी बारहठ के संग्रह का एक गीत (जिसकी रचना भीम सीसोदिया के अग्रज महाराणा कर्णसिंह के कहने पर उनके दरबारी कवि सौदा बारहठ खेमराज खेमपुरा (मेवाड़) वाला ने की थी) होती है। यह गीत नीचे उद्धृत किया जाता है:—

अंग लागै बांण जूजवा उडै, गै गजै वाजै गुरज।
भाजै नहीं दिली-दल् भिडंता, भीमड़ा हड़मत तणा भुज ॥१॥
बरंगल् झड़ै ऊघड़ै बगतर, चोधारां धारां खग चोट।
ओट होय मंडियौ अमरावत, काल्ो पड़ै न मैमत कोट ॥२॥
गोला तीर आछटै गोला, दोला आलमतणा दल्।
पड़ दड़यड़ धड़यड़ चहुं पासै, खूमांणै लूंबिया खल् ॥३॥
'पातल' हरा ऊपरा पड़ भव, खल् सूटा तूटा खड़ग।
"पांडवनामो" नीठ पड़ियौ, लग ऊगमण आथमण लग ॥४॥

उदयपुर-राज्य के इस कवि ने अपने उक्त गीत में तलवार टूटने का उल्लेख किया है। जैसा कि गीत के अन्तिम द्वाले से स्पष्ट संकेत मिलता है—तलवार टूटी (टूटा खड़ग), पांडवनामो (पांडव भीमसेन के नाम वाले) भीम सीसोदिया को मारा (पाडियौ)। उक्त गीत उदयपुर वाले बाबू रामनारायण जी दूगड़ के निबन्ध के अन्तर्गत 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' में भी छप चुका है।

तीसरा राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला जयपुर, द्वारा प्रकाशित ग्रंथ (ग्रंथांक २१—'बांकीदास री ख्यात' पं० नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा संपादित) के पृ० २७ पर मुद्रित वात संख्या २८७ उद्धृत की जाती है—"संवत् १६८१ रा काती सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमरसिंघोत नूं जंग में मारियो।"

चौथे राजगढ़ के शासक ठाकुर अर्जुन गौड़ का दरबारी कवि महेसदास रावकृत "राव अमरसिंघजी को साको" में महाराजा गजसिंह द्वारा भीम सीसोदिया को मारे जाने का उल्लेख है, यथा——

"राजा "सूर" रे पाटि गजसिंघ राजै।
बसू उपरा जेणि रा त्रब बाजै।
भड़े तेणि गगा-तटे भीम भंजै।
बलं साहि जिहांन अपांन बंजै॥"

मेरे विचार में उपर्युक्त प्रमाणों के होते हुए भीम सीसोदिया का महाराज गजसिंह द्वारा मारे जाने में संदेह करने का कोई स्थान नहीं रहता है।

प्रति परिचय

गज-गुण-रूपक बंध के सम्पादन में उपयोग में लाई गई प्रमुख हस्तलिखित प्रतियां निम्न हैं :—

(अ) यह प्रति मेरे लघु भ्राता जैतदान के संग्रहालय की है। इस प्रति में प्रतिलिपिकार ने नाम, काल व स्थान का कोई उल्लेख नहीं किया है। मूल प्रकाशित भाग इसी प्रति पर आधारित है।

(आ) यह प्रति राजस्थान-प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान जोधपुर के भूतपूर्व संचालक पद्मश्री मुनिजी महाराज श्रीजिनविजयजी से प्राप्त हुई। इस प्रति में भी प्रतिलिपिकार का नाम, काल और स्थान प्राप्त नहीं हुआ। पाठान्तर प्राय: इसी प्रति से उद्धृत किए गये हैं।

(इ) यह प्रति भी प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान से प्राप्त हुई। आवश्यक पाठान्तर देने के निमित्त इसका सहयोग भी लिया गया है।

इनके अतिरिक्त एक और प्रति (जो मेरे निजी संग्रहालय की है) का भी उपयोग ग्रंथ के अर्ध-भाग के प्रकाशन के पश्चात् हो सका है क्योंकि यह प्रति मुझे ग्रंथ के अर्ध-भाग-प्रकाशन के पश्चात् ही दृष्टिगत हुई। यह प्रति जोधपुर के पुरोहित श्रीमोतीलाल द्वारा लिखित है तथा इसका पाठ मूल 'अ' प्रति के पाठ से अधिक समता रखता है।

ग्रंथ का शीर्षक जो मुख्य पृष्ठ पर दिया गया है, प्रति 'अ' के अनुसार ही, अधिक उपयुक्त एवं ग्रंथपरिचयात्मक मान कर, लिया गया है।

राजस्थानी में दो अक्षरों वाले शब्दों में जिनका पहला अक्षर आ स्वर से युक्त हो तथा दूसरा अक्षर अनुनासिक हो-अनुनासिक वर्ण के पूर्वाक्षर पर प्राय: अनुस्वार लगता है। सम्पादन में मैंने इस अनुस्वार को स्वीकार करके मूल पाठ सर्वत्र अपनाया है।

इसी प्रकार प्राचीन राजस्थानी में 'ड़' का उच्चारण नहीं था अत: प्राचीन प्रतियों के अनुसार ही मूल पाठ में सर्वत्र ड को ड़ न करके ज्यों का त्यों 'ड' ही रहने दिया है। किन्तु ल और ळ की ध्वनि का ध्यान रखकर यथास्थान ल या ळ कर दिया है यद्यपि हस्तलिखित प्रतियों में प्राय: ल की ही बहुलता है।

आभार प्रदर्शन

प्रस्तुत काव्य-ग्रंथ के सम्पादन में प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान के उप निदेशक श्री गोपालनारायणजी बहुरा द्वारा पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं आपके प्रति हृदय से आभारी हूं। साथ ही डॉ० पुरुषोत्तमलालजी मेनारिया को भी, जिन्होंने समय-समय पर प्रूफ-संशोधन में मुझे सहयोग प्रदान किया, हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूं। साथ ही कवि केशवदास के जीवन-सम्बंधी अमूल्य एवं महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करने के लिए श्री देवकरणजी बारहट, ईंदोकली का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूं। ग्रंथ के शुद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रकाशन के लिए श्री हरिप्रसादजी पारीक, व्यवस्थापक साधना प्रेस, जोधपुर भी धन्यवाद के पात्र हैं।

शरद् पूर्णिमा, सं० २०२४
दि० १७ अक्टूबर, १९६७

सीताराम लाळस

गज गुण रूपक-बंध

॥ श्री गणेसाय नमः ॥ श्री मदिस्टाय नमः ॥ स्त्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥

। "गुण रूपक-बंध" महाराजा श्री गजसिंघजी नूं गाडण केसोदास कृत लिख्यते ।*

पंचदेव मंगळाचरणम्

गाहा

देवी सुमंति[1] - दाया:, वीणा[2] - करेंणि हंस - वाहणया: ।
जग - जिणणी[3] जोगमाया: तस्यै सारदाय नमो[4] ॥१॥

सूंडा[5] - डंड प्रचंडौ:, मूसा आरूढ़ मेक मय[6] दंतौ: ।
ईस्वर[7] उमया[8] पुत्रौ:[9], तस्मै गुणेसाय[10] नमो[11] ॥२॥

अरधंगि हेम - पुत्री:, सरपौ कंठेणि वाहणौ सांडौ ।
सिखा[12] - नेत भाल चंदौ:, तस्मै[13] रुद्राय नमो[14] ॥३॥

धारणौ गदा चक्रौ:[15], संखौ[16] पदम पांणि[17] सारंगौ ।
कमळा - कंत[18] कनौ:, तस्मै नाराइण नमो[19] ॥४॥

अंतरिख[20] वोम मगौ:, खैड़ण[21] सपतास मेकरथ-चक्रौ[22] ।
सारिथि[23] पंग अरुणौ:, तस्मै[24] सूरज्याइ नमो[25] ॥५॥

आ – * श्री गणेशायनमः ॥ श्री मदिष्टादेवाय नमः ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ गुण रूपक-बंध महाराजा श्री गजसिंघजी नूं गाडण केसोदास कृत लिष्यते ।

इ – * श्री गणेशायनमः ॥ अथ गुण रूपक बंध महाराझा श्री गजसिंघझी रो गाडण केसोदास कह्यौ लिषतं ।

१ आ.इ. सुमति । २ वाणा । ३ आ. जिणजी । इ. भिणणी । ४ आ.इ. नमः। ५ आ. श्रूंडा । ६ इ. मथ । ७ आ. ईश्वर । ८ आ.इ. ऊमया । ९ आ. पुत्तौ । १० आ.इ. गुणेशाई । ११ आ.इ. नमः । १२ आ.इ. सिष । १३ आ. तसमै । १४ आ.इ. नमः । १५ आ.इ. चक्रो । १६ आ. संषो । इ. संषौ । १७ आ. पदमयणि । इ. पदमयाणि । १८ आ.इ. कमलाकंत । १९ आ. नमः । इ. नम । २० आ.इ. अंतरिष । २१ आ.इ. षेडण । २२ आ.इ. चक्रौ । २३ आ. सारथि । २४ आ. तसमै । २५ आ.इ. नमः ।

दूहा

आदि सकत्ति[1] गुणाधिपति[2], हो हर हरि ग्रह - राउ[3] ।
पंचइ[4] देव प्रसन्न[5] हुइ[6], आपौ[7] बुद्धि[8] पसाउ[9] ॥१॥
वांणि अनादह फुड[10] वयण[11], सुभ भाखा सरजित्त[12] ।
गाहा करई[13] वर[14] रसाउला[15], दूहा छंद कवित्त[16] ॥२॥

पूरब वंस वरणण

रुघवंसी राठौड हर[17], तेरह साख[18] कमंध ।
विमर सकत्ती[19] वरणवां[20], बंधे रूपक बंध ॥३॥

सतजुग त्रेता[21] द्वापुरहि, कळि-जुग्गे[22] खत्र[23] घौड[24] ।
सिर नवखंडां[25] मेदनी, चिहूं[26] जुगे राठौड[27] ॥४॥

अवसर दांन ज अप्पही[28], रिण भज्जै[29] मुंह[30] मौड[31] ।
राठोडां[32] कुळ मेहणौ, ते खत्री[33] पण खौड[34] ॥५॥

कवित

प्रिथमी[35] आदि जुगादि वीर बसुधा वर खत्ती[36] ।
वळि[37] राजा चक्कवै[38] मांनधाता चकवत्ती[39] ॥
भारथही[40] कुरुखेत[41] करन गौ कत्थ[42] रहावै[43] ।
मेछा बांण भळावि, कीत[44] कमधजां भळावै[45] ॥

---

१ आ.इ. सकति । २ आ. गुणाधपतिः । ३ आ. ग्रहराऊ । इ ग्रहराव । ४ आ. पृंचंइ । इ. पंचैई । ५ आ.इ. पृसन । ६ आ. हुई । ७ इ. आयौ । ८. आ.इ. बुधि । ९ इ. पसाऊ । १० आ.इ. फुङ । ११ अ. चयण । १२ आ. सरजितः । इ. सरझित । १३ अ. कर । इ. काई । १४ आ. बर । १५ इ. साऊला । १६ आ.इ. कवित । १७ आ. हरः । १८ आ.इ. साष । १९ आ.इ. सकती । २० आ. वर्णवां । इ. वरणवा । २१ आ.इ. तेता । २२ आ.इ. जुगे । २३ आ. षत । इ. षत्रू । २४ इ. धोड । २५ आ. नवषेडां । इ. नवषंडा । २६ आ.इ. चिहु । २७ आ. रठौड़ । २८ आ इ. अपही । २९ आ. भजै । इ. भभै । ३० आ.इ. मुह । ३१ आ. मोङ । इ. मोड । ३२ आ. रठौङां । इ राठोडां । ३३ आ. षत्ती । इ. षत्री । ३४ आ.इ. षोड । ३५ आ. पिृथमा । इ. प्रथम । ३६ आ.वरषती । इ. वरषत्री । ३७ इ. बलि । ३८ आ.इ. चकवै । ३९ इ. चक्रवती । ४० आ.इ. हि । ४१ आ. कुरुखेत । ४२ आ इ. कथ । ४३ आ. रहावे । ४४ आ.इ. क्रित । ४५ आ. भलावै ।

जैचंद हुम्रो दळ[1] पांगुळौ[2] , ग्रसी लक्ख[3] साहण सधर ।
छत्तीस[4] वंस राजा[5] कुळी[6] , वडौ वंस राठौड[7] हर ।।१।।

राव सीहा री द्वारका जात्रा ग्रोर लाखा फूलांणी नै मारणौ

सेतरांम संभ्रमी[8] , इळा[9] ऊठियै[10] कनूजा[11] ।
जगत जात रिणछोड , कीध वेदो-गति पूजा[12] ।
चाग्रोडौ परचाड वहै लाखौ[13] फूलांणी ।
धारां धड ऊतारि चाडि राठौडां[14] पांणी ।
पड गाहै[15] पट्टण[16] ग्राप बळ[17], दोमझि[18] भंजै कच्छ[19]दळ ।
पूरब्ब[20] हूंत[21] ग्रावै[22] पछिम, सीह प्रवाडौ[23] किय[24] सबळ ।।२।।

सीहै जाइ[25] सँदेस् कथन कहियौ[26] कमधज्जां[27] ।
मारि लियौ[28] मारकां, किसा पूरदीप सकज्जां[29] ।
सीह वयण समधरे, खडग[30] ऊपाडे[31] हत्थळ[32] ।
सीहैरा सींघळी[33] सींह[34] ऊठिया[35] सहस बळ ।
परभोम लई[36] समंदां[37] लगै, राठौडां[38] साका रहै[39] ।
गळहत्थ[40] वंस गोहिलां तणौ, वैड[41] खड्ग[42] गहि[43] संग्रहै[44] ।।३।।

राव सीहा रा पुत्रां रौ वरणण—गजसींघ तक मारवाड़ रा राठौड़ राजाग्रां री वंसावळी

सीहै[45] ग्राप सीरखा[46], जोध जाया कांधोधर ।
ग्रासथांन ग्रणभंग, ग्रज्ज[47] सोनंग[48] दुनै कर ।

---

१ ग्रा.इ. दल । २ ग्रा.इ फंगुलौ । ३ ग्रा.इ. लष । ४ इ. छत्रीस । ५ इ. राभ्रां । ६ ग्रा.इ. कुली । ७ ग्रा. रठौड । ८ ग्रा.इ. संभृमी । ९ इ. ईला । १० ग्रा.इ. ऊठीयै । ११ इ. कनूभ्रा । १२ इ. पूभ्रा । १३ ग्रा. लष । १४ ग्रा. रठौडां । इ. राठोडां । १५ ग्रा.इ. गाहे । १६ ग्रा इ. पटरग । १७ ग्रा. ब: । १८ ग्रा. दोमजि । १९ ग्रा.इ. कछ । २० ग्रा.इ. पूरब । २१ ग्रा. हुत । इ. हुंत । २२ ग्रा. ग्रावे । २३ ग्रा पृवाडौ । २४ ग्रा.इ. कीय । २५ ग्रा.इ. जाई । २६ ग्रा. कहीयौ । इ. कहीयो । २७ ग्रा.इ. कमधजां । २८ इ. लियो । २९ ग्रा.इ. सकजां । ३० ग्रा इ. षडग । ३१ इ. उपाडे । ३२ ग्रा.इ. हथल । ३३ ग्रा. सीघला । इ. सींघली । ३४ ग्रा.इ. सीह । ३५ ग्रा.इ. उठीया । ३६ ग्रा इ. लइ । ३७ ग्रा.इ. समदां । ३८ ग्रा. रठौडा । इ. राठोडां । ३९ ग्रा.इ. रहे । ४० ग्रा.इ. गलहथ । ४१ ग्रा. वेढ । इ. षेड । ४२ ग्रा. इ. षडग । ४३ इ. हि । ४४ ग्रा.इ. संग्रहे । ४५ इ. सीहे । ४६ ग्रा. सीरिषा । इ. सारिषा । ४७ ग्रा. ग्रज । इ. ग्रभ्र । ४८ ग्रा.इ. सोनिग ।

मुरधर संखौ[1] धार, लियौ[2] लोहां बळि[3] ईडर।
वसू[4] लाख[5] छत्तीस[6] पूठि कन्नौज[7] वडौ घर।
ग्रासथांन तणौ[8] धूहड हुग्रौ[9], राइपाळ[10] धूहड तणै।
राठौड[11] सदा लगे ग्रादि हर, समवड दिल्ली[12] गंजणै[13] ॥४॥
कन्हराव कुळ[14] तिलक, जोध[15] जग[16] जेठी[17] 'जाल्हण'[18]।
छाडौ तीडौ सलख[19], वीर वैरी विभाडण।
चूंडराव[20] रिणमल्ल[21], राउ[22] 'जोधौ'[23] रढ[24] रांमण।
'सूजौ'[25] 'वाघौ'[26] 'गंगेव', 'माल' गढ[27] कोट पलट्टण[28]।
उदैसिंघ गई वाळण[29] इळा[30], सूरसिंघ सांमुद्र[31] भणि।
गजसिंघ[32] हुग्रौ उतपन्न[33] ग्रहि, जांणि[34] बियौ[35] सिसिहर गयणि ॥५॥

महाराजकुमार गजसिंघ रौ जनम

घड़ी मंडि[36] घडियाळ[37], जोइ जोतिक[38] जोंईसी[39]।
जनम-जोग[40] लिख[41] लिखौ[42], तांम[43] त्रीकाळ[44]-दरस्सी[45]।
व्रहसपती[46] बुध[47] सुक्र[48] केत केयद[49] महाबळ[50]।
राह छनीछर छठै[51], छठै थिय[52] सूरज[53] मंगळ[54]।
उडपती[55] भवण इग्यारमै[56], ग्रागम[57] कंध ग्रनम्मियौ[58]।
'गजबंध' इता[59] बळिवंत[60] ग्रह, ले जस[61]-राति जनम्मियौ[62] ॥६॥

---

१ ग्रा.इ. संषोधार। २ इ. लीयौ। ३ ग्रा.इ. बलि। ४ ग्रा. वसुं। इ. वसूं। ५ ग्रा.इ. लाष। ६ ग्रा.इ. छतीस। ७ ग्रा. कनौज। इ. कनौझ। ८ इ. तणो। ९ ग्रा.इ. हूग्रौ। १० ग्रा. राईपाल। इ. रायपाल। ११ इ. राठौड। १२ इ. ढिली। १३ इ. गंझणैं। १४ ग्रा.इ. कुल। १५ इ. झोघ। १६ इ. झग। १७ इ. झेठी। १८ इ. झाल्हण। १९ ग्रा.इ. सलष। २० ग्रा.इ. चुंडराव। २१ ग्रा.इ. रिणमल। २२ इ. राऊ। २३ ग्रा. जोधो। इ. झोघो। २४ ग्रा. रंट रामण। इ. रंढ रांमण। २५ ग्रा.इ. सूजो। २६ ग्रा. वाघ। २७ ग्र. मालगट। २८ ग्रा.इ. पलटण। २९ ग्रा.इ. वालण। ३० ग्रा.इ. ईला। ३१ ग्रा.इ. समुद्र। ३२ इ. गझसिंघ। ३३ ग्रा.इ. उतपन। ३४ इ. झांणि। ३५ ग्रा. बीयौ। इ. बीयो। ३६ ग्रा. मंड। ३७ इ. घड़ियाल। ३८. इ. झोतिक। ३९ इ. झोइसी। ४० इ. झोग। ४१ ग्रा.इ. लिष। ४२ ग्रा. लीषौ। इ. लीष्यौ। ४३ ग्रा. ताम। ४४ ग्रा. त्रिकाल। इ. त्रकाल। ४५ ग्रा.इ. दरसी। ४६ ग्रा. व्रहसपति। इ. व्रहस्पति। ४७ ग्रा.इ. बूध। ४८ ग्रा. श्रुर्क। इ. श्रुक। ४९ ग्रा. केय: द। इ. कदये। ५० ग्रा.इ. महाबल। ५१ ग्रा.इ. छवें। ५२ ग्रा.इ. थीयौ। ५३ ग्रा. सुरज। इ. सूरझि। ५४ ग्रा.इ. मंगल। ५५ ग्रा. उडपति। इ. उडमति। ५६ ग्रा इ. ईग्यारमै। ५७ ग्रा. ग्रग्राम। ५८ ग्रा. ग्रनमीयौ। इ. ग्रनभीयौ। ५९ ग्रा.इ. ईता। ६० ग्रा.इ. बलिवंत। ६१ इ. झस। ६२ ग्रा. जनमीयौ। इ. झनमीयौ।

महाराज कुमार गजसींघ रो वरणण

कमळ[1] बीय ससि-कळा[2] , कळा[3] वडती[4] जग[5] वदै।
कळाहीण[6] खळ[7] हुवै, जेम[8] निस पूनिम चंदै।
भुज[9] विसाळ[10] लंकाळ[11], वरण झाळाहळ[12] सुंदर[13]।
भरि मातै भाद्रवै, जांणि[14] ऊगौ[15] भासंकर।
बत्तीस[16] लखण[17] सुभ आचरण, बाळपणै[18] हूअौ[19] तरुण।
कमधज्ज[20] कुंअर[21] कमधज्ज हर[22], राजहंस मूरति मइण[23] ।।७।।

गात मेर गज[24] भीम, महा जोधा[25] ऊतळी[26]-बळ।
भुजां[27]-डंड परचंड, जेम गंगा-जळ[28] ऊजंळ[29]।
किरणां कळ कळ[30] कमळ[31], सकळ[32] झाळाहळ[33] निम्मळ[34]।
तेज पूंज राजांन, धीर कांधोधर धम्मळ[35]।
कमधज्ज[36] वंस ऊदोत[37] कर, कमधज्जां[38] कुळि[39] आभरण।
गरजियौ[40] पित्ता बैठै 'गजण', पिता पाट पाटो-धरण ।।८।।
कांधमल्लही[41] सऊ[42], जोध रिणमल[43] तणै घरि।
पिडि अचल्ल[44] अणपल्ल[45], ठल्ल[46] गज[47] ढाहण मच्छरि[48]।
खळ[49] प्रत्थळ खळ[50] सयळ[51], बत्थ[52] दे बळह[53] तणी परि।
खड्ग[54] झल्ल[55] जग भल्ल[56], करण आंकल्ल[57] घणा अरि।

---

१ आ.इ. कमलि। २ आ.इ. ससिकला। ३ आ.इ. कला। ४ इ. चडती। ५ इ. झग। ६ आ.इ. कलाहीण। ७ आ.इ. षल। ८ इ. झेम। ९ इ. भुझ। १० आ.इ. विसाल। ११ आ.इ. लंकाल। १२ आ.इ. झालाहल। १३ आ. अुंदर। १४ आ. जाणि। इ. झांणि। १५ आ. उगौ। १६ आ.इ. बतीस। १७ आ.इ. लषण। १८ आ.इ. बालपण। १९ आ. हूंअौ। २० आ.इ. कमधज। २१ आ.इ. कुअर। २२ आ.इ. कमधज। २३ आ.इ. मईण। २४ आ. गझ। २५ इ. झोध। २६ आ. अतुलीबल। २७ आ. भुजा। इ. भुझा। २८ आ. गंगाजल। इ. गंगाझळ। २९ आ. उजल। इ. उझल। ३० आ,इ. कलकल। ३१ आ.इ. कमल। ३२ आ.इ. सकल। ३३ आ.इ. झालाहल। ३४ आ. निृमल। इ. निरमल। ३५ आ.इ. धमल। ३६ आ. कमधज। इ. कमधझ। ३७ आ.इ. उदोत। ३८ आ.इ. कमधजां। ३९ आ.इ. कुलि। ४० इ. गरझियौ। ४१ आ.इ. कोधमल। ४२ आ. सउ। इ. हीसल। ४३ आ.इ. रणमल। ४४ आ.इ. अचल। ४५ आ.इ. अणपल। ४६ आ.इ. टल। ४७ इ. गझ। ४८ आ.इ. मछरि। ४९ आ.इ. बल पथल। ५० आ.इ. षल। ५१ आ.इ. सयल। ५२ आ.इ. बथ। ५३ आ.इ. षल। ५४ आ.इ. षडग। ५५ आ.इ. झल। ५६ आ.इ. भल। ५७ आ.इ. आकल।

जस गल्ह रहावण जे सहल, मइयळ[१] भंजै मेहवर ।
'गजमल्ल'[२] 'मल्ल'[३] 'गंगे' कुळी[४], रिण दुभल्ल[५] रट्ठौड[६]-हर ॥९॥

नर नरिंद अणनिंद, विंद वांकिम्म[७] वीर वर ।
सुत सुरिंद[८] हरचंद, कंद काढ़ण केवी हर ।
देहाचंद दुडिंद[९] इंद[१०] फुणियंद मिणंघर[११] ।
नर संमद राजिंद, क्रपा[१२] गोविंद विसंभर ।
विभाड[१३] गयंद मयंद[१४] विध, महि सांमंद इधकै मच्छरि[१५] ।
'सूरउत'[१६] प्रगट नवनंद सिर, गरु अति मेर गिरंद सिरि[१७] ॥१०॥

बांण पत्थ[१८] बळि[१९] भीम, जिसौ अहंकार[२०] हि रांमण[२१] ।
जिसौ वाच जुजठिल्ल[२२], जिसौ मांणाहि[२३] द्रोजोवण[२४] ।
समरि करन[२५] बळिराव, दांन दधीच[२६] जिसौ भणि ।
साहस विकमाईत, भोज राजा[२७] जांणै पणि[२८] ।
आरंभ रांम आरंभ गुरु, पारघही फरसां धरण[२९] ।
गजसिंघ महण गंभीर पण, कळा तेज सेंहस[३०] किरण[३१] ॥११॥

एक राऊ[३२] थप्पइण[३३], एक रावां ऊथप्पण[३४] ।
एक राव गढ़ लियण, एक रावां गढ़ अप्पण[३५] ।
एक राव परिभवण, एक रावां पडि गाहण ।
एक राव जड गमण, एक राऊ[३६] सरणै रक्खण[३७] ।
इक[३८] राव रंक करि रोळवण, एकां आलंबण थियौ[३९] ।
कमधज व्रजागि[४०] 'गज' केसरी, आगि खाइ[४१] इम ऊठियौ[४२] ॥१२॥

---

१ आ.इ. मईयल । २ आ.इ. गजमल । ३ आ.इ. मल । ४ आ.इ. कुलि । ५ आ.इ. दूझल । ६ आ. रठौड । इ. राठौडं । ७ आ.इ. वांकिम । ८ आ. सुरिंद । ९ अ. दुपिंड । १० आ. ईद । ११ आ.इ. मिणधर । १२ आ.इ. कृपा । १३ इ. विभा । १४ आ. मयद । १५ आ.इ. मछरि । १६ इ. सूरत । १७ आ.इ. सिर । १८ आ.इ पथ । १९ आ.इ. बलि । २० आ. अँहैकार । इ. अंहैकार । २१ आ.इ. रामण । २२ आ.इ. जुजिढिल । २३ आ.इ. माणहि । २४ इ. टोजोवण । २५ आ. क्रर्न । इ. क्रंन । २६ आ. दधीच । २७ इ. राझा । २८ आ. जाणवण । इ. झांण-पणि । २९ आ.इ. फरसाधरण । ३० आ.इ. सहस । ३१ आ.इ. किण । ३२ इ. राउ । ३३ इ. थपइण । ३४ आ. उथपण । इ. ऊथपण । ३५ आ.इ. अपण । ३६ आ.इ. राव । ३७ आ.इ. रषण । ३८ आ.इ. एक । ३९ आ.इ. थीयौ । ४० आ.इ. वृजागि । ४१ आ.इ. षाई । ४२ आ.इ. उठीयौ ।

दूहा

कोटां[1] मेवट गढ गिळण, सुरितांणां उरिसल्ल[2] ।
'गाजीसाह' अभिन्नमौ[3], दादौ 'माल' दुझल्ल[4] ।।१।।

दांने लख[5] कोडी दियण, जुडि जीपण रिण जंग[6] ।
सूरजिसिंघ[7] समोभ्रमी[8], दूजो 'गंगा' अभंग ।।२।।

गजपत्ती[9] दातार गुर, सहि कांमे समरत्थ[10] ।
रिण डोहण रिणमल जिसौ, जोध जिसौ कळिमत्थ ।।३।।

तेरां साखां[11] जस[12] तिलक, राठौडां[13] छळ रक्ख[14] ।
वीर उपन्नौ[15] वीरवर, सिद्धां[16] धरि[17] साधिक्क[18] ।।४।।

इन्द्र[19] प्रभत इंद्रह विभौ, इंद्र छभा अनांण ।
इन्द्र समीवड रट्ठवड[20], हिंदूवै सुरतांण ।।५।।

छन्द रंगिका (रोगीका)

इंद अस्ट[21] भौ[22] आपांण, भी तार जांमणि[23] भांण ।
चवुदहीं[24] विद्या जांण[25], बहोतरि[26] कळा[27] ।
राग छत्तीस[28] मांणग रंग, सास्त्र[29] कोक सुचंग ।
कमध अनंग अंग, धणी कमळा[30] ।।१।।

हृद भूखण[31] वस्त[32] हीर, नित कमकमै नीर ।
चंदण पेंक[33] अंबरि[34], चंपक दळ ।

१ आ.इ. कोटा । २ आ.इ. उरिसल । ३ आ.इ. अभिनमौ । ४ आ.इ. दुझल । ५ आ इ. लष । ६ इ. झंग । ७ आ. सूरजसिंघ । इ. सूरझिसिंघ । ८ आ. समोभूमी । ९ आ.इ. गजपती । १० आ इ. समरथ । ११ आ.इ. साषां । १२ इ. झस । १३ इ. राठोडां । १४ आ.इ. रष । १५ आ.इ. उपनौ । १६ आ.इ. सिधां । १७ अ. यरि । १८ आ.इ. साधिक । १९ आ. ईंद्र । २० आ. रठवड । इ. राठवड । २१ आ.इ. अष्ट । २२ आ.इ. भो । २३ आ.इ. जामणी । २४ अ. चवदहां । २५ इ. झांण । २६ आ. बहोतरी । इ. वहोतरी । २७ आ.इ. कला । २८ इ. छत्रीस । २९ आ. सास्त । ३० आ.इ. कमला । ३१ आ.इ. भूषण । ३२ इ. वसत । ३३ अ. पेक । ३४ आ. अंबरि ।

काया केसरी[1] किसनागरि, जबाधि मै जळहरि[2] ।
म्रिग[3] नाभ[4] मलैतरि, मयाचळ ।।२।।

भ्रख[5] अढार भोजण भांणि, तंबोळ[6] मुख[7] तरणि ।
वाजेंद्र राह वाहणि, आरूढ वळे[8] ।
रिति वरखा[9] सरद्[10] हैमंत सैंसर हद[11] ।
वसंत गीखम[12] सद्[13] सुख[14] सगळे ।।३।।

हेक चाढंत सीस हुकंम्म[15], नमंत एक अनंम[16] ।
खडग[17]धारी खतम, आगळि[18] खडा[19] ।
जुड़ै झालियां[20] वागां जंगम गडड़ै जूह दुगम ।
काछियां[21] पाइ कम कम, स्रम[22] कन्नडा[23] ।।४।।

वंस छत्तीस[24] पांतवळ, कोठारां हुवै कळळ[25] ।
प्रगट न सदा सबळ[26], ऊपट[27] पला ।
दे दे[28] हुवा रिदबट दन्न[29], ऊधमै घिरत अन्न[30] ।
'वाघा'[31] हरौ खट वन्न[32], करै सबळा[33] ।।५।।

'चूंडै'[34] सारिखौ[35] चरु सुगाळ[36] भला ही भलौ[37] भूपाळ[38] ।
कमधज प्रजंपाळ[39], अनंत करं[40] ।
दीपै भुजाई देव[41] मे कळा, रांणौ रांणि रावताळा[42] ।
भडां हुवै भाटकळा[43] आठौ पुहरं ।।६।।

---

१ आ.इ. केसरि । २ आ.इ. जलिहरि । ३ आ. मिृग । इ. मृग । ४ अ. भाभ । ५ आ. भृष । इ. भष । ६ आ. इ. तंबोल । ७ आ.इ. सुष । ८ आ.इ. वले । ९ आ.इ. वरषा । १० आ.इ. सरद । ११ आ.इ. हृद । १२ आ.इ गीषम । १३ आ.इ. सद । १४ आ इ. सुष । १५ आ. हुकम । इ. हूंकम । १६ आ. अनम । १७ आ.इ. षडग । १८ आ.इ. आगली । १९ आ.इ. षडा । २० आ.इ. झालीयां । २१ आ.इ. काछीयां । २२ आ.इ. शृम । २३ आ.इ. कनडा । २४ अ.इ. छतीस । २५ आ.इ. कलल । २६ आ.इ. सवल । २७ आ.इ. उपट । २८ आ.इ. दै दै । २९ आ.इ. दन । ३० आ.इ. अन । ३१ आ.इ. बाघा हरौ । ३२ आ. षटबन । इ. षट-वन । ३३ आ.इ. सबला । ३४ आ.इ. चुंडै । ३५ आ.इ. सरिषौ । ३६ आ.इ. चर सुगाल । ३७ आ.इ. भलो । ३८ आ.इ. भुपाल । ३९ आ. पृजंपाल । इ. पृज-पाल । ४० आ. कर । ४१ इ. दैव । ४२ आ.इ. रावताला । ४३ आ. इ. भाटकला ।

ओळगै[1] ओटै लाख यार[2] झालिये[3] खागे[4] जूंझार[5] ।
सांमंत[6] निरोहासार, सोहड सूरा ।
चूरै[7] प्रिसण आवध चोट, मंछराळा मन मोट ।
प्रचंड[8] दुबाहा कोट, प्रवाडै[9] पूरा ॥७॥

लंभ बगसिजै कोड़ी लाख[10], डूंगर खट[11] भाख[12] ।
तिलक तेरह[13] साख[14], कमध कहै[15] ।
चवै कीरति चंक[16] चारण, गज-पात कहै गुण ।
पवंग गयंद पण, सांसण लहै[17] ॥८॥

आगै हुवंत नट ओसर[18], संगीत सपत सुर,
नमंत निरत कर, पैगति निमै[19] ।
ओद[20] मादळ वाजै ओदंग[21] अउबभति उपंग,
निरूपै गीत नादंग, जस न जिमै[22] ॥९॥

सीमंडल[23] रबाब सार, रुद्द[24] वीणा झणंकार[25] ।
तंत मझि घोर तार, ग्रांमा[26] त्रिहुणै[27] ।
ताळ[28] कंसाळ[29] झालरी टेक, अघोटी कच्छिबी[30] एक ।
आगळी[31] वाजै अनेक[32], विवह वणै[33] ॥१०॥

रोड़ि द्रुमति ढ़ोल रवद, सहनाई[34] भेर सद्द[35],
निफेरी भेरी निनद, नीसांण घुबै[36] ।
पंच सद[37] दमांम[38] पूर, रुडै[39] डूड रिणतूर ।
प्रमांणै[40] मेघ पड्डूर (पडर), हैरांन हुबै ॥११॥

---

१ आ. ओलेगै । इ. ओलगै । २ आ. लष यार । इ. लाषयवार । ३ आ. झालीए । इ. झालीयै । ४ आ.इ. षागे । ५ आ.इ. झूंझार। ६ आ.इ सामंत । ७ अ. चरै । ८ अ. प्रचाडै । ९ अ. प्रबाडै । १० आ.इ. लाष । ११ आ.इ. षट । १२ आ.इ. भाष । १३ अ. तई । १४ आ. इ. साष । १५ आ. कहे । १६ आ.इ. चंड । १७ आ. लहे । १८ इ. ओर । १९ अ. निमे । २० आ.इ मृद । २१ आ.इ. मृदंग । २२ आ. जिमैं । २३ आ. श्रीमंडल । २४ आ.इ. रुद बीणा । २५ आ.इ. झणाकार । २६ आ.इ. ग्राम । २७ आ. त्तिहणे । २८ आ. ताल । २९ आ.इ. कंसाल । ३० आ. इ. कछिबी । ३१ आ.इ. आगली । ३२ आ.इ अनिक । ३३ आ.इ. वणे । ३४ इ. सहनाइ । ३५ आ.इ. सद । ३६ आ.इ. घुणे । ३७ आ. पंच सब्द । इ. पंचसबद । ३८ आ. माम । इ. दमाम । ३९ आ. रूडे । ४० आ. प्रमांणे । इ. प्रमांण ।

निमौ[१] साहिब खेड[२] नरेस, आसति मति आदेस,
पर राठां हूंत[३] पेस, मेल्है[४] मंडळी[५] ।
गढ़ जोधांण इसौ[६] गहन, कुअर[७] दूसरौ[८] करन ।
सूरिज माल सुतन् सहंस[९] बळी[१०] ॥१२॥

सवाई महाराजा सूरसींघ तथा महाराज कुमार गजसींघ रो वरणण

॥ कवित्त ॥

सहस पंच चत्र गांम[११], मंडि नवकोट मुरद्धर[१२] ।
असी सहंस[१३] रावतां, असी सह सहाई[१४] पखर[१५] ।
इळ[१६] भूचै[१७] आइ पद्द[१८], असी सहसां असवारां ।
सूं[१९] लडिया[२०] नवलाख[२१] खुंद[२२] खारां खंधारां[२३] ।
राठौड मौड[२४] हिंदुवांण[२५] सिरि, महा द्रुग्ग[२६] गढ़ जोधपुर ।
गजसिंघ कुंवर[२७] नृिप[२८] सूरसिंघ, सहुवै[२९] वंदै सुर असुर ॥१॥

मंडोवर मुरधरा, खेत[३०] लोहडा[३१] खुरसांणह[३२] ।
नर समंद[३३] तै नांम[३४], सहू[३५] सिर हिंदुसथांनह[३६] ।
सातवीस मद मोख[३७], गुडै[३८] मैंगळ[३९] मद मत्ता[४०] ।
सहस पंच रट्ठौड[४१], जोध असमांग[४२] छिबत्ता[४३] ।
गजसिंघ कुंअर[४४] कुंअरां[४५] तिलक, मल्ल[४६] जेम जीपण कळह ।
जैचंद "पंग" राजा जिसौ, सूरजसिंघ राजा सुपह ॥२॥

---

१ आ.इ. निमो । २ आ.इ. षेड - नरेस । ३ आ.इ. हुंत । ४ इ. मेल्हे । ५ इ. मंडली । ६ आ. ईसौ । इ. इसो । ७ यह शब्द आ. और इ. में नहीं मिला । ८ इ. दूसरो । ९ आ.इ. सहस । १० आ.इ. बली । ११ आ. चत गांम । १२ आ.इ. मुरधर । १३ आ.इ. सहस । १४ इ. साहइ । १५ आ. पषर । इ. पाषर । १६ आ इ. ईल । १७ आ. भुचे । इ. भुंचे । १८ आ.इ. पद । १९ आ.इ. सु । २० आ इ. लडीया । २१ आ.इ. लाष । २२ इ. दुंद कारां । २३ आ.इ. षंधारां । २४ आ.इ. मोड । २५ आ.इ. हिंदूवांण । २६ आ. द्रुग । इ. दुरंग । २७ आ.इ. कुवर । २८ आ.इ. नृिप । २९ आ सहूवै । ३० आ.इ. षेत । ३१ आ. लोहडा । इ. लोहड़ा । ३२ आ.इ. षुरसांणह । ३३ आ.इ. समद । ३४ इ. नाम । ३५ इ. सहु । ३६ आ.इ. हिंदूसथांनह । ३७ आ.इ. मोष । ३८ इ. गुडै । ३९ आ.इ. मैंगल । ४० आ.इ. मदमता । ४१ आ. रठौड । इ. राठौड । ४२ आ.इ. असमांण । ४३ आ.इ. छिबता । ४४ आ. कुअर । ४५ आ. कुअरां । ४६ आ.इ. मल ।

राज्य वैभव वरणण

गाथा

साहण समंद सूरौ, ईस्वर[1] अवतार देव राजिंद्रौ[2] ।
कविळास[3] जोधद्रुगौ, कुमेरौ संपदा पण ए[4] ॥१॥

जोधपुर तुल मेंरौ, तेरह[5] सांखां[6] कोडि तेतीसौ[7] ।
तथौ[8] "गजसाह" इंद्रौ[9] वित चित विसेखांयु[10] ॥२॥

गज[11] कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतंग महल अटाळा ।
संपेख[12] धांम[13] वांम[14], विसक्रमा[15] विभ्रम[16] भवेत ॥३॥

नगर वरणण

छन्द नाराच[17]

उतंग[18] चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं ।
कळी[19] सपेत जांणि सेत, धार धम्मला गिरं[20] ।
पहाड कोटि कम्मसीस[21] पेखिए[22] प्रचंड ए ।
जळद्द[23] हद्द[24] रूप जांणि, मेघमाळ मंड ए ॥१॥

महल्ल[25] गौख[26] सोभ[27] मांन, कुंदनी[28] कळस्स ए[29] ।
पणंत काच नील व्रन्न[30], आरिखे[31] अरस्स ए[32] ।
पबै[33] गिरां पगार पौळि[34], लोहमं कपाट ए ।
(जु) स्त्रिगमेर[35] सीस जांणि, ओपियंत[36] आट ए ॥२॥

---

१ आ.इ. ईश्वर । २ आ.इ. राजिंद्रो । ३ आ.इ. कवलास । ४ आ. ऐ । ५ अ. तेइ । आ. तेई । ६ आ. साषां । इ. सषां । ७ आ. तेतीसो । ८ आ.इ. तथा । ९ आ.इ. इंद्रो । १० आ.इ. विसेषायु । ११ आ.इ. गढ कोटि । १२ आ इ. संपेष । १३ आ.इ. धाम । १४ आ. वामं । इ. ठामं । १५ आ.इ. विसुक्रमा । १६ आ. विभ्रमं । १७ आ.इ. नाराज । १८ आ.इ. ऊतंग । १९ आ.इ. कली । २० आ.इ. धमला गिरं । २१ आ.इ. कमसीस । २२ आ.इ. पेषीयै । २३ आ.इ. जलद । २४ आ.इ. हद । २५ आ.इ. महल । २६ आ.इ. गोष । २७ आ. सौभ । २८ इ. क्रुंदनी । २९ आ.इ. कलसए । ३० आ. पृन । इ. पृन । ३१ आ.इ. आरिषे । ३२ आ.इ, अरसए । ३३ आ. पवे । ३४ आ.इ. पौलि । ३५ आ.इ. श्रिग मेर । ३६ आ.इ ओपीमंत ।

जरद्द[१] लाल सेत स्याह, जाळियां[२] पखांण ए[३] ।
सपत्त[४] मै खणा[५] आंमास, ओपि असमांण ए[६] ।
विराज मांन राजथांन कमंधज्ज[७] भूपती ।
जुगत्ति[८] राजगत्ति[९] जांणि, इंद अंमरावती[१०] ॥३॥

विनोद गीत नाद भेद, सद्द[११] घंट झालरी ।
प्रसाद देव पूंजिइत, अंबिका हरीहरी ।
निसा जळंत[१२] दीपजोत, मिंदरं[१३] उजाळ ए[१४] ।
सदा सरब्बदा[१५] हुवत्त[१६], जांण दीपमाळ ए[१७] ॥४॥

उदै अरक्क[१८] ऊगहंत, माळ लक्ख[१९] मंडही ।
स्रीवंत[२०] साह लाखपत्ति[२१], कवि क्रोड[२२] दी घुही ।
वियास[२३] भट्ट[२४] के महंत, जोतिकी ब्रहांमणं[२५] ।
कथा पुरांण[२६] भागवंत, भारथं रांमाइणं ॥५॥

रुधव्व[२७] जुज्ज[२८] सांमवेद[२९], आंमना अथब्बणं[३०] ।
त्रईस[३१] रांण[३२] वेद मंत्र[३३], बोलियंत[३४] बंभणं[३५] ।
जुडित्त[३६] एक जोरदार, थोर भुज्ज[३७] डंड ए[३८] ।
जेठी प्रचंड ग्रीठ[३९] पिंड मल्ल[४०] जुध्घ[४१] मंड ए ॥६॥

भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट[४२] के करै ।
तरक्क[४३] नीति[४४] सासत्रांणि[४५], एक मुक्ख[४६] उच्चरै[४७] ।

---

१ आ.इ. जरद । २ आ.इ. जालीयां । ३ पषांणए । ४ आ.इ. सपत । ५ आ. इ. षण । ६ आ.इ. आसमाणए । ७ आ.इ. कमधज । ८ आ.इ. जुगति । ९ आ.इ. राजगति । १० आ.इ. अमरावती । ११ आ.इ. सद । १२ आ.इ. जलंत । १३ आ. मिंदर । १४ आ.इ उजलए । १५ आ.इ. सरबदा । १६ आ.इ. हुवत । १७ आ.इ. दीपमालाए । १८ आ.इ. अरक १९ आ.इ. लष । २० आ.इ. श्रीवंत । २१ आ.इ. लाषपति । २२ आ.इ. कोड । २३ आ.इ. व्यास । २४ आ.इ. भट । २५ आ. ब्रहामणं । इ. ब्रह्मणं । २६ आ. पुराण । २७ आ.इ. रुघव । २८ आ.इ. जुज । २९ आ. सामवेद । इ. सांमहेद । ३० आ. अथवणं । इ. अथबरणं । ३१ आ. त्तइंस । ३२ आ.इ राण । ३३ आ. मंत । ३४ आ. बोलीयंत । ३५ बेभणं । ३६ आ. जुडित । इ. जुडित । ३७ आ.इ. भुज । ३८ आ. डडए । ३९ अ. ग्रीव । ४० आ. इ. मल । ४१ आ.इ. जुध । ४२ आ. इष्ट । इ. इसट । ४३ आ.इ. तरक । ४४ इ. निति । ४५ आ.इ. सासत्राणि । ४६ आ.इ. मुष । ४७ आ इ. उचरे ।

मारतं एक सब्ब[1] घात, केळवै[2] रसायणं[3] ।
अगाध[4] वेद राज राज[5] ओखदी[6] विचारणं ।।७।।

ऋखी[7] विणज्ज[8] आकरांणि[9] , पसू चौपदो घणी ।
अनेक संपदा[10] उपाउ, लाछि[11] चत्तुरंगणी[12] ।
पदंम[13] राग लाल पाच, नीलया[14]-मिणी[15] नगं ।
पना कनक्क[16]में[17] जडाउ[18] जोइ[19] मोहियै[20] जगं ।।८।।

बाजार वरणण

करै वणिज्ज[21] एक हट्ट[22] रूप सक्कलत्त ए[23] ।
साखा[24] चौतार मुक्खमल्ल[25], रेसमी वसत्त ए[26] ।
करंत एक दांन पुन्नि[27] जिग्ग[28] होम जप्प[29] ए ।
करंत एक राग रंग, मोहिए[30] सरप्प ए[31] ।।९।।

गाइत्ति[32] एक आप ग्रेह, मांणखोस[33] मंगळं ।
चमीर हीर हार चीर, कांन हेम कुंडळं[34] ।
सिंगार खोड[35] मै[36] संजुत्त[37] सुंदरी वखांण ए[38] ।
पंयच[39] आंगुळी[40] जु पांण, कांम पंच वांण ए[41] ।।१०।।

अनेक एक पेखियंति[42], रूप मै[43] चिरत्त ए[44] ।
वसंत पट्टणं[45] विसाळ[46], जोति मै[47] नखत्त ए[48] ।

---

१ आ. सब । इ. सर्व । २ आ. केलवे । इ. केलवै । ३ आ.इ. रसायिणं । ४ आ. आगाध । इ. अगाधि । ५ वेदराट । ६ आ.इ. ओषदी । ७ आ.इ. ऋषी । ८ आ. विणझ । इ. विणज । ९ आ.इ. आकराणि । १० आ. सपदा । ११ आ.इ. लछि । १२ आ. चतुरंगणी । इ. चत्रुरगणी । १३ आ.इ. पदम । १४ आ. निलया । इ. निलयी । १५ इ. मीणी । १६ आ.इ. कनक । १७ आ.इ. मै । १८ आ.इ. जड़ाव । १९ अ. जोई । २० आ.इ. मोहीयै । २१ आ. वाणिज । इ. वणिज । २२ आ.इ. हठ । २३ आ.इ. सकलतऐ । २४ आ.इ. साषा । २५ आ.इ. मुषमल । २६ आ.इ. वसतए । २७ आ.इ. पुनि । इ. पुन्य । २८ आ.इ. जिग । २९ आ.इ. जपण । ३० आ.इ. मोहीयै । ३१ आ.इ. सरपए । ३२ आ.इ. गाइति । ३३ अ. माणणी । ३४ कुंडलं । ३५ आ.इ. षोड । ३६ अ. मे । ३७ आ.इ. संजुत । ३८ आ. वषांणए । इ. वषाणए । ३९ अ. पमंच । ४० आ.इ. आंगुली । ४१ आ. बाणए । ४२ आ.इ. पेषीयंती । ४३ अ. में । ४४ आ.इ. चिरतए । ४५ आ.इ. पटणं । ४६ आ.इ. विसाल । ४७ अ. में । ४८ अ.इ. तषतए ।

वसै[1] अढारहै वरन्न[2] लोक मै[3] अपार ए ।
वसै[4] छतीस पूण[6] जात, कज्जि[7] रोजगार ए ॥११॥

तालाब उपवन आदि वरणण

अहौनिसा[8] कहौ हुवंत, लाख[9] लोक[10] नग्गरं[11] ।
हिलोळ[12] जांणि हूकळंत[13], सद्द[14] नद्द[15] सग्गरं[16] ।
सरोवरां तटाक[17] हौद, तीरथं प्रमांण ए[18] ।
वावी अनूप कूप वाइ, नीझरै निवांण ए[19] ॥१२॥

आरुब भूव्र ओपवांन[20], अंब वाग ओप ए ।
अठार[21] भार अदब्भू[22], अजू अजू अजोप ए ।
गुलाब मालती सुगंध, सेवती सुपड्डलं[23] ।
तरांणि पंच केवडाकि, केतकी परिम्मलं[24] ॥१३॥

जंभीर[25] दाख[26] बीज[27] पूर, व्रक्ख[28] कोळ[29] बद्दरी[30] ।
खिजूर[31] ताड नाळिकेर, दाडिमी जळंधरी[32] ।
सदा फळांणि[33] निंबुआंणि[34] , राइणी[35] महूअडा ।
कल्हार जंबुई[36] नारंग - रंग वाग रूअडा ॥१४॥

भुजंग वेलि चंदनी[37], न कुंज[38] मै[39] तमाळ ए ।
अनेक व्रक्ख[40] अन्नि[41] अन्नि, रुप मे रसाळए[42] ।
चळांणि[43] पत्रियांणि[44] वट्ट[45], आंबली[46] असंभ ए ।
बकांणि नींब[47] में बहुत्त, ईखियै[48] अचंभ ए ॥१५॥

---

१ आ. वसे । २ आ.इ. वरन । ३ अ. में । ४ आ. वसे । ५ इ. छत्रीस । ६ आ. पुण । इ. पवण । ७ आ. कजि । ८ अ. अहौनिस । ९ आ.इ. लाष । १० आ. ल्लोक । ११ आ.इ. नगरं । १२ आ.इ. हिलोल । १३ आ.इ. हुकलंत । १४ आ. इ. सद । १५ आ.इ. नद । १६ आ.इ. सगरं । १७ आ.इ तटाके । १८ आ.इ. प्रमाणए । १९ आ.इ. नीवांणए । २० आ. ओपवान । इ. ओपमांन । २१ आ.इ. अढ़ार भार । २२ आ.इ. अद भू । २३ आ.इ, सुपड्लं । २४ आ.इ. परमलं । २५ इ. जंबीर । २६ आ.इ. दाष । २७ आ.इ. बिज । २८ आ. वृष । २९ आ, कोल । ३० आ.इ. बदरी । ३१ आ इ. षिजूर । ३२ आ.इ. जलंधरी । ३३ आ.इ. फलाणि । ३४ इ. निबु आणि । ३५ इ. रांइणी । ३६ आ. जंबूइ । ३७ आ.इ. चंदनि । ३८ आ. कुज । ३९ अ. में । ४० आ.इ. वृष । ४१ आ.इ. अनि । ४२ आ.इ. रसालप । ४३ अ. चलाणि । ४४ आ. पत्तियांणि । इ. पत्रियांण । ४५ आ.इ. वट । ४६ आ. आबली । ४७ आ.इ. नीब । ४८ आ. इषीयै । इ. ईषीयै ।

महाराजकुमार गजसिंघ रो बडा महाराजा री अनुपस्थिति में राज्य भरा सम्हाळणो

दूहा

गढ़[1] जोधपुर इन्द्र[2] पुर, छबि सोभा अणपार।
कवि जीहा कहि दक्खवै[3], केतोइक विसतार ॥१॥

दरि है गै धरि राइधी[4], भड वंका दीवांण।
की इंद्रापुर[5] अग्गळौ[6], घटि कीं सूं[7] जोधांण[8] ॥२॥

बापूह वित अच्छेह[9] में, आपह चित अच्छेह।
'गज्जण'[10] मांणै साहिबी, ज्यूं[11] महि मांणै मेह ॥३॥

दुहूं[12] भुजै[13] सुरतांण बळ[14], दुहूं[15] भुजे कुळ[16] लाज।
राजा सरहद्दां[17] लियै, कुंअर[18] भुगत्तै[19] राज ॥४॥

राजा राज भळावियौ[20], 'गाजीसाह' नरेस।
आसा[21] पै औ[22] जोधपुर, आ धरती औ[23] देस ॥५॥

धमळौ बापू कारियौ[24], बाळौ[25] है बळि बंड।
धुरि माथौ धूणै नहीं[26], भरि ओडै भूडंड[27] ॥६॥

महाराजा सवाई सूरसींघ रो दखिण में गमन

कवित्त

पच्छिम पुरब[28] उतराध, इळा[29] दखणाधह[30] आगळ[31]।
हिंदूवांण[32] खुरसांण[33], दुहूं[34] भुज्जे[35] दुन्है छळ[36]।

---

१ आ.इ. गढ। २ इ. इजपुर। ३ आ.इ. दषवै। ४ आ:इ. राईधी। ५ इ. इडापुर। ६ आ.इ. अगलौ। ७ आ. सुं। इ. सू। ८ आ. जोधाण। ९ आ.इ. अछेह। १० आ इ. गजण। ११ आ. ज्युं। १२ आ.इ दुहु। १३ आ.इ. भुजे। १४ आ.इ. । छळ १५ दुहु। १६ आ इ. कुल। १७ आ.इ. सरहदां। १८ आ.इ. कुअर। १९ आ.इ. भुगतै। २० आ.इ. भलावीयो। २१ आ.इ. आ सां। २२ इ. ओ। २३ आ.इ. ओ। २४ आ. बापुकारीयो। इ. वापुकारीयो। २५ आ.इ. बालौ। २६ आ.इ. नही। २७ आ. भुडंड। इ. भुहडंड। २८ आ. पूर्ब। इ. पूरब। २९ आ. इला। इ. ईला। ३० आ. दषणाघह। इ. दिषणाधह। ३१ आ.इ. आगल। ३२ आ.इ. हिंदूवांण। ३३ आ. षुसांण। इ. षुरसांण। ३४ आ.इ. दुहु। ३५ आ. भुजे। ३६ आ.इ. छल।

सूरसिंघ दिगपाळ[1], एक पक्खर[2] लख[3] पक्खर[4] ।
गूजरवै[5] अरबद्द[6], कीध वंका सूर[7] पधर[8] ।
दळ थंभ[9] देखि[10] दिल्ली[11] धणी[12], दखण[13] दीध[14] आडौ[15] दळां[16] ।
तिण वार भळावै[17] निय[18] तणौ, 'गाजीसाह' भुअब्बळां[19] ॥१॥

महाराजकुमार गजसींघ रो मेवाड़ पर आक्रमण तथा नाडूळ पर अधिकार करणो

मेद पाट खुरसांण[20], आदि बकवाद[21] संभारे[22] ।
साहि कीध फुरमांण, खांन[23] सुरतांण हकारै[24] ।
चढे[25] सेन चतुरंग, सपत किरि साइर[26] फट्टा[27] ।
एक लाख[28] असवार, आवि मेवाड निहट्टा[29] ।
ऊबरा खांन[30] बहतरि[31] सतरि, प्रजाबंध पाडे मढां ।
नाडूळ[32] 'सिंघ' गळ[33] गज्जियौ[34], गोढ़वाड ऊपरि[35] गढ़ां ॥२॥

वळौ[36] जूह विब्भाड[37], डसण नाडूळ[38] उपट्टै[39] ।
जोजावर चांमळोद[40], खोड[41] आंमिख[42] गळ घट्टै[43] ।
गिळै[44] गूंद[45] सादडी, सयळ[46] साव्ज[47] मन रंजै[48] ।
कोलर तोडि[49] करंक, गूह[50] गरजी खत[51] भंजै[52] ।
गोढ़वाड बरड संधांण[53] सह, कूंभ[54] भंजि कूंभेण गिरि ।
गजसिंघ[55] कियौ[56] गज केसरी, सिंघनाद मेवाड सिरि ॥३॥

---

१ आ.इ. दिगपाल । २ आ.इ. पषर । ३ आ.इ. लष । ४ आ.इ. पषर । ५ आ.इ. गुजरवै । ६ आ.इ. अरबद । ७ अ आ. सर । ८ अ. पद्धर । ९ आ.इ. दल-थंभ । १० आ.इ. देषि । ११ आ.इ. दिली । १२ आ. ढणी । १३ आ.इ. दषण । १४ आ. दीद्ध । १५ आ.इ. आडा । १६ आ.इ. दलां । १७ आ.इ. भलावे । १८ आ. इ. नीय । १९ आ.इ. भुअबलां । २० आ.इ. षुरसांण । २१ इ. बकवादौ । २२ आ. इ. संभारै । २३ आ.इ. षांन । २४ आ.इ. हकारै । २५ आ.इ. चटे । २६ आ.इ. साइ । २७ आ.इ. फटा । २८ आ.इ. लाष । २९ आ.इ. निहटा । ३० आ.इ. षान । ३१ आ बहतिरि । इ. बहितिरि । ३२ आ.इ. नाडूल । ३३ आ.इ. गल । ३४ आ. गंजियौ । इ. गजयौ । ३५ आ,इ. उपरि । ३६ आ.इ. वलौ । ३७ आ.इ. विभाड । ३८ आ.इ. नाडूल । ३९ आ.इ. उपटे । ४० आ.इ. चांमलोद । ४१ आ.इ. षोड । ४२ आ.इ. आमिष । ४३ आ.इ. घटे । ४४ आ.इ. गिले । ४५ आ. गुदं । इ. गुद । ४६ आ.इ. सयल । ४७ आ.इ. सावज । ४८ आ.इ. रंजे । ४९ आ.इ. तोड़ि । ५० आ.इ. गुद । ५१ आ.इ. षत । ५२ इ. भंजे । ५३ आ. संवाण । इ. ससंधाण । ५४ इ. कूभ । ५५ इ. गजांसिघ । ५६ आ.इ. कीयौ ।

दूहा

है पाई[1] गिरि गाहिजे, मारीजै[2] मैवास ।
निस वासर नागाद्रहा[3] , हियै[4] न पूजै सास ॥१॥

वरळाई[5] सोळंकिया[6] , धूणै बळी[7] पहाड ।
घा बाळीसां[8] सींधलां[9] , गमिया जडां उपाड ॥२॥

छन्द हाकुटिया[10]

सोळंकी[11] सारे मछर मारे, ढंढ़ोळै[12] पहाड ।
बाळीसा बोए फौजां ढोए, मळवट्टै[13] मेवाड ।
सींधल[14] संघारे बोल उतारे, मेले दळ[15] कळि[16] मूळ[17] ।
खागै[18] खूमांणां[19] रेहलि रांणा, निज थांणा[20] नाडूळ[21] ॥१॥

गाहा चौर[22] [चौसर]

कमधज्जां[23] नाडूळ[24] लसक्कर[25] ।
लौहोडौ[26] खुरसांण[27] मंडोवर ।
हेरि कतार नयर दूनाडे[28] ।
मांडै[29] डांण रांण मेवाडै ।

दूहा

मेवाडौ ओळोभियौ[30], धारि पहौ मन धौड ।
जोधपुरौ[31] जीपै सदा, जुध हारै चीतोड ॥१॥

---

१ आ. पाइ । इ. पापाई । २ आ.इ. मारिजै । ३ नागद्रहा । ४ आ.इ. हीयै । ५ आ.इ. छरळाई । ६ आ.इ. सोलंकीयां । ७ आ.इ. बळौ । ८ बालीसा । ९ आ.इ. सींधलां । १० आ.इ. हाकुटीया । ११ आ. सोलींकी । इ. सोलंकी । १२ आ.इ. ढंढ़ोले । १३ आ.इ. मलवटे । १४ आ.इ. सीधल । १५ आ.इ. दल । १६ आ.इ. कलि । १७ आ.इ. मूल । १८ आ.इ. षागे । १९ आ.इ. षूमांणा । २० आ.इ. थाना । २१ आ.इ. नाडूल । २२ आ. गाहा चोर । इ. गाहा चोरस । २३ आ.इ. कमधजां । २४ आ.इ. नाडूल । २५ आ.इ. लसकर । २६ आ. लौहौड़ौ । इ. लोहेड़ो । २७ आ.इ. षुरासांण । २८ इ. दूनाडै । २९ आ.इ. मांडे । ३० आ. औलोभीयौ । इ. आलोजीयो । ३१ आ.इ. जोघपुर ।

सूं[१] थांणै नव[२] साहसौ, रांण जरूकी राडि[३] ।
धाडां कारण[४] मेलिया[५] , दस सहसे[६] दळ[७] चाडि ॥२॥

छंद तवत[८]

मेवाडै[९] रांण[१०] तणा दिल मुरधर चालै दळ[११] चतुरंग ।
घोडां पडताळ भडां घांसाहड, पररांणं पडिभंग ।
दळ[१२] वळिया[१३] पाछा डांणी हूं[१४], लांभौ मन्नै[१५] भिड वाउ ।
आयौ तिण वेळा[१६] 'गोइंद' आडौ, भेडक भाटी राउ ॥१॥

महारांणा की पराजय

कवित्त[१७]

भाटीराउ गजभोम, जुडे[१८] जांमळि रट्ठोडां[१९] ।
जीता जोधपुराह, हारि हुई[२०] चीतोडां[२१] ।
देसपती[२२] राउत्त[२३], अमुह केतौ ऊजांणां ।
ईसर[२४] सांमळदास, खेत[२५] रहिया[२६] खूमांणां[२७] ।
'गोइंद' पेखि[२८] जैसळगिरौ[२९], बाघ वीसमौ वीरवर ।
रिणवार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगां[३०] जेम[३१] गया कुंअर ॥१॥

महाराजकुमार गजसींघ रो सिरोही पर आक्रमण

दूहा

मछरीकां[३२] सिर मछरियौ[३३], राइजादौ[३४] राठोड ।
वैर पुरांणा[३५] वाळिवा, करै नवल्ली[३६] दौड ॥१॥

---

१ आ.इ. सु । २ इ. नह । ३ इ. राड़ । ४ इ. करण । ५ आ.इ. मेलीया । ६ दस सहंस । ७ आ.इ. दल । ८ आ. तवत् । ९ आ.इ. मेवाड़ै । १० आ. राण । ११ आ.इ. दल । १२ आ.इ. दल । १३ आ.इ. वलीया । १४ आ.इ. हु । १५ आ.इ. मने । १६ आ.इ. वेला । १७ आ.इ. कवित । १८ आ.इ. जुड़े । १९ आ. रठोडां । इ. राठोडां । २० आ.इ. हुइ । २१ इ. चीतोड़ां । २२ आ. देसपति । २३ आ.इ. राउत । २४ आ. इसर । २५ आ.इ. षेत । २६ आ. रहीया । इ. रहीयां । २७ इ. षुभांणां । २८ आ.इ. पेषि । २९ आ.इ. जेसलगिरो । ३० आ. कुरंगा । ३१ आ. इ. जिम । ३२ आ. मछीरका । ३३ आ.इ. मछरीयो । ३४ इ. राईजादो । ३५ आ. पुरांणां । ३६ आ.इ. नवली ।

गजबंधी[1] दळ[2] मेल्हिया[3] , पहरै[4] जोध[5] जरद्द[6] ।
मारि मनांउ देवडा[7] , हव गंजू[8] अरवद्द[9] ॥२॥

छंद त्रिभंगी

ऊपरि[10] अरबद्दं[11] कोपि मरद्दं[12], जडं जरद्दं[13] जुध वद्दं[14] ।
नीसांण निनद्दं[15], पंच सबद्दं[16] रोडि रवद्दं[17] घण सद्दं[18] ।
हालै[19] दळ[20] हद्दं[21], जांणि[22] जळद्दं[23] गयण गरद्दं[24] मिळि[25] तद्दं[26] ।
फत्तै[27] सिरि हद्दं[28], रैण[29] रहद्दं[30] रांवां मद्दं[31] थिय[32] रद्दं[33] ॥१॥

पैमाल पेहट्टं[34], घाट दुघट्टं[35], हींसा[36] फट्टं[37] घण थट्टं[38] ।
राठोड सुभट्टं[39], आखि निहट्टं[40], बंध प्रघट्टं[41] रिणवट्टं[42] ।
छिल्लै[43] मे(ह)[44] णांणं, दळ[45] असमांणं[46], खेड[47] प्रमाण[48] खुरसांण[49] ।
चाते चहुआंणं, बलि केवांणं, चाढ़ि[50] चखांण[51] सिस भाणं ॥२॥

महाराजकुमार री सिरोही पर विजय

कवित्त

सेन मेल सिवपुरी, फौज घेर[52] घांसोहर[53] ।
जैतहत्थ[54] कळि[55] मत्थ[56], साथि भाटी[57] रिण घोयर[58] ।

---

१ इ. गजबंधीया । २ आ.इ. दल । ३ आ.इ. मेलीया । ४ इ. पहरे । ५ आ. जोधो । ६ आ.इ. जरद । ७ इ. देवड़ा । ८ आ. गजूं । ९ आ.इ. अरबद । १० इ. ऊपड़ि । ११ आ.इ. अरबदं । १२ आ.इ. मरदं । १३ आ.इ. जरदं । १४ आ. इ. वदं । १५ आ.इ. निनदं । १६ आ.इ. पंच-सबदं । १७ आ.इ. रवदं । १८ आ.इ. सदं । १९ आ.इ. हाले । २० आ.इ. दल । २१ आ.इ. हदं । २२ आ. जाणि । २३ आ.इ. जलदं । २४ आ.इ. गरदं । २५ आ.इ. मिलि । २६ आ.इ. तदं । २७ आ.इ. फतै । २८ आ.इ. हदं । २९ आ.इ. रेण । ३० आ.इ. रहदं । ३१ आ.इ. मदं । ३२ आ.इ. थीयो । ३३ आ.इ. रदं । ३४ आ. पेहदं । इ. पेहरं ३५ आ इ. दुघटं । ३६ इ. हीसा । ३७ आ.इ. फटं । ३८ आ.इ. थटं । ३९ आ.इ. सुभटं । ४० आ.इ. निहटं । ४१ आ.इ. प्रघटं । ४२ आ.इ. रिणवटं । ४३ आ इ. छिले । ४४ आ.इ. मणाणं । ४५ आ.इ. दलं । ४६ आ.इ. असयाणं । ४७ आ.इ. षेड । ४८ आ. पृमाणं । इ. पुमांणं । ४९ आ.इ. षुरसांण । ५० आ.इ. चाडि । ५१ आ. चषणं । इ. वषांणं । ५२ आ. घेरै । इ. पुरे । ५३ आ. घांसहर । इ. घांसांहर । ५४ आ. जेतहथ । इ. जैतहथ । ५५ आ.इ. कलि । ५६ आ.इ. मथ । ५७ आ. भांटी । ५८ आ.इ. घोघर ।

कटि इम पडिगी[१] रैं(ण), धणी अड्डार गिरंदर[२] ।
लाया पाइ[३] रकेब[४] , कीध मछरीक रेंहबर[५] ।
राठौड[६] कुंअर[७] पक्खर[८] खंद[९] , कवण(भ[१०]) समवड करै ।
जमदाढ़ छोड विज्जै[११]लई, कना राउ अरबद्द[१२] रै ।।१।।

बादशाह जहांगीर री अजमेर आगमन और राजा सूरसींव नैं बुलाणो

पातिसाह अजमेर, आप आयौ गुडि [१३]पक्खरि[१४] ।
सतरि खांन[१५] खीटिंया[१६], अनै उबरा(व) वहत्तरि[१७] ।
हुआ[१८] ग्रीध समसांण, वाढ़[१९] करिकां कूंबूअळ ।
नर हय गय पळ[२०] खीण[२१], मत्त पल जंबू संमळ[२२] ।
असपति[२३] राउ सांम्ही[२४] अरज, इम मेल्है[२५] सिख[२६] सुर असुर ।
गंजैत रांण राठौडि नृप[२७], 'अमर' रांण[२८] नृप[२] सिलै[३०] गुर ।।२

तांम[३१] साह[३२](ह) जिहगीर[३३], लिखे[३४] मूक्यो[३५] परमांणो ।
पळ खूटौ[३६] खुरसांण[३७], सब्बळा[३८] अजुं खूंमांणो[३९] ।
मेर मेर सारिखौ[४०], हुओ[४१] इक इक्क[४२] पहाडह ।
तौ पक्खै[४३] कमधज्ज[४४], कमण गंजै मेवाडह ।
सूरज्जमल्ल[४५] सुरतांण बळि[४६], ग्रहे खाग[४७] लागो अरस ।
आयौ अभंग नव साहसौ[४८], खडि[४९] तुरंग सिरि दस सहस ।।३।।

---

१ आ. गिरें । इ. गिंरे । २ आ. अढोर गिरवर । इ. अढार गिरवड । ३ इ. आ. पाई । ४ आ. रेह । इ. रकेब । ५ रेहबर । ६ इ. राठोड । ७ आ.इ. कुवर । ८ आ.इ. पषर । ९ इः खद । १० इ. तूस । ११ आ इ. वेजै । १२ आ.इ. अरबद । १३ इ. गुड । १४ आ.इ. पषरि । १५ आ.इ. षांन । १६ आ. षीटीया । इ. षीढीया । १७ बहतरि । १८ आ. हूआ । इ. हूवा । १९ आ.इ वाडि । २० आ.इ. पल । २१ आ.इ. षीण । २२ आ.इ. समल । २३ आं.इ. असपति । २४ आ. सांमी । २५ आ. मेल्है । इ. मेलै । २६ आ.इ. लिष । २७ आ.इ. नृप । २८ आ. राण । २९ आ. नृिप । ३० आ.इ. सेलगुर । ३१ आ.इ. ताम । ३२ आ. संह । ३३ आ.इ. जिहगोर । ३४ आ. लिषै । इ. लिषे । ३५ आ. मूकओ । ३६ आ. षूटौ । इ. षूटो । ३७ आ.इ. षुरसांण । ३८ आ.इ. सबल । ३९ आ. षुभाणँ । इ. षुभांणो । ४० आ.इ. सारिखौ । ४१ आ. हुवौ । इ. हुवो । ४२ आ.इ. इक । ४३ आ. पषै । इ. तोषै । ४४ आ.इ. कमधज । ४५ आ. सुरजमल । इ. सूरजमल । ४६ अ. बलि । ४७ आ.इ. षाग । ४८ अ. तवसाहसौ । ४९ आ.इ. षडि ।

सवाई राजा सूरसींघ री विजय

रूकरस राठौड गुरड प्रगटौ[1] गैणागा ।
नवकुळ[2] दळ[3] दस हंस[4] , चडे[5] अलंगै[6] पडि भग्गा[7] ।
मिळिया[8] के मारिया[9] , झडप चंचां[10] खग[11] झाटां ।
पंख[12] सोकां वाजंत, हमस[13] पाए हैथाटां ।
मेवाड हुवा नागां मंडळ[14], साफराफ पाहाड[15] सह ।
इकलंग[16] कंठ रहियौ[17] 'अमर', चील-सेख[18] चीतौड[19] पह ।।४।।

सवाई राजा सूरसींग रौ महाराजकुमार गजसींघ नै पत्र लिख नै बुलाणौ

राजा कागळ[20] लिखै[21] कुंअर[22] तेडे निय[23] कन्हळि[24] ।
मिळण[25] मनोरथ करै[26], साह[27] जाहंगीर[28] तणै छळि[29] ।
चडै[30] तांम[31] गजपती[32], करे लसकर आडंबर ।
भड वंका वर तुरी, लिया मदमत्ता[33] कुंजर ।
जूहार[34] उदैपुर जाइ किय[35] साथि भीच 'गोइंद' सगह ।
इके रास[36] हुआ[37] किरि एकठा, सूरज थावर बिनै ग्रह ।।५।।

महाराजा सवाई सूरसींघ रौ महारांणा नै समझा नै बादसाह सूं सुलह कराणौ

दूहा

राजा रांणां मेलिया[38], कीध उकीलां वत्त[39] ।
वाद वडां[40] सूं[41] छंडियै, एहस[42] आदू मत्त[43] ।।१।।
रांणै[44] राजा नूं[45] कह्यौ, मेल्है[46] परधांनांह ।
साह पगै[47] धुन[48] मोकळूं[49], जो थे[50] अप्पौ[51] बांह ।।२।।

---

१ इ. प्रगटयौ । २ आ.इ. नवकुल । ३ आ.इ. दल । ४ अ. सैस हंस । ५ आ. चडै । ६ आ.इ. अलंगे । ७ आ.इ. भगा । ८ आ.इ. मिलीया । ९ आ.इ. मारीया । १० अ. चंचा । ११ आ.इ. षग । १२ आ.इ. पंष । १३ आ.इ. हमंस । १४ आ.इ. मंडल । १५ अ. पाहोड । १६ आ. एक लंग । इ. एकलग । १७ आ.इ. रहीयौ । १८ आ.इ. चील-सेष । १९ अ. चीत्रौड़ । इ. चीत्तौड । २० आ.इ. कागल । २१ अ. लिषै । २२ आ.इ. कुअर । २३ आ.इ. नीय । २४ आ.इ. कनली । २५ आ.इ. मिलण । २६ आ.इ. करे । २७ आ. सांह । २८ आ.इ. जिहंगीर । २९ अ. बलि । ३० अ. चडै । ३१ आ.इ ताम । ३२ आ. गमूपति । इ. गजपति । ३३ आ.इ. मदमता । ३४ आ.इ. जुहार । ३५ आ.इ. कीय । ३६ आ.इ. एक । ३७ आ. हूआ । इ. हूवा । ३८ आ इ. मेलीया । ३९ आ.इ. वत । ४० आ. वडा । ४१ आ.इ. सु । ४२ आ. एहेस । ४३ आ.इ. मत । ४४ आ. राणै । ४५ आ. नू । ४६ आ. मल्हे । ४७ आ.इ. पगे । ४८ इ. कनि । ४९ इ. मोकलुं । ५० आ. थै । ५१ आ.इ. आयौ ।

राजा बोल समप्पियौ[1], कहियौ[2] रांण प्रमांण।
बे घोघूंदै[3] मेलिया[4], खूंदालम[5] खूमांण[6] ॥३॥

खिजमति[7] करण कबूला[8] की, बळ[9] छंडे समसेर।
खुरम[10] फतै कर हल्लियौ[11], साह पगे अजमेर ॥४॥

साहजादा खुरम रौ विजयी होनै बादसाह रै पास महाराजकुमार करण रौ लेनै अजमेर में आगमण

छन्द बैताल

नीसांण रोडि दमांम[12] नौबति[13], भेरि पंच-सबद्द[14] ए।
लख[15] थाट मोगर लीण लसकर, गिगन धूळ गरद्द[16] ए।
फरहरा चोधां[17] ढेळिकि नेजां[18], कुंजरां सिर ढ़ल्ल[19] ए।
अजमेर दिस हूंता उदैपुर, कटक इण परि चल्ल[20] ए ॥१॥

संमूह[21] सेन असंख[22] सफां, म्रिग[23] मुज्झै[24] मंझळी[25]।
मल्हपति फौजां मुहरि मैंगळ[26], सूंड[27] डोहै सिंघळी[28]।
पडताळ पवंग[29] रोळि[30] पक्खर[31], घोर गैंमर[32] घट्ट[33] ए।
दीसै न अंबर डाबि डंबर, उदध जांणि उलट्ट[34] ए ॥२॥

गज थाट ध्रू सग्गडस[35] गज दळ[36], क्रमे[37] कोअ्रण कंठळं[38]।
परबत्त[39] माळ[40] कि[41] हेम हल्लै[42], मेघमाळ[43] कि[44] वद्दळं[45]।
धडहडै[46] सात पंयाळ[47] धूजै, सेख[48] नाग धडक्क[49] ए।
खित[50] भार दाढ़ वाराह खड़कै[51], कोम[52] कंध कड़क्क[53] ए ॥३॥

---

१ आ.इ. समपीयो। २ आ. कहीयो। इ. कहीयो। ३ आ.इ. घोघूदे। ४ आ. इ. मेलीया। ५ आ.इ. षुदालम। ६ आ. षुमाण। इ. षुरसांण। ७ आ.इ. षिजमति। ८ आ कबूंल। ९ आ.इ. बल। १० आ.इ. षुरम। ११ आ.इ. हलीयो। १२ आ.इ. दमाम। १३ आ. नौबौति। १४ आ.इ. पंच सबद। १५ आ.इ. लष। १६ आ.इ. गरदक। १७ आ. वीधां। १८ आ. नेजा। १९ आ.इ. ढल। २० आ.इ. चल। २१ आ.इ. समूह। २२ आ.इ. असंष। २३ आ.इ. मिृग। २४ आ. मुझै। इ. मुजै। २५ आ.इ. मझली। २६ आ. मेगल। इ. मैंगला। २७ आ. सुड। इ. सुंड। २८ आ. सिघली। २९ अ. पष। ३० अ. रोलि। ३१ आ.इ. पषर। ३२ आ. गैंमर। ३३ आ. इ. घट। ३४ आ.इ. उलट। ३५ आ.इ. सगडू। ३६ आ.इ. दल। ३७ आ. क्रूमे। ३८ अ. कंवलं। ३९ आ.इ. परबत। ४० आ.इ. माल। ४१ आ.इ. क। ४२ आ इ. हले। ४३ आ.इ. मेघ-माल। ४४ आ.इ. क। ४५ आ.इ. वदलं। ४६ आ.इ. घड़हड़े। ४७ आ.इ. पयाल। ४८ आ.इ. सेष। ४९ घड़क। इ. घडक। ५० आ.इ. षित। ५१ आ. षडके। इ. षड़के। ५२ इ. कोरम। ५३ आ. कड़क। इ. कडक।

दस दस्स[1] कोस मुकांम डेरा, खुरम[2] खेल[3] सिकार ए ।
संघरै नाहर रोझ सांबर, अरस पंख[4] उतार ए ।
अजमेर आयौ साहजादौ, 'करन' सत्थे[5] आंण[6] ए ।
परबतां पासै लाल पंडर, गयण गूडरा तांण ए ॥४॥

बादसाह जहांगीर रौ कुमार करणसींघ रौ सनमांन करणौ

॥ कवित्त[7] ॥

साहिजादौ अजमेर 'करन' हजरत[8] पै लाए ।
जर[9] है गै सिरपाउ, बगसि खिजमति[10] फुरमा ए ।
कहै साह जिहगीर[11], खुरम[12] सुरतांण (सुणेरहंत[13]) ।
तम सूर हम खुदाइ[14], पीर पक्कंबर[15] मुद्दत[16] ॥१॥

राठौड़ां री बढती सूं बादसाह रौ संकित होणौ

मखसूद[17] हुआ हूई फतै, बहुत तेग मारी सबळ[18] ।
तम दीया हिंदुसथांन[19] सब, खुरासांण[20] दिल्ली[21] मंडळ[22] ॥१॥

हठियौ[23] सिर हिंदुवां[24] माड_मेले खूमांणां[25] ।
आदि वैर संभरे[26] सरस ढिल्ली[27] सुरतांणां ।
राजा[28] सूरजसिंघ[29], जोध गजसिंघ[30] जमज्जड[31] ।
किसनसिंघ[32] करमैत, 'करन' संपेख[33] महाभड ।
गुण दोस गिणै इक[34] सारिखा[35] घडै घाट मनभंज घड ।
असपति[36] तणै सह एकठा, हियै[37] न मावै रट्ठवड[38] ॥२॥

---

१ आ.इ. दस । २ आ.इ. षुरम । ३ आ.इ. षेल । ४ आ.इ. पंष । ५ आ.इ. सथे । ६ आ. आण । ७ आ. कवित । ८ आ. हझरत । ९ आ. झर । १० आ.इ. षिजमति । ११ आ. जिहगिर । इ. जिहगीर । १२ आ.इ. षुरम । १३ अ. रै रहत । १४ आ. षुदाई । इ. षुहाय । १५ आ. पकंबर । इ. पैकंबर । १६ आ.इ. मुदत । १७ आ इ. मषसूद । १८ आ.इ. सबल । १९ आ. हिंदूसथांन । २० आ.इ. षुरासांण । २१ आ.इ. दिली । २२ आ.इ. मंडल । २३ आ.इ. हठीयो । २४ आ.इ. हिंदूवां । २५ आ.इ. षुमांणां । २६ आ.इ. संभरै । २७ आ.इ. ढिली । २८ आ. राझा । २९ आ. सुरजसिंघ । इ. सूरजिसिंघ । ३० आ. गझसिंघ । ३१ आ.इ. जमजड । ३२ आ. किस्नसिंघ । ३३ आ.इ. संपेष । ३४ आ.इ. एक । ३५ आ.इ. सारिषा । ३६ आ.इ. असपति । ३७ आ.इ. हीयै । ३८ आ. रठवड़ । इ. राठवड ।

सूरसिंघ 'केहरी', कळह करिवा काळ[1] नळ ।
एक खेत[2] ऊपना[3] , एक पांणी झाळाहळ[4] ।
वाढ़ गाढ़[5] बह वधै[6] अणी असमांन अडक्कै[7] ।
पांण मांण अंहकार[8], खेध[9] वेधह[10] खरडक्कै[11] ।
रहमांण विनांणी हत्थ[12] तै, भंजण घडण संसार जग ।
सुरतांण हुओ[13] खुरसांण सिरि, खेडपती[14] हुआ खडग[15] ।।३।।

सूरजमाल[16] नरिंदं, कनै गोइंद गज केसरि ।
पखै[17] आप कोइ अवर, गिणै नह आपा ऊपरि[18] ।
भड भुजाळ भड सिहर, मेर मांझी 'मांनावत' ।
कुंभकरण[19] अवतार, दुरिति इक[20] दौढ़ौ रावत[21] ।
काळौ पहाड़ केल्हणहरौ, देख[22] साह दीयौ हुकम ।
राठोड हुवा हठि मारिवा, ग्रास वेध 'गोइंद'[23] जम ।।४।।

गाथा

पावकौ जमसपौ[24] वेस्या तुरिया[25] पांणियौ[26] वहणै[27] ।
तसकर तुरक नरिंदौ[28], आपांण कदे न हुवंतं ।।१।।

बादसाह रौ किसनसिंघ नै भड़काणौ

दूहा

साह लगाडै रट्ठवड[29] द्रौहौ ढिल्ली[30] डग्ग[31] ।
वाढ़ चढ़ै खुरसांण[32] सूं[33], करि खुरसांणी[34] खग्ग[35] ।।१।।
'गाजीसाह' पधारियौ[36], चढ़ि मुजरै दरबार ।
दिल्लीपति[37] दीनौ हुकम, केहरि 'गोइंद' मार[38] ।।२।।

---

१ आ.इ. कालनंल । २ आ.इ. षेत । ३ आ.इ. उपना । ४ आ.इ. झालाहल । ५ अ. गाट । ६ आ. बघे । ७ आ. अड़कै । ८ आ. अैंहकार । ९ आ.इ. षेध । १० आ. बेघह । ११ आ.इ. षरड़कै । १२ आ.इ. हथ । १३ आ.इ. हूवौ । १४ अ. षेडपति । १५ आ.इ. षडग । १६ आ. सुरजमाल । १७ आ.इ. पषै । १८ आ.इ. उपरि । १९ आ. कुंभकर्न । इ. कुंभकरन । २० आ.इ. एक । २१ आ.इ. रावत्त । २२ आ.इ. देष । २३ आ. गोइद । २४ आ. सरयौ । इ. सरपौ । २५ आ. तुरीय । २६ आ. पाणीयौ । २७ आ. वेहणै । २८ आ. मरिदौ । २९ आ. राठवड । इ. रठवड । ३० आ.इ. ढिली । ३१ आ. डग । ३२ आ.इ. षुरसांण । ३३ आ.इ. सु । ३४ आ.इ. षुरसांणी । ३५ आ.इ. षग । ३६ आ.इ. पधारीयौ । ३७ आ.इ. दिलीपति । ३८ आ.इ. मारि ।

महाराजकुमार गजसींघ री किसनसींघ नैं पडूतर

बळ[१] भरियै[२] गह पूरियै[३] , असमर ऊभारेह[४] ।
गजबंधी इम अखियौ[५] , 'केहरि'[६] पूंतारिह ॥३॥
'केहरि'[७] कहियौ[८] पैज करि, ग्रहियै[९] चंद-पहास[१०] ।
'गोइंद' गिणियां[११] मारियौ[१२], पख[१३] एकणि काइ मास ॥४॥
गजबंधी इम[१४] आखियौ[१५], करि धूणे करमाळ[१६] ।
'गोइंद' माथै आवसी[१७], त्यां सिरि आयौ काळ[१८] ॥५॥
'केहरि' वेडी (वै)[१९] घणूं[२०], मज्जीठी[२१] मुहराइ[२२] ।
करन[२३] 'कमौ' एकै मतै, बे ऊभा पडगाहि ॥६॥
कुंअर[२४] पयंपै 'केहरि', करि मोसूं[२५] रिणताळ [२६] ।
'गोइंद' हूंतौ[२७] साथि मो, मै वूहो गोपाळ[२८] ॥७॥
वयणै[२९] गाढा[३०] वड चडै, मूठी गाढ़ा[३१] खग्ग[३२] ।
हाजरती[३३] दरबार मैं[३४], विरता बीयै[३५] वग्घ[३६] ॥८॥

कवि वाच

सनमुख[३७] साह निविद्धियौ[३८], कीधौ नारद कांम[३९] ।
कळि[४०] लग्गी[४१] रट्ठौड[४२] हर, मरसी के वरियांम[४३] ॥९॥
डेरै[४४] हालोहळ हुई, हुआ सचाळां[४५] सत्थ[४६] ।
आज विहांणै रट्ठवड[४७] करिसी[४८] को भारत्थ[४९] ॥१०॥

---

१ आ.इ. वल । २ आ.इ. भरीयौ । ३ इ. पुरीयौ । ४ आ. उभोरह । इ. उभारेअ । ५ आ.इ. अषीयौ । ६ आ. केहिर । इ. केअरी । ७ अ. केहिर । ८ आ.इ. कहीयौ । ९ आ.इ. ग्रहीयैं । १० इ. चंपक हास । ११ आ.इ. गिणीया । १२ आ.इ. मारीयौ । १३ आ.इ. पष । १४ आ. एम । १५ आ.इ. आणीयौ । १६ आ.इ. करिमाल । १७ आ. आवसि । १८ आ.इ. काल । १९ अ.ओ. वेडावै । २० आ.इ. घणुं । २१ आ.इ. मजीठी । २२ आ.इ. मुहराई । २३ आ. कर्न । २४ आ.इ. कुअंर । २५ आ मोसुं । इ. मोसु । २६ आ.इ. रिण ताल । २७ आ. हुंतौ । इ. हुतो । २८ आ.इ. गोपाल । २९ आ.इ. वयणे । ३० अ. गाठा । ३१ अ. गठा । ३२ आ. षाघा । इ. षघ । ३३ आ.इ. हजरती । ३४ अ. में । ३५ आ. वियै । ३६ आ.इ. वघ । ३७ अ.इ. सनमुष । ३८ आ.इ. निविधीयौ । ३९ आ.इ. काम । ४० आ.इ. कलि । ४१ आ. लगि । इ. लागी । ४२ आ. रठौड़ । इ. राठोड । ४३ आ. इ. वरीयांम । ४४ आ.इ. डेरे । ४५ आ. सचाला । ४६ आ.इ. सथ । ४७ आ. रठवड । इ. राठवडि । ४८ इ. करसि । ४९ आ.इ. भारथ ।

गाथा

कुरु पिंड वेध वसुधा, अपण मंझेण झुज्झयौ[१] उभए ।
कुरखेत[२] जुद्ध[३] समयौ, विणसिण काळ[४] बुद्ध[५] विपरीती[६] ॥१॥
राजा जुजठळ-राओ, धारण मन धू खत्र[७] ध्रमांणै[८] ।
पाळणं[९] पैज प्रतंग्या, दुरजोधनौ 'केहरी' मांणं[१०] ॥२॥

किसनसींघ री आपरी परगं सू परामरस
दूहा

'केहरि' परिगहि पालियौ[११], करि परधानैं गूझ (गुज्झ) ।
राजा राठौडे[१२] वडौ, जै सूं[१३] मांडि म झूझ (झुज्झ) ॥१॥
'केहरि' कहियौ[१४] सांभळो, ऐ[१५] खत्री[१६] पण राह ।
बोल न जाए[१७] सूरिमां[१८], काया जाइ त जाह ॥२॥

छन्द रोमकंध

बकवाद[१९] हुओ[२०] वधि वैर वडै घरि, बोलैय[२१] भारी बोल हुवा ।
विढ़सी भड धूहड आज विहांणै, कत्थन[२२] कोपि कहै[२३] कड़ुवा ।
कुं(ण) तेजमहाढ़ अणी काढ़ावै[२४] वाढ़ाळां मुंहि[२५] वाढ़ पडे ।
जिणसाल[२६] तियार करंत जरादी, घाय विनांणिय[२७] लोह घडे ॥१॥
हैथट्ट[२८] हसंम[२९] हळव्वळ[३०] हूकळ[३१], दीठ हळोहळ[३२] चाल दळां[३३] ।
भडभूळ[३४] गहंमहकां गढ भाळै[३५], वेढ़[३६] हुई[३७] ए-वीस वळां[३८] ।
प्रभणै इम 'केहरि' तेड परिग्गह[३९] मैं कळपै[४०] तन मूझ तणौ ।
पतिसाह[४१] उतांमळ[४२] मूझ समापै[४३], मो इकवार[४४] अछै मरणौ ॥२॥

---

१ आ.इ. झुझयौ । २ आ. कुरषैत । इ. कुरषेत । ३ आ.इ. जुध । ४ आ.इ. काल । ५ आ. बुध । इ. बुधि । ६ आ. विपरीति । इ. विपरीतं । ७ आ.इ. षत्र । ८ धू·मांणै । ९ आ.इ. पालण । १० इ. मांण । ११ आ.इ. पालीयौ । १२ आ. राठौडे । इ. राठौड़े । १३ आ. सुं । इ. सु । १४ आ.इ. वहीयौ । १५ आ. ए । १६ आ.इ. षत्री । १७ आ.इ. जायै । १८ आ.इ. सूरमा । १९ आ.इ. वकवाद । २० इ. हुवौ । २१ आ. बोलेय । २२ आ.इ. कथन । २३ आ.इ. कहे । २४ इ. कढ़ावै । २५ आ.इ. मुहि । २६ आ.इ. जीणसाल । २७ आ. वेनांणीय । २८ आ.इ. हैथर । २९ आ.इ. हसम । ३० आ.इ. हलवळ । ३१ आ.इ. हुकल । ३२ आ. हालोहल । ३३ आ.इ. दल । ३४ आ.इ. झूल । ३५ आ.इ. भाले । ३६ आ.इ. विंद । ३७ आ. हुई । ३८ आ.इ. वलां । ३९ आ.इ. परिगह । ४० आ.इ. कलपे । ४१ इ. पतसाह । ४२ आ.इ. उतांमल । ४३ आ.इ. षमाण । ४४ आ.इ. एक वार ।

मन मूझ तणे वीमाह जिसौ अत[1], मारु 'गोइंद'[2] आप मरे।
आओ[3] भड साथि जिको[4] मो आवै काळ[5] निमत्त[6] सरीर करे।
मम ढ़ील करौ हल वार म लावौ, वेग चढ़ौ[7] वहिळा[8] वहिळा[9]।
भिडता भड सूरज[10] मंडळ[11] भेदै, भूळ[12] भरै रंभ भूझ भला[13] ॥३॥

सांमंतां री तैयारी

वड रावत ऊससिया[14] तिण वेळा, एम सुणे भुज आंमळता[15]।
ललकार हुवौ[17] भड आवै लासां, छोडै तेज तुरी छिलता।
वरियांम[18] लगांण पलांण वणावौ[19], ग्रेस[20] उपाडै ऊकडता[21]।
परचंड हुसंड किया[22] तहि पक्खर[23], अंबर सांमा ऊछळता[24] ॥४॥

जोधारां री जोगियां री जमात सूं कवि री रूपक बांधणौ

जिण साल[25], जुआंण[26] करंत जरादौ, जूसण बाधै[27] जम्मजडा[28]।
हद ओप विटोप रंगावळि हाथळ, सूमात्रा[29] करि सिद्ध[30] खडा[31]।
डिल[32] खट्ट[33] त्रिसूं डंड आवध डाबै, पौरिस रावत पूअरियौ[34]।
आवै[35] ग्रहि कूंत दरग्गह[36] ऊभा[37], थाट थिडंबै[38] औथरियौ ॥५॥

असटंग[39] विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस[41] सिंघार लियं[42]।
सिध बारह पंथक तेरह साखा[43], 'केहरि' गोरख रूप कियं[44]।
कमधज्ज[45] तजे मनमोह कायाचौ, वीर तिसौह विसतयरियं[46]।
तत ले निरबांण क राज तियाग[47], गोपीचंद भरत्थरियं[48] ॥६॥

---

१ आ. मृत। इ. मृित। २ इ. गोइंद। ३ अ. आडौ। ४ आ इ. जिके। ५ आ.इ. काल। ६ आ.इ. निमत। ७ आ.इ. चडौ। ८ आ.इ. बहिला। ९ आ.इ. वहिला। १० आ. सूरझ। इ. सुरज। ११ आ.इ. मंडल। १२ आ.इ. भूल। १३ आ.इ. भुला। १४ आ.इ. उससीया। १५ आ.इ. वेला। १६ आ.इ. आपंलता। १७ आ.इ. हुओ। १८ आ.इ. वरीयांम। १९ आ. वणवो। इ. बणावे। २० अ. ऐस। आ. अैस। २१ आ.इ. उकडतां। २२ आ. कीया। २३ आ.इ. पषर। २४ आ.इ. उछलता। २५ आ.इ. जीण-साल। २६ इ. जूआण। २७ आ.इ. बांधे। २८ आ.इ. जमजड़ा। २९ आ.इ. सुमाता। ३० आ.इ. सिध। ३१ आ.इ. षडा। ३२ आ इ. डीले। ३३ आ.इ. षटत्रीस। ३४ आ.इ. पुअरीया। ३५ आ.इ. आवे। ३६ आ.इ. दरगहि। ३७ आ.इ. उमा। ३८ थिडबे। ३९ आ. अष्टंग। ४० इ. उपावे। ४१ अ. बतीस। ४२ आ.इ. लीयं। ४३ आ.इ. साषा। ४४ आ.इ. कीयं। ४५ ला.इ. कमधज। ४६ आ.इ. विसथरीयं। ४७ आ. तियागै। ४८ आ.इ. भरथरीयं।

पग वांमां[१] वांम रकेब परट्ठवि[२], धूहड धारणमन्न[३] धुभ्रं[४] ।
बळि वंत[५] तुरीगम[६] चंमर[७] बांधै, आरोता[८] भगदंत हुभ्रं[९] ।
चडिया[१०] कमधज्ज[११] चडेवा चौरंगि, पांणै[१२] भाला पाकडिया[१३] ।
... ... ॥७॥

प्रभात रो गोइंद पर आक्रमण तथा गोइंद रो मुकाबलो करणो

आया रवि ऊगै[१४] 'गोइंद'[१५] ऊपरि[१६], ताता लोही रातिसिया[१७] ।
असि छांड[१८] रकेबां कूंत[१९] ऊपाडै, धाराळां[२०] काढ़ै[२१] धसिया[२२] ।
उठियौ[२३] राउ[२४] भाटी लागे[२५] अंबरि, दोमजि वासिग[२६] खांड[२७] डहै ।
जुध सूतौ कुंभकरन्न[२८] जगायौ, 'गोइंददास'[२९] बांणास ग्रहै ॥८॥

जुध वरणण भाटी गोइंद रो वीरगति प्राप्त होणो

आया भड, भाटी दौढ़ी आडा, रावत दौढ़ा[३०] रूकभ्फल[३१] ।
प्रिथिराज[३२] 'गोइंद'[३३] 'कमौ' 'भादौ' पडि, कूंभो[३४] 'सूजौ' 'मांन' कळ[३५] ।
चहुवांण 'नरौ' 'हुल' 'पातल'[३६] चौरंगी[३७], भूप कलावत 'रूप' भडै ।
बालाउत 'तोगौ' 'केसव'[३८] बेवै, लोह 'गोइंद' रांणौत[३९] लडै[४०] ॥९॥

भिडियौ[४१] रुघनांथ भूपाळ समोभ्रम[४२], धार पहार बिरूड[४३] धडै[४४] ।
पहला[४५] वरियांम[४६] इता[४७] पडिया[४८], ता पाछै गोइंददास[४९] पडै[५०] ।

---

१ आ. वांमौ-वांम । इ. वांमोवांम । २ आ.इ. परठोवि । ३ आ.इ. मन । ४ आ.इ. धूभ्रं । ५ आ.इ. बलियतं । ६ इ. तुरंगम । ७ आ.इ. चमर । ८ इ. आरोहिता । ९ आ.इ. हूभ्रं । १० आ.इ. चडीय । ११ आ.इ. कमधज । १२ आ.इ. पांणे । १३ आ.इ. पाकडीया । १४ आ. उगैं । १५ आ. गोइद । इ. गोईंद । १६ आ.इ. उपरि । १७ आ. रातिसीया । १८ आ. छांडि । इ. छाडि । १९ आ.इ. कुत । २० आ. धारालां । इ. धांराला । २१ इ. कढि । २२ आ.इ. धसीया । २३ आ.इ. उठीयो । २४ अ. राय । इ. राऊ । २५ इ. लागै । २६ आ. वासिगं । इ. वासिग । २७ अ. षाड । २८ आ. कुंभकर्नं । इ. कूभंकर्न । २९ आ. गोइददास । इ. गोईद दास । ३० इ. दोढा । ३१ आ.इ. रुकभ्फलु । ३२ आ. पिृथीराज । ३३ आ. गोइद ३४ आ. कूभो । ३५ आ.इ. कलु । ३६ अ. पान । ३७ आ. चोंदिग । इ. चौरंगि । ३८ आ. किसव । इ. केसर । ३९ अ. राणौत । ४० आ. लडे । ४१ आ. भिडयो । ४२ आ.इ. समोभृम । ४३ अ. विरुड़ । ४४ अ. धसे । ४५ आ.इ. पैंहला । ४६ आ.इ. वरीयांम । ४७ आ.इ. एता । ४८ आ.इ. पडीया । ४९ आ. गोइददास । ५१ आ. इ. पड़ै ।

रिमराह तियार[1] बंधै[2] रणवट्टां[3] 'खेम'[4] समोभ्रमि[5] रोकि खळां[6]
रूकै[7] रिमराह बहादर राजै भार ग्रहै[8] निय[9] भूग्रबळां[10] ॥१०॥

महाराजा सवाईसींघ रो युद्धारथ तैयार होणो

उठियौ[11] तिणवार वडौ उतळीबळ[12] सूरजसिंघ सह(स)[13] बळं[14] ।
कोपनळ[15] काळ[16] भुजाळ[17] कमंधज[18], दोमजि[19] भंजण[20] सत्रु दळं[21] ।
किरणांवळि[22] सूरजि[23] जेम[24] कळक्कळ[25] धूण धजब्बड[26] खेड[27] धणी ।
चख[28] लाल कियां[29] मुख[30] चोळ[31] वरन्नह[32], मेलै[33] भ्रूंहां मूंछ[34] ग्रणी ॥११॥

अति सूरिति[35] आवस जेती[36] ऊफणि[37], वांणरा रूप जिहीं[38] वधियौ[39] ।
विढवा दळ सांम्ही दीन्ही विक्खां[40], जांणै[41] अतंक जागवियौ[42] ।

महाराजकुमार गजसींघ रो आगमण

आयौ 'गजसाह' उभारि असंमर[43], जोध तयारां जोधपुरौ ।
मुह आगळि[44] तात तणौ[45] कळि[46] माती, मारण केवी 'माल' हरौ ॥१२॥

जग जेठ भलौ जुध राजा जांमळि[47] आप पराकम दाखि[48] इसौ ।
कुअरां गुर[49] आच करंमर[50] कीयौ, जोध अरज्जन[51] भीम जिसौ ।
बळ[52] दाखवि[53] बेली बापूकारै[54], ऊभा रोस उभांखरिया[55] ।
दळनायक[56] बेटौ बाप दुसासण, बैवै[57] वासंग[58] बज्जरिया[59] ॥१३॥

---

१ आ.इ. तियारां । २ आ.इ. बंध । ३ आ. रणवटै । इ. रणवट । ४ आ.इ. षेम । ५ इ. समोभ्रम । ६ आ.इ. षलां । ७ आ.इ. रुके । ८ आ. ग्रहे । ९ आ.इ. नीय । १० इ. भुम्रबलां । ११ आ.इ. उठियौ । १२ आ. ऊतलीबल । १३ आ. सहस । १४ आ. वलं । १५ आ.इ. कोपनल । १६ आ.इ. काल । १७ आ.इ. भुजाल १८ आ.इ. कमधज । १९ आ. दोमति । २० अ. जंजण । २१ आ.इ. दल । २२ आ. किरिणावलि । इ किरणावलि । २३ आ. सुरजि । इ. सूरिजि । २४ आ. जेंम । २५ आ.इ. कलकल । २६ आ. धजवड । इ. धजंवड । २७ आ.इ. षेड । २८ आ.इ. चष । २९ आ.इ. कीयां । ३० आ.इ. मुष । ३१ आ.इ. चोल । ३२ वरणह । ३३ आ.इ. मेले । ३४ इ. मुछां । ३५ आ.इ. सुरिति । ३६ आ. जिही । ३७ आ.इ. ऊफणि । ३८ आ. जिही । ३९ आ.इ. बधीयौ । ४० आ. विषां । इ. वीषां । ४१ आ.इ. जांणे । ४२ आ.इ. जागवीयौ । ४३ आ.इ. असमर । ४४ आ.इ. आगलि । ४५ आ.इ. तणै । ४६ आ.इ. कलि । ४७ आ.इ. जांमलि । ४८ आ.इ. दाषि । ४९ इ. गुरां । ५० आ. करभर । इ. करमरं । ५१ आ.इ. अरजन । ५२ आ.इ. बल । ५३ आ.इ. दाषवि । ५४ आ. वापुकारे । इ. बापुकारै । ५५ आ. उभांषरीया । ५६ दलनायक । ५७ आ.इ. बे । ५८ आ.इ. वासग । ५९ आ.इ. बजरीया ।

जुध वरणण

आया राठौड़[१] राठौडां[२] ऊपरि[३], तूटै तेग तिमंछ तिसा ।
ऊलक्कापात[४] हुवै तिक अंबर, नाखत्र[५] जांणि खिरंत[६] निसा ।
जुध सीस पडंत[७] धडांहं जोळा, वीजळ[८] धक्क[९] चरक्क[१०] वहै ।
गळिबांह[११] लोळावट[१२] होय[१३] गळोवळ[१४], गूथाबत्थ[१५] सुभट्ट[१६] ग्रहै ।।१४।।

मतवाळां जेम घुमंत महाभड, लोह तणी छक लालुरता ।
जमदूठ ऊठंतं टवे जमदाढ़ां, वाहै आवध वीबरता ।
जुध मातौ रीठ डंडैहड 'जांणै', खाग[१७] खडाखड[१८] खाट[१९] खडै[२०] ।
राजारा साजा ऊभा[२१] रावत, पैला रावत खेत[२२] पडै ।।१५।।

घोराडि जमद्दढ़[२३] फाटि फटै[२४] घंट, नीसर सुस्सर[२५] सेल नरां ।
वाढ़ाळ[२६] वहै रत खाळ[२७] विछूटै[२८], रंभ वरै वरमाळ वरां ।
भूझारां[२९] झाट मिळै[३०] खग[३१] झाळां[३२], जाळै तुगंम[३३] तोप दुओ ।(जु)
दळथंभ[३४] दळां[३५] विच 'सेखौ'[३६] दूजौ, होळी 'केहरि' थंभ हुओ ।।१६।।

गज-ग्राह ग्रहित्त पडित्त गडूथळ[३७], लोह वडो अवसांण लहै[३८] ।
कळिमूळ[३९] (हु)[४०] ओ करि 'कंदळ[४१]' 'केहरि' 'केहरि' 'जांमळि' कन्न[४२] कहै[४३] ।
जोघा रिणमाल दुहू[४४] दळ[४५] जूटा, पूरि[४६] लडाइय[४७] जोर पडी ।
पळ हाड छूहा[४८] सिरखा[४९] पडयालग, हूओ[५०] भारथ[५१] हेक घडी ।।१७।।

---

१ इ. राठोड । २ राठोडां । ३ आ.इ. उपरि । ४ आ.इ. उलकापात । ५ आ.इ. नाषत्र । ६ आ.इ. षिरंत । ७ आ.इ. पंडति । ८ आ.इ. वीजल । ९ आ.इ. धक । १० आ.इ. चरक । ११ आ.इ. गालिबाह । १२ आ.इ. लोलावट । १३ आ.इ. हुए । १४ आ.इ. गलोवल । १५ आ.इ. गुथाबथ । १६ आ. सुभट । १७ आ.इ. षाग । १८ आ.इ. षडा षड । १९ आ.इ. षाट । २० आ. षड़ै । इ. षडै । २१ आ.इ. उभा । २२ आ.इ. षेत । २३ आ.इ. जमदढ । २४ आ. फटें । २५ आ.इ. सुसर । २६ आ. वाटाल । इ. बाढाल । २७ आ.इ. षाल । २८ आ.इ. विघुटै । २९ आ. भूभारा । इ. भुझारां । ३० आ.इ. मिलै । ३१ आ.इ. षग । ३२ आ.इ. झालां । ३३ आ.इ. तुगम । ३४ आ.इ. दलथंभ । ३५ आ.इ. दलां । ३६ आ इ. सेषो । ३७ आ.इ. गडुथल । ३८ आ.इ. लहे । ३९ आ.इ. कलिमूल । ४० आ. हूओ । इ. मुओ । ४१ आ.इ. कंदल । ४२ आ. कर्न । इ, करन । ४३ आ.इ. रहे । ४४ आ.इ. दुहुं । इ. दुहु । ४५ आ.इ. दल । ४६ आ.इ. पुरि । ४७ आ.इ. लडाई । ४८ आ. दूहा । इ. हूआ । ४९ आ.इ. सिरषा । ५० हुओ । ५१ आ. भारथं ।

किसनसींघ रो साथियां सहित वीरगति प्राप्त होणो

कवित्त

पखै[१] इंद[२] आवध्ध[३], कमण झेलै कर वज्जर[४] ।
पक्खै[५] खाटंग-धर[६], जरै कुण खारौ[७] जैहर[८] ।
पक्खै[९] गोरखनाथ[१०], कमण जाइ[११] पैसे विमर ।
पखै[१२] रांम दहकंध, कमण[१३] वेधै[१४] एकै सर ।
हणमंत पखै[१५] वांनर अवर, कवण कूदि[१६] लंघै महण ।
गजसिंघ पखै[१७] पूजै कळिह, सूरसिंध जांमळि[१८] कमण ॥१॥

किसनसिंघ कमधज्ज[१९], मुग्रौ[२०] गोअरधन मारे ।
करमसेन नीकळं[२१], कूंत गज कूंभ पहारे ।
सकतसिंघ अगरूह, 'करन' रहियौ[२२] पग मंडे ।
सूर धीर नेठहै[२३], गया[२४] काइर बळ[२५] छंडे ।
आव्रत्त[२६] हुग्रौ[२७] एकै घडी, हुग्रा[२८] सुभट्टां[२९] सत्थरा[३०] ।
संग्रांम चक्र वूहा सत्रां[३१], सूरसिंघ चक्रव्रत्त[३२] रा ॥२॥

'माधव' मांन 'किसोर' सग्रह[३३] 'रासौ' 'सूरिजमल' ।
पांचै(इ) वीरमदेव[३४], जांणि 'माधौ' 'गांगौ' तल ।
'वाघ' सुत्त[३५] 'गोपाळ, खेत[३६] 'चांपा' हर ओपम ।
लखमण[३७] संभ्रम 'प्राग'[३८], 'माल' 'सुरतांण' समोभ्रम[३९] ।
चहवांण पांच[४०] कूरम उभै, भीम वाघ भाटी पडे[४१] ।
सो[४२] साठ रहै[४३] 'केहरि' सरस, राठोड़ां रिण नीमडे[४४] ॥३॥

---

१ आ.इ. पषै २ इ. इद । ३ आ.इ. आवध । ४ आ इ. वजर । ५ आ.इ. पषै । ६ आ. वाटंगधर । इ. षागंषट । ७ आ. षारौ । इ. षायँ । ८ आ.इ. जहर । ९ आ. इ. पषै । १० आ. गोरषनाथ । इ. गौरषनाथ । ११ आ. जाइ । इ. जाय । १२ आ.इ. पषै । १३ आ. कम्ण । १४ आ.इ. छैदे । १५ आ.इ. पषै । १६ आ. कुदि । १७ आ.इ. पषै । १८ आ इ. जामलि । १९ आ.इ. कमधज । २० आ.इ. मूग्रो । २१ आ.इ. नीकले । २२ आ.इ. रयौ । २३ आ. नेठहे । २४ आ. गाया । २५ आ.इ. वल । २६ आ.इ. आव्रत । २७ आ.इ. हूग्रौ । २८ आ. हूग्रा । इ. हुवा । २९ आ. इ. सुभटां । ३० आ.इ. सथरा । ३१ आ. सता । ३२ आ. चक्रपति । इ. चक्रवित । ३३ आ. सगृह । इ. सगह । ३४ आ. वीर्मदेव । ३५ आ.इ. सुत । ३६ आ.इ. षेत । ३७ आ.इ. लषमण । ३८ आ. पयाग । इ. ध्रयाग । ३९ इ. समोभूम । ४० आ. पंच । ४१ आ.इ. पडै । ४२ आ.इ. सोह । ४३ अ. रहै । ४४ इ. निमडे ।

महादुरग[1] अजमेर, सूर जीतौ[2] रिण चाचर।
जळियौ[3] जोगणपुरी, वाइ जांणे वैसन्नर[4]।
पाखरिजै[5] गजथट्ट[6], खांन[7] सुरतांण मिलै दळ[8]।
कटक बंध अनिमध्ध[9], हुऐ फौजां हीलोहळ[10]।
गजसिंघ साह मुंह आगळी, ग्रहे बाथ पडतौ[11] गइणि[12]।
अडपियौ[13] सांड ऊदग्ग[14] रू, सिंघ[15] मांड सुरतांण सुणि ॥४॥

महाराजा सवाई सूरसींघ रो जोधपुर आगमण

पातसाह[16] आळोज, मन्न[17] विच्चार[18] विमासै।
बळ[19] छळ[20] दळ[21] दक्खवै[22], पांण विन्नांण[23] कळासै[24]।
दे घोडौ सिरपाउ, हुकम कीयौ छंडे हर।
जाह देस आपणै[25], सीख[26] दीन्ही दे आदर।
नौंबत्ति[27] नगारे वाजते, चमर ढुळंते[28] चौसरैं[29]।
जगजेठ राव जोधहपुरौ[30], जोधपुरह[31] आयौ घरे ॥५॥

चंद्राइणा

सूरिजसिंघ नरिंद, जोधपुर आविया[32]।
नोबोति[33] रोडि दमांम[34], निसांण रुडाविया[35]।
सद्द[36] हुआ[37] सहनाइ[38], बुरंग निफेरियां[39]।
परिहां वजि[40] काहूळ[41], डंड[42] वळे[43] (घाड) फेरियां[44] ॥१॥

---

१ आ. दुर्ग। इ. दुरंग। २ आ. जितौ। ३ आ.इ. जळीयौ। ४ आ. वेसनर। इ. वैसनर। ५ आ. पाषरिजै। इ. पाषरीजै। ६ आ.इ. गजथट। ७ आ.इ. षांन। ८ आ.इ. दल। ९ आ. अनमंध। इ. अनिमंध। १० आ.इ. हीलोहल। ११ इ. डगतौ। १२ आ. गईणि। इ. गयणि। १३ आ.इ. अडपीयो। १४ आ. उदगरु। इ. उबरु। १५ आ.इ. सीघ। १६ आ. पातिसाह। १७ आ.इ. मन। १८ आ.इ विचार। १९ आ.इ. बल। २० आ.इ. छल। २१ आ.इ. दल। २२ आ.इ. दषवे। २३ आ. इ. विनांण। २४ आ.इ. कलासे। २५ आ.इ. आपरै। २६ आ.इ. सीष। २७ आ. नौबति। इ. नौबत। २८ आ.इ. ढुलंते। २९ आ. चौसरे। ३० आ.इ. जोधपुरौ। ३१ आ.इ. जोधपुर। ३२ आ. आवींया। इ. आवीया। ३३ आ. नोवत। इ. नौबति। ३४ आ. दसांम। इ. दमांन। ३५ आ.इ. रुडावीया। ३६ आ.इ. सद। ३७ आ. हूआ। ३८ अ. सनाई। आ. असनाई। ३९ आ. फेरीया। इ. निफेरीया। ४० इ. वाजि। ४१ आ. काहल। इ. काहुलि। ४२ आ. डूल। ४३ आ.इ. वले। ४४ आ.इ. फेरीयां।

वांनैता[१] असवार, गयंद सिंगारिया[२] ।
हूआ[३] मंगळचार, कवी[४] सुभकारिया[५] ।
मुंहि आगळि 'गजसाह', पराक्रम भांमणा ।
परिहां ऐसा[६] पूत सपूत[७] क(नित) वधांमणां ॥२॥

राजा महले[८] बैस क, चमर ढुळाविया[९] ।
सैणां मनै[१०] संतोख[११], खळां[१२] नह भाविया[१३] ।
डरिया[१४] नैडा देस, औद्रावौ[१५] अन्नडां[१६] ।
परिहां काढ़ै पिसण[१७], कंथ रहै[१८] अच्चडां[१९] ॥३॥

महाराजा सूरसींघ रौ दखण में जाणौ तथा महाराजकुमार गजसींघ रौ सासण भार सम्हाळणौ

रहिया[२०] जोध दुरंग[२१] चौमासौ[२२] एकडा ।
साहि बुलाए पासि, पठाए[२३] मेवडा ।
ले घोडौ[२४] सिरपाउ, दखिण[२५] दिस चल्लिया[२६] ।
परिहां हुंदा 'गजण', भोम भर झल्लिया[२७] ॥४॥

दूहा

राजा दखिण[२८] विराजियौ[२९] गा दखणी[३०] हुइ[३१] रद्द[३२] ।
साह[३३] सुपारिस सांभळे, की फत्तै सरहद्द[३४] ॥४॥

माझी मेर अभंग भड, मारु अमली-मांण[३५] ।
गिळण गढां[३६] भूखाळुऔ[३७], ओबासै[३८] जमरांण ॥२॥

---

१ आ. बानैतां । २ आ. सिंगारीया । इ. सिगारीया । ३ आ.इ. हुआ । ४ इ. कवि । ५ आ.इ. सुभकारीया । ६ आ. अैसा । इ. अेसा । ७ आ.इ. सपुत । ८ आ. मैहले । ९ आ.इ. ढुलावीया । १० अ. मन । आ. मने । ११. आ.इ. संतोष । १२ आ.इ. षलां । १३ आ. भावीया । ई. चावीया । १४ आ.इ. डरीया । १५ इ. औद्रबो । १६ आ.इ. अनडां । १७ आ.इ. पिसणां । १८ आ.इ. रहावै । १९ आ.इ. अचडां । २० आ.इ रहीया । २१ आ. द्रुरंग । २२ आ. चौमासो । २३ आ. पठाऐ । २४ आ.इ. घोडो । २५ आ.इ. दषिण । २६ आ.इ. चलीया । २७ आ.इ. झलीया । २८ आ.इ. दषिण । २९ आ.इ. विराजीयौ । ३० आ.इ. दषणी । ३१ आ. हुई । इ. हुय । ३२ आ.इ. रद । ३३ आ. साहं । ३४ आ. सरहद । ३५ आ. अमली-माण । ३६ आ. गटां । ३७ आ.इ. भूषालुऔ । ३८ आ. औवासे ।

अधपत्ती[१] इनि आसनां[२] , महिपति द्रौहै मन्नि[३] ।
निजर दियै[४] नव साहसौ, किरि[५] बारहमौं सन्नि[६] ॥३॥

बादसाह रौ जाळोर रा सासक पहाड़खां सूं नाराज होणौ तथा जाळोर रौ प्रदेस महाराजा सूरसींघ नै मिळणौ

रुठौ[७] सीस विहारियां,[८] दिल्लीपति[९] सुरतांण ।
खांन[१०] पहाड विभाडियौ,[११] बैठा फिरै[१२] पठांण ॥४॥

खांना[१३] ऊपर[१४] खीजियौ[१५] खूंदालम्म[१६] रहंम[१७] ।
राजा नूं[१८] जाळोर रौ, दीनौ साह हुकंम[१९] ॥५॥

राजा कागळ मेलियौ,[२०] लिक्खाडे[२१] चड चोट ।
जिम जांणै[२२] तिम मारलै, कुंअर[२३] कणैगिर[२४] कोट ॥६॥

जोधपुरौ जुध जीपवा, गढ़ लेवा 'गजसाह' ।
विरती[२५] कोडी[२६] विळकुळै,[२७] रोसांणौ रिमराह[२८] ॥७॥

चिहुर अलक्का[२९] ऊधरौ,[३०] विकसै[३१] वदन[३२] विसाळ ।
चोळ[३३] वरन्न[३४] कपोळ[३५] किय,[३६] रत्ता[३७] लोचन माळ ॥८॥

आंखै[३८] रोस कसाइया, किय[३९] मूंछां बिय[४०] चंद ।
चाढै[४१] भूंहां[४२] बंकियां,[४३] कि(र) कणग्गियौ[४४] मइंद ॥९॥

जोधपुरैं जाळोर सिरि, कांम[४५] तिकौ पकडेह[४६] ।
कीयौ[४७] आरंभ कळहरो[४८] बाहरि चादर देह[४९] ॥१०॥

---

१ आ. अधपती । इ. अधपति । २ आ. आसना । ३ आ. मनि । इ. मन । ४ आ. दिय । इ. दीयै । ५ आ. करि । ६ आ.इ. सनि । ७ आ. रुठो । ८ आ.इ. विहारीयां । ९ आ इ. दिलीपति । १० आ.इ. षांन । ११ आ.इ. विभाडीयौ । १२ आ. फिरे । १३ आ.इ. षांनां । १४ आ.इ. उपरि । १५ आ.इ. षीजीयौ । १६ आ.इ. षुदालम । १७ आ.इ. रहम । १८ आ.इ. नु । १९ आ. हुकम । २० आ.इ. मेलीयौ । २१ आ.इ. लिषाडे । २२ आ. जाणे । २३ इ. कुअर । २४ आ. कणेगिरि । इ. कणैगिरि । २५ आ.इ. विरति । २६ आ. कोड । इ. कोडि । २७ आ.इ. विलकुले । २८ रिभूराह । २९ आ.इ. अलकां । ३० आ.इ. उधसे । ३१ आ.इ. विकसे । ३२ आ. बरन । ३३ आ.इ. चोल । ३४ आ.इ. वरन । ३५ आ.इ. कपोल । ३६ आ.इ. कीय । ३७ आ.इ. रता । ३८ आ.इ. आंषै । ३९ आ.इ. कीय । ४० आ. बाय । ४१ इ. चाढी । ४२ आ. भूहां । ४३ अ. वंकीयां । इ. वेकीयां । ४४ आ.इ. कणगीयौ । ४५ आ. क्राम । ४६ आ. पकडेआ । इ. पकरेअ । ४७ आ. कीये । ४८ आ. कलह रो । ४९ आ. देअ ।

महाराजकुमार गजसींघ री जाळोर विजय करण री तैयारी

राजा कांम[1] भळावियौ,[2] राखे[3] विकळी[4] कत्थ[5] ।
कह्यौ[6] वजीरां[7] 'गजपती',[8] तेडौ[9] साऊ[10] सत्थ[11] ॥११॥
चीरी फाटी चहु[12] दिसे,[13] सांमी[14] कमधज्जांह[15] ।
कटक पधारौ[16] ठाकुरे, जोधा रिडमल्लांह[17] ॥१२॥

छन्द सिंहावलोकण[18]

रिणमल इक[19] जोधा अनै[20] अखैरज,[21] एक एकह लख[22] पखर[23] ए[24] ।
चांपा चत्रबाह अनड चलता,[25] परबत डूंगर गर भक्खर[26] ए ।
मुह रावत मछर भयंकर मांडण, महि मंडळावत मछराळं ।
पातावत परभुसींह[27] पंचांइण, रूपा जीपण रिणताळं ॥१॥
कळिहण[28] करनोत[29] वडा[30] काळंनळ, भेडक नाथू[31] निवड भडं ।
लखथाट[32] करे[33] दहवाट लखंमण,[34] घण धाए वर[35] त्रिधि[36] घिघडं ।
सूरा[37] 'अडूबाळ' सुजड हथ 'सांडा', 'जैता' जंगमल जैत्राई[38] ।
कांधिल कळिमूळ[39] सदा कळि[40] चालण, वैरा वेढ़क[41] वरदाई[42] ॥२॥
'भीमौत' 'सतावत' 'अरडक मल्लां', 'कांना' 'पूना' 'रिणधीरं'[43] ।
'देहल' 'जैसींघ'[44] 'अनै' 'गोगादे', 'वीरम' 'माला' वर वीरं ।
'जेतमल' 'सोभिति' 'लखा'[45] जमज्जड[46] धूहड 'ऊहड' खत्र धीडं[47] ।
सक सींधल[48] धांधलि अनियै[49] सूंडा, तेरह[50] साखा[51] राठौडं ॥३॥

---

१ आ. काम । २ आ.इ. भलावीयौ । ३ आ.इ. रापेवी । ४ आ. विकलि । इ. विकल । ५ आ.इ. कथ । ६ आ. कह्यो । ७ आ. वजीरा । ८ आ. गजपति । ९ आ.इ. तेडो । १० आ. साउ । ११ आ.इ. सथ । १२ आ. चिहु । इ. चहु । १३ इ. दीसे । १४ इ. साम्ही । १५ आ.इ. कमधजां । १६ आ. पधारो । १७ आ. रिड-मलांह । इ. रिणमलांह । १८ आ.इ. समिया लोकण । १९ आ.इ. एक । २० आ. अने । २१ आ. अषरज । इ. अषैराज । २२ आ. लष । २३ आ.इ. पषर । २४ आ. ऐ । २५ आ.इ. चलंता । २६ आ.इ. भषर । २७ आ. भुइसीह । २८ आ.इ. कलि-हण । २९ अ.इ. करनीत । ३० आ. बड़ा । ३१ आ.इ. नाथु । ३२ आ.इ. लषथाट । ३३ अ.इ. करैं । ३४ आ.इ. लषमण । ३५ इ. वरि । ३६ आ. तिधि । ३७ इ. सुरा । ३८ अ. जैताई । ३९ आ.इ. कलिमूल । ४० आ.इ. कलि । ४१ आ. वैढक । ४२ आ बरदाई । ४३ इ. रिणधरं । ४४ आ, जेसीघ । इ. सींघ । ४५ आ.इ. लषा । ४६ आ.इ. जमजड । ४७ आ. षत-धौंड । इ. षत्र घीडां । ४८ आ.इ. सीधल । ४९ आ. अनीयै । इ. अनीयै । ५० आ. तैरह । ५१ आ.इ. साषा ।

छप्पन[१] मै कोडि छात्राळा[२] छिडिया,[३] जादव भाटी जोधारं।
साखोधर[४] सोढा सोहड[५] सजूंझा,[६] पैंतीसै[७] साख[८] पमारं।
वड गूजर[९] तूंग्रर[१०] के[११] वाघेला[१२], हाडा खीची[१३] चहवांण[१४]।
चाळूक[१५] चंदेल अनै[१६] चाऊडा,[१७] के कछवाहा निरबांण[१८] ॥४॥

दहिया[१९] पडिहार इंदा[२०] आसाइच[२१], गोहिल नै हुल पीपाडा।
गैलोत[२२] अनै मांगळिया[२३] गाढ़ा, एक (......) सीसोदा हाडा[२४]।
डोडीया डोड दाहिमा डाभी, झाला झालण करिमालं।
बहियोला[२५] बारड मौहील मोरी[२६], वइस[२७] अनै[२८] सिक्खरवालं[२९] ॥५॥

जम जड के जाट चाहिलं[३०] जोया, के मुकवांणा[३१] मल्हणासं।
बह झूझारा कभुटा वोडांणां,[३२] गौड[३३] उदाळण परिग्रासं।
राजकुळी वंस छतीसेइ[३४] रावतं, वीरति वंका वरियांमं[३५]।
मांरूधर[३६] सांम तणै छळि[३७] मिळिया[३८], करण कणैगिरि[३९] संग्रामं ॥६॥

सांमंतां रो वरणण

सांमंत[४०] जिके हणमंतह,[४१] सिरखा लख[४२] दळ सूं[४३] एकल्ल[४४] लडै।
वैरा[४५] कजि जिके[४६] अघडची[४७] समवड, चौरिंग[४८] यदां दांत चडै।
आखडै[४९] जिके सद्दा[५०] 'आवटियळ[५१], रिणरिद्धल[५२] जीपंति[५३] रिणं।
सूरातन[५४] जिके सहस बळ[५५] सूरा, पह सादूळा[५६] पंचाइणं[५७] ॥७॥

---

१ आइ. छपन। २ अ. छत्राला। आ. झाला। ३ आ. छिडीयां। ४ आ.इ. सांषोधार। ५ आ. सौहड। ६ आ. सजूझा। ७ आ. पेंतीसे। ८ आ.इ. साष। ९ आ. बडगुजर। १० आ तुअर। इ. तुवर। ११ अ. कै। १२ आ. बाघेला। १३ आ.इ. षीची। १४ आ. चहवाणं। १५ आ.इ. चालुक। १६ आ. अने। १७ आ.इ. चाउड़ा। १८ आ. निरबाण। १९ आ.इ. दहीया। २० आ. इंद्रा। इ. इद्रा। २१ इ. आसायच। २२ आ. गैलौत। २३ आ.इ. मांगलीया। २४ आ.इ. आहाडा। २५ आ.इ. बहीयोला। २६ इ. मारी। २७ आ. वईस। २८ आ. अने। २९ आ.इ. सिषरवालं। ३० आ. चाहिल। ३१ आ. मुकवांण। ३२ इ. बोडाणां। ३३ आ.इ. गोड। ३४ इ. छत्रीसेइ। ३५ इ. वरीयामं। ३६ आ. मारुधर। ३७ आ.इ. छलि। ३८ अ.इ. मिलिया। ३९ आ. कणैगिर। ४० आ.इ. सामंत। ४१ आ.इ. हणमंत। ४२ आ.इ. सरिषा। ४३ आ.इ. लष। ४४ इ. सुं। ४५ आ इ. एकल। ४६ इ. वैरां। ४६ इ. जिकै। ४७ इ. अघची। ४८ अ. घोरि। इ. चौरिग। ४९ आ.इ. आषडे। ५० आ.इ. सदा। ५१ आ. आवटीयल। इ. आवढीयल। ५२ अ.इ. रिधल। ५३ अ. जीपंत। ५४ आ.इ. सुरातन। ५५ आ.इ. बल। ५६ आ.इ. सादूला। ५७ इ. पचंईणं।

बळवंत[१] जिके अरजण बांणपती,[२] झूझ सरीखा[३] गजा झलं ।
भगदंत[४] जिके आरता भेडक, भूरी[५] भीखम[६] करन सलं ।
दुस्सासण[७] जिके जिसा दुरजोधन, रिख[८] असथामां द्रोण[१०] रिखं[११] ।
भारथ[१२] भुइ[१३] जिके कदे नह भाजै, परदळ[१४] भंजण पांच मुखं[१५] ॥८॥
पिडि संगम जिके मंडै[१६] हुइ[१७] पांच(म)रु, धुधरा[१८] मन धरै घडै[१९] ।
दुहु बांहां[२०] जिके लहै लख[२१] निय[२२] दिढ, विढा इकांणि[२३] तरवार वडै ।
चडुै[२४] रिण जिके पुजै रिण चाचरि, सुजडे पिसणां पाडि सिरं ।
वीटांणा[२५] जिके रहै रावत वट, माफी परबत मेर[२६] गिरं[२७] ॥९॥

पठांणां रौ वरणण

पट्ठांण[२८] जिके पग न दियै पाछा, सिर पग मंडै[२९] सहस फणं ।
खांडेराव[३०] जिके खडग हथ[३१] खींवर,[३२] ग्रहै भुजै पडतौ गयणं ।
कळहेवा[३३] जिके वडा[३४] कुदरत मै[३५], हांम सबळि[३६] खळ[३७] वहण हियै[३८]
त्रिजडां[३९] मुंहि जिके वरै त्रिविधिधड, देखे[४०] जम मुंहि[४१] पूठ[४२] दियै[४३] ।१०
ग्रहि बाथां जिके उपाडै गिरवर,[४४] काढै[४५] कुंजर[४६] डसण करै[४७] ।
ऊथाळै[४८] जिके मछरिया[४९] आहवि,[५०] धरा नकुळ जिम कूंत धरै[५१] ।

पुन सांमंतों रौ वरणण

वड[५२] रावत जिके वडा[५३] ग्रह[५४] वेढक, झडपै अरियण खडग[५५] झडं ।
आया जूहार[५६] कुंअर गुर[५७] आगळि,[५८] भड कमधज लख[५९] अवरभडं ।११

---

१ आ.इ. बलवंत । २ आ.इ. बंणापति । ३ आ. सरिषा, इ. सिरषा । ४ इ. भगदंद । ५ आ.इ. भुरी । ६ भीषम । ७ आ.इ. दुसासण । ८ आ. दुर्जेधन । ९ आ.इ. रिष । १० इ. द्रेण । ११ आ.इ. रिष । १२ इ. भारथि । १३ इ. भुय । १४ आ.इ. परदल । १५ आ. पंचमुषं । इ, पाचमुषं । १६ अ. मडै । १७ इ. हुई । १८ अ. धंघण । १९ आ. धड़े । २० आ.इ. बालं । २१ आ.इ. लष । २२ आ.इ. नीय । २३ आ.इ. इकण । २४ आ.इ. चढै । २५ इ. विटांण । २६ आ. मरे । २७ आ. गिरुं । २८ आ. पठाण । इ. पठाण । २९ इ. माडं । ३० आ.इ. षडिराव । ३१ आ.इ. षडग हथ । ३२ आ.इ. षीवर । ३३ आ. कलहैवा । इ. कलहेव । ३४ आ. बडा । ३५ अ. में । ३६ आ.इ: सबलि । ३७ आ.इ. षल । ३८ आ.इ. हीयै । ३९ आ. तिजडां । ४० आ.इ. देषे । ४१ आ.इ. मुहि । ४२ आ.इ. पूठि । ४३ आ.इ. दीयै । ४४ आ. गिवंर । ४५ अ. काटै । ४६ अ.इ. कुजर । ४७ आ. करे । ४८ अ. उछाळै । ४९ आ.इ. मछरीया । ५० आ. आहंवि । ५१ आ. घरे । ५२ आ. बड । ५३ आ. बडा । ५४ आ.इ. गृह । ५५ आ.इ. षडग । ५६ आ.इ. जुहार । ५७ आ.इ. कुअर गुर । ५८ आ.इ. आगलि । ५९ आ.इ. लष ।

गाहा चोसर

भड वंका राठीड[१] सुभट्टं[२] । सळखाहर[३] सांमंत[४] सुभट्टं[५] ।
सांम[६] दरग ही[७] मिळै सुभट्टं[८] । साख[९] छतीसां तणा सुभट्टं[१०] ॥१॥

थिडिबे थिडिबे[११] थिडिया थट्टं[१२] । थीया कटकह कोग्रणं थट्टं[१३] ।
हूकळ[१४] कळ[१५] हूबै[१६] हयंथट्टं[१७] । गहंमह हुए गुडे गज थट्टं[१८] ॥२॥

... ... ।
हैगड भड गैघड हालोहळ । हाकल[१९] होल चाळ[२०] हालोहळ[२१] ॥३॥

साहण वाहण हसम संभाळै[२२] । सीलां[२३] डेरां रखत[२४] संभाळै[२५] ।
भरिया माल सिंदूक संभाळै । साथै लियण काज संभाळै ॥४॥

सेना का कूच वरणण

छन्द विदूमाला

हुई चाल हळ वळ[२६], हम तम हालोहळ[२७] ।
अराबां[२८] नाळि[२९] उपाडि,[३०] चोटां नूं नगारा चाडि ॥१॥

गज नाळि[३१] गोळां[३२] बांण, अनंमंघ[३३] असमांण ।
अणिया[३४] फरासै[३५] ऊंठ,[३६] पलांणै घातिया[३७] पूठ[३८] ॥२॥

ऊंटां री वरणण

जमाज गोरा व जूंग[३९] । गूगळा[४०] मई[४१] गडंग ।
पंडरा राता[४२] प्रचंड । भूरा काळा[४३] भळि[४४] खंड[४५] ॥३॥

---

१ आ. राठोड । २ आ.इ. सुभटं । ३ आ.इ. सलषाहर । ४ आ. सामंत । इ. सामत । ५ आ.इ. सुभटं । ६ आ.इ. साम । ७ आ.इ. हि । ८ आ.इ. सुभटं । ९ आ.इ. साष । १० आ.इ. सुभटं । ११ आ.इ. थिंडिबे थिंडिबे । १२ आ.इ. थटं । १३ आ.इ. थटं । १४ आ. हूकल । इ. हुकल । १५ आ.इ. कल । १६ आ.इ. हुबे । १७ आ.इ. थटं । १८ आ.इ. गजथट । १९ आ.इ. हांकल । २० आ. हालचाल । २१ आ.इ. हालोहल । २२ आ. सभाले । इ. संभाले । २३ आ.इ. सिलां । २४ आ. इ. रषत । २५ आ. सभाले । इ. संभाले । २६ आ.इ. हलवल । २७ आ.इ. हालोहल । २८ आ.इ. अराषा । २९ आ.इ. नालि । ३० आ. ऊपाडी । ३१ आं. गजनालि । ३२ आ.इ. गोला । ३३ आ. अनमंघ । इ. अनमघ । ३४ आ.इ. आंणीया । ३५ अ. फेरासे । ३६ आ.इ. ऊठ । ३७ आ. घातीया । इ. घातीए । ३८ इ. पुठि । ३९ आ.इ. जुग । ४० आ.इ. गुगला । ४१ आ.इ. मइ । ४२ आ. रीता । ४३ आ. इ. काला । ४४ आ.इ. भलि । ४५ आ.इ. षंड ।

बिन्ह बिन्ह लाजां बंध[1] । कमळा[2] दीरध[3] कंध ।
मसी[4] झरै मदोमत्त[5] । रुंडी[6] कोसा विरत्तं[7] ॥४॥

सिलहां कोठी सिंदूख[8] । उपाडै[9] ऊंठ[10] असंख[11] ।
डुंगा[12] भारिया[13] दरक्क[14]। करै कुंट[15] केसरक्क[16] ॥५॥

कमळा किया[17] कतार । भर[18] बुडी[19] तंग भार ।
लेह[20] देह छोडीजै लास । विलोहणै[21] वरहास ॥६॥

घोडां रो बरणण

चढिवा[22] काज चंचळ[23] । वाळि छूट[24] वैंगागळ[25] ।
हरड[26] किहाडा हीर । मांणके[27] बोर हमीर ॥७॥

रोझी निला गंगाजळ । हंसला नैण काजळ ।
अस सेराहा अऊब । खैंग[28] रोहला हाबूब[29] ॥८॥

गुरड सीहा गुलाल । चीतळा चौरंगी चाल ।
कविला[30] काळा[31] केकांण । कमेत[32] पंचकिल्यांण[33] ॥९॥

करडा के कबूतर[34] । भूरडा[35] स्याह भमर ।
चंपला सोनडा जंग । पयला तेजी पवंग ॥१०॥

अबलक सीविराजी । तापणा महूडा[36] ताजी ।
लालमां मोला[37] लाखीक[38] । कुलिथ्या केवी कोडीक ॥११॥

म्रिघला[39] चक्कवा[40] मोर । कूदणा झंपां[41] किसोर ।
अैराकी ऊन्हा अलल्ल[42] । भाडजी आरबी भल्ल[43] ॥१२॥

---

१ आ.इ. बध । २ आ.इ. कमला । ३ इ. दिरघ । ४ इ. मसि । ५ आ.इ. मदोमत । ६ इ. रुडि । ७ इ. उरत । ८ आ.इ. सिदूष । ९ आ. ऊपाडे । १०आ. आ इ. ऊठ । ११ आ.इ. असंष । १२ आ.इ. डुगा । १३ आ.इ. भारीया । १४ आ.इ. दरक । १५ आ.इ. कुटे । १६ आ.इ. कसरक । १७ आ. कीया । इ. कीय । १८ अ. भरै । १९ आ. छुडि । २० आ. लहे । २१ आ.इ. विलोहणे । २२ आ. चढीया । २३ आ. चंचल । २४ आ. छूटे । २५ आ. वैंगागल । इ. वेगागल । २६ अ. हरडिया । २७ आ. माणक । २८ षैंग । २९ अ. षांबूब । ३० आ.इ. कविला । ३१ आ.इ. काला । ३२ आ.इ. कमैत । ३३ आ. पंच किल्यांण । इ. पंच कल्यांण । ३४ इ. कबुतरा । ३५ आ.इ. भुरडा । ३६ आ. महुडा । ३७ इ. मौला । ३८ आ.इ. लाषीक । ३९ आ. मिृघला । इ. मृघला । ४० आ.इ. चकवा । ४१ आ. झंय । ४२ आ.इ. अलल । ४३ आ.इ. भल ।

मुगट कछी सुमाग । जबाधिया[1] वच्छ नाग[2] ।
बदकसमी बेलारी । खैंग[3] बगसी खंधारी[4] ॥१३॥

केवी[5] केची मुक्करांणी[6] । खेत[7] जाया[8] खुरसांणी[9] ।
सांमंद्री[10] वेग में सर[11] । पेखियै[12] प्रबत्तै[13] पर ॥१४॥

मोरै घरै[14] छोट मोट । गया परबितौ गोट ।
घूमडा धाटी धडाळ । पांणी पंथा[15] पटा वाळ ॥१५॥

तुरकी[16] ताजी तुरंग । विलाती देसी विडंग ।
धूना[17] चित्तांगिया[18] धैंग । खेड[19] रा नीपना खैंग[20] ॥१६॥

घणा घणा मोला[21] घोडा । पाइग्गहां पाटी - होडा[22] ।
आगला घडे अलंब । अंजूली[23] पियै[24] ज अंब[25] ॥१७॥

वेग लीयैं[26] मूंठी[27] वाव । राज रथं पंखां राव[28] ।
मैंगळां ऊरध मंड । खेसै[29] आठ[30] भीत खंड[31] ॥१८॥

खुरै[32] खांना[33] पडै खुरी[34] । तांनामांना[35] करै तुरी ।
फौरा दीयै[36] फरगट्ट[37] । नाच छंद जिही नट्ट[38] ॥१९॥

सुघा वाघ सरबंग । आरखे[39] चित्रांम[40] अंग ।
अंतरिक्ख[41] वहै ओळ । ग्रंभ गळै[42] घाते गोळ ॥२०॥

डहै जेम कपि[43] डांण । वाज वोम रा विवांण ।
जोध लिये बाथां जोड । छूटै हुई छोड छोड ॥२१॥

लाइजै मुखै[44] लगांण । पूठी मांडीजै[45] पलांण ।

---

१ आ.इ. जबघीया । २ बछ नाग । ३ आ.इ. षैंग । ४ आ.इ. बंधारी । ५ आ. केबी । ६ आ.इ, मुकरांणी । ७ आ.इ. षेत । ८ आ- जायां । ९ आ.इ. पुरसांणी । १० आ. सामंद्री । ११ आ. सरा । १२ अ, पेषीये । इ. बेषीयै । १३ आ. प्रबतै । १४ आ. घडे । १५ आ,इ, पाणी पंथा । १६ आ.इ. तूरकी । १७ आ. घुना । १८ अ. चित्रांगीया । १९ आ-इ. षेड । २० आ.इ. षैंग । २१ आ.इ. मोलो । २२ आ. पाटि-घाडा । २३ इ. अंजुगी । २४ इ. पीयै । २५ अ. अंग । २६ आ. लियैं । इ. लीये । २७ आ.इ. मुठी । २८ आ. पंषराव । इ. पंषराउ । २९ आ.इ. षेसैं । ३० आ.इ. आठु । ३१ आ.इ. षंड । ३२ आ. षुर । इ. वुरे । ३३ आ.इ. षांना । ३४ आ.इ. पुरी । ३५ आ. ताना-माना । इ. तांना-यांना । ३६ अ. दियै । ३७ आ.इ. फरगट । ३८ आ.इ. नट । ३९ आ.इ. आरषे । ४० आ. चित्राय । ४१ आ. अंतरिष । इ. अंतरीष । ४२ आ.इ. गले । ४३ आ.इ. कपी । ४४ आ.इ. मुषे । ४५ आ. मांडील ।

जोधारां रौ वरणण

आचागळै[१] भडे असि । किया[२] खडा तंग कसि ॥२२॥

तरस्सीया[३] ग्रहंटाळ[४] । जोध लियौं[५] जीणसाळ[६] ।
सूरतन[७] चडी[८] सोह । लिया[९] खटत्रीस[१०] लोह ॥२३॥

भाला टवै[११] हुआ भड । ऊभा[१२] लोह मैं अनड ।
आंमलै[१३] खवा अयार । आलोमल्ला[१४] असवार ॥२४॥

मांटी पणै घणै मन्नि । विकसीया वीर तन्नि ।
सांम नू[१५] निरोहा सार । जु आंण करै जुहार ॥२५॥

पांडवां[१६] नीलो पलांण[१७] । असी[१८] घोडं[१९] राव आंण ।
वैडतै[२०] उमं विकास । आरिखै[२१] जिसो उचास ॥२६॥

ऊपनौ[२२] अमूल[२३] खांण । खैंग[२४] डूमैं[२५] खुरासांण[२६] ।
एराकी पखे असंभ । रमै मांडै[२७] नाटारंभ ॥२७॥

प्रघळौ पटाट पूर । गाढ दाढ गज्ज-ऊर[२८] ।
लोइ[२९] दीप मै लोचन्न[३०] । कांगरि[३१] सारीखा कन्न[३२] । २८॥

थोर पींडा पग्ग थंभ । गात जांणै गजखंभ ।
सतेज रूप साहण । वाजिद राज वाहण ॥२९॥

तुरी सपतास तूल[३३] । झाटक्कीयौ[३४] नांखी[३५] भूल ।
वैसासीयै[३६] दीन्ही वाच । डावहियै[३७] लगांण[३८] डाच ॥३०॥

---

१ आ. आचगले । २ अ. कियां । ३ आ.इ. तरसीया । ४ आ. ग्रहुंटालै । ५ अ. लीय । इ. लियै । ६ अ. जीरण साल । आ. जीर्ण साल । ७ आ. सुरतन । ८ आ. चड़ी । इ. चढी । ९ आ. लीया । १० आ.इ. षटतीस । ११ आ. टवे । इ. टबे । १२ इ. उभा । १३ आ. आमलै । १४ आ.इ. आलोमला । १५ आ.इ. सांमनु । १६ पांडवा । १७ आ. पलांणि । १८ इ. असि । १९ आ.इ. घोडे । २० आ.इ. वेउते । २१ इ. आरीषे । २२ आ.इ. उपनौ । २३ आ.इ. अमुल । २४ आ.इ. षैंग । २५ आ. डूमे । २६ आ.इ. षुरसांण । २७ आ. माडै । २८ आ.इ. गजउर । २९ इ. लोई । ३० आ.इ. लोचन । ३१ आ. कागारि । ३२ आ.इ. कन । ३३ आ.इ. तुल । ३४ आ.इ. झाटकीयौ । ३५ आ. नांषि । ३६ अ. वैसस़ियै । ३७ अ. डाहियै । ३८ इ.आ.इ. लगाण ।

तांण तंरा तुरी तणौ। फाबि जीण नाग फणौ[१]।
गज्ज-ग्राह[२] गळै त्यार। हींडोळियौ[३] जेम हार ॥३१॥

ओपी[४] रूप मैं[५] अजब्ब। तूरी[६] कीयौ[७] मुरातब्ब।
सांमी[८] आगळी सिंगार। आंणीयौ[९] लूंण[१०] ऊतारै[११] ॥३२॥

महाराजकुमार गजसींघ रो वरणण

कमंध[१२] 'गज' केसर। पाघ बांधै पाटोधर।
खेडेचै[१३] खेलवा खत्र। पहिरै पंचै वसंत्र ॥३३॥

हेम[१४] मैं[१५] जड़ित हीर। झूमळै मौजा जंजीर।
दूसरै 'गंगा' दवाढ़। जडी कडी जमदाढ ॥३४॥

सादी बाधी सम्मसेर। मच्छरीयौ[१६] माझी मेर।
तांण सींग निभै तण। भेडावीयौ[१७] भूथारण ॥३५॥

कंदील अनै कबांण। वींद[१८] वींदणी[१९] वखांण।
काढी ढाल ले कमंध। बांधो खवै अलीबंध ॥३६॥

धूणीयौ[२०] चौधार धारी[२१]। वीजळता[२२] मोहा[२३] वारी[२४]।
खंड[२५] दळै खंड पती[२६]। माल्हीयौ[२७] मयंद गती[२८] ॥३७॥

जोधारां री नांमावळी तथा वरणण

कवित्त

सहस कज्ज कमधज्ज, जिकै ढाहै गज ढल्लां।
खेमकरण[२९] अंगरुद[३०], रूप जोधां रिण मल्लां ॥

---

१ आ. फणो। २ आ.इ. गजग्राह। ३ आ. हीडोलीयौ। ४ इ. ओपि। ५ अ. मे। ६ आ.इ. तुरी। ७ अ. कियौ। ८ आ. साम। इ. सांम। ९ अ. आंणियौ। १० आ.इ. लूण। ११ आ.इ. उतार। १२ अ. कमध। १३ आ. षैडेचे। इ. षैडेचै। १४ आ. हिय। १५ अ. जे। इ. मैं। १६ अ. मछरियौ। इ. मछरियो। १७ अ. भेडावियौ। १८ आ.इ. बींद। १९ आ. बींदणी। २० अ. घूणियौ। २१ अ.इ. धरि। २२ आ. वीजलता। २३ आ.इ. मेह। २४ आ. वारि। २५ आ.इ. षेड। २६ आ.इ. षैडपति। २७ अ. माल्हियौ। २८ आ.इ. गति। २९ आ. षेमकर्न। इ. षेमकरन। ३० इ. अंरुद।

उदिया-सिंघ[1] 'महेस', जिसौ[2] जंग जेठी 'मांडण' ।
जिसौ[3] देद प्रिथिराज[4], जिसौ[5] जैतौ[6] पंचाइण[7] ॥
पंडरि धीर सांमंत[8] परि[9], इळा पाटि छळि[10] उधरै ।
गजसिंघ सहाइत गज धरि, जिसौ क्रन[11] राव 'मल' रै ॥१॥

सन्नाहे भड सुहड[12], जिके[13] असवार अचग्गळ ।
परि अध्धर पाइक्क[14], सेत बांबळ[15] पाए दळ ॥
तीर दार खंधार वणै[16], सिलहां रिण पक्खर ।
गय ढल्लां फरहरै[17], धजा ओछायौ अंबर ॥
हाऊल[18] हमस हंसा रवण, घण दमांम भेरी घुरै ।
गजसिंघ लियण जाळोर[19]गढ़, चढियौ[20] हय गय पक्खरै ॥२॥

छंद अरधनाराच[21]

दमांम भेर सद्द ऐ[22] । न फेर तूर नद्द ऐ[23] ॥
क्रमे[24] कडक्क कोअणं[25] । समूह साहणं घणं ॥१॥

थिडै[26] थिडंब थट्ट ऐ[27] । समंद[28] जांण फट्ट ऐ[29] ॥
ढळिक्कि ढाल गैमरां । पुऊर[30] रोळ पक्खरां ॥२॥

गुडै गयंद[31] भल्ल ऐ[32] । पहाड जांण चल्ल ऐ[33] ॥
हसत्त जूथ हींडळै[34] । क मेघ[35] माळ सल्लळै ॥३॥

सपेत दंत[36] अग्ग ऐ[37] । घटाक पंथ बग्ग ऐ[38] ॥
धजा धैधंगरां[39] सिरै[40] । भमै क पंख भक्खरै ॥४॥

---

१ इ. उदीयासिंघ । २ आ. जिसो । ३ इ. जिसो । ४ आ. प्रिथीराज । इ. प्रीथीराज । ५ इ. जिसो । ६ अ. जेतो । ७ आ. पंचांइण । इ. पचाइण । ८ इ. सामंत । ९ आ. वरि । १० अ.आ. छल । ११ आ.इ. क्रनं । १२ आ.इ. सोहड । १३ इ. जिके । १४ इ. पाईक । १५ आ. वांवलं । १६ आ.इ. वणे । १७ आ. फरहर । इ. फरहरे । १८ आ. हाहुल । इ. हाऊला । १९ अ. जालोर । २० आ. चडियौ । इ. चढीयो । २१ आ. नाराज । २२ इ. ए । २३ इ. ए । २४ आ. क्रमं । २५ इ. कोइणं । २६ आ.इ. थिडे । २७ आ. ए । २८ आ.इ. समद । २९ अ. फटए । इ. ऐं । ३० आ.इ- पुउर । ३१ आ. गयद । ३२ आ.इ. ए । ३३ आ. ए । ३४ आ.इ. हीडले । ३५ अ. कंमध । ३६ इ. दांत । ३७ इ. ए । ३८ आ ए । ३९ इ. धेधरां । ४० इ. सिरे ।

डोहत सूंड[१] सिंघळी[२] । घटा विराज सांमळी ॥
घमंकि घंट घुग्घरं । सिंदूर[३] सीस चम्मरं ॥५॥

पटा वहंत मद्द ऐ[४] । (कि) धरा मै जळद ऐ ॥
नेजा[५] बरक्क[६] फब्ब ऐ[७] । (सु)ताड व्रिक्ख[८] पब्ब ऐ[९] ॥६॥

झरंत दांण कुंजरं । गिरै कि नीर नीझरं ॥
मदोमसत्त[१०] मैंगळं । करै[११] प्रवीत[१२] काजळं ॥७॥

आरूढ पीलवांणा ऐ । गजिंद - वाग पांणाए ॥
धटा फवज्ज धूघळी[१३] । चमक्कि कूंत[१४] वीजळी ॥८॥

नीसांण रोडि वज्जऐ । गगन्न[१५] जांणि गज्ज[१६]ऐ ॥
समीर वेग चंचळं[१७] । वांनैत[१८] जोध वद्दलं ॥९॥

नलं कहक्क हेमरां । सरे क बोल दद्दरां ॥
रजी सुभट्ट पीजरै । तुरंग जेम[१९] हींजरै[२०] ॥१०॥

इळादि डंब उल्लडै । पवंग वाग ऊपडै[२१] ॥
खुरां ज खोणि वीखणी । पतंग छाइ[२२] पोइणी[२३] ॥११॥

वहै क वाज पत्थए । अकास[२४] मै क रत्थऐ ॥
सीरंम[२५] साह[२६] नस्सहै । विवांण[२७] उड्डिया[२८] वहै ॥१२॥

पाए पवंग[२९] पौडए । धरा धमस धौड[३०] ए ॥
हमस्स असी[३१] हुंख ए । सिंचांण जांण पंखए ॥१३॥

---

१ आ.इ. सुंड । २ आ. सिंघली । इ. सींघली । ३ आ. सिंदूर । इ. सिंदुर । ४ आ.इ. ए । ५ आ.इ. नेज । ६ आ. बैरक । ७ इ. ऐ । ८ आ. व्रिषी । ९ आ.इ. ए । १० आ. मदोमसत । इ. मादोमसत । ११ आ. करे । १२ आ. प्रवित । इ. पृवित । १३ आ.इ. घुलली । १४ आ.इ. कूंत । १५ इ. गगनि । १६ आ.इ. गज । १७ आ.ई. चचलें । १८ आ.इ. वानैता । १९ इ. तेज । २० आ. हीजरै । इ. हीजर । २१ आ.इ. उपडे । २२ आ.इ. छाई । २३ आ. पोईणी । इ. योईणी । २४ आ. आकाश । इ. आकास । २५ आ. शीरम । इ. सीरम । २६ आ. शाह । २७ इ. विवाण । २८ आ.ई. उडीया । २९ आ. पावंग । इ. पावग । ३० आ. घोड । इ. घोडि । ३१ इ. असि ।

विडंग बाज छुट्ट[1] ए। परवांण पाय फुट्ट[2] ए।
खणंक[3] नाळि है खुरां। प्रडंति आगि पत्थरां ॥१४॥

ध्रमै[4] व्रहास[5] नास ऐ। वजै उरद्ध सास ऐ।
त्रछोळ[6] ताळ ए मिळै। ऐलांण फीण ऊछळै ॥१५॥

फौडा[7] विसंभ फाड[8] ए। तुरंग[9] कोमंड ताड ए।
कट्टक फौज[10] कंठळा। अणी खिवत साबळा ॥१६॥

भडां गरद्द लग्ग ए। खेलंत जांणि[11] फग्ग ए।
सिरै[12] विवांण[13] भिग्ग ऐ। क्रितक्क जांण उग्ग ए ॥१७॥

नरांक कोप झल्लरा। कोटिक्क भीत कांकरां।
रजी अरक्क विद्द ऐ। पूरणा[14] (मा) के चंद ऐ ॥१८॥

कुरंग सिंघ रुझ ऐ। मरंति मज्झि मुज्झ ऐ।
अरस्स खेह ढकए[15]। पंयाल सात पंकए ॥१९॥

भुइग[16] भार[17] सप्पए। फणां[18] सहस्स तप्पए।
बराहै धूजि दड्डुऐ। कडक्क कोम[19] कंधए ॥२०॥

पहाड झाड वन्नए। रहद्द कीध रन्नऐ।
उडंति डाब डंबरे। लग (१) सिलीण अंबरे ॥२१॥

गिगन्न गोमं गूधळां। गिरंद मेर मेखळां।
बहोत[20] सेत बंबळां। समूळ सब्बळा दळां ॥२२॥

आया राठौड है खडे। प्रजा चढंत[21] अन्नडे।
भगांण भोमिया[22] डरै। गया अलंग ऊतरै[23] ॥२३॥

१ आ.इ. छुट। २ अ.आ. छुट। ३ इ. जणंक। ४ आ.इ. धृमै। ५ आ.इ. व्रहास। ६ इ. त्रंबोल। ७ इ. फौरा। ८ इ. झाड। ९ इ. तुरां। १० आ.इ. फोज। ११ अ.आ. जांण। १२ आ.इ. सिरे। १३ अ. चिवांण। १४ आ. पूर्णा। १५ इ. ढंक। १६ आ. भुयग। इ. भुयंग। १७ इ. भारां। १८ आ.इ. फणं। १९ आ. काम। २० आ. बोहत। इ. बोहत। २१ इ. चडंत। २२ आ.इ. भोमीया। २३ अ. ऊतरै। इ. उतरे।

महाराज कुमार री ससेना जाळोर पहुंचणौ

दूहा

जाळंघर आयौ 'गजण', गय गज्जै हय हींस[1] ।
चढे[2] गिरंद्दां डंबरा, गयणं गिरदां[3] सीस ॥१॥

देवळ काबा मनि डरै, बोडा भड बालोत ।
सगळा आवै[4] सांमहा[5], मिळिया[6] देखै मौत ॥२॥

रजपूते[7] भुइ[8] भागियै[9], दळ मूका[10] छळ देस ।
वीहारी वंजे नहीं, सूना मेल्हे नेस ॥३॥

इम[11] कहियौ[12] विहारियां[13], ओटि नत्त की काई ।
आज धणी हम सोनिगर, हम इक[14] धणी खुदाइ ॥४॥

मीयां खांन मिलक्क सेह, ऊंडा[15] मंडे[16] पग्ग ।
एक कर घतें[17] दढ्ढियां, इक[18] कर धूणै[19] खग्ग ॥५॥

वीहारी[20] दिन वंकडै[21], वंका सेर जुआंण[22] ।
रहिया[23] गढ जाळोर[24] सूं, संकळपै आपांण ॥६॥

गाथा

जुधे[25] दुलंभ मरणौ, जुधे उघाप दांणवां देवां ।
साके सम[26] भागक्रते[27], रांमणौ[28] रामचंदस्य[29] ॥ (रां)

विहारियां रौ वरणण

कवित्त

धरे मन्न धूधडै[30], कोटि पैठा सोझाऊ[31] ।
असली जादा[32] अभंग, मिलक मीरं बरसाऊ[33] ॥

---

१ इ हीय । २ आ. चडे । ३ इ गरदां । ४ इ. आवै । ५ आ. सांहांमा । इ. सांमुहा । ६ इ. मीलीया । ७ आ. रजपूत । इ. रजपूतो । ८ इ. भुई । ९ आ.इ. भागीए । १० आ.इ. मुका । ११ इ. ईम । १२ आ. कहीयौ । इ कहायो । १३ इ. विहारीयां । १४ आ.इ. एक । १५ आ.इ. उडा । १६ अ. मंडे । १७ आ. घाते । १८ आ.इ. एक । १९ आ. घुणे । इ. घुणै । २० आ. विहारी । २१ आ. बंकडे । २२ आ.इ. जुआण । २३ आ.इ. रहीया । २४ आ. जाळोर । २५ इ. जुगे । २६ इ. समे । २७ आ. कृते । २८ आ.इ, रामणो । २९ इ. रामचंदश्च । ३० आ.इ. घुघडै । ३१ इ. सोझांउ । ३२ आ. असलीजाता । ३३ आ. वरसर ऊ ।

अल्ला एक करीम, रब्ब रहमांणे[1] संभारे[2] ।
कहि खुदाइ खालिक्क, इलम[3] कत्तेब[4] विचारे ।।
बळिवंत जोधं (बू) ढण[5] हरो, सूर धीर साकौ करण ।
संकळप्पि[6] प्रांण जाळोर सूं[7] , नीमे रहिया[8] निज मरण ।।१।।

जिम[9] राजा हम्मीर[10], कियौ[11] साकौ रिणथंभर ।
राइसेण गढ़ जेम, कियौ[12] पूरणमल[13] तूंअर[14] ।।
अचळदास गागुरण, रैण 'मूल'[15] जेसांणै[16] ।
सौम मंडोवर[17] कियौ[18], करे सातळ सिवियांणै[19] ।।
चीतौड[20] कियौ[21] जैमल चडे, 'पातळ' पावै द्रुग्ग[22] सिरि[23] ।
पट्टांण करै कांन्हड[24] पछै, साकौ जिम गढ सोनगिरि ।।२।।

कापड माल असंख, हेम मिण रयण विभूखण ।
परिमळ चंदन अगर, पांन कप्पूरह[25] असखण ।।
भरै[26] अन्न भंडार, सालि गोधूम[27] सघण घण ।
घ्रित तेल गुळ लूण[28], लगै[29] अहिफेणह सांवण[30] ।।
खड ईंधण[31] पांणी वैसनर, सरब[32] थोक संग्रह[33] करै[34] ।
जाळोर[35] नांम[36] करवा जरू, चढि पठांण नह ऊतरै[37] ।।३।।

जुध - वरणण

जबर जंग जंत्र मैं, असंख आराबा[38] छूटै[39] ।
वोम गोम धडहडै[40], टूंक[41] पाहाडां[42] तूटै[43] ।।
गडि गडि गोळा नाळि, विज खडडै किरि अंबर ।
अगन बांण ऊछळे[44], धोम धूंहा[45] रव डंब्भर[46] ।।

---

१ आ. रहमान । इ. रहमाण । २ इ. संभरे । ३ इ. ईलम । ४ आ.इ. कतेब । ५ बूटण । ६ आ. संकलपि । इ. संकलप । ७ आ. सुं । ८ आ.इ. रहीया । ९ आ. जीम । १० आ.इ. हमीर । ११ आ.इ. कीयो । १२ आ.इ. कीयो । १३ आ. पूर्णमल । १४ आ.इ. तुअर । १५ आ. मुल । इ. मुलु । १६ इ. जेसाणैं । १७ आ. मंडोअर । इ. मंडोअर । १८ आ. कीयौ । इ. कीयो । १९ आ. सिवीयांणैं । इ. सीवीयांणैं । २० इ. चीतोड । २१ इ. कीयो । २२ आ.इ. द्रुग । २३ इ. सिर । २४ आ. कान्हड । २५ इ. कपुरह । २६ इ. भरे । २७ इ. गोधुम । २८ आ. लूंण । २९ आ.इ. लगे । ३० इ. वाबण । ३१ आ.इ. इंधण । ३२ आ.इ. सबँ । ३३ आ. सग्रह । ३४ आ.इ. करे । ३५ आ. जालोर । ३६ आ.इ. नाम । ३७ इ. उतरे । ३८ आ. आरा । ३९ आ.इ. छुटै । ४० आ. धड़ हड़ै । ४१ आ.इ. दुक । ४२ पहाडां । इ. पहीडां । ४३ आ.इ. तुटे । ४४ आ.इ. उछले । ४५ आ.इ. धूआरवं । ४६ आ. उब्भर । इ. उभर ।

आव्रंत[१] घोर अंधार[२] मैं[३] , सोर घोर माचै[४] सघण ।
घोम-रिख जांणि घूंहर[५] रचै[६], जोजन - गंघा रित रमण[७] ।।४।।

सूर धीर सांमंत[८] , बिजड[९] जूटण बंगाळां[१०] ।
रागां हाथळ टोप, पैहरि जरदां छकडाळां ।।
ले छतीस आवध्ध, भुजे हुचीयां छडाळां ।
सहस अध्ध झूंझार[११], चढ़े गज ऊपर माळां[१२] ।।
अणभंग जोध असमांन[१३] दिस, ऊतरिया[१४] असमांनरा ।
कमधज्ज कणैगिरि लूंबिया[१५], किरि लंका गढ वांनरा ।।५।।

छंद सिंघालोकण[१६]

विढे[१७] वीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूंकळ कळियळ ए ।
बळिवंत अतुळ बळ, जूटा[१८] चिहुं बळ (वळ) झळहळ दळ वीजळ ए ।
घण भेरी घरहर, हुई सिंधु[२०] सुर[२१] ढूका[२२] कुंजर कोट ढहै[२३] ।
गीधणियां[२४] गह हुबर छायौ अंबर, रथ रातंबर तांणि रहै ।।१।।

कतियांणी[२५] कह कह नारद डह डह, हेका टह टह वीर हसै[२६] ।
बड रावत ब्रह ब्रह पोरसि प्रह प्रह दूडी[२७] ठह ठह होठ डसै[२८] ।
पडियालग पींजरे[२९] हुइ[३०] हुब, हींजर गाजै[३१] गिरवर गोम ग्रहै[३२] ।
औल्हार अणीसर जमधर खंजर, धडि घडि असमर धार वहै[३३] ।।२।।

सुजडां मुंहि[३४] संघर[३५] लडिया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै ।
खागां पळ खंडर कटि सिर कूपर[३६] स्रोणी खप्पर सकति भरै ।
धारां रंति[३७] धंरहर, दळपळ डाल्हर[३८] झटकै[३९] पै कर सोस झडै[४०] ।
बडडै घाइ[४१] बगतर, फाटै[४२] बडफर, रुके विनूर रीठ पडै ।।३।।

---

१ आ. आतत । २ आ. अंधरे । ३ अ. मे । ४ आ.इ. मावै । ५ आ. धुहर । ६ आ.इ. रचे । ७ आ. रमणं । ८ आ.इ. सामंत । ९ आ. विजड़ । १० आ. बंगाला । ११ आ. झूझार । १२ आ. भालां । १३ आ. असमान । १४ आ.इ. उतरीया । १५ आ. लूबीया । इ. लुंबीया । १६ अ. सिघलोकण । १७ अ. वीरे । आ. विटे । १८ आ. जुटा । इ. जुटी । १९ आ. दल-झल । २० आ. सिघु । २१ आ. सूर । २२ अ. टूका । २३ अ. टहे । २४ अ. गीवणी । इ. गीधणीयां । २५ आ. कतीयांणी । इ. कतीयाणी । २६ आ. हसे । २७ आ. दुडि । इ. रुडां । २८ आ. डसे । २९ आ. पीपोरज । ३० आ. हुई । ३१ आ. गजे । ३२ आ.इ. ग्रहे । ३३ आ. वहे । ३४ आ. मुहि । ३५ अ. सथर । ३६ आ.इ. कुपर । ३७ आ. तल । इ. रति । ३८ आ. डाव्हर । ३९ आ. झटक । इ. झटके । ४० आ.इ. झडे । ४१ अ. घाइ । ४२ अ. फाटे ।

धू[1]नाचै भड घड, फींफड[2] फडहड, लोडे[3] लडथट लोहि लडे[4] ।
बीयै[5] दळ वड चढ हुई हुडवड, जोवै[6] घडतड ग्रनड ग्रडै[7] ।।
वीहारी[8] धूहड[9] वाजै[10] घजवड, तूंग त्रिसीगड तुड तरसै[12] ।
दोमजि रत दडि-ग्रड[13] जांण[14] नदी नड, जोटा जमजड जोध खसै ।।४।।

वळकै वीजूजळ कुटके[15] कम्मळ, सूं[16] सर साबळ झळहळ ए ।
ग्रडडे[17] कांछ्रसळ कुटकै कम्मळ, सोणी[18] रळ-चळ खळहळ ए ।।
करमाळां कड कड पडि सिर दड दड, भाजै मरगड कंध भडां ।
खैंगरजै खैंगड[19] लागै लोहड, धाइ उजड पड घूम घडां[20] ।।५।।

गाहट थट गडथळ भंग ग्रंग भड खळ, ग्रणिया[21] बरघळ ग्रणी ।
सुजड़ां मुंहि[22] उरबळ कटि घटि ॠंगळ नीमडि ग्राधळ हुवै नरां सरां ।।
झूंभझारा[23] खग झट खळ दळ खळखट, खेटौ खत्रवट खेड धणी ।
कडि कडि कंठि कोपट, गोधम गजथट, धाइ ग्रावट[24] धर मार धणी ।।६।।

तुटंट[25] कसण तण, जिरहां[26] जूसण[27], खंडे उडुण खंडर ए ।
कळि हुविया[28] कोग्रण, निहस निभैमण, जूध दुसासाण[29] जुध कर ए ।।
ग्राव्रत[30] कळ ऊकल गहण गळोवळ, सिलहां सकंळ ऊजडियं ।
भड भिडै भुजां बळ सुजडै[31] सैंफळ[32], धोमग उच्छळ[33] धडहडियं ।।७।।

खग हुए खंड़ां खंड किरि डंडीहड, रिण भुइ रींहड[34] रत[35] रिडै[36] ।
वीहारी[37] वडि वडि तूटै घडि धडि, ग्रणियां[38] चडि चहि ग्रब्भ ग्रडै[39] ।।
झळरि करि झणिहण[40] दिसि गैणंगणि[41], तीमछ[42] छणमण तेगतणै[43] ।
ग्रसमांन ग्रथरबण रचै[44] रांमाइण, रांम रांमण ऊभै रिणै[45] ।।८।।

---

१ ग्रा.इ. धुना । २ ग्रा.इ. फीफड । ३ ग्र. लोडै । ४. ग्र. लडै । ५ ग्रा. बियै । इ वियं । ६ ग्र.इ. दोवै । ७ ग्रा.इ. ग्रडे । ८ ग्रा.इ. विहारी । ९ ग्रा. धुहड । इ. धूहडंड । १० ग्रा.इ. वाजे । ११ ग्रा. तुग । इ. त्रुग । १२ ग्रा.इ. तरसे । १३. इ. दडीग्रड । १४ ग्रा. जाण । १५. ग्र. कुटकै । १६ ग्रा.इ. सुं । १७ ग्रा. कठडे । इ. कडडे । १८ ग्रा.इ. श्रोणी । १९ ग्रा. उज्यड । २० ग्रा.इ. घुमघडां । २१ ग्रा.इ. ग्रणीयां । २२ ग्रा.इ. मुहि । २३ ग्रा.इ. झूझारां । २४. ग्रा.इ. ग्रवट । २५ ग्र. तुटंस । २६ इ. जिरहा । २७ ग्रा इ. जुसण । २८ ग्रा.इ. हुबीया । २९ ग्रा. दूसासण । ३० ग्रा.इ. ग्रावृत । ३१ ग्रा. सुजडे । ३२ इ. सैंफल । ३३ इ. उछलि । ३४ ग्रा. रिहड । ३५ इ. रति । ३६ ग्रा. रिडे । ३७ ग्रा. विहारी । इ. बिहारी । ३८ ग्रा.इ. ग्रणीयां । ३९ ग्रा. ग्रडे । ४० ग्रा.इ. झणहण । ४१ ग्र.ग्रा. गैणंगण । ४२ ग्रा.इ. तिमछी । ४३ ग्रा.इ. तणे । ४४ ग्रा. रचे । ४५ ग्रा.इ. रिणे

अंग अंग अवल फट मिळ धाए मैवट, धार धजव्वट घोम धिखै ।
आहुडिया[1] अविअट[2] बध्धे रिणवट, वळिवंन बाथट बल्ळ बखै ।।
भड खळिया भंभर वेहक[3] वज्जर, वढिया[4] पक्खर विहुंड वपै[5] ।
पळ खंडिया[6] पंजर पडै पंचाहुर, जै जै संकर सकति जपै[7] ।।९।।

हसि जोगणि हुडहुड, गोळी रत गड गड, मंडै[8] खफर पत्र मिळै ।
तिल तिल हुइ टूकड, वेलै तुरभड, मच्छक तडफड तुच्छ जळै ।।
जंवक जख प्रघळ[9] मिळिया[10] सम्मळ[11] होऊं हूकळ रत[12] हिळै ।
डाइणि[13] भख डळ डळ चूंपै[14] चळवळ पळ भैंवर वळ वळ भूत भिळै ।।१०।।

महाराज कुमार री विजय

कवित्त

भिळै[15] कोट खग चोट, वडा कमधां वरियांमां[16] ।
पडै राडि पट्टांण, चंद रवि चाडे[17] नांमां ।।
जाळंधर पलटियौ[18], बडौ रिण जंग भारथ करि ।
वीहारी[19] बिढ़[20] दियौ[21], कियौ[22] साकौ[23] किंणियागिरि[24] ।।
'गजसाह' वडै 'गजसाह' छळि, अगनि बांण आतस[25] सहे[26] ।
पडिहार एक 'पांचा सभ्रम[27]' रायसिंघ रिणभूंइ[28] रहे[29] ।।११।।

वीर गति प्राप्त खास खास पठांण जोधाआंरी नामावळी

वडौ जोध सांमंत[30], पडे[31] जबदळ प्रचंडह ।
खेत पडे[32] ताजखां, पडे[33] केहरि बळिबंडह ।।

---

१ आ आहुडीया । इ. आहूडीया । २ आ. अवीअट । इ. अवियट । ३ आ. वहैक । ४ आ.इ. वढीया । ५ आ.इ. वपे । ६ आ.इ. वंडीया । ७ आ.इ. जपे । ८ आ.इ. मंडेई । ९ अ. प्रत्थळ । १० आ.इ. मिलीया । ११ आ.इ. संमल । १२ इ. रति । १३ इ. डाइण । १४ आ. चूपैं । इ. चूपे । १५ आ. मिले । १६ आ.इ. वरीयांमां । १७ आ.इ. चाडै । १८ आ.इ. पलटीयौ । १९ आ.इ. विहारी । २० आ. विट । २१ आ.इ. दीयौ । २२. आ.इ. कीयौ । २३ आ. साको । २४ आ. कणीयागिर । इ. कणीयां गिर । २५ आ. आतम । २६ आ. सहै । २७ आ.इ. सभ्रम । २८ आ.इ. भुइ । २९ आ. रहै । ३० आ इ. सामंत । ३१ अ.आ. पडै । ३२ अ.आ. पडै । ३३ अ.आ. पडे ।

चंद खांन चतखांन, पडे[1] प्राभौ पतिसाहै ।
पडे[2] खान सेलार, कणै द्रुग्गहि पडिगाहै ॥
संग्रांम इता साऊ पडे, वाहंता तरवारियां[3] ।
जाळोर[4] नांम करिवा अमर, मर दोनौ वीहारियां[5] ॥२॥

तणा देस रजपूत[6], देस गढ चाढि[7] न मूआ ।
हुआ[8] सरब भुई[9] भूत[10], देव सिद्धांण न हूआ[11] ॥
कावे बळि छंडियौ[12], हुआ[13] फेरा ऊबोडा[14] ।
सांमि[15] ध्रम्म परिहरे, घरे किसा बाधा घोडा ॥
चहुवांण[16] न ओसर चूकता[17],(…) ऐ जुगतौ जगि थयौ ।
बालोत[18] पंचाइण[19] सोनगिरि, चढे[20] सरगि ऊतरि गयौ ॥३॥

जाळोर विजय कर महाराज कुमार रौ जोधपुर पहुंचणौ ।

महाराज कुमार रौ स्वागत

दूहा

जुद करि पट्ठांणां सरिसि, गढ जाळंधर लीय ।
'गजपति' आयौ जोधपुर, मंगळ धमळ हरीय ॥१॥

कर सूं[21] करि कुकुंम[22] तिलक, चाढै[23] चावळ भाळ ।
कुंअर बधावै राइकुंवरि[24], ले सोव्रन[25] मै थाळ ॥२॥

छंद भमराळौ

लिय कुकुंम चंदन तंदुलयं[26] महियं[27] ।
मुख गावत मंगळ धंमळयं सहियं[28] ॥
घण वाजत घोर त्रंबागळयं[29] घुरियं[30] ।
कवि कीरति बिंद कोळाहळयं करियं ॥१॥

---

१ अ. पडे । २ अ.आ. पडे । ३ आ.इ. तरवारीया । ४ अ. जालोर । ५ आ.इ. विहारीयां । ६ आ.इ. रजपुत । ७ आ.इ. चाढ । ८ आ.इ. हूआ । ९ इ. भूय । १० इ. भुत । ११ आ.इ. हूआ । १२ आ.इ. छंडीयौ । १३ आ.इ. हूआ । १४ इ. उबोडा । १५ आ. सांमि-ध्रम । इ. सांम-ध्रम । १६ इ. चहूवांण । १७ इ. चुकता । १८ आ. बालोत । १९ आ.इ. पचांइण । २० आ. चडे । इ. चडै । २१ आ.इ. सुं । २२ आ.इ. कुंकम । २३ आ. चाडे । २४ आ. राय कुआरे । इ. राइकुअर । २५ आ. ओवृन । इ. सौवृन । २६ आ तंडूलयं । इ. तंदूलयं । २७ आ.इ. महीयं । २८ आ.इ. सहीयं । २९ आ. तंबागल । ३० आ. घुंघरियं ।

आंमना चत्र वेद व्रहंमांणयं[1] विप्रयं[2] ।
रुघ जुज्जर सांम अथरवणयं[3] जपयं ।।
वेदो धुनि जै जै सब्बदयं वणयं ।
गुंजार रव भेर पडं-सदयं घणयं ।।२।।

रंग राग विणेद विसातरयं[4] बहुयं[5] ।
चडि चाडति सुंदर मिंदरयं[6] सहुयं ।।
मिण मांणक[7] कुंदण कंकणमं दिपतं ।
मोताहळ हार विभूखणयं वणितं ।।३।।

'गजसाह' वधाउत चातुरया ललिता[8] ।
चहुवै दिस चंमर[9] चौसरया ढुळिता ।।
मसि कर जळ हुइत, भाळिअल्ळ[10] दुयणं[11] ।
परि पूनिम चंद कळा कमळं सयणं ।।४।।

कवित्त

सैणां ठरिया[12] नयण, हिया[13] प्रसणां परजळिया ।
जस प्रताप वाधियौ[14], घाउ नीसांणा वळिया[15] ।।
घर घर मंगळचार, मोहत चढियौ[16] मंडोवर ।
नाद वेद वरतिया[17], सुकवि बोलै सुभ अक्खर ।।
जोधपुर द्रुग्ग[18] जोधपुरौ, कळा तप तेज कळ कळै ।
भाद्रवै मास भीनै सिहरि, किरि भासंकर भळहळै ।।१।।

डरै[19] माड मेवाड, वळौ पाहाड[20] द्रबक्कै[21] ।
आकंपै[22] अरबद्द, सीस देवडां चमक्कै ।।
जडिजै गढां किमाड, प्रज्ज भाजै पराठां ।
खळां खंड खळभळै, इळा दहलै दिस आठां ।।

---

१ आ. व्रह्माणयं । २ आ. विप्रयं । ३ आ. अथर्वणयं । ४ अ. विसालयं । इ. विसतरयं । ५ आ.इ. बहूयं । ६ आ. मिदरयं । ७ आ. माणक । ८ इ. लुलितां । ९ आ.इ. चमर । १० आ.इ. भालीअल । ११ दुघंणं । आ. दुघंणं । १२ आ.इ. ठरीया । १३ आ.इ. हीया । १४ आ.इ. वाधीयो । १५ इ. वणलीया । १६ आ.इ. चढीयो । १७ आ.इ. वरतीया । १८ आ. द्रुग । इ. दुरंग । १९ आ.इ. डरे । २० आ. पहाड । २१ आ. द्रव्यके । इ. द्रमंके । २२ आ. आकप ।

फेरिया[1] उलाक चिहुंवै[2], दिसी हुई[3] राजथांनां हूटक ।
मेलिया[4] 'गज्जण' मंडोवरै, करमसैन माथै कटक ।।२।।

ले सुभट्ट अविश्राट[5], आप चढियौ[6] कोप कर ।
साठ कोस इळकार, कियौ[7] 'उंगरावत' ऊपर ।।
खुरताळां विक्खणी, घणी लग्गी आयासां ।
नह सुणिजै नीसांण, वंसू[8] वाजी वरहासां ।।
गज सिंघ परिग्रह आगळै, हाक मार आयौ हणूं[9] ।
'करमैत' उडी[10] कपूर वरि, गौ छंडे गढ लाडणूं ।।३।।

थळ जंगळ आरांन, जेथ गिरि नहीं[11] सरोवर ।
जळ पयाळ काइ गिगन, भोम उद्दास भयंकर ।।
तेथ फिरे रडवडे थकित, हुऔ पंथ डूलौ ।
लांघणियौ भूखियौ, सीह किरि डांणा हूलौ ।।
साह बळ वडौ विहबळ, हुवै त्रिखावंत जळ मौकळै ।
कळि मूत्र आइ पैठौ, कमौ, भूंइ कंठै भाखर वळै ।।४।।

कुंवर[12] तांम[13] 'गजपती' चढे गढ सोजत[14] आयौ ।
आरंभ पारंभ करे, करण जुध रोस कसायौ ।।
नव[15] दुरगा नवरात, वीस भुअडंड प्रचंडा ।
पुहप[16] धूप नइवेद, सकति पूजी चांमंडा[17] ।।
देवी मनाइ विज्जैदसम, चतुरंग दळां चढिऔ[18] भरणि ।
कह ताज मेर माझी, 'कमौ, गयौ भाजि मेरां सरणि ।।५।।

गज दळ धूस[19] गड्डस, मेल चतुरंग महादळ ।
पाइल बांणावळी, खडे खंधार चहुं-वळ[20] ।।
गिरंकंदर पाहाड[21], गाहि पाए केकांणं ।
किया[22] मट्ठ मैवास[23], प्रज्ज पाळी मेल्हांणं[24] ।।

---

१ अ. फिरियाँ । इ. फेरिया । २ आ.इ. चिहुवे । ३ आ.इ. हुइ । ४ आ.इ. मेलीया । ५ आ. अवीश्राट । इ. अवीश्रट । ६ आ. चडीयौ । इ. चढीयौ । ७ आ.इ. कीयौ । ८ आ.इ. वसु । ९ आ.इ. हणु । १० आ.इ. उडि । ११ आ.इ. नही । १२ आ.इ. कुवर । १३ आ.इ. ताप । १४ आ.इ. सोझत । १५ आ. नवा । १६ इ. पोहप १७ इ. चामुंडा । १८ आ.इ. चडीयौ । १९ इ. धुंस । २० आ. चंहु । इ. चहूं । २१ आ.इ. पहाड । २२ आ.इ. कीया । २३ अ. मेवास । २४ इ. मेल्हाणां ।

घंस फेरि घरां सिरि वालरां, सुणी वात देसे दसे।
'गज बंध' वळौ गिरि घूणियौ,[1], तिकर ताड कुंजर खसे ॥६॥

ले पाए घातिया[2], मेर साखा कर वाढे।
वळा-बंध ढंढोळ, 'कमौ' अलगां हूं[3] काढ़े॥
भड तुरंग वीणार, चडै[4] माभी गज केसर।
फौज लगै फूलियै[5], दीध परराठां पस्सर॥

गज सिंघ भए गज केसरी, काळ पेख करमर छरा।
उग्रसेन समोभ्रम[6] हंस ले, गयौ तांम[7] हाडा घरा ॥७॥

महाराजा सवाई सूरसींघ री सुरगबास

रांम राज जोधपुर, सहू[8] हरचंद वारौ।
मास पंच खट मास, साह आपे वाधारौ॥
दखणाधी[9] सरहद्द, वडा[10] जीता आखाडा।
वडा प्रिसण परभवे, वडा खाटिया[11] प्रवाडा॥

खैंगरे खग्ग खळ घासियां[12], अभंग नाथ उदमादमैं।
दिन दिन प्रताप जस आगळै, सूरसिंघ नृप[13] आथमैं ॥८॥

सोळसै संमत, वरस[14] छहतरै[15] बयट्ठै।
सुकळ पक्ख भाद्रवै, घुम्मि वरखा घण वुट्ठै॥
दक्खण[16] देस मुहंम, नयर मुक्कांम महीकर[17]।
भुगति आउ[18] भूपाळ, वरस गुणचासां भीतर॥

चौईस[19] वरस राजस करे[20], सूरसिंघ नृप[21] द्वापुरौ।
इक[22] छत्र नवे[23] गढ भोगवे[24], मुऔ[25] राउ मंडोवरौ ॥९॥

जपै[26] मुक्ख जैरांम, पक्ख तेरै उजवाळण।
काया मंजन करे, चीर पहिरे आभूखण॥

---

१ आ.इ. धुणीयो। २ आ.इ. घातीया। ३ आ. हु। इ. हुत। ४ आ इ. चडे। ५ आ.इ. फूलीयो। ६ इ. समोभ्रम। ७ आ.इ. ताम। ८ आ. सहु। इ. सहूं। ९ अ. दक्षणधो। इ. दषणाधि। १० अ.आ. बडा। ११ आ.इ. षाटीया। १२ आ.इ. घासीया। १३ आ. नृप। इ. निृप। १४ इ. वरत। १५ इ. छहरै। १६ अ. दषण। इ. दिषण। १७ आ. इ. महिकर। १८ आ. आव। १९ आ. चोइस। इ. चोवीस। २० आ. करै। २१ आ.इ. निृप। २२ आ.इ. एक। २३ आ.इ. नवैगढ। २४ आ.इ. भोगवै। २५ आ.इ. मूऔ। २६ आ.इ. जपे।

वीनौ[1] पीत सनेह, प्रेम निरवाहे पावन ।
लाज मांण[2] अहंकार[3], सिरै चाढ़े[4] सूरातन ।।
कूंरमि पमारि कमधज्ज सूं[5], भटियांणी[6] कुळ छळ भळै ।
जोधपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारै प्रज्जळै ।।१०।।

अस्ट[7] पात्र सब चंग, काइ[8] तरुणि काइ[9] बाळा ।
पिक हंसद्द आलाप, कंठ मोहित मुगताळा ।।
मेकवीस मूरछा, त्रिण(ह)ग्रांम[10] निसपति[11] सुर ।
लहण भेउ खटराग कांठ, अक्खै[12] मोखंतर ।।
अपछरांन मारू पह इधक, सरस गीत संगीत धुनि ।
ऐहडै अखाडै सूं[13] गयौ[14], सूरसिंघ स्रग्गह भवनि ।।११।।

जई[15] सूर आथमै, तई दिस हुई[16] दखण ।
खंळ हुआ खित प्रघटह[17], प्रघटह[18] तारा गयंगण[19] ।।
सूरिज[20] वंसी कमळ, तुरक हिंदू[21] संकुडिया[22] ।
गड्ढ द्रुग्ग[23] परसाद, तीह ले ताळा जडिया[24] ।।
अरणोद अउगम जांणियै[25], गौ[26] आधारे अगम-गमै ।

गजसींघ रो बरणण

दखणाध 'गजेसी' दीपियौ[27], किरि देवायर[28] ऊगमै ।।१२।।
आयौं दक्खण इळा, खेड इलकार तुरंगम ।
राजखिध राखियौ[29], कोट रखवाळ दुरगंम ।।
सुहड[30] साथि[31] रिणमाल, जोध जोधा दूसासण[32] ।
संभाए साहिबी, भार झालियौ[33] अथरबण ।।

---

१ इ. विनो । २ आ. माण । ३ आ. अैहंकार । इ. अहंकार । ४ आ.इ. चाडे । ५ आ.इ. सु । ६ आ.इ. भटीयांणी । ७ आ.इ. असट । ८ इ. काई । ९ इ. काई । १० आ.इ. ग्राम । ११ अ. निसपुत । आ. निसपत । १२ इ. अषे । १३ आ.इ. सुं । १४ आ. गयां । १५ आ. जइ । १६ आ. हुइ । १७ आ.इ. प्रघट । १८ आ.इ. प्रघटं । १९ आ. गयणे गण । इ. गयणंगण । २० इ. सूरज । २१ आ. हींदू । इ. हीदु । २२ आ.इ. संकुडीया । २३ आ. दुर्ग । इ. दुरंग । २४ आ.इ. जडीया । २५ आ.इ. जांणीयो । २६ आ.इ. गो । २७ आ.इ. दीपीयो । २८ आ. देवाइर । इ. देवाईर । २९ आ.इ. राषीयो । ३० आ.इ. सोहड । ३१ इ. सथि । ३२ इ. दुसासण । ३३ आ. झालीयो । इ. झालयो ।

परचंड पराक्रम दाखवे, पित्त[1] वीवनै[2] पंच दिन ।
'गजसाह' वसुह राखी पगे, डहे भुज्ज डिगियौ[3] गिगन ॥१३॥

सूरज सिंघ[4] त्रिसींग[5], गयौ खग त्याग सुधारे ।
मंडोवरि आथांण, तात (...) छळि उद्धारे ॥
उड्डि महाभर कंध, भार भलपण संब्राहे ।
वेगड वांमी[6] वहण, प्रिथी आभो पतिसाहे ॥
गैणाग ज्यार पडियौ[7] गळै, बळहारी[8] भुअडंड बळ ।
तिण तार 'गजेसी' त्राडियौ[9], धुर[10] हिलोळ बाळौ धमळ ॥१४॥

महाराजा गजसींघ रौ राजतिलक

छंद अडल

झाझा भूळ सुभट्टां पासै ।
बैठौ[11] बाप तणै[12] आंमासे[13] ॥
व्राहनपुर[14] दसरावौ थप्पे[15] ।
जोसी तिलक मुहूरत[16] अप्पै ॥
विजै दसम्मी होम करावै ।
विप्रां कन्ना वेद वचावे ॥
निघ[17] नृप[18] तिलक दियण[19] खत्र धोडै ।
मिळ मंगळीक किया[20] राठौडे ॥१॥

छंद जात दुपई

'सूरजमल' संभ्रम राज संप्रापत, मंडप ताखत मंड ए ।
सिंघासण बैस छत्र तांणे[21] सिरि, दीपति कन्न (क)मंड ए ॥
नव दुरगा नवे[22] खेट वरदाई, कर गि मंगळीक रच्चए ।
बंदिण जैकार बिंद कोळा हळ, विप्रां[23] वेदउ वच्च ए ॥१॥

---

१ आ. पिता । २ आ. विवा । इ. विवृनै । ३ आ.इ. डिगीयौ । ४ आ. सुरजसिंघ । ५ आ.इ. त्रिसीग । ६ आ. व्रांमी । ७ आ.इ. पडीयौ । ८ आ. बलहार । ९ आ.इ. त्राडीयौ । १० आ. धुर । ११ आ. वैठो । १२ आ. तणो । १३ अ. आमासे । १४ आ. ब्राह्नपुर । इ. वृांहनपुर । १५ आ. थपे । इ. थपै । १६ आ. मुहुरत । १७ अ. तिय, आ. निय । १८ आ.इ. नृप । १९ आ.इ. दीयण । २० आ.इ. कीया । २१ आ.इ. तांणे । २२ आ.इ. नवै । २३ इ. व्रिपां ।

चंद आघ्रांण सार गंध क्रिस-नागर, कसतूरी[1] ऊपट्ट ए।
सोरंभ अबीर कमकमो केसर, परिमळ जांणक हट्ट ए॥
कुंदन मै थाळ द्रोब दधि कुकंम,[2] पूरित अक्खत तंदुळं।
इत्यादिक गीत नाद वेदव[3]-धुनि, मंगळ धमळ मंगळं॥२॥

सुभ वासुर सुब्भ जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट[4] तांण ए।
सोळह मुखि कळा चंद संपूरण[5], द्वादस[6] ऊगति[7] भांण ए॥
निछरावळि कीध नांखि नंजीरव[8], मोताहळ ऊच्छाळ ए।
राठोडां[9] 'गजण' देव मै राजा, चिहु[10] दिसि चम्मर ढाळ ए॥३॥

सुहडा[11] स्रब[12] अंग चंग दिग्गंवर, राइ[13] अंगण सोभ ए।
मधुकर गुंजार[14] डंबरी सांमल, परिमळ[15] वास लोभ ए॥
अबंक नीसांण रोडि तूरारव[16], भेरी गुहीर[17] सद्द ए।
बरघू[18] नफेर[19] डोड सहनाई, जांणक मेघं नद्द ए॥४॥

सिणगारे सरब[22] हेम मे साकति, गळै गज्जगाह बंध ए।
वेगागळ वाजराज वाहण या, दीपत सरल (‴) कंध ए॥
सिंदूर[23] हिचोळ कूंभ सूंडाहळ[24], धज पताख[25] ढाळ ए।
सोहै सरजीत[26] पंख संजुगता, फिर परबत-माळ ए॥५॥

गज रूपां सोस फाबि फरहरिया[27], उण उणिहार इक्ख ए।
आरुहि करि अछर मेर गिरि स्रिगी, विभ्रम स्रिगक पेख ए॥
वीणा मरदंग[28] ताळ स्रीमंडळ, झणहण सद्दक झल्ळरी।
चढि[29] चढि गज[30]गमणि मिंदरे गोखे गावै गीतक सुंदरी॥६॥

---

१ अ.इ. कसतुरी। २ इ. कुकम। ३ आ.इ. वेद। ४ आ.इ लिलाट। ५ आ. दसपुरण। इ. सपूरण। ६ इ. द्वादसि। ७ अ. उदति। इ. उदत। ८ इ. नभी-रव। ९ अ. राठोडां। १० आ.इ. चिंहु। ११ आ.इ. सोहड। १२ आ.इ. अव। १३ इ. राई। १४ इ. गुंझार। १५ इ. पारिमल। १६ इ. तुरारव। १७ आ.इ. गुहिर। १८ इ. बरघु। १९ इ. नफेरि। २० आ. सनाइ। इ. सनाई। २१ इ. जांणिक। २२ आ.इ. अब। २३ इ. सिंदुर। २४ इ. सूडाहल। २५ इ. पताक। २६ इ. सराझीत। २७ इ. फरिहरिया। २८ आ.इ. मृदंग। २९ आ.इ. चडि। ३० इ. गझ।

संपूरणं[1] छभा इंद्र राजा[2] परि, सांमंत[3] सोहड थट्ट ए।
जंपै[4] आसीस जै जया सबद, चारण विप्रक[5] भट्ट ए ।।
पाळ गजां पांच दोमजां प्रिथमी, जां[6] ळग मेर मेखळा।
तां लग कमधज्ज राज चिंजी[7] हुवै, भुगतै[8] राजं कमळा ।।७।।

छप्पय

कमळ सयण बिळकुळै, मज्झि उर कमळ विकासै।
कमळि कमळि सुभ वइण, कमळि दुरिजणं[9] निकासै ।।
कमळ पेख उणहार, कमळ वदनी मन मोहै[10]।
कमळ-नाभ थिय क्रिया, छभा परि कमळ सोहै ।।
अभिखेक हुओ उत्तम जुगति, जोध दिय[11] जांमळी[12]।
'गजसाह' कमळि वणियौ[13] तिळक, किरि मयंक सकंर कमळि ।।१।।

धरि सींघासण[14] अघर, पाटि बैंठो पाटोधर[15]।
आपण पै[16] ईसवर, चमर ढोळावै[17] चोसर ।।
इंद्र छभा किर अमर, निडर राठौड निभे-नर।
पह रैणाइर पसर, धणी नवकोट छिहुंतर ।।
अल्ळंब[18] अढारै[19] राइहर, 'वाघ' वंसोधर वीण वर।
'गजसाह' सीस मेघाडंबर, किरि[20] सुमेर सिरि[21] कळपतर ।।२।।

मेघनाद गडडंत, गुडै मैंगळ गडडंता।
सुहड[22] पुरख मैरयण, रयण भूखण काइता[23] ।।
ओपि वनै फळ पुहप, थिया[24] मनछाफळ प्रापत।
सत्रां सापति थियौ[25], नाक विग्रह आइ[26] संपत ।।

---

१ आ.इ. संपूर्णं। २ इ. राभा। ३ आ.इ. सांमत। ४ इ. जंपे। ५ इ द्विपक। ६ आ.इ. जा। ७ आ. चिजीवे। ८ आ.इ. भुगते। ९ आ. दुरिजणा। १० आ.इ. मोहे। ११ आ. दीपे। १२ आ. जांमलि। इ. जंमलि। १३ आ.इ. वणीयौ। १४ इ. सिसाण। १५ आ.इ. पाटोधर। १६ आ. पे। १७ आ. ढौलावे। १८ आ.इ. अलब। १९ अ. अटारै। २० आ.इ. किर। २१ आ. सिर। २२ अ. सोहड। २३ इ. काइता। २४ आ.इ. थीया। २५ आ. थीयौ। २६ आ. आई।

संपेख तेज जम रवि उदै, मुगट - बंध वांदै समंद ।
'गजबंध' महीपति जोधपुर, जिम अजोधिया[1] रांमचंद[2] ॥३॥

प्रभ्रिति[3] इंद्र प्रताप, पाक पिंड तेज प्रभा-कर ।
क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर ॥
दधि म्रजाद[4] बळि सेख, नाग भूतेस[5] भलप्पण ।
रूप कांम आरंभ रांम[6] सर, विद्या अरजण ॥
बळि राउ चाउ धीरज ध्रू, कळप व्रिच्छ छाया करण ।
कमधज्ज न्रिपति[7] क(…क) रता कियौ[8], संग्रहि इत्ता सरब गुण ॥४॥

राठौडां सौंह वधी, वधी सोह हिंदुसथांनां[9] ।
वरंकरार[10] नव कोट, हसम राखिया[11] खजांनां ॥
दिल्लीवे[12] सुरतांण, वाज वंका वैगागळ[13] ।
सूंटी[14] ले मेल्हीया[15], जूह मद वहता मैंगळ ॥
चास धव वरस चौईस[16] में, राजा नांम विराजियौ[17] ।
जग जेठ 'गजैसी' जनमियौ[18], थाळ भलांई वाजियौ[19] ॥५॥

वर तुरंग उत्तंग[20], कणै साकति[21] विराजित ।
मदोमत्त मात्तंग, जांण[22] जळ वादळ गरजित ॥
पहरावै[23] सपिया[24], पटासन पैरावत्ता[25] ।
मौड बंधां ठाकुरां, बडा सोहडी सांमत्तां ॥
दे गांम तुरी द्रब लाखदे, हसत वंध[26] कीया सुकवि ।
कुरियंद[27] 'गजैसी' कापियौ[28], गयौ समंद[29] पै'ली पहवि[30] ॥६॥

---

१ आ.इ. अजोध्या । २ आ. रायचंद । ३ आ. प्रभूति । इ. प्रभति । ४ आ.इ. मृजाद । ५ आ. भूतस । इ. भुतेस । ६ आ. राम । ७ आ इ. नृपति ८ आ.इ. कीयौ । ९ इ. हिंदसथांनां । १० इ. वरकरार । ११ आ.इ. राषीया । १२ आ. दिलीवे । इ. दीलीवै । १३ आ. वेगागल । इ. मेगागल । १४ आ. सुंटी । इ. सुटी । १५ आ.इ. मेल्हीया । १६ इ. चौइसं । १७ आ.इ. विराजीयौ । १८ आ.इ. जनमीयौ । १९ आ.इ. वाजीयौ । २० आ.इ. उतंग । २१ आ. सकति । २२ आ. जाण । २३ आ.इ. पैहरावै । २४ आ.इ. समपीया । २५ आ. पेरावत । इ. पेरावतां । २६ आ. हस्तबंध । २७ आ.इ. कुरीयंद । २८ आ.इ. कापीयौ । २९ आ.इ. समद । ३० आ.इ. पहव ।

किया[1] रांम[2] आरंभ, जिकै[3] दळ आरंभ कीजै ।
जिकै[4] पत्थ[5] जीपतौ, जिकै[7] भारथ जीपी जै ।।
जिकै[9] 'वीक' कापतौ[10], जिकै[11] पर दुख कापी जै ।
तिकै[12] भोज[13] पूछतौ, जिकै[14] वातां पूछी जै[15] ।।
सुख जिके इंद्र[16] भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख स्रब[17] भोगवै ।
अवतार वीर राजा[18] इसौ, 'गजपत्ती' राठौडवै ।।७।।

असि उलास उच्चास, जिसा ऐरापति[19] कुंजर ।
कांमधेन[20] निज घरा, कोटि साखाहु कळिपतर ।।
सुहड[21] सघण सुर-छ्भा, सुकवि जण[22] किता सुधाकर ।
अस्ट[23] भोग संजोग, पांण पिथमी[24] पुड ऊपर ।।
कुळ धू[25] कळित्र[26] इंद्रांणी[27], गीत नाद संगीत गुण ।
त्रित-लोक[28] इंद्र[29] कोइ महपती, तौ 'गजपत्ती' 'सूर' तण ।।८।।

सूरसिंघ[30] दसरत्थ[31], पित्ता तिण पाटि[32] महीपत ।
'सलख' वंस[33] रुघवंस[34], अवधपुर[35] जोधां तक्खत ।।
दळ मेळै चतुरंग, पदम[36] अट्ठारह वांनर ।
पट्ठांणां जुध करै[37], लीध लंका जाळंधर ।।
दिग-विजै जंग जीपण दखण, 'गजण' अंगजी गढ़ वरै ।
सिर-ताज[38] सलक्खां सामंतां[39], रांमचंद राठौड रै[40] ।।९।।

असि अंभग आरुढ़, गुरड आरुढ़ भयंकर ।
डंडा[41] आवध छत्रीस, चक्र[42] सारंग गदाधर ।।

---

१ आ.इ. कीया । २ आ. रांम । ३ आ. जिके । इ. झिके । ४ आ. आ. जिके । इ. झिके । ५ आ. पथ्थ । इ. पथ । ६ इ. झीपती । ७ आ. जिके । इ. झिके । ८ इ. झिपीझै । ९ आ. जिके । १० आ.इ. कापता । ११ आ. जिके । १२ इ. जिके । १३ इ. भोझ । १४ आ.इ. जिके । १५ इ. पूछीजै । १६ इ. ईद्र । १७ आ.इ. अब । १८ इ. राझा । १९ आ. अैरापति । इ. अेरापति । २० आ. कामधेन । २१ आ.इ. सोहड । २२ इ. झण । २३ इ. असट । २४ इ. प्रिथमी । २५ इ. धु । २६ इ. कलि । २७ इ. इद्रायणी । २८ आ. मृत-लोक । २९ इ. इद्र । ३० इ. सूरिसिघ । ३१ आ. दशरथ । इ. दसरथ । ३२ इ. पाट । ३३ आ. वंश । ३४ आ. रुघवश । ३५ आ. अबधेपुर । इ. अवधिपुर । ३६ इ. पदंम । ३७ आ. कर । ३८ इ. सिरताजां । ३९ आ.इ. सामितां । ४० आ. रे । ४१ आ. डंड । ४२ आ.इ. चक्र ।

पाट पबै उद्धरण दुजड[1], भंजण दळ छाखां।
जुरा-सिंध सारिखां, दळण दाणवां[2] असंखां॥
किल्यांण[3] सदा जै जै कुसल, नित जीपण जुध नव नवां।
'गजबंध' कमध्धां मांहि[4] जिम, जिम हरि मांही पांडवां[5] ॥१०॥

पंच इंद्री[6] निग्रिहे[7], ग्रहे छत्रीसेइ[8] आवध।
इडा पिंड सुखमणा, त्रिविधि[9] घडि मंडि घडासुध॥
सुवपि जोग संग्रांम[10], जोध विद्या अभियासी।
तांण बांण कोमंड[11], चंद्र[12] सूरिज[13] आकासी[14]॥
सुत[15] सूरज[16] मालम दिस दसू[17], अर के भंजण काळ रिम।
'गजबंध' कमध्धां मंझळी, सिधां मज्झि गोरक्ख जिम॥११॥

महाराजा गजसींघ रौ वरणण

दूहा

सविता जिण[18] सीत (ळ) हुवै, कंपै[20] सीत परज्ज।
तिण दिस 'गजपत्ती' नृपत[21], तप दाखै कमधज्ज॥१॥

कवित्त

तप दाखै[22] कमधज्ज, तेज सूरिज[23] प्रक्कासै।
रवि द्वादस उद्योत[24], दिसी चिहु[25] द्वादस[26] मासै॥
खाग आग वरजाग, प्रिसण बाळै पर जाळै।
खत्रवाट कुळवाट, पाट परियां[27] उजवाळै[28]॥
सांमत[29] सहस[30] सहंस किरण, तेज पुंज्ज पौरसि प्रभित[31]।
गजसिंघ तेथ[32] तत्तौ थयौ, जेथ थाय[33] सीतळ सवित॥१॥

---

१ अ. दुजण। २ आ. दाणवां। ३ आ. किल्यांण। इ. कल्यांण। ४ आ. मांही। ५ इ. पंडवां। ६ इ. इद्री। ७ इ. निग्रहे। ८ अ. छतीसइ। ९ अ. त्रिविध। १० आ. संग्राम। ११ आ. कोमड। १२ अ. चंद। १३ आ.इ. सूरिज। १४ अ.आ. आक्कांसी। १५ आ.इ. सुरज। १६ आ. सूत। १७ आ.इ. संदसू। १८ इ गजबं। १९ इ. झिण। २० इ. कपे। २१ आ.इ. नृपति। २२ इ. दषै। २३ आ.इ. सुरिज। २४ अ. उद्योत। २५ अ. चिहु। २६ आ. द्वादश। २७ आ.इ. परीयां। २८ अ. अजवालै। २९ आ. सांयत। इ. सामंत। ३० आ.इ. सहस। ३१ इ. प्रभेत। ३२ आ. तेत। ३३ आ.इ. थाइ।

सपत दीप नवखंड, सपत दधि जळ थळ महिग्रळ[1] ।
एक भाग हजरत्त, मारि ळीयौ महि मंडळ ।।
पछिम देस पारंभ, लियौ[2] लोहां उप्पाडे ।
पूरब[3] दिस[4] पतिसाह, लियौ[5] लख दळ विब्भाडे ।।
उतराध खंड असपति लियौ, दखण राज जोगणपुरै ।
अकबर जलाल खाटी इळा, जिती साह जिहगीररै ।।२।।

दिल्ली मंडळ में दरोळ

जोगणपुर लाहौर, थटौ भक्खर मुळतांणह ।
कासमीर काबल्ल, तिती जंभी[6] तुरकांणह ।।
गुजर मांडव खंधार, प्रगट गढ़ परबत-माळह ।
रोहितास उड्डीस, गोळकूंडौ बंगाळह ।।
अहमदानगर आसेर गढ़, पातिसाह पालट्टिया ।
पूरब्ब पछिम उत्तर, दखरा च्यार चक्क चकतै लिया[7] ।।३।।

खुरासांण दिस लंक, वेध लग्गा पति (सा) हां ।
दळ असंख आवंदा, गुडे माझी गळि बाहां ।।
जोगणिपूर पह काज, तुरक हिंदू बे लडिया[8] ।
मारू सेर मयंद, मेर माझी आहुडिया ।।
गजसिंघ गढ़ां कोटां गिळण, जैत खंभ ज(म) राउ सौ ।
राठौड हियै दक्खण घडै, नवौ साह नव-साहसौ ।।४।।

'सूरजम' (ळ) गो सरगि, साह निव्वाज विचित्रौ ।
मन तुरकां हिंदुवां, तांम वैराग उपन्नौ ।।
खांन मीर उमराव, सहू डोळी पतिसाही ।
पौरसि[10] राखी पगे, 'गजण' दे हत्थौ वांही ।।
दखणाध दमंगळ दाखिवा[11], आंगमिया[12] उतराधि[13] दळ ।
सूत्रियौ[14] जुध्ध सुरतांण[15] सूं, प्रारंभ आरंभ की (धौ दळ) प्रबळ ।।५।।

---

१ आ. महीग्रल । इ. महियल । २ आ.इ. लीयौ । ३ इ. पुरब । ४ आ. देश, इ. देस । ५ आ. लीयौ । इ. लीयो । ६ आ.इ. जमी । ७ आ.इ. लीया । ८ आ.इ. लडीया । ९ आ.इ. आहुडीया । १० आ. पोरसि । इ. पौरिस । ११ इ. दाषीवा । १२ आ.इ. आंगमीया । १३ अ. उतराध । १४ आ. सूत्तीयो । इ. सूत्रीयो । १५ इ. षुरसाण ।

उत्तराधि[1] दखणाधि[2], उभै आहुडै वदीता।
जद ज(द) दिन पध्धरौ, तीह जद भारथ जीता॥
असिपति[3] दळ 'गजपत्ति', लोह त्रिविधा[4] घड[5] लाडौ।
आगळि[6] हिंदुसथांन[7], इळा[8] खुरसांणह आडौ॥
कमधज्ज पित्ता जिम कल्लवा, वेहसि बाधौ नेत सिरि।
क्रांमत्ति हुंइ खित कारणै, गढ़ जोधह गिरि[9] देवगिरि[10] ॥६॥

गाथा

जुद्धो वरजित दोखो, दक्खण सनमुख भो-अणौ।
वरजित सा दक्खण हण खगे, राठोडे[11] भुहणो कर ए॥

महाराजा गजसींघ रौ दखणाध मैं दरोळ मेटण साख गमन

छंद सारसी

दखणीस डंबर खरळ सक्कर, थेट मोगर थंड ए।
उमराव[12] बहतर[13] खांन सत्तर सीस उत्तर खंड ए॥
खिडिया खंधारं जोरदारं सेन पारं पक्ख ए।
केता हजारं तेग मारं अस्स मारं लक्ख ए॥१॥
छत्रपती[14] छिडिया[15] थाट थिडिया[16] गयंद गुडिया[17] मत्त ए।
तांणे कबांणं करि[18] जुवांणं गोण बांण धत्त ए॥
दौलताबादं[19] नांम जादं मिळि[20] मुरांदं[21] भीर ए[22]।
करणाट कंकण देस दक्खण धूंम्रे[23] अधारण धीर ए॥२॥
विज्जयानग्गर छिडे विद्दुर दुरंति खप्फर दूठ ए।
मरहट बराडं भड किमाडं गिड पहाडं ग्रीठ ए॥
गढपती गूंडं[24] गोळकूंडं झाड-खंड लग्ग ए।
सेत मैं बधं अन्नमंधं[25] करण जुध्धं खग्ग ए॥३॥

---

१ अ. उतराध। २ दषणाध। ३ अ. असपति। ४ इ. विधी। ५ इ. घउ। ६ अ. आगल। ७ आ.इ. हीदुसथांन। ८ इ. ईला। ९ आ. गिर। १० आ.इ. देव गिर। ११ आ.इ. राठौडे। १२ आ. ऊमराव। इ. ऊमरा। १३ आ. हुतर षांन। इ. बहुतर षांन। १४ आ.इ. छत्रपति। १५ आ.इ. छिडीया। १६ आ.इ. थडीया। १७ आ.इ. गुडीया। १८ आ.इ. कर। १९ आ.इ. दौलतावादं। २० आ.इ. मिल। २१ आ इ. मरदं। २२ अ. मरदं। इ. मिरदं। २३ आ.इ. घूम्र। २४ आ.इ. गुडं। २५ इ. अनिबंधं।

नासत्रबक्कं छिडि कटक्कं सिंघ लक्कं सेन ए ।
पंचाळ देसं पंडिवेसं[1] इळानरेसं ऐन ए ॥
मल्यार मंडळ वीजिया जळ दक्खणी दळ संमिळै[2] ।
कन्नडा हबसी देत[3] वंसी चिंहूं[4] दिस्सी सालळै ॥४॥

सेना रो वरणण

गरजंत गजदळ जूह सब्बळ करै मैंगळ सारसी ।
बंधंत चम्मर कसै हैमर पुट्ठि पक्खर आरसी ॥
पक्खरां रोळं जळा-बोळं[5] किरि हिळोळ सिंघ ए[6] ।
चतुरंग फवजां चौंध घज्जां पुठि गज्जां बंध ए ॥४॥

आवै अछाया दैतराया रोद्र[7] काया रूप ए ।
अन्नड कराळा वड वडाळा भड भुजाळा भूप ए[8] ॥
लुग्घा सिघांणी काळ बांणी पंख वांणी बोळ ए ।
परबत्त मेरं जुध्ध फेरं समस्सेरं तोल ए ॥६॥

पाई[9] कवट्टं रिण प्रघट्टं खाग झट्टं खेल ए[10] ।
दूंठ दुगम्मं करै स्रम्मं जोर जमं ठेळ ए ॥
अज्जां(न) बांहं रिम्मरांहं पातिसाहं मांन ए ।
गैढल्ळ गाहं नरां नांहं खाग वांहं खांन ए ॥७॥
पाहाड[11] पिंडं गिडि प्रचंडं भुजां डंडं भीम ए ।

जोध जवन्नं[12] निभै[13] मन्नं सूर तन्नं सीम ए ॥
वीराधिवीरं मिळै[14] मीरं सूर धीरं सत्थ[15] ए ।
आरेण मत्ती भीम भत्ती बांण पत्ती पत्थ ए ॥८॥

कळि मत्थ कोमं सत्र सोमं पस्स लोमं सी(स) ए ।
कंधार काळं जम्म जाळं विक्कराळं दीस ए ॥
बाहंत घावं मंडि[16] पावं नागरावं मत्थ ए ।
भारत्थ भल्लं भूझ झल्ळं बाह बल्ळं बत्थ ए ॥९॥

---

१ इ. पंडवेसं । २ इ. सुमिले । ३ इ. दैत्य । ४ आ. चिहु । ५ अ जल-बोलं । ६ इ.ऐ. । ७ इ. रोद्रि । ८ आ.इ. वडे वडाला अनड कराला (इस प्रकाक का पाठ भेद है) ९ इ. पाइ । १० इ.ऐ । ११ इ. पहाड । १२ अ. जवानं । १३ इ. न्हिभै । १४ आ.इ. निले । १५ इ. स्टथ । १६ इ. मंड ।

घांनंक - घारी बळाकारी मांलहारी[1] मद्द ए ।
सूरा सिपाई तुंग ताई सकज्जाई हद्द[2] ए ।।
वाहंत पांणं असम्मांणं जम्मरांणं जोध ए ।
सहुवै सकूपं रिण कूपं काळ - रूपं क्रोध ए ।।१०।।

जमराउ[3] जैसा रूप ऐसा साळ(है) पैसा लाख ए ।
बांहां बिहूरा अंग भूरा सेन सूरा साख ए ।।
पहरै नरांमा पंचठांमां अंग जांमा ओप ए ।
सोहै सकाजा[4] सीस ताजां[5] सार मोजां[6] जोप ए ।।११।।

दूहा

इळ[7] कारण आरंभ कियौ[8], पूरौ कियौ[9] पारंभ ।
दक्खणियां[10] दळ से मिळे, मत्थण महिणारंभ[11] ।।१।।
केताइ हिंदू[12] खेडिया[13], केताइ पंडरवेस[14] ।
हूवा खिडिकी[15] हेकठा, लंक उइल्ळा देस ।।२।।

मलिक-अंबर

छंद अडिल्ल

दखणी फौज[16] छिडे[17] असमांनं ।
बहुतरि सतरि ऊमरा खांनं ।।
दखणी पिंडिक[18] मिळे दुयंगम ।
नवसै नदीक साइरि[19] संगम ।।१।।

कोट मुलक खिडिया केताइ खंड ।
व्याइ वसूहक फाटौ व्रहमंड[20] ।।
वडा वडा आवै वरियांमं[21] ।
'अंबर' आगै करै सलांमं ।।२।।

---

१ इ. सांमहरी । २ इ. हथ ३ आ. इ. जमराव । ४ इ. सकजां । ५ इ. तजां । ६ मोजा । २२ इ. ईला । ७ आ.इ. कीयौ । ८ आ.इ. कीयौ । ९ आ.इ. दषणीयां । १० इ. महिलारंभ । ११ इ. हीदू । १२ आ.इ. षेडीया । १३ इ. पंडवेस । १४ इ. षिडीकी । १५ इ. १५ इ. फोज । १७ इ. चिडे । १८ इ. पिंडक । १९ इ. साइर । २० इ. वृम्हंड । २१ आ.इ. वरीयांम ।

ऐहा जोध बहसीया आया ।
काजळ मसि(क) वरनी काया ।।
माथै छत्रस ऊजळ दीठा ।
वळियै व्रिवख किरि हंस बयठा ।।३।।

बादसाह री अंबर रै विरुद्ध बीड़ो फेरणो

सगळै तेड़ि खांन सुरतांणं ।
बीडौ अप्पि अप्पि फुरमांणं ।।
असी सहंस असवारां घोडां ।
कीधं[1] विद्या[2] ऊपरि राठौडां ।।४।।

आकुत खांन असक्कत माझी ।
दक्खण दळै तेग तै प्राझी ।।
सहतैररि ताबीन समप्पै ।
सेनाधपति सेन मझि थप्पो ।।५।।

आकूत खां (याकूत खा) रो बीड़ो उठाणो

छंद बोमळा

आकूतह खांन झाळै पांनं छट्टै साहण पंखाळा ।
लाए लग्गाणं मंडि पलांणं घोडे पक्खर थंभ साळा ।।

सैना रो वरणण

तह कीध तुरंगं तांणै तंगं बंधे चंमर[3] गजगाहं ।
लीया वरियांमे 'अंबर' आंमे सूरे पूरे सन्नाहं ।।१।।

रंगावळि सत्थळ हत्थे हत्थळ भूळरियाळा[4] घू टोपं ।
जडिया[5] ले जूसण बंधे कस्सण सिद्धक जांणै सक्कोपं ।।
गुरजां चकमारां अंग अग्गारां डाबे पट्टां जमदड्ढं ।
खंडा खुरसांणी तेगां पांणी सींगी[6] नेजा सन्नड्ढं ।।२।।

दुध्धार गुपती खंजर कत्ती सूंनर[7] कस्सी कोमंडं ।
छोही तरगाळी ढल्लां काळो छत्रीसेइ आवध डंडं ।।

---

१ इ. किधा । २ आ. विध्या । ३ इ. चमर । ४ आ.इ. भूलरीयाला । ५ आ.इ. बडीया । ६ आ. सीशी । इ. सीगी । ७. इ. सुतर ।

डंड - आवध डाबै[1] फारिक फाबै[2] वीरति[3] वंका झूंझारं[4] ।
सल्लांमां कीयां ऊभा मीयां सांम सनमुख सिल्लाएं ॥३॥

खळहळतां डांणां खंभूठांणां[5] गोड करंता गज - भारं ।
ढल्ला ढळकावी चींध[6] वणावी पूठि चड्ढा पोतारं[7] ॥
गडडंता मैंगळ पाए सांकळ कोटां भंजण किंमाडं ।
सिंदूर वखांणै गेरू जांणौ मेघ क धोया पाहाडं ॥४॥

दीपै दंताळा वयंड काळा ऊभा लागै आकासै ।
पिलवांण पटाझर काळा कुंजर लोक त्रिहुं हुआ तंमासै ॥
सबजे जर दाई लाल सिहाई वांनै छायौ व्रहमंडं ।
फररा बैरक्कां फावौ[8] कटकां जांणक[9] फूले वन-खंडं ॥५॥

कवित्त

खंड देस गढकोट, मुलक मांणं तम महाधर ।
कनक मंड[10] मांडंत, छत्र सिर[11] मेघाडंबर ॥
पाटंबर पेंहरंत, सूफजर बाफ मसंजर ।
जम दाढ़ां नमि जडित, कडां जडिया[12] जर कंबर ॥
जोगिंद हुआ सिलहां जडे, दिढ़ दाखवि देवग्गिरा ।
चंचळे खांन सत्तरि चडे, चडे बहुत्तरि उमरा ॥१॥

तणा मीर मरहट्ट, तणा बंगाळ बराडह ।
कुंकण करणाटक्क, खांन देसां नमियाडह ॥
गोळकुंड महिमुंड, तुंड मंडिळा तिलंगा ।
वेदुर वीजापुरा, कनड हबसी अणभंगा ॥
सांमद उअल्ला सैतबंध, हिंदू[13] हम्मीरह खरा ।
आकूत खांन साथे इता, दळ चढिया[14] दक्खण-धरा ॥२॥

---

१ अ. डावे । आ. डाबो । २ आ. फोबे । ३ इ. विरती । ४ आ.इ. झूंझारं । ५ इ. षांभूठांणा । ६ आ.इ. चीध । ७ इ. पोतार । ८ इ. फावि । ९ आ.इ. जांणिक । १० अ. डंड । ११ आ.इ. सिस । १२ आ.इ. जडीया । १३ आ. इ. हीदू । १४ अ. चडीया ।

फौज री कूच

छंद डंडीग्रळ [1]

दम्मांमा घाउर[2] भेर भिहाऊ[3] है गैराऊ[4] दळ चडिया[5] ।
वज्जे सहनाई[6] नौबत घाई तूर त्रिघाई[7] गडगडिया[8] ॥
रुडिया[9] रिरातूरं[10] ग्रंबक पूरं वाजि पडूरं[11] ग्रसमांणं ।
खेहां घमरोळं मिळि गोघोळं पक्खर रोळं केकांणं ॥१॥

हाहूळि हुलाहं हूहि हुकाहं सेन ग्रबांह उल्लट्टं ।
गिरि कंदर कूरं भंगर भूरं वाजि पडूरं[12] उप्पट्टं ॥
खडिया[13] ऊमग्गं ऊपडि वग्गं द्रमं पनग्गं पायाळं ।
हाहस्स हसम्मं सटा[14] सिरम्मं ग्रसी उरम्मं पडताळं ॥२॥

द्रौडा-रव[15] द्रम्मी वाजि दिसम्मो गूडळं जम्मो गैणग्गे[16] ।
फुण सेस सहस्सं[17] धूजि[18] घमस्सं पंथ हमस्सं है-पग्गे[19] ॥
वाराह घडक्कै[20] दाढ़ खडक्कै कंध कडक्कै कूरम्मं[21] ।
सम्मूह सळक्कै कूंत वळक्कै खैगं खळक्कै कैजम्मं[22] ॥३॥

ग्रसमांन ग्रलब्बं थाट[23] थिडब्बं[24] उड्डि दिडब्बं ग्रणपारं ।
सरतांण[25] घनंखं खांडै पंखं ग्रडे ग्रसंखं खंधारं ॥
घण जांणिक[26] घट्टा साहणं छुट्टा सातक फट्टा सांमद्रं ।
सणणी[27] सीचांणां[28] जेम[29] विवांणां वांनर डांणां वाजिद्रं[30] ॥४॥

खैगां खुरताळे खोणा[31] उछाळे ग्रसी[32] ग्रफाळै ग्रसवारां ।
चतुरंगह[33] चल्ले हेमक हल्ले फूल उभल्ले भूभारां ॥

---

१ इ. डडग्रल । २ ग्रा. घाऊ । इ. घाउ । ३ ग्रा. भिहाऊं । इ. निहाऊ । ४ इ. गैराउ । ५ ग्रा.इ. चडीया । ६ ग्रा. सनाई । इ. सेहनाई । ७ इ. त्रिघाद्द । ८ ग्रा.इ. गड गडीया । ९ ग्रा. रुडीया । १० इ. रिरातुर । ११ इ. पंडुर । १२ ग्रा. पडुरं । १३ ग्रा. इ. षडीया । १४ ग्रा. साटी । इ. साटा । १५ ग्रा.इ. द्रोडारव । १६ ग्रा. गैणायो । इ. गैणायगै । १७ ग्रा.इ. सहसं । १८ इ. धुजि । १९ ग्र. हे । २० घडंके । २१ ग्रा. कूरयं । इ. कूरंमं । २२ ग्रा.इ. केजमं । २३ इ. छाटि । २४ इ. छिडबं । २५ इ. सरसांण । २६ इ. जाणिक । २७ इ. सणणे । २८ ग्रा. सीचांणां । इ. सिचांणां । २९ ग्रा. जैम । ३० ग्रा. विजंद्रं । ३१ ग्र.ग्रा. षोल । ३२ इ. ग्रसि । ३३ ग्रा.इ. चतरंगह ।

पाहाड[1] सिरंगे[2] पंथ पवंगे[3] गोम निहंगे गूघोळं[4]।
पाधर किय[5] पट्टं वन्न विकट्टं जांणि[6] उलंट जळ बोळं ॥५॥

धूजंत धरती फौज वहत्ती हम्मंस मत्ती हूं[7] पाए।
वहतां वरहासां बाजै नासां चोट चौरासां न सुणाए॥
गडगडि[8] नीसांण मेघ मंडांण अंबर भांण रज छाया।
हींसा-रव[9] घोडे[10] दखणी दौडे वागां जोडे दळ धाया ॥६॥

दखणी सेना री वरणण

गाहा

दळ भारत आया दखणाधा।
फट्टां दळ वादळ उतराधा॥
वरसै[11] आगि वहंतां बांणा[12]।
ठौडि ठौड[13] हूं उट्ठे थांणा ॥१॥

दखणी दक्खण पस्सरिया दळ।
किरमं कडा करस्सण मेहळ॥
दखणी कटक चहूं दिस दौडै।
महिकर नह[14] मुहक्यो[15] राठौडै ॥२॥

मूक्या लिखि 'दाराब' उतांमळ।
'खांनाखानं' सांमुहा[16] कागळ॥
हुवा कटक्के दखणी हाऊ।
श्राहनपुर[17] आया वाहाऊ[18] ॥३॥

खांना खांन री महाराज गजसींघ ने विरदाणी

कवित्त

खांना खांन नबाब, 'गजण' कहियौ[19] श्रौनाडह[20]।
तूं[21] परचंड पहाड, लोह श्रोछाड[22] किमाडह॥

---

१ श्रा.इ. पहाड। २ श्रा.इ. सिरगे। ३ इ. वहगे। ४ श्र. गूघालं। ५ श्रा.इ. कीय। ६ श्रा.इ. जाणि। ७ श्र.श्रा. हे। ८ श्र.श्रा. गड गड। ९ श्रा.इ. हीसारव। १० श्र.श्रा. घोड। ११. श्रा.इ. वरसे। १२ श्र.श्रा. बांणां। १३ श्र.श्रा. ठौड ठौड। १४ इ. न। १५ इ. महक्यो। १६ श्रा. सामहा। इ. सामुहा। १७ इ. वाहनपुर। १८ इ. वहाऊ। १९ श्रा.इ. कहीयो। २० इ. श्रोनाडह। २१ श्रा.इ. तुं। २२ इ. श्रोछाडह।

तूं[1] आगळ हिंदुवां, तुहिज[2] हम्मीरां आगळ ।
तैं भंजे मेवाडि[3], किया[4] खळ-खट्ट वहे खळ ।।
दखणाधि दळ फाटौ उदधि, रहै न दूजै[5] रोकियौ[6] ।
कमधज्ज ऊठि कर तेग लै, तो भुज भार खडक्कियौ[7] ।।१।।

महाराजा गजसींघ री जोस मैं आणो

वयणे[8] वाकारियौ[9], तांम माभी गज केसरी ।
पवन पूर ऊफणै[10], जळण जांणै[11] वन अंतरि ।।
बळि राजा बांधवा, वोम किर लागौ वांमण[12] ।
विजै जेम वैराट, मीम भंजण दूसासण ।।
हणमंत द्रोण हिल्लोळवा, वीरा - तन किरि विळकुळै ।
दळ-थंभ विढण दखणाधि[13]सूं[14], ऐम[15] ऊठियौ[16]भुज आंमळै ।।२।।

बळ देखे बोलियौ[17], सुणौ खांनां सुरतांण ।
'सूरजमल' मो पित्ता, तेणि थूडे[18] अरि थांणां ।।
सबळ भार मो भुजै, तणौ परियां परचंडां ।
दधि फाटौ वंघ दूं, हुई ज भेलूं व्रहमंडां[19] ।।
मो तेग वंदै[20] हिंदू[21] तुरक, जेती ऊगे आथमै ।
'गजसाह' कहै पतिसाह दळ, मो[22] उभै[23] कुण आंगमै ।।३।।

राजद्वार कोठार, जोण - सालां काढीजै ।
जरद जरद्दी घडं, लोह लोहै कूटीजै ।।
वेनांणी वेगळा, वाढ घालै केवांणां ।
कूंत बांण कीजंति, अणी तीखा खुरसांणां ।।
कापिजै कनक दीजै भडां, बाहिर आणै वारिग्रह ।
मारू[24] नरिंद महिकर दिसा, पारंभ आरंभ कीध पह ।।४।।

---

१ आ.इ. तुं । २ इ. तुं हीज । ३ अ.आ. मेवाड । ४ आ.इ. कीया । ५ अ.आ. दूजो । ६ आ.इ. रोकीयो । ७ आ.इ. षडकीयो । ८ अ.आ. वसणै । ९ आ.इ. वाकारीयो । १० आ.इ. उफणै । ११ आ.इ. जांणं । १२ आ. वायाण । इ. वामण । १३ अ.आ. दषणाघ । १४ आ. सुं । इ. सु । १५ अ. इम । १६ आ.इ. उठीयो । १७ आ.इ. बोलीयो । १८ आ.इ. थूरे । १९ आ.इ. वृह्मांडां । २० अ. वधे । २१ आ. हीदु । इ हींदू । २२ आ.इ. मो । २३ इ. उभो । २४ अ. मारु ।

दूहा

व्राहन-पुर[1] खट[2] मास रहि, होळी रमे वसंत।
तंग तुरंगां तांणिया[3], खेलण खत्र निभ्रंत[3] ॥१॥
कारण तांमै कुंजरां, जोहडां सजोहडांह।
सीहां सत्थ उतांमळौ, परिगह राठौडांह ॥२॥

गाथा

अरजणो नदं घोखो, सूरज सपतास[4] इंद्र एरापति[5]।
गोमंद[7] गुरडन्याए, नेजा डा[8] सिघ आरुडह[9] ॥

कवित्त

ग्रहे वज्र जिम भुजा, चढे ऐरापति इंद्रह।
नंद गोरव जिम[10] पथ, चढे[11] कर ग्रह कोमंडह ॥
ग्रहे आच'र त्रिसूळ, चढे[12] जिम संकर धम्मळि।
चढे[13] रांम खगपति, गदा चक्र गहे भुअब्बळि ॥
सूरज्जि जेम सपतास चढि[14], पदमपांण आवध ग्रहै।
गजसिंघ लोह खटत्रीस ले, इम 'जे' पूठी आरुहै ॥२॥

गोडी-रव गैमरां, जूह वहतां तळ जोडां।
घंटा-रव पक्खरां, हुए हींसा-रव[15] घोडां ॥
ढोवा-रव ढिग ढिगै, गोम गैणा-रव गज्जै।
गुंजा-रव भेरियां[16], धनक टंका-रव वज्जै ॥
सुंडीर वसे नेसां हणे, किरि लहरी-रव ऊपडै।
रोठौड जमळि 'गजसाह' री, तुरां पूठि नाहर चडै ॥२॥

सेना रौ वरणण

छंद संजुता[17]

नीसांण नद्द निफेरियं[18]। दम्मांम काहुळि भेरियं[19]।
रिण तूर वाजि जंबूर ए। आवाज गाज निहंग ए ॥१॥

---

१ अ.आ. व्राहनपुर। २ इ. घट। ३ आ.इ. तांणीया। ४ इ. निभंत। ५ इ. सपताइ। ६ आ ग्रैरापति। इ. ग्रेरापति। ७ आ. गोमद। इ. गेमद। ८ इ. मा। ९ इ. आरूढ। १० इ. जि। ११ इ. चढ। १२ इ. चडे। १३ इ. चडे। १४ इ. चढि। १५ इ. हींसारव। १६ आ.इ. भेरीयां। १७ अ.आ. संजुत। १८ आ.इ. नफेरीय। १९ इ. भेरीयं।

वाजित्र नोबति वज्ज ए । घण जांण भाद्रव गज्ज ए ।
चतुरंग सेनह चल्ल ए । हे-थाट हैमक हल्ल ए ॥२॥

परबत पंख प्रचडंए । मल्हपति[1] मांणक डंड ए[2] ।
मदमोख जूह महाबळो । सदरूप[3] मेघक सिंघळी[4] ॥३॥

डोहंत सूंडा[5] डंड ए । स्रोखंड सरपक हिंड ए ।
गज-वाग[6] मत्थै मैंगळां । वळकत्त वीजक वद्दळां ॥४॥

गुडियंत जूह गडाड ए । सरजीत जांणि[7] पहाड ए ।
मदगंध मद ऊमंड ए । हय पाई रजनी ऊडु ए ॥५॥

गंभीर गडिग्रड ढोल ए । पड-सद्द परबत बोल ए ।
खुर रव(ज) खैंगां थाइयं । रज धूळ अंबर[8] छाइयं ॥६॥

गोधूळ गौम गहत्त ए । वरहास वेग वहत्त ए ।
पडताळ पाइ पवंग ए । भुम्र[9] भार कंपि भुम्रंग ए ॥७॥

असि झंफ मंकड[10] पाळ ए । घडकंति सात पंयाळ ए ।
खेडंत[11] खैंग जुबांण ए । सुर जांणि[12]वोम विवांण ए ॥८॥

जन्नांख वाजि पलांण ए । किरि सोक[13] पंख सिचांणए ।
उल्लट्ट थट्ट थिडंब ए । दिसि अभ्भ उड्डु दिडंब ए ॥९॥

ग्रहराउ[14] मज्झि गरद्द ए । किरि चंद राति सरद्द ए ।
अहिराव कूरम[15] कोड ए । मसतक्क भारह मोड ए ॥१०॥

वरहास दौडे वेगळा । किरि खडै[16] नभ उर मंडळा ।
हुइ हमस घम घम है-खुरां । वाजंत घम-घम पाखरां ॥११॥

हालंत हैमर लीण ए । ऐहलांण[17]भर हरि फोण ए ।
'गजसाह' राव[18] राठौड ए । किरि पत्थ गो ग्रह दौड ए ॥१२॥

---

१ इ. मल्हति । २ इ. मंड । ३ अ. सदरुप । ४ आ. सिघली । ५ आ.इ. सुंडा । ६ अ.आ. वन बाग । ७ आ.इ. जांण । ८ आ. अबर । ९ आ.इ. भूम्र । १० आ. मंखक । ११ इ: षडंत । १२ आ. जाणि । १३ इ. सोष । १४ इ. ग्रहराऊ । १५ आ.इ. कुरम । १६. इ. षडे । १७ आ.इ. अैहलांण । १८ इ. राऊ ।

महाराजा गजसिंघ री वरणण

कवित्त

जिम धायौ जोगेस, वसुह दिख ज्याग विधूसण।
जिम धायौ[1] ग्रह बांण, पत्थ गौ[2] ग्रह छाडावण[3] ॥
जिम धायौ हणमंत, द्रोण पव्वै उप्पाडण।
जिम धायौ भीमेण, दैत लंक मीर बिभाडण ॥
पित वैर क धायौ[4] फरसधर, संघारण सहसा-रजण[5]।
धायौ कमध्ध ढिल्ली[6] दळां, जिम ग्रनंत गज उग्रहण[7] ॥१॥

तणी चाढ़ सुरतांण, खेडि ग्रायौ खुद्रा ग्रसि।
दधि महिकर दळ वधे, पेखि राजा पूर[8] ससि[9] ॥
चढ़ि[10] ग्राया सांमहा, सुहड[11] साखेत[12] भुजाळा।
कियौ सनमुख जुहार, ग्राप ग्रापे ग्रंकमाळा ॥
कमधज्ज मिळे सूं[13] कमधजां, हीया परफूल्ळंत हुवै।
वंदियौ[14] "गजण" बिय चंदवरि, तांम तुरक्कै हिन्दुवै[15] ॥२॥

सह सुभट्ट ग्रविग्रट्ट, बंधि रिणवट्ट सत्रांणां[16]।
लोह मरट्ट विकट दियै[17], किरच........कबांणां ॥
ज्यां प्रघट्ट खतवट्ट[18], कोट ग्रपलट्ट पलट्टै।
ज्यां निकट्ट भौ नहीं, निपट संग्रांम निहट्टै ॥
खळ-खट्ट करै खागां मुहै, सूरज्ज हट्ट समूह गह।
कमधज्ज दियण[19] पसणां पहट, थिडे थट्ट हूग्रा थडह ॥३॥

गजदंतां मुहि[20] चडै, जिके गजदंत विभाडै।
गाढ़ि सीम गज भीम, गयण गजरूप भमाडै ॥
करन द्रोण भीखम्म, जिसा भूरी भगदंतह।
घण रिद्ध धन रज्ज, वाच जुजुठल्ळ निभ्रांतह[21] ॥

---

१ इ. ध्यायो। २ इ. गो। ३ इ. छुडावण। ४ इ. ध्यायो। ५ इ. सहसारभण। ६ ग्रा. दिली। ७ इ. ऊग्रहण। ८ इ. पूर्ण। ९ ग्र.ग्रा. सुसि। १० इ. चडि। ११ इ. सोहड। १२ इ. साषैत। १३ इ. सु। १४ ग्रा.इ. वंदीयो। १५ ग्रा. हींदुवे। इ. हीदवे। १६ इ. सुत्राणा। १७ ग्रा.इ. दीयै। १८ ग्रा.इ. षत्रवट। १९ इ. दीयण। २० इ. मुंह। २१ इ. निभ्रंछह।

भगवाट गिणै पुत्रह वधू, वांमां अंग त्रिविध्ध घड ।
कमधज्ज राऊ जांमळि कमध, जांणि मेर जांमळि अनड ।।४।।

जै जीतौ दखणाध, हाकि हबसी दळ सब्बळ ।
जै भागौ मेवाड, मींढ सूं[1] दिल्ळी मंडळ ।।
जै जीतौ अजमेर, घडी मांही घण घक्कह ।
जै लीयौ जाळोर, भिडे पट्टांण कटक्कह ।।
वरियांम[2] मेरं माझी वडा, जिसा जोध हथणापुरा ।
सांमंत[3] सहू[4] भेळा हुआ[5], गिडि[6] प्रचंड गजसिंघ रा ।।५।।

दूहा

राठौडै[7] पिडि[8] गाहियौ[9], गज बंधी भूपाळ ।
पूनिम चंद पडग्गरै, जांणि नखत्रां माळ ।।१।।

एका एक अभंग भड, थिया थिडंबै[10] थट्ट ।
मारू[11] मांझी[12] मारका[13], कुण कुण वडा सुभट्ट ।।२।।

राठौड़ां री जुदी २ साखावां री नांमावळी

कवित्त

'जोधा' 'चांपा' 'अखा', भला भणि 'डूंगर'[14] भाखर ।
'मांडण' 'मंडळा' 'करन', वरण फौजां वीर-व्वर ।।
'रूपा'[15] 'नाथू' 'सलख', 'पात' 'कांधल्ल'[16] 'जगमल' ।
'जैतमाल' 'अडबाळ[17]', 'लखा' 'सांडा' वैरस्सल'[18] ।।
एक एक नमै खत्र आगळा, भाला हत्था भड सिहर[19] ।
नव समंद खांण नवसाहसा, राठौडां रिणमल्ल हर ।।१।।

'जोधा'[20] 'सूजा'[21] अणी, अणी 'सूजा'[22] ही 'ऊदा'[23] ।
वड रावत 'वरसींघ'[24], दुरित दुस्सासणं[25] 'दूदा' ।।

---

१ इ. सु । २ आ.इ. वरीयांम । ३ आ.इ. सामंत । ४ आ.इ. सोह । ५ आ. हुआ । इ. हुवा । ६ इ. गिड । ७ आ.इ. राठौडे । ८ आ. पिडी । इ. पिड । ९ आ.इ. गाहीयो । १० आ.इ. थिडंबे । ११ इ. मारु । १२ आ. माझी । १३ इ. मारिका । १४ इ. डूगर । १५ इ. रुपा । १६ आ.इ. काधल । १७ आ. अडवाल । १८ आ.इ. वैरसलि । १९ आ.इ. सेहर । २० आ.इ. जोध । २१ इ. सुजा । २२ इ. सुजा । २३ इ. उदा । २४ आ.इ. वरसिंघ । २५ आ. दूसासण । इ. दुसासण ।

'करमसिंघ'[1] कळिमत्थ[2], रूक[3] 'राइसिंघ'[4] रढ़ाला ।
'वीदा' 'विक्रमाइत्त'[5], 'भीम' 'भारमल' भुजाळा ॥
'सिवराज' अनै 'जोगा' सगह, प्रिथी प्रमांणै प्रग्गडा[6] ।
जोधपुर इता जोधां तणा, महण[7] मेर जेवड घडा[8] ॥२॥

कुण कुण कहि दाक्खियै[9], सहू[10] भेळो सलखाइण[11] ।
जिकै[12] जोध वरियांम[13], तिके बत्थह पंचाइण[14] ॥
'उहड'[15] 'सींधल'[16] अभंग, तेर साखा राठोहड ।

भाटियां री साखाअां री नांमावळी

'जेसो' 'केल्हण'[17] 'अरजणोत'[18], भला भाटी खत्र घोहड़ ॥

चोहांण

चोइस[19] साख चहुवांण हर, 'सोनगिरा'[20] के 'देवडा' ।
ब्रह्मंड[21] न मावै वीर रस, खडग हत्थ दरगहि खडा ॥३॥

दोनूं तरफ री सेना री वरणण

दूहा

सिळह भडां व्है[22] कैजमां[23], गुडि[24] पाखर गजथट्ट ।
सूं[25] बाधो दखणाधि[26] दळ, राठोडे रिणवट्ट ॥१॥

दुहुं[27] दळ हालोहळ सबळ, दुहुं[28] दळ घुरै दमांम ।
दमगळ मातो दुहुं[29] दळां, दुहुं वै[30] कोस मुकांम ॥२॥

कटकां काइ[31] संख्या नह्री[32], कोई सांहणे न पार ।
डेरा दिक्खणियां[33] तणा, किरि[34] घोळा गिरि[35] धार ॥३॥

---

१ आ.इ. करमसीह । २ आ. कालिमथ । इ. कलिमथि । ३ आ. रुके । इ. रुक । ४ इ. रंढाला । ५ आ. विकमाइत । इ. वीकभाइत । ६ इ. प्रघडा । ७ इ. महड । ८ इ. घड । ९ आ. दषीयो । इ. दाषीयो । १० आ.इ. सहु । ११ इ. सलषाईण । १२ इ. जिके । १३ आ.इ. वरीयांम । १४ आ. पचाइण । इ. पचांइण । १५ इ. उहड । १६ इ. सीघल । १७ इ. केलण । १८ आ. अरजनोत । इ. अरजणोत । १९ इ. चोवीस । २० इ. सोनिगरा । २१ आ. व्रह्मंड । इ. व्रहमंड । २२ इ. है । २३ इ. केजभ । २४ आ. गुड । इ. गिड । २५ आ. सुं । इ. सु । २६ इ. दषण । २७ आ.इ. दुहु । २८ आ.इ. दुहू । २९ इ. दहू । ३० दुहुअै । ३१ इ. काई । ३२ आ. जही । ३३ आ. दिषणीयां । इ. दिषीणीयां । ३४ इ. फिर । ३५ इ. घोलागिर ।

दखणाधा उतराध दिसि[1], अगि व्रजागि[2] वहंत ।
जांणै बांण प्रधान हुइ, जुध भारथ मातंग ॥४॥

दखणी सेना रो वरणण

छंद मोतिक[3]

दक्खणि[4] सेन खडै जळ बोळह ।
पूठि पवंगां पक्खर रोळह ॥
कंजम जीण तुरंग में राजित ।
पाखरिया[5] किरि पंख परव्बत ॥१॥

पूठि[6] भिडज्जां आरुहिया[7] भड ।
तिस रुप[8] लेय छतीसे त्रिज्जड ॥
सत्तरि खांन बहुत्तरि ऊमर ।
सीस[9] विराजित[10] मेघाडंबर ॥२॥

वांना[11] ओपं[12] हद्द विहद्दह ।
लाल सपेत स्याह जरद्दह ॥
बैरक चींध[13] धजा गज डंबर ।
नेजै नेजै मीर बहादर[14] ॥३॥

फावी फौज घडां चतुरंगणि ।
फूळे जांणि पळास क[15] फागणि ॥
जगमग[16] जीण - साळ…मरद्दां ।
जांणै[17] वीज खिवंत जळद्दां ॥४॥

त्रंबक[18] रोडि रूडै[19] रिण तूरह ।
काइर कंपति रस्सै सूरह ॥
फौज चडी घण थाट घांसाहर[20] ।
एह समुद्र क फाटौ अंबर[21] ॥५॥

---

१ इ. दिसा । २ आ.इ. वृजागि । ३ आ. मोदिका । ४ इ. दषणे । ५ आ.इ. पाषरीया । ६ इ. पुठि । ७ आ.इ. आरुहीया । ८ आ.इ. रूप । ९ इ. सिस । १० इ. विरजित । ११ आ.इ. वाना । १२ आ. ओपे । १३ आ.इ. चीध । १४ आ.इ. बाहादर । १५ इ. पलस । १६ आ.इ. जगमगै । १७ इ. जांणि । १८ इ. त्रंबके । १९ आ.इ. रुडे । २० आ.इ. घासाहर । २१ आ. अबर ।

खोहड[1] खांन खडे खरहंडह ।
मेइण[2] धुंधलियौ[3] व्रहमंडह[4] ।।
नेजा दखणियां[5] दळ अंतर ।
जांणे वास पहाडां ऊपर ।।६।।

ऊलटिया[6] दखणाध तणा दळ ।
मेघ मंडांण[7] क तारा मंडळ ।।
मांडे फौज गडूस[8] महिक्कर ।
आया थाट 'गजैसी'[9] ऊपर ।।७।।

कवित्त

दळ मेहळ ऊपडै, भमर रज डम्मर भ्रम्मं ।
असंख बांण आतस्स, गयण पंखारव गम्मै ।।
पसरि पंख है पाई[10], इळा[11] उड्डे[12] आघंतरि ।
जरद लाल इक[13] स्याह, वरन वांना वि:बहुथरि[14] ।।
संपेखि तीड दिक्खण सुहड[15], इडग मेर माभी अनड ।
'गजसिंघ' मात केही गिणै[16], ग्रह समूह[17] ग्रीघळ गुरड ।।१।।

महाराजा गजसिंघ रो वरणण

गज हैमर पक्खरै, सिलह[18] सुहडां[19] पहरावै[20] ।
आप कवच ओपवै, सत्रै[21] संग्रांम रचावै ।।
डाब लोह खटत्रीस[22], आभ उपाडै ऊंडळ ।
तांणि निळै तिस्सलौ, भाग तीजै[23] ग्रहि साबळ ।।
आरुढ़ हुए 'जै' नांम[24] असि, रवि ऊगमणि परगडै ।
'गजसिंघ' दमांमा[25] गाजतां, चढ़ि[26] आयौ तब चापडै ।।२।।

---

१ आ. वोहड । इ. षोहण । २ आ. गइण । ३ इ. घुघलियौ । ४ आ. ब्रह्मंड । इ. वरहमंड । ५ आ. दषिणीया । इ. दषणीयां । ६ आ.इ. उलटीया । ७ आ. मांडांण । ८ इ. गडुस । ९ आ. गजेसो । १० इ. पाई । ११ इ. ईला । १२ आ.इ. उडे । १३ आ.इ. एक । १४ आ. विहपरि । इ. बिवहपरि । १५ आ.इ. सोहड । १७ इ. गीणै । १७ इ. समुह । १८ इ. सीलह । १९ आ.इ. सोहडां । २० आ.इ. पेंहराव । २१ इ. सूत्रि । २२ अ.इ. षटत्रीस । २३ आ.इ. त्रीजै । २४ आ.इ. नाम । २५ आ. दमांमां । २६ इ. चडि ।

गाथा

इक्को[1] सहस-किणौ, किति मेराइ[2] अंधकारस्य।
संपेख[3] दक्खण सेना, कमधज्ज हसियं कोपि ॥१॥

जुध वरणण

छंद हणूफाळ

दखिणाध दळ असवार। चाळीस दूण हजार।
चापडै[4] खेत चडेउ[5]। असमांण फोज अडेउ[6] ॥१॥
राठौड रिणवट बद्धि। जमदूत निहटा जुद्धि।
है कळळ हूकळ[7] हुब्बि। दम्मांम दोमझि घुब्बि ॥२॥
विपरीत विस्सम घात। किरि[8] बांण वज्रहै पात।
वर जाग बूंग वहंति। किरि अग्गि द्रस्टि हुवंति ॥३॥
घौकार वाजि घनंख। उडुंति तीर असंख।
हैकंपि हुइ[9] ब्रहमंड[10]। गरजंति गुण कोमंड ॥४॥
आतस्स घोर अंधार। लै[11] कार मांर संघार।
घण चक्र उत्तरियांणि[12]। कुरु-खेत भारथ जांणि ॥५॥
वाजंति नाळ निहाउ। किरि कूत वीज[13] सिळाउ।
ऊडुंति आगि दवंग[14]। नाखत्र जांणि निहंग ॥६॥
खिवि पटा खंडा धार। झिळमळै[15] झळ हळ सार।
रिण रचै सिंधू राग। खिळ मिळै नागा खार ॥७॥
है थाट हैमर हींस[16]। गडडाट गैमर क्रीस।
गड़गडै[17] त्रंबक गोडि। रिण तूर वज्जै रोडि ॥८॥
गुण बांण सींघणि[18] गाढ़। वाहंत्ति तांणक वाढ़।
बंदूक[19] बांणे मार। भालोड भंग भंमार ॥९॥

---

१ आ. इको। इ. सको। २ आ.इ. मंराइ। ३ इ. सेपेष। ४ आ.इ. चापडे। ५ आ.इ. चडेऊ। ६ इ. अडेऊ। ७ इ. हुकल। ८ इ. किर। ९ आ.इ. हुई। १० आ.इ. बृह्मड। ११ आ.इ. ली। १२ आ. उतरिपांणि। इ. उतरियांणि। १३ इ. विज। १४ आ.इ. देवग। १५ आ. मिल मले। इ. झिलमिले। १६ अ. हीस। १७ आ. गडगडे। इ. गड गडं। १८ आ. सीघणि। १९ आ.इ. बंदूष।

रिण-ताळ खाळ रगत्त । आरांण हू[1] आव्रत्त[2] ।
जम जाळ जूटै[3] काळ । करि-माळ झाळ कराळ ।।१०।।

खळकंत स्रोणी खाळ । पावस्स करि पर-नाळ ।
घाराळ धोम घडक्क[4] । कळ'ळति कोम कडक्क[5] ।।११।।

निहसंति जोध नत्रीठि[6] । रिण रूक वापरि[7] रीठ ।
बे निहस सेन निसंक । किरि रांम[8] रांमण[9] लंक ।।१२।।

महाराजा गजसींघ री बिजय

कवित्त

महिकर दळ रविखयौ[10], कोट[11] मंडै[12] केवांणां ।
अंबर[13] वूठी[14] अगनि[15], बूंद घण गोळा[16] बांणां ।।
बूंदेलौ वरसिंघ[17], 'रतन' नह[18] आयौ हाडौ ।
'चांदौ' सीसोदियौ[19], फिरै[20] नह[21] फौजां[22] आडौ ।।
'दाराव-खानै[23] नायौ मुदत, अरक अंत[24] आयौ खरै[25] ।
दो[26] पहर[27] जुद्ध दखणाध सुं[28] कीयौ जुडै जोधपुरै[29] ।।१।।

दळा-कार दखणाधि[30], खपे खोटा पळ खुट्टा[31] ।
जादव राइ[32] सारखा, अणी दस आठ पलट्टा ।।
रूपै रूप घाडावि, पडै[33] 'आसौ' पिडि संगम ।
अखैराज चहुवांण, पडै[34] आगळी पराक्रम ।।
पांच सै खेत दखणी[35] पडे, रिण वंकै दिन पध्धरै ।
गज थटां भांजि जीते 'गजण', महाजुध्ध मंडोवरै ।।२।।

---

१ आ. हुई । इ. हुइ । २ आ.इ. आव्रत । ३ इ. जुटै । ४ आ.इ. घरेकं । ५ आ. टक । इ. करेक । ६ इ. नत्रीठे । ७ आ. वापिरि । ८ आ.इ. राम । ९ आ.इ. रावण । १० आ.इ. राषीयो । ११ इ. कोटि । १२ आ.इ. भडे । १३ इ. अवरि । १४ आ. बूठां । इ. वूठो । १५ आ. आग । १६ आ.इ. गोलां । १७ इ. वनसिह । १८ इ. नहि । १९ आ इ. सीसोदीयो । २० आ.इ. फिरे । २१ इ. नहि । २२ आ. फौजा । इ. फोजां । २३ आ.इ. दाराबषांन । २४ इ. जंत । २५ अ. षडै, आ. षडो । २६ आ. दोइ । इ दोय । २७ आ.इ. पोहर । २८ आ.इ. सुं । २९ आ. जोधपुरं कीयो जडै । ३० आ. दणाधि । ३१ आ. षुटा, इ. षूटा । ३२ इ. राय । ३३ आ.इ. सारिषा । ३४ आ.इ. पडे । ३५ आ.इ. दणीयर ।

दूहा

दळ भंजे[1] दिखणाधरा[2], की 'गजबंध' हटक्क।
गा नरसिंघ संपेखियौ[3], भूतां[4] तण कटक्क ॥१॥

दळ भंजे डेरा फुरळि, गमि दखणी दहवाट।
गज केसरी[5] ध्रांसाडियौ[6], दोइणां[7] वाळै दाट[8] ॥२॥

जूमंगे[9] जूए मुहे, हुए[10] दखणि[11] जळा[12] हीण।
किरि वरखा रित[13] चालिया, घणहर वूठै लीण ॥३॥

वांन वधारे[14] कमधजां, आघारे असमांन।
'गजबंधी' नव साहसै, भागा बारह खांन ॥४॥

चौपाई

'गजबंधो[15] ज रहै[16] जसबोल। दीना जैत दमांमां[17] ढोल।
दक्खण[18] फौजां[19] चहूं[20] पास। वद्दल[21] फट्टा[22] जांणि[23] अकास ॥१॥

दखणी छंडि दिसा दखणांघ। आया फिर सांमा उतराधं।
जोधपुरै[24] जीता संग्रांम। तब चहुं कोसे किया[25] मुकांम ॥२॥

'पुनः अंबर रौ आक्रमण'

दूहा

दक्खणियै[26] घेरौ[27] कियौ[28], कटके[29] कोइ[30] न थग्ग[31]।
अन घ्रत[32] खड ईंधण[33], दुलभ[34] चिहु दिस रोके मग्ग ॥१॥

लूंण[35] कपूर समांन थिऊ, अन सोव्रन[36] सम माग।
तेल थयौ मुरहेळ[37] सम, हय सुहडां[38] थयु[39] आग ॥२॥

---

१ इ. भांजे। २ आ.इ. दषणाधरा। ३ आ.इ. सपेषीयो। ४ आ.इ. भुजां। ५ इ. केहरि। ६ आ. घ्रासाडीयो। इ. घुंसाडीयो। ७ इ दोयणा। ८ द्राट। ९ आ.इ. जूमगे। १० इ. हुई। ११ आ. दषणी। इ. दाषिणी। १२ आ. जली। इ. जल। १३. इ. रुत। १४ इ. वाघारे। १५ आ. गजबधी। १६ आ. रहे। इ. षटे। १७ आ. दमामा। इ. दुमामा। १८ आ. दषण। १९ आ.इ. फौज। २० आ.इ. चुहुं। २१ आ.इ. वदल। २२ आ.इ. फटा। २३ इ. जांण। २४ आ. जोधपुरं। २५ आ.इ. कीया। २६ आइ. दषणीये। २७ आ.इ. घेरो। २८ अ.इ. कीयो। २९ आ.इ. कटक। ३० आ. कोई। ३१ आ. थठा। ३२ आ.इ. घृत। ३३ आ. ईंधण। इ. इंधण। ३४ आ.इ. दुलंभ। ३५ आ. लुंण। ३६ इ. सोवंन। ३७ आ.इ. सुरहेल। ३८ आ. इ. सोहडां। ३९ आ.इ. थयो।

बादसाही सेना में गजसींघ रो हरावळ में होणौ

दोळौ दिल्लीवै[1] दळां, ओळौ मंडै[2] ओट[3] ।
जोधा[4] रिणमल्लां[5] कियो[6], भालां हूंदौ[7] कोट ॥३॥

आतस बाजी गाडियां[8], आराबा अनमंध ।
गड्डै गोळी[9] नाळियां[10], किरि लहरी र व[11] सिंध ॥४॥

राठोडै[12] रिण सूंत्रियौ[13], सू[14] दखणाध दळांह ।
जोगण-पुर[15] रौ[16] जूवटौ, माथै जोधपुरांह ॥५॥

तवियौ[17] तुरकां हिंदुवां[18], असपति[19] दळ अणियांह[20] ।
चालौ ले चतुरंग दळ, डेरै[21] दक्खणियांह[22] ॥६॥

खांन वरावा[23] खडकियौ[24], ले मत्थै भर भार ।
'गजण' कटक्कां हुई[25] मुहरि, कळि मथ्थण[26] जोधार ॥७॥

कवित्त

चड खांन "दाराब"[27], रहम दा दळ निय[28] जांमल ।
सूरसिंघ[29] कमधध्ज, चढे[30] राजा नृप[31] जंगळ ॥
राउ[32] हाडौ[33] "रतन्न", चढे[34] चंदो खूमांणिह ।
राजा वरसिंघ दे, चढे[35] सेनै[36] महिरांणह[37] ॥
महम्मद चढे[38] वहलोल खां, श्रै बै पिट्ठांण[39] अणी ।
चालिया[40] चडे चतुरंग दळ, मुहि दे मंडोवर[41] धणी ॥१॥

घुरे भेर दम्मांम, नाद गरजे[42] नीसांणह ।
गडडि[43] मेघ गयणाग[44], जांण कूतह[45] कल्यांणह[46] ॥

---

१ दीलीचै । २ आ.इ. मंडे । ३ आ. ओट । ४ आ. जोधा । ५ इ. रीणमलां । ६ इ. कीयो । ७ आ. हंदो । ८ आ.इ. गाडीयां । ९ इ. गोला । १० आ.इ. नालीयां । ११ लैहरी र व । १२ अ.आ. राठोडै । १३ आ.इ. सूत्रीयो । १४ आ.इ. सुं । १५ अ. जोगणीपूर । इ. जोगणिपूरी । १६ आ. रो । १७ आ.इ. तवीयो । १८ आ.इ. हीदुवां । १९ इ. असिपते । २० आ.इ. अणीयांह । २१ आ. डेरे । २२ आ.इ. दषणीयांह । २३ आ. वारावा । इ. वरावां । २४ आ.इ. षडकीयो । २५ इ. हूइ । २६ इ. मथण । २७ इ. वाराव । २८ आ. नीय । २९ आ. सुरसिंध । ३० आ. चडे । ३१ आ. नृप । इ. निृप । ३२ आ.इ. राव । ३३ आ. हाडो । ३४ आ.इ. चडे । ३५ आ. चडे । ३६ आ.इ. सोने । ३७ आ. महिराणह । ३८ आ.इ. चडे । ३९ आ. पठाण । इ. पठांण । ४० आ.इ. चालीया । ४१ आ. मंडावर । ४२ आ.इ. गरजै । ४३ आ. गडडी । इ. गड्डिड । ४४ आ. गयणां । ४५ आ.इ. कतक । ४६ इ. कल्याणह ।

धज पताख फरहराट, लंकी[1] गज आलम ढल्लां ।
घटा रूप गज फौज, दंति[2] किरि पंति बुगल्लां ।।
पैमाळ गोम पक्खर गहण, खुरासांण[3] बैठो खिडै[4] ।
दिखणाध[5] सीस उतराध[6] दळ, आयौ अल्लक ऊपडै ।।२।।

गाथ ।

रयणी भूखण[7] चंदो, आकास भूखणो[8] भांणो ।
भूखण भूतळ[9] इंदो, भूखण[10] साह फौज "गजसिंघो" ।।१।।
दुल्लह[11] राउ[12] राठौड, दखण घणा[13] कांम मैमती[14] ।
कारण पांण ग्रहणो, सांम्है ले मुक्कियो[15] बांण ।।३।।

जुध वरणण

छंद रेंड़की (रेंणकी)

गरजंति घनख गुण बांण बरण घण ।
आग अकारण उडुवियं[16] ।
गज थाटां गहण गणण गयणंगण ।
सोक सणण भरपूर[17] थियं[18] ।।
मंगळ झळ विमळ लगै रवि मंडळ ।
तांमस[19] हूकळ कळळ तुरै ।
लळ वळ पुंज सुंड झळळ दांतूसळ ।
घिख घारुजळ ढोल घुरै ।।१।।
असमर झट झपट विकट थट आवट ।
गो[20] गाहट थट गरट गहै[21] ।।
ऊकट थिय[22] काट सुभट लख आरट ।
खळखट रिणवट खडग वहै ।।

---

१ इ. लिक । २ इ. दंत । ३ आ. षुरासाण । ४ इ. षिरे । ५ अ. दषणाध । ६ इ. उतांराध । ७ इ. भुषण । ८ इ. भुषणो । ९ इ. भूंतल । १० इ. भुषण । ११ आ. दुलह । इ. दुलइ । १२ इ. राव । १३ इ. घणां । १४ इ. मैंमती । १५ आ.इ. मुकीमो । १६ आ.इ. उडवीयं । १७ आ. भरे-पूर । इ. सर-पूर । १८ आ.इ. थीयं । १९ आ.इ. तामस । २० आ.इ. गो । २१ आ.इ. गहे । २२ आ.इ. थीयो ।

घडहड़ि[1] धक धोम वळिक[2] खग धड़ि धड़ि ।
रावत वड़ि वड़ि रोस चडै[6]
गड़ि गड़ि नीसांण गयण[3] किरि[4] गड़ि-अड[5] ।
खांडा खड़ि खड़ि खाट खडै[6] ॥२॥

गयंदां ढळ ऊथळ - पथळ गयंडोथळ[7] ।
मूळ नहीं सळ दुभ्रळ मुडै ।
रत्तळ भळ खखळ बखळ खळळ रिणरीधळ ।
जोध रिणमल[8] अपल जुडै ॥
कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज ।
राखै रज रिणतूर[9] रुडै ॥
दम्मांमां गरज वहै व्रज दोमज ।
गज पाताडक[10] भुरज गुडै ॥३॥

तूटै[11] भड निवड त्रिजड भड़ तिमछै ।
वाढ[12] अंतेवड[13] विहुंड वपै[14] ।
छूटंती[15] रुहिर नडड[16] दड वड छिळि ।
धारां धजवड सुहड[17] ध्रपै[18] ।
खळ हळ रत खाळ झबकि खग भळ-हळ ।
कंठल वळवळ वीज कळां ।
कळ ऊकळ[19] हुए[20] गळोव(ळ) कंदळ ।
आफळ धाया उभै दळां ॥४॥

दखणी सेना री पराजय

कवित्त

सोर धीर……सम्मूह[21], बांण ऊच्छळै वळंता ।
वहै आग वरजाग, वोम किरि[22] वीजळ लंता ॥

---

१ इ. धड़ि धड़ि । २ इ. वालिक । ३ आ. गयंण । ४ आ. किरी । ५ आ.इ. गडीअड । ६ आ.इ. षडे । ७ आ.इ. गडोथल । ८ इ. रिणरण । ९ इ. तुर । १० इ. षाताडक । ११ आ.इ. तुटै । १२ आ. वाट । १३ इ. अंत्रेवड । १४ आ.इ. वपे । १५ आ.इ. छूटंति । १६ आ.इ. दडड । १७ आ.इ. सोहड । १८ आ. ध्रपे । इ. ध्रपे । १९ आ.इ. उकल । २० आ.इ. हूए । २१ आ. सभूह । इ. सभुह । २२ इ. कीरि ।

हुए मीर संघार, सोक सर पूर विछूट्टै ।
प्रळै काळ आव्रत[1], फौज फौजां मुहि जुट्टै[2] ।।
गजसिंघ भडां किम्माड थिउ[3], कीए[4] आगळि कमधजे ।
डेरा पिमूकि[5] गा[6] दक्खणी, किरि पनंग कांचू[7] तजे ।।१।।

दळ उत्तर दिक्खणी, उभै आहुडै[8] जियारां[9] ।
अगन बांण घमसांण, घांण[10] ऊतरै तियारां ।।
गोअरधन भौ[11] जसू, पडे राउ[12] रयण सहवर[13] ।
बूंदी[14] पह मछरीक, खडग वाहै खडगघर ।।
सातसै पडै पल्ला[15] सुहड[16], उल्लाई भड एतडा ।
कमधज्ज जुध महकर[17] कियौ[18], बे पतिसाहां प्रग्गडा[19] ।।२।।

करि संग्राम सु[20] दखण, तुरक हिंदू[21] बाहुडिया[22] ।
है पक्खर परहरे, गज्ज किरि गिरिवर[23] गुडिया[24] ।।
असि वागां ऊपडीं, फौज फारक्कां धाई ।
दळ दखणी ऊलटा, ऊब[25] आसाढ़ क आई ।।
अगनिमै बांण छूटा असंख, वळी वीढ चिहुंवै[26] वळां[27] ।
पछिवांण[28] हुवौ[29] पूठी[30] रुखौ, "गजण" तांम[31] दिल्ली दळां ।।३।।

नीमडियौ[32] भारत्थ, कथ राखी कमधज्जे ।
किया[33] जोध खळहांण, भार पडतौ अहि भुज्जे ।
पच्छवांण[34] पम्मार[35], हुओ[36] राजा मंडोवर[37] ।
रुडै[38] जैत रिण तूर(फ), वडौ जीतौ जुडि जागर ।

---

१ आ. आव्रता । इ. आव्रत । २ इ. जुटे । ३ इ. थीउ । ४ इ. कीयों । ५ आ. पैमकि । इ. पैमुक । ६ इ. गमा । ७ इ. कंचू । ८ आ.इ. आहुडे । ९ इ. जीयारां । १० आ. घाण । ११ आ.इ. भो । १२ आ. राऊ । १३ आ.इ. सहोवर । १४ आ. बुंदी । १५ आ.इ. पैला । १६ आ.इ. सोहड । १७ इ. महिकर । १८ आ.इ. कीयौ । १९ प्रघडां । २० आ. सुं । २१ आ.इ. हींदु । २२ आ. बाहुडीया । इ. बाहूडीया । २३ आ इ. गिरबर । २४ आ.इ. गुडीया । २५ आ.इ. उब । २६ आ चिहुवॅ । २७ आ. वुलां । २८ आ.इ. पछिवाण । २९ आ. हूओ । इ. हुओ । ३० आ. पूठि । इ. पुठि । ३१ आ. ताम । ३२ आ.इ. नीमडीयौ । ३३ आ.इ. कीया । ३४ आ इ. पछवाण । ३५ इ. पगां । ३६ आ.इ. हूओ । ३७ इ. मंडोवरा । ३८ इ. जुडै ।

दळकार हठै दखणाध रा, दिल्ली फौजां निरबही[1]।
फिरि जांण अपूठा[2] बाहुडै[3], जांन[4] वौलाए मांडही ॥४॥

हूँ पलांण न ऊतरै, रहै दळ चाकै[5] चडिया[6]।
मिळै कोट मैवट्ट, घण घट घाए[7] घडिया[8]।
गयण गीध ढक्कियौ[9], खिवै[10] असमर ऊबांणा[11]।
वहै बांण विपरीत, ...सोक[12] जांणै सीचांणा[13]।

जोधार अहोनिस जाळवै[14], जीण-सांल डीलै जडी।
तिण वार हुवौ[15] हिंदू[16] तुरक, कोई गजसिंघ समवडी ॥५॥

उतराधी दक्खणी, कटक[17] बै वै आरूढा[18]।
कापड चोपड खपै, अन्न खड ईंधण खूटा ॥
प्रळै काळ पेखियौ[19], वाडि करकां[20] मंडांणी[21]।
जोधपुरां जळ चडे, बियां[22] ऊतरियौ[23] पांणी ॥

देवगिरि[24] अन्नै जोगणि पुरां, सबळौ भारथ सूत्रियौ[25]।
महिरांण महिक्कर[26] मत्यतां[27], च्यार मास विग्रह कियौ[28] ॥६॥

महिकर घेरौ[29] सबळ, कियौ[30] दखणाधि कटक्कां।
गढ़ दुरंग घेरियौ[31], प्रजा भागी परिचक्कां[32] ॥
नको[33] प्रांण विन्नांण, नेस फीका[34] खुरसांणी।
गयणंगण[35] डोलियौ[36], सीम चंपी सुरतांणी ॥

राठौड राउ रोहै रिणह, खडग दाढ खळ खंडरै[37]।
वाराह सिंघ बाळा-पुरह, आयौ दळ आगळ करे[38] ॥७॥

---

१ आ.इ. निरवही। २ इ. अपुठा। ३ आ.इ. बाहूडे। ४ आ इ. जान। ५ आ. चाके। ६ आ.इ. चडीया। ७ आ. घाऐ। ८ आ.इ. घडीया। ९ आ. ढकीयौ। इ. ढांकीयौ। १० आ.इ. षिवै। ११ आ.इ. उबांणा। १२ आ.इ. सौक। १३ इ. सीचाणा। १४ आ. जालवे। १५ आ. हूवौ। १६ आ.इ. हींदू। १७ इ. कटैक। १८ इ. आरुढा। १९ आ.इ. पेषीयौ। २० आ. करंकां। २१ इ. मंडाणी। २२ आ.इ. बीयां। २३ आ.इ. उतरीयौ। २४ इ. देवगिर। २५ आ इ. सुतीयौ। २६ आ.इ. महिकर। २७ आ. मथातां। २८ आ.इ. कीयौ। २९ इ. घेर। ३० आ.इ. कीयौ। ३१ आ.इ. घेरीयौ। ३२ आ.इ. परिचकां। ३३ आ.इ. नका। ३४ आ.इ. सीफां। ३५ आ.इ. गयणांगण। ३६ आ.इ. डोलीयौ। ३७ अ.आ. षडरे। ३८ अ. करै।

चडे बेल वरियांम[1], सुजळ ते आगळ चंचळ।
गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर[2] अंबागळ[3] ।।
असंख फीण ओपत्ति[4], बहुत चोधां बैरक्कां।
मारवाड मरजाद, भडां अनडां मारक्कां ।।
अणतांघ[5] कूंत[6] असमर भमर, कच्छ मच्छ कूरम सबळ।
"गजबंध" मंडांणौ मेरगिर, सपतसिंघ[7] दखणाध दळ ।।८।।

नित्त जुध्ध मंडिजै, नित्त सिलहां पहिरीजै[8]।
नित्त तंग तांणिजै, नित्त कैकांण[9] कसीजै ।।
नित्त खडग खडखडै, नित्त पळ-चरां ध्रवीजै[10]।
नित्त जोध निहसंति, नित्त गज दळ गाहीजै[11] ।।
नित्त हुवै प्रवाडा नव नवा, नित राखीजै अच्चडां।
राठौड रिमां जड धोइवा, धारां धोवै धजवडां ।।९।।

दखणी सेना रो फेर आक्रमण

छंद मैणाउळी

दक्खणी सेन आया अबाहं।
पक्खरे तुरी पहिरै[12] सनाहं।
फाबि चतुरंग फौजां अचाळं।
छपन कोडी किरै मेघमाळं ।।१।।

मछरियौ[13] "गजपती" मेर माभी[14]।
पल्लिवा अज्ज राठौड आभी।

जुध वरणण

महाराजा गजसींघ रो हरावळ में होणौ

सुहड[15] साखेत[16] सगळौ सओधा।
हुआ हरवल्ल रिणमल्ल जोधा ।।२।।

---

१ आ.इ. वरीमांम। २ आ.इ. रिणतुर। ३ आ. अंबिगल। इ. अंबागलि। ४ आ. ओपति। ५ आ. अणताथ। ६ आ.इ. कूत। ७ आ.इ. सघत-सिंघ। ८ आ.इ. पहीरीजे। ९ आ.इ. केकांण। १० आ.इ. धबीजै। ११ आ.इ. गाहिजै। १२ आ.इ. पहरै। १३ आ.इ. मछरीयो। १४ इ. मांभी। १५ आ. सुहंड। १६ आ.इ. साषंत।

आंमही सामंहा छूटि बांणं ।
घड घडै[1] धोम घुबि[2] आसमांणं ।
गड गडै नाळि छूटंति गोळा ।
जांणक उडंति मेहे किलोळा ॥३॥

मारू ए[3] दखणि ए[4] जुद्ध मातौ ।
त्रिविध[5] घड ऊछळै लोह तातौ ।
छूटि[6] कोवंड[7] गुण बांण[8] गाजै[9] ।
फारकां मारिकां हाक वाजै ॥४॥

काळ भैरव रुद्र भद्र काळी ।
हरखि हसि दीध नारद्द ताळी ।
दखण सूं दियौ[10] राठौड बत्थां[11] ।
रवी[12] रह तांण[13] आकास[14] रत्थां[15] ॥५॥

रूक[16] आवाहिया[17] देवराए ।
गाजि व्रहमंड[18] घाए निहाए ॥
खीजिया[19] जोध वाहै खडग्गं ।
विसरि किरि जीह वासिग्ग[20] नग्गं[21] ॥६॥

वहै[22] विपरीत वेळा करारी ।
कूंत किरमाळ नेजा कटारी ॥
घजवडां घार रुळै[23] रुंड मुडं ।
विहुंड फड वाढ़ खंडह विहुंडं ॥७॥

महाराजा गजसींघ री विजय

राउ राठौड रिणताळ जीतौ ।
विढे[24] पतिसाह प्रिथमी वदीतौ ॥

---

१ इ. धडहडे । २ इ. घुवि । ३ आ. ऐ । ४ इ. ऐ । ५ आ.इ. त्रिबिधि । ६ आ.इ. छुटि । ७ अ. कोमंड । ८ आ. बाण । ९ इ. गजे । १० आ.इ. दीयौ । ११ इ. बथां । १२ आ.इ. रवि । १३ इ. रहै । १४ आ. आकारथं । १५ आ. रथं । १६ अ. रुक । १७ आ.इ. आवाहीया । १८ आ. बृह्मंड । इ. बृहमंड । १९ आ. षीजीया । इ. षिजीया । २० आ. वासिग । इ. वासग । २१ आ.इ. नगं । २२ आ. वहे । २३ अ. रुळि । २४ इ. विडे ।

लडण "गजसाह" असमांन लग्गे ।
अरध लख दखणी तांम[1] भग्गे ॥८॥

कवित्त

दखिण खेत कुरुखेत[2], महा जुध[3] भारथ मत्तै ।
भारि ओडि भुवडंड[4], बाथ भरतै निहसत्तै ॥
इग्यारै खोहणी, खांन बारैह विभाडै ।
अरि उलाळ रिणताळ, गज्ज गयणाग भमाडै[5] ॥

कमधज्ज गरजि कंठीर जिम, महाकोप[6] चडियौ[7] मछरि[8] ।
गजसिंघ तेग वाही गजां, बाला-पूरि बलाल वरि ॥१॥

दक्खणवै दळ असंख, चिहूं[9] पासै[10] चतुरंगह ।
गडडि नाळि गाडियां[11], बोल पडसंद[12] न्हिंगह ॥
ढोल दमांमा[13] धुबै[14], हुवै[15] है-थाट हमल्लै ।
धरणि[16] धूज[17] धम हुमे, सपत पंयाळ[18] दहल्लै ॥

खुरसांण लंक पती[19] खहण, खेध वेध वूहा खडग ।
पतिसाह दळां पाधर हुऔ[20], राड रोह मुर मास लग ॥२॥

गुण धनख धोकार, भेर नीसांण निनद्दह[21] ।
ईळा पुडि ऊपडै[22], विकट वंकी सरहद्दह ॥
धोम झाळ[23] धड हडै[24], प्रळै पाक दरस्सै ।
अगनि बांण पडि बूंद[25], जांण ब्रहमंड[26] वरस्से ॥

चौफेर फिरै[27] चतुरंग दळ, घण सरूप त्रिसरी[28] घडां ।
दळ थंभ दखण आडौ डहै, भड किमाड उत्तर भडां ॥३॥

---

१ आ.इ. ताम । २ इ. कुरुषेत्र । ३ आ.इ. माहाजुध । ४ इ. भुजडंड । ५ आ.इ. भमाडे । ६ आ.इ. माहा कोप । ७ आ.इ. चडीयो । ८ आ.इ. मछिरि । ९ आ.इ. चिहुं । १० आ.इ. पासे । ११ आ.इ. गाडीयां । १२ आ.इ. पडसद । १३ आ. दमाम । १४ आ. धुब । इ. धुबे । १५ आ.इ. हुवे । १६ इ. धरिण । १७ आ. धुज । इ. धुजि । १८ आ. पयाल । इ. पायाल । १९ आ. लकपंती । २० आ.इ. हूवो । २१ आ.इ. निनदह । २२ आ. उपाडे । इ. उपडे । २३ अ. धोमझाल । २४ आ.इ. धदहडे । २५ आ.इ. बूंद । २६ आ.इ. बृह्मंड । २७ आ.इ. फिरे । २८ आ. त्तिसरी । इ. तिसरी ।

दुजड दांत आळाय, आग दवंगे उडंते।
पारध्धी पाडतो, तुंड उप्पाडे कूंते[1]।
हेडवतौ हे - थाट, किये[2] मज्जीठे कम्मळ।
उर आगळ घातियै[3], डार सुरतांण तणौ[4] दळ।
पूरणा नदी पांणी[5] पियै[6], रोस चईनौ[7] रठुवड[8]।
वाराह सिंघ आयौ विढे, साजै नाद अभंग भड ॥४॥

दूहा

सांड त्रिसिंघ अखाड - सिंध, पौरिस[9] जोध प्रचंड।
तोडर बांधे आडियौ[10], "गजबंधो" बळि-वंड[11] ॥१॥
पाधारे व्रांहान-पुर[12], साथ स-जूझै पास।
राजा चमर ढुळावियो[13], पित हुंदै[14] आंमास[15] ॥२॥

विजय प्राप्त कर महाराज गजसींघ रो बुरहानपुर में आगमन

कवित्त

व्रांहन-पुर[16] "गजपती"[17], आवि बैठो आंमासै[18]।
खट दूण आदीत[19], तेज आंणणि आभासै॥
धमळ ग्रेह वर तरण, धमळ सिरि[20] मंगळ गाए।
वेद मंत्र अभिषेक, सयण[21] आणंद ज थाए॥
जैकारबिदं कोळाहळह, कमधज्जां ग्रह[22] जस कुसळ।
चाहंत[23] प्रजा ओटै चडी, च्यार कोस चतुरंग दळ ॥१॥

फेर बुराहान पर घेरो

के हबसी कन्नडा[24], केइ[25] पाईक फरीधर।
के राजा के राव, केई[26] रावत्त बहादर॥

---

१ आ. कूत। २ आ.इ. कीयौ। ३ आ.इ. घातीयौ। ४ आ.इ. तणै। ५ आ.इ. पाणी। ६ आ.इ. पीयै। ७ आ. चईतौ। ८ इ. राढवड। ९ आ. पौसि। इ. पौसी। १० आ.इ. आडीयौ। ११ आ.इ. बिलवंड। १२ आ. व्राहन पुर। इ. वृांहन पुर। १३ अ.आ. ढलावीयौ। १४ आ. हदै। १५ इ. अैमास। १६ आ. ब्रांहन पुर। इ. वृांहन पुर। १७ आ. गजपति। इ. गजपत। १८ आ. आमासे। १९ इ. आवधीत। २० इ. सिर। २१ इ. सघण। २२ अ. ग्रह। २३ अ.आ. चाहत। २४ इ. कंनडा। २५ इ. केई। २६ इ. केइ।

गिणतां लाभै ग्यांन, न को[1] घोडां असवारां।
पार न को पायदळां, खिडे खोहण खंधारां[2] ॥
सुरतांण खांन मीयां[3] मिलक, कुण जांणै भड केतडे।
दुरवेस फौज दखणाधरी, असणि जांणि करसण पडै[4] ॥२॥

सबज लाख सप्पेत[5], वर्णं[6] पीतंबर वांना[7]।
तुरै[8] बंध गजगाह, चडी[9] असवार दिवांना[10] ॥
सेना[11] चतुरंग मैं, छौळ[12] दरियाव[13] क छिल्लै।
फौज रूप फाबंति[14], वसंत वणराइक[15] फुल्लै[16] ॥
गै-थाट गुडै[17] है, पक्खरे कससे[18] कोरण तेवडा।
उतराध दळां सिरि[19] ऊपडै[20], घटा टोप दक्खण[21] घडा ॥३॥

व्रांहनपुर[22] घेरियौ[23], कटक दखणाधी आए।
गोधांम[24] कंदल हुए[25], दुंद दमंगळ उट्ठाए[26] ॥
फिरै[27] भूळ नेजाळ, हमस है पाए बाजी।
हुम्मीरां हिंदुवां[28], रही राठौडां बाजी ॥
दिसि निहंग बूंग[29] उड्डै दवंग, अगन[30] बांण[31] उड्डै बहत[32]।
आवंत मलैंतर उड्डिया[33], अहिक पंख मिरण संजुगत ॥४॥

खांन खांनां रौ महाराजा गजसींघ नूं बिरुदाणौ

सोबै साहिब सरद[34], खांन खांना दळ मांही।
"गजबंधी" पडगरै[35], वडौ कमधज्ज वडां ही ॥
तूं राजा रिणखंभ, धीर दळ थंभ धराधर।
नव कोटी[36] सै धणी, तेरै साखां[37] उज्जागर ॥

---

१ आ.इ. न को। २ इ. षंधारा। ३ इ. मियां। ४ आ.इ. पडे। ५ आ.इ. सपेत। ६ आ.इ. वणे। ७ आ. वांनां। ८ आ.इ. तुरे। ९ इ. चडे। १० आ. दीवांना। इ. दिवानां। ११ इ. सैन। १२ आ. छोल। १३ आ.इ. दरीयाव। १४ इ. फाबती। १५ आ.इ. वणराई। १६ आ.इ. फूलै। १७ आ. गुडि। १८ इ. कसठे। १९ इ. सिर। २० आ. उपडं। २१ इ. दषण। २२ आ. व्रांहन पुर। इ. वृांहन पुरी। २३ आ. घेरीयो। इ. येरीयो। २४ आ.इ. गोधम। २५ आ.इ. हूए। २६ आ.इ, उठाए। २७ आ.इ. फिरे। २८ इ. हींदुवां। २९ आ. बूग। इ. बूंग। ३० इ अनंगन। ३१ आ. बाण। ३२ इ. बहुत। ३३ आ.इ. उडीया। ३४ अ.आ. सरब। ३५ आ.इ. पडगरे। ३६ इ. नव कोटा। ३७ आ. साष।

आदीत अमूंभी[1] छींक[2] ज्यूं[3], जांणोजै जोधह पुरा[4]।
भरभार आज थारै भुजे[5], सहू[6] काज सुरतांणरा ॥५॥

महाराजा गजसींघ रौ जोस में आणो

"गजबंधी" ऊठियौ, तेग भूडंड उभारै।
किरि पाखरणो[7] सिळह, सुहड[8] सोह[9] बापुकारे[10]:
"जै" तुरग्ग[11] आरूढ़[12], हुए[13] कमधज्ज महाभड।
पडे चोट नीसांण, पडे पडसद्दा अन्नड।
सम्मूह चडे सुरतांणरा, कटक बंध कोअण सघण।
जांणियौ[14] तांम[15] तापी नदी, दे अण-मांन[16] आयौ महण ॥६॥

सेना रौ वरणण

छंद दुडिला (दुर्मिला)

दम्मांम[17] डहुडुह तूर[18] त्रहतह गोळ[19] गहम्मह गैगुडियं[20]।
चल्ले चतुरंगह सेन असंखह आरिख अब्भह ऊपडियं[21]।
तपती[22] नदि[23] ऊतरि[24] आया[25] पाधरि लागै[26] "अंबर" लक्ख दळं।
धरा भूभै घुस्सर[27] दक्खण ऊपर वोळ मंडोवर बांह[28] बळं ॥१॥
मलपै घड मैंगळ[29] सूंड लळवळ हालि हळोहळ जूह हिलै।
सुरतांण तणा दळ साहण सब्बळ छौळ हीळोहळ[30] जांण छिलै।
फौजां गजडंबर लीण(।) लसक्कर दक्खण उत्तर आहूडिय[31]।
वहै बांण[32] विसन्नर[33] घिक्खियौ[34] धोमर ताळ भयंकर ता(व)डियं[35] ॥२॥

जुध वरणण

वह छूटै कैबर सोक[36] नलीसर सींघणि[37] संधर साचवियं[38]।
घुबि जांण[39] धराहर सालुळि सेहर मेघ महाभर माचवियं[40]।

---

१ आ. अमूभी। २ आ. छीक। ३ आ.इ. ज्यु। ४ आ. जोधपुरा। इ. जोधपुररा। ५ आ.इ. भुजे। ६ आ.इ. सहु। ७ इ. पाषर। ८ आ. सोहड। इ. सोहड। ९ अ.आ. सोह। १० अ.आ. पुकारे। ११ आ.इ. तुरंग। १२ आ. आरुढ। १३ इ. हूए। १४ आ.इ. जांणीयौ। १५ आ. ताम। १६ आ. अणमान। १७ आ.इ. दमाम। १८ आ.इ. तुर। १९ इ. गो। २० आ.इ. गुडीयं। २१ आ. उपडीयं। इ. ऊपडीयं। २२ आ.इ. तपति। २३ इ. नदी। २४ इ. उतरिअ। २५ इ. आध। २६ आ.इ. लागे। २७ आ. घुंसर। इ. घूसर। २८ इ. बाह। २९ आ.इ. मैगल। ३० अ.आ. हालोहळ। ३१ आ.इ. आहुडीयं। ३२ इ. वांण। ३३ आ. विसनर। इ. विसंनर। ३४ आ.इ. घिषीयौ। ३५ आ. तूडीयं। इ. त्राडीयं। ३६ इ. सौक। ३७ आ. सीधाणि। इ. सीघणि। ३८ आ.इ. साचवीयं। ३९ आ. जाणं। ४० आ.इ. माचवीयं।

ग्रोईड[1] ग्रथव्वण भाद्रव स्रावण कस्सस कोरण कंठळियं[2] ।
विपरीत वरस्सण कट्टक कोम्रण सेन महाघण सम्मळियं[3] ।।३।।

गैणागि गडी-ग्रड ढोल[4] निध्रस्सड[5] पावस ग्रींगड[6] छंट पडै ।
रोहराळ नदी नड दांमम्णि[7] दुज्जड[8] घम्म[9] बिनै घड लूंब लडै[10] ।
खग कूंते[11] खिव्वणि चम्मकि दांमणि[12] सैन कळाइणि[13] सुब्भटयं[14] ।
हुइ हाक हणे-हणि[15] मेघ महाघणि उत्तर दक्खण[16] ग्रारटयं ।।४।।

रत खाळ रळ-तळ पालर प्रग्घळ[17] होहूं हूकळ थट्ठ हुवै[18] ।
वळ-कंत विजूजळ[19] वीजक वद्दळ ढोल[20] त्रिमंगळ[21] वोम घुबै[22] ।
मुडिया[23] पिंड[24] मैंगळ[25] ग्रस्सि उच्छंछळ[26] रावत विम्मळ लडि पडियं[27] ।
दुजडा दूनै[28] दळ विढ्डै सब्बळ कंदळ[29] पेखै रवि खडियं[30] ।।५।।

ग्रसमांनक ग्रज्झर घार ग्रसम्मर तूंट तरोवर तुंग नरं ।
डहलाए दद्दर हींसै हैमर फूटि[31] सरोवर पाळ फरं ।
दळ भागा बिदुर[32] नीघक निड्डुर चूहड मच्छर धन्न हियं[33] ।
वूहां किरि वज्जर चौरंगि चक्कर गज्ज गिरव्वर सै गुडियं[34] ।।६।।

महाराजा गजसींघ री विजय

कवित्त

गुडे गज्ज पाहाड[35], टूंक[36] ढ़हिया[37] कूंभाथळ ।
वज्रपात करमाळ, गुडे तूटें कंबूं - सळ ।।
गयण ढोल गडगडे, सीह खळ ग्राफ(ळ)[38] भज्जै ।
सकति पत्र[39] सरभरै, सोणा नदियां[40] नड वज्जै ।

---

१ ग्रा. ग्रोहड । इ. ग्रोइड । २ ग्रा.इ. कंठलीयं । ३ ग्रा.इ. समलीयं । ४ ग्र. ढाल । ग्रा. टोल । ५ ग्रा. मिध्रसड । इ. निध्रस्ड । ६ ग्रा. त्तीगड । ७ ग्रा.इ. दाभणि । ८ ग्रा. दुजड । इ. दुजडि । ९ ग्रा. घमं । इ. घूम । १० ग्रा. लडे । इ. लूडे । ११ ग्रा. कूते । १२ ग्रा.इ. दामस्रि । १३ ग्रा. कलाईण । १४ ग्रा.इ. सुभटयं । १५ ग्रा. हणी-हणि । १६ ग्रा. दषण । इ. दिषण । १७ ग्रा प्रगल । १८ ग्रा.इ. हुवे । १९ इ. वीजूलल । २० ग्रा. ढाल । २१ ग्रा. तिमंगल । २२ ग्रा.इ. धुबे । २३ ग्रा.इ. मुड़ीया । २४ ग्रा.इ. पिंड । २५ ग्रा. मैंग । इ. मैंगल । २६ ग्रा. उच्छंचल । २७ ग्रा.इ. पडीयं । २८ ग्रा.इ. दुनै । २९ ग्रा. कंदण । ३० ग्रा.इ. षडीयं । ३१ ग्रा.इ. फुटि । ३२ इ. विदुर । ३३ इ. धनहीयं । ३४ ग्रा.इ. गुडीयं । ३५ ग्रा.इ. पहाडी । ३६ इ. टूक । ३७ ग्रा.इ. ढहीया । ३८ इ. ग्राभल । ३९ ग्रा. यंत्र । ४० ग्रा.इ. नदीयां ।

घड मोर नवी परि नाचियो[1], दक्खण फोजां आइयां।
"गजबंध" मेह बिपरीत गति[2], वूठौ सिरि[3] वैराइयां[4] ॥१॥

पडे[5] जोध जरदैत, पडे[6] बरहास[7] सपक्खर।
पडे[8] बांण एक लक्ख, सीस "जिहंगीर" लसक्कर॥

वीरगति प्राप्त प्रमुख वीरां री नामावळी

पडे[9] रीठ करमरां, पडे खग्गां पाहारां[10]।
पडे[11] मार दळ भार, पडे[12] फळ खंड अपारां॥
संग्रांम[13] पडे ग्रीधण समळ, रगत पूज[14] रैणा[15] चडे[16]।
"जसवंत" समोभ्रम खाटि जस, प्रिथीराज[17] भाटी पडै[18] ॥२॥

कियौ[19] जुद्ध भारत्थ, धमस धारां धमरोळे[20]।
घोमा रवि ढंकियौ[21], गयण पड बांणै-गोळे[22]।
भइ बहुतरि ऊमरा[23], खांन सत्तरि[24] थहरिया[25]।
तिण वेळा तुडि-तांण, विढण मारू बळ भरिया[26]।
काळ प्रळै पेखि[27] पेंतीस[28] कुळ, लोहि लडंतां लह बहे[29]।
पांच रूप[30] हुवौ[31] नव कोट पह, राउ अवर ओळे रहै[32] ॥३॥

बादसाह नूं खांन खांना रौ जुधरी विजय रो पत्र। महाराजा गजसींघ ने दळथंभण रो पदवी मिळणी

साह दिस्स मेलिया[33], खांन खांनां लिख कागळ।
ऐ अजीत रट्ठवड, किता[34] जे जीता कंदळ॥
सबळा सत्र संघरे, छळे सबळे पडि-गिरिया[35]।
जेथ भिडे[36] दळि पडे, तेथ आडा भुज धरिया[37]॥

१ अ.आ. नचीया। २ आ.इ. गत। ३ इ. सि। ४ इ. वैराईयां। ५ अ. पडै। ६ अ. पडै। ७ आ. परहास। ८ अ. पडै। ६ अ. पडै। १० आ.इ. पहारां। ११ अ. पडै। १२ अ.आ. पडै। १३ आ.इ. संग्राम। १४ आ. पूजत। १५ अ.आ. रेणौ। १६ अ. चडै। १७ अ. प्रीथीराज। १८ अ. पडै। १६ आ.इ. कियौ। २० आ.इ. धमरोले। २१ आ.इ. ढंकीयौ। २२ आ.इ. बांणे-गोले। २३ आ उमरा। २४ आ. सतरि। इ. संतरि। २५ आ.इ. थरहरीया। २६ आ.इ. भरीया। २७ इ. पेषियै। २८ आ.इ. पैंतीस। २६ अ. आ. बहै। ३० अ.आ. रुप। ३१ आ.इ. हूवौ। ३२ आ. रहै। ३३ आ.इ. मेलीया। ३४ आ.इ. कितइ। ३५ आ.इ. पडिगीरिया। ३६ आ. भीडे। इ. भीड। ३७ आ.इ. धरीया।

कळि मूळ निभैमण, कळिमथण, ऊभौ[1] सिरि "अंब्रर" डहै।
पतिसाह परीछै ए प्रसिध, दळथभंण राजा कहै ॥४॥

दखण में फ़ेर दरोल

साहजादा खूरम ने सेनापति बणाय भेजणौ

तांम साह सनमुक्ख, खुरम ऊभौ[2] सुरितांणह।
दे बीडौ[3] सिर दखिण, हुकम कीयौ फुरमांणह॥
तूं[4] सरहद्दां[5] लियै[6], तुंहिज[7] सरहद्दां लाइक।
तूं[8] सरहद्दां धणी, तुंहिज[9] सरहद्दां नाइक[10]॥
खूंदालम जपै तूं[11] खुरम, सुकरि[12] खग्ग संभाहियौ[13]।
भर भार भळावैं भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियौ[14] ॥५॥

बादसाह सूं खुरम री सेर खां री मांग करणी

तब बोलियौ[15] खुरम्म, अरज हजरत्त सुणीजै।
एक कौल इक[16] जाब[17], कहूं[18] जो[19] कहियौ[20] कीजै॥
हम खिजमत कबूल, हम्म फरजन्न तुमारै।
हम[21] सिरि[22] ऊपरि रजा, हुकम हुम कियौ[23] आरै॥
साहिजादौ जपै साह सूं, मन मांही[24] द्रोहै मतै।
सुरतांण "सेर" अप्पौ मुझै, करूं मार दक्खण फतै ॥६॥

गाथा

काळे कोक न छळियं[25], अहि मांनव देव[26] दांणवौ।
दिलेस बुध नासं, आपे खुरमि "सेर" सुरतांणं॥१॥
अहि गरळ काळ कूटं, हळा-हळं[27] रोपियं बियं[28]।
अंकूर नैव पतं फळ, लगसी कोइ[29] निरवांणं॥२॥

---

१ आ. उभौ। इ. उभो। २ आ.इ. उभौ। ३ अ. बीडो। इ. बीडो। ४ आ.इ. तुं। ५ आ. सरहवां। ६ आ.इ. लीयै। ७ आ.इ. तुहीज। ८ आ.इ. तु। ९ आ.इ. तुइज। १० इ. नाईक। ११ आ.इ. तु। १२ आ. भुकरी। इ. तुकरि। १३ आ.इ. संभाहीयौ। १४ इ. पडिगाहीयो। १५ आ.इ. बोलीयौ। १६ आ.इ. एक। १७ आ. जाव। १८ आ.इ. कहु। १९ इ. जौ। २० आ.इ. कहीयौ। २१ आ. हंम। २२ आ.इ. सिर। २३ आ.इ. कीयौ। २४ आ. माही। इ. मांहै। २५ इ. छलीयं। २६ आ. दैंग। २७ आ.इ. हालाहलं। २८ आ.इ. बीयं। २९ आ.इ. कोई। ३० आ.इ. नीरबांण।

सेना रौ वरणण

छंद बिग्रखरी

खूंदालम[1] खुरम पडेगरि । दीनौ बीडौ दक्खण ऊपरि[2] ।
लाख करोड माल खज्जीना । है गै मुलक मया करि दीना ।।१।।

साथे हिंदू[3] मुस्सलमांणं । हिंदुसथांन[4] खिडे खुरसांणं ।
मुळ गळ[5] ऊज्बकि खुरसांणी । वोलै जेम विहंगम बांणी ।।२।।

दुइ दुइ तरकुस[6] पासि[7] जुवांणां[8] । दुइ दुइ[9] टंक अठार कबांणां[10] ।
चढिया[11] घोडै[12] मीर बहादर । पावां लग रुळदी···पाखर ।।३।।

हूवौ[13] टांमक घाव नगारै[14] । कसमोराह खडे इल-कारै[15] ।
दक्खण ऊपरि[16] मंडे डांणा[17] । खुरम किया[18] दर-कूच[19] पयांणा[20] ।।४।।

चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै । हेमाचळ परबत किरि हल्लै ।
देम दगग्गे सेन रवद्दं । किरि ऊलटिया[21] सात समद्दं ।।५।।

गरडे गज्ज वहंतां दांणा । अभर हुवा घणहर अहिनांणा ।
गै गुडिया[22] मद - गंध गडाडं । कुळ अठंक[23] सर जीत पहाडं ।।६।।

दांतूसळ दीपै घड दंती । सांमा घटा जांणे बगपंती ।
हींडुळता[24] गै जूह[25] हमल्ळां । ढलकै काळी पीळी ढल्लां ।।७।।

परबत - माळ क चल्लै पाए । धजां पताखां अंबर छाए ।
फौजां मुहरि मलप्पै मैंगळ । पेरे[26] जांणि[27] पवन्नै बादळ ।।८।।

खिडिया[28] खोहण खांन खंधारं । भाजै वन्न अढारह भारं ।
दळ पाए ऊपडिया[29] डंबर । ओधूळियौ[30] गरद्दो[31] अंबर ।।९।।

---

१ आ. पुंदालम । इ. षुदालम । २ आ.इ. उपरि । ३ आ. हीदुं । इ. हींदु । ४ आ. हीदुसथान । इ. हींदुसथांन । ५ इ. मुगलल । ६ आ.इ. तरकस । ७ इ. पास । ८ इ. जुवाणां । ९ इ. दुई दुई । १० आ. अटार । ११ आ.इ. चडाया । १२ आ.इ. घोडे । १३ आ.इ हुवौ । १४ आ.इ. नगारे । १५ इ. ईल-कारे । १६ आ.इ. उपरि । १७ आ.इ. डाणां । १८ आ इ. कीया । १९ आ.इ. दर-कुच । २० आ. पयाणा । इ. पयांणां । २१ आ.इ. उलटीया । २२ आ.इ. गुडीया । २३ आ.इ. अठक । २४ आ.इ. हीडुलता । २५ इ. जह । २६ आ.इ. परे । २७ आ.इ. जांण । २८ आ.इ. विडीया । २८ आ.इ. उपडीया । २९ आ. ओघुलीयो । इ. ओधूलीयो । ३० आ. गरदी । इ. गरदां ।

पुड वसुधा वरहासां[1] पाए । थरहर थाळ तणी परि थाए ।
पार पखै[2] असवार पाइदळ[3] । पंख समारिक चल्ले मेहळ ॥१०॥

कूदंता वहता केकांणां[4] । रत्ता फीण झरै ऐलांणां[5] ।
पवंग[6] पगां तळि पत्थर फोडे[7] । धम धमके जम उपद्रव घोडे ॥११॥

उछळते खैंगे असराळे । खांना खोण पडे खुरताळे ।
थोके थोके[8] घाट थिडंबं[9] । दौडे अैसि ऊडंति[10] दिडंबं ॥१२॥

ऊपडि[11] फौज घटा आडंबर । रजधूळ[12] हि छायौ रातंबर ।
चडिया[13] धडे धडालां चंचळ । वाजै[14] नास वहै वेगागळ ॥१३॥

वांक मुहा वाजिद विवांणां[15] । दांढां[16] पीसै रोस लगांणां[17] ।
धरती धमस तुरां धमधमी । वाढे[18] साढ[19] सेट सीरम्मी ॥१४॥

सावज सीह मरण संभाही[20] । मूंझै म्रिग्ग फवज्जां मांही ।
लग्गा वहण असंख्यां लसकर । तै धूजिया तिणै धरणीधर ॥१५॥

खुरम सताब खडे अस तामं । बारह बारह कोस मुकांमं ।
खुरम खवा असमांन डहंतौ । मांडव[21] आयौ मार कहंतो[22] ॥१६॥

वेगो आयौ न करी वेरू । खांडे करि सूं दक्खण खेरू ।
रत्ता[23] मुग्गळ नीली टोपी । ततकाळे नरबद्दा लोपी ॥१७॥

दक्खणियां[24] घर वाहण[25] आदौ । व्रांहन पुर[26] आयौ साहिजादौ[27] ।
देख खुरम दखणी दळ भग्गे । किरि दीठौ पंखराऊ[28] पनग्गे ॥१८॥

दखणी दळ रो पलायन

कवित्त

पन्नंगे पेखियौ[29], जांणि पंखराउ[30] प्रघट्टौ ।
किरि दीणै कुंजरां[31], सीह सादूल[32] निहट्टौ ॥

---

१ आ. बरहासां । २ आ.इ. पषे । ३ इ. पाईदल । ४ आ. केकाणं । इ. केकांण । ५ इ. अैलाणां । ६ आ.इ पवग । ७ इ. घोडे । ८ इ. थोका थोक । ९ आ. थिडबं । १० आ.इ. उडंति । ११ आ.इ. उपडि । १२ आ.इ. रज-धुल । १३ आ.इ. चडीया । १४ इ. वावै । १५ आ. वेवांणां । इ. देवाणं । १६ आ. दांटां । १७ आ. लागाणं । इ. लगाणं । १८ आ.इ. वाजे । १९ इ. साट । २० इ. सभांही । २१ आ. माडव । २२ आ. कहतो । २३ इ. राता । २४ आ.इ. दषणीयां । २५ इ. आयो । २६ आ.इ. ब्रांहन पुर । २७ आ.इ. शाहिजादो । २८ आ. पंषराउ । २९ आ.इ. पेषीयो । ३० इ. पंषराऊ । ३१ इ. कूजरां । ३२ इ. सादुल ।

अरक पेखि किर उदौ, मिटे तम[1] तारामंडळ ।
गयौ सीत भैभीत, जांणि[2] पेखे जाळंनळ ।।

नरसिंघ वीर आराधियै[3], भूत प्रेत भाजंत जिम ।
सुरतांण खुरम संपेखियै[4], गा दखणी[5] दहवाट तिम ।।१।।

व्रांहन-पुर[6] निज तखत, आंवि बैठौ[7] साहिजादौ ।
सरहद्दां सुरतांण, आप बळि आप मुरादौ ।।
राजा राठौडवै, मेर माझी मुंह आगळ ।
पहरावैं[8] पडगरै[9], भार दीनौ भुज्जांबळ ।।

ताबीन दीन हिंदु[10] तुरक, अउब पेख आतम सकति ।
दळथंभ दळां विच, थप्पियौ[11] जेत खंभ सेनाधपति[12] ।।२।।

जुध में विजय प्राप्त, बादसाह रौ खुस होणौ, महाराजा गजसींघ नूं पंच-हजारी रौ पद तथा जाळोर, सांचोर रा परगना मिळणा

महण-रंभ मत्थियौ[13], तेग तुडि दक्खण मारी ।
पाति साह[14] हुइ प्रसन, हुकम किय[15] पंच हजारी ।।
मंडोवर नर-समंद, सीस मनसप वध्धारे ।
दे नग्गारा तोग, तुरी साकति सिगारे[16] ।।

फुरमास सुपारसि मोकळी, दिढ[17] राजा दळथंभ तूं[18] ।
जागीर दीध जोगणि-पुरै, कणिया-गिर[19] सांचौर सूं[20] ।।३।।

सेना रौ बरणण

वाळण दक्खण वसुह, कटक बंध चढ़िया[21] कोअण ।
भेरी पंच सद्द[22] तांम[23], ...सुणियै[24] लग जोजण ।।

---

१ आ.इ. तब । २ आ. जाण । ३ आ.इ. आराधीयै । ४ आ.इ. संपेषीयै । ५ इ. दिषणी । ६ आ. व्राम्हनपुर । इ. व्राहनपुर । ७ इ. वैठौ । ८ आ. पेहरावै । इ. पंहरावै । ९ आ.इ. पडगरे । १० आ.इ. हीदू । ११ आ.इ. थपीयौ । १२ आ. सानाधपति । इ. सेनाधिपति । १३ आ.इ. मथीयौ । १४ इ. पतसाह । १५ आ.इ. कीध । १६ आ. सिधारे । १७ आ. दीढ । १८ आ.इ. तु । १९ आ.इ. कणीया-गिरि । २० इ. सुं । २१ आ. चढीया । इ. चडीया । २२ आ. पंच सब्द । इ. पंच सबद । २३ अ. नांम । २४ आ.इ. सुणीयै ।

हिंदू[1] मुसळमांन, खांन सुरतांण[2] चइन्ना।
हळवळि मैंगळ[3] हुए, सुजळ किरि वादळ भीना ॥

चतुरंग पंच फौजां अणी, भूल न जाये[4] झल्लिया[5]।
नृप[6] सहस नेत नव साहसो, दळ बारह घण चल्लिया[7] ॥४॥

हैं - खुर रज ऊछळी, रजी लग्गी रवि - मंडळ।
चडी सेस सिरहत्थ, पुहवि[8] गाहट पग्गां तळ[9] ॥
कमठ भार कसमस्स, दाढ़ वाराह खडक्के।
मंडळ मेर मेखळा, घमस[10] घूळी[11] रवि[12] ढक्के[13] ॥
सम्मूह सेन संख्या पखै, जाइ लसक्कर जूजुए[14]।
पतिसाह दळां दीनी पसर, गिरि झंगर पद्धर हुए[15] ॥

छंद रूपकगति[16]

"गजबंध सुणे आवंता। दखणी दळ दूर[17] पहूंता[18]।
मलिका पुर फेर दूवाई[19]। नव कोटे नौबत्त वजाई ॥१॥

जाई रोहणी खेडा[20] लीया। अधरती घाटां लंघीया।
पह देवल गा पच्धारे। दळ थंभ दमांम दिवारे ॥२॥

"गजबंधी" सीह विरत्ता। दखणी दळ भाजि विगूता।
बालापुर[21] महिक्कर छोडे। दखणी दळ भागा होडे ॥३॥

घोपट्टं लीध धरत्ती। जिहंगीरे[22] आंण वरत्ती।
वीरातन[23] वागां जोडे। चांपी भुइ चढ़ियो[24] घोडे ॥४॥

"गजबंधी" नाहर गज्जे। दखणी गा कुंजर भज्जे।
"गजबंध" निरोहे[25] पूगा[26]। मुख बारह सूरज ऊगा[27] ॥५॥

---

१ आ. हींदु। इ. हीदु। २ आ. सुरताण। ३ आ.इ. मैंगल। ४ आ.इ. जायं। ५ आ.इ. झलीया। ६ इ. नृप। ७ आ.इ. चलीया। ८ इ. पुहव। ९ इ. तलि। १० इ. घुमस। ११ इ. धुली। १२ इ. रविं। १३ आ.इ. ढंके। १४ आ.इ. जूजूए। १५ इ. हूए। १६ इ. रूपक सकति। १७ इ. दुर। १८ आ.इ. पहुता। १९ इ. दुवाई। २० इ. रोहिण बेडा। २१ आ.इ. बालापुर। २२ आ.इ. जिहगीर। २३ आ.इ. वीरांतन। २४ आ.इ. चढीयो। इ. चढीयो। २५ इ. नीरोहे। २६ इ. पगा। २७ अ.इ. उगा।

कमधज्ज उदोतं कवट्टं । किरि कांठळ[1] भाणं प्रघट्टं[2] ।
दोळा दळ दिल्ली वाळा । पंच रूप करि प्रब्बत-माळा[3] ॥६॥
सांमंद विरोळ सकज्जै । धमचक्क किया कमधज्जे ।

खिड़की गढ़ ध्वंस

सुरतांणतण दळ सत्थे । खडि आया खिडकीमत्थे ॥७॥
"गजबंध"[4] कमध्ध निहट्टा । तब साह निवाज पलट्टा ।
दखणी "गजबंध" विडारे । गो "अंबर" डंबर हारे ॥८॥
दखणी दहवाटां कीयां । दौलत्ताबाद डरीयां ।
गज थाटां कीध गाहट्टां । ढंढोळे हाट चौहट्टां ॥९॥
मंड मैडी चित्तर-साळा[5] । गढ ढ़ाहै गौख अटाळा ।
कमठांणा पौळ पगारं । किय[6] कोट सैलोट समारं ॥१०॥
घमळा-हर[7] धोम धिखाया । किरि लाखा जमहरि[8] लाया ।
पटसाळा मिंदर पाडे । जड बंद्धा सहर उजाडे[9] ॥११॥
गढ़ भंजे भीत किमाडं । उत्थांमै जडां उपाडं ।
सात खणा महल मंडाणं । किय[10] ढाहि पंखांण पखांणं ॥१२॥
पाडे किया[11] पहट[12] मैदानं । दरबार दिवांणह-खांनं[13] ।
उध्धै पुडि दखण उपाडे । खंडे मीर खपाड[14] पछाडे[15] ॥१३॥
गुळ चावळ गोहूं[16] पाया । तब लूटि लसक्कर धाया ।
"गजबंधी" आपो[17] पांणां । वरतावण दक्खण आंणां ॥१४॥

ध्वस्त नगर रो बरणण

कवित्त

जेथि[18] दीप दीपता, तेथि[19] प्रजळै हुत्तासण[20] ।
जेथि हसति गूंजता[21], तेथि[22] गुंजै[23] पंचाइण[24] ॥

---

१ आ.इ. कांठलि । २ इ. प्रगटे । ३ इ. प्रबत-माला । ४ इ. गजबंधी । ५ आ.इ. चित्र-साला । ६ आ.इ. कीय । ७ इ. घमल-हरे । ८ आ.इ. जमहर । ९ आ.इ. उपाडे । १० आ.इ. कीय । ११, आ. कीय । इ. कीयां । १२ इ. पह । १३ आ.इ. दीवाणह-षानं । १४ इ. षषाडं । १५ इ. पछाडं । १६ आ.इ. गोहु । १७ इ. आयो । १८ आ.इ. जेथ । १९ आ.इ. तेथ । २० आ. हुतासणं । इ. हुतासण । २१ आ.इ. गुंजता । २२ इ. तेथ । २३ इ. गुंजै । २४ आ. पचोइयां ।

जेथि[1] रंग-आंमास, तेथि क्रीडंति[2] कुरंगह ।
जेथि नृपति[3] बैसता, तेथि उड्डंत[4] विहंगह ।।
त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भुम्रण तेथि भरिया[5] भसम ।
खेडपति कोध खिडकी-तखत, वसुह रीत विपरीत इम ।।१।।

जडामूळ[6] उप्पाडि, भांजि खिडकी-गढ़ दक्खण[7] ।
हबसी दळ हेडवे, मारि[8] लग मुग्गी-पट्टण ।।
खांन देस मरहट्ट, बराड मुलक वस[9] कीया वंका ।
सेत-बंध रांमेस, भंग पडियौ[10] गढ़[11] लंका ।।
अहमदा नगर हूआ उभै, कटकबंध काबिल[12] तणा ।
गढ लियण[13] सींह[14] गुंज्जारियौ[15], आवि खडग्गह पूरणा ।।२।।

विग्रह चाळा वधे, खसे खुरसांणह धायौ ।
दखण[16] दमंगळ[17] करे, सरद साहिजादौ[18] आयौ ।।
सबळ भीड संभळी, भूंझ ग्रहियौ[19] भूंझारे[20] ।
सांम कांम[21] हणमंत[22], कमध[23] कुळ मग संभारे ।।
मंडळीक कळोधर मारकौ, ऊससि लग्गौ[24] अंबहर ।
आइयौ[25] तांम[26] असि ऊलके[27], रांम भीची[28] जिम राजघर[29] ।।३।।

दळ लंका[30] दखणाधि, रूप माया राकस्सी[31] ।
बहुतरि[32] सत्तरि[33] चडे, खांन ऊंबरा[34] हबस्सी ।।
वाज़ पंख सीचांण, वाज विव्वांण उडाया ।
पवन आतुर[35] पेरियै[36], जळद जांणे किरि धाया ।।

---

१ अ. जेय । इ. जैंथि । २ आ. क्रीडती । इ. क्रिडंति । ३ आ. निृपति । इ, निृपत । ४ आ.इ. उडंति । ५ आ.इ. भरीया । ६ इ. जडामूंल । ७ इ. दिषण । ८ अ. मगरि । ९ आ.इ. वसि । १० आ.इ. पडीया । ११ इ. लग । १२ इ. काबिलौ । १३ आं इ. लीयण । १४ इ. सीह । १५ आ.इ. गुजारीयौ । १६ इ. दषणि । १७ आ. दमगळ । १८ आ. साहिजादो । इ. साहजादौ । १९ आ. ग्रहीयौ । इ. ग्रहीया । २० आ.इ. भूझारे । २१ इ. काम । २२ आ. हंणमंत । २३ आ. कमंध । २४ इ. लागौ । २५ आ.इ. आवीयौ । २६ आ.इ. ताम २७ आ. उलके । इ. उलंके । २८ आ.इ. भीच । २९ इ. राघर । ३० लंक । ३१ इ. राकरसी । २३ इ. बहितर । ३३ आ. सर्तरि । इ. सितर । ३४ आ. उबरा । इ. उमरा । ३५ इ. आत्तुर । ३६ आ. पेरीयौ । इ. पेरीयां ।

असमांण बांण आचे लिया[1], सेन सडंबर सालळै ।
कोटांण[2] कोटि कोग्रण कटक, आया दळ वद्दळ मिळै ॥४॥

दखणी दळ री फेर हल्लो

दूहा

मिळ दळ वद्दळ आविया[3], दखणी घस लागाह[4] ।
जरा[5] सजे[6] तुरियां[7] चढे[8], भागा[9] अणभागाह ॥१॥

दोमज[10] छळि बळ दक्खण[11], खीटावण खुरसांण ।
दीनौ[12] आवे[13] दखणिऐ[14], कटके कोस मल्हांण[15] ॥२॥

कटके काछी[16] तणे, "गाजीसाह" नरिंद ।
बाधे नेत विराजियौ[17], भौडक बाधै विंद ॥३॥

असती[18] नरपति गजपती[19], ओळोभे[20] त्रिउ राउ[21] ।
कहौ[22] हमीरां[23] हिंदुवां[24] करिसौ[25] केहौ[26] दाउ[27] ॥४॥

"गजण" गरज्जै बोलियौ[28], करि ग्रहियै[29] केवांण ।
भलां भिडंतां आगळी, बाहुडियां[30] पछवांण[31] ॥५॥

सेना री कूच

छंद विराज

हुओ[32] भेर घावं । निसांणं निहावं ।
सहनाइ[33] सद्दं । नफेरी[34] ननद्दं ॥१॥

---

१. आ. लीया । इ. लियां । २ आ. कोटाण । इ. कोटांन । ३ इ. आवीया । ४ आ.इ. लगाह । ५ आ. जारां । ६ आ. साजे । इ. साजे । ७ आ. तुरीए । इ. तुरीये ८ आ.इ. चडै । ९ इ. भागाइ । १० आ.इ. दोभजि । ११ इ. दषवण । १२ इ. दीजो । १३ अ. आवै । १४ इ. दषणीए । १५ अ. मल्हाण । इ. मैलाण । १६ आ. काबि । काछिवै । १७ आ.इ. विराजीयौ । १८ इ. असपति । १९ अ. गजपति । २० आ आलोभे । इ. आलाजे । २१ आ. त्रिउ राऊ । इ. त्रिहू राहू । २२ आ. कहो । इ. कहै । २३ आ. अमीरां । २४ आ. हींदुवां । इ. हीदूवां । २५ आ.इ. करिसा । २६ इ. केहो । २७ आ.इ. दाऊ । २८ आ.इ. बोलीयो । २९ आ.इ. ग्रहीयै । ३० आ.इ. बाहुडीयां । ३१ इ. षछ-वांण । ३२ इ. हुवो । ३३ आ.इ. निसांण । ३४ आ.इ. सहनाई । ३५ आ.इ. निफेरी ।

पहं खेड पत्ती[१] । चडे चक्रवत्ती[२] ।
खडे खंग खुद्रं । कियौ[३] रूप रुद्रं ॥२॥

समूहं[४] सुभट्टं । गुडे गज्ज थट्टं ।
दळाकार दौडं । तुरां वाज[५] पौडं ॥३॥

वसू[६] घाव जाए । रजी भांण छाए ।
क्रमे कोम[७] सेनं । मिळे रज्जमेनं ॥४॥

धरत्त धमस्सं । भ्रांकपै भ्ररस्सं ।
ताजव्वै तोखारं । खिडै जांणि[८] तारं ॥५॥

वहै वाज लीणं । झरै[९] मुक्खि फीणं ।
मवैं मग्ग मोणं । भ्रमूझत्ता भ्रोण[१०] ॥६॥

हिले हेम थट्टं । फिरे वोम फट्टं ।
भाद्रव्वं भ्रासोजं[११] । घटा जांणि फौजं ॥७॥

सिरे उतराधं[१२] । खडे दक्खणाधं ।
थिडे थट्टं काळा । किरि[१३]मेघ[१४]माळा[१५] ॥८॥

भडां दाखिरोसं[१६] । खडे खट्ट कोसं ।
भ्रांणी गज्ज साहं । रचे रिम्म राहं ॥९॥

जुध वरणण

भ्रातस्सं भ्रपारं । मिळे भ्रंधकारं ।
हुबे[१७] बांणि[१८] होमं । धुबे झाळि धोमं[१९] ॥१०॥

हयन्नाळ गोळा । पडै[२०] जांणि[२१] भ्रोळा ।
करग्गे[२२] केवांणं[२३] । निमज्जै[२४] जुवांणं[२५] ॥११॥

नाराजे कोमंडै । करे तीर उड्डै ।
धनंरवे धौकारं । भालोडे भंभारं ॥१२॥

---

१ भ्रा. षेडयती । इ. षेडपति । २ भ्रा.इ. चक्रवती । ३ भ्रा.इ. कीयो । ४ इ. समुहं । ५ इ. वाजि । ६ भ्रा.इ. वसु । ७ इ. कामसेनं ८ भ्रा. जाणि । ९ इ. झरे । १० इ. भ्राणं । ११ भ्रा. भ्रासौजं । १२ भ्र. उतरधां । १३ इ. किरे । १४ भ्रा. माघ । १५ भ्र.भ्रा. काळा । १६ भ्रा.इ. दषिरोसं । १७ इ. हुषे । १८ इ. बाण । १९ इ. धामं । २० भ्रा.इ. पडे । २१ भ्रा.इ. जांण । २२ भ्र. करगे । इ. करंगे । २३ इ. कबाणं । २४ भ्रा. निभजे । इ. निवजै । २५ इ. जूवाणं ।

सरै[1] सोक एहं । मिळै जांण मेहं ।
मनै उद्दमद्दं । किलक्कै नारद्दं ॥१३॥

वीरम्मै वैताळ[2] । खिलै खेतपाळं ।
कटक्कां कसस्से । सुभट्टं सनस्से ॥१४॥

केवांणां[3] सकज्जां[4] । किया[5] काढ़ि धज्जां ।
रिणं तूर[6] वागा । खिवै[7] खाग नागा ॥१५॥

महा जुध्ध मत्तं । इसौ आवरत्तं ।
रूके उड्डि रीठं । गुडे जोध ग्रीठं[8] ॥१६॥

लडै लोह हत्थं । गहै गूथ-बत्थं[9] ।
पडै[10] सोस पांणं[11] । छणक्कै केवांणं[12] ॥१७॥

निहस्सै निराटं । करम्माळ[13] झाटं[14] ।
हुए[15] हुब्ब[16] सोरं । घणं[17] घाइ घोरं[18] ॥१८॥

जग-ज्जेठ जूटै[19] । फरी कूंत फूटै[20] ।
कटक्के[21] कराळं[22] । जुग्रा[23] जोण-साळं ॥१९॥

अवाजै[24] औगाढं । तेगां जम्मदाढ़ं[25] ।
है-थाटे हिलोळं । धारा धम्मरोळं[26] ॥२०॥

मिळै ताळ त्रातौ । धका-धोम[27] मातौ ।
हिलै रत्तं खाळं । नदी जांण नाळं ॥२१॥

मुहे रूक माडं । हुए[28] चूक[29] हाडं ।
भडां कंध भाजै । घडां धार वाजै ॥२२॥

भिडै[30] भींच[31] भल्लं । ढहै ढींच-ढल्ळं[32]
भूमे ले पयाळा । करे मत्त वाळा ॥२३॥

---

१ आ.इ. सरे । २ आ. बेताल । इ. वंताले । ३ आ. केपाणं । ४ आ. सकजां । इ. सकजा । ५ आ.इ. कीया । ६ इ. तुर । ७ आ.इ. षिवै । ८ अ. गीठं । ९ आ.इ. गुथ बथं । १० इ. पडे । ११ इ. पाणं । १२ इ. केवाणं । १३ इ. करंमाल । १४ इ. फाटं । १५ आ.इ. हुऐ । १६ इ. हूव । १७ इ. घण । १८ इ. घोरं । १९ आ. जूटे । २० इ. फुटै । २१ इ. कूटके । २२ इ. कडालं । २३ आ.इ. जुम्रा । २४ आ.इ. आवाजै । २५ इ. जंमदाढं । २६ आ. धमरालं । २७ [illegible] धका-धेम । २८ इ. हुऐ । २९ इ. चुक । ३० आ. भिडे । ३१ आ.इ. भीच । ३२ आ.इ. हींच ढलं ।

करै[1] कील कोवं[2] । जुडै[3] जुद्ध[4] जोघं ।
उरे उब्भ - राडं । झटक्के झराडं ॥२४॥

वहै सम्म सेरं । झरै झट्ट झेरं[5] ।
कटै आच ओणं । रडै रत्त सोणं ॥२५॥

तुरां तूठ[6] तुंडं । सुंडाळा[7] भुसंडं[8] ।
भडां भोम जाए । गडत्थल्ल[9] खाए ॥२६॥

घडं[10] रत बूडै । भडां हंस ऊडै ।
खिवै खग्ग धारां । गुडै गज्ज भारां ॥२७॥

जुटे[11] जम्म जाळं । वपै विक्कराळं ।
बाहूडंड[12] पिंडं । बांणासै[13] विखंडं ॥२८॥

पडे[14] पूर लोहं । महा जुद्ध मोहं[15] ।
घोरं धार तम्मं । सवित्ता विभ्रम्मं[16] ॥२९॥

वदै तेण वारं । देवत्ता जैकारं ।
ढोवै रंभ रत्थं । बरै वींद तत्थं ॥३०॥

त्रिपत्ता तियारं । हुए मंसहारं[17] ।
कमाळी कपाळं । रचे[18] रूंड - माळं ॥३१॥

महाराजा गजसींघ री विजय

कवित्त

रुंड[19] मुंड सै खंड, गुडे गज मांणक डंडह ।
अगनि बांण आरिक्ख, वीज विरखा[20] व्रहमंडह[21] ॥
बांध नेत रिण खेत, सैद अल्ली मेंहमूंदह[22] ।
हैफखांन संभ्रमी[23], पडै पोरस्स मयंदह ॥

---

१ आ.इ. करे । २ इ. कावं । ३ आ.इ. जुडे । ४ इ. जुधि । ५ अ. फेर । ६ आ.इ. तुट । ७ आ.इ. सुडाला । ८ आ. आसंडं । इ. असुडं । ९ आ. गडूथल । इ. गुडथल । १० अ. घडं । ११ आ.इ. जूटै । १२ इ. बाहुडंड । १३ आ.इ. बांणांसे । १४ आ.इ. पडे । १५ आ. महं । १६ आ. विभ्रमं । इ. विभ्रंमं । १७ इ. मांसहारं । १८ आ.इ. रचे । १९ इ. रूंड । २० इ. वरीषा । २१ वृहमंडह । इ. व्रह्मंडह । २२ इ. महमदह । २३ सभ्रमी ।

उपडी वाग "अरजण" हरी, सूर[1] धीर सत आगळै।
तिण दीह रहै "डूंगर"[2] तणौ[3], "राघव" भाटी रिण-खळै ॥१॥

नेजालै[4] नांमिया[5], मारि[6] भाले चोधारै[7]।
चूरि थाट चापडै, सैद पडिया[8] चडि सारै[9] ॥
माथै मंडोवरां, जुद्ध जुवटौ[10] मंडांणौ।
लई वाग ग्रह खाग, लाख घोडां[11] उज्जाणौ ॥

"गजसिंघ" कियौ[12] गोधम वडौ, दळ भागौ दखणाघरौ।
तिण वार हुऔ[13] महि आगळी, "राजसिंघ" "खेमाळ"रौ ॥२॥

हबसी दळ हाकियौ[14], मार[15] कमधे कळि-मूळे[16]।
गया छाड[17] रिण-भूम[18], जांणि[19] पंखी हुइ[20] ढल्लै ॥
अगनि बांण वांहति, खिरै असमांन के तारे।
मिणै जांणि व्रह्मंड[21], धोम डोरी पस्सारे ॥

दळ-थंभ हुऔ[22] पछिवांण दळ, आप पराक्रम अन्न-भै।
कमधज्ज तांम[23] संग्रांम किय[24], जुडे जांम[25] एकह उभै ॥३॥

प्रिथम मेक संग्रांम[26], कियौ[27] महिकर आथांणह[28]।
बियो[29] कीध रिणजंग, दिखण कटके मेल्हांणह[30] ॥
तियौ[31] कीध रिणताळ, बहसि बाला-पुर आए।
चौथौ ब्राह्न-पुरे[32], जुद्ध जीतौ घण घाए[33] ॥

"गज साह" भिडे पतिसाह छळि, हेठि हेठि अविणासु हुअ[34]।
पंचमै जुद्ध दक्खण फत्तं[35], तै की[36] "सूरजमाल" सुअ[37] ॥४॥

---

१ आ.इ. सुर। २ इ. डुंगर। ३ इ. तणो। ४ आ.इ. नेजालां। ५ आ. नांमीयां। इ. नांमीया। ६ इ. भार। ७ इ. चोधारे। ८ इ. पडीया। ९ इ. सारं। १० आ. जुवटो। ११ आ. थौडां। १२ आ.इ. कीयो। १३ आ.इ. हुओ। १४ आ.इ. हाकीयो। १५ इ. मारि। १६ इ. कल-मूले। १७ इ. छाडि। १८ अ. रिण-भ्रम। १९ आ.इ. जांण। २० आ. हुई। २१ आ. ब्रह्मंड। इ. व्रह्मंड। २२ आ. हूओ। इ. हुओ। २३ आ.इ. ताम। २४ आ.इ. कीय। २५ आ.इ. जाम। २६ इ. संग्राम। २७ आ. कियौ। इ. कीयो। २८ आ.इ. आथाणेह। २९ आ. वियौ। इ. बियो। ३० इ. मेहलांण। ३१ आ. तीयो। इ. त्रीयो। ३२ आ.इ. ब्राहनपुर। ३३ इ. घाऐ। ३४ इ. हूअ। ३५ आ.इ. फते। ३६ अ. आ. कीध। ३७ आ.इ. सूअ।

दूहा

सिंघ फतै करि गाजियो[1], दखणी भांज दुभल्ल।
पाडि पमायो सू पछे[2], सोई सच्चो मल्ल ॥१॥

महाराजा गजसींघ री विजय

केवांणे जीते कळह[3], घुरते नीसांणेह।
मेल्हांणे[4] मंडोवरो, आयो आपांणेह ॥२॥

जोधपुरे जुध जीपतै, बळ दक्खै बांणास[5]।
दक्खणिये[6] पळ खूटते[7], हूआ[8] बारह मास ॥३॥

"अंबर" आंपांणी[9] छभा, कीधो[10] बैसि विचार।
पौरस[11] पार न लब्भ[12] ही, उत्तर[13] पंथ अपार ॥४॥

दखणाधे उतराधसूं[14], करि ऋांमत्ति[15] उखेळ।
सीले[16] कौले[17] कागळ, सगळां कीधो[18] मेळ ॥५॥

सलै[19] हुई[20] सुख ऊपनौ[21], भागी दळां दुवाळि।
सीमां नोमां गढ मुलक, सगळे लिया[22] संभाळि ॥६॥

जे[23] थांणे भड ऊठिया[24], बैठा ते थांणेह[25]।
सोगठी सतरंज जिम, आपौ आंपांणेह[26] ॥७॥

राजा "गाजी" सारिखा, से वड्डा सिरदार।
दखणी मार मनाविया[27], मार कहीजै सार ॥८॥

कवित्त

मार सार मारकां...[28] इळा...[29] हूवै[30] आंपांणी।
मुहि खग्गां है-खुरां, जेह रक्खी ते मांणी ॥

---

१ इ. गाजीयो। २ इ. पछै। ३ ग्रा.इ. कह। ४ इ. मेलांणे। ५ ग्रा. बाणास। इ. बणास। ६ ग्रा.इ. दषणीये। ७ ग्रा.इ. षुटते। ८ ग्र. हूई। ग्रा. हुग्री। ९ ग्र. ग्रापांणी। १० इ. किघो। ११ ग्रा.इ. पोरस। १२ ग्रा.इ. लभ। १३ ग्रा.इ. उतर। १४ ग्रा.इ. सुं। १५ ग्र.इ. ऋामति। १६ ग्र.ग्रा. सील। १७ ग्र. कौल। १८ इ. कीघो। १९ ग्रा.इ. सल। २० ग्रा.इ. हुइ। २१ ग्र.इ. उपनो। २२ ग्रा.इ. लीया। २३ इ. जै। २४ ग्रा.इ. उठीया। २५ ग्रा.इ. थांणेय। २६ ग्र.इ. ग्रापांणेय। २७ ग्रा.इ. मनावीया। २८ ग्र. मारका। २९ इ. ईला। ३० ग्र. हुवै।

वर केता वौळिया[1], कळह केताइ[2] कुनारी[3] ।
पुरख न परणी[4] किणिह[5], आद[6] जुगादि[7] कुआरी ॥

गढ लियण[8] कोट[9] मैवट्ट में, कमधज दिखण[10] मथण कळी ।
महि तैहिज[11] मार मनावि[12] इम, खेडेचा राउ[13] खग-बळी ॥१॥

दखणाधो[14] की फतै, पंच[15] खट पक्खां[16] मांही ।
दक्खणियो[17] दे देस, पेस दीनी सगळांही[18] ॥
मेद-पाट रांजिंद्र, देखि सरहद्दां दोडो[19] ।
गुडवांणे[20] मेल्हियौ[21], "भीम" रांणो चीतोडो[22] ॥

आंणियो[23] द्रोह अंतह करण, पाडी[24] खुरमह पंतरण ।
ततकाळ "सेर" सुरतांण रौ, कीधौ अज्जुगतो मरण ॥२॥

गाथा

विकमाईत[25] नांम[26] ब्राहम्मण[27] ।
बूझे मंत्र कुमत्री[28] बंभण ॥
अंतह करण दुरम्मति आई ।
वहै खुरम्मह जेठौ भाई ॥१॥

खुरम का मांडव आगमन

भूलौ भरम खुरम भव हारे ।
पाप[29] कमायौ[30] भ्रात पहारे ॥
आतम सूं[31] अहनिस[32] आळोजे ।
नव खंड पह नमिया[33] नवरोजे ॥२॥

---

१ आ. वौलीया । इ. बोलीया । २ आ. केइ । इ. केलाई । ३ इ. कलिनारी । ४ आ. पिरणी । ५ आ. किणेह । इ. किणीह । ६ इ. आदि । ७ इ. जुगादि । ८ आ.इ. लीयण । ९ इ. कोट । १० इ. दिषणी । ११ आ.इ. तैहीज । १२ आ.इ. मनावी । १३ इ. राऊ । १४ इ. दषणाधी । १५ इ. पांच । १६ इ. षषां । १७ आ. दषणीयौ । इ. दषणीयां । १८ आ. सगलांई । इ. सगलाई । १९ आ. दोडौ । २० आ.इ. गुंडवांणे । २१ आ.इ. मेल्हीयौ । २२ आ. चीतौडो । इ. चित्रोडो । २३ आ.इ. आंणीयौ । २४ आ.इ. पडी । २५ आ.इ. विकमाइत । २६ आ.इ. ताम । २७ आ. व्रह्मण । इ. व्रहामण । २८ आ. कुमत्तो । इ. कुमित्री । २९ अ. आ. पाय । ३० आ. कमांयौ । कमायौ । ३१ आ.इ. सुं । ३२ आ.इ. महोनिस । ३३ इ. मीया ।

ब्रांहन-पुरसूं[1] चडे सताबं ।
साथे खांना खांन[2] निबाबं ॥
मारि सेर सुरतांण पमायो ।
महुए मथेवा मांडव[3] आयो ॥३॥

दूहा

मांडव आय[4] मुकांम किय[5], दळ वद्दळ आंणेय ।
समियांण[6] असमांण[7] सूं[8], जूमाऊ[9] तांणेय ॥१॥
दियो दिलासा ऊवरां[10], करै कटक्कां चाळ ।
गढ़ मांडव ओगाजियो[11], सिरि दिल्ली लंकाळ ॥२॥
मांडव आगम मेह रित[12], महुलां मज्झ रहास ।
फुरमायो "गजसाह" नूं[13], तुम[14] आवो हम पास ॥३॥
खुरम प्रवांणा मेलिया[15], लीधा राठोडेय[16] ।
"गजबंधी"[17] आयो खडे, चडि तीन्हे[18] घोडेय[19] ॥४॥
दळ भंजे गंजे दखण, चंद चडावे[20] नांम ।
खेडेचा[21] राउ[22] खुरमनूं[23], आवे कीध सलांम[24] ॥५॥
खुरम संतोख पडग्गरै, अंकमाळा आपेय ।
सीख मया किरि[25] देसनूं[26], दीनी आदर देय ॥६॥

महाराजा गजसींघ री जोधपुर आगमन

मनछा फळ आपत हुआ[27], हुआ[28] मनोरथ सिद्ध ।
जोधपुरै दिस जोधपुर, चडे पयांणो[29] किद्ध[30] ॥७॥
घरि पूठी[31] घर सांमहा, सहू[32] जुवांणां सत्थ ।
मनरत्त मनमत्थसूं[33], मन चाहै मनरत्थ ॥८॥

---

१ आ.इ. सुं । २ इ. षांन षां । ३ इ. मंडप । ४ आ.इ. आव । ५ आ.इ. कीय । ६ आ.इ. समीयांणां । ७ इ. असमान । ८ आ.इ. सुं । ९ आ. भूंभाउ । इ. जूभाउ । १० आ.इ. उवरां । ११ आ.इ. ओगाजीयो । १२ अ. रिमं । १३ आ.इ. नुं । १४ आ.इ. तम । १५ आ.इ. मेलीया । १६ इ. राठोडेह । १७ अ. गजबंधा । १८ आ. तीन्ह । १९ इ. घोडेह । २० अ.आ. चडावै । २१ आ.इ. षेडेचै । २२ इ. राऊ । २३ आ.इ. नूं । २४ इ. सलाम्म । २५ इ. करि । २६ आ.इ. नुं । २७ आ.इ. हूआ । २८ इ. हूआ । २९ आ. पयांणां । ३० आ. किध । इ. कीध । ३१ आ.इ. पुठी । ३२ आ. सहु । इ. सहू । ३३ आ.इ. सुं ।

साथ सऊब[1] आवळे, मारग वूठा मेह ।
आयो नव कोटी धणी, ऊबळ[2] के तुरियेह[3] ॥९॥

"गजबंधी गढ[4] आवियो[5], मेरी घाउ वळेय ।
जोवै मांही जाळियां[6], गोरी गोख चडेय ॥१०॥

गज-बंधी बाधाविजै[7], मोती उच्छाळेय[8] ।
लूंण[9] उतारै राइ-धी, चडियै[10] अट्टाळेय ॥११॥

महाराजा रो सुआगत

छंद लीलावती

सुख प्रांमियो[11] सजणां दुक्ख थियो[12] दुजणां ।
लोक रळियांमणो[13] लियै[14] भांमणां ॥
रिण-तूर[15] रूडांमणां ढोल[16] धूबांवणां[17] ।
तोरण दरपणां प्रोळ - पणां ॥१॥

मिण मांणक आभूखणा, पहिरै[18] गहणां ।
मंगळ गाइणां[19] घमळ घणां ॥
सिर[20] पहुप वरसणां अबीर उडांमणां ।
निरखियो[21] नयणां सयळ जणां ॥२॥

चत्र वेद ब्राह्मणं[22] भली विध[23] भणणां[24] ।
अभिखेक अप्पणां तिलक तणां ॥
गुणं कहो[25] गुणियणां[26] विप्रां चारणां ।
आसीस उलावणां, सुभ वयणां ॥३॥

सिणगार सुहामणां, महलायत खणां ।
पूर राइ - अंगणां, चौक रयणां ॥

---

१ आ.इ. सउबै । २ आ.इ. उवला । ३ आ. तुरीवेह । तुरीरोह । ४ इ. गज । ५ इ. आवीयो । ६ आ.इ. जालीयां । ७ इ. बंधाविजै । ८ आ. उछालेय । इ. उछालेह । ९ आ.इ. लुंण । १० आ.इ. चडीये । ११ आ.इ. प्रांमीयो । १२ आ.इ. थीयो । १३ आ.इ. रलीयांमणां । १४ आ.इ. लीये । १५ आ.इ. रिण-तुर । १६ आ. टोल । १७ आ.इ. घुषांमणां । १८ आ. पहरे । इ. पहिरे । १९ अ. गायणां । २० अ.आ. सिरि । २१ आ.इ. निरषीयो । २२ आ. बृहमणां । इ. ब्राह्मणं । २३ आ. विधी । २४ अप्पणां । २५ इ. कहि । २६ आ.इ. गुणीअणां ।

"गजसाह" गरजणां, तम - चर जीवणां।
मंगळ हुवा[1] वधावणां[2] हरख घणां हरख घणां ॥४॥

दूहा

हुआ[3] हरख वद्धांमणां, मंगळ धमळ सुणेस।
कियौ जोध अभिन्नमं[4], गढ जोधांण प्रवेस ॥१॥

दळ भंजे[5] दखणाधरा, "सूरजमल्ल"[6] सुतन्न[7]।
आयौ काळी मांण मळि, जांणे[8] गोकळ कन्नह[9] ॥२॥

महाराजारौ जोधपुरमें निवास

कवित्त

चित्र-साळां[10] चित्रजै, महल मंडप मांडीजै।
धमळ ग्रेह धमळिजै, देव चंदण अरचीजै[11] ॥
दिवां दीप - माळका, भडां भरियौ[12] राइ[13] - अंगण।
पुन्न कळिस परठिया[14], धजा पत्ताखा[15] तोरण ॥
गजसिंघ तपै जोधांण गढ़, सीस छत्र झळ-हळ कमळ।
नव रंग नवल्ला नेह थिउ, नाद वेद मंगळ धमळ ॥१॥

अस्ट - सिद्ध नवनिध[16], हुआ[17] ग्रह नवैइ[18] सवाडा।
भै भाजै···परठि, सदा साजा दीहाडा[19] ॥
हुवा[20] मेह नव नेह, दीप दळ भूखण दच्छी।
लोकां घरि[21] लिछमी[22], नंद गौ - अल करि लच्छी ॥
जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट ध्रांमै[23] वरौ।
जोधपुर आज अजुधा-पुरी[24], रांम राज कमधज्ज रौ ॥२॥

कसतूरी ऊपट्ट, महिक सोरंभ मळैतर।
कमकम्मौ कपूर[25], अनै[26] केसर किसनागर ॥

---

१ इ. हूवा। २ आ. वधामणां। ३ इ. हूवा। ४ आ. अभिन। इ. अभिनमै। ५ इ. भांजे। ६ आ.इ. सुरजमल। ७ आ.इ. सुतं। ८ आ.इ. जांणे। ९ आ.इ. कन्ह। १० आ.इ. चित्र-साला। ११ इ. अरचिजै। १२ आ.इ. भरीयौ। १३ इ. राई-अंगण। १४ आ. परठीया। इ. पठिया। १५ इ. पताका। १६ आ. नवामैध। १७ आ.इ. हूआ। १८ आ.इ. नवैई। १९ आ.इ. दिहाडा। २० आ. हुआ। इ. हूवा। २१ इ. घर। २२ इ. लीछमी। २३ आ. ध्रमै। २४ इ. अजोध्या-पुरी। २५ इ. कपुर। २६ आ. अने।

अंनि[1] अबीर जबाधि, विवह अनेक परिम्मळ।
चंपक दळ केतकी[2], कुसम सेवती सुपडुळ।
नीसांण[3] सद्द सुणिये[4] नहीं, भेर नाद मरदंग घण ॥
आघ्रांण[5] महल्ले अंग रहण, इम अलिअर गुंजारवण ॥३॥

के बाळा राइ-कुंअरि[6], केय मुगधा कुळवंती।
के मध्या मांणणी, जिसी सूरज झांयंती ॥
पूगळ भा पदमणी, कठिण[7] असतन गज कुंभह।
चंपक वरनी[8] तरणि, जंघ विपरीतक रंभह ॥
पिक-बांण[9] जांण वेणी पनंग[10], हिरणाखी हंसा-गमणि[11]।
रंग-महल सिघ राजांन सुर[12], रमति राज-पुत्री रमणि ॥४॥

राग रंग धुनि चित्त, ताल वीणा[13] मरदंगह।
पातरये[14] गति निरति, तांन[15] गुण ग्यांन उपंगह ॥
खड्ग रिखभ गंधार, मद्दि पंचहम निखादह।
सरिस कंठ सुर-सपत, गीत संगीत अलापह ॥
अणुहार अखाडो[16] इंद्ररो, जोधह-पुर[17] इंद्रा-पुरी।
"गजसिघ" इंद्र[18] राजंद्र[19]-गति, सरब इंद्र[20] सांमग्गरी ॥५॥

इंद्र छभा किरि छभा, द्वारि गडडंत गयंदह[21]।
नर नरिंद[22] ओळगै, कळा किरि चंद-दुडंदह[23] ॥
सुगंध[24] तरणि[25] तंबोळ, राग सांभळिजे कांनै।
वाहण भुअण वसत्र, भक्ख[26] सतरह[27] भोजन्नै ॥
अस्टादि भोग इंन्द्रादि-मुख[28], ढळै[29] सीस चौसर चमर।
भोगवै[30] लच्छि भरतार जिम[31], "गजपती" नृप[32] छत्र-धर ॥६॥

---

१ आ. अेनि। २ आ. कैतकी। ३ आ. नीसाण। ४ आ.इ. सुणीयै। ५ आ. आघ्राण। ६ आ.इ. राय-कुअरि। ७ अ. कंठ। ८ आ. बरनी। ९ इ. पिक-वाण। १० इ. पनग। ११ आ.इ. हंसा-गमणी। १२ इ. सुंर। १३ आ. विणा। १४ आ. पातरियं। इ. पातरेये। १५ इ. तीन। १६ आ.इ. अषाडो। १७ आ.इ. जोधपुर। १८ इ. इंद्र। १९ आ. राजिद्र। इ. राजिद्रि। २० इंद्र। २१ आ. गयदह। २२ आ.इ. निरिंद। २३ आ. चंद-दुंडदह। २४ अ. सुगंधं। २५ आ. तंरणि। २६ आ. भष। इ. भ्रष। २७ इ. सतर। २८ इ. इंद्रादिमुख। २९ इ. ढुले। ३० आ. भोगवै। ३१ इ. जीभ। ३२ आ.इ. निृप।

दूहा

"गजबंधी"[1] जोधांण[2] गढ़ि, दसराहो[3] पूजेय[4] ।
जूहारी[5] दिप-माळका[6], होळी फाग रमेय ॥१॥
सरद हिमं तह रिति सिसिर, को कीला सुख भोग ।
धूना[7] मिंदर[8] धोहरे[9], सिसि[10] वदनी[11] संजोग[12] ॥२॥
रत्ता सांमी[13] धरम सूं[14], रांमा[15] कांम ही रत्त ।
मन मोटा दिन पद्धरा, भड वंका गहमत्त ॥३॥
दत[16] देतां धन[17] मांणतां, जगि सुणतां जसवास ।
वसुधा इण[18] पर[19] वौळिया[20], नव कोटी खट-मास ॥४॥
चंचड कोरड जव चिणा, चीना केकांणेह ।

खुरम रौ विद्रोह

इत्तै गोधम ऊठियौ[21], दिल्ली सुरतांणेह[22]...
... ... ॥५॥
मांडव[23] खुरम अडप्पियौ[24], हालाविया[25] हमल्ल ।
साह विरोधण कळि मथण, इळ[26] करिवा ऊथल्ल ॥६॥

खुरम रा विद्रोह री खबर फैलणी

कवित्त

नव नंद[27] कोपिया[28], दुंद मातौ तुरकांणै ।
मांडव बैठो खुरम, आवि दिल्ली[29] सिरिहांणै ॥
हूऔ[30] हाहाकार, प्रिथी दमगळ[31] पेखीजै ।
जवनां जावण मूळ[32], अेह[33] आगम जांणीजै ॥

---

१ आ. गजबंधा । २ आ.इ. जोधाण । ३ आ. दसराहो । ४ आ. पुजेय । इ. पुजेय । ५ आ. जुहारी । इ. जुहारि । ६ आ.इ. दीपमालका । ७ इ. धुना । ८ आ.इ. मिंदर । ९ आ. धोहरे । इ. धोलहर । १० इ. सिस । ११ आ. बदनी । १२ अ. सांजोग । १३ आ.इ. सामी । १४ आ.इ. सुं । १५ आ. रामां । इ. रामा । १६ अ. दन । इ. धन । १७ आ. धन । १८ इ. ईण । १९ आ.इ. परि । २० आ.इ. बोलीया । २१ आ. ऊठीयो । इ. उठीयो । २२ आ. सुरताणेह । २३ आ. मांडव । २४ आ.इ. अडपीयो । २५ आ. हालवीया । इ. हलावीया । २६ इ. ईल । २७ आ. नंद । २८ आ.इ. कोपीया । २९ इ. दीली । ३० इ. हुवो । ३१ आ.इ. दमंगल । ३२ इ. मुल । ३३ आ.इ. राह ।

पातिसाह[१] पासि[२] कागळ गए, सुणी वात विपरीत परि।
सुरतांण सेर वूंहा[३] खुरम, कासमीर आई[४] खबरि ॥१॥

जळे पट्ट जिहगीर[५], दुक्ख लागौ[६] दावा-नळ।
घडहडि[७] पौरसि[८] धिखे[९], घ्रित आहुज क मंगळ॥
कळि लागी[१०] मुग्गळां, तांम[११] हसियौ[१२] जोगण-पुर।
वसूं हुवे घर वेध*, अगै विढ़िया[१३] पांडव-कुर[१४]॥

त्रिक्काळ-दरस्सी जोइसी[१५], कहै एम[१६] आगम-कहा।
असमांन उपद्रह थाइसै, उठी आग[१७] पांणी[१८] महा ॥२॥

बादसाह रो खुरम रै विरुध आदेस

हठ-वादा हजरति, कोपि हठियौ[१९] काळ'नळ[२०]।
प्रळै-काळ उतपात, जांण[२१] बंधी[२२] वड मंडळ॥
आप मुख कियौ[२३] हुकम, चोट हूई[२४] नग्गारां।
चडे[२५] भीच चंचळे[२६], कूच[२७] कीयौ[२८] दळ-कारां॥

जिहगीर[२९] कहै[३०] जमरूप हुइ[३१], खुरम कहां जाइ[३२] बप्पडौ।
पैसै पयाळ अंबर चडै, जिहां[३३] जाइ[३४] तहां पक्कडौ ॥३॥

के लख पखर प्रचंड, तेज तीनी[३५] तोखारह।
के लख हिंदू[३६] तुरक, लाख केताइ[३७] असवारह॥
के लख अस्त्र[३८] कमाल, लाख केताइ[३९] पाइदळ[४०]।
के लख वाजि निसांण[४१], जांण[४२] गडडंत[४३] निधो-जळ[४४]॥

---

१ अ. पतिसाह। २ इ. पास। ३ इ. वूहौ। ४ इ. आइ। ५ आ.इ. जिहंगीर। ६ आ. लागो। ७ इ. धडहडियो। ८ इ. पोरिस। ९ आ. धिधिषे। १० इ. जागी। ११ आ.इ. ताम। १२ आ.इ. हसीयो। * इ. प्रति में पाठ इस प्रकार है 'वसुह वेघ घर बेघ'। १३ आ.इ. विढीया। १४ इ. पंडव-कूर। १५ इ. जोईसी। १६ आ. ईम। १७ इ. आगि। १८ आ. पाणी। १९ आ. हठीयो। इ. हिठीयो। २० आ.इ. काल-नल। २१ आ. जाण। २२ आ. बधी। २३ आ.इ. कीयो। २४ आ. हुइ। इ. हुई। २५ अ. चडै। आ. चढे। २६ आ.इ. चंचलै। २७ इ. कुच। २८ अ. कियो। २९ इ. जिहंगीर। ३० इ. केहै। ३१ इ. हुई। ३२ आ. जाइ। इ. जाय। ३३ इ. जहां। ३४ आ. जायै। इ. जाय। ३५ इ. तीना। ३६ आ. हीदूं। इ. हीदु। ३७ आ.इ. केताई। ३८ आ.इ. असतर। ३९ आ.इ. केताई। ४० आ. पाईदल। इ. पाय-दल। ४१ आ. नीसांण। नांसांण। ४२ आ. जाण। ४३ इ. गडडंति। ४४ इ. निधि-जल।

केतला[1] लक्ख धांनंख-घर[2], केताइ[3] लख गैमर[4] गुडे[5] ।
जिहगीर[6] पयांणे परठियौ[7], दिल्लो दिस हैमर चडे[8] ॥४॥

साही सेना रो कूच

छंद त्रोटक

खुंहदालम[9] आरुहि है खडियं[10] ।
गति भीति[11] गिरव्वर गै गुडियं[12] ॥
घण भेर दमांम निसांण[13] घुरे[14] ।
घुबियंति[15] क मेघ असाढ़[16] घुरे[17] ॥१॥

रिण-तूर[18] पयंच-सब्द[19] वेद[20] रुडे[21] ।
गयणाग क[22] अंबनिधी गडडै[23] ॥
ढळकै[24] गज - ढालां ढूहरियं[25] ।
अनडां[26] सिरि[27] जांणक अच्छरियं[28] ॥२॥

पट हत्थ मदोमत पक्खरियं[29] ।
वन जांण वसंत[30] गिरव्वरियं[31] ॥
परचंड पटाझर पंथि पुळं ।
किरि जांणि परब्बत अट्ठ - कुळं ॥३॥

मलपंति मदोमत्त मैंगळयं[32] ।
वरखा रित जांणक वद्दळयं[33] ॥
घण झंडा लोड वियंड - घडा[34] ।
किरि[35] हा दीनक[36] पग खडा ॥४॥

---

१ आ. केतलाई । इ. केतलाइ । २ आ.इ. घानंष-ढार । ३ इ. केताई । ४ अ. डोमर । ५ अ.आ. गुडै । ६ आ.इ. जिहंगीर । ७ आ.इ. परठीयो । ८ अ.आ. चडै । ९ आ. षुंदालम । इ. षुदालंम । १० आ.इ. षडीयं । ११ अ. भांति । आ. भाति । १२ आ.इ. गुडीयं । १३ आ.इ. नीसाण । १४ अ.आ. घुरै । १५ आ. घुवीयंति । १६ इ. आसाढ । १७ आ.इ. घुरै । १८ इ. रिण-तुर । १९ इ. पयंच सबद । २० आ. बेद । २१ आ.इ. रुडे । २२ इ. गयणिग । २३ आ.इ. गडडे । २४ आ.इ. ढलके । २५ आ.इ. ढुहरीयं । २६ अ. अंनडा । २७ इ. सिर । २८ आ.इ. अछरीयं । २९ आ.इ. पषरीयं । ३० आ. वसत । ३१ आ. गिरवरीयं । इ. गिरवरीयां । ३२ आ. मेगलयं । इ. मैगलीयं । ३३ आ. वदलयं । इ. वदल । ३४ आ. विपुंड-घडा । इ. तिहंड-घडा । ३५ आ इ. फिर । ३६ इ. दीनंष ।

काळी घड पावस कंवळयं[1] ।
बग पंकति[2] दीप दंतूसळयं[3] ॥
हिलिया[4] भद्र जातिय[5] हींडुळता[6] ।
परबत्त क पंखिय[7] संजुगता[8] ॥५॥

थियौ[9] चोळ[10] सिंदूर कुंभाथळयं[11] ।
वन[12] गेरुम्र[13] जांण विंभाचळयं ॥
चींधाळां[14] चींध[15] अयास चडे[16] ।
अनली-पंख[17] जांण भमै अनडै ॥६॥

घण चम्मर सीस गयंद घटा ।
जड-धारक मेर विखेर जटा ॥
गडडंति गुडंता मत्त-गयं ।
गरजंतिक[18] जांणय[19] गोरंभयं ॥७॥

सूंडाळां[20] आलम ढल्ल सिरै ।
नन्नावधि[21] वंसक नंद-गिरै ॥
घंटा-रव घूघर[22] सद्द हुए ।
बोलंत विहंगम[23] जांण धुबै[24] ॥८॥

पिलवांणां[25] आंकस पांण धरे ।
सुज दांमणि[26] जांणि खिवै[27] सिहरै[28] ॥
धज स्याह वरन्नह धम्मळियं[29] ।
परि लाल[30] सबज्जह पीयळयं[31] ॥९॥

किरणां रवि कूंत[32] करक्कळयं[33] ।
नभ जांणक नाखत्र मंडळयं ॥

---

१ इ. कंबलयं। २ इ. पंगति। ३ आ.इ. दंतुसलयं। ४ आ.इ. हिलीया। ५ आ.इ. जाती। ६ अ. हिडुलता। इ. हीडूलता। ७ आ.इ. पंषी। ८ आ. संजुगत्ता। ९ इ. थीयो। १० आ. चौल। इ. चौ। ११ आ. कूभाथलयं। इ. कुंभाथलयं। १२ आ.इ. वृन। १३ आ. गेरू। इ. गेरूं। १४ आ.इ. चीघाला। १५ आ.इ. चीध। १६ अ. चडै। १७ आ. अमली-पंष। १८ आ. गरजंति। इ. गरजांतिक। १९ आ.इ. जांणे। २० आ.इ. सुडाला। २१ आ. ननावधि। इ. नजावधि। २२ आ. घुघर। २३ आ. विहगम। २४ इ. धुबे। २५ आ.इ. पीलवांणां। २६ आ.इ. दामणि। २७ आ.इ. षिवै। २८ आ.इ. सेहरे। २९ आ.इ. धमलीयं। ३० इ. लाग। ३१ अ. पीपलियं। ३२ इ. कुंत। ३३ आ. करकलयं।

दुरवेस छिले जिहंगीर दळं।
हिले सातसमद्र क……हेमजळं ॥१०॥

खूंदालम[1] फौज चडे खडिया[2]।
असमांन क आभा ऊपडिया[3]॥
घर तारां[4] सीरम साट पडै[5]।
घज खेडै लागा खेंग घडै[6] ॥११॥

नळ वाजि[7] विडंगां राग नरै[8]।
पारेवर बोलै जेण परै[9]॥
तेजागळ तेज[10] तुरंग तिडै[11]।
नाखत्रव जांण निहंग खिडै ॥१२॥

झिरिया[12] अहलांणै[13] फीण झडै।
खुरताळे खांना खोण पडै॥
फडडाटा खेंग करै[14] फुरणे।
नड[15] नीर हुवै किरि[16] नीझरणे[17] ॥१३॥

इळ[18] वाज वजावै[19] ऊपडता[20]।
रिणतूर नसां भिळजै रुडता॥
डांणां[21] किरि पाउ[22] पलंब डहै।
वाजिद्रक वेग[23] विवांण वहै ॥१४॥

असवार दिवांना[24] तेज[25] तुरी[26]।
खित नांखै[27] खेंग[28] उपाडि खुरी॥
क्रमिया[29] दळ कोअण काबळरा।
घडकंत रसातळ घूजि[30] घरा ॥१५॥

---

१ आ. षुंदालम.। इ. षुदालम। २ आ. षडीया। इ. षडीयां। ३ आ. ऊपडीया। इ. उपांडीया। ४ आ. पडनारां। इ. पडतालां। ५ आ.इ. पडे। ६ आ.इ. घडे। ७ इ. वजे। ८ आ.इ. नरे। ९ आ.इ. परे। १० इ. तेग। ११ आ. त्तिडै। इ. त्रिडै। १२ आ. झेरीया। इ. झैरीया। १३ आ. अैलांणे। इ. मंणांण। १४ आ. करे। १५ इ. निड। १६ आ. किरे। १७ इ. निझरणे। १८ इ. ईल। १९ इ. वजवे। २० आ. वपडता। २१ इ. डाणां। २२ इ. पाऊ। २३ बेग। २४ इ. दीवांना। २५ इ. तिज। २६ आ. तूरी। २७ इ. नाषै। २८ आ.इ. षेंग। २९ आ.इ. क्रमीया। ३० आ.इ. घूजि।

गरदां धर अंबर गूंधाळियौ[1] ।
घमळा - गिर डूंगर[2] धूंधुळियौ[3] ॥
कटकां विच मीर सिकार करै ।
म्रिघ[4] नाहर संबर रोझ मरै ॥१६॥

कुदरत्ती कोमंड तांण[5] करै ।
छेदंत विहंग दुहंग[6] सरै ॥
रज धूधळ[7] समूह मिळे रयणं ।
ग्रहपत्ति प्रछन्न थयौ गयणं ॥१७॥

परबत्तां ऊपर[8] पंथ डहै[9] ।
गिरकंदर झंगर मोर गहै ॥
खुरसांण खुरम्म[10] सिरै खडियं[11] ।
उतराधक कंठळ ऊपडियं[12] ॥१८॥

भुजिया[13] दळ वादळ फौज भडां ।
घण सांवण[14] भाद्रव जांण घडां ॥
पमँग्गं पडताळ[15] पँयाळ[16] प्रमे[17] ।
भर भार सिरं[18] हर हार भ्रमै[19] ॥१९॥

जड ऊबड[20] व्रिक्ख[21] पडंत जुग्रा[22] ।
है पाए पहाड मसट्ट[23] हुग्रा[24] ॥
पति-साह[25] पयांण[26] पुरं...[27] कियं[28] ।
ग्रसमांनक ग्रस्सणि[29] ऊलटियं[30] ॥२०॥

---

१ ग्रा. गूंघालीयां । इ. गुंघलीयां । २ ग्रा. डूगर । ३ ग्रा. घूघलीया । इ. घुघलीयां । ४ ग्रा. मृघ । इ. म्रिग । ५ इ. ताण । ६ ग्र. दहुंग । ७ ग्रा.इ. धूल । ८ इ. उपर । ९ ग्रा. डेहं । इ. डहे । १० इ. षुरंम । ११ ग्रा.इ. षडीयं । १२ ग्रा.इ. उपडीयं । १३ ग्रा.इ. भुजीया । १४ ग्रा. श्रावण । इ. श्रांवण । १५ ग्रा. षडताल । १६ ग्रा.इ. पयाल । १७ ग्रा. प्रमे । इ. द्रमे । १८ इ. सिर । १९ ग्रा.इ. भ्रमे । २० ग्रा.इ. उबड । २१ ग्रा. व्रिष । इ. व्रष । २२ ग्रा.इ. जूग्रा । २३ ग्रा.इ. मषट । २४ ग्रा. हूग्रा । २५ इ. पतसाहं । २६ इ. पयाणै । २७ ग्रा.इ. पुर । २८ ग्रा.इ. कीयं । २९ ग्रा. ग्रसणि । इ. ग्रसण । ३० ग्रा. ऊलटीयं । इ. उलटीयं ।

दूहा

साह दळां जळ साइरां[1], जळहर[2] बूंदां[3] धार ।
अंबर तारां महि अणां[4], केहौ[5] लब्भै पार ॥१॥

ऊंड-पणी[6] पायाळ[7] में, ऊंच-पणी[8] व्रहमंड[9] ।
असपति आरंभ तप अरक, सर अरजण कोमंड ॥२॥

गाथा

सुरतांण[10] दळ मेघांण[11] वहूळं ।
सपत समद्र पांणियं[12] सयळं[13] ॥
उडियण[14] रयणी गयणं[15] ।
कुण संख्या मांनव करए ॥१॥

अग्रे दळाय पांणी मझि दळां ।
कादमं गहणं ॥
दळ पुडि उडि[16] रेयणं[17] ।
कौतूहळ[18] कोडि त्रियासा ॥२॥

कवित्त

नह संख्या कुंजरां, न का संख्या केकांणां ।
नह संख्या हिंदुवां[19], संख नह[20] मुस्सळयांणां[21] ॥
नह संख्या लसकरां, न का संख्या नीसांणां[22] ।
संख न का उमरांन[23], न को[24] खांनां सुरितांणां[25] ॥
नेजां न संख नेजाइतां[26], न को संख पाई-दळां[27] ।
असपत्ति तणी फौजां असंख, मिळे कहळे मेहल्ळा ॥१॥

---

१ इ. सायरां। २ आ. जहर। ३ इ. बुदां। ४ आ. तणां। इ. त्रिणां। ५ आ. कैहो। इ. केहो। ६ इ. उडपणी। ७ आ.इ. पयाल। ८ इ. उचपणौ। ९ आ. ब्रह्मंड। इ. बृह्मंड। १० इ. सुरताण। ११ आ.इ. मेघाण। ११ आ.इ. पाणीय। १३ आ. सयंलं। १४ आ.इ. उडपण। १५ आ. गयंणं। १६ इ. उडी। १७ इ. रयणं। १८ आ.इ. कोतूहलं। १९ आ. हीदुवां। इ. हींदवां। २० इ. नही। २१ आ. मुसलमांणां। इ. मुसलमाणं। २२ इ. निसाणां। २३ इ. उमरां। २४ आ. न कौ। २५ आ. सुरिताणं। इ. सुरेताणं। २६ इ. नेजाइता। २७ आ. पाइ-दल। इ. पाय-दलां।

सेना का पड़ाव

खड खूटा[1] जंगळे, खूटिगा[2] लाकड इंधण[3] ।
पांणी खूटा[4] द्रहे, कूंप[5] वापी लेखै कुण ॥
गाहट्टे गज दळां, कीध कादम्म सरोवर[6] ।
नह खूटा जळ नयां, जहां संगम रैणायर ॥
मुक्कांम कीध जोगण - पुरै[7], खूंदालम्म[8] लसक्करां[9] ।
गयणाग[10] किया[11] गूडे[12] खडा, छांह हुई[13] सिर डूंगरां[14] ॥२॥

दूहा

तंबू[15] तांण सिराइचा[16], सहु[17] छाया वन - खंड ।
इळ पुडि ईंडा[18] मेल्हिया[19], किरि व्यायौ व्रहमंड[20] ॥१॥

फौजां डेरा फाबिया[21], दीसै हद्द विहद्द ।
सबज वरना स्याह व्रन[22], लाल सपेत[23] जरद्द ॥२॥

साह बइठा सोहिया[24], सभा[25] मसंदी[26] सज्झ[27] ।
चंद दिपंदा[28] वेखिया[29], जांण नखत्रां मज्झ[30] ॥३॥

विवह वरन्ना[31] कप्पड्डा, विवह वरन्नी[32] पाग ।
फजर हुवंदी फूलिया[33], जांण मलूकां[34] वाग ॥४॥

जांमे कसब जडाव नग, मरदां कळा अनूप[35] ।
जोति चिरागां[36] जगमगै[37], हेक हुवंदा रूप[38] ॥५॥

---

१ इ. षुटा । २ इ. षुटगा । ३ आ.इ. इंधण । ४ इ. षुटा । ५ आ. कूप । इ. कुवां । ६ इ. सरोवरां । ७ आ. जोगण-पूरै । ८ आ.इ. षुदालम । ९ आ. लसकारां । इ. लसकरां । १० आ. गयणांग । इ. गयणाग । ११ आ.इ. कीया । १२ आ. गूडर । इ. गुडर । १३ आ.इ. हुइ । १४ आ. डूगरां । इ. डुगरां । १५ इ. तंबु । १६ इ. सिरायचा । १७ इ. सहू । १८ इ. इंडा । १९ आ. मेल्हीया । इ. मेलीया । २० आ. ब्रह्मंड । इ. बृह्मंड । २१ आ.इ. फाबीया । २२ आ. वरना । इ. व्रना । २३ इ. सफेद । २४ आ. सोहीयो । इ. सोहीया । २५ आ.इ. छभा । २६ इ. समंदी । २७ आ.इ. संभ । २८ आ. दीपदा । २९ आ.इ. वेषीया । ३० आ.इ. मंझ । ३१ आ. वरना । इ. वरंना । ३२ आ. वरनी । इ. वरंनी । ३३. आ.इ. फूलीया । ३४ मलुकां । ३५ इ. अनुप । ३६ इ. चीराकां । ३७ आ. जगमगे । ३८ आ.इ. रुप ।

काइब

सिंघासणौ वा इंद्रासणौ वा, प्रिथीपती[1] वा सरगपती वा ।
भ्रितं सुरो वा भ्रितं नरो वा, दिलीसरौ वा जगदीस रौ वा ॥१॥

गाथा

वंसौ वधति[2] बहुअं, अंतर[3] गति गंठि[4] वेध उतपन्नौ ।
संजोगि[5] अगनि[6] पतंगौ[7], प्रजळयं[8] अप मज्झेण ॥१॥
पितह पुत्र विरोधे, भ्रितह सोम[9] विग्रहे भ्राता ।
सजण जणा[10] निक्रोधे[11], खिम्या[12] समौ भेख जो नथि ॥२॥
जुअलं[13] हिंदुसथांन[14], घात सपत दीप सपतमैं ।
प्रबळ उपद्रह पेखे, खिति[15] डोलिथं[16] सीस खुरसांण[17] ॥३॥

दूहा[18]

दिलीसां भला भावता, खूंदाळम[19] खंधार ।
मांडव साहं खुरम्म रा, आया खब्बरदार ॥१॥
खुरम कटक्के अग्गळौ, साह दळे असमांन ।
मूळ न मावै मारका, दोय[20] खंडा इक म्यांन[21] ॥२॥
खालिक[22] खूरम न मन ही, नह मन्नै पीरांह ।
ऊभौ[23] खांडै ऊभियौ[24], आडौ हम्मीरांह ॥३॥
कळि[25] लग्गी सुरतांण घर, हैवै हुवा[26] उदास ।
तब कहा दीजै[27] थिग्गडी[28], जब फट्टै आकास ॥४॥

गाहा चौसर

सुणि सुरतांण[29] खुरम सुरताणं[30], करि कांमंति[31] घुके बांणं ।
आगम बोलै वेद पुरांणं, खागै आवटिस्यै खुरसांणं ॥१॥

---

१ इ. प्रिथीपति । २ इ. वधती । ३ इ. अंतरि । ४ इ. गंठ । ५ इ. संजोग । ६ इ. अगन । ७ म. पतंगो । ८ इ. प्रजालयं । ९ इ. सम । १० इ. जण । ११ आ. निक्रोघ । इ. निक्रोघे । १२ इ. ष्यमा । १३ इ. जूअल । १४ आ. हिंदुसथांनं । इ. हिंदूसथानं । १५ इ. षितं । १६ आ.इ. डोलीयं । १७ आ.इ. षुरसाणं । १८ इ. दूहा । १९ आ.इ. षुदालम । २० आ. दोइ । २१ आ.इ. एक । २२ इ. षालक । २३ आ.इ. उभौ । २४ आ. उभीयो । इ. उभीयै । २५ इ. कल । २६ आ. हूआ । इ. हूवा । २७ अ. दीजे । २८ आ. थीगडी इ. थेगडी । २९ आ. सुरिताण । इ. सुरताण । ३० इ. सुरताणं । ३१ इ. कामंति ।

नरां नरिंदां[१] पार न लब्भै, वीरति[२] खुरम विढ़ेवा विब्भै ।
साहतणो घर[३] फाटो सब्भै, ऊमर[४] माड पडै की अब्भै ।।२।।

लाखां ग्यांन असंखां लसकर, बांह[५] लहै दुहूं लाख बहादर ।
आरंभ खुरम किया[६] आडंबर, चालण चाळा दीनी चादर ।।३।।

खंभूठांणां[७] गयंद खडोए, पावस जांण[८] परब्बत धोए ।
ढंचाळां सिर[९] ढल्लां सोए, पक्खर रोळ पंगंगां होए ।।४।।

खुरम री सेना रो कूच

छंद ऊधोर

हूओ[१०] खुरम हय असवार । वाजत्र वाजिया[११] तिण वार ।
रोड दमांम बंब रवद्द । सारस जांण बोलै सद्द ।।१।।

तडडै बुरंग त्रास निफेर[१२] । भाहर सद्द वाजै[१३] भेर ।
घुरि निसांण[१४] नौबत[१५] घाइ[१६] । साद सुहांमणा[१७] सहनाइ[१८] ।।२।।

चडिया[१९] भड तुरे चड चोट । काळी ध्रूस[२०] ऊपंड[२१] कोट ।
वागा[२२] जोड फौज वणाव । दम्मै दगगियो[२३] दरियाव[२४] ।।३।।

खुर रव खेंग डंबर खेह । मिळिया[२५] जांण बारह मेह ।
ऊलटि[२६] सै नमै अखियात[२७] । सायर[२८] जांण[२९] फाटा सात ।।४।।

हिलिया[३०] खंभूठांणां हूंत[३१] । आगळि[३२] सिंघळी[३३] अदभूत[३४] ।
ऊंतग स्यांम गत्ति[३५] अजब्ब[३६] । पावस जांण धोया पब्ब ।।

मद्दोमत्त खंभ मरोड । जूह वहंति[३७] गैतूळ[३८]-जोड ।
मस्सी वरन[३९] मद्द मसत्त[४०] । पांखां[४१] उड्डिया[४२] परबत्त ।।६।।

---

१ आ.इ. नरिदां । २ इ. विपरीत । ३ इ. घरि । ४ आ.इ. उमर । ५ इ. वाह । ६ आ.इ. कीया । ७ इ. षांभुठाणां । ८ इ. जांणि । ९ आ. सिरि । १० इ. हुओ । ११ आ. वाजीया । १२ इ. नफेरि । १३ आ. गजेय । इ. वाजेंय । १४ आ.इ. निसाण । १५ आ. नोवति । इ. नोवत्ती । १६ इ. धाई । १७ इ. सुहमणो । १८ इ. सहनाई । १९ आ.इ. चडीया । २० इ. ध्रह । २१ आ. उपडि । इ. उपर । २२ इ. वागां । २३ आ. दगगीयो । इ. दगगीयो । २४ आ.इ. दरीयाब । २५ आ.इ. मिलीया । २६ अ.आ. उलट । २७ इ. अषीयात । २८ आ. साइर । २९ आ.इ. जांणि । ३० आ. हिलीया । इ. हेलीया । ३१ आ.इ. हुंत । ३२ अ. आगल । ३३ आ.इ. सिघली । ३४ इ. अदभुत । ३५ इ. गीति । ३६ आ. अजिब । ३७ आ. वहवंति । इ. वहवहंत । ३८ आ.इ. गैतल । ३९ इ. वरंन । ४० इ. मसंत । ४१ अ. पाषां । इ. षाषां । ४२ आ. उडीया । इ. उडीयां ।

चडियैं[१] गयण गज चीधांह । गुड्डी[२] जांण[३] फब्बि गिरांह ।
वाजै वीरघंट[४] विसाळ । पक्खर पूठि[५] घूघर-माळ[६] ।।७।।

ओप[७] सिंदूर तेल अपल्ल । गडडे[८] बाज ढळकै ढल्ल ।
वहता विडंग[९] दाखै वेग । मारुत पेरियौ[१०] किरि मेग[११] ।।८।।

हैं-थट समद[१२] जांण[१३] हिलोळ । पमगां[१४] हमस[१५] पक्खर रोळ ।
क्रमते खुरमरै कटकेह । वसुधा बीखणी[१६] विडंगेह ।।९।।

गिरवर डहर झंगर गाहि[१७] । पाधर किया[१८] पमंगा[१९] पाहि[२०] ।
थट्टं[२१] ऊलटा गज - थाट । वहता करै ऊजड[२२] वाट ।।१०।।

धरत्ती[२३] धमस[२४] तुरियं[२५] धाउ । आकंप[२६] हैकंपै[२७] अहिराउ[२८] ।
धसमस[२९] धरणि फौजां[३०] धूस[३१] । गजदळ गरट थाट गडूस ।।११।।

खेडैं खुरम लसकर खूब[३२] । अंबर वहै[३३] जांणै[३४] ऊब[३५] ।
फोरै[३६] खुरी फरहरताह । घोडा रहै घरहरताह ।।१२।।

खित पुडि[३७] पडी भांति खुरांह[३८] । तीना ऊरवरवं तुरांह ।
तपिए[३९] ताळुए उतंग । पीसैं मुहे[४०] लोह पवंग ।।१३।।

तेजी तापडंत ततार । ऊपर[४१] आवळा असवार ।
विडंगां दौड दडवडतेह । फुरणै[४२] नास फडहडतेह ।।१४।।

साकुर[४३] खडे पाखर सेर । फौजां वहै जोजण फेर ।
भल असवार भलहोडेह[४४] । घमघम कैंजमां[४५] घोडेह ।।१५।।

---

१ आ.इ. चडीयैं । २ आ.इ. गूंडी । ३ आ. जाण । इ. जांणि । ४ आ. वीरघंटं । ५ इ. पुठि । ६ आ.इ. घुघर-माल । ७ आ.इ. ओपि । ८ आ. मरुडे । ९ अ. विहंग । १० आ.इ. पेरीयौ । ११ इ. वेग । १२ इ. समंद । १३ इ. जांणि । १४ आ. पवगां । इ. पवंगां । १५ इ. हसम । १६ इ. विषणी । १७ आ. गहि । १८ आ.इ. कीया । १९ आ.इ. पवंग । २० आ. पाइ । इ. पाई । २१ आ.इ. थिटब । इ. थिडंब । २२ आ.इ. उझड । २३ इ. धरति । २४ इ. धमसि । २५ आ.इ. तुरीयां । २६ इ. आकप । २७ आ. हैकपं । इ. हैकपै । २८ इ. अहिराऊ । २९ आ. धसमसि । ३० आ. फोजां । ३१ इ. घूमि । ३२ इ. षुब । ३३ आ. वहू । ३४ आ. जांणे । ३५ इ. उब । ३६ आ. फौर । इ. फौरा । ३७ इ. पुडी । ३८ इ. षूरांह । ३९ आ. तपीए । इ. तपीऐ । ४० इ. मूहे । ४१ आ. उपरि । इ. उपर । ४२ आ.इ. फुरणे । ४३ इ. साकुंर । ४४ इ. भल-दोडेह । ४५ आ.इ. केजमां ।

झळहळ बूग साबळ[१] भूल । गुडिली[२] गयण मिलि गोघूल[३] ।
ऊपर[४] रजी[५] धार अंधार । दौडे[६] खुरमरा दळकार[७] ॥१६॥

पमंगां[८] पछट[९] खेहां पूर[१०] । सूझै नहीं अंबर सूर ।
खिडिया[११] खुरमरा खरहंड । वसुधा घूंघाळा[१२] व्रहमंड[१३] ॥१७॥

परबत गहींजै[१४] पाय[१५] । थरहर भोम हैकंप थाय[१६] ।
सीरम सेट[१७] वाजै[१८] साट । भरहर पसर हैमर भाट ॥१८॥

गडडै गयंद करता गोडि । रुडता दमांमां हुय[१९] रोडि ।
द्रम्मी[२०] वाज[२१] घोडा दौडि[२२] । पत्थर पंथां[२३] भाजै पौडि[२४] ॥१९॥

हैथट हमस[२५] हाहस होय । कटकां[२६] ग्यांन संख न कोय[२७] ।
लैणां[२८] चलै[२९] वळ-वळ लूर । खांन पठांण लसकर खूर[३०] ॥२०॥

तांणै[३१] मीर तीर धनंख । पाडै[३२] गयण हूंता[३३] पंख ।
दिस-दिस[३४] मारिजै तिण दीह । सूअर[३५] रोझ सांबर सीह ॥२१॥

साहण[३६] सेन स्रब[३७] चढ़ियाह[३८] । आभा जांण ऊपडियाह[३९] ।
आयौ[४०] खुरम कर[४१] इलकार । कोटां हुऔ[४२] हाहाकार ॥२२॥

गाहा चौसर

गढ मांडव[४३] बहुता[४४] गुड्डि[४५] पक्खरि । पूरै पारंभ दिल्ली[४६] ऊपरि[४७] ।
भंग अजै-गढ तोडै सैंभरि[४८] । खुरम खडे आयौ रिणथंभरि ॥१॥

---

१ इ. भावल । २ आ. गूडीली । ३ आ. मिलिगो । इ. गोमिलि । ४ आ. उपरि । इ. उपडि । ५ इ. घोर । ६ इ. दोडे । ७ आ. हलकार । ८ आ. पवगां । इ. पवंगां । ९ आ.इ. पछटि । १० इ. पुर । ११ आ.इ. षिडीया । १२ आ.इ. घुघला । १३ आ.इ. व्रहमंड । १४ आ. गहिजै । इ. गाईजै । १५ आ. पाइ । इ. पाई । १६ आ. थाइ । इ. थाई । १७ आ.इ. सेढ । १८ आ. वाजे । १९ आ. हुइ । इ. हुई । २० आ. द्रंमी । इ. द्रमीं । २१ आ.इ. वाजि । २२ इ. दोडि । २३ आ. पंथं । इ. पंथं । २४ इ. पोडि । २५ इ. हसम । २६ आ. कुटक । इ. कटके । २७ आ.इ. कोइ । २८ इ. लीणां । २९ आ.इ. चले । ३० इ. षुर । ३१ आ.इ. तांणे । ३२ इ. पाडे । ३३ आ हुंता । इ. हूता । ३४ आ. दिसि दिसि । इ. दीस दीस । ३५ इ. सूवर । ३६ अ. सांहण । ३७ आ. श्रब । इ. सब । ३८ आ. चढीयाह । इ. चडीयाह । ३९ आ.इ. उपडीयाह । ४० इ. आयो । ४१ आ.इ. करि । ४२ आ हूंओ । इ. हूओ । ४३ आ.इ. मांझ । ४४ आ.इ. वहुता । ४५ आ.इ. गुडि । ४६ आ. दिली । इ. दोली । ४७ आ.इ. उपरि । ४८ आ. संभरी । इ. सैभर ।

पसर पमंगां[1] भंग पहाडे[2] । चहुं[3] दिसि[4] प्रजा अलंगां चाडे ।
आयौ खुरम खडग उप्पाडे । कोटां जडिया[5] कुलफ किमाडै[6] ।।२।।

भिडे[7] साह-सूं[8] आपौ[9] भांणौ । जालिम खुरम करै जुलमांणौ ।
भोम पडे[10] नवखंड भगांणौ[11] । माथै ढिल्ली गाढ मंडांणौ[12] ।।३।।

मूक्यौ खुरम हुकम मेडत्तै । रांणै[13] "भीम" दिसौ रिण रत्तै ।
वपि वांकम[14] सादूळ[15] वहत्तै । तूं अजमेर करे गढ़ फत्तै ।।४।।

भीम सीसोदिया री सेना रो वरणण

गाहेवा[16] अजमेर गिरव्वर । सूं[17] सादूळ माडंवा सम्भर ।
करग उपाडै "भीम" किरम्मर । वधियौ[18] बांमण[19] जेम विकोदर ।।५।।

ईसर भीम पिथै कुळ मोडै[20] । खुरम सहाय[21] खत्रीवट घोडै[22] ।
सीसोदौ[23] सांमंत[24] सजोडै[25] । रांणौ[26] पडगरियौ[27] राठोडै[28] ।।६।।

मांझी[29] मोगर थटां मोडौ[30] । घाते[31] लखां दळां विच[32] घोडौ[33] ।
देसां दसां ऊपरै दौडौ । चढियौ[34] कळि चालण चीतोडौ[35] ।।७।।

छंद अडिल

असि भीम चडे । असमांन अडे ।
दम्मांम सदं । नीसांण नंदं ।।१।।

रिणतूर रुडै । गजथाट गुडै ।
दळ ऊलटियं[36] । गिर गाहटियं[37] ।।२।।

किरि हेम हिलै । सांमंत छिलै ।
ताजंत तुरी । मुख वंकि दुरी ।।३।।

---

१ आ. पवंगा । इ. पवंगां । २ आ. पहाडै । ३ आ. चिहु । इ. चिहूं । ४ आ. दिशि । इ. दिस । ५ आ.इ. जडीया । ६ आ.इ. कमाडे । ७ आ. भिड । इ. भिडए । ८ आ. सा सु । इ. साह सुं । ९ इ. आपां । १० अ. पडै । इ. करै । ११ अ. भगाणौ । १२ इ. मंडाणौ । १३ इ. राणै । १४ आ.इ. वांकिम । १५ आ. सादुल । १६ आ.इ. गहेवा । १७ आ.इ. सुं । १८ आ.इ. वधीयो । १९ आ.इ. वामण । २० आ.इ. मोडे । २१ आ. साहइ । इ. सहाई । २२ आ.इ. घोडै । २३ आ. सीसोदो । इ. सीसोदो । २४ इ. सामंत । २५ इ. सजोडे । २६ आ. राणौ । २७ आ.इ. पडगरीयो । २८ आ.इ. राठोडे । २९ इ. मोझी । ३० आ.इ. मौडो । ३१ आ. घातै । इ. षाते । ३२ इ. वीच । ३३ इ. घोडो । ३४ आ.इ. चडीयो । ३५ आ. चीतोडो । इ. चीत्रोडो । ३६ आ.इ. उलटीयं । ३७ आ.इ. गाहटीयं ।

असि नास तिडै[1] । खरहुंड खिडै[2] ।
पायाळ द्रमै[3] । सिरि[4] सेस भ्रमै[5] ॥४॥

है हींस हुग्रं । भैभंग भुग्रं[6] ।
भुज फौज भडां । घण रूप घडां ॥५॥

पड़ताल तुरै[7] । मिळि खेह[8] खुरे ।
रंज - डंबरयं । ढकि ग्रंबरयं ॥६॥

हैं थाट हुबै[9] । नीसांण धुबै ।
भद्र - जात भलं । ढळकंत ढलं ॥७॥

वाजंत द्रमी । हैकंपि[10] जमी ।
हिल हैमरयं । लख पक्खरयं ॥८॥

फांबतं गजं । फररंत धजं ।
गुडि· गैमरयं । किरि भक्खरयं ॥९॥

गिर भ्रंगरयं । थिय[11] पद्धरयं ।
पुळि जंगमयं । रूळि कैजमयं ॥१०॥

चतुरंग दळं । दघि[12] जांण[13] हलं[14] ।
पैमाल घरां[15] । दस देस खरां ॥११॥

ग्रसि वेग वहै । गिरि[16] स्रंग गहै ।
रवि रैण[17] भिळै । मिहि[18] मैन मिळै ॥१२॥

दुइदूण दिसा । रजधूळ निसा ।
झिळि झूळ भरां[19] । तुडि वाजि तरां[20] ॥१३॥

ग्रसमांन फटा । किरि मेघ[21] घटा ।
गज गोडि करै । मद-दांण[22] झरै ॥१४॥

दळ देख डरै । म्रिघ[23] मूंझ मरै ।
भिळि भोमि[24] तणी । पुडि वोम पणी ॥१५॥

---

१ ग्रा.इ. त्रिडे । २ ग्रा.इ. षिडे । ३ ग्रा.इ. द्रमे । ४ इ. सिर । ५ ग्रा. भ्रमं । इ. भ्रमे । ६ ग्रा. भूम्रं । ७ ग्रा.इ. तुरे । ८ इ. षे । ९ ग्रा.इ. धुबे । १० ग्रा. हकंपि । ११ ग्रा. थीय । १२ इ. दधी । १३ इ. जाण । १४ ग्रा. हलां । इ जलां । १५ इ. धरा । १६ इ. गिर । १७ ग्रा.इ. रेण । १८ इ. मिह । १९ इ. नरां । २० इ. तुरां । २१ ग्रा. मेंघ । २२ ग्र. सद-दांण । २३ ग्र. ग्रग । २४ इ. भोम ।

फुण[1] नागि निमै[2] । गयणागि[3] गिमै[4] ।
रज पीजरयं । हय हींजरयं ॥१६॥

सट सीरमयं[5] । असि ऊरमयं[6] ।
क्रमि कोअणयं । लख सांहणयं ॥१७॥

ध्रू - मन्न धडै[7] । खुमांण[8] खडै ।
खडि - वाह[9] कियं[10] । मेल्हांण लियं[11] ॥१८॥

भीमेण भडं । ओपियै[12] अनडं[13] ।
चीतौड[14] घणी[15] । मुख मूंछ[16] वणी ॥१९॥

वन प्रज्जळयं । किरि मंगळयं ।
नर सिंघ रुखं ! थियौ[17] पंच-मुखं ॥२०॥

भुज नीम जयं । दिढ[18] दाखवियं[19] ।
सादूळ दुडे[20] । पाहाड[21] पुडे[22] ॥२१॥

सादूल सींघ रो पलायन

कवित्त[23] छप्पै

पाहाडै[24] सादूळ[25] । भाजि चढियौ[26] भिडवायौ ।
चीतौडौ[27] चतुरंग । भीम दळ मेले आयौ ।
बळि बोलै[28] सीसोद[29], मूंछ[30] वळ[31] घाळै[32] मच्छरि[33] ।
अभै-दांन आपियो[34], आव[35] पैलाळि विनौ करि[36] ॥
सोभाग[37] सजीवन औखधी[38], तिण कारण तुडि बत्थ भरि ।
अजमेर उपाडिस[39] काइ[40] अनड, पबै-द्रोण हणमंत परि ॥१॥

---

१ अ. फुल । २ आ. निमे । ३ आ. गयणाग । ४ आ. गिमे । ५ आ. सीमंयं । ६ इ. उरमयं । ७ इ. धूडै । ८ इ. षुमांण । ९ इ. खडवाह । १० आ.इ. कीयां । ११ आ इ. लीयं । १२ आ. औपीयै । इ. ओपीयै । १३ आ. अनंड । इ अनड । १४ आ. चीतोड । इ. चित्रोड । १५ आ. घंणी । १६ इ. मुछ । १७ आ.इ. थीयौ । १८ आ.इ. दिठ । १९ आ.इ. दाषवीय । २० अ. दुडै । २१ आ. पंहाड । इ. पहाड । २२ अ. पुडै । २३ आ.इ. कवित । २४ आ.इ. पहाडे । २५ इ. सादुल । २६ आ.इ. चडीयौ । २७ आ. चीतोडौ । इ. चित्रोडौ । २८ आ. बोले । २९ आ. सीसौद । ३० आ.इ. मुछ । ३१ इ. वलि । ३२ आ.इ. घाले । ३३ आ.इ. मछरि । ३४ आ.इ. अपीयौ । ३५ आ.इ आवि । ३६ इ. विनोकरि । ३७ इ. सौभाग । ३८ आ.इ. ओषधी । ३९ आ. उपाडीस । इ. उपडसी । ४० इ. काई ।

अजमेरा ऊतरे[१], कमळ कूं[२] बोल चडावै[३] ।
मेल्हि[४] पराक्रम मछरं, कुळह काळक्ख[५] लगावै[६] ॥
जत्त सत्त गरू-अत[७], तजै[८] पौरस आपांणो ।
अडप छाडि अहंकार[९] , हुए[१०] बळ - हीण निमांणो ॥
निज सीस नमै[११] जळ निग्गमें[१२], पुणो[१३] सौंस[१४] वीआपरो ।
लुघ[१५] तूळ[१६] हुए[१७] लज्जावियो[१८], नांम सिंघ सादूळरो ॥२॥
तेज रोस तांमंस[१९], सत्त सूरातन छोडै ।
सबळ-पणो[२०] मेल्हियो[२१], नहीं[२२] लाह थळ संकोडै[२३] ॥
लोभ मोह - बंधणो, गयो गळ बंधण बध्धो ।
जिह[२४] भखतो आंमंख[२५], तेह दंतै त्रिण खध्धो ॥
गह दाख[२६] गीत[२७] गावाडतो, तूं[२८] राठौडां ईढ-गर[२९] ।
"सादूळ" न एतो गरबियो[३०], गरब पहारी ईसवर[३१] ॥३॥

दूहा

खुरम पौहतौ सीकरी, है खडिए[३२] इळकार ।
भूभारे गढ़ झल्लिया[३३], नह झल्ली[३४] तरवार ॥१॥
सादूलं संकळ सहै[३५], तोडै लाज[३६] जंजीर ।
स्रोण सलो-भो[३७] चीतवै[३८], गिणो[३९] निलो-भो[४०] नीर ॥२॥
उतारै[४१] अजमेर सूं[४२], खुरम सनमुख[४३] आंण[४४] ।
कर साहे "सादूळ" नुं, खेलायो[४५] खूमांण[४६] ॥३॥

---

१ आ. उतरे । इ. ऊतरे । आ.इ. कु । ३ आ.इ. चडावे । ४ इ. मेलि । ५ आ. कालक । इ. कालंक । ६ आ.इ. लगावे । ७ इ. गरुअत । ८ आ.इ. तजे । ९ आ.इ. अहंकार । १० इ हूए । ११ आ. नमे । इ. निमैं । १२ आ.इ. नीग । १३ आ. पूणो । इ. पूंणो । १४ आ.इ. सांस । १५ इ. लुघु । १६ इ. तुल । १७ इ. हुवे । १८ आ.इ. लजावीयो । १९ अ. नामंस । २० आ.इ. पण । २१ आ.इ. मेल्हीयो । २२ आ. न । इ. ने । २३ आ इ. संकोडे । २४ आ.इ. जेह । २५ इ. आमंष । २६ आ.इ. दाषि । २७ इ. गित । २८ इ. तु । २९ आ.इ. इढ गर । ३० आ इ. गरबीयो । ३१ आ. इसवर । ३२ आ. हैंखडीय । ३३ आ.इ. झलीया । ३४ आ.इ. झलीया । ३५ इ. सहे । ३६ इ. लात । ३७ अ. सलोणो । ३८ आ. चीतवे । इ. चितवे । ३९ आ.इ. गिणे । ४० इ. न लोभो । ४१ आ. वतारे । इ. ऊतारे । ४२ इ. सुं । ४३ इ. सनमुंष । ४४ आ.इ. आणि । ४५ आ. पेलायो । इ. षैलायो । ४६ आ.इ. षुमांणि ।

लाख लसक्कर ऊदडै[1], चढिया[2] घोडां चूच[3] ।
जंगम जोगण - पुर दिसा, खुरम खडे[4] दर - कूच ॥४॥

खुरम री सेना री दिल्ली री ओर कूच

छंद मथांण

काबल्ली चूच[5] । खड़े दर - कूच ।
सहू[6] सुरतांण । खडे खुरसांणं ॥१॥

खुरम्म[7] खंधार । उलट्टि अपार ।
गरज्जि निसांण । करै[8] असमांण ॥२॥

दमांमां[9] चंड । घुबै[10] ब्रहमंड[11] ।
क्रमै[12] दळकार । गुडै[13] गज-भार ॥३॥

तुरां पडताळ । धडाक्कि[14] पयाळ ।
डरै दस-देस[15] । तपै[16] फुण सेस ॥४॥

क्रमंत केकांण । क वोम विवांण ।
वहै वरहास । धमंत्ता[17] नास ॥५॥

सिरंमां[18] साट । हुबै[19] हाय-थाट ।
धरा रज - धूळ । मुडे[20] व्रिख[21] मूळ ॥६॥

पश्रवखर-रोर[22] । लसक्कर लोर ।
क्रमै[23] दळ कोम । गह्-मह[24] गोम ॥७॥

गरज्जंत नाग । किरै[25] गयणाग ।
सयंकळ[26] तोड । करै तळ-जोड ॥८॥

गुडै गज - रूपं । क मैघ सरूप ।
गयंद गडाड । प्रतक्क[27] पहाड ॥९॥

---

१ आ.इ. उपडे । २ आ. चढीया । इ. चडीया । ३ आ. चूंच । इ. चुच । ४ अ. षडै । ५ इ. चुंच । ६ आ.इ. सहु । ७ आ. षुरम । इ. षुरंम । ८ आ.इ. करे । ९ इ. दमांमां । १० आ. घुबे । इ. घूबे । ११ आ. ब्रहमंड । इ. व्रह्मंड । १२ आ.इ. क्रमे । १३ आ.इ. गुडे । १४ आ. घडकी । इ. धडकि । १५ इ. दसरेस । १६ आ.इ. तपे । १७ आ.इ. धमता । १८ आ.इ. सीरमां । १९ आ.इ. हुबे । २० इ. मुडे । २१ आ. विृष । इ. वृष । २२ आ. रार । इ. रोल । २३ आ.इ. क्रमे । २४ अ. गव्यमह । २५ आ.इ. किरे । २६ इ. सघकल । २७ आ.इ. प्रतिक ।

दिपै[1] गय दंत । घटा बग - पंत ।
सळविक समूह । हयत्थट हूह ॥१०॥

वसुघ्धा वट्ट । पंमाल पहट्ट ।
गोधूळ गरद्द । पाखै गय - मद्द ॥११॥

छिलै[2] दघि छोळ । दळां बघि लोळ[3] ।
पवंगां[4] पाइ[5] । पडै खड हाइ[6] ॥१२॥

धुजं[7] धमहम्म । वाराह कुरम्म[8] ।
कटक्कह - बंध । सप्तह सिध[9] ॥१३॥

चलै चतुरंग । मुभ्रंत कुरंग ।
उरव्वड[10] अस्स[11] । धरा धसमस्स[12] ॥१४॥

है पाइ[13] हमस्स[14] । धाइत धमस्स ।
गाहंत अलंग । पहाड सिरंग ॥१५॥

है - थाट हसम्म[15] । हालंत हैजम्म[16] ।
नगारां नद्द । गिरा पड-सद्द[17] ॥१६॥

गयंद गुडंत । निसांण रूडंत[18] ।
तूरी दवडंत । धरा धडडंत ॥१७॥

कटक्क क्रमंत । भाला चमकंत ।
खडै[19] खरहंड । खळब्भल खंड ॥१८॥

वसध्धा वाज । गिरव्वर गाज ।
दगग्गे देम । जळानिध[20] जेम ॥१९॥

तुरां उखरंब । उडंत[21] दिडंब ।
अंधार उधोळ । धारा धमरोळ ॥२०॥

कटक्क कांधार । समूह[22] सेलार ।
पयांण करंत । मेल्हांण दियंत ॥२१॥

---

१ इ. दियं । २ आ.इ. छिले कि । ३ आ. लोल । ४ आ. पवंगा । ५ आ. पाई । ६ आ.इ. हाई । ७ आ. धूजे । इ. धूजै । ८ आ. कूरम । इ. कूरंम । ९ आ. सिध । १० आ. उरखड । इ. उरवडि । ११ आ. असि । १२ आ. धसमसि । १३ इ. पाई । १४ आ.इ. हमंस । १५ आ.इ. हमंम । १६ आ. हैजंम । इ. हैजमं । १७ आ.इ. पडिसद । १८ आ.इ. रुडंति । १९ आ.इ. षडे । २० आ. जलनिध । २१ इ. उडंति । २२ समुह ।

फौज रौ पड़ाव

कवित्त छप्पै

पतिसाहां दळ पडे[१], उभै मेहल[२] अहिनांणै[३] ।
जमीदोज किय[४] खडा, गयण छायौ समियांणै[५] ।।
धोळा कप्पड कोट, जांणि घमळा - गिर धारां ।
निसाचारा[६] कै प्रळै, वंस किरि भार अढारां ।।
जीहां[७] खुरम्म ऊपर[८] जमी[९], दोई[१०] खुंदालम[११] आहुडै[१२] ।
मुक्कांम किया[१३] दिल्ली-मंडळ, आसमांन[१४] गूंडर[१५] अडै[१६] ।।१।।

बे घुरत्ति नौबत्ति, तूर[१७] दम्मांम त्रिघाई ।
तबल ताळ कंसाळ, भरे[१८] बरधू[१९] सहनाई ।
चौघडियौ[२०] नीसांण[२१], रोड[२२] रिणतूरां आगळ[२३] ।
मही धूम - मत्थांण[२४], कन्ह अवतार क गोकळ ।।
दहलिया[२५] तांम च्यारै दिसी[२६], दस द्रिग-पाळ[२७] डरप्पिया[२८] ।
जुध करण एक[२९] जोगण - पुरहि, बेयतिसाह अडप्पिया[३०] ।।२।।

हुई[३१] हालोहळ[३२] सबळ, घुरै निसांण नगारा ।
करै[३३] कोप कांमत्ति[३४], कथन बोलंत करारा ।।
गज्जनाळ[३५] गडिअडै[३६], भार मत्थै गज - भारां ।
चौकी फौज चडंत, भूल भूठां जूंभारां[३७] ।।
असमांन[३८] उभैदळ ऊलटा, उदधी[३९] जांण उलट्टिया[४०] ।
पाघरै खेत पतिसाह बे, नेजा गाडि निहट्टिया[४१] ।।३।।

---

१ अ. पडै । २ अ. माहल । आ. महल । ३ आ.इ. अहिनांणे । ४ आ. कीय । इ. कीया । ५ आ. समयाणे । इ. समीयांणे । ६ इ. निसचरा । ७ आ.इ. जिहां । ८ आ.इ. उपरि । ९ इ. जिमी । १० आ. दोइ । इ. दोय । ११ आ.इ. षुदालस । १२ आ. आहुडे । इ. आहूडे । १३ आ.इ. कीया । १४ आ.इ. असमांन । १५ आ. गूडर । इ. गुर्डर । १६ आ.इ. अडे । १७ इ. तुर । १८ अ.आ. भरै । १९ इ. वर्धू । २० आ.इ. चौघड़ीयौ । २१ इ. निसांण । २२ आ. रोड । २३ इ. अगल । २४ अ. घुम-मथांण । २५ आ.इ. दहलीया । २६ इ. दीसि । २७ इ. द्रीगपाल । २८ आ.इ. डरपीया । २९ इ. ऐक । ३० आ.इ. अडपीया । ३१ इ. हूई । ३२ इ. हालोहल । ३३ इ. करे । ३४ इ. क्रमंति । ३५ आ. गजनालि । इ. गजनाल । ३६ आ.इ. गडीअडे । ३७ आ इ- झूझारां । ३८ आ. असमांण । ३९ आ.इ. उदधि । ४० आ. उलटीयां । इ. उलटीया । ४१ इ. निहटीया ।

तब खूरम[1] सुरतांण, खांनखांना ले सत्थह ।
उभै मेक जोजन्न[2], पूठि रहियौ[3] भारत्थह ॥
"भीम" रांणा खूमांण[4], बियौ विकमाइत[5] बंभण[6] ।
त्रियौ खांन दाराब, मुहर मंडै कळि मत्थण ॥

जिहंगीर खुरम जुडसी उभै, साखी[7] चंद दुंडिद[8] सुर ।
जोगणी - पीठ निहटा जवन, किर हथणापुर पंड कुर ॥४॥

कुर पंडव कळहिया[9], उभै कुर - खेत रिणंगण[10] ।
हुग्री[11] जांम भारत्थ, खपे अड्ढारह खोहण[12] ॥
जुजठिल्लह[13] दुज्जोण[14], मारि हथणा-पुर लीधौ[15] ।
भीखम द्रोण करन्न, कळह अरजण सूं[16] कीधौ ॥

बोळंत[17] सकति मो वळि[18] हुई, सुभट असंखां संघरे[19] ।
स्रोण इक[20] आज खप्पर भरसि[21] तई[22] एक खप्पर भरै[23] ॥५॥

चमर तेल सिंदूर, ढाळ माथै ढैचाळां ।
केकांणां कैजम्म[24], पंख किरि परबत माळां[25] ॥
असपती गजपती, फौज नरपत्तो फाबै[26] ।
जीण - साळ जोगिंद्र, डंड छक आवध डाबै ॥

ऊजळा[27] जरद मरदां अंगे[28], ऊंडौ[29] जांणक अंब द्रह ।
जिहंगीर रूप सिधांणवै, चडै[30] साह बंधै सिलह ॥६॥

गजां धूण[31] धाराळ, पिसण कुंजर ऊलाडण ।
भुजाडंड नीमजै[32], पैज परतापी[33] पाळण ॥

---

१ आ.इ. षुरम । २ आ. जोजन । इ. जोजंन । ३ आ.इ. रहीयौ । ४ आ. षुमांण । इ. षुमांण । ५ इ. किकमाइत । ६ इ. बांभण । ७ इ. साष । ८ इ. दुडंद । ९. आ.इ. कलहीया । १० आ. रिण-गणि । इ. रिणयणि । ११ आ. हूआै । इ. हूंवौ । १२ आ.इ. षोहणि । १३ आ. जुर्जुठलह । १४ आ. दुजोण । इ. दुरुजोण । १५ आ. लिषौ । १६ आ.इ. सुं । १७ इ. बोलंति । १८ इ. बल । १९ अ. संधरै । २० इ. एक । २१ अ. भरति । २२ आ.इ. तइ । २३ इ. भरे । २४ आ.इ. केजम । २५ इ. पंरतमालां । २६ इ. फाबे । २७ आ.इ. उजला । २८ इ. अंग । २९ इ. उडौ । ३० आ.इ. चडे । ३१ इ. धुंण । ३२ आ. नीगजे । ३३ इ. परतंत्रिया ।

वीकोदर वीर वर, अनड पाहाड[1] असकित।
त्रिविध[2] फौज रचिअणो, अरध आठम[3] चंद्राकन[4] ॥

सीसोदिया भीम री तयारी

करि सिंघनाद कैलप्पुरी[5], दळां-थभ दोखह दहौ।
गरजियौ[6] "भीम" माती गहण, नेत-बंध[7] नागांध्रहौ[8] ॥७॥

गरजै गुण कोमडं, बूग छूटै[9] नळियारां[10]।
कै बरळागि[11] खतंग, अंग घोडां असवारां ॥
पूर सोक[12] पखाळ[13], अरस छायौ आधंतरि।
सरापंज किउ[14] पंथ, जांण खंडी-वन ऊपरि ॥
घड हुडै[15] धोम आतस धिखै, गै लख पक्खर है गुडै[16]।
रिणतूर[17] रूडै दळ आहुडै[18], बे खूदालम[19] रिण चडै[20] ॥८॥

गाथा

विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणियं[21] सविता।
वासर विसाळ लहियं[22], चक-वांणै मंगळ भवण ॥१॥

जुधवरण

* छंद मोती दांम

बिहूं[23] पतसाहां[24] बध्धौ[25] नेत।
खरौ खुरसांण चईनो खेत ॥
महा जुध माती गोळै मार।
अराबां[26] आतस छूटि[27] अपार ॥१॥

---

१ आ.इ. पहाड। २ इ. विध। ३ अ. आठूं। आ. आठ। ४ आ. चंद्राक्रित। इ. चंद्रक्रित। ५ आ. कैलपूरो। इ. कैल पुरो। ६ आ.इ. गरजीयौ। ७ इ. नेत्रबंध। ८ इ. नागंध्रहौ। ९ आ. छूटे। १० आ. नलीयारां। ११ इ. बरलागि। १२ आ.इ. सोक। १३ इ. पंषराल। १४ इ. कीउं। १५ आ.इ. घडहुडे। १६ आ.इ. गुडे। १७ इ. रिणतुरं। १८ आ. आहुडे। इ. आहूडे। १९ आ.इ. षुदालम। २० इ. चडे। २१ आ.इ. तांणीयां। २२ आ.इ. लहीयां। *आ.इ. प्रति में "अथ छंद मोती दांम" है। २३ आ.इ. बिहु। २४ इ. पतिसाहां। २५ आ.इ. बाधौ। २६ इ. आरबा। २७ आ. छूटी।

प्रचंडे[1] गोळै नाळ प्रचंड।
वहंतै हैकंपियौ[2] ब्रहमंड[3] ॥
जुडंत[4] खुरंम अनै जिहगीर।
तिडां[5] किरि[6] अंबर उड्डै तीर ॥२॥

*कोमंड गरज्ज हुए हलकार।
भड़ा भालोड करंत भंभार ॥
एकूकी[7] मूठ[8] विछट्ट[9] असंख।
परै सर फूटै[10] कोरी पंख ॥३॥

बिन्है दळ आहुरता बंगाळ।
रवद्र रूप हुए[11] रणताळ[12] ॥
इळा[13] पुडि घूज[14] घुबे असमांण।
अदब्भुत ऊकाळियौ[15] आरांण ॥४॥

वहै बीजूजळ[16] हद्द-विहद्द[17]।
नचंत[18] विनोद[19] करत नारद्द ॥
तमासै[20] भांण हुऔ[21] रथ तांण[22]।
कहक्कह[23] वीर हसे[24] कतियांण[25] ॥५॥

झटक्कै धोम झटक्कै झाळ।
घडां बिहुं घूम[26] मचै घम-चाळ ॥
निदस्सै[27] जोध जुआंण निजीठ।
रुकां महिमात्तौ[28] आकारीठ ॥६॥

बसक्कि झबक्कि बळक्कै सार।
घावां मिळ तिम्मर घोर अंधार ॥

---

१ इ. प्रचंडे। २ आ.इ. हैकंपीयो। ३ आ. ब्रह्मंड। इ. वृहमंड। ४ आ. जुडति। इ. जुडित। ५ आ.इ. त्तीडां। ६ इ. कीरि। * आ. में यह पंक्ति "गरजि कोमंड हुए हलकार"। ७ इ. एकुकी। ८ इ. मुठ। ९ आ. विछूट। इ. विछूटी। १० आ.इ. फुटै। ११ आ. हुवै। इ. हुवं। १२ इ. रिणताल। १३ इ. ईला। १४ आ.इ. घुजि। १५ आ.इ. उकलीयो। १६ इ. विजुजल। १७ इ. हथ-विहद। १८ आ. नाचंति। इ. नाचंत। १९ आ. विणोद। इ. विणोद। २० इ. तमासो। २१ आ. हूओ। २२ इ. तांणि। २३ आ.इ. कह कह। २४ आ. हसे। २५ आ कतीयांणे। इ. कतीयांण। २६ इ. घुम। २७ आ. निदसै। इ. निदर्पे। २८ इ. मुहि मातो।

सुभट्ट विढ़ंत वहै समसेर।
झराळ[1] वढीवै[2] सूळा झेर ॥७॥

खडा - खड झाट[3] झडा - झड खग्ग।
पडै निरलंग नरा सिर पग्ग॥
झडां करि - माळ रिखग्ग झडंत।
पडै[4] भुइ[5] घाउ निहाउ पडंत॥८॥

खळक्कै स्त्रोण छळक्कै खाग।
भडां बह अंग हुवै बहु भाग॥
उभै पतिसाह भिडै अण - भंग।
रमांइण[6] भारथ ए रिण - जंग॥९॥

हणै[7] हण हींजर हैमर हींस[8]।
कळीयण हूकळ कुजंर[9] कीस॥
तुटंत[10] तिमच्छ[11] तणा तरवार[12]।
उलक्कापात[13] उडां उणिहार[14]॥१०॥

पडै पळ खंडर[15] पिंड प्रचंड।
वहै घाउ खागै खंड विहंड॥
हुबै[16] दळ सक्कळ[17] हूक[18] हमल्ल।
ढहै ढैंचाळ सहेता ढ़ल्ल॥११॥

•अबै रुडं मुडं मडां धड अंत।
मरग्गड भाजि असंघ मुडंत[19]॥
असिमर घाउ वहै वढ आड।
*हुवे ति मिरी वढ़ गूडन हाड॥१२॥

---

१ आ. झराला इ. झरालां। २ इ. वढिवे। ३ आ.इ. झाटि। ४ आ.इ. पिड। ५ इ. भुइई। ६ इ. रमांईण। ७ आ.इ. हणौ। ८ इ. हीस। ९ आ.इ. कूंजर। १० आ. तुटित। इ. तुटिति। ११ आ.इ. तिमछ। १२ आ. तरवारि। इ. तरिवारि। १३ आ. उलकापात। इ. उलकापाति। १४ इ. उणुहारि। १५ इ. पलि षंडर। १६ आ.इ. हुबे। १७ आ.इ. सबल। १८ इ. हुक। • आ. प्रति में यह पंक्ति "बे रुंड भडां धड बेहड अंत"। १९ इ. मुडत। * आ. प्रति में यह पंक्ति "हुवति मिरी वढ गूड न हाड"। इ. प्रति में यही पंक्ति "हुवंति मीरी वड गुड न हाड"।

उडै खग[1] चोट धडां सू[2] अंत[3] ।
भडांचा सीस दडांचो भंत[4] ॥
अणी सर फूटै कूंत[5] अन्नांस ।
वबार[6] बपै[7] किरि वाजै व्रांस[8] ॥१३॥

कटै कडियाळ[9] वहै करमाळ ।
कुटक्कै कोपर कंध कपाळ ॥
बगत्तर जोध हुवंति[10] बिसुद्ध ।
जुटंत बहादर बाहुअ जुद्ध ॥१४॥

संग्रांम खडग्ग वाहंत सनद्ध ।
वपै[11] पळ तंडळ ऊखळ वंद्ध ॥
वढै जरदैत जडाळ वहंति[12] ।
तुटंत[13] गडा किरि साबिण[14] तंति ॥१५॥

दड - द्दड सीस पडंत दडाक ।
बडीयण[15] बंध असंध बडाक ॥
समीवड आहुडिया[16] सुरतांण ।
खुटै[17] खर-हंड[18]तणा खुरसांण[19] ॥१६॥

किलंब कटक्कै ऊकट - काट[20] ।
गडूस्स[21] गरट्ट गहै गज - थाट ॥
पडै उर - बल्ल[22] गडोथळ पिंड ।
भडा - भड[23] खल्ल जुवा[24] भुजदंड ॥१७॥

पडंति गयंद खडग्ग पछाड[25] ।
प्रळै किरि वज्रह[26] पत्त[27] पहाड ॥

---

१ आ.इ. षाग । २ आ. सुं । इ. सु । ३ आ.इ. अति । ४ आ.इ. भति । ५ आ.इ. कुत । ६ आ.इ. वा बार । ७ इ. वपे । ८ इ. व्रांस । ९ इ. कडीयाल । १० आ. हुविति । इ. हुविसि । ११ आ.इ. वपे । १२ आ.इ. वहति । १३ आ. तूंटंति । इ. दूटंति । १४ आ. साबेण । इ. साबण । १५ इ. बडीयड । १६ आ.इ. आहुडीया । १७ आ. षूटै । इ. षूटे । १८ अ. षड-हंड । आ. षहहंडि । १९ आ. षुरसांणि । २० आ. उकट-काट । इ. उगट-गाट । २१ आ इ. गडस । २२ आ. उर-बल इ. डर-बल । २३ इ. भडां-भड । २४ आ.इ. जूवा । २५ इ. पछाड़ि । २६ इ. वज्र । २७ इ. पति ।

जरद्दां जेम चमक्क[1] जागि।
उठंति[2] भटक्कि[3] झटक्कै आगि ॥१८॥

बथां[4] जग-जेठ जुटै वळ-बंड।
घडै गळि-बाहां[5] जोध प्रचंड ॥
वहोहळ[6] तेग खांडा-हळ[7] वाढ़।
दुवा सूं सेल पटा जंम दाढ़ ॥१९॥

राउत्तां[8] गात बंबाळ[9] रगत्त।
करंमर[10] वाहि[11] किया[12] करवत्त ॥
अणी झबरक्क हुलां ऊझेल[13]।
सनाह सुं सुतणं तोडै सेल ॥२०॥

घसै वरियांम[14] वहै खग-धार।
विढ़ति[15] सुवप्प पडंत विहार ॥
लडै हिक[16] सांमां लोह लियंत[17]।
दियै हिक[18] पाव चडै गज-दंत ॥२१॥

लडै हिक[19] लालुग्ता छकि लोह।
पडै हिक[20] पाइक ऊठै[21] छोहि[22] ॥
आवै हिक[23] वाहै[24] खग्ग उभारि।
मुखां हिक[25] जोध कहै मारि मारि ॥२२॥

भिडै[26] हिक[27] नीजुडिऐ[28] भ्रकुटेह[29]।
चडै हिक[30] रोस पडंत[31] चटेह[32] ॥

---

१ अ. चमक। इ. चकमक। २ अ. उरंति। इ. रडंति। ३ आ. भटकि। इ भटाकि। ४ आ.इ. लाथां। ५ आ. गल-बांहो। इ. गलिबांहां। ६ आ.इ. वहोहुल। ७ अ. षंडाहल। आ. षांडहल। ८ इ. रावता। ९ आ.इ. बबाल। १० आ.इ. करमरि। ११ आ.इ. वहि। १२ आ.इ. कीया। १३ आ इ. उझेल। १४ आ.इ. वरीयांम। १५ इ. विढत। १६ आ. हेक। इ. ऐक। १७ इ. लीयंत। १८ आ.इ. हेक। १९ आ.इ. हेक। २० आ.इ. हेक। २१ आ.इ. उठै। २२ इ. छोह। २३ आ.इ. हेक। २४ अ. वावै। २५ आ इ. मुषा हेक। २६ इ. भिडे। २७ आ.इ. हेक। २८ आ. नीजुडीए। इ. निजुडीये। २९ आ. भ्रिकुटेय। इ. भिकुटेय। ३० आ.इ. हेक। ३१ आ इ. पडति। ३२ अ.इ. चडेय।

जुटै हिक[1] बथां[2] जोध जुआंण[3] ।
पौरस्स हुबै हिक[4] वाहै पांण ॥२३॥

भरै हिक[5] स्रोणी पिंड भुजाळ ।
विढै हिक[6] वीर हुआ[7] विकराळ ॥
करै हिक[8] हाकां जोध कंठीर ।
धारां हिक[9] झीक हुवै धर धीर ॥२४॥

चडै हिक[10] लोह[11] विवांणै[12] चीत[13] ।
वळै[14] हिक[15] खाइ गुडा विपरीत ॥
पिसै[16] के दांत भुजे[17] करि प्रांण ।
मुहै[18] चडि हेक[19] पडै मुह - तांण[20] ॥२६॥

खमै हिक[21] आवध गोडी खाय[22] ।
गडै हिक[23] भागै गुंछळ थाय[24] ॥
धड-धधड[25] तूटै एक[26] घसंति ।
हिणै खग[27] खागै हेक हसंति ॥२६॥

जुडै[28] हिक[29] वींभरता[30] जम - दूत ।
कढै[31] हिक[32] मारि अणी सर कूंत ॥
वहै[33] हिक[34] घाउ वदै विख बांण ।
रिखै हिक गोळीयां[35] रिण-ढांण[36] ॥२७॥

उडै हिक[37] उड्डुण घाउ[38] असंभ ।
गुडै हिक[39] पाखरिया[40] गज - खंभ ॥

---

१ आ.इ. हेक । २ आ. बाथां । इ. वाथां । ३ इ. जुवांण । ४ आ.इ. हेक । ५ आ.इ. हेक । ६ आ.इ. हेक । ७ आ. हूआ । इ. हूअ । ८ आ.इ. हेक । ९ आ.इ. हेक । १० आ.इ. हेक । ११ इ. लोह । १२ इ. विवणैं । १३ इ. चित । १४ आ. वल । इ. वहै । १५ आ.इ. हेक । १६ आ.इ. पीसै । १७ आ.इ. भुजे । १८ आ.इ. मुहे । १९ अ. हिक । २० इ. मूहतांण । २१ आ.इ. हेक । २२ आ. षाइ । इ. षाई । २३ आ.इ. हेक । २४ आ.इ. थाई । २५ आ.इ. धडि-धडि । २६ आ. अेक । इ. हेक । २७ आ. षाग । २८ आ. जुड़े । इ. जूडै । २९. आ.इ. हेक । ३० आ. वीबरता । इ. बिवरता । ३१ आ. काढे । ३२ आ.इ. हेक । ३३ आ. वाहै । ३४ आ.इ. हेक । ३५ आ.इ. गोलीयां । ३६ आ. रिण-ढाल । इ. रिण-ढंणी । ३७ आ.इ. हेक । ३८ इ, घाई । ३९ इ. हेक । ४० आ. पाषरीया । इ. पाषरी ।

वदै हिक[1] जै जै रांमह वाच ।
उछाळै हेक[2] छछोहा श्राच ॥२८॥

गळोवळ हेक[3] चटा • बख[4] गूंथ ।
लळावट[5] हेक लुळै हुइ[6] लूंथ ॥
चळ-व्वळ हेक हुश्रा[7] व्रन चोळ ।
धारां मुहि हेक दियै[8] धमरोळ ॥२९॥

रिणंगण हेकां श्रांत्र[9] रुळंत ।
हसत्ता दांतां हिक हींडुळ - श्रंत[10] ॥
लडै हिक[11] लागै लोहस - लोध ।
जमद्दढ़ टेक उठै हिक[12] जोध ॥३०॥

भयांनक हेक करै भराथ[13] ।
हिकां[14] मसतक्क पडै पग हाथ ॥
वेणी - डंड[15] हेकां वीखरियाह[16] ।
लुटै[17] भुंइ[18] हेक लुही[19] भरियाह[20] ॥३१॥

घुमै[21] हिक[22] जोध सहै घण घाव ।
पडै पिंड हेकां स्रोण प्रवाव ॥
कटारां वाहै हेक कराळ ।
धडां सिर हेक धवै धाराळ ॥३२॥

वाहै हिक[23] तेग भुजै[24] बरियांम[25] ।
वीरारस हेक विढै वरियांम[26] ॥
गुडै हिक[27] खाग[28] तुरी मद - गंध ।
गुडावै हिक[29] गुडै गज बंध ॥३३॥

---

१ श्रा.इ. हेक । २ श्रा. हिक । ३ श्रा. हिक । श्रा. हैक । ४ श्रा. चटा-वृष । ५ श्रा.इ. लोलावट । ६ इ. हुई । ७ श्रा. हुवा । इ. हूम्र । ८ इ. दीयै । ९ इ. श्रांत । १० इ. हिंडूलयंत । ११ श्रा.इ. हेक । १२ श्रा.इ. हेक । १३ श्रा.इ. भाराथ । १४ श्रा.इ. हेकां । १५ इ. वेणी-डंड । १६ श्रा. विषरीयाह । इ. विषरीयांह । १७ श्रा.इ. लोटै । १८ श्रा. भूइं । इ. भूई । १९ श्रा.इ. लोही । २० श्रा.इ. भरीयाह । २१ श्रा. घूमै । इ. घुंमै । २२ श्रा.इ. हेक । २३ श्रा.इ. हेक । २४ श्रा.इ. भुजे । २५ इ. मरियांम । २६ श्रा.इ. वरीयांम । २७ श्रा. हेक । २८ श्रा. षागि । इ. षगि । २९ श्रा.इ. हेक ।

धुकै भड हेक धजव्वड[1] धाइ[2] ।
ग्रिणै हिक जोध वडै गज ग्राहि ॥
मिळै हिक रोस घणै रिण मांहि ।
फिरै हिक[3] फारक फेरी खाहि[4] ॥३४॥

धारां मुहि[5] हेक उडावै[6] धूप ।
जुडै हिक[7] जोध हुम्रा[8] जम-रूप ॥
पडै पिंडि[9] भोम तजै हिक[10] प्रांण ।
खगां[11] मुहि हेक हुवै खळ हांण ॥३५॥

वीरा-रस हेक न मेल्है[12] वाद ।
निहस्सै हेक करै सिंघ-नाद ॥
सिरै[13] हिक धार प्रहार सहंत ।
लोहां मुहि हेक मुगत्त[14] लहंत ॥३६॥

स्रोणी हिक[15] हूम्रा[16] व्रन्न[17] सिंदूर ।
सिरै हिक[18] तूटै[19] जूटै सूर ॥
गडग्गड[20] जोगणि रत्त[21] गिळंत ।
हुडहुड नारद रिक्ख[22] हसंत ॥३७॥

वडव्वड वीजळ[23] धार वहंत ।
लडत्थड संकर सीस लहंत ॥
झडज्झड ग्रोझड[24] ग्रावध झट्ट ।
लडल्लड लागै[25] लोह सुभट्ट ॥
खडक्खड खंडा-खाट[26] खडंत ।
धडध्धड हूंता[27] ध्रूंह पडंत[28] ॥३८॥

---

१ इ. धजवडि । २ इ. धाई । ३ आ.इ. हेक । ४ आ.इ. षाइ । ५ इ. मांहि । ६ आ.इ. उडाडै । ७ आ.इ. हेक । ८ आ. हूम्रा । इ. हुवा । ९ आ. पिड । १० आ.इ. हेक । ११ आ. षाग । इ. षागां । १२ इ. मैले । १३ इ. सिरे । १४ आ. मुगत । इ. मुगति । १५ आ.इ. हेक । १६ इ. हुम्रा । १७ इ. व्रन । १८ आ.इ. हेक । १९ इ. तुटे । २० आ.इ, गड गड । २१ आ. रत । इ. रगत । २२ आ.इ. रिष । २३ आ. वीजुल । इ. विजुल । २४ आ.इ. ग्रोझड । २५ आ. लागे । २६ आ.इ. षडाषड २७ इ. हूता । २८ इ. पडंति ।

कडकड त्रिज्जड[१] आवट - कूट[२] ।
फडफड प्रांण अणी सिर फूट ॥
हयभ्भड सीस दडद्दड होइ[३] ।
तडप्फड मच्छक[४] तोछै तोइ[५] ॥३९॥
भडीयड भांजि मरघ्मड मूंड ।
रडव्वड रैण[६] करंडक रूंड ॥
भडप्फड पंखणि[७] सावज[८] भूळ ।
गुडंत गयाघण[९] गात्र सथूळ[१०] ॥४०॥

कवित्त

गुडै जूह मद - गंध, सेन अनमंघ सुभट्टह ।
घड बेहड[११] ऊकरड[१२], कटै कोपट्ट भ्रिकुट्टह[१३] ॥
रगत खाळ परिनाळ, लगं पग्गां पायाळह[१४] ।
नवै कुळी[१५] नागिंद्र[१६], हुआ स्रौणी बंबाळह ॥
ऊजळै[१७] हूंत हूओ[१८] अरण[१९], सेसनाग[२०] सैहस[२१] फुणी[२२] ।
तिण वार डरै[२३] तिण कारणै, पेख[२४] पदमण नागणी ॥१॥
भोम भार भल्लियौ[२५], खडग भल्लै[२६] खूमांणै[२७] ।
कियौ[२८] सेन संघार, जांणि रूठै[२९] जमरांणै ॥
तबल वाजि असवार, पडै[३०] पक्खरिया[३१] हैमर ।
मीयां[३२] मीर मिलक्क[३३], खांन खुरसांणी खप्फर[३४] ॥
बंभण[३५] वजीर राजा बिरद, भारथ ओडवि उभै भुअ[३६] ।
सुरतांण खुरम दळ सेनपति, 'वीकम' खंड विहंड[३७] हुअ[३८] ॥२॥

---

१ आ.इ. त्रिजड । २ इ. आवट-कुट । ३ इ. होय । ४ आ. मछक । इ. मछिक । ५. इ. तोई । ६ आ. रेण । इ. रेणु । ७ आ.इ. पंषण । ८ आ. सावज । ९ आ. गया याड । इ. गय घड । १० इ. सथुल । ११ इ. बेहाड । १२ आ. उकरड । इ. उरकरड । १३ आ. भिकुटह । इ. भिकूटह । १४ आ.इ. पयालह । १५ आ.इ. नवै-कुल । १६ आ. नागिद्र । १७ आ.इ, उजलै । १८ इ. हूवो । १९ इ. अरूण । २० आ.इ. सेषनाग । २१ अ. सह । इ. सहस । २२ इ. फूणी । २३ आ. डरे । २४ अ. षेष । २५ आ.इ. भलीयो । २६ आ. भले । इ. भलें । २७ आ.इ. षुमाणै । २८ आ. कीयौ । इ. कीयो । २९ अ.आ. रुठे । ३० आ.इ. पडे । ३१ आ.इ. पषरीया । ३२ इ. मीरां मी । ३३ आ. मिलक । इ. मीलक । ३४ इ. प्रफर । ३५ इ. बांभण । ३६ आ. भूअ । ३७ अ. बिहंड । ३८ अ. हूअ ।

जिहो[1] सींह[2] सादूळ, नळै[3] हत्थळ[4] उपाडै[5] ।
छरा खग्ग ऊनंग, लग्ग गैणंग भमाडै[6] ॥
सिंघल दियौ साबल्ले[7], हिणै हेकूकी[8] हत्थळ ।
करडि कुंभ[9] गय गुडे, धरणि ओलरि दांतूसळ ॥

मोती अमुल जिहिं[10] झड पडै[11], भागमंत पामंत[12] नर ।
भूपाळ[13] कियौ[14] गोपाळरै, रिण चाचरि लज्जी नयर ॥३॥

रचि[15] अजाद[16] गज तुरी, बंधि[17]पेडी[18] धड बेहड ।
स्रोण अंब[19] अण थाग[20], मच्छ कूरम्म तुरी भड ॥
चिहुंर[21] जाळ सेव्रल्ल[22], लहरि[23] लग्गै[24] केवांणह ।
ओडणि[25] कमळणि पत्र, भ्रमर[26] गूंजै नीसांणह[27] ॥

पणिहार[28] सकति पांणी भरै, स्रोणी[30] खप्पर कूं भलै ।
"गोपाळ"तणै मंजन कियौ[31], रिण तळाइ भूपाळ ले ॥४॥

स्रोण[32] झील कमकमै, कियै[33] करिमरां चडाए ।
रचे[34] सेज[35] रिण-भोम, कुसम अरि कमळ विछाए[36] ॥
नखस[37]तिक्ख[38]सर कूंत[39], सहै अन-मंघ[40]अचग्गळ[41] ।
पांण पयौहर कठण, मथै मैंगळ कुंभा - थळ ॥

विपरीत रहसि वीरा रसहि[42], रिण दूझल[43]हुइ[44]रट्टवड[45] ।
सूतो संग्राम करि स्रोण-हर, भूप मांण संग्रांम घड ॥५॥

---

१ इ. जीही । २ आ.इ. सीह । ३ आ.इ. नला । ४ आ.इ. हथल । ५ आ. उकंडे । ६ आ.इ. भमाडे । ७ आ.इ. सबल । ८ आ. ककूकी । इ. हेकुकी । ९ आ. कूभ । इ. कूंभ । १० आ.इ. जहां । ११ इ पडे । १२ अ. पाममंत । १३ आ.इ. भुपाल । १४ आ.इ. कीयौ । १५ आ. रचे । १६ आ.इ. मृजाद । १७ इ. बंध । १८ इ. पैडी । १९ इ. अंबर । २० इ. ऐणताग । २१ आ.इ. चिहोर । २२ आ. सोव्रतल । इ. सेवत । २३ आ. हरि । २४ आ.इ. लगै । २५ इ. ओडण । २६ आ.इ. चमर । २७ आ. गूजै । इ. गुंजै । २८ इ. निसांण । २९ आ. पसाहर । इ. पणहारि । ३० इ. श्रोणी । ३१ आ.इ. कीयो । ३२ आ. श्रोणो । इ. श्रोणी । ३३ आ. कीयै । इ. कीये । ३४ इ. रचै । ३५ आ. सेभ । ३६ इ. विछाये । ३७ आ. नषसि । ३८ आ. तीय । इ. तीयर । ३९ आ.इ. कूत । ४० आ. अन मंधि । इ. अनिमंध । ४१ आ.इ. अचगल । ४२ आ.इ. रसह । ४३ आ.इ. दुझल । ४४ इ. हुई । ४५ आ. रठवड । इ. राडवड ।

ईस सीस संग्रहे[1] , रुंड - माळा किउ[2] सद्धर[3] ।
अमख[4] ग्रीध उग्रजै, भूत वैताळ निसाचर ।।
पंखाळा नहराळ, सयळ[5] सावज्जह[6] धप्पै[7] ।
भखै[8] रत्त[9] भरि[10] पत्र, सकति आसीस समप्पै[11] ।।
भूपाळ भिडे[12] भीमेण छळि[13], अछरमोह मूक्यौ[14] सबळ ।
अंतरह जोति अविणास यह, गयौ भेद सूरज - मंडळ[15] ।।६।।

गाथा

धारां तीरथ समंदौ, स्रोणी[16] सलिल[17] सुरभं[18] भरए[19] ।
परि[20] पहुत्ता[21] सुरौ, बैसै ग्रीध उडीयं[22] हंसा ।।१।।
हड हड नारद हस्सियं[23], पांण ग्रहण पेखियं[24] सुहडां[25] ।
मोता - हळ गज डसणं, रंभा आभूखणं चुणए[26] ।।२।।
गैं जूह मत्त गुढियं[27], पिडे पळ खंड धार पहाडां ।
विपरीत वज्र पतंक, विहुर सिंघ परबत्तह ।।३।।
वसुधा स्रोण सुरंगी, तुरियां[28] घसळ वित्थुरी[29] रंणा ।
आदू चपळ सहावौ, हुइ रत्ती हुइ अणरतह ।।४।।

कवि-वाच

दूहा

साहिजादौ सुरतांण, बे नाइक बाधै नैत ।
किरि हथणापुर कळहिया[30], कुर-पंडव कुर-खेत ।।१।।
घर फूटौ घर कारणै, घर में लग्गी लाहि[31] ।
जे जीतौ तो हारियौ[32], दिल्लीवै पतिसाह ।।२।।

---

१ मा. सग्रहे । २ आ.इ. कीउ । ३ आ.इ. सधर । ४ मा.इ. अमंष । ५ इ. सघल । ६ आ. सांवजह । इ. सावजह । ७ आ.इ. घपे । ८ आ. भषे । ९ आ. रत । इ. रगत । १० इ. परि । ११ आ.इ. समपे । १२ मा.इ. भिडै । १३ इ. छल । १४ इ. मूंक्यौ । १५ इ. सूरिज-मंडल । १६ इ. श्रौणी । १७ अ. सलि । १८ आ.इ. सुरंभ । १९ आ भरषा । २० परी । २१ आ. पहिता । इ. पहूंतां । २२ इ. उडयं । २३ आ.इ. हसीयं । २४ आ.इ. पेषीयं । २५ मा. सोहडां । इ. सोहडौ । २६ इ. चुणऐ । २७ आ.इ. गुडीयं । २८ आ.इ. तुरीयां । २९ आ.इ. वियुरी । ३० आ.इ. कलहीया । ३१ इ. भाहि । ३२ आ.इ. हारीयो ।

खुरम कहै मन बंध बळ, आतुर म हुइ[1] अधीर।
काइर[2] हुवां[3] न छूटि[4] है, जब[5] रूठौ जहंगीर[6] ॥३॥

साहिजादौ सुरतांण बे, रिण झूझै[7] रिम राह।
डार परिग्गह करि मुहरि, नीसरियौ[8] वारांह ॥४॥

खूंदालम[9] आगळ[10] खुरम, तौइ न कुसळ पडंत।
जे[11] पैसै पायाळ[12] तळ, जे असमांन चडंत ॥५॥

सत पराक्रम सूरमां, मन्न म हुआ[13] उदमाद[14]।
रोस फुणिंदां रंढ़ त्रियां[15], हम्मीरां हठ वाद ॥६॥

गाहा चौसर

पुत्रां कजि खाटै[16] धन पित्तं।
पुत्रां हूं घर हुवै प्रवित्तं[17] ॥
असुभ हुवै[18] तब[19] होइ[20] अहितं[21]।
विह[22] लिखियौ[23] बुधी[24] विपरीतं ॥१॥

ग्रहै[25] कवण[26] गिर-मेर[27] गिरव्वर[28]।
ऊबडियौ[29] कुण[30] सांधै अंबर[31] ॥
पाखै कुण राखै परमेसर।
साहतणौ घर फाटौ सायर ॥२॥

भिडवायौ सारौ[32] भुआ - मंडळ[33]।
वसुधा गोधम गहण चिहूं - वळ[34] ॥
किलबां महण[35] मत्थेहण[36] कंदळ।
दिल्ली मातौ[37] दुंद[38] दमंगळ[39] ॥३॥

---

१ इ. हूई। २ इ. कायर। ३ इ. हूआं। ४ आ.इ. छुटीयै। ५ इ. जम। ६ आ.इ. जिहंगीर। ७ आ. झुंभे। ८ आ. निसरीयो। इ. निसरीयौ। ९ आ.इ. षुंदादम। १० आ.इ. आगलि। ११ अ.आ. जै। १२ आ.इ. पयाल। १३ आ.इ. हुवा। १४ अ. उनमांद। आ. उनभाव। १५ आ.इ. त्रीयां। १६ आ.इ. षाटे। १७ इ. पवित्रं। १८ इ. होवै। १९ अ. त। इ. होय। २० इ. अहितं। २१ इ. वेह। २२ आ. लिषीयो। इ. लीषीयो। २३ आ. बुध। इ. बुधि। २४ इ. ग्रह। २५ इ. कबांण। २६ आ.इ. मेर गिर। २७ आ.इ. गिरवर। २८ आ.इ. उवडीयौ। २९ इ. कूण। ३० अ.आ. अमर। ३१ आ.इ. सारो। ३२ आ.इ. भूअ-मंडल। ३३ आ.इ. चिहुंवल। ३४ आ. किल-बांम। ३५ आ. हण-मथेण। ३६ आ. मांतो। ३७ दुद। ३८ आ.इ. दमगल।

मारामार[1] हुई[2] महि - मंडळ ।
मेछां[3] भंग पडै महि - मंडळ ॥
मांडै धीर नकौ महि - मंडळ ।
मच्छ गळा - गळ[4] दिल्ली - मंडळ ॥४॥

गाथा

कुपिया[5] कुटंब कळहो, पावस पंथांण रोग प्रब्बळए[6] ।
दुरमत्ती[7] दुस्ट पुत्रौ, दूभरियं[8] पंच दुखाई ॥१॥

कूक्याऊ[9] कुळह मज्झे हुइयं, अद्याप तात न हुइण[10] ए ।
आद्र पुरांण सुणिय[11], पांणह कमण कवियं[12] पांण ॥२॥

विकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैंमत्तौ ।
विपरीत[13] कुळह व्रती, इजगूरं या डिंभरुं गिळ ए ॥३॥

संसार मगन माया, कांमौ[14] क्रोधं लोभ मोहांणौ[15] ।
स्वारथ हित[16] करणौ, कौ[17] भ्राता तात[18] पुत्राई[19] ॥४॥

मुगळांणं[20] मुगध बुद्धो[21], किं[22] गुर सब्द[23] साधु उपदेसौ ।
दिन्न[24] मेक उदधि रहणौ, नह[25] मूंचित मगधांण[26] ॥५॥

दूहा
बादसाह रो विचार में पड़णो

मुग्गळवें[27] मां[28] दाखियौ[29], मन लागंती[30] मार ।
जद झलियें[31] मुख मंझळी, तद केहौ[32] उपचार ॥१॥

---

१ आ. मारामर । इ. मारा मारा । २ आ.इ. हुई । ३ इ. म्लेच्छां । ४ आ.इ. गिलागिल । ५ आ. कुपीया । ६ आ.इ. पबल । ७ अ. दुरमति । ८ अ.आ. दुभरीयं । ९ अ. कुक्याउ । इ. कुण्याउ । १० इ. हुहिण-ए । ११ इ. सुणीयं । १२ आ.इ. कपियं । १३ इ. विप्रीत । १४ इ. कामौ । १५ इ. मोहिणौ । १६ आ. हैत । इ. हेत । १७ इ. कूं । १८ अ. नात । इ. भ्रां । १९ आ.इ. पुत्रांइ । २० आ.इ. मुगलाण । २१ आ.इ. बुधी । २२ इ. कि । २३ आ. शब्द । इ. सबद । २४ आ,इ. दिन । २५ इ. नहि । २६ आ.इ. मछगंधाण । २७ आ. मूगल । इ. मुगलवें । २८ इ. मा । २९ आ.इ. दोषीयो । ३० इ. लागीती । ३१ आ. झलीयें । इ. फलीयें । ३२ इ. केहो ।

असपत[1] राव ओलीभियौ[2] , विध[3] जिण वांकम[4] होइ ।
कुमति[5] पग ऊपरं[6] कहे[7] , कहौ[8] सुमंती कोइ ॥२॥

वडे वजीरे मंत्रिए[9], कहियौ[10] वयण विचार ।
जो आवै राठौड नृप[11], तौ नह[12] आवै हार ॥३॥

धन सूरातन धन अडप, धन राठौडां ईस[13] ।
सुणि सुरतांण कबूल की, वात विसव्वा - वीस[14] ॥४॥

बाहसाह रौ महाराजा गजसींघ नै सहायता सारू बुलावणौ

गाहा चौसर

आप कहै पतसाह[15] अचग्गळ[16] ।
"गाजीसाह" कमणा[17] तौ जांमळ ॥
तूं[18] खुरसांण हिंदुवां[19] आगळ ।
किलंबां - राइं लिखे इम कागळ ॥१॥

खांडै[20] - राव सिरै नव - खंडां ।
मारू तौ[21] सिर भारथ मंडां[22] ॥
भारथ[23] भळायौ[24] तौ[25] भूग्र-डंडां[26] ।
मांडे[27] तूं[28] थांभां ब्रहमंडा[29] ॥२॥

तुं[30] राजा दळ - थंभ कहायौ ।
ए[31] भर भार भुजै तौ आयौ ॥
इळ साइजादे[32] दुंद[33] उठायौ ।
पातसाह[34] फुरमांण पठायौ ॥३॥

---

१ आ.इ. असपति । २ आ. ओलोभीयो । इ. आलोभीयो । ३ आ. विधि । ४ इ. वंकम । ५ आ.इ. सुमतिज । ६ आ. उपरि । ७ अ. कहौ । ८ आ.इ. कहै । ९ आ. मंत्रीए । इ. मंत्रीये । १० आ.इ. कहीयो । ११ आ.इ. निृप । १२ इ. नहि । १३ आ. इस । १४ आ.इ. विसवा-वीस । १५ आ.इ. पतिसाह । १६ इ. अचगल । १७ इ. कवण । १८ आ.इ. तु । १९ आ. हींदूवां । इ. हीदूवां । २० आ. षांडेराव । २१ अ. तो । २२ अ. मंडे । २३ अ. भार । २४ आ. भलीयो । २५ अ. तो । २६ इ. भूग्रडंडे । २७ आ. मांडै । २८ आ. तु । इ. तुं । २९ आ. ब्रह्मडां । इ. ब्रह्मडे । ३० आ. तु । इ. तुं । ३१ इ. ऐ । ३२ आ. साईजादै । इ. साहिजादै । ३३ इ. दुद । ३४ आ. पातिसाह । इ. पतिसाह ।

हुजम लिखे मोकळियौ[1] हजरति ।
तांम[2] पहूंतौ[3] जोधां तख्तति[4] ।।
कमध वडी तो पासि[5] करामति ।
पति[6] मो रखौ[7] कहै दिल्ली पति ।।४।।

दूहा

"गजपत्ती दिस मेल्हियौ[8], असपती फुरमांण ।
खुरम विलग्गौ राह हुइ[9], तौ छूटै खुरसांण ।।१।।
कमण सहींदू कुण तुरक, कमण कहैवा पीड ।
तौ[10] पाखै राउ राठवड[11], बियै न भज्जै भीड ।
हिंदूवै[12] सुरतांण तूं, तूं सुरतांणां[13] संड[14] ।
तूं सुरतांणां[15] चींतगर[16], तूं[17] सुरतांणां[18] चंड[19] ।।३।।
गाड पडंतै "गजपती, पूठो जोध अडूर ।
तूं साह आलम समरियौ[20], छीक अमूझौ[21] सूर ।।४।।
जोधपुरौ जोगणिपुरै, जग - जेठी वळवंत ।
लेण क लंका रांमचंद, हक्कारै हणमंत ।।५।।
"गजबंधी"[22] तेडावियौ[23], सगळौ[24] साऊ[25] सत्थं ।
इळि[26] नवकोटी मुरधरा, कुण कुण सुहड[27] समत्थ ।।६।।

महाराजा गजसींघरा सांमंतांरी सभा

छंद पध्धरी

"राजधर" आदि रिण भीम पत्थ ।
"खेमाळ" समोभ्रम[28] खडग हत्थ ।।

---

१ आ.इ. मोकलीयौ । २ आ.इ. ताम । ३ आ. पहुंतौ । इ. पहुतौ । ४ आ. तषति । इ. तषत । ५ आ. पास । ६ आ. पाढी । इ. पत । ७ आ.इ. राषी । ८ आ.इ. मेल्हीयौ । ९ इ. हूय । १० अ. तो । ११ इ. रठवड । १२ आ. हींदूवैं । इ. हींदुवै । १३ इ. सुरताण । १४ इ. सड । १५ इ. सुरतांणा । १६ इ. चितगिर । १७ आ.इ. तु । १८ इ. सुरताणा । १९ इ. चड । २० आ.इ. समरीयौ । २१ अ. अमुही । २२ अ. गज बंधा । आ. गजवंधा । २३ आ.इ. तेडावियौ । २४ इ. सगलो । २५ आ.इ. साउ । २६ इ. इल । २७ आ. सोहड । इ. सोहडए । २८ अ. समोभ्रमे ।

अजमेर कियौ[1] जुध आसमांन[2] ।
आसोप तखत्तह राज - थांन ।।१।।

नवकोट धणी "गाजी" नरेस ।
दाहिणी[3] भुजा दीपै[4] महेस ।।
"सूरिजमल" पित्ता[5] सत्रु[6] संघारि ।
जिण लियौ[7] मांन चहुवांण[8] मारि ।।२।।

मंडोवर रूप महेसदास ।
उतळी - बळ[9] पौरस अस्सहास[10] ।।
"दळपत्त"[11] सुत ओपम दळेय ।
दादौ[12] उदियासिंघ[13] "मालदेय" ।।३।।

"आसक्रन्न" कमध्धज अवीयाट[14] ।
परि-भवे[15] जेण पह मेद - पाट ।।
दळ - थंभ पिता "देदौ" अडूर ।
चहुवांणा[16] प्रवाडै लियौ[17] सूर ।।४।।

जग - जेठ खत्री - गुर "खेम" जाउ ।
पीपाड[18] तखत्तह[19] कंन्हराउ ।।
दखणाध[20] देस विढ़ियौ[21] अगाहि ।
मुर दीह रहै[22] रिण[23] - खेत मांहि ।।५।।

खाडुक-मल[24] "मानौ" "खेम" नंद ।
चहुवांण जेण[25] भांजियौ[26] "चंद" ।।
बिरदैत जोध घाटै[27] - बराड ।
"गोइंद"[28] कणैठ काळौ - पहाड ।।६।।

---

१ आ.इ. कीयौ । २ आ.इ. असमान । ३ अ. दांहिणी । इ. दाहणी । ४ इ. दापै । ५ आ.इ. पिता । ६ अ. सत्र । आ. सत । ७ आ.इ. लीयौ । ८ इ. चहुवांण । ९ आ. अतली बल । इ. अत्रुल-बल । १० आ.इ. असि हास । ११ इ. दलपति । १२ अ. दादो । १३ आ.इ. उदीयासिंघ । १४ इ. अवियाट । १५ आ. परिभवे । इ. परिभव । १६ इ. चहुवांण । १७ आ.इ. लीयौ । १८ इ. पीपड । १९ आ.इ. तषतेह । २० आ. दषणाद । इ. दषणाधि । २१ आ.इ. विढ़ायौ । २२ इ. रिहे । २३ इ. रिणै-षेत । २४ अ. षाड-कमळ । आ. षडकमलू । २५ आ. जेम । २६ आ.इ. भांजीयौ । २७ आ. घाठ-बराड । इ. घाट-बराड । २८ इ. गेयंद ।

जगमाल महेवै जैतहत्थं[1] ।
"माले" तिलक्क रावळ समत्थ ।।
"दूदा" सु-नंद[2] दूसरौ "मेघ" ।
राठौड वहै व्रत त्याग तेग ।।७।।

भगवांन दास भाराथ[3] भल्ल ।
"वगडी" तखत्त[4] आखाडमल्ल[5] ।।
लांगडौ हणुं जिम[6] लियण[7] बाथ ।
ओगम लागे[8] अणभंग नाथ ।।८।।

"जसवंत" मंडोवर दिग्गपाळ ।
"माहेस" कळोधर मच्छराळ ।।
"सादूळ" पिता विढ मरण दीह ।
देवडौ संघारे समर सीह ।।९।।

"माधव" मयंद गय घड विभाड ।
पूरणलोत[9] प्रिसणां[10] पछाड ।।
है-थाट चलावै चाढ[11] हीक ।
मडळीक हरौ गिड मंडळीक ।।१०।।

नरपाळ काळ मांझी[12] निडार ।
"भांणोत[13]" भुज[14] नवकोट भार ।।
जैसिंघ हरौ जीपत्ति[15] जंग ।
इक पखर लक्ख पक्खर अभंग ।।११।।

बल्लाळ लहै[16] विहुं[17] बांह लक्ख ।
राठौड रूप तेरहां[18] सक्ख ।।
"गोपाळ" समोभ्रम काळ जम्म ।
दहिया[19] घड डोहण भड दुगम्म ।।१२।।

---

१ इ. जैत्र हथ । २ आ.इ. सुतन । ३ अ. भराथ । ४ इ. तषेत । ५ आ. आषड-मल । इ. आषडमल । ६ इ. जियण । ७ आ. लीयैण । ८ आ.इ. लगै । ९ आ. पूरणमलोत । इ. पूरमलोत । १० इ. पिसणां । ११ आ.इ. चाडि । १२ आ.इ. माझी । १३ आ. भाण उत । इ. भांण उत । १४ इ. भुजे । १५ आ. जीपति । १६ इ. लहे । १७ इ. विहु । १८ आ.इ. तेरहै । १९ इ. दहीयां ।

वीठल्लदास वीराधि[1] - वीर ।
सांमंत अभंग रिण सूरधीर ।।
दहियौ[2] जिण मोडण जडि दवाढ ।
खींवर रिण वाहै खडग वाढ ।।१३।।

गोअरधन[3] गाढिम लोह - गड्ढ ।
सग्रांम - चंद समोभ्रम सनड्ढ ।।
बाळा - पुर विढियौ[4] बळ प्रमांण ।
वड रावत लौडौ[5] खुरासांण ।।१४।।

संग्रांम कांम "राजो" स "कूप" ।
राठौड प्रमांणै पंच - रूप ।।
"विसनावत" वीरति[6] वघी धाड[7] ।
मेडतियौ[8] मुइयड[9] भड किमाड ।।१५।।

गोपाळ दास गरूग्रत[10] मेर ।
पर घड विभाड पक्खरह सेर ।।
"सुंदर" सुतन्न सात्रवां[11] सल्ल ।
मरजाद महा नेठाह - मल्ल ।।१६।।

अणडोल असंक्रत आसकन्न[12] ।
मांनावत माझी निभै - मन्न ।।
"झूंझार[13] भार असमांन झेल ।
ईसर[14] हर ओपम रिण अठेल ।।१७।।

"जगतौ"[15] भुजाळ जमजाळ जोध ।
कमधध्ज भयंकर काळ क्रोध[16] ।।
"रांमउत" "रूप" राठौड वंस ।
अवतार वीरम - देव अंस ।।१८।।

---

१ इ. वीराध-वीर । २ आ.इ. दहीयो । ३ इ. गोवर-धन । ४ आ.इ. विढीयो । ५ आ.इ. लोडो । ६ इ. वीरत । ७ इ. वधीयाड । ८ आ. मेडतीयो । इ. मेडतीयो । ९ अ. मुईअड । १० आ. गरुअत । ११ आ.इ. सत्रुवां । १२ आ. आसक्रन । इ. आसक्रंन । १३ आ. झुझार । इ. झूझार । १४ आ.इ. इसर । १५ आ. जगतो । इ. जगता । १६ इ. क्रोध ।

हरदास विढ़े वाहक्क मन्न ।
तुडतांण तुग[1] "नाहर" सुतन्न ।।
"सुरजन्न" हरौ समहर[2] अपल्ल ।
राठौड अभनमौ[3] रायमल्ल[4] ।।१९।।

"राजौ" निराट रिम थाट - चूर ।
"सांवळ" सुतन्न ऊजळौ सूर ।।
अभनमौ भोज अणखूट चाइ[5] ।
घण कोपि आबूं घड वरण घाइ[6] ।।२०।।

जगनाथ तखत पाली जडाग[7] ।
अखराज[8] हरौ वरजाग[9] आग[10] ।।
दूसरौ[11] "मांन" माझी[12] दुझल्ल ।
मछरीक जिसौ मूंछाळ[13] मल्ल ।।२१।।

चहवांण "घाळ"[14] चम्मर[15] बंबाळ ।
सूरमौसीह सांमत सिंघाळ[16] ।।
"सिखरा" सुतन्न साचोर[17] सोह ।
दूसरौ "कन्न" अरि घडा डोह ।।२२।।

नरसिंघ दास नेठाह[18] धीर ।
जगमाल सुत्त कमधज[19] कंठीर ।।
उजवाळै "ऊंदां" हर[20] अबीह ।
डूंगरसी "जसवंत" तेजसीह ।।२३।।

"मोहण" आभूखण मारवाड[21] ।
राठौड जुडै जोपंत राड[22] ।।
"गोपाळ"तणौ खत्रियां[23] नगेम ।
खग त्याग अभनमौ[24] 'रयण' 'खेम' ।।२४।।

---

१ इ. तुड तुंग तांण । २ आ.इ. समहरि । ३ इ. अभिनभो । ४ इ. राइमल । ५ इ. चाई । ६ इ. घाई । ७ आ.इ. जडागि । ८ आ.इ. अषैराज । ९ इ. वरेजाग । १० आ.इ. आगि । ११ इ. दुसरो । १२ इ. मांझी । १३ आ. मूछाल । इ. मुछाल । १४ आ.इ. घाल । १५ आ.इ. चंमर । १६ आ. सिधाल । १७ इ. साचोर । १८ आ. नैठाह । १९ आ. कमधझ । २० आ.इ. उदांहर । २१ आ.इ. मारवाडि । २२ आ.इ. राडि । २३ आ. षत्तीयां । इ. षत्रीयां । २४ इ. अभनम ।

"अजमाल" भयंक ऊहडां[1] छात ।
"गिरमेर"तणा गिरमेर गात ।।
"कोढणा" धणी कमधजे राह ।
नव - कोटी आगळ नरां - नाह ।।२५।।

गोपाळय जांणै दसै[2] देस ।
नव - गढ किमाड माडह नरेस ।।
आसाव्रत[3] केवी करण अंत ।
काळै - नळ[4] भाटी करड दंत ।।२६।।

दळ रूप दळां ओपम "दयाळ" ।
बांहां प्रळंब[5] भाटी बांहाळ ।।
"गोपाळ"तणौ किरमाळ झल्ल ।
मछरीक वहै जिण[6] सहस मल्ल ।।२७।।

"केसव" "अजीत" सरजीत कोट ।
"वाघ" उत वरण अरि घड[7] अबोट ।।
"माल" हरौ[8] ओपम महि अजाद[9] ।
नव-गढ नरेस नव-गढां-नाद नाद ।।२८।।

मछरत्त[10] भीच[11] भाटी मरद्द ।
"अचळेस"[12] अचग्गळ रामचंद ।।
"सुरतांण"[13] पिता बंधियै[14] नेत ।
मुड[15] मांझी[16] मारै[17] मूझै[18] खेत ।।२९।।

रिण धोधर "बेणौ" प्रथीराज[19] ।
भाटियां[20] भुजे भाराथ लाज ।।
अजमेर मुऔ[21] "गोइंद" तात ।
सकबंधी जांणै दीप सात ।।३०।।

---

१ आ.इ. उहडां । २ इ. दस । ३ आ.इ. आसाव्रत । ४ आ. काले-नल । इ. काल-नल । ५ आ. पलंब । ६ आ. जिसा । ७ इ. घडि । ८ आ.इ. मल हर । ९ आ.इ. मृजाद । १० आ. मछरत । इ. मछरंत । ११ इ. भाच । १२ इ. अचलस । १३ आ. सुरीतांण । १४ आ.इ. वधीयै । १५ आ. मुर । १६ आ. मोझो । इ. माझी । १७ आ.इ, मारे । १८ आ. मूमो । १९ आ.इ. प्रिथीराज । २० आ.इ. भाटीयां । २१ आ.इ. मूवो ।

"ईसर" वहंत वपि वीर - व्रत ।
भाटियां[1] - राउ सांमह भगत्त ॥
हरदास तणौ[2] मारकां[3] हद्द ।
रण - ताळ काळ पाखर रवद्द ॥३१॥

हरदास न चूकै चाइ[4] चौज ।
अणहूंतै[5] वीकम[6] हुतै भौज[7] ॥
खग त्याग उजाळै टाळि खोड[8] ।
कांनावत जादम छपन कोड[9] ॥३२॥

रुघनाथ भीम भाटी भुजाळ ।
काळौ पहाड चालतौ काळ ॥
जोग-रज पिता नृप[10] छळि निभ्रंत ।
जमदाढ़ हणै[11] गरज प्रांण अंत ॥३३॥

"भगवांन" "भांण" वैचत्र[12] बाह ।
सुरतांण तणा समहर सनाह ॥
"रामेण" कळोधर "रूप" रेण ।
सारखा[13] अरज्जण भीमसेण ॥३४॥

देवडौ "अंचळ" दोमज[14] दुबाह[15] ।
"रावत्त" समोभ्रम[16] रिमां - राह ॥
"डूंगरे" मेर "परबत" "माळ" ।
अरबद्द अढ़ारै - गिरि[17] उजाळ[18] ॥३५॥

कळि-मूळ कमधज्ज "रूप"[19] कन्न ।
तुडि भुइ[20] अपल "जैमाल" तन्न ॥
अभनम्मौ "वीदौ" "भारमल्ल" ।
"बालां" हर[21] ओपम बाथ बल्ल ॥३६॥

---

१ आ.इ. भाटीयां । २ इ. हरौ । ३ इ. मारकौ । ४ आ.इ. चाई । ५ आ.इ. अणहुतै । ६ इ. विकम । ७ आ. फोज । इ. मोज । ८ आ. षाड । इ. षोडि । ९ इ. काडि । १० आ.इ. नृप । ११ आ.इ. हिणै । १२ इ. बेचत्र । १३ आ.इ. सारिष । १४ आ. दोमंझ । इ. दोमजि । १५ इ. दूबाह । १६ इ. समोभ्रम । १७ आ. अटारै-गिर । इ. बांरैगिर । १८ आ. उजाल । १९ इ. कूंप । २० आ. भूइ । इ. भूई । २१ इ. बाला-हर ।

आसकन्न[1] वडौ[2] एकाधपत्ति[3] ।
नींब-उत[4] नमौ[5] आतम सकत्ति ॥
ओपमा[6] करन्नै अणं - नींद[7] ।
वरियांम[8] कुंआरी[9] घडा[10]-वींद ॥३७॥

"नरहरौ"[11] निडर "कल्यांण" नंद ।
कमध्धज पराक्रम कपी[12] चंद ॥
आया कणैठ, बंधव अबीह ।
त्रिवधी घड डोहण तेजसीहं[13] ॥३८॥

पूरणह - मल्ल बाहां पलंब[14] ।
"ईदा" हर[15] राखै रूकि अंब ॥
वर - वीर धीर सुरतांण वेत ।
वाखांण चौरासी वीर - खेत ॥३९॥

पडिहार भीम भुज दांन भत्त ।
प्रित्थमी[16] दीप जांणै सपत्त ॥
थाकै सति साहंस[17] विस्सरांम ।
"नाद"[18]उत कियौ[19] रवि चंद नांम ॥४०॥

अनि अन्नि राज वंसी अनेक ।
इक्काह[20] भलौ वरियांम[21] एक[22] ॥
मोटा गढ़ जोधपुरै मझार ।
रावत्त मिळै राजां[23] दुवार ॥४१॥

आवंत[24] दरग्गह अन्न - मंध[25] ।
मौड - बंधा ठाकर मुगट - बंध ॥
जोधपुर धणी आगळ[26] जोधार ।
दीवांण[27] बइट्टा करि जुहार ॥४२॥

---

१ आ. आसक्रंन । २ आ.इ. वडो । ३ आ. एकाधपति । इ. ऐकाधपति । ४ आ.इ. नीब उत । ५ आ. नमो । इ. मो । ६ आ.इ. ओपम । ७ आ.इ. अण-नीद । ८ आ. वरयांम । इ. वरीयाम । ९ आ.इ. कुआरी । १० आ. घडां । ११ इ. नर हरो । १२ आ.इ. कपि । १३ इ. तेजसिंह । १४ इ. प्रलंब । १५ आ. ईदा हर । इ. इंदाहर । १६ आ.इ. प्रिथमी । १७ इ. साहस । १८ आ. नाद ऊत । १९ आ.इ. कीयो । २० आ. दूकाह । इ. एकाह । २१ आ.इ. वरीयांम । २२ आ इक : २३ आ.इ. राज । २४ अ. आवत । २५ आ.इ. अनि-मंध । २६ आ. आगली । इ. आगलि । २७ इ. दीवाण ।

सांमंत[1] सुहड[2] दीपै[3] सरब्ब ।
जीपंत जिके जुध महा - प्रब्ब ।।
प्रौचाळ[4] महा जोधा प्रचंड ।
डोलता[5] डहै नभ भुजा - डंड ।।४३।।

ढैचाळ ढलां[6] ढाहण[7] सगाह ।
भड सिहर[8] जोध आजांन - बाह[9] ।।
चाचरै जिकै चांडंत देग ।
तेजरी तीह[10] तूटंत तेग ।।४४।।

दळ सुहडा[11] सूरा - तन दिपंति ।
पांन सूं दीप किरि प्राजळंति[12] ।।
दिग्गंबर देहा देव - गात ।
आदीत दुवां - दस[13] मुखै[14] आत ।।४५।।

वेहद्द हद्द वागै वणाव ।
चम्मीर हीर जांमै जडाव ।।
जगमगै जोप कसबी[15] अनूप ।
नीलक्क मसंजर लाल सूप ।।४६।।

आभूखण सोहै अंग अंग ।
सिर पाग[16] वादळाई सुचंग ।।
केसरिया[17] वागा वपे किद्ध[18] ।
सोहिया[19] सुहड[20] आखाड-सिद्ध[21] ।।४७।।

वरियांम[22] विराजै तेण वार ।
आभूखण वसत्रां अलंकार ।।
डांबिये[23] फरी सेले दुवाढ ।
जरकम्मर[24] तेगां जम्मदाढ ।।४८।।

१. आ.इ. सामंत । २ आ.इ. सोहड । ३ इ. दीपे । ४ आ.इ. पुचाल । ५ आ.इ. डोलतँ । ६ आ.इ. ढल । ७ इ. गृहाण । ८ आ.इ. सेहर । ९ आ. अजांन-बाह । इ. अजान-बाह । १० इ. त्यांह । ११ आ.इ. सोहड । १२ अ. प्राजलंत । १३ अ. दुआ - दस । १४ इ. मुषे । १५ आ. कसमी । १६ आ.इ. पाघ । १७ आ.इ. केसरीवा । १८ आ. किध । इ. कीध । १९ आ.इ. सोहीया । २० आ. सोहड । इ. सोहड । २१ आ.इ. अषाड-सिध । २२ आ.इ. वरीयांम । २३ आ.इ. डाबीयँ । २४ आ. जरकमर । इ. जरंकमरं ।

कोमुंड खवै कडि कसै तूंण[1] ।
भड - पत्थक भीखम करन[2] द्रोण ॥
केसर तिलक्क भाळीअळेय[3] ।
मुक्कता - माळ सोहै गळेय[4] ॥४९॥

हिरनमै पन्न हीरै[5] जडित्त ।
सांकळा करग्गे सुसोभित ॥
मुद्रका सुकर - साखा सुभग्ग ।
मिण जांण दिपै फुण सेस नग्ग ॥५०॥

आभरण रयण उद्योत कार ।
सौरंभ अग्ग - मद[6] रंभ सार ॥
देहा[7] विलेप स्रीखंड डाळ ।
मालती चंपका[8] पुहुपमाळ[9] ॥५१॥

अहि - वेल पत्र कप्पूर[10] सुक्ख ।
तंबोल लाल सोहंत मुक्ख ॥
आघ्रांण[11] छभा परिमळ असंख ।
गुंजारव[12] डंबर भ्रमर[13] पंख[14] ॥५२॥

सोरंभ[15] फूट जब्बाध[16] एम ।
घण वूठं जळहर लहर[17] जेम ॥
पेखियै[18] तास[19] सोभा[20] परम्म[21] ।
किसनागर अंबर जख कदम्म ॥५३॥

सूंधै सरीर किय[22] गरक्काब ।
अब्बीर नीर पहरै गुलाब ॥
सम्मूह सुहड[23] परिमळ सुभट्ट ।
गांधियां[24] तणा[25] किरि[26] जांण हट्ट ॥५४॥

---

१ अ. तोण । इ. णि । २ इ. कन । ३ आ इ. भालीअलेह । ४ इ. गलेह । ५ इ. हीरे । ६ आ.इ. मृग-मद । ७ इ. देहां । ८ आ.इ. चंपक । ९ आ.इ. पुहपमाल । १० आ. कपूर । इ. कपुर । ११ आ.इ. आध्राण । १२ आ.इ. गूंजारव । १३ आ.इ. भमर । १४ अ. षंष । १५ आ. सौंरभ । १६ आ. जव्राध । इ. जुबाध । १७ इ. पलहर । १८ आ. षेषीयै । इ. पेषीयै । १९ आ. नास । २० इ. सौभा । २१ आ. परम । इ. परंम । २२ आ. थीयो । इ. कीयो । २३ ओ.इ. सोहड । २४ आ.इ. गांधीया । २५ इ. तणां । २६ अ. किर ।

रावत्त सहू राठौड देव ।
'गजपती' इंद[1] दूजौ[2] 'गंगेव' ।।
राजांन[3] राउ[4] राठौड धन्न ।
किरि जांण दीठ अवतार कन्ह ।।५५।।

गजसिंघ मेर गिरमेर गात ।
सिंघासण[5] आसण सीस छात[6] ।।
चौसर[7] सीस चम्मर ढुळंत[8] ।
कीरती[9] सुकब चारण भणंत ।।५६।।

'रुध' सांम वेद वाचंत[10] विप्र[11] ।
नखतंत राय[12]जद सुणंत[13]नृप्प[14] ।।
दीसंत[15] दुयँग[16] पद देव-गत्ति ।
दीवांण वडौ वड देसपत्ति ।।५७।।

दीवांण सुहड दीपै सुवंस ।
पाबासर जांणै राजहंस ।।
रावत इसा[17] मिळिया[18] राजिंद्र ।
अणुहार छभा सुर[19] जांण इंद्र[20] ।।५८।।

दूहा

इंद्रापुर आरख[21] इसा, प्रथमी[22] इंद्र[23] प्रताप ।
इंद्रा[24] छभा कमधां छभा, इंद्र 'गजैसी' आप ।।१।।

मघ नायक[25] 'मांडण' हरौ, 'राजौ' भीम भुजाळ ।
सयळ छभा पंगति सुहड[26], जांणक[27] मुगतामाळ ।।२।।

चाचर सूर पऊर[28] गह, चाचर चाढ़ै देग ।
लक्ख लहै दुहु वांह-बळि, दुइं[29] दुइं बंधै तेग ।।३।।

---

१ इ. ईंद्र । २ इ. दुजो । ३. आ. राजान । ४ इ. राव । ५ इ. सींघासण । ६ आ. छत्र । इ. छात्र । ७ अ. चोसरी । ८ आ.इ. ढुलंती । ९ आ. कीरति । इ. किरत्ति । १० इ. वाचंति । ११ इ. विप । १२ आ. राइ । इ. राई । १३ आ. सुणत । इ. सुणंति । १४ आ.इा नृिप । १५ आ. दीसंति । १६ आ. दुयंगग । इ. दुयंगम । १७ इ. ईसा । १८ इ. मिलीया । १९ इ. सूर । २० आ.इ. ईंद्र । २१ इ. आरीष । २२ अ.इ. प्रियभी । २३ इ. इंद्र । २४ इंद्र । २५ आ. नाइक । इ. नाईक । २६ आ. सोहड । इ. सोहडि । २७ आ.इ. जाण । २८ इ. पउर । २९ अ. बलि ।

दीठी हेक दईव-गति, जोधपुरै दीवांण।
सुहड[1] गडे-वड भड सिहर, मिळिया[2] रांणो[3]-रांण ॥४॥

कवि-वाच

गाथा

गजसिंघौ[4] राजिंदौ, खत्रियें[5] राजसिंघ वर-खत्री[6]।
सुर अधपत्ती[7] इंदौ[8], सुर तेतीस क्रोड[9] सुरामुक्ख[10] ॥१॥
सिधांण छभा रुद्रौ:[11], बळि पयाळ स्रग इंद्रांणी[12]।
रट्ठौड वीर वसुधा:, त्रिभवणे[13] छभा चतुरह: ॥२॥
सुरपुरी अनंत सिद्धा, नभे नाखत्र-माळ नवलख।
तेत्रीस[14] क्रोड,[15] सुरए, तेरह साखा[16] वंस राठौडह[17] ॥३॥
पाबासरेण हंसा, सिंघलदीपेण[18] सिंह[19] सादूळा।
वीजा चले न नग्ग[20], जोधपुर जोध कमधज्जं ॥४॥
लिजीयौ[21] नयरेण हीरा, सायर मंझेण रतन नेपती।
स्रोवण[22] मेर सिखरे, सुहडा[23] सिध खेत मंडोवर ॥५॥
सांमंत[24] सुहड[25] सूरां[26], जोधा रिणमल जोधवरियांमं[27]।
दीवांण[28] देसपत्ती, मिळिया[29] थट मेखळा-मेर ॥६॥

महाराजा गजसींघ रौ वरणण

गाहा चौसर

साखेतां[30] सुहडां[31] सांमंतां[32]। विरदैतां जोधां वळवंतां[33]।
'गाजीसाह' सिरंगै[34] मंतां। रांणो-रांण[35] मिळ रावतां ॥१॥

---

१ आ.इ. सोहड। २ आ.इ. मिलीया। ३ आ.इ. रांणो-रांण। ४ आ.इ. गजसिंघो। ५ आ. षत्रीये। इ. षत्रीह। ६ आ. वरषती। इ. वरषत्री। ७ आ. अधपती। इ. अधिपती। ८ आ. इंदो। इ. इंदौ। ९ आ.इ. करेड। १० आ.इ. सुरमुष। ११ आ. रूदो। इ. रुदौ। १२ आ. इद्राणी। १३ अ. तिभवणे। आ. त्रिभवण। १४ आ.इ. तेतीस। १५ आ.इ. कोड। १६ आ. सषा। इ. साष। १७ आ. रठोड। १८ आ. सीघलदीपेण। इ. सींघल दीपेण। १९ आ.इ. सीह। २० आ.इ. नगं। २१ अ. लीजे। आ. लिजी। २२ आ. श्रोवण। इ. श्रोण। २३ आ.इ. सोहड। २४ आ.इ. सामंत। २५ आ. सोहेड। इ. सोहड। २६ इ. सूरो। २७ आ. वेरीयांम। इ. वरीयांम। २८ इ. देवांण। २९ आ. मिलीयां। इ. मिलीया। ३० आ.इ. सषेतं। ३१ आ.इ. सोहडां। ३२ आ.इ. सामंतां। ३३ आ.इ. बलिवंतां। ३४ इ. सिरंगै। ३५ आ. राण राण।

वीच छभा "गजसाह" विराजै । छत्रपाट सिंघासण छाजै ।
साजै नाद दिहाडै साजै । देखि कळा ससि[1] पूनम[2] लाजै ॥२॥
वीरति[3] मुख सूरति विळकुळियं[4] । कमधज तेज कमळ कळमळयं[5] ।
किसन वरण माझिल कंठलियं[6] । सूरज[7] किरण जांण झळहळियं[8] ॥३॥
सांम[9] धरम कुळ धरम संभारै[10] । आच "गजैसी" खडग उभारै[11] ।
ऊफणियौ[12] असमांन अधारै । मिळिया[13] मूंछ अणी भूंहारै[14] ॥४॥
साहस बळ छळ पेख सनसरियं[15] । राव राठौड वीर रस्सरिसीयं ।
कूंत त्रिभाग घूण[16] करसीयं । हठि चढि[17] कोप मुलक मुख[18] हसियं ॥५॥
कमध[19] कहै कर रूक[20] कळासौ । आतम जोध विद्या अभियासौ ।
वात रहै व्रहमा वरसासौ । हुयसी जुद्ध नहीं ऐ[21] हासौ ॥६॥

महाराजा रा सांमंतां रो वरणण

उठिया[22] सोह करै औवासी । वीजळ परतक चौमंडावासी[23] ।
थोडै जंग घणघणा[24] थासी । कोइ[25] मत मंत्र[26] सुमत्ति[27] प्रकासी ॥७॥
वांका[28] भीचि[29] घणं भरियावळि[30] । इम बोलिया[31] भुजाडंड आंमळि[32] ।
भिडता भांजै सबळ भुजां बळि । अै मुह रावत तो[33] मुंह[34] आगळि[35] ॥८॥
सुहडां[36] करि जुहार सब्बांही । राज महेल राज धू-आंही[37] ।
राजा पद्धारै रळियांही[38] । मुख हसतै राव लग्गन[39] माही ॥९॥

तेपुर - वरणण

कांमाकांम कमधज दीठौ[40] । पलकां अतंर[41] अमी पइट्ठौ[42] ।
रत्ता लोचन मुक्ख[43] मजीठौ[44] । आवि सिंघासण[45] सिंघ बइट्ठौ[46] ॥१०॥

---

१ आ.इ. सिसि । २ इ. पूनिम । ३ आ. वीरती । इ. विरति । ४ आ.इ. विलकुलीयं । ५ आ.इ. कलकलीयं । ६ आ. कंठलीयं । इ. कंठालीयं । ७ इ. सुरज । ८ आ.इ. झलहलीयं । ९ आ.इ. साम । १० आ.इ. संभारे । ११ आ.इ. उभारे । १२ आ.इ. उफणीयो । १३ आ.इ. मिलीया । १४ आ.इ. भुंहारे । १५ आ. सांये । इ. सीयं । १६ आ. धुंण । इ. घुणे । १७ आ.इ. चडि । १८ आ. मूष । १९ इ. कमधज । २० आ. रूक । २१ इ. ए । २२ आ.इ. उठीया । २३ अ. चांमडवासी । २४ इ. घणं घण । २५ इ. कोई । २६ आ. मंत । २७ आ.इ. सुमति । २८ आ. वाका । २९ आ.इ. भीच । ३० आ.इ. भरीयावली । ३१ आ.इ. बोलीया । ३२ इ. अंमलि । ३३ इ. तौ । ३४ आ. मुह । ३५ आ. आगली । ३६ आ.इ. सोहडां । ३७ आ. धुआंही । इ. धुआई । ३८ आ.इ. रलीयां । ३९ आ. लगन । ४० आ. दिढौं । ४१ आ.इ. अंतरि । ४२ आ. पयिठौ । इ. पयठौ । ४३ इ. मूष । ४४ आ. मजेठौ । ४५ आ. सिघासण । ४६ आ. बयिठौ । इ. बयठौ ।

वप[1] सोळह[2] सिणगार[3] वनित्ता । लखण बतीस संजुगत ललित्ता[4] ।
सोभा सारिख[5] किरण सवित्ता । दीपै[6] मंदर राज दुहिता ॥११॥

कनक-लता पत्र वसत्रक कांमणि । भूहां[7] भमर[8] विराजै भांमीणि ।
चपळ नयण प्रफुलत चंद्रांणण[9] । किरि पेखे हि-म्रिगो[10] कमोदणि ॥१२॥

वदन कळा सोळह सिसहर वरि । कोमळ वप्प[11] वरन्नी केसरि[12] ।
वांमा अंग वणी वर सुंदरि[13] । कनकलता जांणै[14] कळप्पतरि[15] ॥१३॥

दैसौतां धूडह[16] भूलक्की । चंपक वरन कळी किरि पक्की ।
सांम सन-मुख आवी सबकी । सह बैठी सिणगार चवक्की ॥१४॥

गाथा

सिव सकत्ती सम मुगती[17], सिव मभि सकति सकति सिव मभे ।
आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड व्रहमंडी[18] ॥१॥
प्राचीन करम सुभए[19], पुरखा[20] पाइत उत्तमा[21] महिला ।
कुळ-दीप पुत्र जिणयै[22], कुळ धू[23] बिनै रूप संजुगता ॥२॥

कवित्त

सीळ-मांन संजुगत, कळा सोळह ससि-वरणी[24] ।
वाघ-लंक पिक-वांणि[25], हंस-गमणी म्रिग-नयणी[26] ॥
जिण जायौ "जसवंत", पाट पायौ सिंघासण ।
खुम्मांणी[27] पण खत्र, अंग लग्गौ[28] आभूखण[29] ॥
सारधू "भांण" सुहाग सूं[30], उदै-भाग आदीत वरि ।
कुळ-वहू "मल्ल" "गंगेव" घरि[31], कुळ-पुत्री "हम्मीर"[32] हरि ॥१॥

---

१ आ.इ. वपि । २ आ.इ. सोलेह । ३ आ. सिधर । इ. सिधार । ४ इ. ललता । ५ आ. सारष । ६ इ. दिपै । ७ आ. भ्रूहा । इ. भ्रुहं । ८ आ.इ. भ्रमर । ९ आ. चंद्राणिणि । इ. चंद्राणणी । १० आ. हिमग । इ. हिम्रग । ११ आ.इ. वपि । १२ आ. केसुरि । इ. कैंसुरि । १३ आ. सुंदरी । १४ आ.इ. जांणो । १५ आ.इ. कलपतरि । १६ आ. धूडी । १७ आ.इ. जुगती । १८ अ.आ. व्रहमंडी । १९ आ. सुभुऐ । इ. सुभए । २० इ. में यह पक्ति निम्न प्रकार है । 'पुरषा पाइत उजला उतमा महिला" । २१ अ. उतमा । २२ आ. जिणाये । इ. जिणऐ । २३ अ. घुव । २४ आ.इ. सिसि-वरणी । २५ आ. पिक-वाणि । इ. पिक-वांण । २६ आ. मिृग-नयनी । इ. मृग-नयणी । २७ इ. षुंमांणी । २८ आ. लगो । इ. लगै । २९ आ. आभुषण । ३० अ. सम । ३१ अ.आ. घर । ३२ आ.इ. हमीर ।

सुवपि सोळ स्रंगार[1], लाज बत्रीसेंइ[2] लक्खण[3] ।
खम्या धरम धीरज्ज, सीळ संतोख सतोगुण[4] ॥
रंभा देवांगना, रतन्न ग्रभा[5] पति रत्ती ।
गंगा गवरि लिछम्मि, जिसी सीता सतवत्ती[6] ॥
अखैराज - वंस जसराज - धू, धू - जिम धारण नह फिरी ।
'अमरेस' पुत्र जिण जनमियौ[7] घन[8] चहुवांण[9] कर्ण-गिरी ॥२॥

मन गंगा-जळ-निमळ, वदन किरि[10] पूनम[11] ससिहर[12] ।
सुवप व्रन्न[13] सोव्रन्न[14], गात मैंमंतक गैमर ॥
कडि[15] लंछण केहरी, जंघ जांणे जाळधंर ।
राइ-आंगण[16] गति क्रमति, हंस किरि[17] मांण-सरोवर ॥
'जग रूप' सधू 'जगनाथ' - कुळ, पदमणि किरि[18] सूरज प्रभा ।
बनीतौ कुलीण कुरम वडी, परम लछि पती वल्लभा[19] ॥३॥

चपळ नेत्र सारंग, रेख भ्रूहां[20] मकरंद ।
दीपक - नासा दिपंत[21], सरद - रेणी मुख - इंद्रह ॥
डंसण - बीज[22] - दाडंम[23], वेणि - वासग[24] - भुयंगम ।
भटियांणी[25] वर कमध, समद[26] गंगा नदि[27] संगम ॥
'कलियांण'[28] सधू मोटै कुळहि, सुवप महातम सुरसरी ।
इधकार सील अधिक वडै, जमळि[29] कंत जैसल - गिरी[30] ॥४॥

दुति सोभा दांमणी[31], वरन आदीत वरन्नी ।
भाव - सिंध सारधू[32], देव कन्या[33] उतपन्नी ॥
आप सकति अवतार, अउब आभूखण अंबर ।
करग[34] पंच किरि साख, कांम जांणे[35] पंचे-सर[36] ॥

---

१ आ.इ. सिंगार । २ इ. बतीसैइ । ३ आ.इ. लषण । ४ इ. सतगुण । ५ इ. ग्रभा । ६ इ. सतवंती । ७ इ. जनमीयौ । ८ इ. घण । ९ अ. चहवांण । १० अ. किर । ११ इ. पूनिम । १२ इ. सिसहर । १३ इ. व्रंन । १४ इ. सौव्रंन । १५ इ. कडियां । १६ आ. अंगण । इ. अंगणि । १७ अ. किर । १८ अ.आ. किर । १९ इ. पति-वल्लभा । २० इ. भ्रुहं । २१ इ. दिपंति । २२ इ. बीय । २३ इ. दाडिम । २४ आ. वासिग । इ. वासग । २५ आ.इ. भटीयांणी । २६ आ.इ. समंद । २७ आ. गंगा नहि । इ. गंगा नदी । २८ आ.इ. कलीयांण । २९ अ. जमल । ३० इ. जेसल-गिरी । ३१ इ. दामणी । ३२ इ. सारधु । ३३ इ. किन्या । ३४ इ. करगं । ३५ इ. जांणे । ३६ इ. पंचई-सर ।

बतीस[1] लखण चौसठ[2] कळा, आंबेरी उत्तम सहज।
कूरंम[3] संपेखे[4] मुख कमळ, सरद इंद्र पावंत[5] लज ॥५॥

त्रिहुं पक्ख ऊजळी[6], कमळि[7] निकळंक कळा निधि।
मांण महातम मरट, अगड सूरातन अव्वधि[8] ॥
प्रविता पारब्बती, कना कमळा सावंत्री।
जमना गंगा जिसी, चंद्र - भागा सरसत्ती ॥
'चंद्रभांण' सधू चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी।
रूपक चडावण रांम - पुरी[9], इधक रूप इंद्रायणी[10] ॥६॥

लोयण[11] चंचळ चपळ[12], अचळ धू जिम मन धारण।
कडि मयंद[13] मुख इंद्र[14], दीरघ वैणी अहि दारण ॥
मद गयंद गति मंद, काया जांणे अभ[15] कंदळि।
वपि चंपक दळ वरण[16], सीस गुंजार करै अलि ॥
सत्र साल[17] पढीजै[18] वीरभद्र[19], प्रघट[20] जांम है मह प्रथी[21]।
जाडैचोज 'जसवंत' जांम, धु जिसी[22] गंगा भागीरथी ॥७॥

नवसात् ससि[23] वदन, अरक क्रांइत्तक[24] ऊजळ[25]।
डसण हीर[26] किर ललित, मुक्ख लोयणां[27]...भीभळ ॥
कमळ पत्र कर चरण, कंठ मोताहळ माळा।
प्रवित अंग मन चंग, गंग जांणै[28] जळ धारा ॥
सारधु[29] सिखर महि-क्रन्न सुभ्र, रूप अनोपम वेरावळ रची।
चहवांण इंद्र कमधज्जरै, साचौरी सुंदर सच्ची ॥८॥

चख चंचळ मन अचळ, कमळ चख भुहां[30] अलीअळ[31]।
तन ऊजळ[32] पति रत्त[33] रूप भरता रुचि मंझळ[34] ॥

---

१ इ. बत्रीस। २ इ. चौसठि। ३ इ. कूरमे। ४ इ. संपेषै। ५ इ. पावंतव। ६ इ. उजली। ७ अ. कमल। ८ इ. अविधि। ९ इ. रांम-पुरि। १० इ. इंद्राइणी। ११ इ. लोइण। १२ अ. पल। १३ आ.इ. मयंक। १४ अ आ. इद्र। १५ अ. अंभ। १६ आ.इ. वरन। १७ आ. सतसाल। १८ आ. पढजै। इ. पढुजै। १९ इ. वीरभ्रद। २० इ. प्रघठ। २१ आ. प्रिथी। २२ अ. धूजि। २३ आ. सिसी। इ. सिंघ। २४ आ. कांईतक। इ. क्रांइतक। २५ आ.इ. उजल। २६ आ.इ. हीरन। २७ आ.इ. लोइण। २८ आ.इ. जांणे। २९ अ. सारधी। इ. सारधू। ३० इ. भ्रूहां। ३१ इ. अलियल। ३२ आ.इ. उजल। ३३ अ. पतिरंन। ३४ इ. मंडल।

केहरि जिम कडि क्रिम्स, लगति चालंतो गजिंद्रह[1] ।
सोभति वेंणी[2] सरप, हरै[3] धीरज्ज खगिंद्रह[4] ॥
कुळ मोटै बहुवां कुळ धुवां, मांन महातम[5] निरवहै ।
कण सूप जिहीं[6] औगण[7] तजै[8], गुण मोताहळ जिम ग्रहै ॥६॥

आदू मंजन करिध, पाट पेहरे देही दळ ।
नयणे[9] कज्जल रेख, तिलक कुंकम भाळीयळ ॥
कणै कांन त्राटंक[10], वेण नासा मोतीहळ[11] ।
हार उर[12] चंदन विलेप, रची[13] कांकण कटि मेखळ ॥
गळि पुहप माळ नूपर[14] पगे[15], अति तंबोळ[16] मुख चातुरो ।
सिणगार[17] सबांही[18] खोडसै[19], सह[20] सोहै[21] वर सुंदरी ॥१०॥

जिहं[22] वांणक्क[23]कटाख[24], चपळ नयणी चंद्राणणि[25] ।
के कुरंग लोचना, कांम अक्खी केकांणी ॥
सूकेसी[26]. उर - वसी[27], ध्रितेची मैना[28] रंभा ।
इंद्र - लोक अपछरा, इसी[29] उणहारि असंभा ॥
गजसिंघ गहंतरि गजगमणि, इन्द्र अखाडै एहडी[30] ।
के पात्र अलापै गेव - कंठ, के खवासि कन्हलि खडी ॥११॥

छंद अडिल्ल

एक खडी मुख रूप निहाळै । एक खडी सिर[31] चम्मर ढाळै ।
कांम लता पिण कणक[32] वरन्नौ[33] । पास खड़ी सुख रास पतन्नी ॥१॥
धुंकार[34] हुई म्रिद[35] मांदळ । वीण रबाब ताळ स्रीमंडळ ।
गीत संगोत सपत सुर गाए । आगळि पात्रअखाडौ[36] थाए[37] ॥२॥

---

१ आ. गजिद्रह । २ आ.इ. वेणी । ३ अ.आ. घरै । ४ आ.इ. षगिंदह । ५ आ. माहातम । ६ आ.इ. जिही । ७ आ. औगुण । इ. ओगुण । ८ इ. तजे । ९ इ. नेयणे । १० आ. ताटंक । ११ इ. मोताहळ । १२ आ.इ. डोर । १३ आ.इ. रचि । १४ अ.आ. नूपुर्ये । १५ आ. अंगे । १६ इ. तंबोल । १७ अ.आ. सिण-घार । १८ अ. आं. सांबाही । १९ अ. षोडसै । २० आ. सेह । इ. सोह । २१ इ. सोहै । २२ आ.इ. जीह । २३ अ. बाण इ. बांणक । २४ अ.आ. कटाषु । २५ आ.इ. चंद्राणिणि । २६ आ. इ. सुकेसी । २७ अ.आ. ऊर-वसी । २८ इ. मेना । २९ आ.इ. ईसी । ३० आ. ईहडी । ३१ आ.इ. सिरि । ३२ अ. कण । इ. कनक । ३३ इ. वरणो । ३४ अ. दोऊंकार । इ. दाऊंकार । ३५ अ.आ. मिृद । इ. मिदर । ३६. इ. आषाडो । ३७ इ. थाऐ ।

राग छतीस[1] तरंग अनंगं । रूप अनूप अनोपम रंगं ।
बोलीजै[2] सुख निस - वासर । आणद गीत विणोद[3] अवस्सर ॥३॥

गाथा

रण - वास राज - रमणी, सूरज[4] किरण[5] तुल सोभा[6] ।
फूलीक कांम वल्ली, करि मज्झे कांम आरांम ॥१॥

दूहा

राजा राज-कुंवारियां[7], आंगण[8] पधारेह ।
आदर मांन समप्पियौ[9], दक्खे[10] पति[11] सनेह ॥१॥

राजा झूलरि[12] रांणियां[13], सोहै ईहीं[14] भंति[15] ।
किरि वेधांणै किरतियां[16], चंदो पूनम[17] रति[18] ॥२॥

राज हुआ[19] किल्लांण सह, आज हसंदा[20] मुक्ख ।
आप पधारे आंगणै, साहिब[21] दीना सुक्ख ॥३॥

सबै मनोरथ पूरिया[22], सब्बै पूरी[23] आस ।
जांण कमोदणि[24] सिस उदै, तन मन हुआ[25] विकास ॥४॥

सहुआं[26] कुळ वड्डै जनम, सहुवां[27] वड्डा भाग ।
सहु[28] छत्रपति[29] पूतियां[30], सहुआं[31] सही[32] सुहाग[33] ॥५॥

राजा निय[34] रणवास हूं[35], अक्खो[36] एक[37] सु वत ।
नृप[38] सोभा खत्री धरम, त्रिय[39] सोभा पति व्रत[40] ॥६॥

---

१ इ. छत्रीस । २ अ. वौलीजे । इ. बोलीजे । ३ इ. विनोद । ४ अ.आ. सूरजि । ५ आ. किरणां । इ. किरण । ६ इ. सौभा । ७ आ.इ. कुवारीयां । ८ इ. अंगण । ९ आ.इ. समपीयो । १० आ. देषे । ११ आ. पीत । १२ आ. झुलरि । १३ आ.इ. रांणीयां । १४ अ. ईही । इ. एही । १५ अ. भत्त । आ. भत । १६ आ.इ. किर-तीयां । १७ इ. पुंनम । १८ अ. रत । १९ आ.इ. हूआ । २० इ. हसीदो । २१ इ. आहिब । २२ आ. पुरीया । इ. पूरीयां । २३ आ.इ. पुरी । २४ इ. कमोदनि । २५ इ. हुवा । २६ आ.इ. सहूवां । २७ इ. सहूवां । २८ इ. सहुवां । २९ आ.इ. छत्रपती । ३० आ. पुतीयां । इ. पूत्रीयां । ३१ आ. सहुवां । इ. सहूवां । ३२ आ.इ. ही । ३३ इ. सौहाग । ३४ आ.इ. नय । ३५ आ. हुं । इ. हू । ३६ इ. आषी । ३७ आ. इक । ३८ आ.इ. नृिप । ३९ अ. त्रीय । आ. तीय । ४० आ.इ. पतिव्रत ।

त्रिय[1] वांमै वर दांहिणै, वयण सु आखै[2] वांम[3] ।
घमलज वांमी धुर वहै, घमळ[4] ऊदो[5] नांम ।।७।।

जो[6] नृप[7] पूती[8] नह दियै[9], दासी दूध[10] अहार ।
तौ विहरै गिरि वज्र[11] जिम, खत्री[12] खग्ग पहार ।।८।।

धन कुळ वहुआं[13] कुळ धियां[14], जीनां[15] एह[16] जुगत ।
जिन्हां उद्दर[17] ऊपजै[18], "अमरज" जेहा पुत्त[19] ।।९।।

महाराज गजसींघरै पुत्रांरौ वरणण

कवित्त

सूरज पुत्र करन्न[20], पेट कूंता उतपन्नौ[21] ।
पवन पुत्र हणमंत, उदर अंजनी उपन्नौ[22] ।।
ईस[23] पुत्र खट-मुक्ख[24], पुत्र जनमे[25] रुद्दांणी[26] ।
राघव दसरथ पुत्र, जणे कउसल्या[27] रांणी ।।
जनमियौ[28] पुत्र कणहैगिरो[29], "अमर" कुंवर[30] गजसिंघरौ ।
बेपक्ख सुद्ध आदू[31] बिरद, पुत्रां एह पटंतरौ[32] ।।१।।

"अमर" धरम आंकूर[33], पटौ[34] दोयौ[35] पाटौ-घर ।
राजहंस प्रम अंस, जिसौ सूरज्ज[36] सुधाकर ।।
मयण कांम मूरत्ति[37], गात गिरवर वींझा-चळ[38] ।
वडौ वीर वीराधि[39], सिंघ रूपी सहंस - बळ[40] ।।

---

१ इ. त्रीय । २ आ. अंषै । इ. अषै । ३ आ. वाम । ४ अ.आ. घमलेति । इ. धमलति । ५ आ. नुदो । इ. नुदो । ६ आ.इ. जो । ७ आ. नृप । इ. निृप । ८ आ. पूती । इ. पुत्री । ९ आ. दिपै । १० आ. दुध । ११ आ. व्रज्र । १२ आ. षत्ती । १३ आ. बहूआं । इ. वहूवां । १४ आ.इ. धीयां । १५ आ.इ. जिना । १६ आ.इ- पे । १७ आ.इ. उदर । १८ आ.इ. उपजै । १९ आ.इ. पुत्र । २० अ. रन । इ. करंन । २१ आ. ऊपनो । इ. उतपनो । २२ आ. उपनो । इ. उपंनो । २३ अ.इ. इस । २४ आ.इ. षटंमुष । २५ आ. जनमै । इ. जन । २६ आ. रुदांणी । इ. इंद्रांणी । २७ अ.आ. केउसल्या । २८ अ.आ. जनमीयो । २९ आ.इ. कणै-गिरी । ३० आ. कुवर । इ. कुम्रर । ३१ इ. आदु । ३२ आ. पंटतरो । ३३ इ. अंकुर । ३४ आ. पटि । ३५ अ.आ. उदीयो । ३६ अ.आ. सूरिज । ३७ आ.इ. मुरति । ३८ आ. बीझाचल । इ विझाचल । ३९ आ. विराधि । ४० आ.इ. सहस-बल ।

राइजादे[1] ओपम राठवड[2] बिहुंवै[3] पक्ख निरंमळा[4] ।
बळवंत कुमर[5] बिय[6] चांद[7] जिम, कुंवरां[8] -गुर चढती[9] कळा ।।२।।

मज्जीठैं[10] मुहरंग, नयण जोती जाळंनळ ।
विक्ख[11] त्रंक क्रिस लंक, थोर बाहू[12] डंड[13] हत्थळ ।।
दीरघ देहा खंभ, करी भांजै कुंभाथळ ।
कांमण[14] भूखण[15] डसण, हार पहरै[16] मोताहळ ।।
गजसिंघतणौ गज गौडवण[17], जोधपुरौ जस अग्गळौ ।
बळवंत-कमंध[18] जसह सबळ, सींह समंधी[19] सिंघळौ ।।३।।

दीपक हूंत दीपक, अबं हूं अंबक उग्गै ।
सिध हूंता[20] साधिक्क, वीर घर[21] वीरक[22] जग्गै ।।
समंद[23] हूंत किरि सोम, सोम हूंता[24] सिद्धांणह ।
सत हूंत किरि धरम, ध्रम्म[25] हूंता किल्यांणह ।।
नाद हूं वेद उतपन[26] हुऔ[27], मेरग्गिर हुंता हिरन ।
'अमरेस' हुऔ[28] गजसिंघसूं[29], जांण दिवाकर[30] हूंत[31] दिन ।।४।।

साखां भुज्ज विसाळ, गात गुरू-अत[32] गह्व्वर ।
पलव हय गयंद[33] सुहडू[34], मौज महिमा मति मंजर ।।
जड पंयाळ[35] पै जुअल[36], सीस व्रहमंड[37] विलग्गे ।
कळ -वाउ डंडूळ[38], डिगै नह[39] डोलै[40] जुग्गे ।।
अड्ढार-वरण आलंब वण, खट-दरसण छाया मिळै ।
'अमरेस' इंद्र गजसिंगरै, आंणि कळप-तर फळै ।।५।।

---

१ आ. राइजादे । इ. राईजादै । २ आ. रठवड । इ. रठौडवै । ३ इ. वै । ४ आ.इ. निरमला । ५ अ. कुसध । ६ इ. बीय । ७ अ. बाद । ८ इ. कुअ । ९ अ.आ. चडती । १० आ. मजीठैं । इ. महीजीठैं । ११ आ.इ. त्रिषंबंक । १२ आ. बाहु । १३ इ. भुज । १४ आ.इ. कामिण । १५ आ.इ. भुषण । १६ इ. पैहरैं । १७ इ. गोड-वण । १८ इ. बलिवंत-कमध । १९ आ.इ. समधी । २० आ.इ. हुता । २१ आ. घरि । २२ आ. वीर । २३ इ. समंद्र । २४ आ. हुंत । इ. हुता । २५ आ.इ. धरम । २६ इ. उतपंन । २७ इ. हूओ । २८ इ. हुवौ । २९ इ. सुं । ३० आ.इ. देवाकर ३१ आ.इ. हुंत । ३२ अ. गहअत । ३३ इ. गय । ३४ आ. सौहड । इ. सोहड । ३५ आ.इ. पयाल । ३६ आ.इ. जूअल । ३७ आ.इ. वृह्मंड । ३८ आ. डडूल । ३९ इ. नहि । ४० इ. डोडै ।

गाथा

पुत्रां[1] सपूत उद्दिया, सुणियै[2] कांनै कीत[3] आपांणी[4] ।
वित्तांनि विमळ वित्तं, किं किं जै स्नग[5] भोगादि ॥१॥

पांणी नरिंद पुत्रां[6], भोमी गढ व्रद[7] भारिया[8] ।
खट - मेक[9] जतन कीजै[10], कथितं[11] आदि जुगादि ॥२॥

दूहा

मिळि मंत्री परधांन मैं[12], विधि दक्खै विच्चार ।
जळ रक्खण गढ[13] जोधपुर, के रक्खो जोधार ॥१॥

नरां मंडोवर नर समंद, खिति लोडो[14] खुरसांण ।
है[15] केइ[16] देस न हक्कडो, दोइ तेहा वाखांण[17] ॥२॥

सभै[18] अभै थंभ दे, सब्भै[19] ही खत्र - घोड ।
सब्भां[20] हो दिन पद्धरो, सभ वंका राठौड ॥३॥

पट्टांणां नव लाख सूं[21], लडिया[22] बांधे चाळ ।
राजा रावत रक्खिया[23], रिणमल महि रखपाळ ॥४॥

कवित्त

सेरसाह सुरतांण, तुरी नव लक्ख पलांणे ।
आयौ सिरि "माल दे", करन तै सूं[24] तुड - तांणे[25] ॥
मांडण सोहो वहै, संड[26] गंजे सींघल[27] हर ।
अकबरि मांगी कुंअरि[28], तांम मुख दीनो[29] उत्तर ॥
तै पाट तूंग कूंपां तिलक, खेम-क्रन्न[30] अणभंग भड ।
तै "खेम" तणो खांडा - हथो, कन्न[31] मेर माझी निवड ॥१॥

---

१ आ. पुत्ता । २ आ.इ. सुणीयै । ३ इ. कीरत । ४ इ. अपांणी । ५ इ. अगं । ६ आ. पुत्ता । ७ इ. व्रिद । ८ आ.इ. भारीया । ९ इ. षट-मेष । १० इ. कीजे । ११ अ. कथतं । १२ अ. मे । इ. में नहीं है । १३ आ. गट । १४ आ. लोडौ । इ. लोडो । १५ आ.इ. हे । १६ आ.इ. कै । १७ इ. वषांण । १८ इ. अभै । १९ आ.इ. सभैइ । २० आ.इ. सभां । २१ आ.इ. सुं । २२ आ.इ. लडीया । २३ आ.इ. रषिया । २४ आ.इ. सुं । २५ इ. तुडि-तांणे । २६ इ. सुड । २७ आ. गजैसीघ । २८ इ. कुअरि । २९ इ. दीन्हो । ३० आ.इ. षेमक्रंन । ३१ आ.इ. कंन ।

छळ महेस मुर देस, मुग्रौ[1] डीघोड महारिण।
परणे अकबर घडा, चढे[2] गज दांतां तोरण[3] ॥
समर-सींह देवडौ, वहै[4] सादूळ रिणं-गण[5]।
नांम जांम अरबद्द[6], तांम[7] बैठो इंद्रासण[8] ॥

तिण पाट रूप रिणमल्ल-हर, कूंप कन्न[9] कुळ उद्धरण।
सिणगार[10] 'जसौ' नवसाहसौ[11], तेरे[12] साखां आभरण ॥२॥

सेरसाह रिणमांह[13], जैत ढाहण गजढल्लह।
खुंदालम[14] किउ[15] खडौ[16], तवै[17] मुख तोबा अल्लह ॥
प्रिथीराज मेडतै, मुग्रौ[18] सांमंत निभै-मण[19]।
सत्र[20] चवदै सिंघार, कियौ[21] भारथ[22] रांमाइण[23] ॥

तै पाट[24] 'वाघ' 'वगडी' तखत[25], 'वाघ' सुतन[26] भड वांकडौ[27]।
भगवांन डहै असमांन भुज[28], हेक हणमंत[29] लांगडौ[30] ॥३॥

'चांपै'[31] जेसौ[32] चरड, अनड माझी[33] अडसाळौ।
भांगेसर[34] दांणवां[35], जेण भग्गौ भालाळौ ॥
'जैतमाल' अण-पाल, वींद[36] मेवाड तणी घड।
सिवियांणै सोझति[37], 'भांण' रोळिया[38] भडां घड ॥

तै 'भांण' तणौ अवसांण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण विमर।
जोधार पखर लक्ख जिसौ, निरौ एक[39] पक्खर निडर ॥४॥

मिणि-अड[40] नेपति[41] भडां, खग्ग वाहां खत्र-धोडां[42]।
खुरासांण सम सांण, तखत आदू राठौडां ॥

---

१ आ.इ. मुवो। २ आ.इ. चडे। ३ आ.इ. तोरणि। ४ आ. वहे। ५ आ.इ. रिण-गणि। ६ इ. अरबद। ७ आ.इ. ताम। ८ आ.इ. इंद्रासणि। ९ इ. कंन। १० इ. सीणगार। ११ इ. नवे साहसी। १२ इ. तेरै। १३ आ.इ. रिणमाह १४ आ.इ. षुदालम। १५ आ. कीउ। इ. कीयो। १६ आ. वडो। १७ आ.इ. तवे। १८ इ. मूंवो। १९ इ. निभै-मण। २० आ. सत्त। इ सत्रु। २१ आ इ. कीयो। २२ आ. भारत। २३ आ. रांमांइण। इ. रांमाईण। २४ आ. पाटि। इ. में नहीं है। २५ आ.इ. तषति। २६ आ. सुतं। इ. सुन। २७ आ.इ. वंकडो। २८ इ. भुयर। २९ अ. हणांमत। ३० इ. लांगणो। ३१ आ इ. चांपे। ३२ इ. जेसो। ३३ इ. मांझी। ३४ इ. भांगे। ३५ अ.आ. वांणवां। ३६ इ वीद। ३७ आ. सोझत। ३८ आ.इ. रोलीया। ३९ इ. ऐक। ४० इ. मिण-अड। ४१ अ. नेपत। ४२ आ. खत-घोडां।

मलीनाथ भाराथ, गाहि गोरी गज थट्टां।
तेरह तुंगां[1] तुरक, भिडे भागा दह-वट्टां।।
आराध[2] अलख आदीक घर[3], सिद्ध खेत सूरति[4] घणै[5]।
'जगमाल' तेण 'दूदै' तणौ, पाट-मल्ल[6] रावळ तणै।।५।।

जगतिसिंघ 'रांम' सू, नरौ जगमाल सुतन्नह[7]।
गाढ़ां-गुर 'गोइंद', खत्री सुत खेम-करन्नह[8]।।
भाटी 'ईसरदास', भुजे नव कोटतणा छळ।
ऊहड[9] 'मांडण' 'अजौ', उभै नवकोटी[10] आगळ।।
तुडि-तांण[11] 'अमर' 'सुरिजना' तणौ, सांम[12] कांम[13] वाहण सुजड।
राखिया[14] राइ[15] राठौडवै, कुमरां पासि इता[16] सुहड[17]।।६।।

गयण-थंभ दळ-थंभ[18], संभ जिवकै जीवत्तह।
देस-थंभ दळ-थंभ, हत्थ कुळ-थंभ वडा-ग्रह।।
जैत-खंभ रिण-खंभ, मारि गज-खंभ मदोमत।
देहा-खंभ असंभ, जिसा गोरंभ परब्बत।।
पारंभ करण आरंभमै, लियण लंभ सोरंभ-जस।
रखपाळ मंडोवर[19] राखिया[20], भू डंडे रक्खे अडस।।७।।

गाहा

पुन्नौ[21] पर-उपगारौ, कारिज सांमी[22] देव कारिजौ।
ततकाळेण ताळ-विमाळ[23]? न कीजै, ए कीजै तत-काळेण।।

महाराजा गजसींघरौ दरबार में पधारणौ जोसियांसूं मूहरत पूछणौ

गाहा

गजबंधी दीवांण पधारे[24]। इम कहियौ[25] मन मही[26] विचारे।
चाड इसी[27] जिण वेग चडीजै। दिस[28] सुरतांण पयांणौ[29] कीजै।।१।।

---

१ इ. तूंगा। २ इ. आराधि। ३ इ. घरि। ४ आ.इ. सुरति। ५ इ. थणैं। ६ आ.इ. पाटि-मल। ७ इ. सुतंनह। ८ इ. षेमकरंनह। ९ इ. उहड। १० आ. न कोटी। ११ आ.इ. तुड-तांण। १२ आ. सांमि। १३ आ. कांमि। १४ आ.इ. राषीआ। १५ प्रति इ. में राइ शब्द नहीं है। १६ इ. ईता। १७ आ. सोहड। इ. सोहड। १८ इ. गढ थंभ। आ. भड-थंभ। १९ आ. मांडोवर। २० आ.इ. राषीया। २१ आ.इ. पनौ। २२ आ.इ. सांमि। २३ इ. प्रति में न नहीं है। २४ अ.आ. पधारै। २५ आ.इ. कहीयौ। २६ आ.इ. मांही। २७ इ. ईसी। २८ इ. दिया। २९ अ. पयांणै।

वेद मंत्र पाठी चत्र-वेदह । जांणै[1] जोतिख भेद सुभेदह ।
होम दिये[2] आहूत[3] हुतासण । तेडे तांम[4] इसा[5] ब्रहंमण[6] ॥२॥
तिलक दुआ-दस वसत्र[7] कखंबर । करै सदा खट करम निरंतर ।
राजा वंदन कीध उभै कर । आस्रो-वाच विप्रां[8] इम उच्चर ॥३॥
नृप[9] कमधज विप्रां[10] इम[11] बूझै[12] । आगम निगम तुम्हां सह सूझै ।
निरति[13] सुरति[14] मन चेतन रक्खौ । दिस सुरतांण पयांणौ दक्खौ ॥४॥
जांण प्रमांण प्रमांण जोइसी । दैवंग[15] देख त्रिकाळ-दरस्सी ।
सूभ-वासर सुभ-जोग सांपन्नौ[16] । जोसी खरौ-स मुहूरत[17] दीनौ ॥५॥

कवित्त

सिद्ध-जोग रवि-जोग, सुद्ध[18]-दिनमांन[19] सहू[20] सिसि[21] ।
दिसा-सूळ[22] थयौ[23] पूठि[24], वळे जोगणि बांमी दिसि[25] ॥
तारा-बळ चंद्र-बळ, घडी-अम्रत[26] साधारण ।
चतुर पंच सह बळी, नांम वाहण सुभ वाहण ॥
तिथि-वार[27] नखत्र उत्तम करण, पण महूरत[28] नृप[29] चडे ।
किल्यांण[30] हुवै सिध[31] कांमना[32], तांमह[33] अस्सड संपडै ॥१॥

दूहा

कोअण कोम कटक्कमे, वोम विलग्गै वद्धि ।
कीध[34] सताबी साह दिस[35], चडण महूरत[36] मद्धि[37] ॥१॥

इस्ट देव पूजा

राजा पूजै सिव[38] सकति, चाढ़ै[39] धूप[40]-नैवेद[41] ।
कुंकम-तिलक निलाट दे, विप्र[42] भणंदा[43] वेद ॥२॥

---

१ आ.इ. जांणे । २ आ.इ. दीयै । ३ आ. आहुत । ४ आ. ताम । इ. प्रति में नहीं है । ५ इ. ईसा । ६ आ.इ. ब्राहमण । ७ आ.इ. वसंत्र । ८ आ.इ. विृपां । ९ आ.इ. नृप । १० आ.इ. विृपां । ११ आ. ईम । १२ आ. बूंजे । १३ इ. निरत । १४ आ. सुरत । १५ आ.इ. देवग । १६ आ. सापनो । इ. सपनो । १७ इ. महूरत । १८ आ. सुध । इ. सुधि । १९ आ.इ. दिनमान । २० आ.इ. सहु । २१ इ. सिस । २२ इ. दिसा-सुल । २३ आ. थायो । इ. थियो । २४ आ. पुठि । २५ आ. दिसी । इ. दिस । २६ अ. अमृत । २७ इ. तिथवार । २८ इ. मुहूरत । २९ आ.इ. नृप । ३० इ. कल्यांण । ३१ अ. सुभ । आ. सुध । ३२ आ. कामना । ३३ आ.इ. ताम । ३४ इ. किध । ३५ इ. दीस । ३६ इ. मुहूरति । ३७ आ.इ. मधि । ३८ आ. शिव । ३९ आ.इ. चाडे । ४० इ. धुप । ४१ अ. नेवेद । ४२ आ. विृप । ४३ आ. भणादा । इ. भणांदा ।

पूठी[1] वांमै[2] दाहिणै, आगळि अग्गे - वांण[3] ।
राजा "गाजी साह"नूं, राखंदो रहमांण[4] ॥३॥

दोहा[5] पाघर वंक गय, भुज धरियै[6] कुळ - भार ।
चोळ - वरन्ने लोचने, आयौ आप दुवार ॥४॥

गै गोडी - रव है कळळ, सुहड गडो - वड थट्ट ।
सुभ मंगळ जै जे सबद, बोलै चारण भट्ट ॥५॥

नाथ - निरंजण[7] अलख महा, महा मंगळ बह नांमि[8] ।
सिव सकती सम जुगति जग[9], जग जणणी जग जांमि[10] ॥६॥

कवित्त

दियण[11] बुद्धि रिध सिद्ध, विघन छेदन लंबोवर[12] ।
नारसिंघ हणमंत[13], अचळ नह[14] खंडी[15] अम्मर ॥
जग[16]जणणी जग जांमि, सकति तुलज्या[17] महमाई[18] ।
सरब[19] ग्रहां सूरज्ज, सरब देवांह सवाई ॥
नवनाथ अनंत सिघांणवै, भैरव अट्ठं संभरै ।
सुर बळ सु जोग क्रम समपिया, इस्ट नांम आदिह करै ॥१॥

महाराजारो घुड़ सवार होणो

खुरासांण नैपत्ति, असल ऐराकी चंचळ ।
पाखर मै परचंड, पंख पाहाड[20] अचग्गळ ॥
ऊंचासौ[21] इंद्ररै[22], रांमरै गुरड[23] विहंगम ।
सूरजरो सिलह "जै", जिसौ सपतास तुरंगम ॥
असवार वडो असमांन गति, धूहड धूजै वड धडै ।
पह पूठि चडै जैवंत भड, पाउ[24] परट्ठै पाघडै[25] ॥२॥

---

१ इ. पुठि । २ इ. वामै । ३ आ. अगेवांण । इ. आगेवांण । ४ अ. रमांण । इ. रिमांण । ५ इ. दिहा । ६ आ.इ. घरीयै । ७ आ. नीरंजण । ८ आ.इ. नामि । ९ आ.इ. जगत्र । १० आ.इ. जामि । ११ अ.आ. दिअण । १२ अ. लंबावर । इ. लंबोदर । १३ आ. णमंत । इ. हणवंत । १४ इ. न । १५ अ. षंडा । १६ आ.इ. जगि । १७ अ. तुलज्वा । इ. तुलजा । १८ इ. महामाई । १९ अ.आ. सर्व । २० आ.इ. पहाड । २१ आ.इ. उचासौ । २२ इ. ईद्ररै । २३ इ. गुरडं रांमरै पाठ है । २४ आ. पाव । २५ आ.इ. पागडै ।

सोरठा

राउ[1] प्रबळ रिण - ताळ, गाढां गुर थाए 'गजण' ।
चढतां[2] चमर - बंबाळ, 'जै' तूं[3] जोधांहर धणी ॥१॥

चढ़ियौ[4] मछर चडेह, रोपै रांम रकेब है ।
भोळौ[5] भंग पडेह, सिव नाटा - रंभ "सूर उत" ॥२॥

दे नीसांणां घाउ, चैत सुदी[6] एकादसी[7] ।
चढे[8] कमंधां[9] - राउ, दिल्लीवै सुरतांण दिस ॥३॥

महाराजा गजसींघरा दळरौ वरणण

गाहा

भेळा जूल झळक्कै भालै । मुहर[10] कियौ[11] 'जोधै[12] रिणमालै ।
साहण - समंद दिलीचै[13] सांमौ । दीनौ 'गाजीसाह' दमांमौ ॥१॥

नौबति रोडि[14] हुई[15] नीसांणां[16] । अंबर गाजि[17] वाजि[18] असमांणां ।
जांण प्रभाकर जोत[19] प्रगट्टी । गढ़ हूं चढि[20] आयौ तळ - हटी[21] ॥२॥

छोडि महावत[22] खंभूठांणां[23] । मद - तळ[24] जोड वहंतां दांणां[25] ।
घूघर[26] घंट कसे अंबाडी । गय चीधां[27] गयणाग[28] भमाडी ॥३॥

सिलह संदूक[29] सलीते[30] वड्डे । लद्दे ऊंट[31] चलाए[32] गिड्डे ।
लारोलार कतारां[33] हल्ली । काती जांण कुरज्झां[34] चल्ली ॥४॥

चढै[35] चले चतुरंग[36] महादळ । वीजक जांण[37] वलक्के साबळ ।
वाजी घोडां[38] पाइ धरत्ती । छूटा सांहण[39] हाहुल माती ॥५॥

---

१ इ. राव । २ आ. चडता । ३ आ.इ. तु । ४ आ. चडीयौ । इ. चडीया । ५ आ. भौला । ६ आ.इ. सुदि । ७ इ. ऐकादसी । ८ आ. चडे । इ. चडै । ९ आ.इ. कमधां । १० आ.इ. मोहर । ११ आ. कीयो । इ. कीयौ । १२ आ.इ. जोधे । १३ अ.आ. दिलीवै । १४ अ. रोड । १५ आ. हुइ । १६ इ. निसांणह । १७ अ. गजि । १८ अ. वजि । १९ आ. जोति । २० आ इ. चडि । २१ अ. नलहठी । आ. तलहठो । २२ अ. महघस । २३ आ. षंभू-ठाण । इ. षंभुठांणा । २४ अ. मदत । २५ इ. डांणां । २६ इ. घुघर । २७ आ. चीधं । २८ आ. गयंणाग । २९ आ. सिंदूष । इ. संदूष । ३० इ. सलीचे । ३१ आ.इ. उट । ३२ अ. चाए । ३३ आ. कतादां । इ. कतांरां । ३४ आ. कूरझां । इ. कुरझां । ३५ आ.इ. चडे । ३६ आ. चतूरंग । ३७ इ. जांणे । ३८ इ. घौडां । ३९ इ. सांहिण ।

दळ रो कूच

अथ चंद्रायण

चौटां घोर[१] निहाय[२], नगारा वज्जिया[३] ।
भेर बुरंग निनद्द, क अंबर गज्जिया[४] ॥
सद्द हुआ[५] सहनाइ[६], समुद्र[७] उभ्झळिया[८] ।
राजा[९] 'गाजीसाह', दिली दिस[१०]चल्लिया[११] ॥१॥

ढैचाळां[१२] सिर[१३] ढल्ल[१४], ढळक्कै[१५]ढूहरी[१६] ।
खेहा मज्भि दुडिंद, क चंद सरव्वरी ॥
ऊपडियां[१७] असमांन क, कोरण तेवडा ।
वांक[१८] मुहा वर हास, महाभड वंकडा ॥२॥

सीरम सेढां[१९] सट, तुरंगम तप्पडै ।
पाहाडां पड - सद्द, निसांण[२०] गडग्गडै ॥
साहण[२१] थट्ट सुभट्ट, असंख[२२] अपार है ।
चौमासै किरि जांण, चले घण बार है ॥३॥

हिल्लै हेम - पहाड, क हैथट[२३] हिल्लिया[२४] ।
फट्टौ जांण अकास, क साइर[२५] छिल्लिया[२६] ॥
हुई हमस्स घमस्स, पंयाळ[२७] दहल्लिया[२८] ।
कमधज्जे केकांण, दिली[२९] दिस ढल्लिया[३०] ॥४॥

गाथा

गोधूळ[३१] गयण लग्गं, साहण[३२] उलट्टि[३३] सेन समूहं ।
है - पाइ गाहि वंका, सर पघरी कीध पहाडहं ॥१॥

---

१ इ. घोड । २. आ. निहाइ । इ. निहाई । ३ आ.इ. वजीया । ४ आ.इ. गजीया । ५ आ. हूआ । ६ आ. सहनांई । इ. सहनाई । ७ आ. समंद्र । ८ आ.इ. उभ्झलीया । ९ अ. राजी । १० इ. दिच । ११ आ.इ. चलीया । १२ अ. टैचाळां । १३ आ. सिरि । १४ आ. ठल । १५ आ. ठलकै । १६ आ. ठूहरी । १७ आ. उपडीया । इ. उपडी । १८ इ. वंक । १९ अ.आ. सेटां । २० आ.इ. नीसांण । २१ अ. सांहण । २२ अ. असष । २३ इ. हैवथट । २४ आ.इ. हिलीय । २५ आ. साईर । २६ आ.इ. छिलीया । २७ आ.इ. पयाल । २८ आ.इ. दहलीया । २९ आ. ठिली । ३० आ. ठिलीया । इ. ढिलीया । ३१. इ. गोधूल । ३२ अ.आ. सांहण । ३३ आ. उलटि ।

सरपां नव-कुळाणिय, महि-मंडळ मेर-मेखळा ।
परबत अस्ट-कुळीए[1], धरणी-[2]-धर धूजिया[3] त्रिण ऐ ।।२।।

छंद झांफताळी

धडहडे सात-पुडि[4] धूजि[5]घम-हम[6] धरा ।
डंब ओधूळ अंबर चडे डंबरा ।।
वावंता नास वेगाळ तेजी वहै ।
गाहटां[7] गोम पाहाड[8] पाए गहै ।।१।।

साट सीरम्म ऊरम्म[9] हुइ[10] साहणां[11] ।
घाघरट थाट घांसार हालै घणां[12] ।।
तापडै ऊपडै[13] तेज मांही[14] तुरा ।
उड्डिया[15] जांण वेवांण[16] आकासरा ।।२।।

फरहरै वांनरा[17] जेम फाळां फुरणि ।
धमता नास वरहास हूआ[18] धमणि ।।
पंथि[19] पाखांण पीठौ करै पैंनुहै ।
मन्न सूधा[20] भरै डांण वांकै[21] मुहै[22] ।।३।।

ऊब्रटां विक्कटां औघटां ऊपरा ।
दौडतौ[23] है-थटां राह हूआ दरा[24] ।।
ऊछळै फीण है सास वाजै उरै ।
ताडि कोमंडमें[25] फाडि कीया तुरै ।।४।।

चाबके[26] झालिया[27] चंचळा चप्पळा ।
नांम[28] "जै" अंग ऊतंग वाहै नळा ।।

---

१. आ.इ. कुल । २ इ. धरणि-धर । ३ आ. धूजीया । इ. धुजीय । ४ आ पुड । ५ इ. धुजि । ६ अ. धम-हमि । ७ अ. गांहटां । ८ अ. पहाड । ९ आ. उरम । इ. मोरम । १० इ. हुई । ११ इ. सांहणां । १२ इ. घणा । १३ आ.इ. उपडै । १४ अ. मांहि । १५ आ.इ. उडीया । १६ आ. विवांण । इ. वींवांण । १७ इ. वांनरां । १८ इ. हुआ । १९ इ. पथि । २० आ.इ. सुधा । २१ इ. वांके । २२ इ. मुहे । २३ इ. दोडतो । २४ आ.इ. हुआ-दरा । २५ आ.इ. कोमंडमै । २६ इ. चाबकै । २७ आ.इ. झालीया । २८ इ. नीम ।

सांमटै ऊलटै कमधजां साहणे[१] ।
सांकियां[२] सात पायाळ[३] जम्मी सुणे ॥५॥

*खेडरा जोध तुरंगांण[४] ताता खडै[५] ।
पेखुरै[६] वीखणी[७] खोण[८] खांना पडै ॥
तप्पिया[९] तालूए[१०] लोह घोडातणै ।
आड झांफां भरै तेजसूं[११] ऊफणै[१२] ॥६॥

राति सांमीर सारंग डांणे[१३] ग्रहै ।
वाइ ऊपडीया[१४] लोण जांणे[१५] वहै ॥
हद्द वेहद्दपै वेगपै हैमरां ।
पाधरा जांण[१६] पाहाड[१७] उड्डै परां[१८] ॥७॥

धूस[१९] रावत तेजी वहै धूबडा[२०] ।
घस्ससी[२१] घूंघली[२२] फौज काळी-घडा ॥
ऊजळा दांत गय सांमळा आगळी ।
सुंड उल्लाळता[२३] हींडळै[२४] सिगळी[२५] ॥८॥

मंद मंदोमता[२६] व्रक्ख[२७] धक्का मुडै ।
गाजता मेघ पाहाड[२८] काळा गुडै ॥
ओप[२९] ढैंचाळ[३०] ढालां[३१] घटा ऊपडै[३२] ।
ऊपरै[३३] चींध[३४] आकास नेजा अडै ॥९॥

आंकुसां[३५] गज्ज कूंभाथळां[३६] ऊजळी[३७] ।
वादळो[३८] सीस जांणे[३९] खिमै[४०] वीजळी ॥

---

१ अ. सांहणें । २ आ. सांकीया । इ. सांकीयो । ३ आ.इ. पयाल । *'आ' प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है—'खेड रा जोध ताता खडै ।' ४ इ. तोषार । ५ इ. षडे । ६ अ. पषुरे । इ. पैंषुरे । ७ इ. विषुणी । ८ इ. षौण । ९ आ. तपीया । इ. तषीया । १० अ. तालऐ । ११ आ.इ. सु । १२ आ.इ. उफणें । १३ आ. डांण । १४ आ. उपडीया । इ. उपाडीया । १५ आ.इ. जांणे । १६ अ.आ. जांणि । १७ आ. पहाड । १८ आ.इ. परा । १९ इ. धूस । २० आ.इ. धुबडा । २१ आ.इ. घससी । २२ आ.इ. घुघली । २३ आ. उलालता । इ. उच्छालता । २४ आ.इ. हिंडलै । २५ आ. सिघली । इ. सिघली । २६ अ. सदोमता । इ. मदिसधोमता । २७ आ.इ. वृष । २८ अ. माहाड । २९ आ.इ. ओपि । ३० आ. टेचाल । इ. ढैंचाल । ३१ आ. टालां । ३२ आ.इ. उपडै । ३३ आ.इ. उपरै । ३४ आ. चीध । ३५ अ. आंकुसा । ३६ इ. कुंभाथलां । ३७ आ.इ. उजली । ३८ आ. बादलां । ३९ आ.इ. जांणे । ४० आ.इ. खिवै ।

उमंडै मद्द गै-सुंड[1] डोहै[2] अगे[3] ।
पांखिया[4] जांण[5] पाहाड हालै पगे[6] ॥१०॥

लाइयां लंगरां पेखि पट्टाभरां ।
डोल भौळौ[7] पडै कुंजरां डूंगरां[8] ॥
गज्ज ऊधोळिया[9] रज्ज सूं गूडळा[10] ।
धोममैं पब[11] दीपै किरै धूंधळा[12] ॥११॥

वोम लागा वहै लोडता वारणूं ।
हल्लवै द्रोण ऊपाड[13] जांणै[14] हणूं[15] ॥
पाटमें झूल[16] गै घातियां[17] पाखरां ।
भार-अट्ठार[18] आबू किरै[19] भाखरां ॥१२॥

कुंजरां[20] ढूंहरी[21] ढाल[22] कुंभा-थळै[23] ।
वादळा जांण[24] फाबत्त[25] वींजा-चाळै[26] ॥
धम्मळी पीयळी[27] लाल नीली-धजं ।
गाजता जांण गोरंभ दीसै गजं[28] ॥१३॥

ओपियै[29] बैरकां कुजरां ऊपरै[30] ।
गुड्डियं[31] उड्डियं[32] जांण[33] पब्बै-गिरै[34] ॥
सांमठौ हल्लकौ मैंगळां[35] सब्बळौ ।
वाट ऊभी[36] वहै जांण आडौ-वळौ ॥१४॥

सांमळा गात डोहत्ति[37] गै-सूंडयं ।
सप्प हींडै[38] किरै[39] साख स्री खंडयं ॥

---

१ इ. गैसूंड । २ इ. माहे । ३ आ.इ. अगै । ४ अ. पांषीया । इ. पांषीयां । ५ आ.इ. जांणि । ६ आ.इ. पगै । ७ आ.इ. भौलो । ८ इ. डुंगरां । ९ आ. उधोलीया । इ. उधौलीयां । १० आ. गुडला । ११ अ. पेब । १२ आ. धूवला । इ. धुधला । १३ आ.इ. उपाडि । १४ आ. जांणे । १५ इ. हणु । १६ इ. फूल । १७ आ.इ. घातीयां । १८ आ. भार-अटार इ. अढार । १९ आ.इ. किरे । २० आ. इ. कूंजरा । २१ आ. टूहरी । इ. ढूंहरी । २२ आ. टाल । २३ आ. कूंभा-थले । इ. विचा-चले । २४ अ.इ. जांणि । २५ आ.इ फाबित । २६ अ. वीजा-जले । इ. विचा-चले । २७ आ. पीवली । २८ इ. गजां । २९ आ.इ. ओपीयै । ३० आ.इ. उपरे । ३१ आ. गुडीय । इ. गुडीयां । ३२ आ. उडीयं । इ. उडीयां । ३३ इ. जांणि । ३४ इ. पबै-गिरे । ३५ इ. मेगलां । ३६ आ.इ. उभी । ३७ इ. डोहंड । ३८ इ. हिडै । ३९ आ.इ. किरे ।

घूघरां[१] पाखरां रोळ घंटा-सुरं[२] ।
चोळ कप्पोळ[३] सिंदूरमैं[४] चम्मरं ।।१५।।

मारुवै[५] रावतां[६] गाजतां मैणळां[७] ।
वाधियो[८] वाद[९] सूं इंद्ररो[१०] वादळां ।।
श्रद्द भू - मद्द समूळ ऊपाडतां[११] ।
भद्र-जाती गुडै[१२] सूंड[१३] भंमाडतां ।।१६।।

हिल्लिया[१४] हेम हैथाट फौजां[१५] हुबै[१६] ।
ध्रूंस[१७] नौबत्ति दम्मांम[१८] भेरी धुबै[१९] ।।
तब्ब अंधारमें मैन खेहांतणी ।
ऊजला[२०] बूग नाखत्र भालां श्रणी ।।१७।।

श्रावळा-भूल[२१] भालांतणा आमंळां ।
ऊमडे[२२] खैंग राठौड श्राचागलां ।।
ऊलकै[२३] हैमरै[२४] सेन ले श्रापरौ[२५] ।
साह सांमौ[२६] अयौ[२७]'मालदे' दूसरौ[२८] ।।१८।।

महाराजारौ बादसाहसूं मिळाप

गाहा

'जोध' कळोघर जोध श्रंसली । 'गाजीसाह' तेग भुज भल्ली[२९] ।
श्रावै[३०] सूं[३१]जिहंगीर[३२]श्रदल्ली[३३] । मींयौ[३४] विच[३५] श्रजमेरह दिल्ली ।।१।।

कमळ बारै ऊगा[३६] किरणाळा । भाळै "गागीसाह" भुजाळा[३७] ।
वप[३८] भूडंड पसारि विसाळा । श्रसपत्ति-राइ श्रापि[३९] श्रंकमाळा ।।२।।

---

१ इ. घुघरां । २ इ. घटा सुरं । ३ इ. कपुरमै । ४ श्र. सिंदुरमें । ५ श्र. मारुवै । ६ श्रा. रावरां । इ. राव मैरां । ७ श्रा. मैंगंली । ८ श्रा. वाघीयो । इ. वादीयी । ९ इ. वाद सु । १० इ. इंद्ररां । ११ श्रा.इ. उपाडर्तां । १२ इ. गुडे । १३ श्रा. सुंड । इ. सुड । १४ श्रा.इ. हिलीया । १५ इ. फोजां । १६ इ. हुवै । १७ श्रा. ध्रुस । इ. ध्रूस । १८ इ. दमांन । १९ श्रा. घूबै । २० श्रा.इ. उजला । इ. उजलां । २१ श्र. श्रवला-भूल । २२ श्रा.इ. उमडै । २३ श्रा. उलकै । इ. उलके । २४ श्रा. हेमेरे । इ. हैमरे । २५ इ. श्रगुरौ । २६ इ. सांम्हो । २७ श्रा.इ. श्रायौ । २८ श्रा. दूसरो । इ. दुसरौ । २९ इ. छली । ३० इ. श्राव । ३१ श्रा. सुं । इ. सु । ३२ इ. जहंगीर । ३३ श्रा. श्रदली । इ. श्रदिली । ३४ श्रा. मियौ । ३५ इ. वीच । ३६ श्रा.इ. उगा । ३७ श्र.श्रा. भुजीला । ३८ श्रा.इ. वपि । ३९ श्रा. श्रापी । इ. श्रापीया ।

खूरम[1] खरबै खलक[2] निम्रीठो[3] । किरि पलवाडौ सांड पईठो ।
मेळौ "गजण" दिलीवै मीठो । अरक क छींक[4] अमूंभी[5] दीठो ।।३।।

दूहा

राजा तम[6] हमसूं[7] मिळै, हमह मिळै[8] सुख-सात[9] ।
हजरत रळियायित[10] हुओ[11], हसि[12] पूछी[13] कुसळात ।।१।।

तूं[14] भासंकर भाळियळ[15], वरै घडा अणबोट ।
भागा जो[16] वड भाखरां, डर हुंदा सीकोट[17] ।।२।।

आजूणै[18] दिन कारणै, तो[19] जेहा कमधज्ज ।
मरद मुहंगा[20] रक्खियै[21], दूभर[22] रक्खण[23] लज्ज ।।३।।

हाजर हिंदूवै[24] तुरक, लियै[25] न पर भुंइ[26] लोडि[27] ।
चींत[28] वटावण हेक तूं, वीत वटावण[29] कोडि[30] ।।४।।

गाथा

साइर[31] मभेण लंका, रांण[32] कुंभेण[33] इंद्रजित सत्रं[34] ।
अगली[35] नृप[36] रांम चंदां[37], तत्र[38] गछे हणुमांन से[39] ।।१।।

आतमा अभै-दांनं, किन्या-दांन[40] द्योत[41] मेदनी विद्या ।
चत्वारि[42] दांन धरमं[43], तं तुल्यं[44] सांम धरमयं[45] ।।२।।

खत्र मग खग धारा[46], धारा *खग जोग धारणया ।
आरूढ़ पतितै पुरखा, गणा गणपति[47] गतिपाळह[48] ।।३।।

---

१ आ.इ. षुरम । २ इ. षलषे । ३ अ. निम्रीवो । ४ आ.इ. छीक । ५ आ.इ. अमूभी । ६ इ. तुम । ७. हमसुं । ८ आ.इ. मिले । ९ इ. सा । १० आ. रलीयांयित । इ. रलीयाइत । ११ आ. हूओ । इ. हुवो । १२ इ. हसी । १३ आ. पुछी । १४ आ.इ. तु । १५ आ.इ. भालीअल । १६ आ.इ. जे । १७ इ. सीकोट । १८ आ.इ. आजुणै । १९ इ. तो । २० अ.आ. मुहगा । २१ आ.इ. रषीयें । २२ इ. दूभव । २३ आ. रषण । इ. राषण । २४ आ. हिंदुवै । इ. हीदुवै । २५ इ. लीयै । २६ आ.इ. भुई । २७ इ. लोडि । २८ इ. चित । २९ अ.आ. वदावण । ३० इ. कोडि । ३१ आ. साईर । इ. सायर । ३२ इ. राण । ३३ अ. कूंभेण । ३४ अ. सत्र । आ. सन्त । ३५ आ.इ. अगलि । ३६ आ. निृप । इ. नृप । ३७ अ. रांमचंद: । ३८ इ. तत । ३९ आ.इ. सै । ४० अ. किना-दांन । इ. कन्या-दांन । ४१ अ. द्यात । ४२ आ.इ. चत्वार । ४३ अ. धरेमं । ४४ अ. तुलं । इ. तूल्यं । ४५ इ. धरम-मयं । ४६ इ. धारां । *इ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है । 'षग जाग धारणया' । ४७ आ.इ. गपति । ४८ अ. गतियाल । इ. गतियालं ।

कुळ जनंम[1] पांणि खगं, आसण तुरियां[2] सुरत न अंगे ।
किं भवति[3] राज चिंता, खत्रियांणं[4] नेंव दळिद्र: ।।४।।

सनमुखे महा - जुद्धे[5], सनमुखे मंगते - दांनं[6] ।
सनमुख सांम[7] अग्यां, नविहड ऐ[8] सूर धीराई[9] ।।५।।

राजा मेक सजीहा, कमण[10] वखांण तूझ[11] वरणवए ।
फण सहस सेस - नागं[12], सहस दुजीह जोग सोभागं ।।६।।

'पररेज' साह[13] सत्थे, दे कमधज लज भूडंडे ।
सुरतांण[14] खुरम मत्थे, दे बीडौ कोध फुरमांणं[15] ।।७।।

महाराजारो खुरमसूं जुध करणारो बीड़ो उठाणो

छंद कांमिखी[16]

फुरमांणं पाणं बीडौ झल्लै, नीमज्जै भुज्जा डंडं ।
राठौडां[17] मौडां[18] खत्रह-धौडां[19], धन्नं[20] मन्नं[21] बळि-बंडं ।।
संग्रांम[22] कांम[23] हांमं[24] मन्ने, दाढ़ी मूंछां[25] कर घत्ते ।
*गयणग्गं लग्गं खग्गं, तोलै वीरं धीरं वीरत्ते ।।१।

तेरस्सै हस्से कोपै[26] ओपै[27], रोपै[28] बंधै[29] रिणवट्टं ।
निल्लाटै पट्टै तप्पै दिप्पै, भांणं दूणं मैवट्टं ।।
चोळम्मै रुक्खं मुक्खं चक्ख, वपं रूपं परचंडं ।
भारत्थं बत्थं पत्थं भीमं, मांझी[30] मेरं व्रहमंडं[31] ।।२।।

भीखम क्रन्नं द्रोणं जांणे, सल्लं भूरी भगदत्तं ।
गाहेवा लंका वंका गड्डं, किरि अंगद्दं हणिमंतं[32] ।।

१ आ.इ. जनम । २ आ.इ. तुरीयां । ३ इ. भवती । ४ आ.इ. षत्रीयाणे । ५ आ. महाजुधे । इ. महाजुध । ६ आ. मंगत-दांन । ७ इ. स्यांम । ८ इ. ए । ९ इ. धीराए । १० इ. कवण । ११ आ.इ. तुझ । १२ आ. सेषनाग । १३ अ. साद । १४ आ. सुरताण । १५ इ. फुरमाणं । १६ अ. कामिषी । इ. कामीषी । १७ अ. राठोड़ं । १८ अ. मोड़ं । १९ अ. षत्र-धोडं । २० आ.इ. धनं । २१ आ.इ. मनं । २२ आ.इ. अंग्रांमं । २३ इ. कामं । २४ आ.इ. हामं । २५ आ.इ. मुछां । * इ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है । गयणंगं लगं पगं षग़ं । २६ आ.इ. कोपे । २७ आ.इ. ओपे । २८ आ.इ. रोपे । २९ आ.इ. बंधे । ३० इ. माझी । ३१ अ. व्रह्मंड । इ. व्रह्मंडं । ३२ आ.इ. हणमंतं ।

विक्कासें हासें सीसे बंध[1], मेले मूंछां[2] अ्रूंहारे[3] ।
धारा लंकाळं पांणे धूणे, अब्भं नब्भं आधारे[4] ॥३॥

सत्तोलं बोलं मुक्खे दक्खे, खेलेवा खत्रं-घौडं ।
साहिजादै माथ विद्दा हूओ, हिन्दू - पत्ती[5] राठौडं ॥
पडिगाहं साहं बाहं उब्भै, भारं भुज्जे संभाए ।
दुर-बारा मज्झे 'मालौ'[6], दूजो[7] बळियौ[8] राजा वेडाए ॥४॥

मज्जोडा घोडा तेजी तत्ता, सद्दोमता सूंडाळं ।
खज्जानां ग्यानां लक्खां कोडो, आंणै दीना अच्चाळं ॥
अंबाडी गज्जां घज्जां नेजां, घोडे[9] धत्ते पल्लांणं ।
कोठारं भारं ऊंठा[10] पूठी, डेरा तंबू साइवांणं[11] ॥५॥

नाफेरी[12] भेरी सद्दं नद्दं, हुब्बै धुब्बै नीसांणं[13] ।
दम्मांमं दीयं कूचं कीयं, मौडे मौडे मेल्हांणं[14] ॥
सुरतांनां खांनां वड्डा वड्डा, मिल्लिकं मीयं मीरं ।
रट्ठौडं रावं 'गाजी साहं'[15], सत्थे हिन्दू[16] हम्मीरं ॥६॥

गाथा

फुरमांण वेग फिरियं[17], असपति[18] नर गजपति[19] अगै ।
दिस आठ राठ विडियं[20], मझि समुंद्र हेम मबांइ ॥१॥

छंद मेहांणी

घोडां नै वेसांरा नांम

हूरम्मजि[21] केचो मुकरांणी[22] ।
खंधार हरेवी खुरसांणी ॥
आरब्बी रूमी उजबक्का ।
समहदी संभर - कंदक्का ॥१॥

---

१ आ. वधे । २ इ. मूछं । ३ अ. चुहारे । इ. अ्रुहारं । ४ आ.इ. अधारे । ५ इ. हींदू-पती । ६ इ. मालो । ७ इ. दुजो । ८ आ. वलीयो । ९ आ.इ. घोडे । १० इ. उठां । ११ इ. वाईवाणं । १२ अ. नफेरी । इ. नफरी । १३ इ. निसाणं । १४ अ. मोहाणं । इ. मेल्हांणं । १५ अ.आ. गाजीसाव । १६ अ. हीदु । १७ इ. फिरीयं । १८ इ. असिपति । १९ इ. गजपती । २० अ. बिडीयं । २१ आ. हुरमजी । इ. हुरंमजि । २२ आ.इ. मूकराणी ।

बंगस्सी[१] भम्मर खोहाए ।
बदकस्सी काबिल रोहाए ॥
गलबल्ला[२] मक्का मद्दीना ।
कसमीर भुटंती राज्जीना[३] ॥२॥

मुलतांणां सिंघू घट्टाए ।
आरोडा भक्खर थट्टाए ॥
लोहोरी[४] हांसी हंसारी ।
पूरब्बी देसी गंगपारी ॥३॥

नाळनोळ[५] डीडू नग्गोरा ।
अजमेरा[६] बोली दुग्गोरा ॥
ग्वालेर[७] ओलो सहोडाए[८] ।
रिणथंभर सेंभर[९] तोडाए ॥४॥

कस्सूरी मेहर कुस्साबा ।
देपाळपुरी - सा[१०] पंजाबा ॥
वितुंडा सरसा ग्रीहाडा[११] ।
सीहांन दी कोठी बाजवाडा ॥५॥

कम्माउ नग्गर कोटाए ।
मेवाती मुहमद दोटाए[१२] ॥
धम तोडा पक्खलिया लाए ।
जंगळिया[१३] जंबूबा लाए ॥६॥

मरहट्ठी भट्ठी मंडहाडा ।
पठ्ठांण[१४] धोळा-गिर[१५] पाहाडा[१६] ॥
दळ डाहळ-गळिया दांणीए ।
पीयळिया[१७] काळा पाणीए ॥७॥

---

१ इ. बगसी । २ इ. कलबला । ३ अ.आ. गजनी । ४ आ.इ. लाहोरी । ५ आ. नाल-नोल ।। ६ अ. अजमेरी । ७ इ. गुवालेर । ८ आ.इ. सहोडाए । ९ आ.इ. सैंभर । १० अ. देपालपुर । इ. देपालपुरा । ११ इ. त्रिहाडा । १२ इ. दोठा ए । १३ अ.इ. जंगलीया । १४ अ. पैठांणं । इ. पैठाणं । १५ आ. धोला-गिरि । इ. धोला-गिर । १६ आ.इ. पहाडा । १७ अ.इ. पीयलीया ।

पांणी-पंथ पड्डर[१] वेसा ए।
करणाटक[२] कूंकण[३] देसा ए[४] ॥
वीजा-पुर कनडो बुगलांणा[५]।
गोळ-कुंडा[६] वेदुर[७] तिलगांणा[८] ॥८॥

देव-गिरी[९] दौलत[१०] वद्दाए[११]।
नासका त्रंबक[१२] हद्दा ए॥
अहमदा नगर[१३] आसेरा।
साल्हेर मोल्हेरक भंभेरा ॥९॥

* नरबद्दा कंठा नमियाडा।
चोरासी गड्ढां[१४] बरुआडा॥
गुंड-वांणा[१५] झाड खंडी-सा ए।
छिडि तांडा[१६] गोड उडीसा ए॥१०॥

रोहितास काळी-झर बंगाळा।
नील-कंठ नांदर नेपाळा॥
कांमरे वैसंकर जट्टाए।
सूरती सेन उलट्टा ए[१७] ॥११॥

लोहा-गिर पट्टण हांजो ए।
गड्ढां[१८] वैरागर लांजी ए॥
कन्नौजां[१९] चीणी[२०] चरणोढा[२१]।
मांडव्वा बंधव सन्नाढा[२२] ॥१२॥

---

१ आ. पडर। इ. पंडर। २ आ.इ. करणाट। ३ आ.इ. कुंकण। ४ अ. ऐ। ५ अ.इ. बूगलांणा। ६ अ. गोल कूडा। इ. गोल कुडा। ७ इ. वेदूर। ८ अ. तीलगांणा। ९ आ. देवगिरि। इ. देवगिर। १० आ.इ. दोलत। ११ इ. वदा-ऐ। १२ आ. त्रंबकं। १३ अ. अहम-नगर। * 'अ' प्रति में ९ वें छंद के बाद १० वां छंद दो बार लिखा हुआ है—

प्रथम १० वें में पुनः—"नरमदा नगर आसेरा। साल्हर मोल्हेरक भंभेरा ॥१०॥

इसके बाद फिर १० वां छंद है जो बराबर 'इ' आदि प्रतियों से मेल खाता है। नोट—यह लिपिक की भूल मात्र है। १४ अ. गटां। १५ अ. गुडवांणां। १६ अ. तांड। १७ इ. उलटाए। १८ अ. गटा। १९ आ.इ. कनौजा। २० इ. चरणी। २१ अ. चरणाटा। २२ अ.आ. सनाटा।

ब्रंम - पुत्रह[1] कासो वेरारा ।
सोनारा गांमी[2] पंचुग्रारा ॥
मागध्धह राजा[3] महला ए ।
तो सांम तिजाउर टिल्ला ए ॥१३॥

मांडव्वा पट्टण चौरासी ।
छिडिया[4] मांन-धाता सत्यासी ॥
गूंजव्वै सत्तरि[5] हज्जारा ।
बांणूं लक्ख बलख बक्खारा ॥१४॥

भर - ग्रच्छी खंभा - इत्ती ए ।
प्रति-काळ किंरंग विलाती ए ॥
ककडाळा पाउ कच्छी ए[6] ।
दरियावां[7] कांठां[8] मच्छी ए ॥१५॥

गिरनारा[9] जूना[10] गड्ढा ए ।
दळ वंका[11] वहुण[12] दुवड्ढा[13] ए ॥
छिडिया घर घोडा घट्टा ए[14] ।
जळ - वट्ट ग्रनै थळ-वट्टा ए ॥१६॥

नवकोटी मारू मेवाडा ।
हाडोती वागड ढूंढाडा[15] ॥
पूरब[16] पच्छिम परचंडा ए ।
दखणाधा[17] उत्तर खंडा ए ॥१७॥

खुरसांणां हिंदुस-थांना[18] ए ।
खिडिया[19] सुरतांणां[20] खांना ए ॥
खूंदालम[21] ग्रागळि[22] ग्रावीया ।
दे बीडो[23] वेग चलावीया[24] ॥१८॥

---

१ ग्रा. व्रह्म-पुत्र । इ. वृह्म-पुत्र । २ इ. गामी । ३ ग्रा.इ. राज । ४ इ. छिडीया । ५ इ. सतिरण । ६ इ. ऐ । ७ इ. दरीयावां । ८ ग्र. कंठा । इ. कांठा । ९ ग्र. गिरिनारा । १० ग्रा. जुंना गटा । इ. जुंना गढा । ११ ग्र. वंगा । १२ इ. वेंहण । १३ ग्र. दुवटा । १४ इ. ऐ । १५ ग्र.इ. ढढाडा । १६ इ. पुरब । १७ ग्र. दषणाध । इ. दषणाधी । १८ ग्र.इ. हीदुसथांना । इ. हिदुस्थाना । १९ ग्र.इ. षिडीया । २० इ. सूरतांणां । २१ ग्र. षुदालम । इ. षुदालिम । २२ ग्र. ग्रगलि । २३ ग्रा. बीडो । २४ ग्र इ. चलाईया ।

तांम[1] सताब हुआ[2] त्यारू ए।
जवन हिंदू[3] वूहा ज्यारूं एं॥
हिंदूवै[4] सेन मुगल्ली ए।
दळ दद्दळ फौजां चल्ली ए॥१६॥

साही सेना रौ कूच

गाहा

गज भेरि नींसांण[5] ननदं। परबतमाळ[6] दियै[7] पड सद्दं।
साह सेन चल्ले सरहद्दं। गूधळियौ[8] गयणाग[9] गगद्दं॥१॥

असपति सेन असंख उलट्टं[10]। हिले हेम दे महै पट्टं।
गिरवर धर भंगर गाहट्टं। थिउ पैमाळ[11] पाघरा पट्टं[12]॥२॥

गाही गोम गयण गुडळांणौ[13]। धज्ज[14]पताकां[15]अरक ढकांणौ[16]।
दहळ पयाळ[17] सेख दहलांणौ। पतसाही[18] दळ कीध पयांणौ॥३॥

छंद रसाउला[19]

सेनमैं सब्बला। हुई हीलोहळा।
जांण निध्धेजळा[20]। पुळै[21] पाइद्दळौ[22]॥
*मल्हपै[23] मैंगळा[24]। सूंड[25] लल्लवळा।
आगळी ऊजळा। सेत-दांतू-सळा[26]॥
सोहिया[27] सांमळा। वप्पि वींजा-चळा[28]।
स्रंग[29] कूंभा-थळा[30]। वोम किरि वद्दळा[31]॥

---

१ अ. ताम। २ इ. हूआ। ३ आ.इ. हीदु। ४ अ. हीदूवै। इ. हिदूबे। ५ इ. निसाण। ६ अ. परब-माल। ७ इ. दीयै। ८ आ.इ. गुघलीयौ। ९ इ. गैणाग। १० इ. उदलं। ११ इ. पैमोल। १२ आ. घटं। १३ अ. गूडलांणौ। १४ अ. घजा। इ. घजां। १५ इ. पताषां। १६ अ. टकांणौ। इ. ढैकांणौ। १७ अ. पयालि। १८ इ. पतिसाही। १९ अ. रसाऊला। इ. रसावला। २० अ.इ. निघजला। २१ इ. पुले। २२ आ. पाईदला। *प्रति अ. में यह छंद अशुद्ध है जिसका पाठ इस प्रकार है।

"महला सेत दांतूसला, सोहीया सांमला, वपि वीजाचला, श्रिग कूंभाथला"

२३ अ. महला। इ. मल्हपे। २४ आ.इ. मंगला। २५ इ. सुंड। २६ आ. दांतूसली। इ. दांतुसला। २७ आ.इ. सोहीया। २८ आ. घीजा-चला। इ. विजा-चला। २९ इ. श्रिग। ३० इ. कुंभा-थला। ३१ आ.इ. वादला।

कसस्सै कंठळा । आंकुसां वीजळा[1] ।
चमक्कै चप्पळा । बेरकां बंबळा[2] ।।

ढेच[3] ढालव्वळा[4] । असि ऊतांमळा[5] ।
वहै वेगागळा । वाज वाहै[6] नळा ।।

कांपिया[7] कम्मला । धूजि रस्सातळा ।
सेख सळ्ळसला । नाग नव्वै कुळा ।।

प्रब्बंता प्रज्जळा । टंक[8] टळा टळा[9] ।

छंद सळम्भळा

गहपती[10] गिगन्नह गूघला[11], गोभ गिरव्वर गूडळा[12] ।
महि मेर मेहागिर[13] मेखळा, थियौ घुळीरव[14] धूंधळा ।।१।।

धूंधळौ[15] अंबरं । खेह[16] मै डंबरं ।
बंब रातं-बरं । जांणि जन्नै करं ।।

तूटि जाईतरं । भेरमै भंगरं ।
पट थियौ[17] पव्वरं । हींजरै[18] हैमरं ।।

रोळ है-पक्खरं । गै गुडै भक्खरं ।
मद्दमै नींझरं । घोर घट्टा सरं ।।

भूल पाटंबरं । लोहमै लंगरं ।
भ्रक्कुटै[19] चम्मरं । मलप्पै[20] कुंजरं[21] ।।

सैन किरि वांनरं । साथ सीतावरं ।
उलट्टा सायरं[22] । जांण चत्रमुरं ।।

भोम भारम्भरं । हार कंपै[23] हरं ।
कोम क्रोड डरं । 'है-खुरै[24] पत्थरं ।।

---

१ इ. विजला । २ अ. बंबंला । ३ आ. टैच्च । ४ अ.आ. लालवला । ५ आ. उतामला । इ. उतांमला । ६ आ.इ. वाहे । ७ अ. कांपीयं । इ. कांपीयां । ८ अ. टक । ९ अ. टलवला । १० आ.इ. गहपति । ११ आ.इ. गुघला । १२ आ.इ. गुडला । १३ आ.इ. मैहागिरि । १४ आ.इ. घूली-रव । १५ अ. घूघलो । इ. घूघला । १६ इ. षेद । १७ आ.इ. थीयो । १८ अ. हीजरै । १९ आ.इ. भ्रिकुटे । २० आ.इ. मलये । २१ आ.इ. कूजरं । २२ अ. साइर । २३ इ. कंपे । २४ इ. है-पुरे ।

उड्डि वैसन्नरं[1] । सांमठा सध्धरं ॥
सुब्भटां भूलरं[2] । फौज घांसाहरं ॥

असमांनक[3] फटी उद्दरं । गयण[4] गरदां गाहंबरं[5] ।
लख थाट दगग्गै लसकरं । गाहट्टे गिर - कंदरं ॥२॥

कंदरां अन्नडा । गाज[6] तूटे गडा ।
ढोल नीघस्सडा । हूकळै है - घडा ॥
फूरणियां[7] फडहडा । धज्ज धू अध्धडा ।
है खडै वांकडा । ताजवै ताकडा ॥
नभ्भ हू नीयडा । खिरै जांणै उडा ।
हुवै[8] हूबच्छडा । अस्स[9] ऊरव्वडा ॥
वाजिया[10] वेगडा । व्रिक्ख[11] भाजै थडा ।
ऊजडै[12] सभझडा । धूज प्रिथ्थी पुडा ॥
खट्टमै हैकडा[13] । कोम कंधं[14] मुडा ।
कोडि कंपं दडा । दाढ खडहक्खडा ॥
मेहलां[15] मंकडा । सैन तै समवडा ।
मत गयंद गुडा । प्रब्बतां जेहडा ॥
फरहरै कप्पडा । नीलमै रत्तडा ।
झाझ झूलभ्भडा[16] । कूंतमै[17] ऋंगडा ॥

रण-खेत[18] चडंदा रिहखडा । कमण आया की बप्पडा ।
पतसाह[19] तणा दळ प्रग्गडा । पूरब पहुंचै[20] ढूकडा ॥३॥

ढूकडा हूबयं । सेन पूरब्बयं ।
नगारां[21] धूबयं[22] । गुडै गज खंभयं ॥
जांण[23] गोरंभयं । साट सीरंमयं ।
असी ऊरंमयं । कीध ऊमंगयं ॥

---

१ आ.इ. वैसनरं । २ इ. भुलरं । ३ इ. असमांन । ४ गण । ५ इ. गहबरं । ६ अ. गाज । ७ अ. पूरणीयां । इ. फूरणी । ८ इ. हूह । ९ इ. असि । १० आ. वाजीया । ११ अ.इ. विृष । १२ अ. उडै । १३ इ. हेकडा । १४ अ. कंध । १५ इ. महला । १६ आ. झूल-भडा । इ झुल-भडा । १७ आ.इ. कूतमै । १८ आ.इ. रिण-षेत । १९ आ.इ. पतिसातणा । २० अ. पहुचै । इ. पहूचे । २१ अ. नमारा । २२ अ. धूबये । इ. धुबयं । २३ इ. जांणि ।

ऊपडै वग्गयं । गाजवां लग्गयं ।
गोम गयणंगयं । धूजिया[1] नग्गयं ।।

सेख वासग्गयं । डंबरे डंबयं ।
गाहिजै पब्बयं । सात सांमंदयं ।।

जांण ऊलट्टयं । हेम परबत्तयं ।
जांण[2] कि[3] हिल्लये । खळभळे खंडयं ।।

डोलिया[4] दीपयं । मेर ब्रह्मंडयं[5] ।
सिंघळी सुंडयं । रेण उच्चंडयं ।।

बेरका झुंडये[6] । गिग्गने लोडयं ।
फौज हेमज्जयं । त्रिग्ग[7] अमूंजयं ।।

पतिसाह[8] नमो[9] पारंभयं । सैन[10] असंख्या लब्भयं ।
इम किया[11] रांम आंरभयं । घूंघळिया[12] घर अब्भयं ।।४।।

अब्दुररहीम खांना खांनरौ कैद होणौ

गाहा

आभा किरि गज दळ[13] उपडिया[14] ।
खूंदालम[15] कट्टक इम खडिया[16] ।।
राडि बरारी[17] झूंझे[18] पडिया[19] ।
खांना - खांन जंजीरे जडिया[20] ।।१।।

भीम - नाद भेरी घूंमाडै[21] ।
भालां डंबर गयण भमाडै ।।
पडिया[22] घोडां[23] घंस[24] पहाडै[25] ।
असपत[26] दळ वागां ऊपाडै ।।२।।

---

१ आ.इ. धूजीया । २ आ.इ. जांणि । ३ अ. कै । ४ आ.इ. डोलीया । ५ इ. वृह्मंडयं । ६ इ. झूडयं । ७ आ.इ. त्रिघ । ८ आ.इ. पातिसाह । ९ आ.इ. नमो । १० इ. सने । ११ आ.इ. कीया । १२ आ.इ. घूघलीया । १३ अ. दाण । आ. दांण । १४ आ.इ. उपडीया । १५ आ.इ. षूदालम । १६ आ.इ. षडीया । १७ आ.इ. बरारि । १८ आ.इ. झूझे । १९ आ.इ. पडीया । २० आ. जडीया । इ. जुडीया । २१ आ. घूमाडे । इ. घुमाडे । २२ आ.इ. पडीया । २३ इ. घोडां । २४ आ.इ. घस । २५ इ. पूहाडे । २६ अ.इ. असपति ।

गोम गज[1] है - पाऐ[2] गाही ।
रूप फुण सहस तपे सगळाही[3] ।।
लागा अंबर करण लडाई[4] ।
पूरब[5] दळ आया पतसाही ।।३।।

साही दळरौ वरणण

कवित्त

भीम भयंकर नाद, भेर नीसांणां गरजै ।
गुहिर सद्द गडगडै, गयण बारह धण गरजै[6] ।।
खिमै[7] कूंत[8] अदभूत, भडां वांकां भूडंडै ।
वादळ[9] वादळ वळकि[10], वीज लत्ता ब्रहमंडै[11] ।।
तळ जोड पटै[12] कुंजर वहै, अनड नदी नड दडियडे[13] ।
असपती[14]-राव[15] असमांनरा, दळ वदळ वदि वदि[16] चडे ।।२।।

भूमंडळ भैकंपे, जांण रैणाइउ[17] फट्टौ ।
प्रळै-काळ कळिपंत[18], प्रथी[19] उतपात प्रगट्टौ[20] ।।
रांम चंद सिरि लंक, कीध जांणे आरंभह ।
जटा-जूट[21] किरि धूणि,[22] रुद्र किय[23] नाटारंभह ।।
वन खंड दुरग्गां[24] गिर-वरां, आवरत्त वूहौ सब्बळ ।
सुरतांण खुरम ऊपर[25] खडै[26], दिस प्राची पतिसाह दळ ।।२।।

महाराज गजसींघरौ वरणण

करिमरि कंकण सुकरि, नेत्र बाधौ सिखराळह ।
वीर रस्स वरसोह, कंठ लज्जी वरमाळह ।।

---

१ अ. गजं । २ आ. पाए । ३ अ. सगलाइ । इ. सगलाई । ४ आ. लड़ाई । ५ अ. पूरव । ६ इ. गजे । ७ आ.इ. षिवै । ८ इ. कूत । ९ इ. वादलि । १० इ. वलक । ११ अ. ब्राह्मंडे । इ. व्रह्मंडे । १२ इ. पडै । १३ आ. दडीयडे । इ. दडीयाडे । १४ आ.इ. असपति । १५ आ.इ. राउ । १६ आ. चतुरंगी दल वर चडै । १७ इ. रैणाईर । १८ अ. कलपंत । १९ आ.इ. प्रिथी । २० आ.इ. प्रघटौ । २१ इ. जटाजुटि । २२ इ. धुणि । २३ इ. कीयौ । २४ इ. दुरंगां । २५ आ.इ. उपर । २६ इ. षडे ।

विकट रूप वींदणी[1], खुरम[2] घड[3] कीध[4] आडंबर ।
लगन[5] प्रब्ब[6] रणताळ[7], धमळ-मंगळ सिंधू[8]-सुर ॥
अधपती[9] बहूतरि[10] ऊमरा[11], सतरि - खांन सुरतांणरा ।
दळ-थंभ 'गजण' दुल्लह[12] हुऔ, जांन सेन जोगणपुरा[13] ॥३॥

तीरथ-राउ[14] प्रयागि[15], राव[16] कमधज्ज पधारे ।
व्रंम-सूत[17] निय[18] पहरि[19], करगि अंजलि कुस[20] धारे ॥
करि मंजन विधि[21] सहित[22], कीध तरपण गंगा तड[23] ।
विवह दांन दै विप्रां, अंकमाळी अक्खै वड ॥
त्रिविध[24] मै ताप[25] पापह त्रिविध[26], आप हूंत[27] अळगा करे ।
'सूरउत' गोत ऊधरि[28] सपत[29], एकोतर कुळ ऊधरे[30] ॥४॥

वेद-मंत्र बोलंत[31], वेद पाठी व्राहंमण[32] ।
पहरे[33] पट्ट अबोट, द्रब्ब आपै[34] घण[35] सघण ॥
सूं[36] जमदड्ढा तेग, जोड[37] चौधार बडप्फर ।
सहित 'भांण' सारधू, सोळ सिंगार निरंतर ॥
कीयौ तुलाब[38] कमधज्ज नृिप[39], जस सस[40] सूरज[41] समवडै[42] ।
हिंदुआं-छात[43] हिंदू[44] तुरक, धरम न तोलै तो धडै ॥५॥

कासीराव[45] कमधज्ज, नीर - गंगा तद नांहै[46] ।
मुगति-खेत सिव-पुरी, महा तीरथ अवगाहै[47] ॥

---

१ अ. वीदणी । इ. विदणी । २ इ. षुरमि । ३ अ. घडि । इ. षड । ४ अ. की । ५ अ. लग्न । ६ अ. प्रर्ब । ७ इ. रिण-ताल । ८ अ. सिध-सुर । ९ अ.इ. अषपति । १० इ. बहुतर । ११ अ. उमरी । १२ अ. दुलह । १३ अ. गणि-पूरा । १४ अ. तीरथ राइ । १५ अ. पीयागि । इ. प्रयागि । १६ अ.इ. राउ । १७ अ.इ. व्रह्म-सूत । १८ अ.इ. नीय । १९ इ. पहिर । २० इ. कूस । २१ इ. विध । २२ अ. सहति । २३ अ. तडि । २४ अ. त्रिविधि । २५ इ. तात । २६ अ.आ. त्रिविधि । २७ अ. हुत । इ. हूत । २८ आ. उधरि । इ. उधर । २९ इ. सपति । ३० आ. उधरे । इ. उधारे । ३१ आ.इ. बोलंति । ३२ आ. व्राहमण । इ. ब्राहमण । ३३ आ. पहरि । इ. पहिर । ३४ आ.इ. आप । ३५ इ. घणे । ३६ आ.इ. सु । ३७ इ. जोडि । ३८ इ. तुलाव । ३९ आ.इ. नृिप । ४० आ. ससि । इ. सिस । ४१ इ. सुरज । ४२ अ. समवेडै । इ. समवडे । ४३ आ. हीदूआं-छात । इ. हींदुवां छात । ४४ आ. हीदू । इ. हिदु । ४५ अ.इ. कासीराउ । ४६ अ. नांहे । इ. न्हाहे । ४७ इ. अविगाहे ।

दीध द्रब्ब दक्खणा, करगि[१] बंभणा[२] कळप्पै[३] ।
कपिल धेन कळ-घूत, भोम[४] आगाहट[५] अप्पे[६] ॥
भो[७] मेटि उभै संसार भव, इम कुण कुळ[८] उद्धारसी ।
परसियौ[९] राय[१०] जोधहपुरे[११], विस्वनाथ वांणारसी[१२] ॥६॥

गया राव राठौड, विद्ध देखे परपूरण[१३] ।
प्रेत सिला भरि[१४] पिंड[१५], पीर[१६] रिण हुहुइ ऊरण[१७] ॥
मात पक्ख पित पक्ख, पितर कारज[१८] संभारे ।
सपत गोत उद्धरे, वंस इकोत्तर[१९] तारे ॥
वड दांन दीध ब्रांह्मणां, वडौ धरम जस विसतरे ।
गज सिंघ वंस राठौड हर, इम भागीरथ अवतरे ॥७॥

गाथा

पुत्रज वैर वराहौ, पुत्र जग मां[२०] उधरै पिंडौ[२१] ।
पुत्रज सांम सनाहौ, पुत्रज पाट उद्धरण धीर ॥१॥
सागर वंस उद्धरण कारणि[२२], आंण[२३] मथा सीस मंदागणि ।
तै भागीरथ तणौ सहजे, 'गाजीसाह' हुऔ[२४] कमधज्जे ॥२॥

कवित्त

प्रिथम पाट उद्धरे, त्याग उधारि[२५] खट ब्रन्नां[२६] ।
आच खडग ऊधरे[२७], मुदति[२८] सुरतांणां खानां ॥
खत्री-धरम[२९] उद्धरे, खत्र खेले[३०] खत्र-धौडां[३१] ।
गया पिंड[३२] उद्धरे, वंस उद्धरि राठौडां ॥
पीयार[३३] प्रिथी पुड उद्धरे, सर वापी उद्धरि वरण ।
'गजसाह'[३४] 'गांगेहर'[३५] ऊठियौ[३६], पतिसाहां छळ उधरण ॥१॥

---

१ इ. करणि । २ इ. बांभणां । ३ म. कलपै । इ. कलपे । ४ मा. भोम । ५ मा. आगाहद । इ. अगाहद । ६ मा इ. अपे । ७ मा. भो । ८ म. कूल । ९ मा.इ. परसीयो । १० मा. राउ । ११ म. जोधपुरे । १२ मा. वाणारसी । इ. बाणारसी । १३ इ. परिपूर्ण । १४ मा. इ. भर । १५ मा.इ. पींड । १६ मा.इ. पिर । १७ इ. उर्ण । १८ मा. कारजि । १९ इ. ईकोतर । २० इ. मा । २१ इ. पिडो । २२ म. कारण । २३ इ. आंणी । २४ म. हूओ । इ. हुवो । २५ इ. उधारि । २६ इ. षट-व्रनां । २७ इ. उधरे । २८ इ. मुदिति । २९ इ. धत्रीधर्म । ३० म. षेले । ३१ इ. षत्र-घोडां । ३२ इ. पिड । ३३ म. पायार । ३४ इ. गजसीह । ३५ इ. गणे । ३६ मा.इ. उठीयो ।

गाथा

आरंभ जुध उभ्भयौ[१], त्रितिय[२] नैवच[३] जुध आरंभौ।
जोधांणै[४] जोध विद्या, सिधांणै जोग संग्रांम[५] ॥१॥

तयौ देव (त्रिविध गुणया), त्रिविधि ह्वोयसि[६] त्रिविध मे जोगौ[७]।
त्रिकाळ[८] त्रिविध[९] कज्जं, देवौ पिता सांमि[१०] कारज्जौ[११] ॥२॥

रट्ठौड रूप राए दीनौ[१२], सुरतांण नांम दळथंभण[१३]।
हिंदुवै[१४] मुसलमांणौ[१५], विरदावियै[१६] जोध विरदैता[१७] ॥३॥

गुणि-अणे[१८] गुणमाला, गढि गुंथाइ[१९] गूंथिया[२०] गाथा।
गजसिंघ विंद[२१] सोभा, दंपति जथा[२२] सोभिय[२३] मोड[२४] ॥४॥

कवित्त

जपै[२५] सीह 'गजसीह', सुणौ[२६] हिंदुवां[२७] तुरक्कां[२८]।
कहै वेद कत्तेब, तत्त साहस त्रिहुं[२९] लोकां॥
मारण मरण नै दांन, पांण रहमांण तणै बे।
दियै[३०] तांह जगदीस, आसमांनी फत्तै ए॥
एकाज टूंस आडी नदी, नैडौ सहि जादौ[३१] खुरम।
अणकियै[३२] जुद्ध आपां[३३] अग्रिम, महाजुद्ध कीयौ धरम[३४] ॥१॥

महाराजा गजसींघ की चढाई करणी

दे दमांम[३५] गजपती, तांम[३६] चडियौ[३७] बोले बळ।
चडे सेन घण सघण, तांम[३८] कंपै हर मेखल॥

---

१ आ.इ. उभयो। २ आ.इ. त्रितीय। ३ इ. नइवच। ४ इ. जोधांण। ५ आ. इ. संग्राम। ६ आ.इ. लोगसि। ७ अ. जोरगो। ८ अ. त्तिकाल। ९ आ. त्रिविधी। १० अ.इ. साम। ११ अ.इ. कारिजो। १२ इ. दीनो। १३ इ. दल-थ्रंभ। १४ अ. हीदूवै। इ. हीदुवै। १५ इ. मुसलमांण। १६ अ. विरदावीयो। इ. बिरदाबीयो। १७ अ. बिरदैत। १८ आ. गुणीअणे। इ. गुणीयणे। १९ अ.इ. गंथाई। २० आ. इ. गूंथीया। २१ इ. विंद। २२ इ. जदा। २३ अ.इ. सोभीय। २४ अ. मोड। २५ अ.इ. जंपै। २६ इ सुणो। २७ अ. हीदुवां। इ. हींदुवां। २८ इ. मैं तुरकां शब्द नहीं है। २९ आ. त्तिहु। ३० इ. दीयै। ३१ इ. साहिजादो। ३२ इ. कीयो। ३३ इ. आयां। ३४ इ. धमर। ३५ अ. दमां। ३६ इ. ताम। ३७ आ.इ. चडीयो। ३८ इ. ताम।

चडिया[1] हिंदू[2] तुरक, तांम[3] चडियौ[4] सहिजादौ[5] ।
गजथट्टां गाहटे[6], कीध सलिता जळ कादौ[7] ॥
ऊत्तरै[8] टूंस[9] असपत्ति[10] दळ, दुहुं[11] कोसे डेरौ कियौ[12] ।
तिण वार खुरम सुरतांण सूं[13], जोधपुरै जुध कापियौ[14] ॥२॥

कमध राव[15] कोरटै, खुरम खैरागढ आयौ ।
बिहुंवै[16] बळ •बोलियौ[17], करै बेकंध सुहायौ ॥
गज समूह गजसींह, खुरम आगिना[18] आई[19] ।
काळ'नळ कोपिया[20], लियण असमांन लडाई ॥
लाभसी विगत[21] लाठां[22] भलां, नरां नाच आयौ नहै ।
जिहंगीर खुरम उभै दळां, उभै कोस अंतर रहै ॥३॥

बळि भरियौ[23] विरडियौ[24], खुरम माझी गहवंतौ ।
भ्रंुह[25] चडै चख त्रिडे[26], रोस हूं[27] मुंह[28] हुइ[29] रातौ[30] ॥
रिडै[31] जांण आहज्ज[32], अगन[33] धडहडती ऊपरि ।
सघण गाज सांभळे, जांण[34] सादूळै[35] केहरि ॥
वांकिम्म वींद[36] दिन वांकडै[37], वाद न छंडै[38] वंकपण ।
वांकडौ[39] सेर ऊठै[40] विढण, वदै जोह वंका वयण ॥४॥

खुरमरो भीम सीसोदियाने विरुदाणो

तांम[41] रांण[42] सीसोद[43], खुरम सुरतांण पडिग्गर ।
मूझ सेन दळ - थंभ, आज कुण तूझ बराबर[44] ॥
दिल्ली दावा - मुदी, तुं हिंज आगळ है रांणां[45] ।
तो दादौ 'संग्रांम', ग्रहण मोखण सुरतांणां ॥

---

१ आ.इ. चडीया । २ आ. हीदु । इ. हिंदु । ३ इ. ताम । ४ आ.इ. चडीयौ । ५ इ. साहिजादौ । ६ इ. गाहेट । ७ अ. कांदौ । ८ आ. उतरे । इ. उधरे । ९ इ. ढंस । १० आ. असपति । इ. अधपती । ११ अ. दुहूं । इ. दहु । १२ आ.इ. कीयौ । १३ आ. इ. सुं । १४ अ. कावीयौ । इ. काबीयौ । १५ अ इ. कमधज राउ । १६ आ. बिहूंवै । इ. बिहुंबे । १७ आ.इ. वोलीयौ । १८ अ. अगिना । १९ इ. आइ । २० आ.इ. कोपीयौ । २१ आ इ. विगति । २२ आ. लांवां । इ. लांवा । २३ आ.इ. भरीयौ । २४ आ.इ. विरडीयौ । २५ आ.इ. भ्रुह । २६ आ. तिडे । २७ आ.इ. हुं । २८ इ. मुंहि । २९ आ. हूइ । इ. हुय । ३० आ. रतौ । ३१ अ. रिणै । ३२ आ. आहज । इ. आहाज । ३३ इ. अगनि । ३४ अ.इ. जांणि । ३५ आ.इ. सादुल । ३६ इ. विंद । ३७ आ. बंकडै । इ. वांकडे । ३८ अ. छेकै । ३९ इ. वांकडो । ४० आ इ. उठै । ४१ आ.इ. ताम । ४२ आ.इ. राण । ४३ आ. सीसोद । ४४ आ.इ. बराबरि । ४५ इ. राण ।

खूमांण[1] दळे खुरसांण[2] सूं[3], कमण जुद्ध मंडै बियौ[4] ।
'भीमेण' ऊठि[5] 'अमरेस' रा, तो सिरि[6] नेत[7] परट्ठियौ[8] ॥५॥

तांम[9] 'भीम' ऊठियौ[10], खाग[11] धूणै[12] भूडंडह ।
जडै पाउ पायाळ, अडै मत्थौ ब्रहमंडह[13] ॥
जिम वांमण[14] बळ छळण, नेम वधियौ[15] देहा दळ ।
घणौ घ्रित[16] सींचियै[17], जांण धिखियौ[18] जाळं-नळ ॥
'भीमेण' भयंकर[19] भड सिहर, इसै[20] रूप[21] 'अमरा' सुतन ।
जळ-निधी कूंभ[22]-सभ्रम जिहीं, एक करै जळ आचमन ॥६॥

गाथा

जोगाभ्यासी[23] कीजे, कीजै संग्रांम[24] सांम[25] छळ मरणौ ।
पांमीजै[26] मित[27] मोखौ, निस्चयं तत निरबांण ॥१॥

वदंति लोक वाक्या, पपीलिका मारगं पयणै[28] ।
सिधंति सूर पंथं, विहंगम[29] पथ[30] पणयह[31] ॥२॥

धीर जो लज मांणौ, अवसांण मैं सिध अणभंगौ ।
पौरस पराक्रमौ, सूराणै सपत चिहनांनि ॥३॥

'भीमेण' वयण वंका, कहियासि[32] पेख सेन सुरतांणौ ।
ग्रह धांम ठांम दूरे, आसन्नौ सूरमां सरग ॥४॥

मरणौ लाभंति[33] भागे, दखै खुमांण रांण दस-सहसौ ।
असपति उभै जुद्ध ए, एह औसर कदं प्रांमेस ॥५॥

---

१ अ.इ. खुमांण । २ इ. षुरमांण । ३ अ. सुं । ४ अ.इ. बीयौ । ५ अ.इ. उठि । ६ अ.इ. सिर । ७ अ.इ. बेत । ८ अ.इ. परठीयौ । ९ अ. ताम । १० अ.इ. उठीयौ । ११ अ.इ. षग । १२ अ. धूंणै । १३ इ. वृह्मंडह । १४ अ. वामण । इ. बामण । १५ अ.इ. वधीयौ । १६ इ. घ्रीत । १७ अ. इ. सीचीयै । १८ अ.इ. धिषीयौ । १९ अ. भियंकर । २० इ. ईसै । २१ अ. रूपि । २२ अ. कूच-संभ्रम । इ. कुभ-संभ्रम । २३ इ. जोगास्यांस । २४ अ.इ. संग्राम । २५ अ.इ. साम । २६ अ.इ. पामिजे । २७ इ. मित । २८ अ. पयणे । इ. पणए । २९ अ. विहंगमं । इ. विहंगष । ३० अ. पथं । इ. थष । ३१ अ. षयाणेह । इ. पाणेह । ३२ अ.इ. कहीयासि । ३३ इ. भालंति ।

कुरुखेत[1] जुध करणो, भमाडण गज गयणंगे ।
जोपणो जुरासिंघो, ऊठियो[3] गजा 'भीम' उप्पाडि ॥६॥

भीम सीसोदियारो वरणण

छंद पोमावती

उठियो[4] गजां[5] उपाड[6], 'भीमेण' भुजाळजी ।
चीतोडौ[7] चईनौ[8] कोप, चम्मर बंबाळजी ॥
नेत - बंधौ[9] नागंद्रहो[10], मेवाडौ मसंदजी[11] ।
आहाडौ[12] खूमांणो[13] ओपै, निडुर नरिंदजी[14] ॥१॥

कैल - पुरो कुंभळमेरी[15], निप्पट[16] निराटजी ।
दस - सहंसौ[17] सीसोदौ[18], पह मेद-पाटजी ॥
'अमरसी' 'प्रतापसी', 'उदैसी' अपालजी ।
साहण - समंद 'सांगो', रांणो रायमालजी[19] ॥२॥

कूंभ-क्रन्न[20] 'मोकल्ल' नै, 'लाखौ' खेतसींहजी ।
उजाळै 'हम्मीर' आज, अरस्सी अबीहजी ॥
'अजैसो' भमाडै भलो, हिंदुवांणौ[21] छातजी[22] ।
लखमणसी मंडळीक, गिरव्वर गातजी ॥३॥

सीसोदियौ[23] सेलगुर, बापौ[24] बिरदैतजी ।
उजाळै[25] 'अमर' उत, वडाळौ[26] वांनैतजी ॥
सोह चाडै समरसी, सारिखां[27] सधीरजी ।
विढेवा विलागो[28] वोम, वडुो वर वोरजी ॥४॥

---

१ अ. कुरूषेत । २ अ. जीमणं । ३ आ.इ. उठीयो । ४ आ.इ. उठीयो । ५ आ.इ. गजा । ६ आ.इ. उपाडि । ७ आ. चीतोडो । इ. चीत्रोडो । ८ इ. चइनो । ९ इ. नेत-बंधे । १० अ. नानोंद्रहो । ११ अ. मसंद्रनी । १२ इ. आहाडो । १३ अ. षूंमांणां । इ. षुमांणो । १४ अ. नरिद । आ नरंद । १५ अ. कूंभलमेरी । १६ इ. निपवृ । १७ अ. दस-सहसो । इ. दस संहसो । १८ अ.इ. सीसोदो । १९ अ. राइमाल । २० अ. कूंभकत । इ. कूभक्रंन । २१ अ. हीदूवांणो । इ. हींदुवांणे । २२ इ. छात्र । २३ इ. सीसोदीयो । २४ अ.इ. बांपो । २५ अ. उजालो । २६ इ. वंडालो । २७ इ. साषां । २८ इ. विलगो ।

मूछां अणी भ्रूंह[1] मेळ[2], दाढी[3] कर दाखिजी[4]।
विढ़सी वीराध - वीर, सूर[5] जितै[6] साखिजी[7]॥
बळवंत बोलै बोल, चीतौड[8] नरेसजी।
उजाए[9] वांमौ[10] उदक, माथै मो महेसजी॥५॥

दूहा

माथै उदक महेस मौ, साखी सिसहर भांण।
जुध प्रब मेलै[11] जीवबौ[12], इम दक्खै 'खूमांण'[13] ॥१॥

बे[14] खूंदालम[15] बहसिया[16], बिढवा[17] आग ब्रजागि[18]।
आजु[19] वडी प्रब आवियौ[20], भीम कहै[21] मो भागि[22] ॥२॥

'भीम' कहै भूलूं[23] नहीं[24], खेलैबो खत्र-धौड।
मो भग्गै[25] सीसोद हर, गढ़ लज्जै चीतौड[26] ॥३॥

मेवाडौ नीमे मरण, रत्तौ रिण गिम्मार।
लोह सबाहै भुज्ज-बळ[27], छंडै[28] मोह संसार[29] ॥४॥

माया मोह प्रमुक्कियौ[30], इम 'खूमांण' नरिंद।
जेम लखमण रांमचंद, भरथर गोपीचंद ॥५॥

नृप[31] माया तजि सिद्ध थिउ[32], निव्रांणवै[33] करोडि।
सूरज - मंडळ भेदही, सूरां मज्झे कोडि ॥६॥

सूरां लज्जी बळ वही, लच्छी कोइ[34] न कज्ज।
लच्छी गच्छी बाहुडै, गई न आवै लज्ज ॥७॥

---

१ इ. भ्रुंह। २ अ.इ. मेलि। ३ अ. दाटी। इ. दाषी। ४ इ. दाषजी। ५ इ. सुर। ६ आ.इ. जतै। ७ इ. साषजी। ८ अ. चीत्रौड। इ. चीत्रोड। ९ आ.इ. उजाऐ। १० इ. वामो। ११ अ. मे-। १२ अ. जीववौ। १३ अ. षुमांण। इ. षुंमांग्ण। १४ अ. वे। १५ अ. षुदामम। इ. षुदालम। १६ अ. बहसीयर। इ. बहसीया। १७ अ. विटवा। इ. विडवा। १८ आ.इ. वृजागि। १९ अ. आउ। इ. आज। २० अ. आवीयौ। इ. आबीयो। २१ अ. कहे। २२ इ. भाग। २३ अ. भूलू। इ. भुलुं। २४ अ.इ. नही। २५ अ. भगै। इ. भगे। २६ अ.इ. चीत्रौड। २७ अ.इ. भुज-बलि भुज-बली। २८ आ. छुंडो। इ. छांडे। २९ अ. ससार। ३० आ. पमुकीयौ। इ. प्रमुकीयो। ३१ अ.इ. नृिप। ३२ अ.इ. थीउ। ३३ अ इ. निनांणुवे। ३४ इ. काइ।

गाथा

गरजंति भीम नादं, पूरण[१] चंदाइ[२] पेखि[३] उफणिए[४] ।
धन समद धीरं, नह लंघत[५] लाज मरजादं[६] ॥१॥

गज 'भीम' गयण लग्गे, पौरसि[७] मदमत जोध परचंडं ।
सोहिया [८]पैहर पगे [९], सांकळा लाज रांण सीसोदह[१०] ॥२॥

पलमेक प्रांण कस्टं, सूरा सहंत रण संग्रांमं ।
जांमणौ जरा-म्रितौ[११], भव भाजै भाखितं भीम ॥३॥

कवित्त

सिव नै सिसहर निलै, सकति नै सीह[१२] चइन्नी ।
बांमण[१३] अनियं[१४] वळै[१५], वाच बळ राजा दीनी ॥
रांमचंद नै भीच, हणु[१६] मुंह[१७] आगळ[१८] कीधौ ।
थावर नै बारमौं, अधड नै अम्रत[१९] पीधौ ॥
गोइंद अनै चढियौ[२०] गुरड[२१], पावक नै बळ पवनरौ ।
सुरतांण खुरम नै सेलगुर, कनै भीम[२२] केलहपुरौ[२३] ॥१॥

साह सेन संपेख, खुरम सुरतांण निहट्टौ ।
पग पाछा नह दियं[२४], जेण पंच-रूप आरट्टौ ॥
काळ रूप जम रूप, ग्रहै गयणागक उंडळ ।
वासंग बळ वज्जरै, भुज्ज[२५] धूणै वीजूजळ[२६] ॥
असमांन थंभ उड्डै इसौ, पकडै मेर पहाड[२७] नूं ।
सुरतांण खुरम जुध सूत्रियौ[२८], पातसाह[२९] अल्लाह नूं[३०] ॥२॥

---

१ अ.इ. पूर्ण । २ अ. चंदाई । ३ अ. पेषी । इ. पेषीग्रं । ४ आ. उफणए । इ. फणए । ५ आ. लंघण । ६ अ. रजाद । ७ अ. पोरसि । इ. पौरस । ८ आ. सोहोया । इ. सौहीयं । ९ इ. पगै । १० इ. सीसौदे । ११ इ. जरा मृतौ । १२ आ. सिंह । इ. सिंघ । १३ आ.इ. वामण । १४ अ.इ. अनीयं । १५ अ. वले । १६ अ. हनू । १७ इ. मुहि । १८ इ. आगलि । १९ अ.इ. अमृत । २० आ.इ. चडीयौ । २१ इ. कुरड । २२ इ. भिम । २३ अ. कैलपुरौ । २४ आ.इ. दीयं । २५ आ.इ. भुजि । २६ इ. विजुजल । २७ इ. पडाड । २८ आ.इ. सूत्रीयौ । २९ अ. पातिसाह । ३० इ. सूं ।

खुरमरो वरणण

छंद भुजंगी

खुरम्मं[१] सुरतांण घूणै[२] खडग्गं ।
वधे वांमणं[३] वोमि जांणै[४] विलग्गं ।।
वणै चोळ[५] चक्खं मुखं चोळ व्रन्नं[६] ।
ग्रहै जे वहौ घात[७] बाथां गिगन्नं[८] ।।१।।

*महाकाळ क्रोधन्नळं क्रोध मन्ने ।
दुआदस्स आदीत ऊगा वदन्ने[९] ।।
भुजाडंड नीमज्ज[१०] माझी भुजाळी ।
किरै[११] चंपियौ[१२] ऊफणै नाग काळौ[१३] ।।२।।

गढां भूखियौ[१४] कांमरी हांम गाढी ।
दिनौ मूछ वळ पांण स-त्तांण दाढ़ी ।।
पौरस्से तरस्सै उसस्सै प्रचंडं[१५] ।
विकस्सै[१६] हसै ऊधसै[१७] वैण-डंडं[१८] ।।३।।

भुजाडंड ऊलाळि भालौ भमाडै ।
आजोकौ इसौ मेर बाथां उपाडै ।।
गरज्जे भलौ[१९] बोलियौ[२०] भोम ग्राही ।
पतीसाह[२१] सूं[२२] माहरी पातसाही ।।४।।

कटक्कां मिळै मेखळा मेर कांनै ।
खडा ऊमरा खांन दीवांण खांनै ।।
विढ़ेवा[२३] कियौ[२४] साहिजादै[२५] विचारं ।
अणो फौज वांटी हुऔ[२६] अस्सवारं ।।५।।

---

१ अ.इ. तौ षुरम । २. आ. घूंणे । इ. घूणे । ३ आ. वामाणं । इ. वामणं । ४ इ. जांणे । ५ इ. चौल । ६ अ.इ. चोल-वृनं । ७ अ. घाति । ८ इ. गिननां । * अ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है—"महाकाल क्रोध मनं" । ९ इ. वदने । १० अ.इ. नीमजि । ११ अ.इ. किरे । १२ अ. चंपीयौ । इ. चांपीयौ । १३ अ. कालो । १४ आ. भुषीयौ । इ. भूषीयौ । १५ अ. पचंडं । १६ अ. किकसै । १७ इ. उघसे । १८ इ. वेण-डंडं । १९ इ. भलो । २० आ.इ. बोलीयौ । २१ इ. पतिसाह । २२ इ. हु । २३ अ. विटेवा । २४ आ.इ. कीयौ । २५ आ. साहीजादे । इ. सहिजादै । २६ आ. हूवौ । इ. हूऔ ।

नगारौ हुम्रो[1] भेरि[2] नीसांण[3] नद्दं ।
सरद्दं गरज्जै करै मेघ सद्दं ॥
हळा-बोळ है - थाट हूए[4] हमल्लं ।
म्राउल्ला म्रसव्वार तेजी म्रलल्लं ॥६॥

लगावै[5] लगांणं[6] पवंगां[7] पलांणै[8] ।
बिपेटा[9] किया[10] बेवडा तंग तांणै[11] ॥
विडंगां सिणंगार सोभा वणांणी[12] ।
रुळै पाखरां घूघरां[13] जांण[14] रांणी ॥७॥

विडंगं तुरक्की ऐराकी विलाती ।
मचै पाखरां रोळि है - हींस माती ॥
सिणगारिया[15] पोलरांणै[16] सुंडाळा ।
म्रसमांन सांम्हा दियंता[17] उलाळा ॥८॥

हलक्कां तांणै म्रांठुए बांध[18] हालां ।
ढळक्काविये[19] ढूहरी[20] पूठि ढालां ॥
करै हाथळां टोप रागां कडालं ।
जुवांणं[21] वपे[22] म्रोपवै जीण-सालं ॥९॥

जमं-जाळ हिंदू[23] तुरक्काळ जूम्रा ।
जडे सीलहा[24] जोध[25] जोगिंद्र[26] हूम्रा ॥
जमंदाढ तेगां फरी कूंत[27] जोडं ।
खरां खग्ग ढाबै[28] दूण[29] खोडं[30] ॥१०॥

---

१ म्र.इ. हुवो । २ म्र. भेर । ३ म्र. नीसाण । इ. निसांण । ४ म्र. हुए । इ. हुऐ । ५ म्रा.इ. लगावे । ६ म्र. लगाण । इ. लगाणं । ७ म्र. पंवंगां । ८ म्र.इ. पलांणे । ९ इ. विपेटा । १० म्र. म्रा.इ. कीया । ११ म्रा.इ. तांणे । १२ इ. वणीणी । १३ म्र. घूघरा । इ. घुघरा । १४ म्र.इ. जांणि । १५ म्रा.इ. सिणगारीया । १६ इ. पिलबांणे । १७ इ. दीयंता । १८ इ. बांधि । १९ म्र. टळकाविये । इ. ढलकीवीयै । २० म्र. ढूहरी । २१ म्र. जुवीणं । २२ म्रा.इ. वपे । २३ हीदू । २४ म्र. सिलहां । इ. सिलहं । २५ इ. जोधि । २६ इ. जोगंद्र । २७ इ. कूत । २८ म्र. डाबे । इ. डाबै । २९ म्र.इ. दूंण । ३० म्रा. खोड । इ. खौडं ।

हुएं हूब है-हींस मातौ हुलाहं ।
चढै[1] चंचळै[2] आवळा चत्र-बाहं ।।
चढै[3] भीम खूमांण[4] चीत्तौड[5] रांण ।
किरै[6] भाद्रवै नीसरै सिसर भांण ।।११।।

चढे[7] खांन अबदुल्ळ[8] बोलं अबाबं ।
निर्भैसार जूझार मांझी निवाबं ।।
चढै[9] खांन दरियाव[10] संग्रांम सूरं ।
पठांण[11] पराक्रंम पौरस्स पूरं[12] ।।१२।।

चढ़ै[13] खांन पाहाड[14] चलतौ पहाडं ।
वरस्सिघ दे सुत्त फौजां विभाडं ।।
चढे[15] 'भीम' कमधज्ज सुत्तं 'किल्यांण' ।
रिमां-राह राठौड राउ[16] जम्मरांणं[17] ।।१३।।

चढै 'पीथलौ' बांधि है[18] गज्ज गाहं ।
'बलू' सुत[19] विरदैत[20] अज्जांन-बाहं ।।
चढे तांम[21] हरदास 'रांमा' सुतन्नं ।
घरै[22] धारणा धूधडै मेर मन्नं ।।१४।।

चढ़[23] रावतां राउला[24] राव[25] रांणा ।
चढ़े[26] सुहड साखेत[27] जोधा जुवांणां ।।
चढ़े[28] मीरजां-मीर[29] मोयां किलक्कं ।
चड़े[30] खांन निब्बाब खांडा[31] खाइक्कं ।।१५।।

---

१ अ. चडै । इ. चडे । २ इ. चंम्चले । ३ अ.इ. चडे । ४ इ. षुमांण । ५ आ. चीतोड़ । इ. चित्रोड । ६ इ. किरे । ७ अ.इ. चडे । ८ अ.इ. अबदूल । ९ अ.इ. चडे । १० अ.इ. दरीयाव । ११ आ.इ. पठाण । १२ इ. पुरं । १३ अ.इ. चडे । १४ अ. पहाड । १५ आ.इ. चडे । १६ आ. राऊ । १७ इ. जमराणं । १८ अ. दै । १९ अ. सूत । २० अ. बिरदैत । २१ अ.इ. ताम । २२ इ. घरे । २३ आ.इ. चडे । २४ आ.इ. राऊला । २५ अ. राउ । इ. राऊ । २६ अ.इ. चडे । २७ आ.इ. साषैत । २८ अ.इ. चडे । २९ अ. मीरजा-मीर । ३० आ. चडै । ३१ इ. षंडा ।

चडै[1] मत्तवाळा सरै फूल मत्ता।
चडे[2] रूप अल्लेख[3] रहमांण[4] रत्ता॥
चडे नबलमै वाजि तरकस्स[5]-बंधं।
चडे रौद्र रिम-राह जमबाह जुद्धं॥१६॥

चडे सब्बदां-वेध लूघा[6] सिंघांणं[7]।
चडे तूणमैं[8] घातिआ[9] झूल बांणं॥
चडे पंच-हज्जारियां[10] पंच-सद्दी।
चडे मल्ल[11] पायक्क[12] बंगसी[13] अहद्दी॥१७॥

चडे कन्नडा[14] हब्बसी नेज-बाजं।
चडे मीर खंधार बहतीर नाजं॥
चडे बाहदर[15] दैतरूपी दिवांना[16]।
चडे खिजमती हूमती[17] खेल खांना॥१८॥

चडे कुदरती हुकमती असलि-जद्दा[18]।
चडे दौलती नेखवा हुकम-बंदा॥
चडे उजबकी रौद्र रूमी फिरंगी।
चडे मुगळ पट्ठांण[19] सैईद[20] संगी॥१९॥

चडे जांम जंगाह बल्लोच जत्तं।
चडै वंस छत्तीस है राजपूतं[21]॥
चडे उमरा[22] बहतरी सत्तरि[23] खांनं।
जिकै पाकडै डोलतौ[24] अस्समांनं॥२०॥

चडे खांन सुरतांण सेनस प्रमांणं[25]।
चडे बहुत[26] हिंदू[27] अनै मुलळमांण[28]॥

---

१ आ. चडे। २ अ.इ. चडे। ३ अ. अलेक। ४ अ. रहमाण। ५ इ. तकस। ६ इ. लुघा। ७ इ. सिघाणं। ८ अ.इ. दूण। ९ अ. घातीआ। १० अ. पंच-हजारीयां। इ. पांच हजारीयां। ११ इ. मल। १२ अ.इ. पाइक। १३ अ. बगसी। १४ अ.इ, कनडा। १५ इ. बाहादर। १६ इ. दीवानां। १७ अ. दुमती। १८ अ. असली जादा। १९ इ. पठाण। २० अ. सईद। इ. सद्द। २१ इ. राजपुत्तं। २२ आ.इ. उमर। २३ इ. सतिर-षांन। २४ इ. डोलतो। २५ इ. सप्रमाणं। २६ इ. बोहत। २७ अ.इ. हीदू। २८ अ. मुसमांनं। इ. मुसलमानं।

चडे पूठि सूंडाहळां[1] पीलवांणं[2] ।
अडे चींघ[3] नेजा लगै अस्समांणं ॥२१॥

चडे सेन चतुरंग गै मद्द कादौ ।
चडे रांम रक्केब दे साहिजादौ ॥
सुरतांण खुरम्म चडियौ[4] सत्रांणं ।
सहन्नाय[5] नौबति[6] घुरियौ[7] साईदांणा ॥२२॥

गरज्जै दमांमा[8] गजं[9] थाट गुडिया[10] ।
रिणं[11] तूर[12] मैं भेर नीसांण रुडिया[13] ॥
असंमांन[14] सूं[15] सीस लागा अभंगां[16] ।
हुऐ पक्खरां रोण[17] हाहूलि तुरंगां[18] ॥२३॥

अगै[19] है-दळां मैंगळां थाट आयौ ।
छिलै[20] फरहरां चींघ[21] व्रहमंड[22] छायौ ॥
कटक्कां-तणा ऊपडै घूस काळा ।
मिळै भाद्रवै जांण[23] किरि मेघमाळा ॥२४॥

भडां धूंधली[24] फौज भालां भळक्कै ।
विचै वादळां जांण वीजां बळक्कै ॥
जटाजूट किया[25] आगळी गै अनेरं ।
पबै अठ-कुळं[26] जांण परबत्त मेरं ॥२५॥

बळौ मैंगळां-फौज दूजौ बखांणै[27] ।
जटाजूट गौरंभ गज-खंभ जांणै[28] ॥

भीमरो हरोळमें होणौ

'दूजां' ऊबरां लोह लागै दुखाळौ ।
कियौ[29] आगळी 'भीम' पाहाडकाळौ[30] ॥२६॥

---

१ अ. सुंडहलां । इ. सुडाहला । २ इ. पीलवाणं । ३ अ.इ. चीघ । ४ अ.इ. चढीयौ । ५ अ. सहनाइ । इ. सहनाई । ६ इ. नौबत । ७ आ.इ. घुरीया । ८ इ. दमामा । ९ आ.इ. गज । १० आ.इ. गुडीया । ११ अ.इ. रिण । १२ आ. तुर । १३ आ.इ. रुडीया । १४ अ.इ. असमांन । १५ आ.इ. सुं । १६ आ.इ. अभंगा । १७ इ. रोळि । १८ आ.इ. तुरंगा । १९ अ.इ. आगै । २० आ.इ. छिले । २१ इ. चीध । २२ अ.इ. व्रहमंड । २३ इ. जांणि । २४ आ.इ. धूंधली । २५ अ.इ. कीया । २६ इ. अठकुल । २७ आ. वषांणे । २८ आ.इ. जांणे । २९ आ.इ. कीयौ । ३० अ.इ. पहाड-कालौ ।

विढेवा[१] बधे दाखियौ[२] वीर-रस्सं ।
'अरस्सी' हरौ कूंत[३] ,तोलै अरस्सं ।।
अोपै फौज माही अमर सिंघ - तन्नं ।
किरै[४] जांण लंका दळे कूंभ - कन्नं[५] ।।२७।।

तवै 'भीम' वांका[६] वचन्नं तियारं ।
खुमांणै आदू जुद्धसूं खूंदकारं[७] ।।
दुवै 'भांण' रा[८] भीच आगै दुझलं ।
'मनौ'[९] गोकळाणंद आखाड मल्लं ।।२८।।

वर-व्वीर खूमांण[१०] वीराध - वीरं ।
कळी - मूळ सादूळ बैवै कंठीरं ।।
भलौ भीच[११] कल्यांण - मल्लौ भुजाळौ ।
'मांनावत' वेढीमणौ मच्छराळौ ।।२९।।

हुअौ[१२] हेक-मौनूं[१३] महा-जुद्ध[१४] हांम ।
गळै-माळ तुळछी अनै साळिग्रांमं[१५] ।।
सहू भीमरा[१६] भीच आखाड-सिध्धं ।
मरण प्रब्ब संपेख मंगळीक किद्धं[१७] ।।३०।।

तुरां तोरवै[१८] मेलवा लोह तातौ ।
मरेवातणो होडरौ कोड मातौ ।।
वरस्सोह वध्धावळै आंक आडौ ।
लखै[१९] थाट जांनी हुअौ 'भीम' लाडौ ।।३१।।

कियां[२०] जाग[२१] जोडां खडै पंज कावै ।
अडा-भीड आकास माथौ[२२] अडावै ।।
हुवै हैमरां हूह सम्मूळ हल्लै[२३] ।
चली फौज गै-जूह पाहाड[२४] चल्लै[२५] ।।३२।।

---

१ अ. विटेवा । २ आ.इ. दाषीयो । ३ अ.इ. कूत । ४ आ.इ. किरे । ५ अ. कूमक्रनं । इ. कुंभ-क्रनं । ६ अ.इ. वंका । ७ अ.इ. षूदकार । ८ इ. भाणरा । ९ अ. मांनो । १० अ.इ. षुमांणे । ११ अ. नीच । १२ इ. हूअो । १३ इ. हेक-मनू । १४ इ. मही-जुध । १५ आ.इ. सालिगरांमं । १६ इ. भीचरा भीच । १७ अ.इ. कीधं । १८ अ. आ. तोलवै । १९ अ.इ. लष । २० आ.इ. कीयां । २१ अ. बै-जाग । २२ इ. थांभो । २३ अ.इ. हले । २४ अ.इ. पहाड । २५ इ. चले ।

चौरासी[1] घमक्कै गजां-पूठि[2] चींधां ।
गिगन्नां-पती ढांकियौ[3] पंथि ग्रीधां ।।
असंख्या खुरे हैमरां खेह उड्डी ।
गजां चींध जांणै[4] गिरां-सीस गुड्डी ।।३३।।

घसस्सै घणूं थाट घासांरु[5] घट्टा ।
फुणां-फाट[6] अहिराउ[7] दरियाव[8] फट्टा ।।
दिलीवै सुरत्तांण उट्ठाइ[9] दुदं ।
निहट्टां[10] किरै[11] रांमणां[12] रांमचंदं ।।३४।।

घरत्तीतणै खेघ घर - वेध घारी ।
बहस्सै उभै साह जुध वळाकारी ।।
बिन्है साहिजादा लियं[13] लोह बत्थां ।
कुरां-पांडवां[14] जेम भारत्थ कत्थां ।।३५।।

खुरम्मं[15] सुरत्तांण खब्बर पढाई ।
लडौ वेग मैदांन आपां लडाई ।।
इसौ[16] ऊफणै[17] साहिजादौ अछायौ ।
असमांन हूंता[18] असमांन आयौ ।।३६।।

गाहा

आयौ असमांनां ऊतरियौ[19] ।
घुरे दमांम क घणहर घुरियौ[20] ।।
धारण धूम्र-धडै[21] मन धरियौ[22] ।
सहजादौ[23] विमुह न संचरियौ[24] ।।१।।

वसुंह तुरां खुरताळे वाजी ।
आगळ मांडी आतस बाजी ।।

१ इ. चोरासी । २ आ. पूठ । ३ अ. ढंकीयो । ४ इ. जांणे । ५ इ. घांसरु ।
६ अ. फुणा-फाट । इ. फूणां-फाट । ७ आ. अहिराव । ८ अ.इ. दरीयाव । ९ अ. उठाई । इ. उठाय । १० अ. निहटा । इ. निहटो । ११ अ. किरे । इ. किरि । १२ अ. रांमणा । १३ अ. लीयं । १४ अ.इ. कुरां-पांडवा । १५ इ. षुरमं । १६ अ. इसो । १७ अ. उफणे । १८ अ. असमांन हूता । १९ अ.इ. उतरीयो । २० आ.इ. घुरीयो । २१ इ. ध्रूह घडे । २२ अ.इ. धरीयो । २३ इ. साहिजादो । २४ आ.इ. संचरीयो ।

वांसै[1] तेग[2] ज फौज[3] विराजी[4]।
मुहि-अड़[5] भोम हरोळां माझी[6]

वड्डा - वड्डा गोळा वज्जर।
घूआ-धार[7] उठंदा धोमर॥
आरब्बी असमांन अवाहर।
गडडै नाळि अणगाळिक[8] अंबर॥३॥

'गज्जणवै' पाखरिया[9] गज-दळ।
कससै[10] मेघक काळी कांठल[11]॥
उतराधा[12] सांमळ[13] के ऊजळ।
वोम क चडे चडाऊ वद्दळ॥४॥

दूहा

खुरम न भागौ[14] पुरब[15] दिस, ऊब क आसाढ़ांह[16]।
सालुळियौ[17] चडि सांमहौ, जिम घणहर सिहरांह॥१॥

खुरम समंदी मच्छ जिम, लहरी लक्ख दळांह।
चडियौ[18] पांणी सांमुहौ[19], सुरतांणी फौजांह॥२॥

पूरब[20] पराक्रम पूरियौ[21], सिर लग्गै असमांन।
गिरे झंगर[22] भागे न गौ[23], चडि आयौ मैदांन॥३॥

सुरतांणी घड सांमुहौ[24], सहिजादौ[25] सुरतांण।
आवि खडौ वौ[26] चापडै, तब दीठा नीसांण॥४॥

---

१ अ. वासै। इ. वास। २ अ. तेग। ३ अ.इ. फौ। ४ आ.इ. वीराजी। ५ अ.इ. मुहीअड। ६ आ.इ. माजी। ७ इ. घुवा-धार। ८ इ. आणिगालिक। ९ आ.इ. पाखरीया। १० इ. कससे। ११ इ. कंठलि। १२ इ. उधराधा। १३ इ. सांमे। १४ अ. भाग्यो। १५ अ. पूर्ब। १६ अ. आसाढांह। १७ अ. सालुलीयो। इ. सालुलीयौ। १८ आ.इ. चडीयो। १९ अ. सामहै। २० अ. पूब। २१ अ. पूरीयो। इ. पुरीयौ। २२ अ. झगर। २३ अ. गो। २४ अ. सांमहौ। २५ आ.इ. साहिजादौ। २६ इ. वो।

गाहा

सांहण[1] संख न कौ[2] सूंडाळ[3] ।
नेजे संख न कौ[4] नेजाळ[5] ।।
खुरम प्रगट्टौ जडण जडाळे ।
आग न दब्बी रहै पराळे[6] ।।१।।

आयौ[7] खुरम विलागै[8] अंबरि[9] ।
पूरै[10] पारंभ है गै पक्खरि ।।
ऊपाडेह छरा आंधतरि ।
जांणे सींह विरत्तौ छप्परि ।।२।।

गै गिरवर सरजीत गुडंदा ।
गोडी-रव क करै गडडंदा[11] ।।
सद्दे मेघ क पंच - सबद्दा[12] ।
भेर दमांम क भाहर सद्दा ।।३।।

एहौ[13] खुरम कियौ[14] आडंबर[15] ।
गिरि-कुळ आठ कनव कुळ-मिणधर ।
नवकुळ[16] नाखत्र[17] माळक निडुर ।
बारह मेघ क सातइ[18] सायर ।।४।।

धरियै[19] आभ लगै धाराळै ।
भीरी भीम लियै[20] भुज्जाळै ।।
दिल्ली फौजां मग्ग निहाळै ।
खुरम[21] खडौ मेंदांन विचाळै ।।५।।

१ म. सांहंण । २ म. को । ३ म. इ. सुडाले । ४ म.को । ५ म. नोजाले । ६ म. पराले । ७ इ. आयो । ८ म. विलागे । इ. विलगै । ९ इ. अंबर । १० इ. पुरै । ११ म. गडडदा । १२ इ पंच-सबदा । १३ इ. एतो । १४ आ.इ. कीयौ । १५ म. अडंबर । १६ म. नवकुले । १७ इ. नाषेत्र । १८ म.इ. सातई । १९ आ.इ. धरीयै । २० आ.इ. लीयै । २१ म. पुरम ।

साहजादारो महाराजा गजसींघनै बिरुदाणो

घुरे दमांम पक्खरां[1] घरहरि ।
फौज[2] गजां नेजां धज फरहरि ॥
आयौ खुरम खडे[3] तौ[4] ऊपरि ।
'गाजीसाह' ऊठि गज केसरि ॥६॥

जपै साह 'पररेज' जबाबं ।
बोलै महबतखांन नबाबं ॥
सिलह करौ अत्र चडौ सताबं ।
तो दळ-थंभण तणी किताबं ॥७॥

बंभ त्रिकाळ-दरस बोलावै ।
जनम-जोग आगम जोवावै ॥
कहियौ[5] पैज निबाव कहावै ।
राजा जैत दमांम रुडावै ॥८॥

पेख जनम-पुत्ती[6] परपूरण[7] ।
जनम-जोग ग्रह-वेळा जांमण ॥
मुणै जवाब नवाब निभै-मण ।
दियौ दळां आडौ[8] दळ-थंभण ॥९॥

'गजण'[9] वहण माझी गत्र जोडै ।
राउ[10] राठौड तिलक राठौडं ॥
'माल'[11] हरौ मुख मूंछ मरोडै ।
उठियौ[12] सींह क आळस मोडै ॥१०॥

महाराजा गजसींघ

छंद पद्धडी[13]

ऊठियौ[14] 'गजण' वरजागि आगि ।
जुडिवा जडागि गयणागि लागि ॥

---

१ म-इ. षरां । २ इ. फोज । ३ इ. चडे । ४ म. तो । ५ म. कहीयो । ६ इ. जनम-पुत्री । ७ म. परपूणं । इ. पर पुणं । ८ म. आडि । ९ इ. गंजण । १० म. राऊ । ११ म. "मल" हरो । इ. मलहरो । १२ म.इ. उठीयो । १३ इ. पधरी । १४ म.इ. उठीयो ।

नीमभे भुज्ज नव सहस नाद ।
सादूळ सुणे किरि[1] मेघ - साद ॥१॥

वीरत्ति विढ़ेवा विळकुळेय ।
मुख राग मूंछ भ्रूंहां मिळेय ॥
चख लाल कीध मुख कीध चोळ ।
कळकळै तेज विकसै कपोळ ॥२॥

त्रिस्सळौ तांण निल्लाट तांम[2] ।
कमधज्ज करण संग्रांम कांम[3] ॥
व्रहमंड[4] लगै भुजडंड[5] वध्धि ।
महमहण मथण किरि[6] महोदध्धि ॥३॥

संपेख खुरम सुरतांण साथ ।
नरसिंघ रूप नवकोट नाथ ॥
'सूरजमल' संभ्रम तै सरीख ।
वधियौ[7] किरि वांमण[8] दियण वीख ॥४॥

मछरियौ[9] राउ[10] मारू[11] मसंद ।
रांमण सीस जिम[12] रांमचंद ॥
गरजियौ[13] विढण दूजौ[14] 'गंगेव' ।
मारिवा त्रिपुर[15] किरि महादेव ॥५॥

ऊससै तरसि पौरस्स ईम[16] ।
भारत्थ करण किरि पत्थ भीम ॥
चौरासी पट्टण करण तल्ल ।
मछरियौ[17] जांण घूंधली - मल्ल[18] ॥६॥

राठौड राउ[19] असमांन रुक्ख ।
सींचियौ[20] घ्रित किरि[21] सुरांमुक्ख ॥

---

१ अ. कि । २ अ.इ. ताम । ३ इ. काम । ४ अ. व्रह्मंड । इ. व्रह्म । ५ इ. भुअ-डंड । ६ अ. किर । ७ आ.इ. वधीयो । ८ अ.इ. वामण । ९ आ.इ. मछरीयो । १० अ. राऊ । ११ अ. मारू । १२ अ. जांणे । इ. जेणे । १३ आ.इ. गरजीयो । १४ इ. दुजो । १५ इ. त्रिपूर । १६ अ.इ. इम । १७ आ.इ. मछरीयो । १८ अ.इ. घुघलीमल । १९ इ. राव । २० आ. सीचीयो । इ. सिचीयो । २१ इ. किर ।

चडि कोप ओप घूघडै[1] चोत ।
ऊगा वदन्न[2] बारे[3] अदीत[4] ।।७।।

'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि ।
मुळकियौ[5] मछरि घण रोस मज्झि ।।
कमधज्ज कहै कर घूणि तेग ।
वरियांम[6] विडगां चडौ वेग ।।८।।

मुख बंध खैग[7] छौडै मरद्द ।
सांहणी सांहणी हुऐ[8] सद्द ।।
पाकडै जोध बाथां प्रचंड ।
हुइ लेह देह छूवै[9] हुसंड ।।९।।

डाचै लगांण खैंगां[10] दियंत ।
असि जीण पटोटां उकढंत[11] ।।
पै जुअळ लग्ग पक्खर रुळेय[12] ।
गजगाह तुरां बाधा गळेय ।।१०।।

परचंड जूह पब्बै प्रमांण ।
पुत्तार धरै गज - वाग पांण ।।
सींगळी गज्ज गरजंत साद ।
नभ जांण दवादस मेघनाद ।।११।।

सेनारो वरणण

चौरासी पक्खर चमर - बंध ।
गडडंत मदोमत[13] मंद - गंध ।।
ढाळां ढकि पताख धज्ज ।
गेरू सिंदूर[14] पाहाड गज्ज ।।१२।।

घूघरी[15] रोळ घंटा सबद्द ।
मोखत्त पटै[16] तळ जोड मद्द ।।

---

१ अ. घुघडै । २ इ. वदंन । ३ अ. वारे । ४ इ. आदीत । ५ आ.इ. मुळकीयौ । ६ आ.इ. वरीयांम । ७ अ. षैग । ८ इ. हुए । ९ इ. छूटै । १० अ. षैंगा । ११ अ.इ. उकढंति । १२ अ. रुलेय । १३ अ.इ. सदोमत । १४ अ. सदूर । इ. सिदूर । १५ इ. घुघरां । १६ इ. पटे ।

गुडिया[1] गयंद बिहुवें[2] गमेय ।
पाहाड[3] जांण हालै पगेय ॥१३॥

मदगळत जूह मैंगळ मसंत[4] ।
सिणगार खडा[5] किय[6] सदोमत्त[7] ॥
वरियांम[8] विढ़ोबा[9] वड बडंत[10] ।
जमदूत जोध मिलहां जडंत ॥१४॥

पोरस्स नकुळ पंडव प्रमांणि ।
तण[11] बंध्रे जूसण कमण तांणि ॥
ओपंत राग हाथां अनोप ।
तुडतांण[12] सीस रोपंत[13] टोप ॥१५॥

ओपिया सिलह पहरी अपार[14] ।
किरि जांण[15] सिध्ध मिळिय[16] केदार[17] ॥
जोधार जडी वपि[18] जीण साळ ।
पेखियै[19] जांण परबत्त माळ ॥१६॥

मारू सुभद्ट गज थट्ट मोड[20] ।
जमदाढ तेग डाबंत जोड ॥
बाहू[21] डंड ढालां[22] अलीबंध ।
कर ग्रहे कूंत[23] धूणै[24] कमंध ॥१७॥

आवध्ध डावि छतीस अंग ।
नीमजे भुज्ज अड़िया निहंग ॥
गज केसर[25] जांमळि गज विभाड ।
पंचरूप जांमळि जांणे[26] पहाड ॥१८॥

---

१ अ.इ. गुडीया । २ इ. चिहूवै । ३ अ.इ. पहाड । ४ इ. मसत । ५ इ. षडो । ६ अ.इ. कीध । ७ अ. सदोमत । ८ इ. वरीयाम । ९ इ. विढ़ेवा । १० इ. वडंत । ११ अ.इ. तांण । १२ इ. तुडितांण । १३ अ. रोपत । १४ अ. अयार । १५ अ. जांणि । १६ अ. मिलै । इ. मिले । १७ अ. केदांर । १८ अ. जडीचाप । १९ इ. पेखियै । २० इ. मोड । २१ अ.इ. बाहु । २२ अ. ठालां । २३ अ.इ. कूत । २४ अ. धुणे । इ. धुणै । २५ इ. केसरि । २६ अ.इ. जांणै ।

पडगरियौ[1] सोहड[2] खेड-पत्त[3] ।
निस मयंक[4] जांण[5] माळा नखत्त[6] ।।
घाघरढ़[7] घूस घण[8] थाट घेर ।
मिळिया[9] सुभट्ट मेखळा मेर ।।१९।।

महाराजा गजसींघरा घोड़ारौ वरणण

कमधज्ज कहै केवियां[10] काळ ।
सांहणी आंण[11] साहण उजाळ ।।
सर वेग जंग[12] सर वेग चंग ।
तेगागळ चंचळ 'जै'[13] तुरंग ।।२०।।

जोइवा[14] जगत आवंत जात ।
गिर - वर विहग उतंग गात ।।
दीपक्क चक्ख सोभा दिवस्सि ।
असराळ तेज कोडीक[15] अस्सि ।।२१।।

चौरंग दंत गयंदां चडंत ।
पाखांण भीत आंठूं[16] पडंत ।।
घूनौ विसाळ चौडौ धडेय ।
आंणां[17] गुण घातै आपडेय ।।२२।।

दहलै पयंग[18] पायळां[19] दौड[20] ।
परसाद थंभ पै जांण पौड ।।
कांगारी[21] कन सिखराळ कंध[22] ।
बळ उतळ घाट घट गरट[23] बंध ।।२३।।

तेजी वितंड ऊडंड[24] तेव ।
विख्यात वाग अख्यात वेव ।।

---

१ अ. पडगरीयौ । २ अ. सोहडा । ३ अ.इ. षेड पति । ४ अ. मयक । ५ अ. जां । इ. जांणि । ६ अ.इ. नषति । ७ अ.इ. घाघरट । ८ इ. ण । ९ अ.इ. मिलीया । १० अ. केवीयां । ११ अ.इ. आंणि । १२ आ. चंग । १३ अ. लजं । इ. जै । १४ इ. जोइव । १५ इ. कोडक । १६ अ. आठू । इ. आंठुं । १७ अ. ऊंणां । इ. डोणां । १८ इ. पतंग । १९ अ.इ. पागलां । २० अ. दोड । २१ अ.इ. कांगारि । २२ इ. षंध । २३ अ. घट । २४ अ.इ. उडंड ।

परबत[1] पंख पक्खर प्रचंड ।
एराकी[2] पिठ[3] खुरसांण खंड ॥२४॥

थोडो[4] पडछि जाझो पठाढ[5] ।
देहादळ[6] मेंगळ[7] गाढ[8] दाढ[9] ॥
निकुळीण त्रिया जिम पैज[10] रति ।
फरहरै कपी[11] जेही फुरंति[12] ॥२५॥

अन्नूप रूप चित्रांम[13] अंग ।
वेगागळ थळ[14] नाचै विडंग ॥
अदभूत पराक्रम[15] गुण अछेह ।
ऊंचास[16] कना सपतास अेह[17] ॥२६॥

पाइगाह[18] मंडण[19] चढण[20] पाट ।
सांहणी छोड[21] सिणगार थाट ॥
लाखीकतणै मुंह[22] दीध लोह ।
सोव्रन्न[23] जोत[24] नग जडत सोह ॥२७॥

पल्लांण परट्ठै[25] तांण तंग ।
साकत्ति हेम हीरे सुचंग ॥
वरहास वणी पक्खर विसाळ ।
गजगाह स-डंबर चमर माळ ॥२८॥

सिख नक्ख लगै पंडव[26] सिंगार[27] ।
आंणियौ[28] लूण[29] ऊपरि[30] उतार[31] ॥

महाराजा गजसींघरो वरणण

कमधज्ज राय[32] मंजन करेय ।
चरणोदक[33] चत्रभुज तणौ लेय ॥२९॥

---

१ आ. परछत । २ अ.. अैराकी । इ. अैराकि । ३ इ. पुठि । ४ अ.इ. थौडो । ५ अ. पटाटि । ६ इहेहादल । ७ अ. मेगल । इ. मैगल । ८ अ. गाट । ९ अ. दाट । १० अ. पै । इ. परै । ११ अ.इ. कपि । १२ इ. फुरति । १३ अ.इ. चित्राम । १४ अ.इ. थाल । १५ अ. पराकम । १६ इ. उचास । १७ अ. ऐह । इ. एह । १८ इ. पाइगहि । १९ आ. मडंण । २० अ. चटण । इ. चडण । २१ अ.इ. छोडि । २२ अ इ. मुह । २३ अ. ओव्रन । इ. सोव्रन । २४ अ.इ. जोट । २५ अ. परठ । इ. परठे । २६ अ. पंडवु । २७ अ.इ. सिगार । २८ अ.इ. आंणीयो । २९ अ. लुंण । इ. लुण । ३० अ.इ. उपरि । ३१ अ.इ. उतारि । ३२ अ.इ. राइ । ३३ अ.इ. चरणोदष ।

पैरिया-स[1] तांम[2] पांचै[3] वसत्र[4] ।
बंधे[5] वि-पाघ सिरि बाहु चत्र ॥
राठौड बगत्तर जडे राग ।
खेडचै[6] वाहुण खळां खाग ॥३०॥

झालरी टोप सिर[7] झळहळेय ।
किरि भांण[8] उदे[9] गिरि कळकळेय ॥
बळवंत[10] जडे हाथांळां[11] बेय ।
पैहरिया[12] सार मोजा[13] पगेय ॥३१॥

सोहियौ[14] सिलह पहरी समाथ[15] ।
अवधूत राय[16] गोरक्ख-नाथ ॥
जगजेठी जोधपुरे[17] जुआंण ।
जमदाढ़ जडी कडि जम्मरांण ॥३२॥

राठौड[18] रचेवा[19] रणंताळ[20] ।
वामंग डहै[21] बीजला झाळ ॥
बांधै[22] कंदील[23] संधै[24] विबांण ।
कोसीस[25] भुजै[26] दीना[27] कबांण ॥३३॥

दीपियौ[28] 'गजण' दूसरौ 'माल' ।
धूहंडौ[29] राव[30] भुजधरी ढाल[31] ॥
खेडपति धूणियौ[32] कूंत खीज ।
वळकी[33] किरिकाळै सिहर[34] बीज ॥३४॥

'सूराउत' डाबि छतीस[35] सार ।
मलपियौ[36] मयंद गति यंद[37] मार ॥

---

१ अ. परीया । इ. पैरीया । २ अ.इ. ताम । ३ इ. पाचु । ४ अ. वसत् । ५ अ.इ बंधे । ६ अ. षेडेचै । ७ अ. सिरि । ८ अ. भांणु । ९ अ. दै । इ. उदै । १० अ.इ. बलिवंत । ११ अ. हाथला । १२ अ.इ. पहरीया । १३ इ. मोजां । १४ अ. सोहीयो । इ. सोहीयो । १५ अ. समाथं । १६ अ.इ. राइ । १७ अ.इ. जोधपुरै । १८ इ. राठोडि । १९ इ. रचैवा । २० अ.इ. रिणताल । २१ अ. वहे । २२ अ.इ. वांधे । २३ अ. कदील । २४ अ. संधे । इ. सांधे । २५ अ.इ. कासीस २६ अ.इ. भुजे । २७ अ.इ. दीनी । २८ अ.इ. दीपीयो । २९ इ. धूहडै । ३० अ. राउ । ३१ अ. टाल । ३२ अ.इ. धूणीयो । ३३ इ. बलिकी । ३४ इ. सैहर । ३५ इ. छत्रीस । ३६ अ.इ. मलपीयो । ३७ इ. गयंद ।

रैवंत[1] वंदि राठौड राव[2] ।
चड्डियो[3] परठि पागडै पाव[4] ॥३५॥

सेनारो वरणण

रट्ठोड[5] सहू[6] चढ़िया[7] तुरेय ।
कुरु[8] पंडक रत्थां आरुहेय ॥
रुडिया[9] दमांम रिणतूर[10] सद्द ।
नाफेर[11] भेर नीसांण[12] नद्द ॥३६॥

चिहुं[13] दिस्सि[14] नगारै[15] पडे चोट ।
कोग्रण कटक्क ऊपडै[16] कोट ॥
सहिजादो[17] चडियौ[18] सुरत्तांण ।
चढिया[19] सह[20] हिंदू[21] मुसळमांण[22] ॥३७॥

महबतखांन चडियौ[23] नबाब ।
साह छळि सिळह[24] बंधै[25] सताब[26] ॥
आंबेर धणी जैसिंघ[27] देय ।
चडियौ[28] फवज्ज चतुरंग लेय ॥३८॥

सेखावत राजावत सुभट्ट ।
तावीन चडे कूरमां थट्ट ॥
सूरजसिंघ खेलण खत्र-दाव[29] ।
राठौड चढे जंगळी-राव[30] ॥३९॥

वरसिंघ देव राजा वडाळ ।
बूंदेल चडै[31] चम्मर[32] बंबाळ ॥

---

१ अ.इ. रेवंत । २ अ. राउ । ३ अ.इ. चडीयौ । ४ अ इ. पाउ । ५ इ. राठौड । ६ अ.इ. सहु । ७ अ.इ. चडीया । ८ इ. कुरु । ९ अ. रुडया । इ. रुडीया । १० इ. रिणतुर । ११ अ.इ. नफेर । १२ इ. विसांण । १३ अ.इ. चिहु । १४ इ. दिस । १५ अ.इ. नगारे । १६ अ.इ. उपडे । १७ अ.इ. साहिजादो । १८ अ.इ. चडीयौ । १९ अ.इ. चडीया । २० अ. सिह । इ. सहि । २१ अ. हींदू । इ. हीदु । २२ अ. मुसमांण । इ. मुसलमांन । २३ अ.इ. चडीयौ । २४ अ.इ. सिल । २५ अ.इ. बंधे । २६ अ. साताब । २७ अ. जेसीघ । इ. जेसिंघ । २८ अ.इ. चडीयौ । २९ अ.इ. षत्र दाउ । ३० अ.इ. राउ । ३१ अ.इ. चडे । ३२ इ. चंमर ।

सारंग देव राजा सकाज ।
वहवांण चडे पक्खर[1] वाज ॥४०॥

साही अमीरांरी नामावळी

बहलोल खांन[2] चडियौ[3] पठांण[4] ।
वरियांम[5] जोध असली वखांण ॥
आलम्मखांन[6] चडियौ[7] अजीत ।
खुरसांण हिंदुवांणह[8] वदीत ॥४१॥

चढ़िया[9] बलोच अब्भूल बांण ।
चड्डे सयद्द[10] पढ्ढे[11] कुरांण ॥
चढ़िया[12] पठांण चढ़िया[13] मुगल्ल ।
तांणै[14] कबांण जमरांण तुल्ल ॥४२॥

कन्नडा चडे[15] हबसी कटक्क ।
खंधारी चढिया[16] उजब्बक्क ॥
रांमीय फिरंगी[17] चडै[18] रौद्र ।
लख चडै[19] बारहां[20] हुई[21] लौद्र ॥४३॥

काबिली[22] चड्डिया[23] कटक कोम ।
दांणवां[24] ऊमरां[25] अवळि[26] दोम ॥
बंदूकदार चढ़िया[27] खंधार ।
तरकस्स बंध चढिया[28] अपार ॥४४॥

बह चढ़े[29] बहत्तरि[30] ऊमरांह[31] ।
चढ़ि[32] सत्तरिखांन अजांनबाह[33] ॥

---

१ अ. षयरे । इ. पषरे । २ अ. वहलोलखांन । ३ अ.इ. चडीयौ । ४ इ. पवांण । ५ अ.इ. वरीयांम । ६ इ. आलंम । ७ इ. चडीयौ । ८ अ. हीदुवाणह । इ. हिंदूवांणह । ९ अ. चषीया । इ. चडीया । १० अ. सयद । ११ अ. पटे । आ. दपटे । १२ अ.इ. चडीया । १३ अ.इ. चडीया । १४ इ. तांणे । १५ इ. चढ़े । १६ अ.इ. चडीया । १७ अ. फिरीरंगी । १८ अ.इ. चडे । १९ अ.इ. चडे । २० अ.इ. बारह । २१ अ.इ. हुइ । २२ इ. काबली । २३ आ.इ. चडीया । २४ अ.इ. दाणव । २५ अ.इ. उमरा । २६ इ. अविल । २७ अ.इ. चडीया । २८ अ.इ. चडीया । २९ अ.इ. चडे । ३० इ. बहितर । ३१ अ.इ. उमराह । ३२ अ.इ. चडि । ३३ अ. षांनबाह ।

पट हेथे[१] चढिया[२] पीलवांण[३] ।
परबते जांण पडिया[४] पखांण ॥४५॥

सुरतांणखांन चढिया[५] सधीर ।
मीयां[६] मिलक्क[७] मीरजा मीर[८] ॥
नरपत्ति चडे असपत्ति[९] राव[१०] ।
गजपत्ति चडे हुय[११] भेर घाव[१२] ॥४६॥

अधपत्ति[१३] चढे[१४] देवमै अंस ।
रजपूत चढे[१५] छत्तीस[१६] वस ॥
मंडोवर राजा मुहरि - मंड[१७] ।
डावै[१८]ली जोगणि[१९] भुजाडंड[२०] ॥४७॥

राठोड वधे मेळसी राड[२१] ।
मुहरावत सिगळै[२२] मारवाड[२३] ॥
गयणाग लागि[२४]···ऊससै[२५] गात ।
हूग्री[२६] हरौल[२७] हिंदुवां[२८] छात ॥४८॥

गजसिंघ वाज[२९] पाखर गजंद ।
सबळै जुध ढोया[३०] नर समंद ॥
गाजियौ[३१] गयण गोळा निहाय[३२] ।
रण[३३] जंग रचै[३४] राठौड राय[३५] ॥४९॥

नायकं[३६] निळै बांधियै[३७] नेत ।
खूंदालम[३८] निहटा बिनै[३९] खेत ॥

---

१ इ. पट हथे । २ अ.इ. चडीया । ३ इ. पिलवांण । ४ आ. चडीया । ५ अ.इ. चडीया । ६ इ. मियां । ७ अ. मीलक । इ. मिकल । ८ इ. अमीर । ९ अ. अंसपति । १० अ. इ. राउ । ११ अ. हुइ । इ. हुई । १२ अ. घाउ । १३ इ. अधिपति । १४ अ.इ. चडे । १५ अ.इ. चडे । १६ इ. छत्रीस । १७ अ. मुहरिमंडि । इ. मुहरि मंड़ । १८ आ. डावे । १९ इ. जोगण । २० अ. भुजाडंडि । २१ अ. राडि । इ. राहि । २२ अ.इ. सिगले । २३ अ.इ. मारवाडि । २४ अ. गयणगल । २५ अ.इ. उससे । २६ इ. हूग्रो । २७ अ. हेरौल । इ. हरोल । २८ अ. हींदूवो । इ. हीदुवो । २९ इ. वाजि । ३० अ. ढौया । ३१ अ.इ. गाजीयो । ३२ अ.इ. निहाई । ३३ इ. रिण । ३४ अ. रचे । ३५ अ. राइ । इ. राई । ३६ अ. नाइकं । इ. नाइक । ३७ अ. बांधायें । इ. बंधीयै । ३८ अ.इ. खुदालम । ३९ इ. बिन्है ।

घूजिया अमर नर धूज[1] नाग ।
वडु संग्रांम[2] हुय[3] वडो-राग ।।५०। ।

जुध प्रिय देवांरो वरणण

वैताल वीर मिळिया[4] विहद्द ।
सीकोतरि साकणि महा सद्द ।।
मिळ[5] समळ ग्रीध्र आमंख भक्ख ।
जंबक्क रींछ[6] वड्डाक जक्ख ।।५१।।

हेकठा हुआ[7] बळितणै हेत ।
पळहारी वैतर[8] भूत प्रेत[9] ।।
खेचरा भूचरा[10] खेत - पाळ ।
काळिका पुत्र भैरव[11] कंकाळ[12] ।।५२।।

रहियौ[13] रवि कौतिग[14] तांण[15] रत्थ ।
सिव सुरां[16] कोडि तेतीस[17] सत्थ ।।
अपछर विवांण ऊपरि[18] वहंत ।
हुय[19] औसर[20] नारद हड-हुडंत ।।५३।।

डमडमै सकति डम्मरू डाक ।
है-थाट हुब्ब[21] हुय[22] वीर हाक ।।
गडि-अडै[23] भेर दम्मांम गज्ज ।
गयणगज[24] बारह घण गरज्ज ।।५४।

हगमगे[25] थाट गहमहै[26] हूर ।
डहडहै[27] डुंड[28] त्तहत्रहै[29] तूर ।।

---

१ इ. घूजि । २ अ. संग्रांम । ३ अ. हुइ । इ. हुई । ४ अ.इ. मिलीया। ५ इ. मिल । ६ इ. रीछ । ७ अ. हूआ । इ. हुवा । ८ इ. वेंतर । ९ अ. पेत । १० अ.इ. भूचर । ११ अ.इ. भैर । १२ अ.इ. ककाल । १३ अ.इ. रहीयौ। १४ अ. कौतगि । इ. कोतग । १५ इ. तांणि । १६ इ. सूरां । १७ इ. तेत्रीस । १८ अ.इ. उपरि । १९ अ. हुइ । इ. हुई । २० इ. औसर । २१ अ. ब । इ. हुवे । २२ अ. हुइ । इ. हुई । २३ अ.इ. गडीग्रडे । २४ इ. गयणगक । २५ अ.इ. गहमहे । २६ अ.इ. गहगहे : २७ अ.इ. डहडहे । २८ अ.इ. डूट । २९ अ.इ. त्रहत्रहे ।

रिणतूर रुडै[1] तुडडै[2] बुरंग[3] ।
नीसांण घुबै[4] घुडडै[5] निहंग ।।५५।।

हथनाळ[6] हवाई[7] हूकळंत[8] ।
गजनाळां[9] गोळा गडिम्रडंत[10] ।।
बळती म्रजागि उडु[11] बहंत[12] ।
म्रारावो छूटो[13] आवरंत[14] ।।५६।।

गोळा वहत्त[15] धूजत्त[16] गोम ।
धुब्बियो[17] गगन[18] घडहडै[19] धोम ।।
म्रातस घोर मिळियो[20] म्रंधार ।
रिण सोर जोर हुय[21] रौद्रकार ।।५७।।

कुदरत्त विछूटा[22] कुहक[23]-बांण ।
म्राकंप[24] इळा[25] पुड म्रासमांण ।।
ळयां[26] ताड[27] विपरीत गत्त[28] ।
ओम्रडै[29] गडै[30] किरि मेह म्रत्त[31] ।।५८।।

घिखि[32]सोर धूवर[33]धूंवा[34]-धार[35] ।
म्राव्रत मिळै[36] तब म्रंधकार ।।
रांमायण[37] भारथ रूप सुद्ध ।
जोधपुरै मातो खुरम जुद्ध ।।५९।।

जुध वरणण

भड वाहै नीमझ भुजा-डंड ।
कैबरां सोक[38] गरजै कोमंड[39] ।।

---

१ म्र.इ. रुडे । २ म्र.इ. तडडे । ३ इ. बूरंग । ४ म्र.इ. घुबे । ५ म्र.इ. घडडे । ६ म्र. हथनालि । ७ म्र इ. हवाइ । ८ म्र इ. हुकलंत । ९ म्र.इ. गजनाल । १० म्र. गडीम्रडे । ११ म्र.इ. उडे । १२ इ. बहति । १३ इ. छुटे । १४ म्र.इ. म्राबरत । १५ इ. वहत । १६ इ. धुजंत । १७ म्र.इ. धुबीयो । १८ म्र. गिगन । इ. गिगंन । १९ म्र.इ. घडहडे । २० म्र.इ. मिलीयो । २१ म्र. हुइ । इ. हुई । २२ इ. विछुटा । २३ म्र.इ. कूहक-बांण । २४ म्र.इ. म्राकंपि । २५ इ. ईला । २६ म्र.इ. गोलीयां । २७ इ. ताडि । २८ म्र.इ. गति । २९ म्र.इ. म्रोम्रडे । ३० म्र.इ. गडे । ३१ म्र.इ. म्रति । ३२ इ. घिख । ३३ म्र. धूम्रा-रव । म्रा. धूवर । ३४ म्र. धू । ३५ म्र. म्राधार । इ. वाधार । ३६ म्र.इ. मिले । ३७ म्र. रांमाइण । इ. रांमाईण । ३८ इ. सो । ३९ इ. कोमंड ।

उड्डिया[1] तीर उभ्भे[2] दळांह[3] ।
मांकडा जांण किरि मेहळांह ॥६०॥

असमांन विच्छूटै[4] सर असंख ।
धूंकारव[5] गाजै[6] गुण धनंख ॥
सूरज्ज वोम छायौ सरेय[7] ।
किरि जांण काळ छाया करेय[8] ॥६१॥

कन्नाढ़ बांण छूटै कबांण[9] ।
पंजरां महा[10] लेजाय[11] प्रांण ॥
नळयार मार सेलार भंग ।
खरडकै[12] भडां फूटै[13] खतंग ॥६२॥

बंदूक मार बांणां[14] पडेय ।
कळळिया[15] थाट चडिया[16] कडेय ॥
नीमजै[17] कूंत[18] भुज काळ नाग ।
खांपां[19] उसांटि काढ़िया[20] खाग ॥६३॥

झूंझारां[21] आवध झळहळेय ।
व्रहमंडक[22] वीजां वळवळेय[23] ॥
सैफळौ[24] वाजियौ[25] सांमतांह[26] ।
मेलियौ[27] लोह मुह रावतांह ॥६४॥

भारत्थ हाक वाजी[28] भडांह ।
घैधूंबि[29] थाट लूंबै[30] घडांह ॥
निहसिया[31] जोध घाए[32] नित्रीठ ।
रिण खळै रूक[33] वाजियौ[34] रीठ ॥६५॥

---

१ अ.इ. उडीया । २ अ.इ. उभैरे । ३ अ. दलाह । ४ इ. विछुटै । ५ अ. धूंकार । ६ अ. वृगाजे । इ. वगाजै । ७ अ.इ. सरेअ । ८ इ. करेअ । ९ इ. कबाण । १० इ. माहा । ११ अ.इ. लेजाइ । १२ अ. खडकै । १३ अ. फूट । १४ अ. बाणां । इ. वांणा । १५ अ.इ. कललीया । १६ अ.इ. चडीया । १७ अ. नीमजे । १८ अ.इ. कूत । १९ इ. षापां । २० अ. काटीया । इ. काढीया । २१ अ.इ. झूझारां । २२ अ. व्रहमंडक । इ. वृह्मंडक । २३ इ. चलवलेय । २४ इ. सैंफलो । २५ अ.इ. वाजीयो । २६ इ. सामतांह । २७ अ. मेलीयो । २८ अ. वांजी । २९ अ. घैंधुबि । इ. घैंघुबि । ३० अ. लूबै । इ. लुबै । ३१ अ.इ. निहसीया । ३२ इ. घाये । ३३ इ. रुक । ३४ अ.इ. वाजीयो ।

उड्डियौ[१] बूर धारा अंगार ।
खळखट्ट निहट्टा खूंदकार[२] ।।
हुब्बिया[३] कटक[४] वाप्परि[५] हीक ।
झूंझार[६] झट्टकै[७] हुवै झीक ।।६६।।

संघार मार लैकार सेन ।
मिळ सार धार अंधार मेन ।।
घड मुंड[८] खंड बे - रुंड[९] धक्क ।
करमाळ[१०] वहै किरि काळ चक्क[११] ।।६७।।

सांमठी[१२] धाक पड[१३] साबळांह[१४] ।
वळवळै[१५] धार विजूजळांह[१६] ।।
गजवाज गडो-थळ भड गुडंत ।
निरलंग अंग धड नीजुडंत ।।६८।।

घण फुरणि जोध वाहंत घाव[१७] ।
पायाळ डरै[१८] पडतै निहाव[१९] ।।
लडथडै लोह वाहै लडाक ।
बडडंत हाड भाजै बडाक ।।६९।।

भड खळां[२०] भडां ऊतरै[२१] भूंभ ।
कुंजर[२२] कड-डंत गूडंत कूंभ ।।
तेगां तमच्छ[२३] तूटंति[२४] तोब[२५] ।
झबरक्क हुळां साबळां झोब ।।७०।।

सीसोद अनै कमधजां सत्थ ।
गळबांह[२६] गळोबळ गूथ-बत्थ[२७] ।।

---

१ अ.इ. उडीयौ । २ अ.इ. खुंदकार । ३ अ.इ. हुबीया । ४ अ.इ. कटंक । ५ अ. वापरी । इ. वावपरी । ६ अ.इ. झूझार । ७ अ. झटके । इ. झटकै । ८ अ.इ. मुड । ९ अ. रुड । इ. रूंड । १० अ.इ. करिमाल । ११ अ. चंक । इ. चंक । १२ अ.इ. सामठी । १३ अ.इ. पडि । १४ अ. साबलाह । १५ अ. वलवधै । १६ अ. विजुजलाह । इ. बीभूजलांह । १७ अ. घाउ । १८ इ. डरे । १९ अ.इ. निहाउ । २० अ. तनुखलां । २१ अ.इ. उतरैं । २२ अ. कूंझर । २३ इ. तिमछ । २४ इ. तुटंति । २५ अ. तोब । २६ इ. गलबाह । २७ इ. गुरबथ ।

मेवाड[1] मंडोवर[2] जुद्ध माचि[3] ।
नटग्ररां जेम धड धूग्र नाचि ॥७१॥

दस सहस राव[4] नव सहस देस[5] ।
निहसिया[6] नेत-बाधै[7] नरेस[8] ॥
भूझारां[9] माथै पडै झाट[10] ।
मिळि धाइ मंडोवर[11] मेदपाट ॥७२॥

मेवाडौ मेलै नही मांण ।
खेडेचौ[12] लोहडौ[13] खुरासांण[14] ॥
हम्मीर सळक्खा हुबै[15] दूठ[16] ।
पतसाह[17] खडा बै[18] बेहुं[19] पूठ[20] ॥७३॥

भीम सीसोदियारौ वरणण

परबत्त मेर दक्खे[21] प्रमांण ।
रिणखंभ[22] हुम्रौ[23] चीतोड[24] रांण ॥
संग्रांम निहट्टौ निरां सीम[25] ।
भूडंड[26] उपाडै[27] गजां[28] भीम ॥७४॥

"ग्ररसी" हर ग्रोपम[29] रिण ग्रनींद[30] ।
वधियौ[31] किरि तोरण चडण वींद[32] ॥
गज दळां वीच फौजां गसूर ।
सीसोद[33] रांण झळहळै[34] सूर ॥७५॥

---

१ इ. मेवाडि । २ इ. मंडौवरि । ३ ग्र. माछि । इ. माच । ४ ग्र.इ. राठ । ५ इ. दैस । ६ ग्र.इ. निहसीया । ७ इ. नेत-बांधै । ८ ग्र. तरेस । ९ ग्रा. भूझारा । १० इ. झटझाट । ११ इ. मांडोवर । १२ इ. खैचेचौ । १३ ग्र. लौहडौ । इ. लोहडो । १४ इ. खुरासाण । १५ इ. हुवै । १६ इ. दुठ । १७ ग्र.इ. पतिसाह । १८ ग्र. बे । १९ ग्र बेहु । इ. बैहू । २० इ. पुठि । २१ ग्र.इ. दषे । २२ इ. रिणथंभ । २३ ग्र.इ. हूग्रौ । २४ ग्र. चीत्रौड । इ. चित्रौड । २५ ग्र. सीस । २६ ग्र.इ. भुडंड । २७ ग्र.इ. उपाडे । २८ ग्र.इ. गजा । २९ ग्र. ग्रौपम । ३० ग्र.इ. ग्रनीद । ३१ ग्र.इ. वधीयो । ३२ ग्र.इ. वीद । ३३ ग्र. सीसौद । ३४ ग्र. झलहले ।

अमरावत ऊपरि[1] दळ अचाळ ।
माथै किरि आबू मेघमाळ ।।
सीसोद[2] सीस स्रोणी निवेस ।
मस्तक्क जांण गंगा[3] महेस ।।७६।।

खूमांण जुडंतौ जैत - खंभ[4] ।
थाटां विच होळी हुओ[5] थंभ ।।
घडहडे घरा ब्रह्मंड[6] घुबेय[7] ।
हे-थाट 'भीम' माथै हुबेय ।।७७।।

जुध वरणण

खळहळे[8] रत्त[9] परनाळ[10] खाळ ।
डोळियां[11] पडै घड जूह डाळ[12] ।।
करडकै कंध संघांण[13] घट्ट ।
फरडकै फीफरां[14] आळ[15] फट्ट ।।७८।।

झट्टकै झेर फाटै[16] झराड ।
झोकौ[17] पडंत आसुरां[18] झराड ।।
मरगडां जूह मुरडंत माड ।
चूनौ[19] हुइत्त[20] चौसट्ठि[21] हाड ।।७९।।

उड्डै कपाळ खग ओझडांह[22] ।
दीझंति जांण दोटा दडांह[23] ।।
हम्मलां ढ़है[24] ढालां हसत्ति[25] ।
ध्रूबकै दांत वाजै घरत्ति[26] ।।८०।।

है तूट[27] तुंड[28] रुळि रुंड[29] मुंड[30] ।
भाजै[31] भ्रसुंड[32] गै हाड-गुंड ।।

---

१ इ. उपरि । २ अ.इ. सीसोद । ३ अ. गंगम । ४ अ. जैते-षंभ । ५ अ. हूओ । इ. हुओ । ६ अ. वृह्मंड । इ. वृंमंड । ७ अ. घुबेस । इ. घुबेह । ८ अ. षलहले । ९ इ. नालरत । १० अ. परिनालं । इ. प्रनाल । ११ अ.इ. डोळीयां । १२ अ. जूंडाळ । इ. जुआ-डाल । १३ अ.इ. संघाए । १४ अ.इ. फीफर । १५ अ.इ. अल । १६ अ.इ. फाटे । १७ इ. झीकै । १८ अ.इ. असरां । १९ अ. चूंनो । २० अ. हुइत । इ. हुबंत । २१ इ. चौसट । २२ इ. ओझडांह । २३ अ. दडाह । २४ इ. ढेहै । २५ इ. हसंति । २६ इ. घरंति । २७ इ. तुट । २८ अ. तूड । इ. तूंड । २९ अ. रुड । ३० अ. मूड । ३१ अ. नाजै । ३२ अ. भ्रसूड । इ. भ्रसूंड ।

वीछडै[1] संघ अनमंध वप्प ।
भूंझार[2] दियै[3] तेगां झडप्प[4] ॥८१॥

वेसूल[5] फूल - धारां विहार ।
भाले पडंत डोले भंभार ॥
संग्रांम[6] लोह वाहै सनद्ध[7] ।
विपरीत घाउ[8] ऊखळा[9] वद्ध[10] ॥८२॥

तडछिया[11] जांहि गोडिया[12] तांण ।
जम-दढां[13] टेवउ[14] ऊठै[15] जुवांण[16] ॥
लागै[17] भड लोहै[18] लोहछाक ।
घूमंति[19] जांण पीयै ऐराक[20] ॥८३॥

ऊजडै कडा जिरहां अळग्ग ।
खडखडै जोध वाहै[21] खडग्ग ॥
खसरक्क[22] पटै[23] खांडै[24] खडाक ।
नीजुडै नरां सिरि रहै नाक ॥८४॥

त्रिज्जडां त्रिजड वाजै[25] निश्रीठ[26] ।
डांडेहड[27] गेहरि जांण दीठ[28] ॥
उड्डै तिमच्छ खागां[29] अघात ।
आकास जांण उल्लका-पात ॥८५॥

चोटां सूं[30] सुरि छंदै चौधार ।
वाजंति वास[31] जांणेवा[32] बार ॥

---

१ अ.इ. विछडै । २ अ.इ. भूंझार । ३ इ. दीयै । ४ इ. झडिप । ५ इ. वेसुल । ६ अ. सग्रांम । इ. संग्राम । ७ अ. सनट । ८ आ. घाव । ९ अ.इ. उखला । १० अ. वट । ११ अ.ड. तडछीया । १२ अ. गोडीया । इ. गोडीयां । १३ अ. जमदटां । इ. जमदढां । १४ अ. टवे । आ. वहै । १५ अ.इ. उठै । १६ अ. जवांण । १७ अ. लागे । १८ अ.इ. लोहे । १९ अ. घूमति । आ घूमंत्त । २० अ.इ. अैराक । २१ इ. वाहे । २२ अ. षसरस । २३ अ. षटे । २४ अ. षांडे । २५ अ. वाजे । २६ अ. निठाउ । आ. निवाव । २७ अ.इ. डाडेहड । २८ आ. दाव । २९ अ.इ. षगां । ३० अ. सुं । इ. सु । ३१ इ. वांस । ३२ अ. जांणेबा ।

मारका[1] जुडै[2] घाए मयंद ।
गुड्डिया[3] गुडा खावै गयंद ॥८६॥

बैरुंड[4] खंड धड बेहडांह ।
काली किरि भांजै कूलडांह ॥
सेलां उभेळ फाटै सनाह ।
धरहरै[5] स्रोंण[6] धारां प्रवाह ॥८७॥

धडधवै[7] धीर सींगी[8] धमोड[9] ।
फूटंत अणी सर जिरह फोड[10] ॥
पळ खंड[11] पडै सिर पांण पाउ[12] ।
राउत्तां[13] रूकां[14] घाव[15] राउ[16] ॥८८॥

जोधपुरौ राजा जम्म-जाळ[17] ।
केवियां[18] कूंत[19] वाहै कराळ ॥
है थाट पडै पाधरी हीच ।
भारत्थ भिडै गर्जसिंघ भीच ॥८९॥

राठौड राव रिम गोडवंत ।
हणमंत जेम हाकां करंत ॥
त्रिम्भाग[21] सेल ग्रहियै[22] तयार[23] ।
गर्जसिंघ उथांमै गज्ज - भार ॥९०॥

बळवंत भरंतौ[24] भुजै[25] बाथ ।
हाथियां[26] ठेलि वाहंत हाथ ॥
गर्जसिंघ करंतै गज्ज - गाह ।
कुंजरां गडां[27] घातियौ[28] काह ॥९१॥

---

१ अ.इ. मारकार । २ इ. जुटे । ३ अ.इ. गुडीया । ४ अ. बेरूडं । इ. बेरूड । ५ इ. घरैहरै । ६ अ. श्रोण । ७ आ. धवधवै । ८ अ.इ. सीगी । ९ अ.इ. धमोडि । १० अ.इ. फोडि । ११ इ. षळषड । १२ आ. पाव । १३ का. राव । १४ अ. रकां । इ. रांकां । १५ अ. घाउ । १६ अ.इ. राउ । १७ इ. जंमजाल । १८ अ.इ. केवीया । इ. केवीयां । १९ इ. कूत । २० अ. करत । २१ अ.इ. तिभाग । २२ अ. ग्रहीयै । इ. ग्रहीये । २३ अ.इ. तियार । २४ अ.इ. भरतौ । २५ अ. भुंजे । इ. भुजे । २६ अ.इ. हाथीयां । २७ अ.इ. गडा । २८ अ. घासीयो ।

राठौड भमाडै छुरा रूक।
भद्र-जाती भांजै[1] करै भूक[2] ॥
कमधज्ज हिणै हाथळां काळ।
ढहि हुवै ढिग्ग ढालां ढैचाळ[3] ॥९२॥

भीम सीसोदिया अनै गजसींघरौ जुध

भारत्थ भिडै गजसिंघ[4] भूप।
राठौड राव नरसिंघ रूप ॥
'सूरउत'[5] अनै 'अमरा' सुतन्न[6] ।
कुरखेत जांण अरजन करन्न[7] ॥९३॥

'भीमेण' 'गजैसी' भिडै तांम[8] ।
रांमायण[9] रांमण जांण[10] रांम[11] ॥
दिढ[12] भिडै[13] 'गजैसी' 'भीम'[14] दोय[15] ।
हणमंत अनै[16] किरि जुद्ध होय[17] ॥९४॥

सीसोद[18] कमधज्ज सज्जगीस।
आरांण चडै[19] किरि त्रिपुर ईस[20] ॥
दूजै[21] 'संग्रांम'[22] दूसरौ[23] 'गंग'।
अडिया[24] पहाड[25] बै[26] बै[27] अभंग ॥९५॥

जुध

संग्रांम मेर माझी सम्रोध।
जाकुळै वीर दूसरौ[28] जोध ॥
गज केसरि[29] गाहण गजां[30] थट्ट।
सांघणै लोह ढोया सुभट्ट ॥९६॥

---

१ अ. भांजे। २ अ. सूक। ३ अ. टैचाल। ४ अ. गजसीघ। इ. गजसींघ। ५ अ. सूरउ। ६ इ. सुतंन। ७ इ. करंन। ८ अ.इ. ताम। ९ अ.इ. रांमाइण। १० अ. जाणि। इ. जांणि। ११ इ. राम। १२ अ. दिट। इ. दिढि। १३ इ. भिडे। १४ इ. भीडंम। १५ अ. दोइ। इ. होइ। १६ अ. अने। १७ अ. होई। इ. होइ। १८ अ. सीसोद। १९ अ.इ. चडे। २० इ. इस। २१ इ. दुजै। २२ अ. संग्राम। २३ अ. दूरो। इ. दुरै। २४ अ.इ. अडीया। २५ इ. पाहाड। २६ इ. बे। २७ अ. वै। २८ इ. दुसरो। २९ इ. केहरि। ३० अ.इ. गज।

मारको रूक वाहै 'महेस'।
दळपत्त[१] सुत्त विढता[२] अदेस[३] ॥
भूझारसिंघ निहसै जुझार[४]।
जगजेठ[५] 'दलावत' जोरदार ॥९७॥

भुजबळी[६] कांन भाराथ मंड[७]।
खीमउत करै[८] खळ विहंड खंड[९] ॥
राजघर रूकि राखंति[१०] राज[११]।
'सांमळ'[१२] सुतन्न सबदी सकाज[१३] ॥९८॥

नीधक्क विढे[१४] सींधुवै[१५] नाद[१६]।
'उदैसिंघ' 'माल' 'सीहा'[१७] औलाद॥
त्रिजडे मयंक 'कूंपा' त्रि-सींग[१८]।
भम्माडै[१९] रुंडां[२०] भाव-सिंघ[२१] ॥९९॥

माधव दीयंत[२२] सात्रवां[२३] मार।
पूरणमलीत[२४] बाहां[२५] पगार॥
विढता घन गोवरधन वराह[२६]।
चांदावत[२७] चौरंग[२८] चत्रबाह ॥१००॥

तोगावत रावत तुडी[२९] तांण।
केवियां[३०] 'भीम' वाहै केवांण॥
'अचळेस' 'भुजं'[३१] ओडवै भार।
'वीकमसी' संभ्रम जमवहार ॥१०१॥

---

१ अ.इ. दलपति। २ अ. विटसा। ३ अ.इ. आदेस। ४ अ. झूझार। ५ अ. जमजेठ। ६ अ. भुजबलिं। इ. भुजुबलि। ७ अ.इ. मंडि। ८ अ. करे। ९ अ.इ. षंडि। १० अ.इ. राषंत। ११ इ. राजि। १२ इ. सामळ। १३ अ.इ. सकज। १४ अ. विटंसी। इ. विढै। १५ अ. सीघूवं। १६ अ. नादं। इ. नाथ। १७ इ. सिहां। १८ अ. तिसीग। १९ अ.इ. भवाडै। २० अ. रुडा। इ. रूडा। २१ अ. भावसिग। २२ अ. दि। २३ इ. सत्रवां। २४ इ. पुरणमलीत। २५ इ. बांहां। २६ अ.इ. षाराह। २७ अ. चौदावत। इ. चौंदावत। २८ अ.इ. चौरंगि। २९ अ. इ. तुडि। १० अ.इ. केवीयां। ११ अ.इ. भुजे। ३२ अ. संमभ्रम। इ. संमभ्र।

रुघनाथ भिडै[1] रजवट्ट[2] रीत ।
मांनउत हुऔ[3] भरु अच्छ भीत ।।
जोधार करै "अमरेस" जुद्ध ।
आसकन्न सुत्त अवसांण सिद्ध ।।१०२।।

वाहंत[4] खग्ग 'केहरि'[5] विहद्द ।
'जसवंत' समोभ्रम[6] जो मरद्द ।।
खेतसी खाग[7] खेळंत खत्ता[8] ।
'गोपाळ' सुत्त गोडंत सत्त ।।१०३।।

कलियांण-मल्ल कळहै कंठीर ।
"बैरसल" सुत्त वीराध-वीर ।।
कूंपावत[9] एता कळह वार ।
सांमि छळि सत्रां वाहंत[10] सार ।।१०४।।

भगवांन भडां[11] दो[12] करै भाग ।
वाघावत सिंधल[13] तणौ वाघ ।।
गोइंद[14] गुडावै गज्ज[15]-खंभ ।
दोमज्झि 'वाघ' सुत[16] दळां[17]-थंभ ।।१०५।।

ऊजळा[18] करै कमधज्ज आज ।
पंचायण[19] 'जैतौ' प्रथी-राज[20] ।।
'नरपाळ' नेत बाघै[21] निहट्ट ।
'भांणौत' भडां भड खळै घट्ट ।।१०६।।

'वीठलै' आंक ओडो[22] वळंति[23] ।
'गोपाळ' सुत्त गैमर गिळंति[24] ।।
'करनौ' करंत भारत्थ कत्थ ।
'भूपाळ'[25] तणौ बल्लाळ बत्थ ।।१०७।।

---

१ इ. विढै । २ इ. रजवटि । ३ अ.इ. हूवौ । ४ अ.इ. वाहंति । ५ अ. केहर । ६ इ. समोभ्रम । ७ अ.इ. षागि । ८ इ. षग । ९ अ. कुपावत । इ. कुंपावत । १० इ. वाहंति । ११ अ. भडा । १२ अ. दोइ । इ. दोय । १३ अ. सिंघल । १४ इ. गोइंद । १५ इ. गजह । १६ आ. तद । १७ इ. दला । १८ इ. उजला । १९ इ. पांचाइणौ । २० अ. प्रिथीराज । इ. प्रीथीराज । २१ अ. बाघै । इ. बांधै । २२ अ. ओडौ । इ. आडो । २३ अ.इ. वलंत । २४ अ.इ. गिलंत । २५ इ. भुपाल ।

पडियालग[1] पडे[2] प्रिसेण[3] पीघ ।
"सुरजन्न" समोभ्रभ[4] मांनसिंघ[5] ॥
ओडै[6] भूडंड[7] व्रहमंड[8] ओट ।
'चांपावत' गुडै गयंद चोट[9] ॥१०८॥

जगमाल जुडै जिम्म[10] जग्गमाल ।
दूदावत ढाहै[11] गजां[12] ढाल ॥
सूरत्ति[13] सरीखौ[14] नांम[15] सिद्ध[16] ।
'वीरम्मां' 'मालां' जोध विद्ध[17] ॥१०९॥

'मोहण' लडंत वाहंत[18] लोह ।
'गोपाळ' सुत गजदळां डोह ॥
दळपत्ति खळां दळ दुगम गति ।
'भीमौत[19] भमाडै भीम भति ॥११०॥

नरसिंघदास सूरत[20] समूह[21] ।
जगमाल सुत्त गौडवै[22] जूह ॥
'कांनौ'[23] भिडंत चालतौ कोट[24] ।
'माधव्व' समोभ्रम मन्न मोट ॥१११॥

ऊदावत[25] जूटा[26] अरि दळांह ।
किरि सीह[27] विछूटा सांकळांह ॥
आसकन्न[28] भिडै[29] भांजै[30] असंघ[31] ।
'मांनौत[32] खळां मैंगळां[33] कंघ ॥११२॥

---

१ अ.इ. पडीयालघ । २ इ..पडै । ३ अ. प्रिह्मेण । इ. सिसण । ४ इ. समोभ्रम । ५ अ.इ. मांनसीघ । ६ अ.इ. ओंडै । ७ अ. भूंडंड । ८ अ. व्रहमंड । ९ इ. चौट । १० अ. म । ११ इ. ढाहे । १२ अ. गज । १३ अ.इ. सुरति । १४ अ. सरिखी । १५ इ. नाम । १६ अ. सीघ । १७ अ.इ. विघि । १८ अ.इ. वाहंति । १९ इ. भीमोत । २० इ. सुरत । २१ इ. समुह । २२ अ. गोडेवै । २३ इ. कानौ । २४ अ. कौट । २५ इ. उदावत । २६ इ. जुटा । २७ इ. सिह । २८ इ. आसक्रंन । २९ इ. भिड । ३० इ. भाजै । ३१ अ. असघ । ३२ अ.इ. मांनउत । ३३ अ.इ. मैगलां ।

'राजौ'[1] भिडंत सूरिमा[2] राह ।
'बिसनावत' सीहक सिंधुराह[3] ॥
'जगती'[4] जुडंत जमदूत जुद्ध[5] ।
'रांमा' सुत 'नारण'[6] वडी[7] बुद्ध[8] ॥११३॥

'गोकळसी' चूरै[9] गजदळांह ।
विसनावत[10] हत्थळ वीजळांह[11] ॥
'सुंदर'[12] भिडंत संग्रांम[13] धीर ।
'रांमउत' रूक राखंत नीर ॥११४॥

'जगनाथ' प्राग[14] बे[15]बे[16]जुडंत ।
हरसिंघ[17] सुत्त हाथां[18] हणंत ॥
हररांम रूक वावरै हद्द ।
'गोदउत' भडां मेळै गरद्द ॥११५॥

'अभैरांम' भिडै आहिवै[19] अगाहि[20] ।
'गोइंद' समोभ्रम गज्ज गाहि[21] ॥
'उदैसिंघ' वधारै[22] वंस[23] आघि[24] ।
आसकन्न[25] सुत्त डोहै[26] अताघ ॥११६॥

'अमरसी'[27] विमर[28] पैठौ अरांण[29] ।
'रासाउत'[30] साध्रक रूक पांण[31] ॥
साहिब्ब-खांन नाहर सुजाव[32] ।
घण भूंभौ[33] वाहै सत्रां[34] घाव[35] ॥११७॥

हरदास हियै[36] पूरवै हांम ।
'सुरजन्न' हरौ जीपण सग्रांम[37] ॥

---

१ इ. राजो । २ अ. सूरिम । इ सुरिम । ३ अ.इ. सिंधूराह । ४ इ. जगतै । ५ अ. जुधि । ६ अ.इ. नरिण । ७ अ.इ. वट । ८ अ.इ. बंधि । ९ इ. चुरै । १० अ. विसनाउत । ११ अ. वीजुलांह । इ. विजुलांह । १२ अ. शुंदर । इ. सुंदरि । १३ अ. सग्रांम । इ. संग्रांम । १४ अा. प्रांम । १५ इ. बैं । १६ अ. बै । इ. वे । इ. बे । १७ अ. हरसीघ । १८ अ.इ. हयां । १९ अा. अहिवे । २० अ. अगहि । २१ इ. गांहि । २२ अ. वधोरैं । इ. बधारे । २३ अ. वस । २४ अ.इ. आघ । २५ इ. आसकंन । २६ अ. डोहे । २७ अ. अमसी । २८ अ. विरमर । २९ अ.इ. आरांण । ३० अ.इ. रास-उत । ३१ अ.इ. पांणि । ३२ अ.इ. सुजाउ । ३३ अ.इ. भूंभो । ३४ इ. सत्र । ३५ अ.इ. घाउ । ३६ अ. हीयैं । ३७ अ. सग्रांम । इ. संग्रांम ।

म्रिसणां दियंत[1] धारां प्रहारि[2] ।
'दूदावत' 'सगळै[3] रिण दळारि ॥११८॥

जगनाथ[4] जुडै जुध[5] बाथ जोड[6] ।
कणियागिर[7] रुपक चडै कोड[8] ॥
चहुवांण "दयाळ"[9] गज थटां चूर ।
'सिखरा'[10] सुतन्न पेखंत सूर[11] ॥११९॥

देवडौ विढै[12] 'अचळेस' दूठ ।
रावत्त[13] समोभ्रम रिमां रूठ ॥
खळखट्ट करै खत्रवट्ट दाय[14] ।
*चहुवांण[15] न चूकै[16] घायवाय ॥१२०॥

रोळंत रिमां घड[18] रांमचंद ।
'संग्रांम'[19] सुत्त सूंरत[20] कंद ॥
'सांगो'[21]भिडंत संग्रांम[22] रस्सि ।
'नगराज' सुत्तन[23] घाए[24] निहस्सि ॥१२१॥

लंकाळ लडै रिण रांमदास ।
'गोपाळ' सुत्त सूंडाळ[25] ग्रास ।
'करमसी' भिडै कळिमथण कोपि ।
राठोड नग्ग सिरि[26] पग्ग रोपि ॥१२२॥

कूंपौ[27] भिडंत डूचियै[28] कूत ।
जैमाळ समोभ्रम जम्मदूत ॥

---

१ अ. दियत । २ अ.इ. पहार : ३ अ.इ. सगले । ४ इ. जमनाथ । ५ अ.इ. जुधि । ६ अ.इ. जोडि । ७ अ. कणीयागरि । इ. कणियागर । ८ अ.इ. कोडि । ९ अ.इ. द्याल । १० अ. सिषरां । ११ इ. पूर । १२ इ. विढे । १३ अ. रावत । १४ अ.इ. दाई । १५ अ. चवांण । १६ इ. चुकै । १७ अ.इ. घाइवाइ । १८ इ. घडि । १९ अ. सग्रांम । २० अ. सूरत । इ. सुरत । २१ अ.इ. सांगो । २२ आ. संग्राम । २३ अ.इ. सुत । २४ अ.इ. घाए । २५ अ. सूडाल । २६ इ. सिर । २७ इ. कुंपो । २८ अ.इ. डूचीयै ।

*इस छन्द के आगे 'इ' प्रति में निम्न पंक्तियां विशेष हैं :—

हरदास षग वाहंत हद । मेसउत षलांडै मरद ॥
कलियांण लडै केवीयांकाल । चूरै नेतावत चमरांल ॥

'आसौ' भिडंत[1] अंबर अडेय[2] ।
'नींबावत'[3] चौरंग[4] भुंइ[5] चडेय ॥१२३॥

'भगवांन' लोह भेळै[6] भिडज ।
'सुरतांण' सुत्त छळ सांम निज्ज ॥
'नरपाळ' खाग पाडै[8] खळांह ।
जळ चाढै[9] जोगां रावळांह ॥१२४॥

रायसिंघ[10] समोभ्रम[11] मेघराज ।
संग्रांम हांम पूरण[12] सकाज ॥
आरण[13] भिडंत जोवंत अग्ग[14] ।
ऊहड परट्ठि[15] अहिसीस[16] पग्ग ॥१२५॥

मारक्कौ ऊहड़ भिडं 'मेघ' ।
असमांन[17] लगै ऊभारि[18] तेग ॥
'रांमौ'[19] भिडंत केवियां[20] कंस ।
'माहेस' सुत 'मालदे' वंस ॥१२६॥

भाटी भिडंत[21] गोपाळ-मल्ल ।
'आसावत' रावत गिडि[22] इकल्ल[23] ॥
'केसव' भिडंत केसरी सीह ।
'वाघावत' दारण विढण[24] दीह ॥१२७॥

रांमचंद[25] करै[26] राहा[27] चरक्क ।
सुरतांण सुत्त आषी अरक* ॥

१. अ. भिडंत। २ अ. अडैय। ३ अ. नीबावत। इ. निबावत। ४ अ.इ. चोरंगि। ५ इ. भूई। ६ इ. भांजै। ७ अ. भिडंज। ८ अ. पालै। ९ अ.इ. चाडै। १० अ. इ. राइसिंघ। ११ इ. समोभ्रम। १२ अ. पूरं। इ. पुरै। १३ अ.इ. अरण। १४ अ.इ. जग। १५ इ. परिठ। १६ इ. सिस। १७ इ. असमान। १८ अ. उभारि। इ. भुभारित। १९ अ.इ. रांमो। २० अ.इ. केवीयां। २१ इ. भीडंत। २२ अ. गिंडि। इ. गिड। २३ अ. एकल। इ. ऐकल। २४ अ. विटण। २५ इ. राम-चंद। २६ इ. करण। २७ इ. राह। २८ इ. चक।

* प्रति 'अ' में "सुरतांण सुत आषी अरक" पंक्ति नहीं है।

*'अचळो' भिडै ते वाह आच ।
सुरतांण सुत्त सीमंत[1] साच ॥१२८॥

'पीथौ'[2] भिडंत संग्रांम पीठ ।
'गोइंद'[3] सुत्त गहवंत ग्रीठ ॥
ईसर[4] भिडंत घाए अनंत ।
भाटी भड भूरी भाग[5]-दंत ॥१२९॥

हरदास हियै[6] चाडै हसम्म[7] ।
'कांनावत' दाखै पराक्रम्म ॥
रुघनाथ समोभ्रम जोगराज ।
वाहंत तेग किरि इंद्र वज्र[8] ॥१३०॥

केसव भिडंत कुदरत्त[9] गत्त[10] ।
रायसिंघ[11] 'सुत्त[12] खग सावरत्त[13] ॥
'नाहरौ' भांण संभ्रम[14] निराट ।
घण घाइ घडै[15] अरिहरां घाट ॥१३१॥

'नरपाळ' भिडै नेठाह नग्ग ।
गोदउत वधै[16] गयणग लग्ग ॥
भाटी भिडंत कूंभा[17] थळांह[18] ।
मिळिया मयंद किरि मैंगळांह[19] ॥१३२॥

वाघंत बिढतौ[20] वाज खांन ।
लखधीर सुत्ता लग आसमांन ॥
'सादूळ' भिडै गोपाळ सुत्त ।
राठौड रूक ग्रहियां[21] दुरत्त[22] ॥१३३॥

---

* प्रति अ' में पंक्ति— "अचलो भिडै तेवाह आच" लुप्त है ।

१ इ. सींमंत । २ अ. पीथो । ३ इ. गोइंद्र । ४ इ. इसर । ५ अ.इ. भग दंत । ६ अ.इ. हीयै । ७ इ. हसंम । ८ इ. वाज । ९ अ.इ. कुदरति । १० अ.इ. गति । ११ अ. राइसिंघ । इ. राइसिघ । १२ अ. सूत । १३ इ. सांवरत । १४ अ. संमभ्रम । इ. समभ्रम । १५ इ. अडै । १६ अ.इ. वधे । १७ अ.इ. कुंभा । १८ इ. थलाह । १९ अ.इ. मंगलांह । २० अ. विटंतो । इ. विढतो । २१ इ. ग्रहीया । २२ अ.इ. दुरित ।

'पूरौ' भिडंत वाहंत पांण।
भांणोत जुद्ध[1] जोवंत भांण॥
जगमाल जुडै हींगोळ[2] जाव[3]।
"रूपा"-हर[4] ओपम जम्मराव[5] ॥१३४॥

'देदौ'[6] भिडंत दाठक्क मल्ल।
'रांणावत' रूकै[7] रिम पथल्ल॥
'सेखौ'[8] भिडंत डूचियै[9] सेल।
दुज्जण-सलौत[10] खत्रवट्ट खेल॥१३५॥

'इंदौ'[11] भिडंत पूरौ अनिंद।
देखत देव विभ्रम[12] दुडिंद[13]॥
वरियांम[14] 'जसौ' वाहंत खग्ग।
सींधलां[15] राव[16] लेवा सरग्ग॥१३६॥

'भाखरौ' छरा असमर[17] भमाड[18]।
'पीपाडौ' पडियौ[19] खळां पाड[20]॥
घींघियौ[21] 'घीर' 'वीकौ' घसंत।
उतबंग ढळै[22] घड ऊकसंत[23] ॥१३७॥

सत्रवां[24] घडा घाए[25] सकूप।
'रूपसी' भिडै रोहडां रूप॥
जोधार 'गजैसी' जुद्ध वाहि[26]।
मैंगळां[27] गहिण[28] घातिया[29] माहि[30]।१३८।

१ अ.इ. जुधि। २ अ. हीगोल। ३ अ.इ. जाउ। ४ अ.इ. रूपांहर। ५ इ जमराउ। ६ इ. देदो। ७ अ.इ. रूके। ८ अ. सेखो। ९ अ. डूचीयै। इ. डुचियै। १० इ. दुजण सलोत। ११ अ. इंदौ। १२ अ. वीभ्रम। १३ अ. दुडिद। इ. दुडंत। १४ अ. वरीयांम। इ. वरयांम। १५ अ. सीधलां। १६ अ.इ. राउ। १७ अ असिमरि। इ. असिमर। १८ अ.इ. भमाडि। १९ अ.इ. पडीयौ। २० अ.इ. पाडि। २१ अ. घीघीयौ। इ. घांघीयौ। २२ अ.इ. ढले। २३ अ.इ. उकसंत। २४ अ. सांत्रवां। इ. सत्रुवां। २५ इ. धाऐ। २६ अ. ठाहि। इ. ठांहि। २७ अ.इ. मैगलां। २८ इ. गांहिण। २९ अ.इ. घातीया। ३० इ. मांहि।

घांधल्ल भिडै धजवडां धार ।
पैला पडंत[1] भड-पंख[2] पार ।।
खीची भिडंत खाडक्क[3] मल्ल ।
केवियां[4] कडा तूटै[5] कगल्ल[6] ।।१३९।।

पडिहार भिडै आगळी पाट ।
सांहणां घणी मांणक्क थाट ।।
आवध्धे दक्खै इद्धकार ।
पैंतीसे साखे परम्मार ।।१४०।।

दारण भिडंत लागंत आभ ।
लोहै[7] सुजस्स खाटंत लाभ ।।
मांगळिया[8] कळिह[9] कळिह मूळ ।
सांभळी गाज जांणै[10] सादूळ[11] ।।१४१।।

घांधल्ल[12] भिडंत वाहंत धक्क ।
सांमरै कांम संग्रांम[13] सक्क ।।
आसायच[14] धाए[15] आफळंत ।
आव्रत महारिण ऊकळंत[16] ।।१४२।।

पंचोळी[17] पैठा सार पूर ।
संग्रांम[18] सांमि[19] हुआ[20] हजूर ।।
भंडारी प्रिसणां करै[21] भंग ।
आवध्धां ओडै आप अंग ।।१४३।।

जोधार भिडै[22] सगळै[23] जवांन[24] ।
वरियांम[25] हजूरी पासवांन[26] ।।

---

१ अ.इ. पडंति । २ इ. पखै । ३ इ. खाडुकमाल । ४ अ.इ. केवीयां । ५ अ. त्रूटे । इ. त्रुटे । ६ अ.इ. कंगल । ७ इ. लोहे । ८ अ.इ. मांगलीया । ९ अ.इ. कलहि । १० इ. जांणे । ११ अ. सादुल । १२ अ. धाधं । इ. धांधां । १३ अ. सग्राम । १४ इ. आसाइजा । १५ इ. धाऐ । १६ अ.इ. उकलंत । १७ इ. पांचोली । १८ अ. संग्रामि । इ. संग्रांमि । १९ इ. सांम । २० अ.इ. हूआ । २१ अ. करे । २२ अ. भुडे । २३ अ.इ. सगले । २४ अ. जुवांण । इ. जूवांण । २५ अ. वरीयांम । इ. वरीयाम । २६ अ.इ. पासवांण ।

ओकट्ट कट्ट थिउ आहरट्ट ।
गाहट्ट थट्ट फौजां गरट्ट ॥१४४॥

तरवारि[1] तिमच्छां छणहणंत ।
झाळरी सद्द[2] किरि झणहणंत ॥
वाजै निहाव[3] घाए[4] विमोह ।
लोहार जांण कूटंत[5] लोह ॥१४५॥

रावतां रोस[6] वाहंत[7] रूक[8] ।
इक[9] इक्क घाव दुयं[10] दोय[11] टूक[12] ॥
घू-माळ झाळ कळकळै[13] धूप ।
ऊजळै[14] जुद्ध आव्रत[15] रूप[16] ॥१४६॥

मारका जांण जूटंत[17] मल्ल ।
गजथाट गहै भड गडो-थल्ल ॥
पींजर[19] पडंत पडियालगांह[20] ।
सिर[21] अडादडा पड[22] सुभट्टांह ॥१४७॥

तुडतांण[23] पांण काया तजंत ।
जै रांम रांम जीहा जपंत ॥
रोसाळ हुवा[24] विकराळ रीस ।
पडियालग[25] वाहै दांत पीस ॥१४८॥

बगतरै[26] आग उड्डंत बूंग[27] ।
दवहरण जांण[28] होळी दवूंग[29] ॥
घण झूंझा[30] बाथां पडै घोट ।
लोटीगण[31] खावै लोट-पोट ॥१४९॥

---

१ इ. तरवार । २ अ. सेद । ३ अ. मिहाव । ४ इ. घाऐ । ५ इ. कुटंत । ६ अ. रोसि । ७ अ. वाहंति । ८ इ. रूंक । ९ अ. एक एक । इ. ऐक ऐक । १० इ. दोय । ११ अ. दोइ । १२ इ. टुक । १३ अ.इ. कलकले । १४ अ.इ. उजले । १५ अ.इ. आवृत । १६ इ. रुप । १७ इ. जुटंत । १८ अ. गडोथल । १९ अ. पीजर । २० अ. पडीयालगांह । इ. पडीयालगांह । २१ अ. सिरि । २२ अ. पडि । २३ इ. तुंडताण । २४ अ. हूआ । इ. हुआ । २५ अ.इ. पडीयालग । २६ अ.इ. बगतरे । २७ अ. छूञ्ज । २८ इ. जांणे । २९ अ.इ. दवंग । ३० अ. भूंभा । इ. झुम्भा । ३१ इ. लीटीगण ।

दुध्धार पटा खांडा[1] दुवाढ।
जमदूत अवाहे[2] जम्म-दाढ॥
कटिया[3] लाखिक[4] लोटै[5] केकांण।
पाखरां सहित वढिया[6] पलांण॥१५०॥

असमरां[7] धार धड ऊतरेय[8]।
चित तांम सु दरसण[9] हर चडेय॥
वळकंति[10] खग्ग चहुंवै वळाव[11]।
सिहरेक जांण वीजां[12] सिळाव[13]॥१५१॥

कुंभाथळ फाटा कुंजरांह।
दीसति[14] खोहे[15] किरि डूंगरांह[16]॥
जूवटां जांहि घट अनै जिंद।
गै जूह[17] मुडै[18] खावै गुडंद॥१५२॥

सैखंड पिंड पळ खंड सीस।
छच्छोह लोह लागै[19] छत्तीस॥
घजवडां घाय[20] ढालां[21] ढहंत[22]।
दांताळ पडै ओलरै दंत॥१५३॥

कूंभाथळ मैंगल कडि[23] अडंत।
परबतां स्रंग[24] किरि खड-हुडंत[25]॥
है थाठ हीस[26] हीजर हमस्स।
धारां पहार माती धमस्स॥१५४॥

दुहुं[27] दळां माचि संग्रांम दुंद।
गयणाग गोम गाजै गिरंद[28]॥

१ अ. खाडा। २ अ. आवाहे। ३ अ. कटीया। इ. कढीया। ४ अ.इ. लाषीक। ५ अ. लोटे। ६ अ. पटीया। इ. वढीया। ७ इ. असरां। ८ अ.इ. उतरेय। ९ इ. सुंदरण। १० अ. वलकति। इ. वलवंति। ११ अ.इ. वलाउ। १२ इ. वीजल। १३ अ. सिलाउ। इ. सलाउ। १४ इ. दिसति। १५ इ. षोह षोह। १६ अ. डुंगरांह। १७ इ. जुह। १८ इ. गुडै। १९ आ. मागै। २० अ.इ. घाइ। २१ आ. ढीलां। २२ अ. टहंत। २३ अ.इ. कडी। २४ अ.इ. श्रंग। २५ अ.षड हुडत। २६ अ. हीक। इ. हींक। २७ इ. दुहू। २८ अ.इ. गिरद।

जडधार[1] तार जैकार किद्ध ।
भरि पत्त[2] रत्त[3] जोगणी पिद्ध[4] ॥१५५॥

झट्टकै[5] झाट ओझडौ[6] झौर ।
फेरी फुरंत फारक्क फौर ॥
तांडळां दळां डूंगळां[7] टूक[8] ।
रुंडळां रुळां सीकळां रूक ॥१५६॥

विप्पळां पळां आवळां[9] वाढ[10] ।
ग्रीधळां खळां साबळां[11] गाढ[12] ॥
साबळां हुळां मैंगळां[13] सल्ल ।
ढैचळां ढळां तूलांह[14] ढल्ल ॥१५७॥

खळ हळां चलै[15] रळतळां खाळ ।
वीजळां झळां बीमळां[16] व्राळ ॥
गूंछळां[17] गळां गूथळां गड्ड ।
सिंघळां[18] कळां[19] सांकळां सड्ड ॥१५८॥

जूम्रळां[20] भलां भूबळां जाळ[21] ।
डांखळां डळां[22] डीगळां डाळ[23] ॥
ऊछळां[24] लुळां[25] वाकुळां एम ।
*तोछळां जळां मछळां[26] तेम[27] ॥१५९॥

हैमरां[28] नरां खंडरां[29] हाड[30] ।
नीझरां झरां रुध्धिरां नाड ॥
जुध्धरां वरां सध्धरा[31] जूट[32] ।
करमरां करां पंजरां[33] कूट ॥१६०॥

---

१ इ. नडधार । २ अ.इ. पत्र । ३ अ. र `` । इ. रत्र । ४ इ. पीध । ५ अ.इ. झटके । ६ इ. ओझडै । ७ इ. डूंगला । ८ इ. टुक । ९ अ.इ. अवलां । १० अ. वाट । ११ अ.इ. सबलां । १२ अ. गाट । १३ अ. मेगलां । इ. मैंगलां । १४ अ.इ. अतुलां । १५ अ.इ. चले । १६ अ.इ. विमलां । १७ अ.इ. गूछलां । १८ अ.इ. सिघलां । १९ अ. कला । २० अ.इ. जुम्रलां । २१ इ. जोल । २२ अ. डलो । २३ अ.इ. डोल । २४ अ.इ. उछलां । २५ इ. तुलां । २६ अ. मेछलां । २७ अ.इ. जेम ।

*'अ' और 'इ' प्रतियों में अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है :—'मछलां जलां तोछलां जेम ।'

२८ अ. हैमरा । २९ अ. खंडरा । इ. खांडरा । ३० अ. डाह । ३१ अ. सधरा । ३२ अ. जुट । ३३ अ.इ. पींजरां ।

जाजरां सिरां कोपरां[1] जोर।
घर-हरां तुरां पाखरां घोर ॥
गिरवरां धरां अंबरां गाज[2]।
वज्जरां[3] छरां[4] निडुरां वाज[5] ॥१६१॥

पंजरां उरां खंजरां पेल।
सूंसरां[6] फरां बगतरां सेल ॥
हींजरां खरां हंखरां होड।
लोहरां भरां लल्लरां[7] लोड ॥१६२॥

सिंघुरां[8] गरां साथरां[9] सूर।
पै करां थरां संघरां पूर ॥
लोहडां लडां लडथड़ां लोट।
बेहडां घडां मर-गडां बोट ॥१६३॥

ऊभडां[10] भडां नीभडा[11] अंग[12]।
वीजडां[13] गडां वीछळां[14] वंग[15] ॥
जमजडां घडां समवडां जंग।
त्रिज्जडा[16] भडां तडफडां तंग[17] ॥१६४॥

अखडां नडां अप्पडां[18] अंत।
फड फडां जीव[19] जांणै फुरंत ॥
छक्कडां कडां खडखडां[20] छूट[21]।
तूंबडां[22] जिहीं[23] सिर[24] पडै तूट[25] ॥१६५॥

हींसलां[26] भलां अप्पलां[27] हूंत।
झंगळां सळां आधळां[28] कूंत[29] ॥

---

१ इ. कोपरा। २ अ.इ. गाजि। ३ अ. वभरा। ४ अ. निडरां। ५ अ.इ. वाजि। ६ अ. सुंसरां। इ. सुसरां। ७ अ. नहीं है। ८ अ. सिंघुरा। ९ अ. साथरा। १० आ.इ. उभडा। ११ आ.इ. नीजुड़ां। १२ अ.इ. अंगि। १३ अ.इ. विजडां। १४ इ. वोछडां। १५ अ.इ. बंगि। १६ अ.इ. त्रिजडां। १७ अ.इ. तूंग। १८ अ. अपडा। १९ अ. जीव जीव। २० अ. षडषडा। २१ अ.इ. छुटि। २२ अ.इ. तूबडां। २३ अ.इ. जिहो। २४ अ.इ. सिरि। २५ अ.इ. तूटि। २६ आ.इ. हीसलां। २७ इ. अपलों। २८ इ. आंधलां। २९ अ. कूत।

पत्थळां ढलां[1] मातळां पील।
डर-बळां डळां बरघळां डोल ॥१६६॥

खागळां[2] झलां ओखळां खोब।
घायलां[3] मलां घूमलां धोब ॥
रीधळां[4] रिलां ऊजळां[5] रत्त।
गडथळां भडां भडरवळां[6] गत्त ॥१६७॥

खखरमां[7] बक्खलां रत्ता खाळ।
पैलां-दळ[8] हूश्रो[9] प्रळै-काळ[10] ॥
दुज्जला[11] हमल्ला[12] होठ[13] डस्सि।
रिणमल्लां जोधा[14] वीर रस्सि ॥१६८॥

कवित्त

वीर रस्स वाधियो[15], वीर लागा ब्रहमंडे[16]।
रांमायण[17] भारत्थ, कना देवाइण[18] मंडे[19] ॥
ऐरापत्त[20] गजिंद्र[21], फौज गै जूह गडाडां।
तिकरि[22] मेर परबत्त, मज्झि कुळ[23] आठ पहाडां ॥
बंदूक मार गोळा[24] सरै[25], लागै[26] पार न लोहडे[27]।
रिण खेत खुरम सुरतांणरो[28], जटा - जूट कुंजर[29] पडै[30] ॥१॥

प्रळै काळ रण ताळ, वडौ इक[31] आव्रत[32] वूहौ।
सीसोदां[33] सैंफळां[34], सरिस[35] राठौडां हूश्रो ॥

---

१ अ. टला। २ अ. षागलों। ३ अ.इ. घाइलां। ४ अ.इ. रींघलां। ५ अ.इ. उजलां। इ. भड। ७ अ. षषरंभा। इ. षषलां। ८ अ. पेला दलां। इ. पैदलां। ९ हूवो। १० अ. पलैकाल। ११ इ. दुजलां। १२ इ. हमलां। १३ इ. होठि। १४ इ. जोधां। १५ अ.इ. वाधीयो। १६ अ. वृहमंडे। इ. वृह्मंडे। १७ अ.इ. रांमाइण। १८ इ. देवायण। १९ अ. मंडे। इ. मांडे। २० अ.इ. अैरापति। २१ इ. गजेंद्र। २२ इ. तिकिरि। २३ अ. कूल। २४ इ. गोलां। २५ अ.इ. सरे। २६ अ.इ. लागे। २७ अ.इ. लोहडे। २८ अ. रो। इ. रै। २९ अ. कूजर। ३० अ.इ. पडे। ३१ अ. एक। इ. ऐक। ३२ अ.इ. आव्रत। ३३ अ. सीसोदां। इ. सिसोदां। ३४ इ. सैंफलां। ३५ अ. सरसि। इ. सरस।

गोवरधन रट्ठवड़[1], पडै[2] पिंड लोहै[3] पूरै[4]।
कियै[5] कूंत[6] सावरत, दळां चतुरंगां चूरै[7] ॥
कीधौ विसेख[8] करतै कळह, तरसि तूंग 'चांदै' तणै।
वणियौक[9] 'चंद' संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सांमणै[10] ॥२॥

सुसग्रांम[11] गजसिंघ[12], सीस गयणंगण लग्गै।
वीज जिहीं[13] वळकतै, खाग ग्रहियै[14] ऊनग्गै[15] ॥
जेम 'खेम' 'जंतसी'[16], जोध विद्या खेलंतौ[17]।
गजथट्टां[18] गाहतौ, साह फौजां फुरळंतौ ॥
वरियांम[19] जणै[20] जण[21] वाजतौ[22], जोधपुरां[23] जोधह[24] पुरौ।
वजरंग हुऔ[25] हणमंत वरि, भलौ 'भीम' कल्यांणरौ[26] ॥३॥

छूरा[27] खग्ग ऊपाडि[28], सीह करि सांकळ[29] छूटा।
मुरडि खंभ मदमोख, जांण सूंडा-हळ जूटा[30] ॥
मारू सैंघें[31] मुहै[32], दुरति[33] घौळै दीहाडै[34]।
जग-जेठी जमदूत, 'मल्ल' जांणै[35] आखाडै ॥
रिणमल्ल कळोधर वीर रस, बज्र[36] जांण वज्रह[37] मिळी।
नरपाळ प्रिथीमल निहसिया[38], बे जमरांण[39] महाबळी ॥४॥

जै मथिया[40] के महण, मेर कळि मत्थण माझी।
हेट हेट अविणास[41], तेग प्रिथमी[42] पुड[43] प्राझी ॥
तात वैरि ततकाळ, लियौ[44] जिण चालुक लोहै[45]।
जिण 'मोहण' मारियौ[46], बिजड[47] बूंदी घड डोहै[48] ॥

---

१ इ. राठबड। २ अ.इ. पडे। ३ अ. लोहे। इ. लोहां। ४ अ.इ. पूरे। ५ अ.इ. कीयै। ६ अ.इ. कूत। ७ अ.इ. चूरे। ८ अ. बिसैष। ९ अ.इ. वणीयौक। १० इ. सांमणौ। ११ अ.इ. सुसंग्रांम। १२ अ. गजसीघ। १३ अ.इ. जिही। १४ अ.इ. ग्रहीयै। १५ अ. उनगै। इ. उनगे। १६ अ. जेतसी। १७ अ. खेलतौ। १८ अ. गजथटा। १९ अ.इ. वरीयांम। २० अ. जणौ। २१ अ. जणां। २२ अ. वाजतो। २३ इ. जोधपुरै। २४ अ.इ. जोधपुरौ। २५ अ. हूऔ। इ. हूवौ। २६ अ. कळरांणरौ। २७ अ.इ. छुरा। २८ अ.इ. उपाडि। २९ इ. संकल। ३० इ. जुटा। ३१ इ. सैंधे। ३२ अ.इ. मुहे। ३३ अ. दुरएति। ३४ अ.इ. दिहाडै। ३५ अ.इ. जांणे। ३६ अ. वजर। ३७ इ. वज्र। ३८ अ.इ. निहसीया। ३९ अ. जमरांणण। ४० अ.इ. मथीया। ४१ अ. अविणास। ४२ अ. प्रिथीमी। ४३ अ.इ. पुडि। ४४ अ.इ. लीयो। ४५ अ.इ. लोहे। ४६ अ.इ. मारीयो। ४७ अ. ब्रिजड। ४८ अ.इ. डोहे।

भांणरै भीच बळभद्र[१]रौ, ऊथालै[२] साबळ अणी।
नरपाळ प्रिथीमल पाडियौ[३], दांणव सिंघ[४] दरस्सणी ॥५॥

सीसोदां[५] कमधजां, जुद्ध मातौ[६] जोधारां।
घाइ घोर[७] अंधार, धमस धारां अंगारां॥
पक्खरिया[८] है पड़ै[९], ढहै[१०] ढेंचाळ[११] घेघंगर[१२]।
जीण-साल ऊजडै[१३] पडै[१४] सुहडा[१५] पंचाहर॥
हैरांन हुआ[१६] हिंदू[१७] तुरक, आया लोह न आडडै।
गजगाह 'भीम' 'गाजी' हुऔ[१८] व्याहक[१९] लाडी लाड[२०]डै ॥६॥

जिम अरजण[२१] जुध करन, जेम भीमह[२२] दूसासण।
जिम हणमंत जुध अमै, रांमचंदह जिम रांमण॥
भ्रिगुपति[२३] सहसा-रजण, जेम जुध संकर त्रिप्पुर।
जिम किसन्न[२४] सिसपाळ, जेम इंद्रह वैतासुर॥
लखमण[२५] इंद्रजित्तह कियौ[२६], साखी ससि सूरज बिबुध[२७]।
'सूर' उत कियौ[२८] जिम 'अमर' सुत, जुड 'गजपत्ती' 'भीम' जुध ॥७॥

चीतौडौ[३०] चालणी, अंग[३१] हूऔ[३२] आरिब्बह[३३]।
कुरव्व दळ[३४] अंतरै, जांण भीखम पितामह॥
आरुहता[३५] भगदंत, असि रागां चाडंतौ[३६]।
गै जूहां गोडतौ, खग्ग भूबळि झाडंतौ[३७]॥
भूडंड[३८] वधे व्रहमंड[३९] लग, धन्न पराक्रम सूरतन।
पाडियौ[४०] जोध आउट्ठमो, दौढौ[४१] रावत कुंभक्रन[४२] ॥८॥

---

१ इ. अ.इ. बलिभद्र। २ अ.इ. उथालै। ३ अ.इ. पाडीयौ। ४ अ. सीघ। ५ इ. सीसोदां। ६ इ. मातो। ७ इ. घोर। ८ अ.इ. पषरीया। ९ इ. पडे। १० अ. टहै। इ. ढहे। ११ अ. टैचाल। इ. ढैचाल। १२ अ. घेधंगर। इ. घेघीगर। १३ अ.इ. उजडे। १४ अ.इ. पडे। १५ अ. सीहडा। इ. सोहडां। १६ अ. हूआ। हुवा। १७ अ. हींदू। इ. हींदू। १८ अ इ हूऔ। १९ अ. बाहक। २० अ. लाडरै। २१ इ. अरजन। २२ इ. भीम। २३ अ. भिगुपति। इ. भिगुपति। २४ अ इ. क्रस्ण। २५ इ. लषमणा। २६ अ.इ. कीयो। २७ अ.इ. त्रिबूध। २८ अ.इ. कीयो। २९ इ. गजपति। ३० अ. चीत्तोडो। इ. चीत्रोडो। ३१ अ. अंगि। ३२ इ. हुवो। ३३ अरि बह। इ. पारिबह। ३४ इ. बदल। ३५ इ. आरूहता। ३६ अ. चांडतो। ३७ अ.इ. झाडितो। ३८ इ. भडंड। ३९ अ.इ. व्रहमंड। ४० अ.इ. पाडीयो। ४१ अ. दोटो। ४२ अ.इ. कूभक्रन।

वपि विहंड पळ खंड, तेग तिमछां[1] मुहि तुटो।
धारां मुहि धडछियौ[2], कुंभ[3] किरि काली फूटो॥
हाड हाड संधांण, हुआ[4] जूजुआ[5] जडाळे[6]।
ढळतौ[7] धड ऊपरा[8], सीस संकर रुद्राळे॥
तिण स्रोण[9] वदन कीयौ तिलक, सुकरा[10] स्रोण[11] बंबाळियौ[12]।
खूमांण तणै[13] रिण मांणसर, अछरि[14] हंस वरमाळियौ[15]॥९॥

मांनसिंघ[16] सीसोद, भिडे[17] रहियौ[18] भांणावत[19]।
गोकळ जीवत-संभ[20], विढे[21] हूओ वड रावत॥
सीसोदौ[22] 'कल्यांण', रहै रावत निभ्भैयण[23]।
हरीदास रट्ठवड[24], रहै 'कचरौ' रिण डोहण॥
हरिसिंघ[25] हेक भाटी रहै[26], दुल्लह[27] सुरतांणी धडा।
'भीमेण'[28] रहंतै 'अमर' रै, रहिया[29] रावत अेतडा[30]॥१०॥

भागौ[31] खांन पहाड, छाड[32] छळ[33] बळ[34] बूंदेलौ।
भागौ दरिया[35] खांन, राड[36] मूकै[37] रोहिल्लौ॥
गो[38] भज्जै[39] अबदूल[40], रिदै नारायण[41] हाडौ।
गो[42] 'सादूळ'[43] पमार, धणी[44] गायड[45] रौ गाडौ॥
खोजौ[46] 'गयार' साबर गयौ, खग संपेखे ऊनगा[47]।
सुरतांण खुग्म जुध[48] भाजतै, कायर[49] अेता[50] भाजगा[51]॥११॥

---

१ इ. तिमडां। २ अ इ. घडछीयो। ३ अ.इ. कूंभ। ४ अ. हूआ। ५ अ. जुजूआ। इ. जूजूआ। ६ अ.इ. जडाले। ७ अ. टलतो। ८ अ.इ. उपरा। ९ अ.इ. श्रोण। १० इ. सुकर। ११ अ. श्रोण। इ. श्रोण। १२ अ. बंबालीयो। १३ अ.इ. तणो। १४ इ. अछरे। १५ अ.इ. वरमालीयो। १६ अ. मांनसीघ। १७ अ.इ. भिडे। १८ अ.इ. रहीयो। १९ अ. भांणाउत। इ. भांणाऊत। २० अ. जीव-संभ। २१ अ. अ. विटे। २२ अ इ. सीसोदो। २३ अ.इ. निभैमण। २४ इ. राठवड। २५ अ. हरीसिघ। इ. हरीसिघ। २६ अ इ. रहे। २७ इ. दूलह। २८ अ. भीमेण। २९ अ.इ. रहीया। ३० अ.इ. एतडा। ३१ इ. भागो। ३२ अ.इ. छाडि। ३३ अ.इ. छलि। ३४ इ. बलि। ३५ अ.इ. दरीया। ३६ इ. राडि। ३७ अ.इ. मूके। ३८ अ.इ. गो। ३९ अ.इ. भजे। ४० इ. अबदुल। ४१ अ. नाराइण। ४२ अ. गो। ४३ इ. सादुल। ४४ अ.इ. घणी। ४५ अ.इ. घाइड। ४६ अ.इ. षोजो। ४७ अ. उतगा। इ. उनगा। ४८ अ.इ. जुधि। ४९ अ.इ. काइर। ५० अ. ईता। इ. एता। ५१ अ.इ. भजिगा।

खाळ रत्ता खळहळै[1], जांण वरसाळ नदी जळ।
गज तुरंग[2] गुड़िया[3], गुडै[4] भड हूवा[5] गूंछळ[6] ॥
रुंड[7] मुंड रोळिया[8], "भीम" पाडियौ[9] भुजाळौ।
भारथ कुर-खेत रै[10], हुग्रौ[11] जुध लंका वाळौ ॥

गजसिंघ[12] गिरंदां[13] कमधजां, माहि मेर माझी खडौ[14]।
पतसाह[15] दुहूं[16] गजगाह प्रब, हुइ नीमडियौ[17] हेकडौ[18] ॥१२॥

घाइ घांण उतरे[19], खांन सुरतांण निघट्टा।
राव[20] रांण हुइ रहच[21], मीर उमराव[22] ग्रहट्टा[23] ॥
खुरम गयौ नीसरै[24], "भीम" ग्रमरावत साटै।
केसूरा[25] लडि[26] मुग्रा[27], लूण[28] किरि मिळियौ[29] ग्राटै ॥

वीर हर तिलक वावाडिया[30], साइदांण[31] वज्जै[32] कटक।
गजसिंघ[33] कियौ[34] भिड गजदळां, रिण सँग्रांम राहाचरक ॥१३॥

नवै कोडि कतियांण[35], छपन कोडी चौमंडा[36]।
चौसट्ठी[37] जोगणी, बीस जैरै[38] भुज[39] डंडा[40] ॥
रगत पिद्ध बळि लिद्ध[41], जपै[42] जैकार सकत्ती।
कियौ[43] संकर[44] सिंगार[45], रुंडमाळा गळ[46] घत्ती ॥

कौतगिग[47] दीठ भासंकरह, वरे वडा वर ग्रच्छरां।
रट्ठौड[48] दीध रण चाचरहि, धूहड धवड पळच्चरां ॥१४॥

---

१ ग्र.इ. खलहले। २ ग्र तूरंग। ३ इ. गूडीया। ४ ग्र.इ. गुडे। ५ ग्र. हूग्रा। इ. हुग्रा। ६ ग्र.इ. गूछला। ७ ग्र इ. रूंड। ८ ग्र.इ. रोलीया। ९ ग्र.इ. पाडीयो। १० इ. रो। ११ ग्र.इ. हूग्रो। १२ इ. गजिसिंघ। १३ ग्र.इ. गिरिदां। १४ ग्र. खडो। १५ ग्र.इ. पतिसाह। १६ ग्र. दुहुं। इ. दुहु। १७ ग्र. नामडीयो। इ. नीभ-डीयो। १८ इ हेठडो। १९ ग्र.इ. उतरे। २० ग्र. रांउ। इ. राउ। २१ इ. रहव। २२ ग्र.इ उमरा। २३ ग्र.इ. ग्रावटा। २४ ग्र.इ. नीसरे। २५ ग्र.इ. सुरा। २६ ग्र. लडी। २७ ग्र.इ. मूग्रा। २८ ग्र. लुण। २९ ग्र.इ. मिलीयो। ३० ग्र. वावाडीया। इ. वावोडीया। ३१ ग्र इ. साइदांणा। ३२ ग्र.इ. वजे। ३३ ग्र. गजसिघ। ३४ ग्र.इ. कीयो। ३५ ग्र.इ. कतीयांण। ३६ ग्र. चांमडा। इ. चांमुडा। ३७ इ. चौसठ। ३८ इ. जे। ३९ ग्र. भू। इ. भूज। ४० ग्र. डंड। ४१ इ. लीध। ४२ ग्र.इ. जंपै। ४३ ग्र.इ. कीयो। ४४ ग्र. सकरं। ४५ ग्र. सिगार। इ. सिणगार। ४६ ग्र. गलि। ४७ इ. कौतग। ४८ इ. राठौड।

जरख रीछ[१] वड्डाख, सिवा सत लस्स मलक्का ।
साकणि डायणि[२] सकति, काळ भैरव काळक्का[३] ।।
भूत प्रेत[४] पेसाच[५], बहुत चेडा बहु वैतर[६] ।
वीर सिद्ध[७] वैताळ, निसाचर भूचर खेचर ।।

राठौड ज तै कीयौ रिणहु[८], गहण भुजाई भटकळहु[९] ।
पळ थाप[१०] कियौ[११] पळहारियां[१२], कळळ, बिंद कोळाहळहु[१३] ।।१५।।

एक[१४] गया भगवाट[१५], सांमि छळ मेल्हे[१६] कुळ छळ ।
हेक मुगति[१७] साजोत[१८], गया भेदे रवि मंडळ ।।
अरस हूंत[१९] ऊतरे[२०], एक[२१] वर अच्छर वरिया[२२] ।
एक[२३] पडै[२४] लोहडै[२५], लोह छक्का[२६] लालुरिया[२७] ।।

प्रिथीराज "भीम" गोकळ प्रचंड, अभंग पाड[२८] ऊपाडिया[२९] ।
जुध कमंध जोध-विद्या नमौ[३०], जोध मार जीवाडिया[३१] ।।१६।।

रांमायण रांमचंद, वहै[३२] कूंभक्रन रांमण ।
हणमंत खोडौ[३३] हुऔ[३४], मरे जोवियौ[३५] लखंमण[३६] ।।
अरजण[३७] भारथ कियौ[३८], लियण हथणापुर[३९] ढूकौ[४०] ।
जै दसरथ अहि-वन्न[४१], करन मारियौ[४२] घडूकौ[४३] ।।

गजसिंघ कियौ[४४] गजगाहणौ[४५] "भीम" मारि भागौ[४६] खुरम ।
कमधज्ज पखै जीतौ कमण, साजै नाद संग्रांम[४७] इम ।।१७।।

---

१ इ. रींछ । २ अ.इ. डाइण । ३ अ.इ. कालिका । ४ अ. पेत । ५ इ. पिसाच । ६ इ. बैतर । ७ अ. सिध । ८ अ.इ. रिण । ९ अ.इ. भाटकलह । १० अ.इ. थापि । ११ अ. कीयौ । १२ अ इ. पलहारीयां । १३ अ.इ. कौलाहल । १४ इ. ऐक । १५ अ इ. भंगवाट । १६ इ. मेले । १७ इ. मुगत । १८ इ. सासोज । १९ अ. हुंत । इ. हुत । २० अ इ. उतरे । २१ अ इ. ऐक । २२ अ.इ. वरीया । २३ इ. ऐक । २४ अ.इ. पडे । २५ अ.इ. लोहंडे । २६ अ. छकां । २७ अ.इ. लालुरीया । २८ अ.इ. पाडि । २९ अ.इ. उपाडीया । ३० अ. नमो । ३१ अ. जीवाडीया । इ. जीवाडीयो । ३२ अ.इ. वहे । ३३ अ.इ. खोडो । ३४ अ. हूंओ । इ. हूओ । ३५ अ.इ. जीवीयौ । ३६ अ.इ. लखमण । ३७ अ. अरजणि । ३८ अ.इ. कीयौ । ३९ अ. हथणांपुर । ४० अ. टुकौ । ४१ इ. वृंन । ४२ अ इ. मारीयो । ४३ अ. घडको । ४४ अ.इ. कोयौ । ४५ अ. गजगाहणो । इ. गहगाहणौ । ४६ अ. भागी । ४७ इ. संग्राम ।

जिसौ पत्थ भारत्थ, रांम जीतौ[1] रांमायण[2]।
जिसौ[3] लखण इंद्रजीत[4], भीम भग्गै[5] दुज्जोध्रण[6] ॥
जिसौ जोध बळि भद्र, पळंब दांणव संहारियै[7]।
जिसौ वीर नरसिंघ, हृरिणकस्सिप[8] वैहरियै[9] ॥
साभियै[10] तिपुर[11] संकर जिसौ, वांमण[12] चंपि पयाळ[13] बळि।
गजसिंघ[14] भीम गोडव्वियो[15], तिसौ दीठ रवि चक्र तळि ॥१८॥
पडे[16] ढाल[17] दिसि[18] एक[19], पडे[20] एक दिस पक्खर[21]।
पीलवांण इक[22] दिसा[23], पडे[24] परचंड बहादर ॥
हाड गूड[25] कप्पाळ, सेत दांतूसळ[26] सब्बळ।
चरम मांस झडि पडे[27], जांण धमळागिर ऊजळ[28] ॥
गजसिंघज गैमर गोडिया[29], तीह कलेवर[30] पंजरां।
सावज्ज सीह व्याया[31] सघण, रहि भोळै गिर कंदरां ॥१९॥
सोळह सै[32] संमंत्त[33], हूओ[34] जोगण-पुर चाळै।
सम्मै एकासियै[35] मास काती वडाळै[36] ॥
पूनम[37] थावर वार, सरद रित[38] है पालट्टी।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रघट्टी ॥
सुरतांण खुरम भागौ भिडे[39], चाडि[40] चकथां चक्कत्रै।
गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियौ[41], वहै भीम चीतौडवै[42] ॥२०॥

इति स्री महाराजाधिराज महाराजाजी स्री गजसिहजी रौ गुण रूपक बंध गाडण केसोदास[43] रौ[44] कह्यो संपूर्ण[45]

श्लोक

जाद्रिसं पुस्तकं द्रिष्ट्वा ताद्रिसं लिषितं मया,
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते।

---

१ अ. जीतो। इ. जितौ। २ अ. रांमाइण। ३ इ. जिसो। ४ इ. इंद्रजित। ५ अ.इ. भगै। ६ अ.इ. दुजोध्रणि। ७ अ.इ. संघरीयं। ८ अ. हिरिणकसप। इ. हिरण-कसप। ९ अ. वैहरीयै। इ. चैहरीयौ। १० अ.इ. साभीयै। ११ इ. त्रिपूर। १२ अ.इ. वामण। १३ अ. चंपि। इ. चांपि। १४ अ. गजसींघ। १५ अ. संगोडवीयौ। इ. संगोडीयौ। १६ अ. पडं। १७ अ. टाल। १८ अ. जिदिस। इ. जदिस। १९ इ. ऐक। २० अ. पडै। २१ अ. षषर। २२ अ.इ. एक। २३ इ. दीसा। २४ अ. पडै। २५ इ. गुड। २६ इ. दांतुसल। २७ अ. पडै। २८ अ.ई. उजल। २९ अ. गोडीया। इ. गोमरडीया। ३० इ. कलवर। ३१ इ. व्यायां। ३२ इ. सहं। ३३ इ. समंत। ३४ अ. हुअे। इ हूऐ। ३५ अ.इ. एकासीये। ३६ अ. वंडालै। ३७ इ. पुनम। ३८ इ. रि। ३९ इ. भिडै। ४० अ. चाडि। ४१ अ.इ. षटीयौ। ४२ इ. चीत्रोडवै। ४३ आ. कैसोदास। ४४ आ. रो। ४५ इ. प्रति में इस प्रकार है—२० इति श्री महाराजा श्री गजसिंघजी रौ गुण रूपक-बंध संपूर्ण। सिंघीजी श्री मेघराजजी पठनारथं ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यांणमस्तु ॥ १ ॥ श्री

परिशिष्ट १

जोधपुर राज-वंश के गीत

[राजस्थानी साहित्य की अपनी एक निजी विशेषता है—"डिंगळ गीत साहित्य"। यह गीत साहित्य राजस्थानी तथा गुजराती चारण कवियों की देन है। यही कारण है कि इन उपर्युक्त दोनों भाषाओं के साहित्य के अतिरिक्त अन्यत्र दूसरी भाषाओं के साहित्य में इनका नितान्त अभाव है। अत: इस प्रकार से गीत साहित्य का महत्व राजस्थानी साहित्य में और भी बढ जाता है।

यों तो इन गीतों ने साहित्य-रंगमंच के हर रंग को निखारा है, लेकिन साहित्य का ऐतिहासिक पक्ष इनका विशेष आभारी है क्योंकि इन गीतों ने इतिहास की उन महान् विभूतियों की स्मृति एवं प्रसंगों को अपने आंचल में आश्रय दे जीवित रखा है जिनको कि इतिहास तक ने भुला दिया था। स्यात् ही ऐसा कोई वीर योद्धा इन गीतों द्वारा प्रशंसित तथा सम्मानित होने से बचा हो। आज गीतों में उल्लेखित ये पवित्र स्मृतियां, राजस्थानी ऐतिहासिक साहित्य की अमूल्य निधि बन गई हैं। ये साहित्यिक आभूषणों के आभावान् रत्न हैं।

इन गीतों ने ऐतिहासिक साहित्य के सभी पक्षों को प्रदीप्त किया है। यथा-शौर्य, गांभीर्य, वदान्यता आदि। ये गीत ऐतिहासिक स्मृतियों को जीवित ही नहीं रखते बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं आदि की प्रामाणिक पुष्टि भी इन से होती है।

प्रस्तुत परिशिष्ट में प्रधान सम्पादक पूज्य श्री मुनि जिनविजय जी के निर्देशानुसार गज गुण रूपक बंध में उल्लेखित ऐतिहासिक व्यक्तियों तथा प्रसंगों से संबंधित सभी प्रकार के मुख्य गीतों को समाविष्ठ किया गया है —संपादक]

१ राव सीहौ

गीत छोटो सांणोर

सूधै मन जात हालियौ सीहौ,
"सेत" सुतन अंग बौहळौ साज[1] ।।
मूळ राज नाळेर मेलियौ,
ऊपर करी कनोजा आज ।।१।।

शब्दार्थ—हालियौ – चला। सुतन – पुत्र। बौहळौ – बहुत। साज – सामान। मेलियौ – भेजा।. ऊपर – मदद, सहायता। कनोजा – कनोज का, राठौड़।

---

*यह गीत ख्यातों के आधार पर रचा हुआ प्रतीत होता है। क्योंकि मूल राज तो राव-सीहा से बहुत पूर्व हो चुका था। [दे. डॉ. गौ. ही. ओझा कृत जोधपुर का इतिहास, प्रथम खंड पृ. १४६ से १५७]

पाठान्तर

१ ख. प्रति में सेत सुतन नीवां संग साज।

जात गोमती चालिया[1] जात्री,
सगपण छै आगई[2] सात ॥
जादव राय जोय आवां जद,
वळता करां सगपण री वात ॥२॥
पाटण "सीह" अचळ परणिया,
"मूला" तणै मांढहै माल ॥
भाटी तणो कमंध घट भांजे[3],
सत्र तणौ अरधंगौ साल[4] ॥३॥
कमधज[5] जादवै वैर कदोकौ,
ऊंचासरै उजाळै आय ॥
"सीह" मारियौ "लाखौ" सांमौ[6],
जग जाय[7] पण वात न जाय ॥४॥

(अज्ञात)

२ राव आसथांन*

गीत पंखाळो

पाली ऊपडै गा खेड पहली । गोयल खागां गाळै ॥
सीह तणा विरद सीहावत । आसथांन ऊजवाळै ॥१॥
ईडर संखोधार ऊपरा । आंण वधारै येती ।
नवकोटी मारवाड खगां नर । सीहै लीध सहेती ॥२॥

शब्दार्थ—जात – यात्रा । आगई – पहिले ही । जादव-राय – श्री कृष्ण । जोय – दर्शन करके । वळता – वापिस लौटते समय । सगपण – सम्बंध । तणै – के । मांढहै – कन्या पक्ष वालों का स्थान । कदोकौ – कभी का । ऊंचासरै – जन्म स्थान, निकास स्थान । सांमौं – यादवों की समा शाखा का व्यक्ति ।

गाळै – ध्वंस किए, नष्ट किये । विरद – विरुद । कीर्ति । सीहावत – सीहा का पुत्र । लीध – ली ।

---

*यह गीत राव सीहा के तीनों पुत्र आसथान, सोनंग और अज के संबंध में है जिन्होंने क्रमशः पृथक-पृथक खेड, ईडर और शंखोधार (द्वारका) पर अधिकार किया था ।

पाठान्तर

१ ख. आया । २ क. ही । ३ ख. भागे । ४ ख. सत्रां तणी यर घला साल । ५ ख. कमंद । ६ ख. जादवां । ख. सी हूं लाखो जांम साजीयौ । ८ ख. जुग जासी ।

आसथांन सोनंग अज ऊभा। भाई त्रहूं भुजाळा।
गोयल खागां भार गाळिया। कमधज वड करनाळा ॥३॥

(अज्ञात)

३ राव धूहड*

गीत पंखाळौ

सत्र पेठा बनै मनै सक संबळी। दियै वरस डंड अेकण दोय।
अण गंजियौ नह रहियौ अेकौ। कोट छत्र तो आगळ कोय ॥१॥

आसथांनोत कियां बळ असमर। घर "धूहड" करते धक चाळ।
पोह जैसांण सोनगर पहली। रसै पेस कस संभर साल ॥२॥

खळ अनमंद अखूटी खूटै। दीह रात सारसी डर।
कोटां दहूं विचै राव कमधज। नेसां पेस लियंत नर ॥३॥

(अज्ञात)

४ राव रायपाळ[1]

गीत पंखाळौ

थह कोट ऊथाप धरा थरसलै। रिम रेसां रेसे रिम-राह।
रायां-पाळ वसै रढ-रांभण। बाघां दहूँ विचै वाराह ॥१॥

आळ भयंकर कांन अळवै। टाळै नहीं कांइ कांटाळ।
गाळ नाहरां हियै खेडेचौ। आठूं पौर करै गिड आळ ॥२॥

शब्दार्थ—गाळिया – संहार कर दिये। वड – बड़ा। करनाळा – शूर, वीर।

मनै – मानते हैं। संक – भय, शंका। अण गंजियौ – अपराजित। आगळ – अगाडी। असमर – तलवार। धकचाळ – युद्ध। पोह – राजा। जैसांण – जैसलमेर। सोनगर – स्वर्णगिरि, जालोर। खळ – शत्रु। नेसां – घरों।

थह – स्थान। ऊथाप – उखाड कर। थरसलै – कंपायमान होती है। रिम – शत्रु। रेसां – पराजय। रेसे – पराजित करता है। रिम-राह – शत्रुओं के लिए राहू रूप। रढ-रांमण – रावण के समान हठ करने वाला। आळ – लड़ाई। कांटाळ – सिंह। गिड – सुअर।

---

*इस गीत में वर्णित इतिहास ख्यातों आदि में नहीं मिलता है।

[1]गीत में कवि ने रायपाल के शौर्य का वर्णन किया है।

कांठै रहै कंठीर कणणतौ । लोपै तकै नहीं तळ लीह ।
धूहड़ ऊत सदा दिन धोळै । ग्रेकल चरै वळै ग्रण-बीह ॥३॥

(ग्रज्ञात)

५ राव कनपाळ*

गीत पंखाळो

भारथीयै ध्रहै ग्रस झांफां भर । पोयण नाळी तेग परठै ।
कांन बहावै कांन नरेसु । सात्रव काळ गंजै·····गंठै ॥१॥
बोल विचाळव बांह बहेवळ । मंडप ग्रथ ग्रह कसप मथै ।
केवी पग स "सीह" कळोधर । नांम पराक्रम उनथ नथै ॥२॥
···सभोभ्रम "पाळ" ज नदण । जोर महा त्रस ग्रात्रस जांणै ।
"कांन" उभै ग्रह कालंग केवी । येह ग्ररी दळ खेबर ग्रांणै ॥३॥

(ग्रज्ञात)

६ राव जालणसी॰

गीत पालवणो

सलह सोहड सज ग्रस पलांणै । 'जालण' जोगंद्र कीध जुग्रांणै ।
ग्राप तणै पहला धन ग्रांणै । वांका ढोवा थाट विनांणै ॥१॥

शब्दार्थ— कंठीर – सिंह । कांठै – समीप । कणणतौ – गर्जना करता हुग्रा । दिन-धौळै – दिन दहाड़े । ग्रेकल – ग्रकेला रहने वाला सुग्रर । ग्रण बीह – निडर ।

भारथियै – युद्ध में ? ग्रस – घोड़ा । झांफां – छलांगों । केवी – शत्रु । कळोधर – वंशज । उनथ – जिसके नाथ नहीं । नथै – नाथ डालता है ।

सलह - सिलह – ग्रस्त्र शस्त्र, हथियार । सोहड – सुभट, योद्धा । ग्रस-ग्रश्व – घोड़ा । पलांणै – चारजामा कसते हैं । जोगंद्र – योगीन्द्र । कीध – किये । जुग्रांणै – योद्धाग्रों को । वांका – विकट, बांकुरा । ढोवा – ग्राक्रमण, युद्ध । थाट – सेना, दल । विनांणै –

---

*राव कनपाल का इतिहास बहुत ही संक्षेप में मिलता है ग्रतः इस गीत में वर्णित शौर्य का मेल ठीक नहीं बैठता है । वैसे गीत भी बहुत क्लिष्ठ है ।

॰राव जालणसी ने ऊमरकोट के सोढा रांणा गांगा को परास्त कर दण्ड स्वरूप में खिराज वसूल किया था । इसी प्रकार ग्रपने चाचा का प्रतिशोध लेने के निमित्त हाजी मलिक सराई को मारा डाला तथा थट्टा प्रांत को लूट कर मुल्तान के शासक से चौथ वसूल की थी । इन्होंने जैसलमेर के भाटियों तथा भीनमाल के सोलंकियों को भी युद्ध में परास्त करके कर वसूल किये थे । इन्हीं घटनाग्रों के संबंध में किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत की रचना की थी ।

'पाळ' कळोधर पक्खर पूरै। खैंगां गाहण खागां खूरै।
थाटां मुहड़ं थांणा थूरै। आरांणां माथै दळ ऊरै ॥२॥
पाखरियौ तेजी पीयावैं। 'कांन' समोभ्रम कांटा कावैं।
अणभंग आप सत्रां सर आवै। वाळै केवा ढोल वजावै ॥३॥
दूजड हथौ बडै दस देसां। नर नायक जळ चाढै नेसां।
प्रसण हूंत भरावै पेसां। अेम करै 'जालण' घर अेसां ॥४॥

(अज्ञात)

७ राव छाडौ*

गीत छोटौ सांणोर

तलवाळा हूंत महा दळ तांणै, ऊतरियौ ईसाळू आय।
जैसल-मेर तणा जालणवत, धडां उडाया सहर धकाय ॥१॥
तुंग प्रमांण 'छाडै' अजडां हथ, घाव माडेचां फौज धड़ी।
रावळ सर आयौ खड-रावह, प्रगट अखूणै भीड़ पड़ी ॥२॥

शब्दार्थ—पाळ – रायपाळ। कळोधर – वंशज। पक्खर – हाथी या घोड़े का झूल नुमा कवच। पूरै – सजाता है। खैंगां – घोड़ों। गाहण – ध्वंस या संहार करने को। खागां – तलवारों। खूरै – काटता है ? थाटां – दळों। मुहडं – अगाड़ी। थांणा – चौकी। थूरै – ध्वंस करता है। आरांणां – युद्धों, युद्ध स्थलों। माथै – ऊपर। ऊरै – झोंकता है। पाखरियै – कवचधारी घोड़ा या हाथी। तेजी – घोड़ा। पीडावै – पीड़ित होते हैं। कांन – कनपाल। समोभ्रम – पुत्र। कांटा – आततायी। कावै – मिटाता है, दूर करता है। अणभंग – वीर। सत्रां – शत्रुओं। सर – ऊपर। वाळै – प्रतिशोध लेता है। केवा – कष्ट, दुख। दूजड़हथौ – खड्ग धारी। जळ – आभा, कांति। नेसां – वंशों। प्रसणां – शत्रुओं। हूंत – से। भरावैं-पेसां – दण्ड या कर वसूल करता है। अेसां – आराम।

तुंग – सेना। अजडांहथ – खड्ग धारी। माडेचां – भाटियों। सर – ऊपर। अखूणै – जैसलमेर के गढ का नाम। भीड – संकट, कष्ट।

---

*राव छाडाजी ने जैसलमेर के तत्कालीन शासक को कहला भेजा कि अगर वे गढ के बाहर नगर बसायेंगे तो उनको खिराज देना होगा। जैसलमेर के नरेश ने इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। यह देख छाडाजी ने जैसलमेर पर चढाई कर दी, भाटी पराजित हो गये और अपनी कन्या का विवाह छाडाजी के साथ कर सुलह करली।

कमधज "छाडै" कोध कोपियै, माड-धरा ऊपर मच्छर।
"धहड" हरौ धूण खग धारां, सत्र लूटै वळीयौ समर ॥३॥
भाटी मांण पांण तज भागौ, पुळ लगौ आथांण पखै।
सुज जीतौ समहर नव-सहसै, दणियर ससहर साख दखै ॥४॥

(अज्ञात)

८ राव तीडौ*

गीत छोटौ सांणोर

सांमंत सभ्र सार संग्रांम सजूजा[1], मिळतै कमंध महा जुध माय[2]।
भीनमाळ[3] हूँत[4] ताडै[5] भागा, सोनंग रा दळ सबळ संभाय[6] ॥१॥
छोडावियौ[7] मच्छर "छाडावत"[8] कळह वार ग्रहे केवांण।
भिड़तै खेत भील-पुर भागौ, चौरंग सांवतसीह चहुवांण ॥२॥
गोतमपुर हुँता ग्रह गांजै, वळै प्रसण मुकावी बाळ।
खांडां बळ भांगै खेडेचै, रावत साचोरौ रण - ताळ ॥३॥
विच साचोर भीलपुर[9] वासी, "सीहा" हरै मनाडै संक।
मातंगपुर कटकां मरवाडै, धणियां ताय ढीलविया धंक[10] ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—माड-धरा – जैसलमेर राज्य। मच्छर-मत्सर – कोप, गुस्सा। वळियौ – लौटा। समर – युद्ध। मांण – मान, गर्व। पांण-पांण – प्राण-बळ। पुळ – जाकर। आथांण – आस्थान, घर, देश। पखै – पक्ष में। समहर – युद्ध। नव सहसौ – राठोड़। दणियर-दिनकर – सूर्य। ससहर – चंद्रमा। साख – साक्षी। दखै – कहते हैं।

सांमंत – सामंतसिंह चौहान, योद्धा। सार – तलवार। सजूजा – योद्धा। मच्छर – गर्व, अभिमान। वार – समय, वेला। केवांण – तलवार। चौरंग – युद्ध। वळै – फिर, और। प्रसण – शत्रु। मुकावी – छोडा कर। रण-ताळ – युद्धस्थल। हरै – वंशज। मनाडै – मना कर। संक – भय। आतंक। ढीलविया – शीथिल किये। धंक – इच्छा।

---

*यह गीत इतिहास की कसौटी पर ठीक नहीं उतरता है, क्योंकि सांवतसिंह शिलालेखों के अनुसार राव आसथान और धूहड़ का समकालीन था।

पाठान्तर

१ क. सांमतसी जसा सग्राम सजूडा। २ क. माहै। ३ ख. भीलमाल। ४ ख. सूं ५ ख. तीडो। ६. क. सोनंग राव लियौ वध साहै। ७ क. छांडाडियौ। ८ क. छांडावत। ९ क. कणेगर। १० क. मुह भाजवै गयौ मछरोक।

९ राव सलखौ*

गीत छोटो सांणोर

वाहरुवां हुग्रै न को वैराई, घण वहस केकांणां धुम्रा ।
पोह फुटंत समी दे पर भूय, "सलख" लिया ताय सलख हुम्रा ।।१।।
दुजडां-हत्थे ग्रहे दस देसां, घड़ सबळी माचंतां घाय ।
कमळा भेट करै केवीहर, कप लोयै ज कनौजै राय ।।२।।
करै न कळह क्रमै जाय केवी, करै जियां करमाळ कर ।
"छाडा" हरो कहै नह छांड़ आथ संग्रवो जका यर ।।३।।
ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिळै महादळ मच्छर मांण ।
तांणै वतलायौ "तीडावत", ढांणियां ताय ढीलवियै ढांण ।।४।।

(अज्ञात)

१० राव वीरम[b]

गीत

वटाऊ वात कहौ वीरमायण, जोखम दीह तणै जुडिया ।
पोरस वात सहु को पूछे, पैला केता रण पडिया ।।१ ।

शब्दार्थ—वाहरुवां – चोरों का पीछा करने वाला दळ, रक्षक । वैराई – शत्रु । पोह-फुटंत – प्रात:काल होते ही । समी – समय, पर । पर-भुय – पराजय । दुजडां-हत्थे – खड्गधारी । घड़ – सेना । कमळा – लक्ष्मी । केवीहर – शत्रु वंशज, शत्रु । कळह – युद्ध । क्रमै – चलते है । केवी – शत्रु । करमाळ – तलवार । कर – हाथ । हरो – वंशज । ऊगमण – पूर्व दिशा । उछजियै – उदय । वत – धन, द्रव्य, मवेशी ।

वटाऊ – राहगीर । वीरमायण – वीरम+अयण – वीरम देव का चरित्र या वृतान्त । जोखम – आपत्ति, कष्ट । दीह – दिन । जुड़िया – भिड़े, युद्ध किया । पोरस – पौरुष, बल, प्रराक्रम । सहु – सब । पैला – विपक्षी के, उस ओर के । रण पड़िया – वीर गति प्राप्त हुए ।

---

*यह राव तीडा का छोटा पुत्र था । भीनमाल के चौहान शासक को पराजित कर वहां का बहुत सा माल लूट कर अपने साथ ले आया । इसी घटना के संबंध में किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत की रचना की थी ।

[b]यह राव सलखा का छोटा पुत्र था । वि. सं. १४४० में जोहियो से युद्ध करते हुए जोहियावाटी में लखबेरे के पास वीर-गति को प्राप्त हुआ । उक्त गीत में इसकी वीर गति प्राप्त होने को किसी समकालीन कवि ने वर्णन किया है ।

जुडिया "वीर" तणी जुग जांणै, दाखव पंथी देख दुयै ।
काळा सूं विढतां के वेळा, हांमै के हथवाह हुयै ।।२।।
"वीरम" सूं "देपाळ" विढंतां, अणी चढै नह ऊहवियौ ।
राव राठौड़ तणैं रहंतै, राव जोइयां रिण रहियौ ।।३।।
विढण वखांण करै वाटाऊ, अतौ जांणू आवडियौ ।
सत्रां सहेत महेवा सांमी, पाडी माझी रण पडियौ ।।४।।
(दूदौ बारहठ)

११ राव चूंडौ*

गीत पंखाळौ

चंडराव प्रवाडौ सुर चवीजै, दीजै यम लीजै यम देस ।
पंडर वेस पाड गढ पैठौ, पडियां पैठौ पंडर वेस ।।१।।
वारां बेहूं समोभ्रम वीरम, कह केतां जम कहतां कहेस ।
वह दुरवेस दुरंग कीधौ वस, दीधौ सौ वेही दरवेस ।।२।।
चहुं चकै नव खंड चूंड-रज, परवाडांमल बहुं पर ।
मेछां कहा दुरग मेछां रौ, मारै लीधौ दीधौ मर ।।३।।
(दूदौ बारहठ)

शब्दार्थ—वीर – वीरमदेव । दाखय – कह । विढंतां – युद्ध में भिड़ने पर । ऊहवियौ – बचा, जिवत रहा । रहंतै – रहने पर । विढण – युद्ध । वखांण – प्रशंसा । वाटाऊ – राहगीर। आवडियौ – (?) । महेवा – बाहृडमेर के आस पास का भू प्रदेश जिसे आजकल मालानी भी कहते हैं । पाडी – मार कर । माझी – मुखिया, प्रधान । पडियौ – वीरगति को प्राप्त हुआ ।

चंड-राव – राव चूंडा । प्रवाडौ – युद्ध । सुर – देवता । चवीजै – कहा जाता है, वर्णन किया जाता है । पंडर-वेस – बादशाह, यवन । पैठौ – प्रविष्ट हुआ । पडियां – वीर गति प्राप्त होने पर । वारां – समय । बेहूं – दोनो । समोभ्रम – पुत्र । दुरवेस – बादशाह, यवन । कीधौ – किया । दीधौ – दिया । चहूंचकै – चारों दिशाओं में । चूंडरज – राव चूंडा । परवाडां-मल – योद्धा । मेछां – मुसलमानों । लीधौ – लिया ।

---

*राव चूंडा ने नागौर के यवन शासक से युद्ध कर के नागौर को अपने अधिकार में कर लिया था परन्तु कुछ समय के बाद पूंगल के भाटियों और मुलतान के सेनानायक सलीम की सहायता प्राप्त कर यवन शासक ने पुनः राव चूंडा पर आक्रमण कर दिया। यहां पर पुंगल के भाटियों के धोखे से राव चूंडा युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुआ । कवि ने उक्त घटना के संबंध में उपर्युक्त गीत की रचना की। यह घटना वि. सं. १४८० की है ।

१२ राव रिडमल*

गीत छोटो सांणोर १

अै पूरब वात सांभळी अेही, रण चूकै अत दिन "रयण" ।
सूतं तै काढी जै सुजडी, जागियां काढै घणा जण ॥१॥

अत दिन चूक रचै मेवाडां, यम हल हुअै हुअै ऊखेळ ।
रिडमल तेथ कियौ रायां-गुर, मन भुजबळां कटारी मेळ ॥२॥

चूक हुआं के नर चीतारै, वाहै कई पडंतां वाढ ।
पौढियां "रयण" ज्यूं प्रतमाळी, केथी कोय न सकियौ काढ ॥३॥

अै अखियात "सलख" हर ओपम, अगै न कोधी सुर असुर ।
कर सूतै मेलिया कटारी, अणी ज फूटै प्रसण उर ॥४॥

ऊससै आभ लगां आवंतां, राव तणौ रज देख रथ ।
रैवंत रोक न रहियौ रांणौ, पुळिया विमुहा पाट पत ॥५॥

(चांनण खिडियौ)

शब्दार्थ—सांभळी – सुनी । अेही – ऐसी । रयण – राव रिणमल । सुजडी – कटारी । चूक – धोखा, षडयंत्र । ऊखेळ – युद्ध । तेथ – वहां । रायां-गुर – महाराजा । चीतारै – स्मरण करते हैं । वाहै – प्रहार करते है । वाढ – धारदार शस्त्र । प्रतमाळी – कटारी । केथी – कहीं पर । अखियात – अद्भुत । ओपम – उपमा शोभा । कीधी – की । सुर – देवता, हिंदू । असुर – यवन, राक्षस । प्रसण – शत्रु । ऊससै – जोश में आकर । आभ – आकाश । रज – पराक्रम, शौर्य । रैवत – घोड़ा । रांणौ – सूर्य । पुळिया – चले गये । विमुहा – उलटे । पाट-पत – राजा ।

---

*राव रणमल को मारने हेतु वि. सं. १४९५ की कातिक वदि ३० की रात्रि में महाराणा कुंभा के व्यक्ति उसके शयनागार में पहुचे । उस समय वह घोर निद्रा में था । उसे निद्रा में सोते हुए को उन्होंने पलंग से बाध दिया और बंधे हुए पर शस्त्र प्रहार करने लगे । वीर रणमल भी जिस पलंग से बंधा हुआ था उसको लेकर खड़ा हो गया और विपक्षियों पर अपनी कटार से प्रहार करने लगा । इस मारकाट के अंदर वीर रणमल ने अठारह व्यक्तियों को कटार से मार कर स्वयं भी वीर गति को प्राप्त हुआ ।

गीत संख्या (२) में आये हुए व्यक्तियों की ठीक संख्या (१८) दी गई है ।

गीत छोटो सांणोर २

मोकाळिया "कूंभ रांण" "राव" मारण, अठारै अमराव अचूक ।
लोह रडमाल अठारै लागां, भांज अठारै कीधा भूक ॥१॥

"चूंडा" सुतन लोहड़ां चवतां, यम उठियौ ढोलियौ उपाड ।
पिंड नव दूण घाव पूरविया, प्रसण नव दूण दिया पछाड ॥२॥

कमधज कळह अकाळ कोपियौ, सूतां सरस वजावै सार ।
"वीरम" हरै अेकलै वडतै, चवदै अनै मारिया च्यार ॥३॥

घावां घाव आहाडां घायै, विजडां बाढ चाढ धज-बंध ।
लेगौ सुरग वरै रंभ लारां, कमधज सारां करे कबंधे ॥४॥

रहसी अमर घणा जुग रिडमल, अै वातां जग सिर अणपार ।
अंत दीह घावां रिण अरि हण, लीधां गयौ आपरी लार ॥५॥

(अमरौ बारहठ)

गीत छोटो सांणोर ३*

सिर संपत संग्रहै निहसै नित प्रत, करिमर नीप सहीयै करि ।
रैवंत पूठि वसै ज इ रणमल, वास म गिण तई वैर हरि ॥१॥

शब्दार्थ—मोकळिया – भेजे । लोह – शस्त्र प्रहार । कीधा – किये । भूक – चूर चूर, नाश । लोहड़ां – शस्त्र प्रहारों । चवतां – श्रवते हुए । यम – इस प्रकार । पूरविया – पूरे हुए । प्रसण – शत्रु । सार – कटार । वडतै – कटने पर । आहाड़ां – सीसोदियों । घायै – मार कर । विजडां – कटारियां । बाढ – शस्त्र की धार । धजबंध – वीर । रंभ – अप्सरा । लारां – पीछे । कबंध – बिना सिर का धड़ राठौड । अण-पार – असीम । दीह – दिवस । लार – पीछे ।

करिमरि – तलवार । नीप – (?) । साहीयै – धारण किए हुए । करि – हाथ में । रैवंत – घोडा । पूठि – पीठ पर । वैर-हरि – शत्रु वंशज ।

---

*इस गीत में राव रणमल के शौर्य का वर्णन है ।

कीजं "रयण" तणौं नित कुळ ऋत, वैरां ऊपरो वत्र ग्रवत्र ।
जई अहोनिस दुहिला जंगम, सुहिला तइयां म गिणि सत्र ।।२।।

"सळखा" हरो समझौ सवदी, सेना ऊलि मेले सधर ।
घाए तइ ऊपाडै ग्ररि घर, घोडै जइयां करै घर ।।३।।

सुजड-हथा "चांड राउ" समोभ्रम, विधि वीरातन वैर विधि ।
रोपै जई पवंगि ग्रासण रिध, रिप तई भंजे राज रिधि ।।४।।

(ग्रज्ञात)

१३ राव जोधौ*

गीत खुडद सांणोर

वह रांणा राव विवाद विवरजित,"जोध"कळह कथ जिका जुइ ।
वैरायतां तो वाळी भगवट, हव जांणें कुळवाट हुइ ।।१।।

मारग "वीरम" हर कुळ मंडण, मुडिया तो सूं नृभै-मण ।
मुडियां तणौ हमैं जळ मांझळ, परियां वट जांणै प्रसण ।।२।।

शब्दार्थ—रयण – रणमल । दुहिला – कठिन, कष्टमय । जंगम – घोडा । सुहिला – सुळभ, सुखप्रद । सत्र – शत्रु । सुजड हथा – खड्गधारी । समोभ्रम – पुत्र । पवंगि – घोड़े पर । रिध – ग्रटल । रिधि – ऋद्धि ।

विवाद – वाक्युद्ध, झगड़ा । विवरजित – निषिद्ध मना । कळह – युद्ध । कथ – कथा, वार्ता । जिका – वह । जुइ – पृथक, भिन्न । वैरायतां – शत्रुग्रों । तो-वाली – तेरी । भगवट – भगना क्रिया । हव – ग्रब । जांणे – मानो । कुळवाट – वंश का मार्ग । नृभै-यण – निर्भय मन वाले । परियां – पूर्वज । वट – मार्ग । प्रसण – शत्रु ।

---

*राव रणमल के चित्तौड़ में सीसोदियों द्वारा धोखे से मारे जाने के कारण राव जोधा को मेवाड छोड़ कर मारवाड़ की ग्रोर भागना पड़ा । राजपूत वीरों के लिये पलायन ग्रशुभ तथा कायरता की निशानी समझा जाता है । इस पलायन का राव जोधा के हृदय में बड़ा क्षोभ बना रहता था । इस क्षोभ को मिटाने हेतु किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत रच कर राव जोधा को सुनाया था ।

इसी भाव का गीत महाराणा सांगा को भी बारहठ जमणाजी ने सुनाया था ।

(देखो महाराणा यश प्रकाश पृ॰ ७०)

सुजड वहंतां "रयण" सभोभ्रम, अंतर किम दीसै अकळ ।
कुळ छळ थायां हमै केवियां, छांडेवा संग्रांम छळ ।।३।।

प्रब प्रब "जोध" प्रसण पडियालग, निहसंतां रण भड निवड ।
लगै जकां बापीकी लाधी, भू भांजेवा प्रसण भड ।।४।।

जोयौ आज तूझ वड जोधा, धीर अखाडै खडग धर ।
न रहियौ सत्र हर अण नमियौ, नमिया चहरणहार नर ।।५।।

(महम्मदजी बारहठ)

गीत पंखाळो २*

गह रांणा कसूमन दाखै गढो, थाट "कूंभक्रन" वाट थया ।
"जोधा" तणै सांमहां जाता, गाडां भय हाथियां गया ।।१।।

सांमौ "जोध" तणै सै जूतै, साभी सलह सजतै सैण ।
थय कुंजर विमुहां कुंभाथळ, कागमुहा दीठां "कूंभेण" ।।२।।

धर खेहां छाई "धुहडियै", खेडैचे अस खेडिया ।
नर हैमर नागंद्र नरेसुर गैमर गाडा देख गया ।।३।।

(गेहो खिडियौ)

शब्दार्थ—सुजड – कटार, तलवार । रयण – राव रणमल । सभोभ्रम – पुत्र । अकळ – वीर । छळ – कर्त्तव्य । हमै – अब । केवियां – शत्रुओं । छळ – कीर्ति, मर्यादा । प्रब – पर्व, अवसर, युद्ध । पडियालग – तलवार । निहसंतां – संहार करते हुए । निवड – जबरदस्त । बापीकी – बपौती । लाधी – प्राप्त हुई । धीर – धैर्यवान । अखाडै – युद्ध, युद्धस्थल । सत्र – शत्रु । हर – वंशज । अणनमियौ – बिना झुका हुआ । चहरणहार – आलोचना करने वाला, निंदा करने वाला ।

दाखै – कहता है । थाट – सेना । सांभौ – सम्मुख । सलह – सिलह । कागमुहा – शकट, गाडा । धूहडियै – राव धूहड़ का वंशज. राव जोधा । हैमर – घोडा । नागंद्र – नागदहा । गैमर – हाथी ।

---

*ख्यातों के अनुसार राव जोधा ने मेवाड़ पर आक्रमण करने हेतु एक बड़ी सेना तैयार कर ली थी । परन्तु उतने घोड़े तैयार नहीं हो सके जितनों की आवश्यकता थी । अत: राव जोधा अपने सिपाहियों को गाडियों में बैठा कर ले गया । महाराणा के पास काफी बड़ी सेना थी जिसमें हाथी-घोड़े भी थे, परन्तु राव जोधा की गाड़ियों में भरे सिपाहियों की सेना देख कर महाराणा के योद्धा घबरा गये और राव जोधा से संधि करली । उक्त घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत गेहा कवि ने रचा था ।

१४ राव सूजौ*

गीत प्रहास सांणोर

तुरक चालियौ वासदे विध मरणवा त्रियां, देस छळ जाग रिडमाल दूजा ।
भाईयां सरसी वार "सातल" भणै, समर भर झाल राठौड "सूजा" ॥१॥

सुर नरां साह अवगाह सारां सरै, घाततौ घांण घमसांण घेरै ।
रोद दळ झाडतौ पाड़तौ खाग रिम, डांण भर गयौ सुरतांण डेरै ॥२॥

सारसा "दूद" सत्रसाल परगह सहत, जोध रा जोध अणपाल जुडिया ।
सूर पड ऊपडै सरै ग्रांन म सगत, मुगळां थाट दहवाट मुड़िया ॥३॥

(पातौ बारहठ)

शब्दार्थ—वासदे – अग्नि आग । विध – प्रकार, तरह । त्रियां – वहां । छळ – लिए । दूजा – द्वितीय, वंशज । सरसी – समान । वार – वेला, समय । समर – युद्ध । भर – भार, उत्तरदायित्व । अवगाह – युद्ध । घाततौ – डालता हुआ । घांण – संहार । घमसांण – सेना । रोद – यवन । झाडतौ – काटता हुआ । पाड़तौ – मारता हुआ । रिम – शत्रु । डांण – कूदना, छलांग । सारसा – समान । दूद – राव दूदा राठौड़ । परगह – परिग्रह । जोध – राव जोधा । जोध – पुत्र । अणपाल – निशंक, निर्भय । जुड़िया – भिड़े । थाट – सेना । दहवाट – दशों दिशाओं में, तितर-बितर ।

---

*राव सातल का छोटा भाई वरसिंह मेड़ते में शासक था । उसने वहां से चढ़ कर सांभर को लूटा । इस पर अजमेर का तत्कालीन सूबेदार मलिक युसुफ (मल्लु खां) सिरियां खां और मीर घडूला को साथ लेकर ससैन्य मेड़ते पर चढ आया । तब वरसिंह और दूदा दोनों भाग कर जोधपुर में राव सातल के पास पहुंचे । पीछे-पीछे यवन सेना भी आई और जोधपुर राज्य में लूट खसोट करती हुई पीपाड़ से तीजणियों को पकड़ कर ले गई । राव सातल भी चुपचाप बैठा न रहा । वरसिंह दूदा सूजा वरजांग आदि को साथ लेकर ससैन्य कोसाणा में पहुंच कर रात्रि में यवन सेना पर आक्रमण बोल दिया । दूदा ने सिरियाखां का हाथी छीन लिया और राव सातल ने बड़ी वीरता से युद्ध कर मीर घडूला को मार डाला तथा तीजणियों को छुडवा लिया । यवन सेना भाग छूटी ।

इस युद्ध में गीत नायक वीर सूजा भी अपने भाई के साथ था और युद्ध में बड़ी बहादुरी दिखाई जैसा की गीत में वर्णन है ।

(यह घटना वि. सं. १५४७, ४८ की है)

१५ कुंवर वाघौ*

गीत पंखाळौ १

निस महल नह पौढै प्रसरा निचिंता, विमरे गिरे बसाव किया ।
वंस तणौ उंडाव वीडरै, सीसोदा बकरा संकिया ॥१॥
सांकै राव सकौ सीरोही, पौहरा कुंभळमेर पडै ।
सत्र तोसूं समहर "सूजावत", चाळ-बंध नह कोय चढै ॥२॥
'जोधा' हरै खेडिया जंगम, यर खग भाल लियै न उसास ।
आहडा पहाडां चढ ओद्रकै, विमरे गिरे मांडिया वास ॥३॥

(मेपौ-बारहठ)

गीत छोटौ साणोर[1] २

नर दूजां दसो नयण नरखेवा, लोपै अन न मांडै लाग ।
सुजड़ां तरणै सूंस सूजावत, वसुधा जु तै करावी "वाग" ॥१॥
ब्रां सी है अन पोहां दिस "वाघा" दीठा दयंता लागै दोस ।
खांडा तरणै वसुधा बळ खंडां, कमधज जतै करावी कोस ॥२॥
सूरजमल संभ्रम नव-सहसा, रावां बियां अकूप रहै ।
घजवड तणै देव चै धरती, "वाधा" सूं पाधरी वहै ॥३॥

शब्दार्थ—प्रसरा – शत्रु । निचिंता – निश्चित । विमरै – विवरे, गुफाएं । गिरै – पहाड़ों में । वसाव – निवास । सत्र-शत्रु । समहर – युद्ध । सूजावत – सूजा का पुत्र, कुमार-वाघा । चाळ-बंध – युद्ध । खेडिया – चलाये । जंगम – घोड़े । यर-अरि – शत्रु । उसास – श्वास । आहडा – सीसोदिया वंश का । ओद्रकै – भय भीत होते हैं । मांडिया – बनाये । वास – निवास स्थान ।

सुजड़ां – कटारों, शस्त्रों । सूंस – शपथ । अन – अन्य । पोहां – राजाओं । वसुधा – पृथ्वी । संभ्रम – पुत्र । नव-सहसा – राठौड़ । बियां – दूसरों ।

---

*यह राव सूजा का ज्येष्ठ कुमार था । वि. सं. १५६७ में महाराणा सांगा ने मारवाड़ में सोजत पर अधिकार करने के लिए सेना भेजी थी, उस समय कुमार वाघा ने अपने पिता की आज्ञा से महाराणा सांगा की सेना का मुकाबिला किया और उन्हें पराजित कर भगा दिया । उक्त घटना की ओर संकेत करते हुए कवि ने वाघा के शौर्य का वर्णन उपर्युक्त गीत में किया है ।

[1]इस गीत में कुमार वाघा के शौर्य का ही वर्णन है ।

विलसणहार वींद तूं वाघा, मन तो सरस "सलख" हर मोड़ ।
रैणा तै न ··· ··· में राखी, रावां ग्रन हूंता राठोड़ ॥४॥
जुडिया वीर तणी पूछै जग, दाख न पंथी वात दुई ।
काळै मरतै सु केवीलां, हीमत की हतवाह हुई ॥५॥

१६ राव गांगो*

गीत छोटी सांणोर

घड हसत म जोड म बंघ वीर घंट, ढुळवायै म ··· ढाल ।
मांडू कटक नहीं मेवाडा, मंडोवर ओ ग्रै रिडमाल ॥१॥
"रतना" म कर सनाह सिंधुरां, डांफर मतो कर ग्राडंबर ।
बीहै तिकै जिकै घर बीजा, रांणां ग्रै राठोड हर ॥२॥

शब्दार्थ—विलसण-हार – उपभोग करने वाला । वींद – दुल्हा, पति । सलख हर – राव सलखा का वंशज । रैणा – पृथ्वी । दाख – कह । काळै – वीर

घड-घटा – सेना । हस्त – हस्ती, हाथी । जोड – तैयार कर । सनाह – कवच, पाखर । सिंधुरां – हाथियों । डांफर – बाह्य ठाट-बाट, तैयारी । ग्राडंबर – युद्ध घोषणा । बीहैं – डरते हैं । हर – वंशज ।

---

*राव गांगा की सेना ने महाराणा रतनसिंह की सेना को परास्त कर दिया था । उक्त घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत है । घटना का वृत्तांत इस प्रकार है ।

वीरमदेव राव गांगा का ज्येष्ठ भ्राता था । ग्रत: राज्य का ग्रधिकारी था परन्तु कारणवश सामंतों ने गांगा का पक्ष लिया ग्रौर उसे जोधपुर के सिंहासन पर बैठा दिया । इस पर वीरम के पक्ष वालों ने वीरम का ग्रधिकार सोजत पर करवा दिया, ग्रत: वीरम सोजत का पृथक शासक बन गया । वि. सं. १५८७ में होली के ग्रवसर पर जिस समय घोलेराव की चौकी के सरदारगण ग्रपनी-ग्रपनी जागीर के गांवों में गये हुए थे तब वीरम के पक्ष वालों ने ग्राक्रमण कर उस चौकी को लूट लिया । इसका संदेश प्राप्त होते ही वि. सं. १५८८ में स्वयं राव गांगा ने राजकुमार मालदेव को साथ लेकर सोजत पर ग्राक्रमण बोल दिया ग्रौर वीरम को सोजत से निकाल दिया । विवश होकर वीरम ने तत्कालीन महाराणा रतनसिंह से सहायतार्थ प्रार्थना की जो रिश्ते में वीरम के साले लगते थे । महाराणा ने वीरम की सहायतार्थ बड़ी सेना भेजी । इधर राव गांगा ने भी मुकाबले में बड़ी सेना भेजी । दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुग्रा । महाराणा की सेना पराजित हुई । राव गांगा ने इस पर मेवाड़ वालों से गोडवाड़ का प्रदेश भी छीन लिया ।

भिड़ते नयर "रयणतै" भिळिया, आहव अै आगा असुर ।
अै बंगाळ नहीं बांणालख, अै जोधा औ जोधपुर ॥३॥
"सांगा" "गांगा" राव सरीखौ, रांणा अमळी वात म रोड़ ।
लेय सजकै लेहरी लहंतौ, लेसी अठै न बीजी लोड़ ॥४॥
गढ जोधपुर गरजियौ 'गांगौ', 'वाघ' समोभ्रम वाघ वर ।
सांमू हुई समझे सीसोदौ, घाटौ लांगै गयो घर ॥५॥

(तेजसी बारहठ)

१७ राव मालदेव*

गीत प्रहास सांणोर १

मुडै माळवी आज चीतौड मचकोडतै, छात री छांह रिण-थंभ छायौ ।
ढेलडी ढगमगी कोट गढ धूजिया, आगरौ बियै औ "माल" आयौ ॥१॥
हैमरां गैमरां हुअै हीसा-रवण, चासटू ऊपरा "माल" चडियौ ।
गौड बंगाळ खुरसांण दळ गंजणौ, पालटै कोट भग-वाट पडियौ ॥२॥
हसम है थट होय हेकटा हालिया, धोम अंधार मिळ वाजतै घाव ।
सांकिया देस सुरतांण सह सांकिया, रीत अण आवतां मारुवै-राव ॥३॥
धार उजैण चांपवतां धूणिया, सकज "गांगा" तणौ दीह साजै ।
हैम सूं धरा हैकंप ऊली हुई, भोम पूरब गया गयालेर भाजै ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—आख – युद्ध । बंगाळ – यवन । बांणालख – मालवा प्रदेश । जोधा – राव जोधा के वंशज । सरीखौ – समान, सदृश । अवळी – बांकुरी, विकट । लेसी – लेगा । लोड़ – लूट कर । समोभ्रम – पुत्र । घाटौ – अरावली पर्वत । लांघै – उलंघन कर के ।

मचकोडतै – भयभीत होने पर, दबने पर । छात – छत्र । छांह – छाया । रिण-थंभ – रण-थंभोर । छायौ – आच्छादित हुआ । ढेलडी – दिल्ली । ढगमगी – विचलित हुई । बियै – डरता है । हैमरां-हयवरां – घोड़ों । गैमरां-गजवरां – हाथियों । हीसा-रवण – हिनहिनाहट की ध्वनि । गंजणौ – पराजित करने वाला । भगवाट – भगदड़ । हसम – सेना । हैथाट – अश्व दल । हेकटा – एकत्रित । हालिया – चले । सांकिया – भयभीत हुए । मारुवै-राव – मारवाड़ के राजा । दीह – दिवस । साजै – कुशल । हैम – हिमाचल पर्वत, या सुमेरु पर्वत । हेकंप – भयभीत । ऊली – इस ओर की ।

---

*गीत में राव मालदेव के शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है ।

गीत छोटो सांणोर २*

कसा जतन कोट करौ पमंग काय पाखरौ, ढोव कर हिंदवा-कटक ढूका ।
सुणै सुरतांण यम कहै साहजादियां, "माल" भय पूगडे पीर मूका ।।१।।
पुणै जोगण-पुरी गुजरी पारखौ, गूडर गोखै चढी गयण छायौ ।
बीबियां आंचळे छोडिया बाळकै, ईख सुरतांण गढ "माल" आयौ ।।२।।
आवियौ 'गंग' ऊत कहै घरण ऊसरां, इसी दीवांण गहवात आई ।
पौढ पैसे बचा दूध पीवै नहीं, पीड पहु ओहरै बोल पाई ।।३।।
जळवटी थळवटी "माल" जीता जुडै, मेंछ यर मारिया देस मांही ।
गोरियां डाभरू गात गाळिया गळण, नीसरै कांहां लै ठौड नांही ।।४।।

गीत छोटो सांणोर ३*

त्रण वरसां सरीस विखौ तुरकांणां, रहचै थांणा रुद्र···रज ।
"माले" वळै आपरा महलां, गांगावत बांधिया गज ।।१।।
करतै कळह इळाचै कारण, खेसे असुरां जोस खरे ।
असपत प्रगट आपांणै······, हाथी बाधा जोध हरे ।।२।।

शब्दार्थ—कसा – कैसे । जतन – यत्न, रक्षा । पमंग – घोड़ा । पाखरौ – घोड़ों पर कवच सजाते हो । ढोव – आक्रमण । ढूका – पहुंच गये । यम – इस प्रकार । पूगडे – शाहजादे । मूका – छोड दियै । पुणै – कहतो है । जोगण-पुरी – दिल्ली । पारखो – परीक्षा करो । गूडर – (?) । गयण – आकाश । आंचळे – आंचल से, स्तन से । ईख – देख । गंग-ऊत – राव गांगा का पुत्र । ऊसरां – असुरों, यवनों । घरण – स्त्री । इसी – ऐसी । दीवांण – स्वामी, अधिपति । गह – गंभीर । पहू – (?) । ओहरै – (?) । जळवटी – द्वीप । थळवटी – मरुस्थल, रेगिस्तान । मेछ – म्लेच्छ, यवन । यर – अरि, शत्रु । डाभरू – डिम्ब, बच्चा । ठौड – स्थान ।

त्रण – तीन । विखौ – संकट के दिन । रहचै – ध्वस्त किये । वळै – फिर, पुनः । गांगावत – गांगा का पुत्र । गज – हाथी । कळह – युद्ध । इळाचै – पृथ्वी, पृथ्वी के । खेसे – छीन लिये, पराजित किये । असपत – बादशाह ।

---

*इस गीत में भी मालदेव के आतंक और शौर्य का ही वर्णन है ।

*इस गीत में वर्णित इतिहास ठीक प्राप्त नहीं हुआ । संभव है नागौर के शासक दौलतखां के हाथी छीन लिए हों, क्योंकि दौलतखां पराजित होकर भाग गया था ।

राव राठौड रैण थिर राखण, उथल्ल थांणा चढै उर ।
पतसाहां मालम जुध पूरै, पट-झर बाधा जोधपुर ॥३॥
किलमां घड़ा विधूंस करंतै, धर कारण रचतै धकचाळ ।
"सलख" हरै सांकळ सांकळिया, सात खणा आगळ सूंडाळ ॥४॥
(द्वारकादास आसियौ)

गीत सावझड़ो ४*

भगे खांन नागौर अजमेर गौ भाखरां, ऊतरै मेछ खागां मुहिं ऊंबरा ।
किलभणी गात काढै गढां कांगुरां, पसरदे 'मालदे' विरोळै पाखरां ॥१॥
झालते तेजियां पखर रिमझोलियां, गणण नळियार हद हवाई गोळियां ।
चढै गढ बीवडी हाथ कर चोळियां, पाडियौ मेछ नागौर री पौळियां ॥२॥
पहरियां जरद ताऊसर पाळियां, जूंजवा गात देखाळती जाळियां ।
मारिया मेछ दळ आगळी माळियां, जोइयौ माल राव बीबियां जाळियां ॥३॥
सिवा जंवक किया त्रपत पळ सावळां, वींट नागौर गढ फेरि चहुंवेवळां ।
आंवळै मीर घड़ वळै आलूमलां, पछटिया माल-राव मेछ दळ प्राघळां ॥४॥
(अज्ञात)

शब्दार्थ—रैण – पृथ्वी । थिर – स्थिर, अटल । उथल्ल – उलट पलट । थांणा – चौकियों । पट-झर – हाथी । किलमां – यवनों । घड़ा – सेना । विधूंस – विध्वंस धर – धरा, पृथ्वी । धकचाळ – युद्ध । सलख – राव सलखा । हरै – वंशज । सांकळ – शृंखला, जंजीर । सांकळिया – जंजीरों से बांध लिये । सात खणा – सात मंजिल के भवन । आगळ – अगाड़ी । सूंडाळ – हाथी ।

किलमणी – यवन स्त्री । विरोळै – नष्ट करता है । पाखरां – कवचों (हाथी, या घोड़ा) झालते – पकड़ते, पकड़ते हुए । तेजियां – घोड़ों । रिमझोळियां – ध्वनिमान होते हुए । नळियार – बंदूक, तोपादि । गणण – ध्वनि । बीबडी – बीबी । पाडियौ – गिरा दिया । पौळियां – दरवाजों पर । पहरियाँ – धारण किए हुए । जरद – कवच । जूजवा – पृथक । देखाळती – दिखाती है । जाळियां – झरोखों । आगळी – अगाड़ी । माळियां – छोटे महल । सिवा – शृंगाली । जंबक – शृगाल । पळ – मांस । वींट – घेर कर । चहुंवै वळां – चारों ओर । प्राघळां – पुशकल, बहुत, अपार ।

---

*राव मालदेव ने नागौर के खांनजादा के दीवान दौलतखां से वि. सं. १५९२ में युद्ध किया था । युद्ध में दौलतखां पराजित होकर भाग गया । उक्त युद्ध के वर्णन का उपर्युक्त गीत ख्यात में मिला है ।

गीत छोटो सांणोर ५*

सांकै मत समंद सहस फण मम संक, गण मत जोखौ लंक गिर।
राव मालदे सबळ दळ रूठै, सझिया कुंभळमेर सिर ॥१॥

कांप म ऊवह डरप म काळी, कर न सोनगिर आकंप काय।
मेद-पाट सर "माल" मछरियै, रचिया हैं थट-मारू राय ॥२॥

सिंघ म झळझळ चळचळा म म स्रप, चळ त्रिकूट मम रह अचळ।
कीघा नव-सहसै राय कोअण, दस सहंसा ऊपरै दळ ॥३॥

शब्दार्थ—सहस-फण – शेष नाग। संक – भयभीत हो। गण – समझ मान। जोखौ – हानि, नुकसान। सोनगिर – लंका। आकंप – भययुक्त। मेद-पाट – मेवाड़। मछरियै – कोप करने पर। है-थट – घुड़ सेना। मारू-राय – राठौड़ राजा। सिंघ – समुद्र। झळझळ – विलोड़ित होने की अवस्था। चळचळ – चलायमान होने की क्रिया। स्रप – सर्प, शेष नाग। त्रिकूट – लंका गढ़। कीघा – किये। नव सहसै – राठौड़। कोअण – (?) । दस सहंसा – सीसोदिया वंश का क्षत्रिय।

---

*राव मालदेव का एक विवाह खैरवा के जागीरदार झाला राजपूत जैतसिंह (मतान्तर तेजसिंह) की कन्या स्वरूपदेवी के साथ हुआ था। यह झाली राणी अत्यन्त रूपवती और गुणवती थी। इसकी छोटी बहन इससे भी अधिक रूपवती थी। रावजी ने जैत-सिंह से उसकी छोटी पुत्री से भी पाणिग्रहण करने की इच्छा प्रकट की।

झाला जैतसिंह का विचार उस कन्या को महाराणा उदयसिंह को देने का था जिससे उसने दो मास की अवधि चाही। राव मालदेव ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर दो मास की अवधि दे दी। जैतसिंह के मन में कपट था ही, उसने खैरवा छोड़ दिया और कूंपलमेरगढ़ के पास गुढ़ा नामक ग्राम में जाकर रह गया और अपनी दूसरी कन्या का विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ कर दिया।

जब यह संदेश राव मालदेव को मिला तो वे अत्यन्त कुपित हुए और महाराणा पर सेना भेज दी। महाराणा की सेना भी मुकाबले के लिए आई। गोढ-वाड़ में भयंकर युद्ध हुआ। महाराणा की सेना पराजित हो कर भाग गई और गोढवाड़ पर राव मालदेव का अधिकार हो गया। राव मालदेव ने गोढवाड़ में अपना थाना बैठा दिया। इस घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत है जिसमें राव मालदेव के पराक्रम का वर्णन् है।

रे मथियळ रे नथियळ थिर रहि, थरक म कनक-कोट थिर थाव ।
गांगावत गांजियै न गांजै, गांजै राव अगंजिया गाव ।।४।।

१८ राव चंद्रसेण*

गीत वेलियौ सांणोर

अणदगिया तुरी ऊजळा असमर, चाकर रहण न डिगियौ चित ।
सारै हिंदुसथांन तणै सिर, "पातल" नै चंद्रसेण प्रवीत ।।१।।

पमंग अदग अदग पडियाळग, खरहंड तणी न लागी खेह ।
रांण "उदैसी" तणौ अरेहण, राव "मालदे" तणौ अणरेह ।।२।।

तुरियै विगत खत्रीवट अजडै, असपत दळ रहिया अगिण ।
कळंक विना "कुंभेण" कळोधर, "वाघ" कळोधर कळंक बिण ।।३।।

असत्रां लाड साह घर असमर, दियौ न दुहुवै हीणौ दाव ।
रवि सिरखौ मेवाड़ौ रांणौ, रवि सिरखौ जोधपुरौ राव ।।४।।

(दुरसौ आढौ)

शब्दार्थ—मथियळ – जो मथा गया हो, समुद्र । नथियळ – जिसके नाथ डाली गई हो । काली नाग – शेष नाग । थरक – डर । कनक-कोट – लंका । थिर – स्थिर । थाव – हो । गांगावत – गांगा का पुत्र । गांजियै – पराजित किए हुए । गांजै – पराजित करता है । अंगंजियां – जो पराजित नहीं हुए हैं ।

अणदगिया – बिना दाग वाले । तुरी – घोड़ा । असमर – तलवार । डिगियौ – डिगा । चीत – चित । प्रवीत – पवित्र । पमंग – घोड़ा । अदग – दाग रहित । पडियाळग – तलवार । खरहंड – सेना । खेह – धूलि, रज । तणौ – तनय – पुत्र । तुरिय – घोड़ों । विगत – (?) । खत्रीवट – क्षत्रियत्व । अजडे – तलवारों । असपत – बादशाह । अगिण – (?) । कुंभेण – महाराणा कूंभा । कळोधर – वंशज । असत्र – अस्त्र, शस्त्र । लाड – प्यार । साह – बादशाह । असमर – तलवार । दुहवै – दोनों । हीणौ – कायर, कमजोर । दाव – वचन । रवि – सूर्य । सिरखौ – समान ।

---

*इस गीत में चन्द्रसेन के साथ ही महाराणा प्रताप की भी प्रशंसा की गई है ।

१९ रायसिंह*

गीत पंखाळो

धन धन सुत "चंद" वाहतां घजवड, हूवता अरि मोरै उर हूंत ।
ऊकसता धसता ओल्हरता, कसता वर्ण विकसता कूंत ॥१॥

राउ वणाव वदै धन "रासा", मारि मारि कहि करता मार ।
लोह दुसर वड बडता चढता, पड़ चड़ करत सेलड़ा पार ॥२॥

रिम ऊझेल झेलता "रासा" थाट थिडंब ठेलता अठेल ।
धन नर निडर निहसता धसता, सौसर कहर पहरता सेल ॥३॥

२० महाराजा सूरसिंह

गीत छोटौ सांणोर* १

कूर-खेत सिर कटक कळहलिया, निसांणै धुवतै निहंग ।
अरजण अरथ चढै रथ ऊरर, राजा चढै कलाल रंग ॥१॥

शब्दार्थ—धन धन – धन्य-धन्य । चंद – राव चंद्रसेण । वाहता – प्रहार करते हुए । घजवड – तलवार । हूवता – युद्ध करता । अरि – शत्रु । मोरे – अगाडी । हूंत – से । ऊकसता – ऊंचा उठा हुआ । ओल्हरता – (?) । कसता – (?) । विकसा – चमकता हुआ । कूंत – भाला । वणाव – सजधज, तयारी । वदै – कहते हैं । धन – धन्य । रासा – रायसिंह । लोह – शस्त्र । दुसर – दो धार वाला । सेलड़ा – भाला । रिम – शत्रु । ऊझेल – प्रहार झेलता, सहन करता हुआ । थाट – सेना । थिडंब – समूह । ठेलता – धकेलता हुआ । अठेल – न धकेला जा सके ऐसा, जबरदस्त । निहसता – मारता हुआ । सौसर – (?) । कहर – भयंकर । सेल – भाला ।

कटक – सेना, दल । कळहळिया – (?) । नीसांणै – नगाडे । धुवतै – ध्वनिमान होते हुए । निहंग – आकाश । कलाल-रंग – (?) ।

---

*रायसिंह राव चंद्रसेण का ज्येष्ठ पुत्र था। वि. सं. १६३९ में यह सोजत में राव की पदवी धारण कर राज्य सिंहासन पर बैठा। वि. सं. १६४० में प्रसिद्ध "दतांणी" के युद्ध में महाराणा प्रताप के छोटे भाई जगमल के साथ सिरोही की सेना द्वारा अचानक रात्रि में निद्रावस्था में घिर जाने से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। उपर्युक्त गीत में राव रायसिंह के युद्ध कौशल का वर्णन है।

*इस गीत का संदर्भपूर्वक इतिवृत्त प्राप्त नहीं हुआ।

वरिणयां कर सिर सत्रां वळकता, पळका दव विच गढुता पाव ।
दांमण जिहां भळकता दीठा, रेंवत नै जोधपुरौ राव ॥२॥

पांडवां जहीं किता पळ खंडिया, विहूरै हाड विजू-जळ वाह ।
सहुम्रां सिर महुओ सूरजमल, मेल्यौ मेछ तरणै दळ माह ॥३॥

तै एकठा कीया "ऊदा" तण, रत मैगळा ··· ··· मद ।
हरडां तणा पाव वणिया हद, हींदू घावां वाह विहद ॥४॥

दस दैसोत भांज हेकण दिन, "माल" कुळोघर माभी मार ।
ग्रस लसकरां हूवौ उप्रवट, ग्राडे-ग्रांक हुओ असवार ॥५॥

(अज्ञात)

गीत सांणोर २*

दिली "सूरसा" सेत-बंध डोहतै, वप वरणै सार मे स्वेत वागै ।
लाल ढालां मही भोकते लोहडा, लाल भालौ कियौ ग्राभ लागै ॥१॥

उजळै वंस छळ सिलह जड उजळी, उजळा विरद सोहै ज तू ग्रंग ।
चोळ साबळ कियौ चोळ ग्रस चकव तो, गयण छिबतौ वहै ग्रभनमौ "गंग" ॥२॥

कांम पतसाह रै जरद भळहळ कियां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस ।
पवंग सींदूर व्रन चाढतां पट-हथां "सूरै" सूर-मंडळ नांमियौ सीस ॥३॥

शब्दार्थ—पळका – चमक । दांमरा – दामिनी, बिजली । भळकता – चमकते हुए । दीठा – देखे । रेंवत – घोड़ा । जोधपुरौ-राव – जोधपुर का राजा । विहूरै – विदीर्ण किए । विजू-जळ – तलवार । वाह – प्रहार । सहुम्रां – सब । महुम्रो – ? हरडां – घोड़ों । ग्रस – घोड़ा । उप्रवट – विशेष, अधिक ।

वप – वपु, शरीर । सार – अस्त्र शस्त्र । वागै – पोशाक । भोकतै – भोंकते । लोहडा – अस्त्र शस्त्रों । ग्राभ – आकाश । छळ – युद्ध । सिलह – कवच । जड – धारण करके । विरद – विरुद, यश । चोळ – लाल । ग्रस – घोड़ा । चकव – राजा । गयरा – आकाश । छिबतौ – स्पर्श करता हुआ । ग्रभनमौ – वंशज । गंग – राव गांगा । जरद – कवच । भळहळ – चमक युक्त । सींदूरियौ – लाल । जगीस – युद्ध । पवंग – घोड़ा । व्रन – रंग । पट हथां – योद्धाओं ?

*उपर्युक्त गीत नं० २ महाराजा के किसी दक्षिण-युद्ध-संबंधी है ।

जैत-हथ लडे दखणाध लीधौ जरू, साह छळ सेल रंग वधै मन सोय।
"ऊद" उत किया तै इता रंग एकठा, ढाल रँग ऊपरा लाल रँग ढोय ॥४॥
(मालो सांदू)

गीत वडोसांणोर ३*

मनै सैज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मछरीक मेले मछर-मांण।
"सूर" भय ताहरै कमंध आखाड सिध, साथरै पाथरै सुये "सुरतांण" ॥१॥
झंगरै डूंगरै खोहळै झलंतौ, नवड कमधज जतू अनड नडिया।
"ऊद" उत तूझ भय "भांण" उत अहोनिस, जोगियै पोढणै जंद जुडिया ॥२॥
"मालदे" दूसरा तूझ भय कांध मल, जीव हातळ हरण हियैज किये।
केवियां देवड़ किया घर कंदरै, तन हरण अतीतां तणा तकियै ॥३॥
मार जुध सार भय सिवपुरी मनायै, ईखतां अवर कोई ठौड़ ओढै।
सुख करै सोड पौढै नकूं सिवपुरी, पांण तज सोड सिव-ढांण पौढै ॥४॥
(दुरसो आढो)

शब्दार्थ—दखणाव – दक्षिण। साह – बादशाह।

माळिया – छोटा महल। मछर – कोप। मछरीक – चौहान। मेले – छोड कर। मछर – गर्व। मांण – मान, प्रतिष्ठा। ताहरे – तेरे। कमंध – राठौड़। आखाड-सिध – वीर, योद्धा। साथरै पाथरै – घास के बिछौने पर। झंगरै – झाडी में, डूंगरै – पर्वतों में। खोहळै – कंदरा में। नवड – नहीं झुकने वाला। अनड – वीर। नडियां – बंधन में डाल दिये। ऊद – उदयसिंह। उत – पुत्र। अहोनिस – रात दिन। पौढणै – शयन करने के स्थान पर। कांधमल – वीर। केवियां – शत्रुओं। देवडै – देवड़ा शाखा का चौहान। कंदरै – गुफाओं में। तकियै – तकिया। सिवपुरी – सिरोही। ईखतां – देखने पर। अवर – अपर, अन्य। ठौड – स्थान। ओढै – विकट। सोड ? । पांण – प्राण, बल, शक्ति। सिव-ढांण – शिव-स्थान, शिव के रहने का स्थान, श्मशान भूमि, या कंदरा। पौढै – शयन करते हैं।

---

*पहले लिख आए हैं कि दताणी के युद्ध में राव रायसिंह का वध सिरोही वालों ने किया था। वि. सं. १६६६ में बादशाह के बुलाने पर राजा सूरसिंह दक्षिण से लौटते हुए सिरोही के गांव पाडली में पहुंचे। यहां पर सूरसिंहजी को राव रायसिंह को सिरोही वालों द्वारा मारे जाने की घटना स्मरण आई। उन्होंने सिरोही के तत्कालीन राव राजसिंह से अपना पुराना बदला लेना चाहा। राव राजसिंह ने भयभीत होकर अपने छोटे भाई की कन्या का राजकुमार गजसिंह के साथ विवाह कर दिया। उक्त घटना संबंधी उपर्युक्त गीत है जिस में महाराजा सूरसिंह के पराक्रम तथा शौर्य का वर्णन है।

२१ महाराजा गजसिंह*

गीत सोहणो १

गंगा तट कमळ खळां गज-बंध, थाहर थाहर गंज थिया।
देवळ देवळ हार दीपावै, कासी सिव सिणगार किया ।।१।।

भागीरथी तणै तट भारथ, यर घड़ बेहड कीध अचंभ।
महादेव हड़हड़ते माथै, थांन थांन रचिया दळ-थंभ ।।२।।

"सूर" तणो सुरसरी तणै सर, मांनव विहंडिया वजावै मार।
रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार ।।३।।

मारे घणा चाढिया माथा, त्रिजड विकट तट गंग तणी।
राजा जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियो किणी ।।४।।

(किसनो आढो)

गीत खुड़द सांणोर २

वादळ दळ मेल खडग सभ वीजळ, कमंधां कांठळ फौज कर।
घण गाजै गजसींग विरद धण, आफळ भरै कंठीर यर ।।१।।

शब्दार्थ—कमळ – शिर, मस्तक। खळां – शत्रुओं। गज-बंधी – महाराजा गजसिंह। थाहर – स्थान। गंज – ढेर, समूह। थिया – हुए। देवळ – देवालय, मंदिर। दीपावै – शोभित करके। हार – मुंडमाळ। तणै – के। यर – अरि, शत्रु। बेहड – एक के ऊपर एक रख कर जमाने या ढेर लगाने की क्रिया। कीध – की। अचंभ – आश्चर्य युक्त। हड़हड़ते – हंसते हुए। माथै – मस्तक, शिर। दळ-थंभ – महाराजा गजसिंह का विरुद या पदवी। सूर – महाराजा सूरसिंह। तणै – तनय, पुत्र। सुरसरी – गंगा नदी। सर – ऊपर, पर। विहंडिया – मार डाले, संहार किया। वजावै – चला कर। मार – सार, तलवार। सिव-पुरी – काशी। माथा – मस्तक। त्रिजड – तलवार। विकट – जबरदस्त, भयंकर। तणी – की। गंग – गंगा नदी। किणी – किसी।

खडग – तलवार। वीजळ – विद्युत, बिजली। कमंधां – राठौड़ों। कांठळ – घन-घटा। घण – घन, मेघ। विरद – विरुद, यश। घण – अधिक। आफळ – टक्कर खा कर। कंठीर – सिंह। यर – शत्रु।

---

*भीम सीसोदिया से किए गये युद्ध संबंधी गीत है।

कोरण सुभट घटा थट कटकां, ग्रजडां हृथ दांमणी तप ।
"सूर" तणो घरहरै नरेसुर, वनपत यर खेंगरै वप ।।२।।

मेघाडंबर छतर घर मसतक, मही लग गमै खळां चा मूळ ।
जळहर गरज करै जोधपुरो, सत्र ग्राफलै मरै सादूळ ।।३।।

मारू देस वंश रौ मंडण, काला सुपह जु ईढ करै ।
गाजै गयंद ग्रभनमो "गांगो", मयंद प्रसण मांमलै मरै ।।४।।

(देवराज रतनू)

गीत बडो साणोर* ३

मुहरि मांडिजै काजि दिग-विजय मंडोवरो, धुर धमळ सिरै परिगह धरीसै ।
दिलीवै सोच "गजसाह" मुख देखिजै, दिलीवै हरख तोई "गजण" दीखै ।।१।।

करण भारथ महा महाराजा कमंघ, मिळै······भड तांम गयणि मेळै ।
चींत सुरतांणी ग्रागळि "चौंडरज", चैन सुरितांण तिम न को चेलै ।।२।।

शब्दार्थ—कोरण – काले बादलों के किनारे किनारे श्वेत बादलों का भाग। सुभट – योद्धा। घटा – घन घटा। थट – समूह। कटकां – सेनाएं। ग्रजडां – तलवारों। हथ – हस्त, हाथ। दांमणी – विजली। तप – चमक, तेज। सूर – महाराजा सूरसिंह। घरहरै – गर्जना करता है। नरेसुर – नरेश्वर, राजा। वन-पत – सिंह। यर – शत्रु। खेंगरै – नाश करते हैं, कष्ट सहन करते हैं। वप – शरीर। गमै – नाश करता है। खळां चा – शत्रुग्रों के। मूळ – जड़ (वंश)। जळहर – बादल। सत्र – शत्रु। सादूळ – सिंह। मारू – राठौड़। मंडण – ग्राभूषण। काला – पगला, पागल। सुपह – राजा। ईढ – समानता। गयंद – हाथी। ग्रभनमो – वंशज। मयंद – सिंह। प्रसण – शत्रु। मांमलै – युद्ध में।

मुहरि – ग्रग्र, हरावल। मांडिजै – रखा जाय। काजि – लिए। दिगविजय – दिग्विजय। मंडोवरो – मंडोवर का ग्रधिपति गजसिंह। धुर – बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला, जुग्रा। धमळ – बलिवर्द, या वीर। सिरै – श्रेष्ट। दरिगह – दरबार। दिलीवै – दिल्लीपति, बादशाह। हरख – प्रसन्नता। तोई – तो भी। दीसै – दिखाई देता है। गयण – ग्राकाश। चींत – चिंता। सुरतांणी – बादशाह की। ग्रागळि – ग्रगाडी। चौंडरज – राव चूंडा का वंशज, गजसिंह। चेळै – ?।

---

*गीत न २ से गीत नं. १२ तक केवल महाराजा गजसिंह के प्रशस्ति के ही गीत हैं।

आभ थोभै भुजै "माल" हर आभरण, वधै आधक छत्रां विसोवा-वीस ।
दुचित दिल्लेस तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस ।।३।।
भिडै पतसाह सं हाथि जिण भांजियां, वडिम विधि जास दरिगह विराजै ।
इसै विरदे लियै ओ जगत ऊपरां, "सूर" सुत तपै खत्रवाट साजै ।।४।।
(केसोदास गाडण)

गीत बडो सांणोर ४

हळा-वोळ चौरंग दळां बीच मूजै हरण, गजां कूळटचा कुन्ळत हुग्रै घर गाह ।
व्याकुळत भमंग रव बळत धूळी रवण, "सूर" रौ चढै तिणवार 'गजसाह' ।।१।।
घमंख पखरांण नीसांण वज घूमरां, परी थाक थकत होय म्रग पडै पास ।
तरां जड ऊपडै भरां सूकै तरंग, उरंग रस रंग चडै कुरंग अकळास ।।२।।
गोम डमर हुग्रै बोम गाहीजियै, ग्रंत रै वोम गर दोम आगा ।
सोनरा ऊधडै धोमरा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा ।।३।।
दूसरा "माल" संग लियां चतुरंग दळ, यर हरां मार सेणां ऊबारै ।
रण-चडां सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमतां पडै दहल सारै ।।४।।
(कल्यांणदास महडू)

शब्दार्थ—आभ – आकाश । थोभै – सम्हालता है, थामता है । माल – राव मालदेव । हर – वंशज । आभरण – आभूषण । आधक – अधिक । छत्रां – राजाओं । विसोवा-वीस – पूर्ण, पूरा । वडिम – वडप्पन । जास – जिसकी । इसै – ऐसे । विरदे – बिरुद, कीर्ति, यश । ओ – यह । सूर – महाराजा सूरसिंह । तपै – ऐश्वर्य का उपभोग करता है । खत्रवाट – क्षत्रियत्व । साजै – सम्पूर्ण, पूर्ण ।

हळा-बोळ – पूर्ण, पूरा । चौरंग – चतुरंगिनी । दळां – सेनाओं । कुळत – ? । घर-गाह – संहार । व्याकुळत – व्याकुल होता है । भमंग – शेष नाग । रव – रवि, सूर्य । वळत – आच्छादित होता है । धूली-रवण – धूलि कण । सूर रौ महाराजा सूरसिंह का पुत्र । गज-साह – महाराजा गजसिंह । घमंख – ध्वनि । पखरांण – हाथी या घोड़ों के कवचों । नीसांण – नगाड़ा । घूमरां – सेनाएं । परी – ? । म्रग – मृग । पास – जाल ? । तरां – वृक्षों । भरां - जलाशय ? । उरंग – शेष नाग । रस – ? । कुरंग – हरिण । अकळास – व्याकुल । गोम – पृथ्वी । डमर – धूलि समूह । बोम – आकाश । गाहीजियै – ? । सोनरा – । संकुडै – संकुचित होते हैं । गयण – आकाश । गज-गाह – युद्ध । यर – अरि, शत्रु । हरां – वंशजों । सैणा – हितैषियों । जूझा-गहल – युद्धोन्मत्त । सहल – क्रीड़ा, खेल । दहल – आतंक, भय ।

गीत वडो सांणोर ५

वडै-कांमि दळ-थंभ "गजसाह" दळ तोइ वदै, छात्रपति कमंध अै बोल छाजै ।
रूकि पतिसाह दळ लाजते राखियौ, भिडे पतसाह रिरिण तिहिज भांजे ।।१।।
सेर-सुरतांण सुरतांण सम चाडि सवळ, अमर-मंडळ लगे अेह आगाज ।
ऊबेळण परी-भव तर्ण छळ आवगौ, ऊजळा खत्री थारै भुजां आज ।।२।।
अभिनमा चौंडरज भुजां बळ अेरसौ, छात्रपति ग्रहै ग्रहै हूंत छोडै ।
असपति तणा दळ पूठि तो ऊबरै, मुहि चढै असपति तूहिज मोडै ।।३।।
"सूर" सुत सुछ्ळि दिल्लैस सक-बंध सह, तेज वधि दळांहू पैंज तांणी ।
खाग-झल खूंद-वळ छांडि खिसाया खळ, वदै जैकार सुर अखिळ वांणी ।।४।।

(खेतसी लाळस)

गीत पंखाळो ६

गज-बाघा वहै उपगार खत्री-गुर, वदन वहै खग आंकविया ।
तैं ऊबारिया वडफरां अोटां, कोटां पावण हार किया ।।१।।
सत्र सर दाव वहै सूरावत, भिळतै लोह अभिनमा "माल" ।
ढालां हेट राखिया ढांकै, ढळकै त्यां आगै गज ढाल ।।२।।

शब्दार्थ—दळ-थंभ – सेना को रोकने वाला । महाराजा गजसिंह की पदवी । दळ – सेना । तोइ – तुझ को । वदै – कहते हैं । छात्रपति – राजा । कमंध – राठौड़ । अै – ये । बोल – कीर्ति के शब्द । छाजै – शोभा देते हैं । रूकि – तलवार से । रिरिण – युद्ध में । तिहिज – तूने ही । भांजै – भगा दिये । अमर-मंडळ – अंबर-मंडल, आकाश । अेह – यह । आगाज – गर्जना, ध्वनि । ऊबेळण – रक्षा करने को । परी-भव – पराजय । छळ – युद्ध । आवगौ – सम्पूर्ण, पूर्ण । थारै – तेरे । अभिनमा – वंशज । चौंडराज – राव चूंडा । हूंत – को । असपति – बादशाह । पूठि – पीछे ऊबरै – बचते हैं, रक्षित रहते हैं । मुहि – अगाड़ी । सुछ्ळि – लिए । दिल्लेस – बादशाह । सक-बंध – वीर, योद्धा । पैंज – प्रण, प्रतिज्ञा । खाग-झल – खड्गधारी । खूंद-वळ – बादशाही सेना । खिसाया – हटाये । खळ – शत्रु ।

उपगार – उपकार । खत्री-गुर – राजा, वीर । वदन – शरीर, मुख । आंकविया – चिन्हित । तैं – तूने । ऊबारिया – बचाये । वडफरां – ढालों । अोटां – आड, अोट । पावणहार – प्राप्त करने वाला । सत्र – शत्रु । सर-दाव – ? । सूरावत – सूरसिंह का पुत्र । लोह – शस्त्र, या शस्त्र प्रहार । अभिनमा – वंशज । माल – राव मालदेव । हेट – नीचे, अोट, आड । ढांके – ढक कर । ढळकै – लुढ़कती है । त्यां – उन । गज-ढाल – हाथी के मस्तक में लगाया जाने वाला उपकरण ।

प्रसण वखांण करै जोधांपत, वडम तुहाळी साख वळै ।
ग्रै जो जिकै वहै ऊबेडा, खेंडां तळा राखिया खळै ॥३॥
(अज्ञात)

गीत छोटौ सांणोर ७

छत्रपत 'गजबंध' गांजणौ छत्रपत, बिया "मालदे" चमर-बंबाळ ।
मो चीत्रिया न जावै मारू, तूं तेवडा करै रणताळ ॥१॥

हैदल पैदल प्रबळ हैडतौ, नीजोड़तौ कितां नर नाह ।
समरथ कही न सकूं सूरावत, गुण म्हारा थारा गजगाह ॥२॥

आळस न कूं कहै आतां-बर, "बाघ" कळोधर इळा वरीस ।
कांकळ हक्क बणांणू कमधज, वळ सांभळूं जितै दस-वीस ॥३॥

सरस तणौ पसाव सोधिया, बयण विना बाखांगण वग ।
"चूंड" हरा आकास चित्रणौ, खेडेचा ताहरौ खग ॥४॥
(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—प्रसण – शत्रु । वखांण – प्रशंसा । जोधां-पत – राठौड़ों का स्वामी, वीर । वडम – वडप्पन । तुहाळी – तेरी । साख – साक्षी । वळै – फिर । ग्रै – ये । वहै – चलते हैं । ऊबेघा । विरुद्ध । खेडां – ढालों । तळ – नीचे । खळै – युद्ध में ।

छत्रपत – राजा । गज-बंध – गजसिह । गांजणौ – पराजित करने वाला । बिया – द्वितीय, वंशज, पुत्र । चमर-बंबाळ – महान शक्तिशाली, वीर, योद्धा । मो – मुझ से । चीत्रिया – चित्रित किया । मारू – राठौड वीर । तेवड़ा – तिगुना, तैसा । रण-ताळ – युद्ध । हैदल – अश्व दळ । पैदल – पदाति । हेडतौ – चलाता हुआ । नीजोड़तौ – प्रहार करता हुआ, मारता हुआ । नर – नाह, राजा । सूरावत – सूरसिह का पुत्र । गुण – काव्य, कविता । म्हारा – मेरे । थारा – तेरे । गजगाह – वीर, योद्धा । बाघ – कुमार बाघा । कळोधर – वंशज । इळा – पृथ्वी, भूमि । वरीस – देने वाला । कांकळ – युद्ध । हक्क – अधिकार या कर्त्तव्य । बखांणूं – वर्णन करता हूं । कमधज – राठौड़ । वळ – फिर, और । सांभळू – सुनता हूं । पसाव – दान, प्रसाद । बयण – वचन । वग – वर्ग, शक्ति, बल । चूंड – राव चूंडा । हरा – वंशज । खेडेचा – राठौड । ताहरौ – तेरा । खग – तलवार ।

गीत छोटो-सांणोर-८

अनकारां पहांतणा आवटसी, घणै जतन बांधिया घणा ।
"गजन" तणा अविणसो गैंवरा, ताजी गाजीसाह तणा ॥१॥

अदवां खै जाइस ज्यां अपजस, चक्रवत ग्रवै न जांणै चोज ।
राजा अमर करै ले रूपग, मैंगळ बेगागळ दे मोज ॥२॥

"गाजी साह" अमनमों "गांगो" महियळ "सूर" सुभ्रमकुळमोड ।
वहता हसत कूदता वाजंद्र रहता करै बडा राठोड ॥३॥

रिध दातार पयंपै राजा, यां आपवा तणो अधिकार ।
असत दधी तणा ऊबरिया सिर जगदेव तणा भव सार ॥४॥

(किसनो-आढ़ो)

गीत-छोटो-सांणोर-९

है थाटां बीच हींडलै हाथी, चक्रवत जिम चालिया चढै ।
"गजबंध" तणा देखतां गढवा गढ-पत जडै किमाड-गढै ॥१॥

देखे हसम दियै दरवाजा, घर-पत अवर न धीर धरै ।
"चूंडा" हरा तणा जे चारण, करै सूंस सुभराज करै ॥२॥

शब्दार्थ—अनकारां – कृपणों । पहां – राजाओं । आवटसी – समाप्त हो जायेंगे, खतम हो जायेंगे । घणै – अधिक । जतन – उपाय, कोशिश । बांधिया – बांधे हुए रखे । घणा – बहुत । गजन – महाराजा गजसिंह । तणा – के । अविणसी – जो नाश न हो । गैंवर – गजवर, हाथी । ताजी – घोड़ा । गाजी साह – महाराजा गजसिंह । अदवां – कृपणों । खै – क्षय, नाश । जाइस – जावेंगे । ज्यां – जिन । अपजस – अपयश । चक्रवत – राजा । ग्रवै – देते हैं । चोग – उमंग, उत्साह । मैंगळ – हाथी । बेगागळ – घोड़ा । मोज – प्रसन्नता से दिया जाने वाला दान । अमनमो – वंशज । गांगो – राव गांगा । महियळ – महितल, भूमि । सूर – सूरसिंह । सुभ्रम – पुत्र । वहता – चलते हुए । हसत – हाथी । वाजंद्र – घोड़ा । रहता – अमर रहने वाले । रिध – ऋद्धि – लक्ष्मी । पयंपै कहते हैं । यां – इन । आपवा – देने को । असत – अस्थि, हड्डी । भव – संसार ।

है – घोड़ा । थाटां – सेनाओं । हींडळै – झूमता हुआ चलता है । चक्रवत – राजा । गढवा – चारण कवि । गढपत – राजा । जडै – बंद कर देते हैं । किमाड – कपाट, दरवाजा । हसम – दल, सेना । धरपत – राजा । अवर – अन्य । धीर – धैर्य । हरा – वंशज । सूंस – शपथ ? ;

हैमर अैराकी हीसंतां, हाथियां मद वहता हमल।
देखे "गजन" तणा दूहत्थी, दूजा दैसोतां पडै दहल ॥३॥

"जोधा" हरे किया अणजाची, जग देखै ओद्रके जिसौ।
दांन तणौ उनमांन देखतां, कीरत रौ पूछणौ किसौ ॥४॥

(किसनौ-आढौ)

गीत छोटौ सांणोर १०

गरवा तन गात जोवतां "गजबंध", ताहरौ ··· ··· सूरजमाल तण।
अवडौ सायर नहीं ऊंडवण, अवडौ मेरू नह ऊंचपण ॥१॥

गहरा-पणौ एह खत्रियां गुर, गरवा नमौ अभिनमा "गंग"।
माछ रहंतै थाय महोदघ, देव रहंतै माघ-दुरंग ॥२॥

अथग अचळ धिन "जोध" अभिनमा, सावज कुळ पैंतीस सिरै।
हरि मेलियौ मथै हीलोहळ, गांजियौ रांवण मेर-गिरै ॥३॥

आहं कमंध तूझ पग ऊंडा, हाथां गयण छिबै हथवाह।
मथियळ नै धुणियळ नह मीढी, समवड तूझ तणी "गज साह" ॥४॥

(किसनौ आढौ)

शब्दार्थ—हैमर – घोड़ा। अैराकी – घोड़ा। हमल – समूह। दूहत्थी – चारण कवि। दैसोतां – राजाओं। दहल – आतंक, भय। जोधा – राव जोधा। हरे – वंशज। अणजाची – अयाचक। ओद्रके – भयभीत होते हैं। उनमांन – अंदाज। किसौ – कैसा।

गरवा – गंभीर, गहरा। ताहरौ – तेरा। तण – तनय, पुत्र। अवडौ – इतना। सायर – सागर, समुद्र। ऊंडवण – गहरापन। मेरू – सुमेरू पर्वत। ऊंचपण – ऊंचाई। खत्रियां - गुर, वीर, राजा। अभिनमा – वंशज। गंगराव – राव गांगा। माछ – मत्स्य, मछली। महोदध – समुद्र। माघ – इंद्र। अथग – जिसकी थाह न ले सके। धिन – धन्य। जोध – राव जोधा। सावज – सिंह, वीर। सिरै – श्रेष्ठ। हरि – विष्णु। मेलियौ – रखा, छोड़ा। हीलोहळ – समुद्र। गांजियौ – पराजित किया। गयण – आकाश। छिबै – स्पर्श करता है। हथवाह – हाथों का प्रहार, प्रहार। मथियळ – समुद्र। धुणियळ – मंदराचल पर्वत, यहां सुमेरु के लिये प्रयुक्त किया गया है। मीढी – तुलना की। समवड – समानता।

गीत छोटो सांणोर ११

आजूंणी वार संसार इखतां, चौरंग अमिट अखूटत चाय।
तड-वड नह गजसींघ तुहाळी, नाकतणां आभूखण न्याय ॥१॥
पग पग लगै सरीखो पायल, हाथ हाथ प्रत कांकण होय।
सरज्या नहीं अभनमा "सलखा", दो पासा नासा नग दोय ॥२॥
स्रवण स्रवण कुंडळ सारीखा, आंख आंख प्रत अंजन अेम।
सुभ्रम "सूर" तुहाळी समवड, जुडै नहीं नक-वेसर जेम ॥३॥
अन अधपत अबळा आभूखण, इढवतां नर बीया अनेक।
नासा अग्र मोती नव सहंसा, हेकांणअै तपै तूं हेक ॥४॥
राजा तूझ समी अन राजां, होड कियां नृप विया हसै।
पांणी-हंड पहरै दोहुं पासां, नासा नार जिहुंइ नकसै ॥५॥

(सांइयौ-झूलौ)

गीत भुडियळ अठताळो १२

घख-पंख घमळ घोर धारण, निहंग तो डर केळ वारण,
दुखळ-पंखी गुरड दारण, सलह खाग सघीर।
यर केण छाजै खाग उछज, अणी झटां चंच आवाज,
कळहियौ "गजसाह" कळियज, वरळ वघ वर वीर ॥१॥

शब्दार्थ—आजूणी – आधुनिक, आज की। वार – समय। इखतां – देखने पर। चौरंग – युद्ध। अमिट – न मिटने वाला। अखूटत – अपार। चाय – ? । तड़वड़ – समान, तुल्य। तुहाळी – तेरी। सरीखो – समान। पायल – स्त्री के पैर का आभूषण। प्रत – प्रति। कांकण – हाथ का आभूषण, कंकन। सरज्या – रचे, बनाये। अभनमा – वंशज। पासा – पार्श्व। नासा – नाक। सुभ्रम – पुत्र। सूर – सूरसिंह। समवड़ – समान। जुडै – मेल खाता है। नक-वेसर – लम्बोत्तरा या सुराहीनुमा मोती, स्त्री के नाक का आभूषण। अन – अन्य। अधपत – अधिपति, राजा। अबळा – स्त्री। इढवतां – समानता करने पर। बीया – दूसरे। नवसहंसा – राठौड़। हेकांणअै – एक ओर। तपै – ऐश्वर्य का उपभोग करता है। हेक – एक। तूझ – तेरे। समी – समान। होड – प्रतिस्पर्धा। पांणी-हंड – मोती।

घख-पंख – गरुड़। धमळ – धवल। विहंग – पक्षी, गरुड़। वारण – हाथी। दुकळपंखी– ? । यर – अरि, शत्रु। उछज – उठा कर। अणी – नोंक, धार। आवज – आवध, आयुध, अस्त्र शस्त्र। कळहियौ – युद्ध में लीन या डूबा हुआ। गजसाह – महाराजा गजसिंह। कळियज – युद्ध। वरळ – ? ।

सादूळ अमंगळ सिह सावज, ग्रीठ केहर मयंद रिपु गज,
बांण बाघ लँकाळ वनरज, दोख गम दाढाळ।
ऊपाड हथळ छरा असमर, सार साझे घडा सिंधुर,
मयंद रूपी धणी मुरधर, खळां दळ खेंगाळ ॥२॥
हुतासण मंगळ जळण हुबह, दावक-नळ पावक वन दह,
घखण ऊसण दहण धोमह, वासदेव वज्राग।
जुडे अरियण खाग जाळे, प्रसण तर धाये प्रजाळे,
वडे राजा अंक-वाळे, अरी बाळे आग ॥३॥
सामंद हुवह सुजळ सायर, रैण सुत जळनध रैणायर,
सुजळ गौडीरेव सायर, महण घण महरांण।
सुतन "सूरज" सुजळ सारै, अरि ओहाळे उतारै,
मारका सत्र वोढ मारै, जुडै "गंजण" जुवांण ॥५॥
(अज्ञात)

गीत वडौ साणोर* १३

खवां खेलतौ खांन असहां कमळ खूंदतौ, रूक छिबतौ निहंग देईव-रायौ।
साह दळ भांज गजसींग नव-साहसौ, औ वळे साह दरगाह आयौ ॥१॥

शब्दार्थ—सादूळ – शार्दूलसिंह। सावज – सिंह, सिंह का बच्चा। ग्रीठ – सिंह। केहर – केसरीसिंह। मयंद – सिंह। रिपु-गज – सिंह। लंकाळ – सिंह। वनरज – वनराज, सिंह। दाढाळ – बडी दंष्ट्रा वाला सिंह। हथळ – सिंह के अगले पैर का अग्र-भाग। छरा – सिंह का पंजा। असमर – तलवार। सार – तलवार। घड़ा – सेना। सिंधुर – हाथी। खळां – शत्रुओं। खेंगाळ – संहार। • हुतासण – अग्नि, आग। मंगळ – अग्नि, आग। जळण – आग। दावकनळ – दावाग्नि। पावक – अग्नि। वनदह – आग। घखण – अग्नि। ऊसण – उष्ण, आग। दहण – जलाने वाला आग। धोमह – आग। वासदेव – आग। वज्राग – वज्राग्नि। जुडै – भिड़ता है। अरियण – अरिजन, शत्रु। प्रसण – शत्रु। तर – तरु, वृक्ष। धायै – प्रहारों से। प्रजाळे – जला देता है। अंक-वाळे – महान कार्य किये। सायर – सागर, समुद्र। रैण-सुत – समुद्र। जळनध – जलनिधि, समुद्र। रैणायर – रत्नाकर, समुद्र। गौडीरेव – तरंगों की ध्वनि वाला, समुद्र। महण – महार्णव, समुद्र। महरांण – समुद्र। ओहाळे – तालाब, समुद्र, नदी आदि के तट पर जल-प्रवाह से फेंका हुआ कूड़ा-करकट। वोढ – काट कर। गजण – गजसिंह। जुवांण – जवान।

खवां – कंधों। असहां – शत्रुओं। कमळ – शिर, मस्तक। खुंदतौ – रौंदता हुआ। रूक – तलवार। छिवतौ – स्पर्श करता हुआ। निहंग – आकाश। निहंग-देईव-रायौ – सूर्य। साह – बादशाह। नव साहसौ – राठोड़। औ – यह। वळे – फिर, पुनः। दरगाह – दरबार।

---

*गीत नं. १३ महाराजा गजसिंह का बादशाह जहांगीर की मदद में तथा सुलतान खुर्रम के विरुद्ध युद्ध करने के आशय को प्रकट करता है।

कमंध देतौ चलण भडां क्यांहि कमळ, कहर भर खूंदतौ भडां क्यांही ।
मारुवौ-राव खुरसांण गांजै मछर, माल्हियौ वळै खुरसांण मांही ।।२।।
"सूर" रौ दिली दरगाह असहां सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियौ ।
मूहां सैदां तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैंधां-मुहां आंण मिळियौ ।।३।।
दिलीवै कहर पतसाह रा भांज दळा, सोहियां दळां विच वीर साजा ।
सदा जोरावरां तणा नव-साहसौ, राह सिर ऊपरै हुग्रै राजा ।।४।।
(देवराज रतनू)

गीत पालवणी १४*
(प्रथम दूहो सोरठो)

तूं तोलै तरवार, सिर साहां गजसिंध दे ।
है तुरकांणै हार, हिंदवांणै उछब हुवै

शब्दार्थ—कमंध – राठौड़ । चलण – पैर, कदम । भडां – योद्धाओं । क्यांहि – कई, कितने ही । कहर – आफत, विपत्ति । मारुव-रावौ – मारवाड़ का राजा, राठौड़ राजा । खुरसांण – बादशाह । गांजै – भंजन करके, मिटा करके । मछर – गर्व । माल्हियौ – मस्त चाल से चला । मांही – में । सूर – महाराजा सूरसिंह । सिरै – ऊपर, पर । प्रवाडा – युद्ध । लियण – लेने को । हिळियौ – आदी हो गया । मूहां-सैदां तणा – परिचित व्यक्तियों का । मछर – रौब, प्रभाव, गर्व । सैंधा-मुहां – परिचितों । दिलीवै – दिल्लीपति, दिल्ली का । सोहियौ – शोभित हुआ । साजा – कुशल, स्वस्थ, अखंड ।

---

*खुर्रम की ओर से राजा भीम सीसोदिया महाराजा गजसिंह से युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ । भीम ने युद्ध अत्यन्त कौशलता तथा वीरतापूर्वक किया था तथा बहुत से शत्रुओं को युद्ध में धराशायी कर दिये थे उपर्युक्त घटना की सूचना जब महाराणा कर्णसिंह के पास पहुंची तो उन्होंने दरबार में राजा भीम के पराक्रम, शौर्यादि का वर्णन कवियों के मुख से सुनने की अभिलाषा प्रकट की । महाराणा के दरबारी कवि खेमराज सौदा बारहठ ने तुरंत ही एक गीत जिसका अन्तिम चरण "पांडव नांमी नीठ पाड़ियौ लग ऊगमण आथमण लग" है, रचकर सुनाया । दरबारियों ने तथा महाराणा ने कवि को वाहवाही का पुरस्कार दिया, लेकिन दरबार में बैठे चतुरा मोतीसर को गीत में प्रयुक्त "पाड़ियौ" शब्द उपयुक्त नहीं लगा । चतुरा के असंतोष प्रकट करने पर कवि खेमराज सौदा ने चतुरा को ही अन्य गीत रच कर सुनाने को कहा । चतुरा आशु कवि था, तुरन्त ही सुंदर गीत रच कर महाराणा के दरबार में सुनाया जिसमें राजा भीम सीसोदिया के शौर्य, पराक्रम, और युद्ध-कौशल का वर्णन महाराजा गजसिंह से अपेक्षाकृत विशेष था ।

गीत

चक्ख लागां धिक्खै चहुँ-दिस चोळै, हीलोहळ सातूं हीलोळै ।
अधपत सको ताहरै ओळै, तूं खग आज किणी सिर तोलै ।।१।।
खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी ।
सारां मिळै तूझ सूं संधी, बळ दाखै किण सिर "गजबंधी" ।।२।।
पूरब पछम धरा दध - पारू, दिखण तणौ खूटौ बळ दारू ।
सक उतराध धरा तो सारू, मछर धरै किण ऊपर मारू ।।३।।
वाजै वळै चहुं दिस बाजा, "सूर" तणा उत्तर दध सांजा ।
पूगौ जस सातूं दध पाजा, रोस धरै किण ऊपर राजा ।।४।।
(चतुरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—चक्ख – चक्षु, नेत्र । धिक्खै – प्रज्वलित होती है । चहुँ-दिस – चारों दिशाएँ । चोळै – कम्पायमान होती हैं । हीलोहळ – समुद्र । हीलोळै – तरंगयुक्त होते हैं । अधपत – अधिपति, राजा । सको – सब । ताहरै – तेरे । ओळै – ओट में, शरण में । खग – तलवार । किणी – किस । सिर – ऊपर । तोलै – प्रहार हेतु उठाता है । खंड – देश । देवड़ा – चौहानवंश की एक शाखा । खंधी – किश्त । सगपण – विवाह सम्बन्ध, संबंध, रिश्ता । सनबंधी – रिश्तेदार । संधी – संधि, सुलह, मेल । दाखै – प्रकट करता है, बतलाता है । किण – किस । सिर – पर, ऊपर । गज-बंधी – महाराजा गजसिंह । दध – उदधि, समुद्र । पारू – पार तक । तणौ – का । खूटौ – समाप्त हो गया, मिट गया । बळ – शक्ति, सेना । दारू – बारूद । सक – सब, पूर्ण । उतराध – उत्तर दिशा । धरा तो सारू – तेरे अधिकार में है, तेरे वश में है । मछर – कोप । मारू – राठौड़ वीर । वाजै – बजते हैं । वळै – फिर, और । सूर – महाराजा सूरसिंह । तणा – तनय, पुत्र ।

"सूर" तणा उत्तर दध साजा – हे सूरसिंह के पुत्र, उत्तर से (दक्षिण) समुद्र पर्यन्त सब अखण्ड रूप से तेरे अधिकार या वश में हैं ।

उक्त गीत संबंधी वृत्तान्त जब महाराजा गजसिंह के कर्ण गोचर हुआ तो वे चतुरा पर बहुत कुपित ही नहीं हुए बल्कि मोतीसर जाति के लिए देश निष्कासन का आज्ञा-पत्र जारी कर दिया । इस पर चतुरा शीघ्र ही चंडावल ठाकुर गोवर्द्धनदास कूंपावत के मारफत महाराजा गजसिंह के दरबार में पहुँचा, ज्योंही महाराजा की चतुरा पर दृष्टि पड़ी तो तुरन्त ही तलवार उठाकर उसे मारने हेतु तैयार हुए । ठीक इसी समय चतुरा ने अपनी काव्य-प्रतिभा द्वारा उपर्युक्त सोरठा और गीत रचकर महाराजा को सुनाए । महाराजा का कोप शांत हो गया—और चतुरा दण्ड के स्थान पर पुरस्कार से सम्मानित हुआ ।

गीत वेलियो सांणोर १५*

तेतीसै सुरां हिंदवां तुरकां, कोय न यू जन मांडें कंध ।
आराधियां बिना वह आयो, बीजो महादेव "गजबंध" ॥१॥
चूका वयण मंदार चाढतां, सुर नर साहो मांन असत्त ।
भोळै भाव आवियो भूरो, भोळा संभू तणी भत्त ॥२॥
नरंद आजका गुणँ नह रीझै, बूझै ताय ओगणां अबूझ ।
मिळियां गुणां ओगणां मेटे, मंडोवरो महारुद्र मूझ ॥३॥
मोटा पह सहज रावमारू, रुद्र दूहत्थो करै फिर रीझ ।
अम लोगां ऊपरा न रावै, खूंदाळमां हिळाई खीज ॥४॥

(चतुरो-मोतीसर)

२२. महाराजा जसवंतसिंह

गीत प्रहास सांणोर १**

हुसंड हुकळै बांघळा प्रचंड गज हिंडुळै, वळै दळ वाज त्रंबाळ वाजा ।
गढपती पोकरण लीघ लागै गढ़ां, राज रो ताप "जस राज" राजा ॥१॥

शब्दार्थ—आराधियां – आराधना करने पर । बीजो – दूसरा । वयण – वचन । मंदार – (?) । भोळै-भाव – सहज में ही, बिना बिचारे । भूरो – वीर, योद्धा । भोळा – छल-कपट-रहित, सीधा सादा, सरल । भत्त – भांति, प्रकार । नरंद – नरेंद्र, राजा । गुणँ – गुनों पर, कार्यों पर । बूझै – पूछते हैं । ओगणां – अवगुणों । अबूझ – न पूछने योग्य । ओगणां – अपराधों । मंडोवरो – मंडोवर का अधिपति, महाराजा गजसिंह । मूझ - मेरे । मोटा – महान, बड़ा । पह – प्रभु, राजा । राव मारू – राठोड़ राजा । दूहत्थो – दो हाथ वाला । रीझ – पुरस्कार, दान । अम – हम । खूंदाळमां – बादशाहों । हिळाई – समान, प्रकार । खीज – कोप ।

हुसंड – घोड़ा । हुकळै – मस्ती में हिनहिनाहट की ध्वनि करते हैं । बांघळा – जबरदस्त । हिंडुळै – मस्ती में झूमते हैं । वळै – फिर, और । दळ – सेना । त्रंबाळ – नगाड़ा । वाजा – ध्वनिमान हुए । गढपती – राजा । राज रो – श्रीमान का, आपका । ताप – प्रभाव, ऐश्वर्य ।

---

*गीत नं० १४ सुन कर महाराजा गजसिंह ने जब चतुरा के अपराध को क्षमा कर दिया तब चतुरा ने यह गीत फिर नवीन रचकर सुनाया ।

**वि.सं. १७०६ की कार्तिक मास की पूर्णिमा को जयसलमेर के रावल मनोहरदास का देहावसान हो गया । तब उसका पुत्र रामचंद्र राज्यासीन हुआ । यह रामचंद्र उत्पाती और उद्दण्ड था । इससे समस्त प्रजामंडल तथा सामन्त गण असंतुष्ट थे ।

हुंकळै तुरां वैधिगरां हार हर, सहर पाधर करण काज साका।
पाखरां घरर "गजबंध" रा पाटपत, थरर गढ पत गढां पांण थाका ॥२॥

चौसरै थरां नर कांगुरै चाढ़िया, ऊमरां भुजा-डंडां अड़ीया।
प्रथी रा नाथ वांको दुरंग पलटतां, प्रथी रा गिरवरां भंग पडीया ॥३॥

प्रघळ दळ मेल गढ भेळियौ पोहकरण, छळ "सबळ" "माल"...खळां छीजै।
कमँध अन कोट जळ-थाळ झळ-झळ करै, दूसरा "मालदे" धीर दीजै ॥४॥

(खेतसी लाळस)

शब्दार्थ—तुरां – घोड़ों। वैधिगरां - हाथियों। हार-हर – (?)। पाधर – सीधा। काज – लिए। साका – युद्ध। पाखरां – घोड़ों हाथियों के कवचों। गज-बंध – महाराजा गजसिंह। पाट पत – पट्टाधिकारी। थरर – कंपायमान होते हैं। गढ-पत – राजा। पांण – प्राण-बल। थाका – थकित हो गये, थक गये। चौसरे – चारों ओर। थरां – स्तरों, तहों। ऊमरां – अमीरों, सरदारों। भुजा-डंडां – महान, जबरदस्त, शक्तिशाली। अड़ीया – छू गये, स्पर्श किया। प्रथी रा नाथ – पृथ्वीनाथ, राजा। वांको-दुरंग – जयसलमेर का गढ। गिरवरां – पर्वतों। भंग – भय, भगदड़। प्रघळ - पुष्कल, बहुत। दल सेना। गढ भेळियौ – गढ़ में प्रवेश कर दिया, घुस गये, अधिकार कर लिया। छळ – लिए। सबळ – सबलसिंह भाटी। माल – रावल मालदेव (जयसलमेर)। खळां – शत्रुओं। छीजै – क्षीण होते हैं। कमंध – राठौड़। अन-कोट – अन्य गढ़। जळ-थाळ – थाल के पानी के समान। झळाझळ – कंपायमान, डोलायमान। दूसरा – द्वितीय, वंशज। मालदे – राव मालदेव राठोड़। धीर – धैर्य।

अतः उन्होंने रावल मालदेव (जयसलमेर) के तृतीय पुत्र खेतसिंह के पौत्र सबलसिंह को राज्याधिकारी बनाने का विचार किया। यह सबलसिंह बादशाह शाहजहां के दरबार में उपस्थित हुआ। सामन्तगण इसके पक्ष में थे ही। यह भी पहिले पेशावर की मुहिम पर नियुक्त होकर बादशाह की अच्छी नौकरी बजा चुका था। अतः बादशाह इससे पूर्ण परिचित था। बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को कहा कि पोकरण नगर पहले से ही तुम्हारा ही है। राव चन्द्रसेण ने जयसलमेर के रावल हरराज के गिरवे रख दिया था। तब से पोकरण पर भाटी वंश का अधिकार है। अब हम पोकरण तुम्हें इनायत करते हैं। वहाँ जाकर पोकरण पर अपना अधिकार कर लो और जयसलमेर के राज्यसिंहासन से रामचंद्र को हटा कर सबलसिंह को रावल बना दो, यह कह कर बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को पोकरण का फरमान दे दिया और सबलसिंह को भी महाराजा के साथ भेज दिया।

गीत प्रहास सारणोर २

दळाकार चहुंग्रे वळा जोध वांका दिपै, ग्राज जग-जेठ ग्रचडां ग्रबारू ।
"जसौ" वांका खळां वांक काढै जुडै, मार वांका-दुरंग लिए राव मारू ।।१।।

सुतन "गजसाह" गज-गाह बांधै समर, सगत बळ जळहळै तेग साथै ।
गांजवा खळां जस करण वांका गढां, हींदवा - छात रै फतै हाथै ।।२।।

विभाड़ै जादवां - कोट घर कीध वस, सबळ ब्रद खाटिया भवां सारू ।
तप-बळी ग्रभनमा "माल" "गंगेव" तो, ममारक पोकरण राव मारू ।।३।।

... ... , ... ।
... ... , ... ।।४।।

(ग्रज्ञात)

शब्दार्थ—दळा-कार – सेना, फौज । चहुंग्रे-वळा – चारों ग्रोर । जोध – योद्धा, वीर । वांका – बांकुरे । दिपै – शोभायमान हैं । जग-जेठ – वीर, राजा । ग्रचडां – कीर्ति, श्रेष्ठ बातें । ग्रबारू – बचाने के लिए, बचाने वाला । जसौ – महाराजा जसवंत सिंह । खळां – शत्रुग्रों । वांक – गर्व, ऐंठ । काढै – निकालता है, मिटाता है । जुडै – भिड़ कर, युद्ध कर । मार – लूट कर । बांका-दुरंग – जयसलमेर का गढ, बांकुरा गढ़ । राव-मारू – राठौड़ राजा । सुतन – पुत्र । गजसाह – महाराजा गजसिंह । गज-गाह – (?) । समर – युद्ध । सगत – शक्ति । जळहळै – देदीप्यमान होती है, चमकती है । तेग – तलवार । गांजवा – पराजित करने को । वांका गढां – जयसलमेर का किला । हींदवा-छात – हिंदू राजा, हिंदुग्रों का राजा । विभाड़ै – परा-जित कर, लूट कर । जादवां-कोट – जयसलमेर का गढ़ । ब्रद – विरुद । खाटिया – प्राप्त किए । भवां – जन्मों । सारू – लिए । ग्रभनमा – वंशज । माल – राव मालदेव (जोधपुर) । गंगेव – राव गांगा का पुत्र । ममारक – मुबारक, शुभ, मंगलप्रद ।

महाराजा वि. सं. १७०७ में जोधपुर ग्राए ग्रौर पोकरण का फरमान दे कर ग्रपने विश्वस्त सामंतों को जयसलमेर भेजा । रावल रामचंद्र ने कहा कि इस प्रकार की याचना करने से पोकरण का गढ़ नहीं मिल सकेगा । हम मरेंगे तब गढ़ मिलेगा । यह वृत्तान्त सुनकर महाराजा ने ग्रपनी सेना जयसलमेर पर भेजी । रामचंद्र को राज्य-सिंहासन से हटा कर सबलसिंह को जयसलमेर का रावल बना दिया ग्रौर पोकरण पर भी ग्रपना ग्राधिपत्य जमा दिया । गीत नं० १, २, ३ उपर्युक्त घटना से संबंधित हैं ।

गीत वडो सांणोर ३

छिलै सेन साहण समँद कमंध ऊपरि छत्रां, ऊजळा करै आरंभ अनिमंध।
पोकरणि पलटि "गज-बंध" रा पाट पति, बांधियौ जोधपुर गळै 'गजबंध' ॥१॥

वाजतै नगारै कटक वाळै विखम, जैत-हथ सूत्रियौ इसौ रण-जंग।
गढां रा गरब गळिया "जसा" गढपती, गिरँद सिणगारियौ अभिनमा "गंग" ॥२॥

बाप जिम वडा ही वडा वणिया विरुद, "सूर" हर आभरण भवां सारू।
महाराजा जु तैं माड कीधौ विमह, मंडोवर अंजसै राव मारू ॥३॥

खत्री-वट प्रगट करि जैत चाढी खवां, कुळ तिलक काढियौ कोट लीयौ।
सपूता-चार पतिसाह सनमांनियौ, वाळतै पोकरण अंक वळियौ ॥४॥

गीत छोटौ सांणोर ४

उजैणी[1] खेत घडा[2] बेहूँ आवडै, नाळ निहाव गजां[3] नीसांण।
"सूर" हरौ माथै साहिजादां, राजा उलट्टियौ महरांण ॥१॥

पाठान्तर

१. ख. उजैण। २. क. घड। ३. क. गाजै।

शब्दार्थ—छिलै – उमड़ कर। साहण – घोड़ा। छत्रां – राजाओं। अनिमंध – वीर। पाट-पति – पट्टाधिकारी। कटक – सेना। वाळै – मोड़ कर, मोड़ दिया। विखम – भयंकर, विषम। जैत-हथ – विजय हस्त। सूत्रियौ – (?) । इसौ – ऐसा। रण-जंग – युद्ध। गरब – गर्व। गळिया – मिट गये, नष्ट हो गये। जसा – महाराजा जसवंतसिंह। गढ-पती – राजा। गिरँद – गिरींद्र, पर्वत। सिणगारियौ – सुसज्जित किया। अभिनमा – वंशज। गंग – राव गांगा। बाप – पिता। सूर – महाराजा सूरसिंह। हर – वंशज। सारू – लिए। माड – जयसलमेर राज्य। कीधौ – किया। विमह – मान या मद-रहित। अंजसै – गर्व करता है। राव-मारू– राठौड़ राजा। खत्रीवट – क्षत्रियत्व। प्रगट – प्रकट। जैत – विजय। खवां – कंधों। सपूताचार – सुपुत्र के आचरण या कर्त्तव्य। सनमांनियौ – प्रतिष्ठा दी, सम्मान किया। वाळतै – वापिस लेते हुए। अंक वळियौ – मान बढ़ गया, अति श्रेष्ठ कार्य हो गया।

घडा – सेना। आवडै – भिड़ती है ? नाळ – तोप। निहाव – ध्वनि, प्रहार। गजां – हाथियों। नीसांण – नगाड़ा, या झंडा। सूर – महाराजा सूरसिंह। हरौ – वंशज। माथै – ऊपर। उलट्टियौ – उमड़ गया। महरांण – महार्णव, समुद्र।

अवडां गजां घजां[1] आराबां, जूह हूह जै जूह जुआ।
हौद नबाब रौद हेकारू, हीलोहळ गरकाब हुआ ॥२॥

मुज छिलियौ माथै साहजादां[2], असमर[3] लहर लगै असमांण।
"गजबंध" तणौ अखंड[4] गळिया, खारै समँद छ खंड खुरसांण ॥३॥

लोहां लोड बोड[5] जळ लागै, सूर आवरत्त संभ्रमिया[6]।
काळै थाट तणा कलमायण[7], काळै वार आहार किया ॥४॥

जग कळंपत तणो "जसवंत", फेरा लहर कहर फिरियौ।
लोह धार[8] गैणाग लागतां, "औरँग"[9] घु जिम ऊबरियौ ॥५॥

घडा विरोळ मार चौधारां, काळ वहंतां कमण[10] कळै।
रोळै दळ बोळै रुद्रांयण[11], वळियौ जेम समंद वळै ॥६॥

(नाथौ सांदू)

पाठान्तर

१. क. छौळ। २. सायजादां। ३. ख. आवध। ४. क. आठ में गळिया। ५. क. बोढ। ६. क. संजमिया। ७. क. किलमाइण। ८. क. लहर। ९. ख अवरंग। १०. क. कवण। ११. क. रोद्रायण।

शब्दार्थ—अवडां – इतने। घजां – घोड़ों। आराबां – तोपों ?। जूह – यूथ, समूह। हूह – ?। जै-जूह – हाथियों का दल। जुआ – पृथक, और। हौद – हाथी की अम्मारी में बैठने का स्थान। रौद – यवन। हेकारू – एक बार, एक दफे। हीलोहळ – समुद्र। गरकाब – निमग्न। मुज – वह। छिलियौ – सीमा के बाहर हो गया। असमर – तलवार। असमांण – आसमान। गजबंध – महाराजा गजसिंह। तणौ – तनय, पुत्र। गळिया – निमग्न कर दिए। खुरसांण – यवन। लोहां – शस्त्र, शस्त्र-प्रहारों। लोड – बड़ी लहर या तरंग। बोड – ? आवरत्त – युद्ध। संभ्रमिया - भ्रमित हो गये। काळै – वीर। थाट – सेना। कलमायण – यवन। काळै – श्याम। वार – जल। जग कळपंत – जगत कल्पान्त के समान। कहर – भयंकर आपत्ति। गैणाग – आकाश। ऊबरियौ – बच गया। विरोळ – विध्वंश कर के। चौधारां – भालों। काळ – मौत, यमराज। वहंतां – चलने पर। कमण – कौन। कळै – ? रोळै – ध्वंस करके। बोळै – डुबाकर। रुद्रायण – यवन। वळियौ – लौटा, वापिस आया। वळै – लौटता है, वापिस आता है।

गीत प्रहास सांणोर ५

सजै फौज कांठळ घरर घणा नीसांण घुर, अनळ धुँग्रा रवण रण ऊजाथै ।
वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेर-गिर "गजण" रा तणाँ माथै ॥१॥
भडज वादळ सबळ वीज साबळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा ।
वार सुरतांण दळ अकळ खूटा वरस, "माल" हर सीस सुर-गरंद-माळा ॥२॥
कठठ कांठळ कटक रोस चांमास कर, जवनपत हिंदवां-छात जूटा ।
अभंग जसराज सर कणँगिर ऊपरा, खैंग वादळ वरस वार खूटा ॥३॥
अनड सर कमँध वन थाक रहिया अनख, उभै पत-साह देखै अछायौ ।
पखां जळ चाढ खळ पाड बांहां प्रळंब, असुर घण पाड खग झाड आयौ ॥४॥
(अजबौ बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर ६

दिलो-साह छळि उजेणी वाह खग दाखतै, लडण ऊछाह अवसांण लाधै ।
"जसा" चतरबा गजगाह रचि तूं जुड़ै, बिहूं पतसाह सूं नेत-बांधै ॥१॥

शब्दार्थ—कांठळ – घन-घटा । घरर – ध्वनि । घणा – बहुत । नीसांण – नगाड़ा । घुर – बजकर । अनळ – अग्नि । रवण – ध्वनि । रण – युद्ध, युद्ध-स्थल । ऊजाथै – ? वहण-दळां – सेना के चलने पर । दिलेसुर – बादशाह । तणा-तनय – पुत्र । बरस=उरस – आकाश । गजण – महाराजा गजसिंह । तण – तनय, पुत्र । माथै – ऊपर, पर । भडज – घोड़ा । वीज – बिजली । साबळ – भाला । भळक – चमक कर । खळक – प्रवहमान होकर । रुधर – रुधिर, रक्त । घट – शरीर । नाळ-खाळा – नाले । वार – जल । सुरतांण – बादशाह । अकळ – अपार, बहुत । खूटा – समाप्त हो गये । माल – राव मालदेव । हर – वंशज । सुर-गरद-माळा – सुमेरु पर्वत रूपी श्रेणी । कठठ – सेना, रथ आदि के चलने की ध्वनि । कटक – सेना, दल । चांमास – वर्षा काल । जवनपत – यवनपति, बादशाह । हिंदवां-छात – हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा । जूटा – भिड़ गये । अभंग – वीर । कणँगिर – सुमेरु पर्वत । खैंग – घोड़ा । वार – पानी, जल । अनड – वीर, पर्वत । कमँध – राठौड़ । वन – जल, वर्षा । थाक – थक कर । अनख – शत्रु । उभै – दोनों । अछायौ········? पखां – पक्षों । जळ – कांति, आभा, चमक । खळ – शत्रु । पाड – मार कर । बाहां-प्रळंब – आजानु-बाहु । असुर – यवन । घण – बहुत । झाड़ – प्रहार करके ।

छळि – लिए । खग – तलवार । दाखतै – कहते हुए । उछाह – उत्साह । अवसांण – अवसर । लाधै – प्राप्त होने पर । जसा – महाराजा जसवन्तसिंह । चतरबां – चारों ओर ? गजगाह – युद्ध । जुड़ै - भिड़ कर । बिहूं – दोनों । नेत-बांधे – झंडा धारण किए हुए ।

बाजुवा कमंध रचि पहां बोळावतो, अरि हरि गांजतो भुजां अकारैं।
सांफळैं तुहिज 'गजसाह' रा सींघळी, साह आलम दुवै सरिस सारैं ॥२॥
ठेल्हतो गजां है-थाट लागा अटळ, रीठ वागां खगां दुवै राहां।
जोध "जसराज" पूगो भलो जूजबो, सेल रोळैं दुहूं पातिसाहां ॥३॥
चखाडैं कूंत चखतां धणी चापड़ै, रौद-घड़ पछाड़ैं अचळ राखी।
जीवतां-सिभ महाराज वणियो "जसो", समर चा करे रवि चंद साखी ॥४॥
(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर ७

भुजा कूंत ऊपाड रण वार नांखै भिड़ज,
खसण चलियो[1] दिली-थाट खांगै[2]।
नांखियो "जसै" "महबूब" लागां निहंग,
गै-घड़ा ऊपरै बियै "गांगै" ॥१॥

पाठान्तर—१. ख. छालियो। २. ख. खागै।

शब्दार्थ—बाजुवां – एक ओर, तरफ। रचि – रचकर। पहां – राजाओं। बोळावतो – मिटाता हुआ। अरि हरि – शत्रु वंशज। गांजतो – पराजित करता हुआ। अकारै – तेज, जबरदस्त। सांफळैं – शस्त्र प्रहारों में, युद्ध में। गजसाह – महाराजा गजसिंह। सींघळी – वीर, वीर पुत्र। साह – बादशाह। आलम – जन-समूह, दुनिया। दुवै – दोनों। सरिस – सम न। सारैं – ? ठेल्हतो – धकेलता हुआ, पीछे हटाता हुआ। गजां – हाथियों। है-थाट – अश्व दल। अटळ – अचल, स्थिर। रीठ – प्रहार। वागां – बजने पर। खगां – तलवारों। दुवै-राहां – (हिंदू और मुसलमान) दोनों धर्म। जोध – योद्धा, वीर। पूगो – पहुंच गया। भलो – ठीक। जूजबो – युद्ध करने को। सेल – भाला। रोळैं – प्रहार किए। दुहुं – दोनों। कूंत – भाला। चखतां-धणी – मुगल-बादशाह। चापडै – युद्ध मैदान में। रौद-घड़ – यवन सेना। पछाड़ैं – पराजित करके। अचळ – कीर्ति। जीवतां-सिभ – युद्ध में घायल होने वाला, युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला। जसो – जैसा या जसवंतसिंह। समर – युद्ध। चा – के। रवि – सूर्य। चंद – चांद। साखी – साक्षी।

कूंत – भाला। वार – वेला, समय। नांखै – झोंकता है। भिड़ज – घोड़ा। खसण – युद्ध। थाट – दल, सेना। खांगै – वीर, योद्धा, राठौड़। नांखियो – झोंक दिया। जसै – महाराजा जसवंत सिंह। महबूब – महाराजा जसवंतसिंह के घोड़े का नाम। निहंग – आकाश। गै-घड़ा – हाथी दल। बियै – द्वितीय, वंशज। गांगै – राव गांगा राठौड़ (जोधपुर)।

सामंतां[1] मो'र[2] चोधार यर[3] साजतौ,
समर बागो बिनै पातसाही[4]।
मारवै-राव तोखार वद मेलियौ,
मार सारां गजां भार माही[5] ॥२॥

झलण[6] करतौ घड़ा सेल रंगियै "जसौ",
जुध वट[7] खेलतौ "गजन" जायौ।
पमँग[8] पड़तालतौ[9] पछाड़ण पाड़तौ,
अफारै चकारै चाल आयौ ॥३॥

सायजादां[10] हूता सरस कर सैफळै,
मिटी राखी भुजां जांण माजा।
साज सकिया नहीं खळां दळां साजतां,
रण अकळ जीवतां-संभ राजा ॥४॥

(नाथौ सांदू)

गीत बडौ सांणोर ८

सकज वाहतौ सेल अण-ठेल नव साहसौ, खेलियै खेल खत्रवाट रौ खूब।
छोह लागै "जसै" ओरियौ छत्रपति, मोकळा लोहरै बोह "महबूब" ॥१॥

पाठान्तर—१. क. सेवतां। २. क. मोहर। ३. ख. अरि। ४. क. पातसाई। ग. पातसाहै। ५. ख. माहै। ६. क. जलण। ७. ख. जोधवटे। ८. क. पनंग। ९. क. परताल। १०. क. साहजादां।

शब्दार्थ—मो'र – हरावल। चोधार – भाला। यर – अरि, शत्रु। साजतौ – मारता हुआ। समर – युद्ध। बागो – हुआ। बिनै – दोनों। मारवै-राव – राठौड़ राजा, मारवाड़ का राजा। तोखार – घोड़ा। वद – बढ कर। मेलियौ – झोंक दिया। सारां – तलवारों, अस्त्रशास्त्रों। गजां-भार – हाथी दल। झलण – ......? घड़ा – सेना। सेल – भाला। जसौ – महाराजा जसवंतसिंह। जुध-वट – युद्ध मार्ग। गजन – महाराजा गजसिंह। जायौ – पुत्र। पमंग – घोड़ा। पड़ताळतौ – तेज गति से चलता हुआ। पछाड़ण – पछाड़ने वाला। पाड़तौ – मारता हुआ, गिराता हुआ। अफारै............? माजा – मर्यादा। साज – मार। साजतां – मारने पर। रण – युद्ध। अकळ – भयंकर, जबरदस्त। जीवतां-संभ – युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला वीर।

अण-ठेल – नहीं रुकने वाला वीर। नवसाहसौ – राठौड़ वीर। खत्रवाट – क्षेत्रियत्व। छोह – क्षोभ, जोश। जसै – महाराजा जसवंतसिंह। ओरियौ – झोंक दिया। छत्रपति – राजा। मोकळा – बहुत, अधिक। लोह – शस्त्र। बोह – प्रहार, बौछार।

कूंत आहावतौ ढाहतौ केवियां, अजड रांमत रमें कमंध त्यारा।
"गजरा" रै नांखिया बाज मचती गहरा, "सूर" हर आभरण पूर सारा ॥२॥

धीबिया छडाळां किता लोटे धरा, प्रगट रजपूत वट दाख पूरै।
"माल" दूजै वधे महाजुध मेलियौ, खाग अणियां तणै प्रगट खूरै ॥३॥

वाहि चौधार अरि ढाहिया पार विण, रूक सारगहियौ हिंदू राहां।
गवाडै प्रवाड़ा "जसौ" धारियां गुमर, समर गांजै बिहूं पातसाहां ॥४॥
(महेसदास आढौ)

गीत प्रहास सांणोर ६

वदन तेज कळपंत रो वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पोरस अमांमौ।
मंडांणौ हेक राजा घणै मछर सूं, साहजादां दुहुं तणै सांमहौ ॥१॥

भूप निधडक इसा रचै अणियां-भमर, त्रिलोकी नमै विध न्याय तोनूं।
दहलिया देख गजसिंघ रौ दीकरौ, दीकरा साहजांह तणा दोनूं ॥२॥

शब्दार्थ—कूंत – भाला। आवाहतौ – प्रहार करता हुआ। ढाहतौ – गिराता हुआ। केवियां – शत्रुओं। अजड़ – तलवार। रांमत – खेल। त्यारा – तब। गजरा – महाराजा गजसिंह। नांखिया – झोंक दिये। बाज – घोड़ा। गहरा – युद्ध। सूर – महाराजा सूरसिंह। पूर – पूर्ण, पूरा। धीबिया – संहार किए। छडाळां – भालों। किता – कितने ही। प्रगट – जाहिर। रजपूत-वट – क्षत्रियत्व, शौर्य। दाख – बता कर। पूरे – पूर्ण। माल – राव मालदेव। दूजै – वंशज। वधे – बढ कर। मेलियौ – झोंक दिया। खाग – तलवार। अणियां – नोंक, पैनी धाराएं। बाज – घोड़ा। खूरे – समूह में। वाहि – प्रहार करके। चौधार – भाला। ढाहिया – मार डाले, गिरा दिए। पार-विण – अपार, बहुत। रूक – तलवार। साराहियौ – प्रशंसा की। हिंदू-राहां – हिंदू धर्मावलंबियों। गवाडे – गायन करवा कर। प्रवाडा – युद्धों, शौर्य के कार्यों। जसौ – महाराजा जसवंतसिंह। गुमर – गर्व। समर – युद्ध। गांजै – पराजित करके। बिहूं – दोनों।

वदन – मुख। कळपंत – कल्पान्त, प्रलयकाल, नाश। वयळ – सूर्य। वाडव – वडवानल। ऊफणै – उबाल खाता है, जोश खाकर ऊपर उठता है। अमांमौ – अधिक, अपार। मंडांणौ – मंड गया, डट गया। घणै – अधिक। मछर – गर्व, अभिमान। दहुं – दोनों। तणै – के। सांमहौ – सन्मुख, सामने। निधडक – निर्भय, निशंक। अणियां-भमर – सेना में अग्र रहने वाला। त्रिलोकी – तीन लोक, संसार। विध – विधि। तोनूं – तुमको। दहलिया – भयभीत हुए। दीकरा – पुत्र। तणा – के।

उरड हड़वड़ मचै हूब-छड़ ओरियां, खूब "महबूब" अस भिड़ण खाथै ।
जंग जस बीजळां धार बूठौ "जसौ", मुरादाबगस 'अवरंग' माथै ॥३॥

उजेणी-खेत सुण वात अखिम्रात आ, छातपत बिया अहमेव छांडै ।
दुरत गत दिखण गुजरात रा दळां सूं, मुरधरा नाथ भाराथ मंडै ॥४॥

(रुघौ-मुहतौ वाळरवा वाळौ)

गीत छोटौ सांणोर १०

धुडहड़ियौ सुणै वाजतां ढोले, हव वागी कळपंत हुआ ।
धूहड उलटतां धमळा-गिर, खूंद पखै कुण घरै खवा ॥१॥

आयुसां तणा बरफ ऊपड़िया, बाहुड़िया गुड़िया बंगाळ ।
"जसौ" पहाड़ हेमचौ जांणै, तरफ तरफ तूटौ रिण ताळ ॥२॥

तूटै असण धसण तरवारां, झोक छडाळां दियै झळ ।
"गज-बंध" तणा हेम-गर गळिया, दुहै पतसाहां तणा दळ ॥३॥

"अवरंग" थाट झाट आछटिया, धड़ लूटिया भेळा धरण ।
वाळै हेम जिम बाहुडियौ, रूक रहळि दे झोक रण ॥४॥

(नाथौ सांदू)

शब्दार्थ—उरड – घमासान, या साहस । हड़वड – घबराने से उत्पन्न जल्दबाजी, खलबली । हूब-छड़ – भालों के प्रहार । ओरियां – झोंकने पर । अस – अश्व, घोड़ा । भिड़ण – भिड़ने को । खाथै – तेजी से । बीजळां – तलवारों । बूठौ – वर्षा की । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । मुरादा-बगस – शाहजहां का सबसे छोटा पुत्र मुरादबख्श । अवरंग – शाहजहां का तीसरा पुत्र औरंगजेब । माथै – पर, ऊपर । अखिम्रात – अभूतपूर्व । आ – यह । छातपत – छत्रपति, राजा । बिया – दूसरे । अहमेव – गर्व, अभिमान । दुरत – भयंकर, विकट । भाराथ – भारत । मंडै – रचा ।

धुड़हड़ियौ – आवेगपूर्वक या जोश के साथ उलट पड़ा, ध्वनि करता हुआ उलट पड़ा । हव – अब । वागी – विद्रोही । कळपंत – भयभीत । धूहड़ – राव धूहड़ के वंशज, राठौड़ । धमळा-गिर – धवल गिरि, हिमालय पर्वत । खूंद – बादशाह । पखै – पक्ष में, अथवा बिना । खवा – कंधा । आयुसां – ? तणा – के । बाहुड़िया – लौट गये, विसर्जन हो गये । गुड़िया – गिर गये । बंगाळ – यवन । जसौ – महाराजा जसवन्तसिंह । हेमचौ – हिम का । जांणै – मानो । तरफ तरफ – इधर-उधर, चारों ओर । रिण-ताळ – युद्धस्थल । असण – तीर, बाण । झोक – प्रहार । छडाळां – भालों । तणा=तनय – पुत्र । हेमगिर – हिमालय पर्वत । गळियां – पिघल जाने पर । दल – समूह । थाट – सेना । झाट – प्रहार । आछटिया – पछाड़े । धड़ – शरीर । भेळा – साथ । धरण – भूमि । वाळै – नाला ? हेम – हिमालय । बाहुड़ियौ – वापिस आया, वापिस मुड़ा । रूक – तलवार । रहळि – वायु का ठण्डा और महीन प्रवाह । झोक – प्रहार । रण – युद्ध ।

गीत बडो सांणोर ११

भडां पाडतां खूंदता घणा विपरीत भत, ऊपटै डोहतां थट्टै आरांण ।
दूहूं दळ वहता खिमंता देखिया, पाव "महबूब" जसराज रा पांण ॥१॥
आंठुआं चाढतां धकै साबळ अणी, खेलतां घसळ खत्रवाट आखेट ।
विढंतां सेस मण-गयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट ॥२॥
चापडै सरद्दां तूसळां चाढतां, पाड़ता चकारै गजां जिम पाथ ।
खळां करता जळण दळां दीठा खरा, है तणा चरण हिंदूपती हाथ ॥३॥
चौगांन करता खुरी वाहता चरण, सोहिया साह थाटां सिघाळा ।
जंग "महबूब" पै आंकवाळिया "जसा", वांक टळियौ भुजां "गजन" वाळा ॥४॥
(नाथौ सांदू)

गीत खुड़द सांणोर १२*

पुडी चडियौ "जसौ" सीस पत-साहां, सुभट जोत भेजवा सक ।
रच कंदळ त्रिण पौहर राखियौ, तरण-मंडळ नट कुंडळ तक ॥१॥

शब्दार्थ—भडां – योद्धाओं । पाडता – गिरता हुआ, मारता हुआ । खूंदता – रौंदता हुआ । भत – भांति, प्रकार । उपटै – ऊमड़ते हैं । डोहतां – ? । थटै – होता है । आरांण – युद्ध । दुहूं – दोनों । खिमंता – चमकता हुआ । पाव – पैर । जसराज – महाराजा जसवंतसिंह । पांण=पाणि – हाथ । आंठुआं – घोड़े के दोनों अगले पैरों और गर्दन के नीचे का भाग । आंठुआं चाढतां – घोड़े के अगाड़ी सेना को लेते हुए, घोड़े के वक्षस्थल का प्रहार दिलाते हुए । धकै – अगाड़ी । साबळ – भाला । अणी – नोंक । घसळ – ? खत्रवाट – क्षत्रियत्व । आखेट – शिकार । विढंतां – युद्ध करते समय । सेस – शेष-नाग । मण-गयण=गगनमणि – सूर्य । वधै – बढते हैं । नग – पैर, चरण । भिड़ज – घोड़ा । करग – हाथ । नेट – ? चापड़ै – युद्धस्थल में । सरद्दां – ? तूसळां – ? चकारै – ? । पाथ – अर्जुन । खळां – शत्रुओं । दीठा – देखे । खरा – निश्चय । है-हय – घोड़ा । खुरी – ? । वाहता – प्रहार करते हुए । सोहिया– शोभित हुए । साह – बादशाह । थाटां – सेनाओं । सिघाळा – वीर । पै – पैर । आंकवाळिया – पराकाष्ठा पर पहुंच गया । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । वांक – वक्रता, टेढ़ापन । टळियौ – दूर हो गया, मिट गया । गजन – महाराजा गजसिंह । वाळा – के ।

पुडी – युद्ध । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । सीस – पर, ऊपर । कंदळ– युध्द । त्रिण – तीन । पौहर – पहर । तरण-मंडळ – सूर्य मंडल । तक – प्रकार, तरह ।

---

*गीत नं० ४ से गीत नं० १२ तक इतिहास-प्रसिद्ध धरमत (उज्जैन) के युध्द सम्बन्धी हैं जिसके विषय में विशेष जानकारी देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है ।

चौरंग भडां मोख चालवतै, थीयौ तमासौ तेण थिर।
वादी तणा कड़ा जिम वणियौ, "सूर" तणौ बिबंद सर ॥२॥

समर उजेण रचै नव-सहसौ, सूर सहस भेदे नव थांन।
ख्याली चकर जहीं खेडेचै, अरक रथां भेदे असमांन ॥३॥

जुध "जसराज" जि तूं जोधारां, धारां मुहै निजोड़ घड़।
नट-कुंडळ जिम भेदे निसरै, भांण-मंडळ तिम छेद भड ॥४॥

संपेखियौ उभै सुरतांणां, सुरां नरां असुरां सारांह*।
हिंदू तुरक खिलाय हिलाया, गाजी रै बाजी गजसाह ॥५॥

(जगन्नाथ सांदू)

गीत-प्रहास सांणोर १३•

उभै फाबिया विरद "जसराज" खगि ऊजळा,
भुजां भारथ दिलो भार भळियौ।
वाळियौ आंक "ओरंग" सरिस वाजतै,
वळै ही मुरडतै आंक-वळियौ ॥१॥

चौरंग –युद्ध। थीयौ – हुआ। थिर – स्थिर। वादी – नट, बाजीगर। नव-सहसौ–राठौड़। ख्याली – बाजीगर। जहीं – जैसे। खेडेचै – राठौड़। अरक – सूर्य। धारां – तलवारों। मुहै – अगाड़ी। निजोड़ – काट कर, पृथक कर। भांण-मंडळ – सूर्य-मंडल। संपेखियौ – देखा। उभै – दोनों। सुरतांणां – बादशाहों।

फाबिया – शोभित हुए। विरद – विरुद, कीर्ति, यश। खगि – तलवार। ऊजळा – उज्ज्वल। भार उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। भळियौ – स्वीकार किया, जिम्मे लिया। वाळियौ-आंक – महान कार्य किया, पराकाष्टा का कार्य किया। सरिस – समान। वाजतै – युद्ध करने पर। वळै – फिर, और। मुरडतै – क्रोध करने पर, क्रुद्ध होने पर। आंक-वळियौ – पराकाष्टा का कार्य हो गया।

---

*गीत का अन्तिम द्वाला छंद-शास्त्र के अनुसार अशुद्ध है।

•गीत नं १३ और १४ का संबंधित इतिहास निम्न प्रकार है—"धरमत के युद्ध के पश्चात् औरंगजेब आगरे की तरफ चला। उस समय उसके पास ८०००० के लगभग सेना थी। इस महती सेना को लिए औरंगजेब और मुराद समूगढ (फतेहबाद) पहुँचे जो आगरे से साढे सात कोस हैं। वहीं पर दारा और औरंगजेब में मुकाबला हुआ और महा घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में दारा के बांई ओर की सेना का सेनापति राठौड़ रामसिंह ने बड़ा

ही वीरोचित कार्य किया। उसने शत्रु सेना की पंक्तियों को चीर कर मुरादबख्श को बड़ी वीरता और फुर्ती से घायल कर दिया। इतना ही नहीं वरन वह अम्बारी का रस्सा काट कर उसे हाथी से गिराने की कोशिश कर रहा था। मुराद घायल हो गया था और चारों ओर से राजपूत वीरों से घिर गया था। इस समय उस पर रामसिंह राठोड़ भूखे सिंह के समान टूट पड़ा। इतने में उसके एक तीर मर्म स्थान पर लगा जिससे वह अपने अभिष्ट कार्य में सफल नहीं हो सका और स्वर्ग को सिधारा।

इसी प्रकार उधर औरंगजेब पर महाराजा जसवंतसिंह का चचेरा भाई राठोड़ रूपसिंह चला। यह वीर आगे बढा और औरंगजेब के हाथी के पास पहुंचा और वहां पर घोड़े से उतर ऐसा पराक्रम दिखाया कि औरंगजेब उसके रण-कौशल, फुर्ती और साहस को देख कर चकित हो गया। इस वीर को जीवित पकड़ने की आज्ञा दी परन्तु वह रूपसिंह को पकड़वा नहीं सका। वह वीर रणभूमि में कई शत्रुओं को धराशायी करता हुआ स्वयं भी टुकड़े-टुकड़े होकर वीर-गति को प्राप्त हुआ। इस स्थान पर दारा को खलील-उल्ला खां ने कुमंत्रणा दी—वह पराजित होकर आगरे की तरफ भाग गया और वहां पर खजाने के कीमती जवाहरात और आवश्यकीय सामान लिया और वहां से दिल्ली चला गया।

औरंगजेब भी वहां से सीधा आगरे गया और अपने पुत्र सुलतान मुहम्मद को भेज वहां के किले पर अधिकार कर बादशाह शाहजहां को कैद कर लिया। यहां पर औरंगजेब ने विचार किया कि मैंने मुरादबख्श को राज्य का प्रलोभन देकर अपने शामिल किया था। बादशाह को तो कैद कर लिया परन्तु एक कंटक अभी अवशेष है। इसकी सफाई कर लेनी चाहिए। इस बात को मन में रखा और दारा के पीछे चला, मार्ग में जाते हुए मथुरा पहुँचा, वहां मुराद को खूब शराब पिलाया और उसे पागल बना दिया तथा इस अवस्था में इसको भी कैद कर लिया। अब उसके लिए दारा ही एक कंटक था, उसे मिटाने के लिए वह दिल्ली आया। इतने में दारा दिल्ली छोड़ कर लाहोर की ओर चला गया। औरंगजेब उसके पीछे गया। मार्ग में जाते सं० १७१५ की श्रावण सुदि १ (ई० सन् १६५८ ता० २१ जुलाई), अज्जाबाद में तख्त पर बैठा। इधर औरंगजेब ने वि० स० १७१५ भाद्रपद वदि ११ (ई० स० १६५८ ता० १४ अगस्त) आम्बेर के राजा जयसिंह के मारफत महाराजा जसवंतसिंह को अपने पास बुलाया। इस समझौते में राव अमरसिंह राठोड़ का पुत्र रायसिंह भी शामिल था। महाराजा जसवंतसिंह के पास बादशाह ने पत्र भेजा, उसमें लिखा था कि तुम स्वामिभक्त हो, मैं भी ऐसे स्वामिभक्तों को चाहता हूं। हमारे हजूर में हाजिर हो जाओ और खर्च के लिए सांभर के खजाने से पांच लाख रुपये और पचास हजार की हुंडियां भेजीं। महाराजा जसवंतसिंह ने भी समय की गति देख कर तदनुसार व्यवहार किया। जोधपुर से चल कर पंजाब में जहां औरंगजेब का पड़ाव था, वहां पहुंचे। औरंगजेब ने इनका इस समय भली भांति सत्कार किया। खासा खिलअत, जरदोजी झूल और चांदी के साज वाला एक हाथी और एक हथनी तथा एक बहुमूल्य जड़ाऊ तलवार दी। तत्पश्चात् औरंगजेब सतलज नदी पर पहुंचा तब उसने महाराजा को फिर खासा खिलअत, जड़ाऊ जमधर मोतियों का एक गुच्छा और एक परगना, जिस की आमदनी ढाई लाख रुपया

वार्षिक थी दिया, और महाराजा को कहा कि अब तुम दिल्ली जाओ और वहां की निगरानी रखो। महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब का आदेश पाकर वहां से वि० सं० १७१५ की आश्विन सुदि १ को दिल्ली पहुंच गये।

औरंगजेब दारा के पीछे चला। दारा ने लाहोर में किलेबंदी करने की चेष्टा की परंतु वह विफल रहा। अब वह पंजाब से मुलतान की तरफ चला। उस समय उसके हितैषियों ने उसको काबुल जाने की सलाह दी, परन्तु दुर्भाग्यवश दारा ने काबुल जाना स्वीकार नहीं किया और कच्छ में होता हुआ अहमदाबाद में पहुंचा। उस समय औरंगजेब का श्वसुर अहमद खां वहां सूबहदार था। उसने दारा के साथ बहुत अच्छा बरताव किया। तब यह खबर औरंगजेब को मिली कि दारा अहमदाबाद में है। उसने कई बार तो दारा के पीछे अहमदाबाद जाने का विचार किया परन्तु इतने में यह खबर उसको मिली कि शुजा दिल्ली पर आता है, सुनते ही उसने दारा के पीछे जाने का विचार छोड़ दिया और शुजा को रोकने के लिए तत्काल ही वि० सं० १७१५ के मार्गशीर्ष में मुलतान से रवाना हो दिल्ली पहुंचा। महाराजा जसवंतसिंहजी दिल्ली से औरंगजेब का स्वागत करने को सामने गए। उस समय उसने फिर महाराजा को खासा खिलअत और एक सदरी दी और जशन के उत्सव पर मार्गशीर्ष सुदि ९ को एक जड़ाऊ तुर्रा और दिया।

शाह शुजा वे खजुआ नामक एक छोटे गांव के निकट पड़ाव डाला और औरंगजेब की राह देखने लगा, क्यों कि उसको सूचना मिल गई थी कि औरंगजेब ने अपने पुत्र सुलतान मुहम्मद को बड़ी सेना देकर मुकाबले के लिए रवाना कर दिया है। ज्यों ही सुलतान मुहम्मद सेना लिए वहां आया त्यों ही औरंगजेब स्वयं भी वहां पहुंच गया। शुजा इलाहाबाद के समीप कड़ा नामक नगर में है, जो इलाहाबाद से चार कोस के फासले पर था। वि० सं० १७१५ माघ सुदि ६ (ई० सं० १६५९ ता० ४ जनवरी) को खजुऐ के पास लड़ाई के योग्य एक विशाल मैदान था उसको बीच में रख कर युद्ध की तैयारी हुई। उस समय महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब के दक्षिण भाग की सेना का संचालक था।

इसी समय शाह शुजा ने महाराजा जसवंतसिंह के पास पत्र भेजा। उसमें उसने लिखा था कि आप जैसे स्वामी-भक्त राठौड़ वीर के विद्यमान होते हुए भी औरंगजेब ने अपने वृद्ध पिता (शाहजहां) को बंदी कर दिया है तथा भाई-भतीजों का संहार करने के विचार में है। ऐसे महापापी कुटिल हत्यारे की सहायता न करके आप मेरी सहायता करें और बूढे शाहजहां को कारागार से मुक्त करें। महाराजा ने शुजा की प्रार्थना पर ध्यान दिया और संदेश भेजा कि आज रात्रि के पिछले प्रहर में मैं (महाराजा जसवंतसिंह) सुलतान मुहम्मद की सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दूंगा। आप भी ठीक इसी समय सामने से आकर विपक्षी की सेना पर टूट पड़ें। रात्रि के आक्रमण से औरंगजेब का बल एकदम क्षीण हो जायगा और अपना मनोरथ सफल हो जायगा। महाराजा ने वैसा ही किया। उसी रात्रि में राठोड़ महेशदास, रामसिंह, हरदास और चौहान बलदेव आदि वीरों के साथ सुलतान मुहम्मद की सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दिया। रात्रि का समय था एकाएक आक्रमण हुआ जिससे औरंगजेब की सेना घबरा कर इधर उधर भागने लगी। कहा जाता है कि आधी

कीध तैं तिका राव-रांण जांणै कमध, रहावण वात सिर दुवै राहां ।
"जसा" अखिग्रात ग्रै साहि सूं जूटतां, सार बळि लूटतां पातसाही ।।२।।

"गजन" रा नमो तो पराक्रम खत्री-गुर, समर दुहुं तणा रवि-चंद साखी ।
खागि दाखै ग्रचळ खूंद वड खेंगरे, दूंद करि खूंद सू ग्रचड़ दाखी ।।३।।

शब्दार्थ—कीध – किया । तैं – तूने । तिका – वह । राव-रांण – राजा महाराजा । जांणै – जानते हैं । कमध – राठौड़ । रहावण – रखने के लिए । सिर – ऊपर, पर । दुवै – दोनों । राहां – धर्मों । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । अखिआत – अद्‌भुत, अपूर्व । ग्रै – ये । साहि – बादशाह । जूटतां – युद्ध करने पर । सार – तलवार । बळि – बल, शक्ति । गजन – महाराजा गजसिंह । खत्री-गुर – महान् वीर, राजा । समर – युद्ध । दहुँ – दोनों । तणा – के । रवि-चंद – चांद सूर्य । साखी – साक्षी । दाखै – कह कर, प्रकट कर । ग्रचळ – ग्रटल, कीर्ति । खूंद – यवन, बादशाह । वड – बड़ा, महान् । खेंगरे – संहार कर के, मार कर के । दूंद – द्वन्द्व-युद्ध । करि – करके । ग्रचड़ – कीर्ति । दाखी – प्रकट की, बताई ।

के करीब सेना तितर बितर हो गई । परन्तु शुजा वहां नियत समय पर नहीं ग्रा सका । यदि वह उस समय वहां पर पहुंच जाता तो विजय उसके हाथ ही थी । परन्तु बादशाही तख्त ग्रौरंगजेब के भाग्य में बदा था । महाराजा ने सेना तितर बितर हुई देख बादशाही खजाना ग्रौर सामान लूट लिया ग्रौर शुजा की प्रतीक्षा में कुछ दूर हट कर ठहर गए । जब शुजा को ग्राता नहीं देखा तो प्रातः काल होते ही महाराजा ने मारवाड़ की ग्रोर गमन कर दिया । शुजा देरी से पहुंचा ।

ग्रब दारा से संबंधित वृतान्त भी पढिए । शुजा से निपट कर ग्रौरंगजेब ने एक बड़ी सेना ग्रमीनखां मीरबख्शी को देकर जोधपुर पर भेजी तथा जोधपुर का राज्य राव ग्रमरसिंह के पुत्र रायसिंह के नाम लिख दिया । ग्रौरंगजेब को महाराजा जसवंतसिंह का बड़ा भय था ग्रतः वह स्वयं भी ग्रजमेर जाने का बहाना कर वहां से रवाने हुग्रा । जब महाराजा को यह संदेश मिला कि जोधपुर राव रायसिंह को लिख दिया है ग्रौर उसकी तामील करने के लिए ग्रमीन खां एक बड़ी सेना लेकर ग्रा रहा है तो महाराजा ने ग्रासोप ठाकुर कूंपावत नाहर खां राजसिंहोत ग्रौर मुहणोत नैणसी को दस हजार सेना के साथ ग्रौरंगजेब की सेना से मुकाबला करने के लिए रवाने कर दी । उसने मेड़ता नगर में पड़ाव डाला । तत्पश्चात् महाराजा स्वयं एक बड़ी सेना लेकर जोधपुर से बीलाड़ा ग्राए । इसी ग्रर्से में दारा शिकोह गुजरात में था । उसने ग्रहमदाबाद के सूबेदार को निकाल दिया । गुजरात से दारा ने सहायता के लिए महाराजा के नाम पत्र लिख भेजा कि यह समय है, ग्राप हमारी सहायता करें । महाराजा ने भी सहायता देना स्वीकार कर लिया । उपर्युक्त ऐतिहासिक विवरण का ही वर्णन इन गीतों में हुग्रा है । ग्रतः गीतों के स्पष्टीकरण के लिए ही इतना विस्तार-पूर्वक यह नोट दिया गया है ।

साह कळि सेन लूटै तखत साह चा, वजाड़े "जोध" हर जैत वाजा।
दीपिया ऊजळा प्रवाडा दुवै दुहु, राज रा भुज सुजस महाराजा ॥४॥
(नरहरदास बारहठ)

गीत बड़ो सांणोर १४

तरफ हुओ "दारा" तणी हुओ "सूजा" तरफ, पिढु लिया खजांना पार पखै।
खून जिता करै "जसो" बळ खाग रै, रोद इता राह मांही राखै ॥१॥
लूट माल सहर खोस खेळ लियौ, आवियौ मिळण कर कटक आटोप।
छत्र-धरण दिली बैठो भला छिपावै, कमध रा गुना अर आपरो कोप ॥२॥
आगरै हवेली साहजां अटकियौ, हूओ कुळ कातल करण हेवा।
इसौ चिकतौ जिको मन माहि आवटै, कमंध सूं सकै नहीं मांग केवा ॥३॥
उजैणी खेत "महबूब" आफाळियौ, गजां कूंतां भलां अभनमै "गंग"।
जद लियौ परख ओगुण न कुं जतावै, आंख रै फरूकै साह "अवरंग" ॥४॥
हियै होळो हुअै दीध दुख हजारां, विचारै नित मुख सूं वाखांणै।
सूरपण "जसा" महराज रो जगत सिर, जिसौ है तिसौ अवरग जांणै ॥५॥
(नरहरदास बारहठ)

शब्दार्थ—साह – बादशाह। कळि – युद्ध। चा – का। वजाड़ै – ध्वनिमान कर के, बजा कर। जोध – राव जोधा। हर – वंशज। जैत – विजय, जीत। दीपिया – शोभित हुए। प्रवाड़ा – युद्ध, युद्ध के कार्य। दुवै – दोनों। राज – श्रीमान्, आप।

पिढु – ? पार-पखै - पर-पक्ष, शत्रुपक्ष। खून – गुनाह, अपराध। जसो – महाराजा जसवंतसिंह। रोद – यवन। इता – इतने। राह – मार्ग। मांही – में। खेळ – मुखिया, प्रधान। कटक – सेना, दल। आटोप – विस्तृत, बड़ी। छत्र-धरण – बादशाह, राजा। भला – ठीक। कमध – राठोड़। अर – और। साहजां – बादशाह शाहजहां। अटकियौ – रोक में दिया, बंदी बनाया। कातल – कातिल, हत्या करने वाला। हेवा – आदी। इसौ – ऐसा। चिकतौ – चकताई वंश का। आवटै – कुढता है, जलन करता है। केवा – गुनाह, अपराध। आफाळियौ – टक्कर ली, भिड़ाया। कूंतां भालो। भलां – ठीक। अभनमै – वंशज। गंग – राव गांगा। जद – जब। परख – परीक्षा कर के। ओगुण – अवगुण, अपराध, गुनाह। न कुं – कुछ भी नहीं। जतावै – प्रकट करता है। आंख रै फरूकै – आंख के इशारे पर, संकेत पर। साह अवरंग – औरंगजेब बादशाह। वाखांणै – प्रशंसा करता है। सूरपण – शौर्य, बहादुरी। जसा महराज – महाराजा जसवंतसिंह। सिर – में, पर, ऊपर। जिसौ – जैसा। तिसौ – तैसा, वैसा।

गीत प्रहास सांणोर १५

समर सगत-पुर मँडोवर छतर-घर समोसर,
तकर कर बजर बर धजर तांजो।
उसर बगतर ऊम्रर वीर[1] सांसर म्रतर,
"गंग" हर कळोघर कहर[2] गांजो ॥१॥

मेलियो "जसै" वळ दिली-दळ मचकतां,
प्रबळ भुज बळ सरळ तरळ पूगो।
घुब्बै[3] मुगळ[4] म्रकळ[5] कांठळां सरल घर,
म्ररळ साबळ भरळ करळ ऊगो ॥२॥

वार विकरार सिरदार विध वाहियो,
समर भर भार[6] घर भार[7] सूरै।
सार सेलार ऊम्रार भंभार[8] सर,
पार चोधार कर पार पूगो ॥३॥

काळ लंकाळ करठाळ जड़ियो कमंध,
वहै विकराळ रगताळ[9] वांई।

पाठान्तर

१. क. मगर। २. क. कहै। ३. क. घ्रबै। ४. क. मँगल। ५. ख. सदळ। ६. क. भीर। ७. क. धार घर। ८. ख. बंभार। ९. ख. रत खाळ।

शब्दार्थ—समर – युद्ध। सगत-पुर – दिल्ली। छतर-घर – राजा, बादशाह। समोसर – बराबर। तकर – त्वरा। बजर – वज्र। धजर – भाला। तांजो – तेरा। उसर – म्रसुर, यवन। बगतर – कवच। ऊम्रर – उर, वक्षस्थल। सांसर – ? गंग – राव गांगा। कहर – भयंकर, म्रापत्ति। गांजो – भाला। जसै – महाराजा जसवंतसिंह। वळ – फिर। मचकतां – दबने पर। म्रकळ – ? कांठळां – घटाएं। सरळ – ? । म्ररळ – ? । साबळ – भाला। भरळ – चमक, चमकयुक्त। करळ – भयंकर। ऊगो – उदय हुम्रा। वार – समय। विकरार – भयंकर। वाहियो – चलाया। सार – शस्त्र। सेलार – भाला। ऊम्रार – वक्षस्थल में। भंभार – बड़ा छेद। चोधार – भाला। लंकाळ – वीर। करठाळ – भाला। जड़ियो – प्रहार किया। कमंध – राठौड़। रगताळ – खून।

भेद छकडाळ चगताळ चूनाळ[1] भिद,
ताळ गो झाळ भर धरण तांई ॥४॥

खतम अवसांण खैपांण रहिया थकत[2],
रीझियौ भांण दइवांण[3] राजी ।
सिव सगत सवाडा अखाड़ा सेल रा,
गवाड़ै प्रवाड़ा सुतन "गाजी" ॥५॥

(नाथौ सांदू)

गीत बडो सांणोर १६

कहर करांमत "जसा" हिंदवांण चा सहसकर,
झूझ कुण छात-धर अवर झालै ।
तेज सुजडां तणै ताप सत्र "गजण" तण,
हेम - अनड़ां ज्यूं हो गळै हालै ॥१॥

पिता जमराज खट - तीस करणाधपत,
ओपियौ जगत कीधां उजाळौ ।
धोम तो खाग वरियांम जोधां - धणी,
प्रसण पिघळै चलै ज्युं हिज पाळौ ॥२॥

पाठान्तर

१. ख. चुगलाल । २. क. थरक । ३. क. हिंदवांण ।

शब्दार्थ—छकड़ाळ – कवच । चगताळ – यवन । चूनाळ – कलेजा । धरण – पृथ्वी । तांई – तक । खतम – पूरा । अवसांण – अवसर । खैपांण – यवन । रीझियौ – प्रसन्न हुआ । सवाडा – सवाया, विशेष । अखाड़ा – युद्ध । सेल – भाला । गवाड़ै – गवाते हैं । प्रवाड़ा – युद्ध । सुतन – पुत्र । गाजी – महाराजा गजसिंह ।

कहर – आपत्ति, भयंकर । करांमत – चमत्कार । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । हिंदवांण चा – हिन्दुस्तान का, या हिंदुओं का । सहसकर – सूर्य । झूझ – युद्ध । छात-धर – राजा । अवर – अन्य, और । झालै – सहन कर सके । सुजडां – तलवारों । तणै – के । ताप – तेज । सत्र – शत्रु । गजण – महाराजा गजसिंह । तण–तनय, पुत्र । हेम-अनड़ां – हिम पर्वतों, बर्फ के पर्वतों । हालै – चला जाता है । करणाधपत–सूर्य । ओपियौ – शोभित हुआ । कीधां – किए हुए । उजाळौ – प्रकाश । प्रसण – शत्रु । पिघळै – द्रवीभूत होते हैं । पाळौ – बर्फ ।

कळकळां दळां चहुंवळां फाबै करण,
घरै वार हेकल पाट - ऊधोर ।
तूटती जाय वीजू - जळां तणौ ताव,
जळां बाधां ज्युंही खळां चौ जोर ।।३।।
कहर लसकर डमर पसर घरहर कियां,
"सूर" हर तेज खत्रवाट साजा ।
हेम-गर ज्यूं ही गळै यर हर हलै,
रूक नद कर तणौ ताप राजा ।।४।।

गीत पंखाळो १७

हळवळ दळ अकळ "जसा" हीलोहळ, भळहळ कूंत हद बीज भत्त ।
झळहळ खाग दोयण स झाडण, गढ अरियण घरां विसम गत्त ।।१।।
बिनै सबळ भुज अकळ सहंस बळ, खळ दळ खेरू करण खग ।
'गजपत' सुतन सनढ गढ गाहण, कोय न तो सरखौ करग ।।२।।
फौजां लगस तेजियां फरहर, घर-हर त्रंबागळ दळ घेर ।
कोटां मोटां कळह केवियां, "जोधा" हरौ करै जुध जैर ।।३।।
(सादूळजी खिड़ियौ)

शब्दार्थ—कळकळां – चमचमाते हुए । चहुंवळां – चारों ओर । हेकल – एक । पाट-ऊधोर – राजा । वीजूजळां – तलवार । तणौ – का । खळां – शत्रुओं । चौ– का । डमर – समूह । सूर – महाराजा सूरसिंह । खत्रवाट – क्षत्रियत्व । साजा – पूर्ण, अखंड, कुशल । हेम-गर – हिमालय पर्वत । यर – अरि, शत्रु । हर – वंशज । हलै – चलते हैं । रूक – तलवार । नद – नदी ।

हळवळ – चलने या गतिमान होने की ध्वनि, चाल, गति । दळ – सेना, फौज । अकळ – महान, जबरदस्त । जसा – महाराजा जसवन्तसिंह । हीलोहळ – समुद्र, सागर । झळहळ – चमकता है, दीपता है, चमक । कूंत – भाला । हद – तेज, बहुत । बीज – बिजली । भत्त – भांति, प्रकार । झळहळ – देदीप्यमान, चमक-दमक-युक्त । खाग – तलवार । दोयण – शत्रु । स-झाड़ण – संहार करने को, मारने को । अरियण – शत्रु । विसम – विषम, भयंकर । गत्त – गति, हालत । बिनै – दोनों । अकळ – बहुत ? । सहस-बळ – अधिक शक्तिशाली । खळ – शत्रु । खेरू – संहार, ध्वंस । खग – तलवार । गजपत – महाराजा गजसिंह । सुतन – पुत्र । सनढ – वीर । गाहण – ध्वंस करने को । तो – तेरे । सरखौ – समान, सदृश । करग – तलवार । लगस – लम्बकायमान, पंक्ति, समूह । तेजियां – घोड़ों । फरहर – ? । घर-हर – ध्वनि । त्रंबागळ – नक्कारा । घेर – आवेष्ठन । मोटां – बड़ों, महान । कळह – युद्ध । केवियां – शत्रुओं । जोधा – राव जोधा । हरौ – वंशज । जेर – तंग, परेशान ।

गीत वेलियो सांणोर १८

चौधारां लाल लाल खग चौरंग, वयँडां थँडां ओरवै बाज।
फौजां कहर तिमर भर फाड़े, रवि जिम जळहळियौ "जसराज" ॥१॥

अत महबूब तेज ऊफणतै, घण आसुर घड़ रो धण घाव।
"गजपत" तणौ वहै खत्रियां-गुर, रज-पत ज्युं ही प्रथीपत राव ॥२॥

चौधारां लाखीक चाडतो, किलम पंचाहर कीयां कर।
राड़ विभाड़ सोहियौ राजा, अरक्क ज्यूंई दळ फाड यर ॥३॥

अस सपतास आलमां ऊपर, खळ दळ राकस वाहे खग्ग।
कमंधां घर ऊजळो कळहण, जग-चख जिम पेखीयौ जग्ग ॥४॥

(चांवडदांन बारहठ)

गीत छोटो सांणोर १९

दध पाजा टळी कना छिळियौ दळ, ताजा भड़ साजा है तंत।
राजा आज सवारा रुड़िया, बाजा कै ऊपर "जसवंत" ॥१॥

शब्दार्थ—चौधारां – भालों। खग – तलवार। चौरंग – युद्ध-स्थल, युद्ध। वयँडां – हाथियों। थँडां – सेनाओं। ओरवै – झोंकता है। बाज – घोड़ा। कहर – भयंकर। तिमर – अंधेरा। भर – पूर्ण, घना। फाड़ै – विदीर्ण करता है। रवि – सूर्य। जळहळियौ – प्रकाशमान हुआ, देदीप्यमान हुआ। जसराज – महाराजा जसवंत सिंह। अत – अति, अधिक। महबूब – घोड़े का नाम। ऊफणतै – जोश खाते हुए। घण – बहुत। आसुर – यवन। घड़ – सेना। गजपत – महाराजा गजसिंह। तणौ – तनय, पुत्र। वहै – चलता है। खत्रियां-गुर – वीर, राजा। रज-पत – कांति, दीप्ति वाला (सूर्य)। ज्युंही – जैसे ही। प्रथीपत-राव – राजा। लाखीक – लाख रुपयों का, घोड़ा। किलम – यवन। पंचा-हर – ? । कीयां – किए हुए। राड़ – युद्ध, लड़ाई। विभाड़ – नाश कर, मिटा कर, संहार कर। सोहियौ – शोभित हुआ। अरक्क – सूर्य। फाड – विदीर्ण करके। यर-अरि – शत्रु। अस सपतास – सप्ताश्व। आलमां – संसार। कळहण – युद्ध। जग-चख – सूर्य। पेखियौ – देखा। जग्ग – संसार।

दध – उदधि, समुद्र, सागर। पाजा – सीमा, मर्यादा। टळी – पृथक हुई, उल्लंघन हुई। कना – अथवा, या। साजा – सुसज्जित। है-हय – घोड़ा। तंत – तंत्र, सेना। सवारा – विशेष, सवेरा, प्रातःकाल। रुडिया – बजे, प्रतिध्वनित हुए। वाजा – वाद्य। कै – किस। ऊपर – पर।

थरहर सेस कोम कँध थरकै, जोध अडर कै माथै जोर ।
फरहर चींध नवरै फारक, घरहर सिलह त्रंबाळां घोर ।।२।।

तरवर डहै ऊक्कसै ताजी, परबत जुअळै हुअै पण ।
मद-भर वहै किणै सिर मारू, त्रहै दमांमा "गजन" तण ।।३।।

वदै महल छतीस राज-वंस, कमध नगारा त्रहळ कियै ।
दहल पड़ै अवरां देसोतां, थारै सहल सिकार थियै ।।४।।

(रुघौ मुहतौ)

गीत वेलियो सांणोर २०*

अरि सीस धरै ज्यां राख करे अंग, पूगै रण साचो पारीख ।
... ... ।।१।।

वप असहथां प्राजळै विढतां, पूगो कीरत समँदां पाज ।
जटी करग आभूखण जिसड़ौ, जडळग तूझ तणौ जसराज ।।२।।

शब्दार्थ—थरहर – कंपायमान । कोम – कूर्म, कच्छपावतार । थरकै – कंपायमान होते हैं । जोध – वीर । अडर – निर्भय । माथै – पर, ऊपर । फरहर – लहलहाना । चींध – ध्वजा, झंडा । नवरै – ? फारक – शत्रु । घरहर – आवाज । सिलह – अस्त्र-शस्त्र । त्रंबाळां – नगारों । घोर – ध्वनि । तरवर – वृक्ष । डहै – ? ऊक्कसै – छलांग भरते हैं । ताजी – घोड़ा । जुअळै – पैर । पण – भी । मद-भर – हाथी । किणै – किस । सिर – ऊपर, पर । मारू – राठौड़ । त्रहै – बजते हैं । दमांमा – नगाड़ा, या ढोल । गजन – महाराजा गजसिंह । तण – तनय, पुत्र । वदै – कहती है । महल – महिला, स्त्री । कमध – राठौड़ । त्रहळ – ध्वनिमान । दहल – भय, आतंक । अवरां – अन्य । देसोतां – राजाओं । थारै – तेरे । सहल – सहज, साधारण । थियै – होती है ।

सांची – सत्य । पारीख – परीक्षा ।

वप – वपु, शरीर । असहथां – शत्रुओं । प्राजळै – जलता है । विढतां – युद्ध करते (समय) । पूगी – पहुंच गई । पाज – तट, सीमा । जटी – महादेव । करग– हाथ । जिसड़ौ – जैसा । जडळग – तरवार । तूझतणौ – तेरा ।

---

*गीत नं० १५ से गीत नं० २० तक की रचनाओं में महाराजा के भाले, तलवार, सेना आदि के वर्णन में कवियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के अनूठे भावों को प्रदर्शित किए हैं ।

जग सारौ जांणै जोधपुरा, चौरंग तणी वार अण-चूक ।
जुडतां लाख दोयणां जाळै, रूद्र कड़ा सारीखौ रूक ॥३॥

हाथै तूझ कमाळी हाथै, कळह समै चालतो काळ ।
करणा भसम रिमां नवकोटा, कांकण भसम जिसौ करमाळ ॥४॥

(जगन्नाथ सांदू)

गीत-प्रहास साणोर २१*

प्रबळ दुरंग "वधनोर" वस करंतै जगपति, दाह दावायतां सबळ दीधौ ।
पहट थीया कटक कळै खैंगां-पगै, केल-पुर धूंधळौ गिरंद कीधौ ॥१॥

हैमरां हींस नर लसकरां भ्रह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वैंडा ।
आहाडा खंड रज-मंडळ ओछाइयौ, पहाडां अगम सर सुगम पैंडा ॥२॥

हाक सुण गरद छायौ दुडै वेंर हर, वडम जस डाक जग सरै वाजी ।
लसकरां तणा राह वळोवळ लूंबिया, गिरवरां ऊपरा सुतन "गाजी" ॥३॥

शब्दार्थ—चौरंग – युद्ध । वार – प्रहार । अणचूक – अमोघ । जुडतां – युद्ध करते समय । दोयणां – शत्रुओं । रूद्र - महादेव । सारीखौ – समान, सदृश । रूक – तलवार । हाथै तूझ – तेरे हाथ में । कमाळी हाथै – महादेव के हाथ में । कळह – युद्ध । काळ – मृत्यु, यमराज । नवकोटा – नवकोट (मारवाड़) का अधिपति, राठौड़ । कांकण – कंकन, वलय । भसम – भस्मासुर । जिसौ – जैसा । करमाळ–तलवार ।

दुरंग – दुर्ग, किला । जगपति – राजा दाह – जलन, कुढन । दावायतां – शत्रुओं । दीधौ – दिया । पहट – ध्वस्त । थीया – हो गये । वळै – फिर, और । खैंगां – घोड़ों । पगै – पैरों से । केल-पुर – सीसोदिया वंश का राजपूत । गिरंद – पर्वत । कीधौ – किया । हैमरां-हयवरां – घोड़ों । हींस – हिनहिनाहट । भ्रह – ध्वनि । सिंधुर – हाथी । कहर – भयंकर, जबरदस्त । समर-वैंडा – युद्धोन्मत्त । आहाडा – गहलोत वंश का क्षत्रिय । रजमंडळ – धूलि, समूह । ओछाइयौ – आच्छादित हुआ । अगम – दुर्गम्य । सर – ऊपर, पर । पैंडा – यात्रा, गमन । हाक – आवाज, पुकार । गरद – धूलि । छायौ – आच्छादित हो गया । दुडै – भाग गये । वैर-हर – शत्रु, वंशज । वडम – बड़प्पन, महानता । डाक – नगाड़ा । वळोवळ – चारों ओर । लूंबिया – झूम गये । सुतन – पुत्र । गाजी – महाराज गजसिंह ।

---

*इस गीत का वास्तविक इतिहास उपलब्ध नहीं हुआ ।

अकळ खूमांण यर रजी अवछाइयौ, वाजै रस त्रंबागळ प्रबळ वाजा।
फौज आगळ गजां बरंग धजां फब, राज पंथ सुरंगां सीस राजा ॥४॥
(अज्ञात)

गीत सोहणो २२

मन-भावै चलै खत्रीवट मारग, वीरत दावै घड़ा वरै।
राजा-पती "जसो" महाराजा, कमध सुहावै जकूं करै ॥१॥
दोखियां तणी घणी धर दाबै, फाबै जुध जुध करै फतै।
साह तूझ संक वहै "गजन" सुत, मैंमत चित वहै आप मतै ॥२॥
पालै दळद सेवगां पांणां, दुरंग पालटै "खुरम" दुवै।
"सूजा" हरौ असहतां सालै, हालै मन मांनियै हुवै ॥३॥
खत्रवट चलै "जसौ" खेड़ेचौ, डिगियौ व्रहमंड भुजां डहै।
रंग पारकै न रीझै राजा, राजा रंग आपरै रहै ॥४॥
(नाथौ सांदू)

गीत बडौ सांणोर २३

"जसै" पाड़िया खेत भड नेत-बंधा जिकै, लगै परमळ सदळ लोह लागै।
सबळ पत्र भरै रत्र पी न सकै सकति, अलिअळां तणा गुंजार आगै ॥१॥

शब्दार्थ—अकळ – सम्पूर्ण, पूरा। खूमांण – रावल खूमान के वंशजों का देश। रजी – धूलि। अवछाइयौ – आच्छादित हो गया। रस – ? । त्रंबागळ – नगाड़ा। आगळ – अगाड़ी। बरंग – ? ? धजां – ध्वजाएं। फब – शोभित होकर। सुरंगां – ? । सीस – ऊपर।

खत्रीवट – क्षत्रियत्व। वीरत – शौर्य, बहादुरी। दावै – कारण, हेतु। घड़ां – सेना। वरै – वरण करता है, स्वीकार करता है। जसौ – महाराजा जसवंतसिंह। दोखियां – शत्रुओं। तणी – की। घणी – अधिक। धर – भूमि, धरा। दाबै – अधिकार में करता है। साह – बादशाह। संक – भय, डर। गजन – महाराजा गजसिंह। मैंमत – मस्त, मदोन्मत्त। मतै – विचार। पालै – रोकता है, मिटाता है। दळद – कंगाली, निर्धनता। पांणां – भुजाओं। दुवै – पुत्र, वंशज। सूजा – राव सूजा। हरौ – वंशज। असहतां – शत्रुओं। सालै – खटकता है। हालै – चलता है। खत्रवट – क्षत्रियत्व। खेड़ेचौ – राठौड़। व्रहमंड – आकाश। डहै – सम्हालता है, थामता है। रंग – स्वभाव, आनंद। पारकै – दूसरे के। रीझै – प्रसन्न होता है।

पाड़िया – मार डाले, वीर गति को पहुंचा दिये। खेत – युद्धस्थल। भड़ – योद्धा। नेत-बंधा – झंडा धारी। जिकै – वे। परमळ – महक, सुगंध। लोह – शस्त्र। रत्र – रक्त, खून। अलिअळां – भौरे। तणा – के। आगै – अगाड़ी।

जोधपुर धणी चा अणी लाग जीयां, लाख सत्र पोढिया अतर लायै।
कहर भरिया खपर पिय न सकै सकति, इसा मंडै डंमर भमर आयै ॥२॥

पोवतो साबळां खळां बाहां-प्रलंब, जोवतो सूरमा जूझवी जाति।
जोगणी तणा भरिया पत्तर जांमिया, भमै मधुकर भँवर अनोखी भांति ॥३॥

अंजसिया "माल" सग्रांम "उदा" उभै, धमळ "गज-बंध" रो आव धूरी।
कारणां भूतचा नाख चंपा कुसम, पियै रत दियै आसीस पूरी ॥४॥

(नाथो रोहडियो)

गीत खडो सांणोर २४*

कुतब गौस अबदाळ सूफी अनै कळंदर, पीर-जादा मिळै सांझ परभात।
कांन पातसाह रा भरै एक राह कज, वरै नह पडै "जसवंत" जितै वात ॥१॥

मौलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळां कर पेल।
मेच्छ वांछै जिको हिंद इकळीम मज्झ, खडो राजा जितै वणै नह खेल ॥२॥

शब्दार्थ—अणी – भाला। जीयां – जिनके। सत्र – शत्रु। अतर – इत्र। कहर – भयंकर। मंडै – रचते हैं। डमर – समूह। पोवतो – पिरोता हुआ, छेदता हुआ। साबळां – भालों। खळां – शत्रुओं। बाहां प्रलंब – आजानबाहु। सूरमा – वीर। जूझवी – युद्ध की ? पत्तर – पत्र, खप्पड़ा। जांमिया – जम गये। मधुकर– मधु को बनाने वाला भँवर, भौंरा। अंजसिया – गर्व किया। माल – राव मालदेव। उदा – राजा उदयसिंह। उभै – दोनों। धमळ – वीर। गजबंध – महाराजा गजसिंह। धूरी – ? रत – रक्त खून।

कुतब – ? । गौस – मुसलमान फकीरों की एक उपाधि। अबदाळ – अब्दाल, एक प्रकार के मुसलमान वली या महात्मा, धार्मिक व्यक्ति। सूफी – बहुत उदार विचारों का मुसलमानों का एक सम्प्रदाय। अनै – और। कळंदर – एक प्रकार के मुसलमान साधु और त्यागी। पीरजादा – पीरों के पुत्र। सांझ – संध्या। कांन पतसाह रा भरै – बादशाह को बहुत सी अंट-संट बातें सुनाते हैं, बादशाह को बहकाते हैं। एक राह कज – एक ही सम्प्रदाय के लिए। वरै नह पड़े – वह बात उनकी नहीं चलती है। जितै – जब तक। कराड़ै – करवाते हैं। पाडजै – गिरा दिरावें। देवहर – देवालय। पेल – भेज कर। मेच्छ – म्लेच्छ, यवन। वांछै – चाहते हैं। जिको – वह हिंद – हिंदुस्तान। इकलीम – अकलीम, देश, मुल्क। मज्झ – मध्य में।

---

*कट्टर इस्लाम धर्मावलंबी कलंदर गौस, मुल्ला, मौलवी बादशाह को सदैव हिंदु धर्म के विरुद्ध आचरण करने हेतु कुरान शरीफ की प्रबल दलीलें देते हैं। बादशाह भी उन्हीं की इच्छानुसार हिंदुओं के साथ अन्याय, अत्याचार करना चाहता है परन्तु महाराजा जसवन्तसिंह की जीवितावस्था में वह ऐसा करने में असफल रहता है, गीत नं० २४ में उत्तम वर्णन है।

अरथ कर नवा फुरमांण री आयतां, लिया कर साहरै कांन लागै।
कहै मखदूम जुग हेक मजहब करो, "जसो" हिंदू-धरम मदत जागै ॥३॥

देवळां मूरतां हूंत जो किणी दिन, खुरम रो डीकरो कुबध खेलै।
दूठ तो तुरत गजसींघ रो दीकरो, मसीतां आभ रा धुंआ मेलै ॥४॥

सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसो निरंजण जाप।
राह हिंदू-धरम तणो सावत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणो परताप ॥५॥

(नरहरदास बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर २५*

हियै धारियां खांन जुवान छिबतो निहंग, अवर नर विसरै तणा अचंभा।
विखम गत देख "जसराज" खग वाहतो, रही रथ साह गज-गाह रंभा ॥१॥

शब्दार्थ—फुरमांण – राजकीय आज्ञापत्र, फरमान। आयतां – कुरान के वाक्यों। कर – हाथ। मखदूम – एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी। जसो – महाराजा जसवंतसिंह। देवळां – देवालयों। मूरतां – मूर्तियों। हूंत – से। किणी – किसी। डीकरो – पुत्र। कुबध-खेले – शरारत करता है। दूठ – वीर। तो – तब। दीकरो-पुत्र। मसीतां – मसजिदों। सुरह-सुरभि – गाय। दुज-द्विज – ब्राह्मण। निगम – वेद। सासतर – शास्त्र। प्रगट – प्रकट। धणी – राजा। तणो – का। परताप– प्रभाव, बदौलत।

छिबतो – स्पर्श करता हुआ। निहंग – आकाश। विसरै – विस्मरण होते हैं। अचंभा – आश्चर्य। गज-गाह – गजगामिनी। रंभा – अप्सरा।

---

*गीत नं० २५ और २६ में कवियों ने बड़ी अनूठी युक्ति से महाराजा जसवंतसिंह के धरमत के युद्ध से पलायन करने पर व्यंग कसा है। प्रथम गीत में महाराजा ने बड़े दल-बल के साथ मुगळ साहजादों (औरंगजेब और मुराद) से बड़ा विकट युद्ध किया। इस युद्ध को आकाश स्थित दो अप्सराएं देख रही थीं। उन दोनों अप्सराओं ने दोनों ही शाहजादों को वरण करने का दृढ निश्चय मन में ठान लिया परन्तु दुर्भाग्यवश महाराजा उक्त शाहजादों को बिना वीर गति प्राप्त कराए ही युद्ध भूमि से लौट गये। अत: वे अप्सराएं निराश होकर बिना पतियों के ही स्वर्ग लोक में इन्द्र के दरबार में लौट गईं। इसी प्रकार दूसरे गीत में उनके अग्रेज राव अमरसिंह के वीर कृत्य का स्मरण कर अप्सरा महाराजा जसवंतसिंह को वरण करने हेतु आई परन्तु महाराजा के युद्ध से भाग जाने पर वह अप्सरा उबटन लगाई हुई ही रुदन करती हुई रह गई।

दुरत गत डांण उसरांण सिर दियंतो, लियंतो फुरलबो थाट लाहो ।
सुतन "गज-बंध" सुर कांमणी संपेखै, विवांणां ठांभियो खाग-वाहो ॥२॥

वाहतां तेग अनमंध कंध वीछड़ै, हसत-बंध हसत दोय टूक होवै ।
सायजादा दळे हिंदवा-पातसाह, "जसा" अवसर अच्छर तूझ जोवै ॥३॥

हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां ।
गई स्रुग विवांणां बैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना वींदां ॥४॥

(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर २६

महा मांडियो जाग उज्जेण खागां मधै, रुदन विलखावती रही रोती ।
हेळवी "अमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपछर रही वाट जोती ॥१॥

किया काचा समर "सूर" हर कळोधर, डरत गत न पीधो फूल दारू ।
वडा री भौळवी हूर आवी वरण, मेलती गई नीसास मारू ॥२॥

पाटवी हेळवी वेगमै पैलकै, तैं समै अैलकै लीध टाळा ।
पागती "दलो" नै "रतन" परणीजतां, वाट जोती रही "गजन" वाळा ॥३॥

शब्दार्थ—दुरत – भयंकर । डांण – कदम, डग, चाल । उसरांण – असुर, यवन । दियंतो – देता हुआ । लियंतो – लेता हुआ । थाट – सेना । लाहो – लाभ, आनंद सुरं-कांमणी – अप्सरा । संपेखै – देखती है । विवांणां – विमानों । ठांमियो – रोका । खाग-वाहो – योद्धा । अनमंध – वीर । कंध – कंधा । वीछड़ै – पृथक होते हैं । हसत-बंध – सामन्त, योद्धा । हसत – हाथी । टूक – खंड । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । अच्छर – अप्सरा । तूझ – तेरा । जोवै – देखती है । हिंदवा राव – हिंदू राजा । हथवाह – प्रहार, वार । अचरज – आश्चर्य । नरंदा – नरेंद्रों, राजाओं । स्रुग – स्वर्ग । बैस – बैठ कर । आगळी – अगाड़ी । वुहो – चली गई । वारंगना – अप्सरा । वींदां – पतियों ।

मंडियो – रचा गया, बना । जाग – यज्ञ, विवाह । विलखावती – विलाप करती हुई । हेळवी – आदी की हुई । अमर – राव अमरसिंह । हीय – हृदय में । हरख – प्रसन्नता । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । वाट जोती – प्रतीक्षा करती हुई । काचा – कायर । समर – युद्ध । सूर – महाराजा सूरसिंह । हर – वंशज । कळोधर – कुल को धारण करने वाला । पीधो – पिया । फूल-दारू – हलका मद्य । वडा – अग्रज । भौळवी – भ्रमित की हुई । हूर – अप्सरा । नीसास – निःश्वास । मारू – राठौड़ । पाटवी – पटाधिकारी, अग्रज । हेळवी – आदी किया । पैलके – पहिले । तैं – तुने । अैलकै – इस समय । लीध टाळो – किनारा ले लिया, दूर हो गया । पागती – पार्श्व में, पास में । गजन वाळा – महाराजा गजसिंह के पुत्र ।

जे तो वीमाह री वाट जोती जगत, रूक बळ त्रासियो गयो राजा ।
मराड़ो जांन घर आवियो मांडवै, तेल चढी रही अच्छर ताजा ॥४॥

(अज्ञात)

गीत छोटो सांणोर २७*

भूपाळ बीया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संसार कहै ।
माया जळ कळजुग छै माही, राजा कमळ सरूप रहै ॥१॥

जळ जंजाळ जाळ अंबु ज्युंही, अनळ पठांण भूप अनमंध ।
"गजन" तणो नैडो न्यारी गत, कमळा जळ पंकज कमँध ॥२॥

चित नेम लियै बिया चकवतियां, कमधज वार मही महकंत ।
जस रस लियै मही-पुड जसवंत, भेळां थकां निराळी भंत ॥३॥

ध्यांन ग्यांन अदभुत धारणा, वध कर जोतां ईस वर ।
सिध रूपी गजसिंघ समोभ्रम, सिध तो वांदै दिले-सुर ॥४॥

(जगन्नाथ सांदू)

शब्दार्थ—त्रासियो – भयभीत हुआ । मराड़ो – मरवा कर । जांन – बरात । मांडहै – विवाह में कन्या के पिता पक्ष का स्थान । अछर – अप्सरा ।

बीया – दूसरे । सेवाळ – काई । तणी – की । भत – भांति, प्रकार । कळिया – फसे हुए है । जाल-अंबु – पानी का बुदबुदा । अनळ – ? । अनमंध – वीर । तणो – तनय, पुत्र । नैड़ो – निकट । न्यारी – पृथक । भेळां – शामिल, साथ । थकां – होते हुए । निराळी – अद्भुत । भंत – भांति, प्रकार । समोभ्रम – पुत्र ।

*यह गीत महाराजा का वेदान्त ज्ञान-सम्बन्धी है ।

परिशिष्ट २

अन्य राठौड़ वीरों के गीत

राव - अमरसिंह नागौर

गीत वडौ सांणोर १*

दळां-नाथ आगळ दिली वंस रौ दीपयण,
रूप - राई तणा राउ राठोड़ ।
"अमर वणियौ सधर धारियै आत-पत्र,
"माल" रौ तिलक 'रिणमाल" हर मोड ॥१॥

वडा ही वडा आचार दीपै विसवि,
वहै सबळां खळां खेति बागै ।
जग हथै बंधियै "गजण" रौ जैत-हथ ,
जग हथां बंधपण विरद जागै ॥२॥

"सूर" हर सूर सक-बंध साहण समँद,
ताघि सांमंद्र असमांण तोलै ।
अतग अण रैण अण-मंग ऊंचासिरौ,
बहळ खळ सार में चोळ - बोळै ॥३॥

शब्दार्थ—आगळ – अगाड़ी । दीपयण – शोभा बढाने वाला । रूप-राई – राजाओं की शोभा । तणा – के । राउ – राव । सधर – दृढ़ । धारियै – धारण करने पर। आत-पत्र – छत्र । माल – राव मालदेव । आचार – कर्त्तव्य, दान । दीपै – शोभित होते हैं । विसवि – संसार में । वहै – मारता है । सबळां – बलवानों । खळां – शत्रुओं । खेति – युद्ध-स्थल, युद्ध । बागै – होने पर । जैत-हथ – विजयहस्त । सूर – महाराजा सूरसिंह । सक-बंध – बड़े-बड़े युद्ध करने वाला । साहण – घोड़ा । समंद – समुद्र । साहण-समँद – बड़ी सेना वाला । ताघि – थाह लेकर । असमांण – आसमान । अतग – अपार । अण-रैण – निष्कलंक । अण-भंग – वीर । ऊंचासिरौ– उदार, श्रेष्ठ । बहळ – बहुत । सार – तलवार । चोळ-बोळै – रक्त-रंजित ।

---

*राव अमरसिंह के राज्याभिषेक के समय का यह गीत है ।

घोख मद-घोख जस तणा वादित्र घुरै,
जोध सांमंत में थाट जोपै ।
चमर ढळतै नृपति अभिनमौ "चौंडरज",
"अमर" मेघाडंबर सीस ओपै ।।४।।
(केसोदास गाडण)

गीत छोटौ सांणोर २

गढपतिअै घण किया गढ-रोहा, परगह ले जूभिया पह ।
जिम किधौ "अमरेस" जड़ाळी, किणोहि न कीधों एम कळह ।।१।।

कोटां ओट घणा जुध कीया, फौजां घणा किया पग-फेर ।
राउ राठोड जिही सूं रौद्रां, अध-पत विढियौ न कौ अनेर ।।२।।

कोटां प्रांण प्रांण के कटकां, सूं पहरिया दिली पतिसांह ।
अेक कटारी कियौ न अेकेण, गजसिंघोत जिसौ गजगाह ।।३।।

दांणव बि त्री पगां-तळ दीधा, वणियै मरण दिखाळियौ बाढ ।
वाही अेकण "गंग" कळोधर, जम-दाढां मांही जमदाढ ।।४।।
(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—वादित्र – वाद्य । घुरै – बजते हैं । जोध – योद्धा । थाट – सेना । जोपै – जोश में आता है । अभिनमौ – वंशज । चौंडरज – राव चूंडा ।

गढ-रोहा – गढों पर आक्रमण, युद्ध । परगह – परिग्रह, सेना । जूभिया – युद्ध किया । पह – प्रभु, राजा । जिम – जैसा । कीधौ – किया । अमरेस – राव अमरसिंह । जड़ाळी – कटार । किणहिं – किसी ने । एम – इस प्रकार । कळह – युद्ध । ओट – आड़, पनाह । कीया – किए । पग-फेर – आवागमन । राउ – राव । रौद्रां – यवनों, मुसलमानों । जिहीं – जिस । अध-पत – राजा । विढियौ – युद्ध किया, वीर गति प्राप्त हुआ । कौ – कोई । अनेर – अन्य । प्रांण – बल, शक्ति । कैं – कई । कटकां – सेनाओं । पहरिया – ? अेकण – एक । गजसिंघोत – गजसिंह का पुत्र । जिसौ – जैसा । गज-गाह – युद्ध । दांणव – असुर, यवन, मुसलमान । बि – दो । त्री – तीन । पगांतळ दीधा – पैरों के नीचे दबा दिये, मार डाले । वणियै – होने पर । मरण – अवसान । दिखाळियौ – दिखा दिया । वाढ – शस्त्र, शस्त्रबल । वाही – प्रहार किया । अेकण – अकेले ने, एक ने । गंग – राव गांगा । कळोधर – वंशज । जम-दाढां – यवनों, मुसलमानों । मांही – में । जमद'ढ – कटार ।

गीत-प्रहास सांणोर ३

असुर बोलियौ कुबोल पतसाह मुह आगळी,
राज विण खत्री धरम कमण राखै।
दूसरा "माल" वरदांन तोनूं दिवूं,
"अमर" मो काढ जम-दाढ आखै ॥१॥

आछटी कमर सूं हाथ चाढी "अमरा",
जोर जमदाढ मैं खुधा जागी।
ऊमरा साह रा साह मुह आगळी,
लोह छीपाविया गळण लागी ॥२॥

उजळै भुजां-डंड चढे "अमरेस" रै,
देव बळ लियण वरदांन देवा।
कठहड़ै कटारी खाय गळौ कीयौ,
लचर कै वधै पतसाह लेवा ॥३॥

झाळ व्रन हुई अंब-खास विच झळहळै,
मार हेकां बियां हियै मिळती।
"अमर" ची भगवती खुरम मुह आगळी,
गळ ग्रजै ऊग्रजै मीर गळती ॥४॥

चरच केसर अगर धूप हूं चंदणां,
पाट-पत तैं ध्रवी सुधार पूजा।
"अमर" जुगां लग नरां नांम रहसी अमर,
दाखियौ कटारी "सूर" दूजा ॥५॥
(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—आगळी – अगाड़ी, सम्मुख। राज – श्रीमान्, आप। कमण – कौन। दूसरा – वंशज। माल – राव मालदेव। अमर – राव अमरसिंह। मो – मुझको। काढ – निकाल दे। जम-दाढ – कटारी। आखै – कहती है। आछटी – झटका देकर निकाली। अमरा – राव अमरसिंह। खुधा – क्षुधा। जागी – प्रज्वलित हुई। लोह–अस्त्र-शस्त्र। छीपाविया – छिपा दिये। बळ – बलि। कटहड़ै – बादशाह के बैठने के सिंहासन के चारों ओर काठ का बना घेरा। लचर – कायर। झाळ – आग की लपट। व्रन – वर्ण, रंग। अंब-खास – आम खास। विच – मध्य में। झळहळै – चमकती है, प्रदीप्त होती है। अमर – राव अमरसिंह। ची – की। गळग्रजै – निगलती है। ऊग्रजै – गर्जना करती है। गळती – भक्षण करती है। पाट-पत – पटाधिकारी। तै – तूने। ध्रवी – प्रहार किया। जुगां-लग – युगों-पर्यन्त। दाखियौ – कहा। सूर – महाराजा सूरसिंह। दूजा – वंशज।

गीत वेलियो-सांणोर ४

अतुळी-बळ 'अमर'' न सहियो ओकर, साहि आलम आगळै सनाढ ।
मुगळ कुबोल बोलियो मोड़ो, जड़ियौ तैं वेगो जम-दाढ ।।१।।
गजसिंघोत कमंध नर गाढिम, ततखिण माचवियो रणताळ ।
दु-वयण वयण काढियो दुआ-सुं, ग्रिसण परां काढ़ो प्रतमाळ ।।२।।
कांनां लगे हेक गो कु-वयण, कमध भला बांवतो कडि ।
पूंचा लगै भुजा-डंड पैली, धाराळी अरी तणै ज घडि ।।३।।
असपत राव सनमुख अणियाळी, "अमर" जु तैं वाही अवसांण ।
कु-वयण कमळ वाय हंस केवी, अै क्रम नीसरिया आरांण ।।४।।
सूरत छोह निमो नव-सहसा, खमियौ कु-बोल नह खत्री गुर ।
मरण तणै प्रब भला ज मरिया, अेकण कटारी बहु ज असुर ।।५।।
(केसोदास गाडण)

गीत वेलियो सांणोर ५

देखो तो "अमर" करामत अंत-दिन, साह धडक्क असुर मन सोह ।
दुजडो हेकज वहंती दीसै, पड़ता दीसै ज घणा पोह ।।१।।

शब्दार्थ—अतुळी बळ – अतिबल, बलशाली। ओकर – कटु बचन। साहि – बादशाह। आलम – संसार। आगलै – अगाड़ी। सनाढ – वीर। कु-बोल – कुवचन। मोड़ो – विलंब से, देरी से। जड़ियौ – प्रहार किया। तैं – तूने। वेगो – शीघ्र, जल्दी। गाढिम – वीर। ततखिण – तत्क्षण, तुरन्त। माचवियो – मचा दिया। रिण-ताल – युद्ध। दु-वयण – दुर्वचन। वयण – वचन। दुआसु – ? ग्रिसण – शत्रु। परां – ऊपर। काढी – निकाली। प्रतमाळ – कटारी। कुवयण – दुर्वचन। कमंध – राठोड़। भलां – ठीक। बांधतो – धारण करता था। कडि – कटि, कमर। भुजाडंड – वीर। पैली – प्रथम। धाराळी – कटार। अरि – शत्रु। तणै – के। घड़ि – शरीर में, धड़ में। असपत – बादशाह। अणियाळी – कटार। अमर – अमरसिंह वाही – चलाई, प्रहार किया। अवसांण – अवसर – मौका। कु-वयण – कुबचन, दुर्वचन। कमळ – मुख। वाय-हंस – प्राण-वायु। केवी – शत्रु। अेकण – एक ही साथ। नीसरिया – निकल गये। आरांण – युद्ध। छोह – क्षोभ, कोप। निमो – नमस्कार है। नव-सहसा – राठोड़। खमियो– सहन किया खत्री-गुर – वीर। तणै – के। प्रब – पर्व, उत्तम, अवसर। भला – ठीक। असुर – यवन।

करामत – चमत्कार। धडक्क – भय, डर। सोह – क्षोभ। दुजड़ो – कटार। हेकज – एक ही। वहंती – चलती हुई। दीसै – दिखाई देती है। पोह – प्रभु, वीर।

सुत गज-बंध आदि तो सुजड़ी, मोहियौ-वसु सबै सुर-लोक ।
असपत इण अजमति इचरजियौ, एक देह अरि पाडै अनेक ।।२।।

भुजां भार "जोधा" ब्रिद भळिया, "अमरा" ऊफळियौ ओगाढ ।
छत्रपत दिली तणा सह छळिया, जोगण छत्र-धारी जम-दाढ ।।३।।

उधम होय इचरज धर असुरां, धम धम तखत जड़ाळी धार ।
घम घम विखम अरि तणा घाटा, वारंगना झमझम जुध-वार ।।४।।

भांजे असुर भख दे भगवती, संकर लीयै मुंड कर सीस ।
असमर हंस समापै "अमरा", समर कीयौ करतब सु-जगीस ।।५।।

(लूणकरण)

गीत प्रहास सांणोर ६

वडै ठौड राठौड अखिआत राखी वडी, जोरवर जोध जम-दाढ जमरा ।
सलावत दिली-पत देखतां साभियौ, अयी तिण वार रा रूप "अमरा" ।।१।।

"गजन" रा केहरी-सिघ जूझार-गुर, मांण तजि जगत्र सहु हुकम मांनै ।
पाडिया तैं ज पतिसाह री पाखती, खांन सुरतांण दीवांण खांनै ।।२।।

हाकतौ दिली दरीयाव हीळोतौ, ढूकड़ै साह अमराव ढाहै ।
आगरै सहर हट-नाळ पाड़ी "अमर", मारूआ-राव दरबार मांहै ।।३।।

शब्दार्थ—गज-बंध – महाराजा गजसिंह । सुजड़ी – कटारी । मोहियौ – मोहित कर लिया । सुर-लोक – तीन लोक । असपत – बादशाह । इण – इस । अजमति–महत्ता । इचरजियौ – आश्चर्य किया । भार – उत्तारदायित्व । जोधां – राव जोधा । ब्रिद – विरुद । भळिया – धारण किए, स्वीकार किए । अमरा – अमरसिंह । ऊफळियौ– उबाल खाया । ओगाढ – वीर, बल । जोगण – देवी, रणचंडी । छत्र-धारी – राजा । जम-दाढ – कटार । उधम – उत्पात । इचरज – आश्चर्य । असुरां – यवनों । जडाळी – कटार । वारंगना – अप्सरा । झम झम – । वार – समय । भख – भक्ष । असमर – तलवार । हंस – प्राण । समापै – देकर । अमरा – अमरसिंह । समर – युद्ध । करतब – कर्त्तव्य । जगीस – इच्छा ?

वडै – महान, बड़ा । अखिआत – न क्षय होने वाली, अमर । जोर-वर – शक्तिशाली । जोध – योद्धा । दिली-पत – बादशाह । साभियौ – मार डाला । अयी – अरे, हे, ओ ! तिण – उस । वार – समय । अमरा – अमरसिंह । जूझार-गुर – महान योद्धा । मांण – गर्व । तजि – छोड़ कर । जगत्र – संसार । सहु – सब । पाडिया – मार डाले । तैं ज – तूने ही । पाखती – पार्श्व में । हाकतौ – चलाता हुआ । हीळोतौ – विलोडित करता हुआ । ढूकड़ै – पास, निकट । अमराव – अमीर । ढाहै – मार डाले । हट-नाळ – ? मारूआ-राव – राठोड़ राजा । मांहै–में, अंदर ।

पगै पहरै जठै हाथ सूं परहरै, लोह सझि न को असमांन लागै।
तो "जिसौ" जूझियौ न को हिंदू तुरक, "अमर" अकबर तणा तखत आगै ॥४॥

(किसनौ आढौ)

गीत वेलियौ सांणोर ७

मुगळां राव तणै जवाब मरोडै, घर घातिया निबाबां घाव।
चालियौ काळ जड़ाळ चुअंती, रूपा तणै कटहडै राव ॥१॥

अड़िया सुजि पड़िया मुंह ऊंधै, सहज कोय देखे सुर-असुर।
आखतौ वेह कोय नह आयौ, "अमरा" जम राव तणै ज उर ॥२॥

पहली मुखे चमर - बंध पड़िया, गोड़ै गज-बंधां ओगाढ।
जवन तणी दरगा जोधपुरी, जड़िया सह हेकण जम-दाढ ॥३॥

बहुतरि सतरि अनेक बहादर, खळ खूटा तूटा खुरसांण।
पड़ियौ ले आधी-पतसाही, राजा "गजन" तणौ जम-रांण ॥४॥

(जोगीदास कंवारियौ)

गीत छोटौ-सांणोर ८

"अमर" आगरै अखिआत उबारी, भड़ जीपण व्रद भारी।
पंच हजारी मुगळ पाड़ियौ, कमधज तणी कटारी ॥१॥

शब्दार्थ—पगै – पंगों से। लोह – अस्त्र-शस्त्र। सझि – धारण करके। जूझियौ– युद्ध किया। आगै – अगाड़ी।

मुगळां-राव – मुगल सुल्तान। तणै – के। मरोडै – कुपित होकर। जडाळ – कटारी। चुअंती – स्रवती हुई, टपकती हुई। रूपा – रौप्य, चांदी। राव – राव अमरसिंह। अड़िया – अकड़ गये, भिड़ गये। सुजि – वे। मुंह-ऊंधै – औंधे मुह। सुर – हिंदू। असुर – यवन। आखतौ – शीघ्रता करता हुआ। वेह – होकर। चमर-बंध – चमरधारी। गोडै – गिरा दिये। गज-बंधां – गजधारियों। ओगाढ – वीर। तणी – की। दरगा – दरबार। हेकण – एक ही। खळ – शत्रु। खूटा– समाप्त हो गये। तूटा – निर्बल हो गए। खुरसांण – बादशाह। गजन – महाराजा गजसिंह। तणौ – तनय, पुत्र। जम-रांण – वीर, योद्धा।

अखिआत – अद्भुत, विचित्र। व्रद – विरुद, कीर्ति। भारी – महान, बड़ा। पाड़ियौ – मार डाला।

भूरै रे अग-नैणी भलर, मेह तणी परि मोरां।
जोगण-पीठ दियां सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरां ॥२॥

दस दस पास खवासी दासी, चंपक वरण ओढियां चोर।
सिस-वदनी नांखै सिसकारा, मीरां कहां हमारा मीर ॥३॥

आस अळूभ गोखड़ै ऊभी, कोयां काजळ कीबी।
गळती रात पुकारै गोरी, बाबहिया जिम बीबी ॥४॥

(रूघो मुहतौ)

गीत छोटो-सांणोर ६

सुरतांण हुवौ भै-भीत संपेखे, गुडिया खांन सु पड़ियौ गाढ।
"अमर" तणा भुज हूंता अंबर, जांणै वजर पड़ी जम-दाढ ॥१॥

वाही गजसिघोत विसरिश्रै, असुरां फुटा अफर अणी।
मुगळां तणै पड़ी किर माथै, त्रिजड़ी तडित अकाळ तणी ॥२॥

हुय हैकंप कांपियौ हजरति, लागुआं परै नीसरी लाग।
वहमंड "अमर" भुजा-डंड वहती, वाढाळी जळहळी व्रजाग ॥३॥

असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेड़ैचें वाही करि खीज।
सुकरि आकास हूंत सेलारां, वीजुल विढण क वुही वीज ॥४॥

जवनां सूं "अमरेस" जूटवा, कटारी दांमणी करग।
खांना घणां तणौ खण खांनौ, स्रोण रंगी भबकी सारंग ॥५॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—भूरै – रुदन करती है। अग-नैणी – मृगाक्षी। भूलर – समूह। मेह–वर्षा। जोगण-पीठ – दिल्ली। सिसवरदनी – चंद्रमुखी। नांखै – डालती है। सिसकारा – निःश्वास। आस – आशा। उळूभ – उलभ कर। बाबहिया – चातक।

सुरतांण – बादशाह। भै-भीत – भयभीत। संपेखै – देखकर। गाढ – बल। हूंता – से। अंबर – आकाश। जांणै – मानो। वाही – चलाई, प्रहार किया। विसरिश्रै – कुपित होकर। अफर – वीर। किर – मानों। त्रिजड़ी – कटार। तडित – बिजली। अकाळ – असामयिक। तणी – की। हैकंप – भयभीत। हजरति – बादशाह। लागुआं – शत्रुओं। व्रहमंड – आकाश। वाढाली – कटार। जळहळी – चमकी। व्रजाग – वज्राग्नि। असपति-राव – बादशाह। ओद्रकियौ – भयभीत हुआ। खेड़ैचै – राठौड़। खीज – कोप। वीजळ – कटार। दांमणी – बिजली। करग – हाथ। स्रोण – रक्त, खून। भबकी – चमकी। सारंग – कटार।

गीत वडो सांणोर १०

कियौ प्रथम साकौ वडौ दिली कणियागरै, दळां-थंभ कमध चीतौड खत्र दाव ।
"अमर" अवगाढ जमडाढ जम आछटे,"रांण" "रिडमाल" उजवाळिया राव ॥१॥

प्रथी-पत बै पखां पढ़ू मोटा प्रगट, औछबै घकै जुध भार आयै ।
तोल अणियाळ जळ-बोल चखतां तणा, रोद हीलोळिया दईव रायै ॥२॥

साझियौ भलौ "वणवीर" उत सांकड़ै, अभंग "चूंडा" तणै तोल असमांन ।
दुरत-गत "गजण" रै दिली-पत देखतां, खेड-पत मारियौ सलाबत खांन ॥३॥

अकलै भुजां दहूं छ खंड घाते अवर, दस दिसां वजै जस तणौ डाकौ ।
"माल" हर "वीर" हर पछै वेढीमणां, "सूर" हर तीसरौ कियौ साकौ ॥४॥

मारियौ घणा मिळ सीह मंडोवरौ, लाज सांकळ सबळ पाय लागा ।
हाल सो(ह) दिली उमराव आंकल हुआ, ऊबरै राव जम राव आगा ॥५॥

(नरहरदास बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर ११*

प्रथम मारियौ सलाबत खांन किताई पछै, सांकड़ै सूर रुधै सबांही ।
"अमरसी" तखत पतसाह मुंह आगळी, वीर-रस गाढ जमदाढ वाही ॥१॥

शब्दार्थ—साकौ – युद्ध । वडौ – महान । कणियागरै – सोनगरा चौहान । दळां-थंभ – योद्धा । कमध – राठौड़ । खत्र – क्षत्रियत्व । अमर – अमरसिंह । अवगाढ – वीर । आछटे – प्रहार करके । रांण – महाराणा । रिडमाल – राव रिडमल का वंश, राठौड़ । उजवाळिया – उज्ज्वल किये । प्रथी-पत – राजा । बै – दोनों । पखां – पक्षों, वंशों । पढ़ू – साक्षी । औछबै – ? । घकै – अगाड़ी । अणियाळ – कटार, भाला । जळ-बोळ – भयंकर, विकट । चखतां – मुगल वंश के । रोद – यवन । हीलोळिया – विलोडित किये । दईव रायै – राजा । साझियौ – मार डाला । उत – पुत्र । सांकड़ै – विकट, तंग । अभंग – वीर । तणै – तनय-पुत्र । खेडपत – राठौड़ । डाकौ – नगाड़ो । पछै – पश्चात् । माल – मालदेव सोनगरा । वेढीमणां – वीर ।

सांकड़ै – तंग स्थान में । रुधौ – रोका गया । आगळी – अगाड़ी । वाही – चलाई ।

---

*गीत नं० ३ से गीत नं० १२ तक के गीत बख्शी सलाबत खां को बादशाह के दरबार में ही मारने के संबंध में हैं । ये गीत भिन्न भिन्न कवियों के रचे हुए हैं । घटना का सार इस प्रकार है—वि० सं० १७०१ के श्रावण सुदि द्वितीया को राव अमरसिंह बादशाह के दरबार में मुजरा करने को गये । संध्या का समय था । अमरसिंह ने बख्शी सलाबत खां से कहा कि हमारा मुजरा मालूम करा दीजिए । ठहर जाओ यह कह

छात्र साह रा "गाजी" तणै छावड़ै, जपै जण जण बयण जुआ-जूआ ।
उपरां असुर दळ कटारी उभारी, हजारी हजारी गरद हूआ ॥२॥
ऊठ गौ खूंद जड ताक ग्रहि अंतरै, दाख आतस अवर सेन दुडिया ।
"सूर" हर आभरण तणी प्रत-माळ सूं, प्रगट उलट पालट मेछ पडिया ॥३॥
केसरी सिंघ राव "मालदे" कळोधर, चाइआं-गुर सदा लग वडां चेळौ ।
विचत्र साह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिळियै कियौ ताळ-मेळौ ॥४॥
(माधोदास गाडण)

शब्दार्थ— छात्र-छत्र – अमीर, सरदार । गाजी – महाराजा गजसिंह । छावड़ै – पुत्र । बयण – बचन । जुआ-जूआ – पृथक-पृथक । हजारी – पंच हजारी । गरद – ध्वस्त, संहार । खूंद – बादशाह । दाख – कह कर । आतस – जोश । दुडिया – छिप गये । सूर – सूरसिंह । प्रतमाळ – कटार । मेछ – यवन । चाइआं गुर – । सदा-लग – सदैव । चेळौ – पलड़ा । ताळ-मेळौ – अवसर, मौका, संयोग ।

कर वह भीतर चला गया परन्तु उसे अवसर नहीं मिला जिससे विलम्ब हो गया । जब राव अमरसिंह ने उसे वापिस बाहर आते नहीं देखा तब स्वयं भीतर चले गये और ६ मुहरें नजर करके अपने स्थान पर खड़े हो गये । सलावत खां बीकानेर के राजा करणसिंह के कारण पहले ही से शत्रुता रखता था । उसने करणसिंह का पक्ष लेकर नागौर पर अपनी सेना भेजने की व्यवस्था जमा ली थी । क्योंकि वह इन पर जलता ही रहता था । उसको इनका अपमान करने का उपयुक्त अवसर मिल गया । एकदम अपने मुंह से गंवार शब्द का उच्चारण कर दिया । राव अमर जैसे वीर पुरुष को भला यह कब सहन हो सकता था । इस प्रकार के तुच्छ शब्द मुख से निकलते ही राव अमरसिंह ने उसके कलेजे में कटार भोंक दी, सलावत खां वहीं पर ढेर हो गया । बादशाह भाग कर अन्दर चला गया और आदेश दिया कि अमरसिंह जाने न पाये । परन्तु भूखे सिंह के सदृश उस वीर के सामने जाने का साहस किसी का भी नहीं हुआ । राव अमरसिंह दरबार से निकल कर अपने डेरे जाने लगा । उसके पीछे पठान खलीलुल्लाह खां ने तलवार का वार किया परन्तु वह कारगर नहीं हुआ । फिर गौड विट्ठलदास का पुत्र अर्जुन गौड राव अमरसिंह के पीछे आया । राव ने पीछे फिर कर देखा तो गौड अर्जुन ने निवेदन किया कि मैं तो आप ही का हू । राव ने उसका विशेष ध्यान नहीं रखा । गौड ने अवसर देखकर तलवार का प्रहार किया, वह सफल हो गया । उस समय भी राव (अमरसिंह) ने कटार से तीन व्यक्तियों को मारा और अर्जुन गौड के भी कान के पास कटार का घाव लगा जिससे उसका कान कट गया । इस समय में गुर्जबरदारों का दल आ पहुँचा, राव इन सबसे युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ । अन्तिम गीत में कविवर किसना आढा ने अनूठी उक्ति से चांद को तो युद्ध देखने का आनन्द प्राप्त कराया है और भगवान भास्कर (सूर्यदेव) को इस युद्ध के न देखने से बड़ा रंज होने का भाव प्रकट किया है क्योंकि युद्ध संध्याकाल में ही हुआ था ।

गीत बडौ सांणोर १२

निसा-पड़तां झूंबीयौ जुतै-ग्रनड़ां नडरा, जवन दळ सिर सबळ दाखि जमरा ।
सिसि करै जेरा उदमाद नव-साहंसा, ग्ररक धोखौ करै जेरा "ग्रमरा" ॥१॥

दुधारां वाहतौ ढाहतौ दुज्जरां, नरां सिरागार बँध चौगाणै नूर ।
मोहियौ मयंक कर देख ग्रखाड़मल, "सूर" हर छोहियौ ग्राभरण सूर ॥२॥

राति विढियौ इसी भांति नरवै रयण, सम-समी मार देतौ सबांही ।
तेरा उदमादियौ चंद कमधां तिलक, मांत मांदौ थियौ सूर मांही ॥३॥

भिड़तै "ग्रमर" ग्रखीग्रात कीधी भुयण, सुत "गजण" वात संसार कहसी ।
देखसी ग्रदेखां तेरा वातां दहूं, रात दिन हरख मन मांहि रहसी ॥४॥

(किसनौ ग्राढौ)

२. बलू गोपालदासोत चांपावत

गीत छोटौ-सांणोर १*

घड़ लाकड़ हुवै बळै हंस धुग्रा, झाळ हुग्रौ रणताळ झलू ।
बळगौ खाग ग्रभाग बैरियां, बळती ग्राग वजाग "बलू" ॥१॥

ऊपर सत्रां पड़तां ईंधरा, घ्रत रत दरड़ै पूर घराौ ।
पौरस झाळ काळ पँडवेसां, तगस भटकियौ "पाल" तराौ ॥२॥

शब्दार्थ—निसा – रात्रि । पड़तां – होने पर । झूंबीयौ – छापा मारा । ग्रनड़ां-नडरा – वीरों को बंधन में डालने वाला । सिसि – शशि, चंद्रमा । उदमाद – हर्ष, प्रसन्नता । नव साहंसा – राठौड़ । ग्ररक – सूर्य । धोखौ – पश्चात्ताप । दुधारौ – भालौ । ढाहतौ – मारता हुग्रा । दुज्जरां – दुर्जनों, शत्रुग्रों । मोहियौ – मोहित कर दिया । मयंक – चंद्रमा । ग्रखाड़-मल – योद्धा, वीर । सूर – महाराजा सूरसिंह । छोहियौ – खिन्न हुग्रा । विढियौ – युद्ध किया । नरवै – नरपति, राजा । रयरा – रत्न । सम-समी – समान, बराबर । उदमादियौ – प्रसन्न हुग्रा, हर्षित हुग्रा । कमधां–राठौड़ों । मांदौ – रुग्ण, धिमौ हो गया । भुयरा – संसार । गजरा – गजसिंह ।

घड़ – सेना । लाकड़ – काष्ठ । हुवै – प्रज्वलित होते हैं । हंस – प्राण । झाळ – ज्वाला । रणताळ – युद्ध । झलू – उत्तरदायित्व लेने वाला ।

---

*बलू गोपालदासोत चांपावत राव ग्रमरसिंह राठौड़ के वीर गति प्राप्त होने पर उनकी सहधर्मिणी को सती होने के निमित्त राव ग्रमरसिंह का शव लाने हेतु यवन सेना के साथ भयंकर मार-काट करता हुग्रा वीरगति को प्राप्त हुग्रा । इस घटना संबंधी गजगुरा रूपक ग्रंथ के रचयिता कविवर केसोदास गाडरा ने बलू गोपालदास की प्रशंसा में कई डिंगल गीत रचे थे, उन गीतों में से तीन गीत यहां पर दिये गये हैं ।

मेछां घड़ा अभनमौ "मांडण", सांफळगौ पुळगौ सबळ।
बटका हुय कटका बांणांसां, झटकां झटकै धोम झळ ।।३।।

हाथां मछरं केवांण हुबिया, सुरतांणां माथै यर सूळ।
असुरां थाट काट आवटियौ, मंगळ जुध ठरियौ कळ-मूळ ।।४।।

(केसोदास गाडण)

गीत वडौ सांणोर २

अमर राव वाळै दिवसि दाव जांणै अभंग, सूर वर साथि लीधां समेळा।
पटै जो हूतौ "बलू" पतिसाह रै, "बलू" भेळौ हुश्रौ मरण वेळा ।।१।।

तण "गजण" साथि भाराथ चित तेवड़ै, त्यार भड़ मुहरि आगळी खत्री ताइ।
असुर रौ वित खावतौ खत्री अंत रै, अंत रै तंत सुज मेळियौ आइ ।।२।।

जोधपुर सुपह री चाड मांडै जुडण, आपरा लियां परिग्रह उजासै।
"पाल" रौ खूंद वरतणि जुदी पांमतौ, पूजियौ विघन री वार पासै ।।३।।

मारियौ सुणै पतिसाह राव अमरसी, साह सूं मांनि जुध भवां सारू।
मरण दिन पटौ परहरि नवौ मौड बांधि, मुश्रौ जूना पटा साथि मारू ।।४।।

(केसोदास गाडण)

गीत प्रहास सांणोर ३

विजड़ ऊठियौ घूण गिर-मेर रौ बहादुर, पछै म्हे कदे अवसांण पावां।
"अमर" ने सुरग दिस मेल नै अेकलौ, आगरै लड़ेवा कदे आवां ।।१।।

शब्दार्थ—वाळै – के। अभंग – वीर। लीधां – लिए हुए। समेळा – अनुकूल। भेळौ – शामिल, साथ। तण – तनय, पुत्र। गजण – महाराजा गजसिंह। भाराथ – भारत, युद्ध। तेवड़ै – विचार करके। त्यार – तब। मुहरि – मुह के। आगळी – हरावल, अगाड़ी। असुर – यवन। वित – वेतन। सुपह – राजा, वीर। चाड – सहायता। मांडै – रच कर। जुडण – युद्ध। परिगह – परिग्रह। पाल रौ – गोपालदास चांपावत का। खूंद – बादशाह। वरतणि – वेतन। जुदी – पृथक। पांमतौ – प्राप्त करता था। पूजियौ – ? । विघन – युद्ध। वार – वेला। भवां – जन्मों। सारू – लिए। परहरि – छोड़ कर। मारू – राठौड़।

विजड़ – तलवार। घूण – घुमा कर। पावां – प्राप्त करें।

अम्हे तो "अमर" राजा तणा ऊमरा, जूड़ेवा पारकी छठी जागां।
बोलियौ "बलू" पतसाह रै बराबर, मारवै - राव रौ वैर मांगां ॥२॥

केसरया मांह गरकाब वागा करे, सेहरौ बांध हलकार साथै।
"अमर" रौ भतीजौ तोल खग आखबै, "बलू" अर अगरौ हुआ बाथै ॥३॥

पटा नै नांखि भिड साह सूं चटापड़, कांम नव-कोट साचौ कमायौ।
वाद कर साहसूं वैर नृप वोढियौ, "अमर" नै मुहर करि सरग आयौ ॥४॥

(केसोदास गाडण)

३. महाराजा सूरसिंह बीकानेर

गीत-प्रहास सांणोर १*

गिरंद गाहटण नृभै-मण सभै रिण विसम गत, दोयण घण दावटण 'जैत" दूजौ।
जपै मन सहू जन "सिंघ" तणा विजै जस, साह मोखण ग्रहण भूप "सूजौ" ॥१॥

शब्दार्थ—जूड़ेवा – युद्ध करने को। पारकी – दूसरे की। मारवै – राव राठौड़ राजा। गरकाब – तरबतर। वागौ – पहनावा। सेहरौ – मौर। हलकार – ? । आखवै – कहता है। हुआ-बाथै – भिड़ गये। पटा – जागीर के गांवों की सनद। नांखि – डाल कर, फेंक कर। चटा-पड़ – लड़ाई। नव-कोट – मारवाड़। साचौ – बढ़िया। वाद – युद्ध। वोढियौ – वसूल किया। मुहर – हरावल।

गिरंद – गिरीन्द्र, पर्वत। गाहटण – ध्वस्त करने को, ध्वस्त करने वाला। नृभै-मण – निर्भय मन वाला। सभै – कटिबद्ध होता है। विसम-गत – विषम गति से। दोयण – शत्रु। घण – अधिक। दावटण – दबाने को। जैत – राव जैतसिंह (बीकानेर)। दूजौ – द्वितीय, वंशज। सिंघ – रायसिंह तण – तनय, पुत्र। साह– बादशाह। मोखण – छोड़ने को, छोड़ने वाला। ग्रहण – पकड़ने को, पकड़ने वाला। सूजौ – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर)।

---

*वि० सं० १६७६ में शाहजादा खुर्रम विद्रोही बन गया। वह दक्षिण में उत्पात करने लगा, तब बादशाह जहांगीर ने महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) को शाहजादा के विरुद्ध दक्षिण में शांति-व्यवस्था स्थापित करने के लिए भेजा। महाराजा अपने दल-बल सहित दक्षिण में गये। खुर्रम के उपद्रवों को दबा दिया। उसी की साक्षी का उपर्युक्त गीत है।

उभै विध खाग गयणाग लग ऊछजे, जिता जुध ताकवै तिता जीपै ।
सितर नै बौहतर धणी नवसाहसौ, दिली भांजण घड़ण "सूर" दीपै ।।२।।

वाळ गजराज सिरताज वहता विसर, लाख दळ लियै असमांण लागै ।
प्रबळ-पातसाह रौ हुकम कर "जंगळ-पत","खुरम" घर घर कियौ मार खागै ।।३।।

परै जोधांण बीकांण मोटा पढूं, आज री लाज तोसूं अनाजा ।
राज जहांगीर रौ करां थिर राखियौ, राव रांणौ सिरै 'सूर' राजा ।।४।।

(किसनौ सिंढायच)

गीत प्रोढ २*

पूगळ पालटी थरकियौ विकंपुर, कहै छूटां कांहि ।
उदधि राजा सूर उलटौ, जादवां गढ जाहि ।।१।।

वैरसळपुर छाडियौ बळ, आज नहीं का ओट ।
समंद जिम रायनिध संभ्रम, कमध वोढै कोट ।।२।।

देवरावबर अत घड़ दीठौ, भाटियां भंगांण ।
उलट ढाहण वडा अनडां, मिलौ छंडै मांण ।।३।।

गुहिर दुरंग अजीत गांजै, जादमां क्यू जेर ।
सकै नह जुधि सूर सांमुहौ, मांडि जैसळ-मेर ।।४।।

(हरखौ बारहठ)

शब्दार्थ—विध – प्रकार । खाग – तलवार । गयणाग लग – आकाश तक । ऊछजै – ऊंची उठाता है । जिता – जितने । ताकवै – तकता है । तिता – उतने ही । जीपै – विजय प्राप्त करता है । धणी – स्वामी । नवसाहसौ – राठोड़ । भांजण – तोड़ने को । घड़ण – बनाने को । सूर – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । दीपै – शोभित होता है । जंगळपत – बीकानेर का राजा । खागै – तलवारों से । जोधांण – जोधपुर । बीकांण – बीकानेर ।

---

*महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) पुंगल, वरसलपुर तथा वीकूंकोर के भाटी सामन्तों पर कुपित हो गये थे । उस आशय का उपर्युक्त गीत बारहठ हरखा का रचा हुआ है ।

गीत प्रहास सांणोर ३*

अजा सिंघ चालै बिन्है वाट हुइ अेकठा, अेक छति देव गत हाथ आंणी ।
मार कै सार कै पांणी गह मेदनी, मांन-धाता पछै "सूर" मांणी ।।१।।
वाघ छाळी बिन्है बाट सूधा वहै, कोई मारै नहीं जोर कांहीं ।
मांन-धाता तणै राज माल्हावियौ, मारवै-राव बीकांण मांही ।।२।।
ग्रासिया गया मेवासिया छोडे ग्रहि, रूक प्राझौ लगै साह रांणै ।
अजा पंच-मुख बिन्है अेकठा उछरै, जंगळ पतिसाह समझाय जांणै ।।३।।
चमर माथै ढुलै पलै सेवग चलण, पाट उधोर पखै बिन्है पूरौ ।
सोहियौ भलौ रायसिंघ रौ सिंघळी, साजि मेवास अेवास सूरौ ।।४।।
(संकर बारहठ)

गीत छोटौ सांणोर ४*

"सूजा" महाराज नमौ सूरातन, दाखै धिन धिन राह दुवै ।
हुवै सदाय घाव तो हाथां, हाथां तो दत्त वडा हुवै ।।१।।
अै दोय वात अथग…; सारौ भय दाखै संसार ।
आचां तूझ वहै रिण-असमर, आचां तूझ हुवै आचार ।।२।।

शब्दार्थ—अजा – बकरी । बिन्है – दोनों । अेकठा – एक साथ । छति – पृथ्वी । सार – तलवार । मेदनी – पृथ्वी । सूर – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । छाळी – बकरी । सूधा – सीधे । कांही – कुछ । माल्हावियौ – चलाया । मारू-राव – राठौड़ राजा । बीकांण – बीकानेर । मांही – में । ग्रासिया – ? । मेवासिया – लुटेरे, चोर । ग्रहि – घर । प्राझौ – प्रबल । पंचमुख – सिंह । उछरै – जंगल में विचरण करते हैं । जंगळपति साह – बीकानेर का राजा । पखै – पक्षों, वंशों । पूरौ – पूर्ण । सोहियौ – शोभित हुआ । भलौ – ठीक, श्रेष्ठ । साजि – सजा देकर । मेवास – लुटेरों । अेवास – स्थान ।

सूजा – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । सूरातन – शौर्य, वीरता । दाखै – कहता है । धिन धिन – धन्य धन्य । राह दुवै – दोनों पथ, या धर्म (हिन्दू और मुसलमान) । सदाय – सदैव । दत – दान । अथग – असीम, अपार । आचां – हाथों । तूझ – तेरे । वहै – चलती हैं । असमर – तलवार । आचार–दान ।

---

*इस गीत में महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) के न्याय-संगत राज्य का काव्यात्मक वर्णन है जिसकी तुलना मानधाता से की गई है ।

*प्रस्तुत गीत में कवि ने महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) की वदान्यता और शौर्य का वर्णन किया है ।

पोहो सिरताज आज वीक पुरा, सूर-वीर दाता सुभियांन ।
करगां ज तूं वडा रिण करणो, दियणो ज तूं करां वड दांन ।।३।।

दळ-विभाड रायसिंग दूजां, रिमां-पछाड कहै दोय राह ।
दत खग तणा ग्रै विरद दोढा, वणिया तूझ खवां सिरवाह ।।४।।
(केसोदास गाडण)

४. कूंपावत गोरधनदास राठौड़ चंडावल*

गीत छोटो सांणोर १

गज-बंध सुछळि ग्रण भंग "गोवरधन, घण दळसां बाधियो घणो ।
कमळि घाव वणियो नव कोटा, टीको जुध मेलिया तणो ।।१।।

शब्दार्थ—पोहो – राजा । सुभियांन – श्रेष्ठ । करगां – हाथों । करणो – करने वाला । दियणो – देने वाला । करां – हाथों । वड दांन – बड़े दान । दळ-विभाड़ – सेना को ध्वंस करने वाला । रिमां – शत्रुग्रों । दत – दान । खग – तलवार ।

सुछळि – युद्ध । ग्रण-भंग – वीर । घण - बहुत । बाधियो – बढ़ा । घणो – विशेष । कमळि – शिर, भाल, ललाट । वणियो – बन गया । नवकोटा – राठौड़ । तणो – का ।

*यह मारवाड़ राज्यान्तर्गत चंडावल ग्राम का ठाकुर था । महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वास-पात्र था । इसने महाराजा गजसिंह के साथ दक्षिण के कई युद्धों में बड़े वीरतापूर्ण कार्य किये थे । वि.सं. १६८१ में शाहजादे खुर्रम के विद्रोह के फलस्वरूप बादशाह जहांगीर की सेना ग्रौर शाहजादे खुर्रम की सेना के बीच युद्ध ठन गया । इस युद्ध में बादशाह की ग्रोर से महाराजा गजसिंह भी ग्रपनी सेना सहित शाही सेना के साथ थे । युद्धारम्भ में शाहजादा पर्वेज ने मिर्जा राजा जयसिंह को हरावल में रखा था परन्तु भीम के भयंकर ग्राक्रमण में पर्वेज ग्रौर मिर्जा राजा जयसिंह विह्वल हो गये—ऐसे समय में महाराजा गजसिंह व चंडावल ठाकुर गोरधनदास ने खुर्रम की सेना में भयंकर मार-काट मचाई । भीम वीर गति को प्राप्त हुग्रा । ठाकुर गोरधनदास भी इस युद्ध में घावों से क्षतविक्षत हो गया परन्तु जीवित रह गया । कालान्तर में (वि सं. १७१५ में) बादशाह शाहजहां के पुत्रों ने राज्य-सिंहासन प्राप्त करने के लिए युद्ध छेड़ दिया—इन शाहजादों (ग्रौरंगजेब ग्रौर मुराद) का मुकाबला करने हेतु महाराजा जसवंतसिंह को भेजा गया । इस समय वीर गोरधनदास कूंपावत महाराजा के साथ था । उज्जैन के पास धरमत नामक स्थान में भयंकर युद्ध हुग्रा । इस युद्ध में यह वीर ठाकुर वीरगति को प्राप्त हुग्रा । इन्हीं युद्धों-संबंधी गीतों में से कुछ गीत ठाकुर गोरधनदास कूंपावत के शौर्य व पराक्रम के यहां दिये गये हैं ।

मुह विहंडियौ भुजै राव मारू, दुजड़ै भड़ां दाखतै देख।
चौरंगि चहुँ दळां 'चांदावत', आगळि हुआ तणौ अविरेख ॥२॥

असहां रिख अणिया में आखित, होई बेदो-धुनि वीर हक।
असिमर अंक कळोधर "ईसर", तो सिरि खत्रवाट चौ तिलक ॥३॥

मुह भांजिया तणा मोहेला, मिळी ते साखी गयण-मिणि।
कुळ आभरण अभिनमा "कूंपा", भू-मंडळि चाढियौ भरणि ॥४॥

गीत छोटो सांणोर २

दहुँवे पतिसाह तणा दळ देखे, खत्री न भाजै मेछ खळै।
"गाजीसाह" कहै गोवरधन, मेळ लोह जिम लोय मिळै ॥१॥

असपत दहू कडच्छिया ऊभा, खळ दळ हिंदू तुरक खहै।
राव कहै चांदावत रावत, बाव घाव तिम घाव बहै ॥२॥

मोहर तलाड गजोड़ माझियां, भला भवाड चंद भाराथ।
हाथ उपाड पछाड़ हाथियां, हय उपाड़ संपेखे हाथ ॥३॥

डसण गजां फोजां रिण डोहण, बाघ भेख भख बिळकुळियौ।
धणी वयण अणियां 'गोरधन', मुंह भाखतां समौ मिळियौ ॥४॥

शब्दार्थ—विहंडियौ – क्षत-विक्षित हुआ, या किया। राव-मारू – राठोड़ वीर। दुजड़ं – तलवारों से। भड़ां – योद्धाओं। दाखतै – बतलाते हुए, वर्णन करते हुए। चौरंगि – युद्ध। चहुदळां – चारों ओर की फौज। चांदावत – चांदसिंह का पुत्र। आगळि – हरावल। अविरेख – निशान, चिन्ह। असहां – शत्रुओं। रिख – ऋषि, ब्राह्मण, पंडित। अणियां – शस्त्रों की नोकें। आखत=अखत=अक्षत – पूजा के चांवल। वीर हक – वीर हाक – वीर ध्वनि। वेदो-धुनि – वेद-ध्वनि। असिमर – तलवार। अंक – चिन्ह। कळोधर – वंशज। ईसर – ईसरदास कूम्पावत जो गोरधन-दास कूंपावत का पितामह था। खत्रवाट – क्षत्रियत्व। मोहेला – महोला – कोरनिस। साखी – साक्षी। गयणमिणी – सूर्य। भू-मंडळि-चाढियौ भरणि – संसार को भ्रमित कर दिया, कपायमान कर दिया।

खळै – युद्धस्थल। कडच्छिया – सन्नद्ध हुए। खहै – युद्ध करते हैं। राव – महाराजा गजसिंह। भला – उत्तम। भवाड़ – बना कर। चंद – चांदसिंह का पुत्र। भाराथ – युद्ध। डसण – दशन, दांत। बिळकुळियौ – लालायित हुआ, उतावला हुआ। धणी – स्वामी। वयण – वचन। भाखतां – कहने पर। समौ – ही, पर।

जुध अरि मार जीवै जोवियौ, कमधज करता हूकम कियौ।
...., ... ॥५॥

(अज्ञात)

गीत छोटौ सांणोर ३*

(प्रथम - दूहौ)

आडी छड़ी न दीजियै, वह आवां खट - व्रन्न ।
चौडै बंधी 'चंद' तण, धज तै गोवरधन ॥

गीत

खूंदाळम खूरम वाजिया खागै, करणानुज ऊकळी कळ।
"गज - बंधी" आगै गोवरधन, दीधी चोट अबोट दळ ॥१॥
पिंड वाजिया बेहूं पतसाहां, मोहर मंडोवर नूभै मण ।
मारू ताती अणी मेलिया, तातै रावत "चांद" व तण ॥२॥
पाडण खळ मैंगळां पछाड़ण, 'जोध' हरै चाढण जळ जैत ।
नव सहंसै तुरांट नांखिया, बानैतां ऊपर बांनैत ॥३॥
छिनतै मछर संसार छेतरै, आगै वध मिळीयौ अणी ।
धिन जीतै गोवरधन धिन, धिन गोवरधन तणा धणी ॥४॥

(चतरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—खूंदाळम – बादशाह । वाजिया खागै – युद्ध किया । करणानुज – भीम सीसोदिया । दीधी – दे दी । चोट – प्रहार । अबोट दळ – बिना युद्ध किया हुआ दल या सेना । पिंड – युद्ध । वाजिया – भिड़े, युद्ध किया । मोहर – हरावल । नूभै मण – निर्भय मन वाला । मैंगळां – हाथियों । जोध–हरै – राव जोधा के वंशज । जळ – कांति, आभा । जैत – विजय । नवसंहसै – राठोड़ । तुरांट – घोड़ा । नांखिया – झोंक दिये । बानैतां – वीरों । मछर-मत्सर – कोप । छेतरै – (?) । अणी – सेना ।

---

*यह गीत चतुरा मोतीसर कृत है। चतुरा मोतीसर पर महाराजा गजसिंहजी नाराज हो गये थे। अतः चतुरा प्रथम चंडावल ठाकुर गोवरधनदास के पास गया और उपर्युक्त गीत व दोहा सुनाया जिस पर ठा० गोवरधनदास ने चतुरा को महाराज गजसिंह के दरबार में उपस्थित किया।

वि० वि० के लिए देखो पृ० २७६-२७७ के फुटनोट ।

(उजैण रै जुध रा गीत)

गीत छोटो सांणोर ४

आयो जुध जेम "मुराद" ऊपडै, फौजां घण बारा फिरिया ।
गढपतियां गिरवर गोवरधन, आडो दियां सह उबरिया ।।१।।

मूसळ धारां तूसळ मैंगळ, घडां दरड़ पडतां चौधार ।
वडा पहाड गोवरधन वांसै, सारा ऊबरिया सरदार ।।२।।

खाळ नाळ रुधरां खळकंतां, जाझा कण वरसंतां जाळ ।
ओळै कमधज तणै ऊबरिया, गढपत वाळा बाळ गोपाळ ।।३।।

अवडो भार सहै सिर ऊपर, बेहूं खग झाटां बौछाड ।
व्रज जिम राख लियो दळा वांसै, पडियो "चांद" तणो पहाड ।।४।।

(अज्ञात)

गीत छोटो सांणोर ५

नारद पूछियो गिरवर रिख नायक, वर ऊबरियौ रुद्र वहै ।
रांणी दोय परणी रुद्रांणी, किसी सुहागण साच कहै ।।१।।

चांदावत ब्रह्मावत चवियो, मांड ऊहौज बेहूं जुध मांह ।
पुरब घडा जीप सुख पाया, चाहियो वळै दखण तण चाह ।।२।।

राजा करूप रिख रिख राजा, गौदै कहौस सुणै गुर ।
रीझै फौज खुरम री रहियो, औरंग री गौ छोड उर ।।३।।

शब्दार्थ—आडो – ओट, आड । उबरिया – बच गये । तूसळ – दांत (?) । मैंगळ – हाथी । दरड – द्रव पदार्थ का प्रवाह या प्रवाह की ध्वनि । चौधार – चारों ओर । वांसै – ओट में, आड में, पीछे । ऊबरिया – रक्षित रहे । रुधरां – रुधिर । खळकतां – ध्वनियुक्त बहने पर । जाझा – घना । अवडो – इतना । चांद – गोवरधन कूंपावत का पिता चांदसिंह । तणो – तनय, पुत्र ।

गिरवर–गोवरधन कूंपावत के लिए प्रयोग किया गया शब्द । वर–पति । ऊबरियौ – रक्षित रहा । रुद्र – यवन । वहै – मारे गये । रुद्रांणी – यवन स्त्री । (यहाँ यवन सेना के लिए प्रयोग किया गया है) । सुहागण – सौभाग्यवती । चांदावत – चांदसिंह कूंपावत का पुत्र गोरधनदास कूंपावत । ब्रह्मावत – नारद मुनि । चवियो – कहा । पूरब घडा जीप सुख पाया – खुर्रम की सेना में विजय प्राप्त कर हर्ष मनाया । वळै – फिर । दखण – दक्षिण की सेना (औरंगजेब और मुराद की सेना) । गौदै – ? रीझै – प्रसन्न होकर ।

सरखी कमंध वरी सायजादी, सार नार पडजनां सगार।
विसव ऊपरै हेक बखांणै, मांणै बीजी सुरग मझार ।।४।।

(महेसदास आढो)

गीत छोटो सांणोर ६

ग्रहसी अगनी भखं की ग्रीधण, परम किसूं बांधै गळ पोय।
घड-धारां सारां गोवरधन, लागै गयौ तुहाळी लोय ।।१।।

चरै अगन की पंखण आचरै, सिव कंठ किसूं करै सिणगार।
करमाळां "चांदोत" कलेवर, वाढ चढेगौ भारत वार ।।२।।

आतस विहंग किसी आचरै, ईसर की ठाळै उतबंग।
अरि आवधां अभनभौ "ईसर', ऊबरियौ धारां लग अंग ।।३।।

चरियां अगन न को चांचाळी, भव में कांम न आयौ भाळ।
मारू-राव असमरां मुहडै, तिल तिल हुय पडियौ रिण ताळ ।।४।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—वरी – वरण की। पडजन – विवाह की एक रस्म जिसमें कन्या पक्ष वाले बरात का स्वागत करने हेतु बरात के सामने जाते हैं, सीमान्त पूजा। विसब – विश्व, संसार। मांणै – उपभोग करता है।

परम – महादेव। किसूं – क्या। गळ – कंठ, गर्दन। तुहाळी – तेरी। चरै – भस्म करे। पंखण – पक्षी (मांसाहारी)। आचरै – भक्षण करे। करमाळा – तलवारों। चांदोत – चांदसिंह का पुत्र। कलेवर–शरीर। बाढ–शस्त्र का पैना भाग, शस्त्र की धार। भारत – युद्ध। वार – समय। आतस–अग्नि। विहंग – पक्षी। ईसर – महादेव। ठाळै – तलाश करता है। की – क्या। उतबंग – उत्तमाङ्ग। आवधां – आयुधों, अस्त्र-शस्त्रों। अभनमौ – वंशज। ईसर – ईसरदास कूंपावत जो गोवरधनदास कूंपावत का पितामह था। चांचाळी – गिद्ध, चिल्ह भव – महादेव। चै – के। भाळ – देख। मारू राव – राठौड़। असमरां – तलवारों। मुहडै – अगाड़ी। रिणताळ – युद्धस्थल।

५. कूंपावत राजसिंह

गीत प्रहास सांणोर १*

प्रगट स्यांम ध्रम पुरस हद मांटी पणै, पुन बड भाग म्है धणीज पायौ ।
स्यांम रै काज जिण लूण री सरीगत, आज व्रिद उजाळण समौ आयौ ।।१।।

जोग सूं वात वण भूप "जसवंत" पर, प्रेत रौ आय वड चक्र पड़ियौ ।
पुत्र पर-धांन बिन प्रांण जावै परौ, अचांणक भयंकर स्वाल अडियौ ।।२।।

कहै कर जोड़ तिण समै "राजड" कमंध, पती कज पियालौ मनै पावौ ।
आज मो मरत "जसवंत" नृप ऊबरै, जाय छै जीव तौ परौ जावौ ।।३।।

आपरौ प्रांण दे धणी नै ऊबारियौ, "राजसी" अवेढी बात राखी ।
स्यांम ध्रमपणा मैं "कूंप" हर सिधाळा, सदा इण वात रौ जगत साखी ।।४।।

(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर २

हसी करीजै चाकरी भूप इळ ऊपरा, बापरै नांम पर सुजळ बाढै ।
इळा पर नांम ऊण अमर आदू कियौ, कोई नह चूक फिर मुवां काढै ।।१।।

करीजै चाकरी जैडी "राजड़" करी, गीत जिण क्रीत रा दुनि गाया ।
आवतां आपदा भूपरै ऊपरा, "कूंप" रै छोकरै तजी काया ।।२।।

शब्दार्थ—पुन – पुण्य, सुकृत । व्रिद – विरुद । समौ – समय । चक्र – बाधा ? स्वाल – प्रश्न, सवाल । राजड़ – राजसिंह कंपावत । अवेढी – विकट ।

इळ – इला, पृथ्वी । चूक – गलती, दोष ।

---

*यह आसोप का ठाकुर था । महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वासपात्र था । वीर शिरोमणि भीम सीसोदिया के टूस नदी के युद्ध में यह महाराजा गजसिंह के साथ था । इस युद्ध मे राजसिंह ने बड़ी बहादुरी दिखाई थी । वि०सं० १६६५ में महाराजा गजसिंह का देहावसान हो गया । उस समय महाराजा जसवंतसिंह की आयु १२ वर्ष की थी । जसवंतसिंह का राज्यतिलक बादशाह शाहजहाँ ने आगरे में ही किया और ठाकुर राजसिंह को महाराजा का प्रधान नियुक्त किया । वि० सं० १६६७ में महाराजा जसवंतसिंह के शरीर में प्रेत-बाधा उत्पन्न हो गई । इस समय मन्त्रोपचारक द्वारा मंत्रित जल पान कर इस वीर ने महाराजा जसवंत सिंह के लिए अपना नश्वर शरीर त्याग दिया । इस घटना सम्बन्धी दो गीत ऊपर दिये गये हैं । कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि महाराजा ने राजसिंह का वध करने हेतु यह षड्यंत्र रचा था ।

प्रेत जद पैसियौ "जसारा" पिंड में, कोइ नह जीव रौ जतन कीधौ।
"खींव" सुत आपरै पिंड खेद ले, पियाळौ मंत्र रौ आप पीधौ ॥३॥

जीवतौ बचाड़ै भूप जोधांण नै, कमंध सुरगां बिचै वास कीधौ।
अमर जस राख आपरौ इळा में, लाख-मुख हूंत स्याबास लीधौ ॥४॥

(अज्ञात)

६. कूंपावत भीम*

गीत सोहणो

अजमेरे डेरैज अरी आंणै, गोविंद भाटी चूक गह्यौ।
पायै हुकम "सूर" नरपत रौ, लड "कूंपै" वड वेर लियौ ॥१॥

पतसाहां सेना विच पोचै, हणियौ सजन हरांमां।
मुरघर रै राजा मोकळियौ, लीन्हौ वैर ... ... ॥२॥

सूर सिंघ सेना बिच संचर, कपटां 'गोविंद' चूक कियौ।
मांन हुकम महपत रौ मारू, बाहरू चढै 'तिलोक' वियौ ॥३॥

आंण पोथै जिसणां दळ ऊपर, कटक बाढ निज खाग कियौ।
सांम कांम सत्र घट भांजे, रण भूमी "भीमेण" रह्यौ ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—पैसियौ – प्रविष्ट हो गया। खेद – कष्ट। पीधौ – पीलिया। कीधो–किया। लीधौ – लिया।

मोकळियौ – भेजा। महपत – महिपति, राजा। मारू – राठौड़। बाहर – रक्षक। तिलोक – तिलोकसिंह कूंपावत। वियौ – वंशज। पोथै – पहुँच कर। पिसणां – शत्रुओं।

---

*यह वीर "भाटी गोविंददास" की हत्या के पश्चात तुरन्त ही शत्रु-दल के पीछे महाराजकुमार गजसिंह के साथ गया और विपक्षियों से युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ।

७. कूंपावत कचरौ राठौड़*

गीत छोटौ-सांणोर

परणीजरण पतसाह जांन पतसाही, चहुंग्रै दिस ढुळतां चंमर ।
गावै ग्रच्छर वेद-धुनि गह-मह, "कचरौ" परणीजै कवर ।।१।।

पेखरण कळह कमंध परणावरण, लिखिया रुद्र नारद लगन ।
जोगण - पुरा मांडहौ जांनी, जोगणपुरां रचियौ जगन ।।२।।

तीर अखत डालां-गज तोरण, चहुं दिस कळस मंगळा-चार ।
चौंरी वडी पेखियौ चिगथै, "कूंप" कळोधर राज कँवार ।।३।।

पौढियौ पिलंग चाव सत्र पाथर, रहै महलां बीच घणौ रस ।
तो नूं दियौ हिंदवै तुरकै, "जसवंत" रा डायजौ जस ।।४।।

(किसनौ ग्राढौ)

शब्दार्थ—परणीजरण – विवाह करने को । जांन – बरात । ग्रच्छर – ग्रप्सरा । गह-मह – ? । पेखरण – देखने को । कळह – युद्ध । परणावरण – विवाह करने को । लगन – लग्न, मुहूर्त । जोगरणपुरा – मुसलमान, बादशाह । मांडहौ – विवाह में कन्या पक्ष वालों का स्थान । जगन – यज्ञ-विवाह । ग्रखत – बिना टूटा चावल, ग्रक्षत । ढालां-गज – गज ढाला, हाथी के शिर पर धारण कराया जाने वाला उपकरण । तोरण – विवाह के ग्रवसर पर कन्या के पिता के भवन के मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ट की खपच्चियों का बना हुग्रा मांगलिक उपकरण । मंगळाचार–मांगलिक गायन । चौंरी – विवाह मंडप का यज्ञ-कुण्ड । पेखियौ – देखा । चिगथै – चगताई वंश का,मुगल । पौढ़ियौ – शयन किया । चाव-उमंग । सत्र – शत्रु । पाथर–बिछा कर । रस – ग्रानन्द । डायजौ – दहेज ।

---

*कूंपावत कचरा राव कूंपा राठौड़ के पुत्र महेशदान का प्रपौत्र तथा जसवंत सादूलोत का पुत्र था । यह खुर्रम की ग्रोर से टूंस नदी पर युद्ध करने वाले प्रसिद्ध वीर भीम सीसोदिया की सेना का प्रमुख योद्धा था । इसी युद्ध में बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करता हुग्रा वीर-गति को प्राप्त हुग्रा । प्रस्तुत गीत में कविवर किसना ग्राढा ने दोनों बादशाहों में एक को दूल्हे के पक्ष का ग्रौर दूसरे कन्या पक्ष के व्यक्ति की तुलना करते हुए कचरा को दूल्हा बनाया है । सेना रूपी दुलहिन का वर्णन करके युद्धस्थल रूपी पर्यंङ्क पर कचरा सदैव के लिए शयन कर गया ।

८. राव जैतौ*

गीत पंखाळो १

नवलाख कटक नवलाख नेजाइत, गढ थरहरै वडा गजगाह ।
"जैता" तणा भुजा-डंड जोवा, "सूर" पधारे पहर सनाह ।।१।।

मुर-खट लाख मेछ दळ मोड़ै, सत्र हर चढत मंडोवर सीम ।
जोगिणि-पुरौ आइ इम जोवै, भुज राडौड तणा जुध-भीम ।।२।।

रिण-मल" हरौ मुवौ पग रोपै, धाइ विहंड असुरांण घणा ।
ऊभौ करै जोहयौ असपति, तांह भुजा-डंड "जैत" तणा ।।३।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—नेजाइत – भालाधारी, झंडाधारी । थरहरै – कंपायमान होता है । गज-गाह – युद्ध, योद्धा, वीर । सूर – बादशाह शूरशाह । सनाह – कवच । मुर – तीन । जोगिणिपुरौ – बादशाह, यवन । आइ – आकर । इम – इस प्रकार । भीम – जबरदस्त । रौ – वंशज । धाइ – प्रहार । विहंड – मार कर । असुरांण – बादशाह । ऊभौ – खड़ा । जोइयौ – देखा । असपति – बादशाह । तणा – के ।

---

*राव जैता प्रसिद्ध महावीर मंडोवर के अधिपति राव रिणमल के पुत्र अखैराज का पौत्र तथा पंचायण का पुत्र था । राव मालदेव के गिर्री समेल के युद्ध में यह वीर बड़ी बहादुरी के साथ बादशाह शेरशाह सूर की सेना से युद्ध करता हुआ राव कूंपा के साथ ही वीर-गति को प्राप्त हुआ । बादशाह शेरशाह इन वीरों से युद्ध करता हुआ विह्वल हो गया था । युद्ध से निवृत्त होने के पश्चात बादशाह ने इनकी लाशें देखनी चाहीं, जिनको बादशाह के सेनापति ने तलाश करके ला कर हाथियों के सहारे खड़ी कर दी । बादशाह इन को देखकर चकित हो गया और इनकी खूब प्रशंसा कर के कहा "खुदा का शुक्र है कि राव मालदेव इन वीरों के साथ नहीं था वर्ना जान से हाथ धोने पड़ते ।

ग्रंथ के मूलपाठ पृ० २९५ में राव जैता का नामोल्लेख है । गीत में वर्णित इतिहास ठीक है, परन्तु सेना की संख्या में कवि ने अतिशयोक्ति का सहारा लिया है ।"

गीत छोटो सांणोर २

डाळा अनि सुहड घणा डोलांणा, सार लहरी बाजती साह।
जड वह लाज महा-ध्रू "जैता", निभै-स थुड थरहरियौ नाह ॥१॥

झूंबै अवर नर कंपै झांबळी, वाढाळा खमि सकै न वाड।
ध्रु-वळा सरिखौ अचळ रहियौ, धूरि, रूंख वडौ रिणमल हर राउ ॥२॥

भड-अनि साख झळझळै भारथि, घाउ मैं कौरणं पेखि घणौ।
मूळ सुं नह डिगियौ राव मांरू, तर "जैतौ" "पंचायण" तणौ ॥३॥

सुर-खंड नाइक सुछळि सुरधरा, घाइ असुर दळ साजि घणा।
सु व्रख सुहाइ "जैत" अण संकित, तुड यौ कुटकै आप तणा ॥४॥

(अज्ञात)

६. जैतावत प्रथीराज राठौड़*

गीत छोटो सांणोर १

सिव आगै सगत पयंपै साचो, सार चढावीया घणा सत्र।
पत्र पांडवां न भरिया पूरा, "पीथळ" ताय पूरिया पत्र ॥१॥

शब्दार्थ—डाळा – बड़ी टहनी, वृक्ष की शाखा। सुहड – सुभट। अनि – अन्य, दूसरे। डोलांणा – हिल गये, दोलायमान हो गये। सार – तलवार। लहरी – वायु, झोंका, हवा। साह – बादशाह। महा-ध्रू – महान ध्रुव, अटल। जैता – राव जैतसिंह। निभै – निर्भय। थुड – तना। थरहरियौ – कंपायमान हुआ। नाह – नहीं। झूंबै – पकड़ते हैं। झांबली – टहनी। वाढ़ाळा – खड्गधारी, वीर। खमि – सहन कर। वाउ – वायु। ध्रुवळा – ध्रुव। सरिखौ – समान। धुरि – अगुआ। रिणमल हर – राव रिणमल का वंशज। साख – शाखा, टहनी। झळहळै – कांपते हैं। भारथि – युद्ध में। पेखि – देख कर। राव मारू – राठौड़ वीर। तर – तरु, वृक्ष। जैतो – राव जैता। तणौ – तनय, पुत्र। सुछळि – लिए। घाइ – प्रहार। तुड – तना।

पयंपै – कहती है। पत्र – खप्पर। पीथळ – पृथ्वीराज। पूरिया – पूर्ण किए।

---

*यह पूर्वोल्लिखित राव जैता का प्रथम पुत्र था। वि० सं० १६१० में राव वीरमदेव के पुत्र राव जयमल को राव माल देव ने जोधपुर बुलाया, परन्तु वह उपस्थित नहीं हुआ,

माहाभारथ "पीथल" मेड़तै, घट घट वाहे लोह घणै।
"अरजण" हूंत रह्या था आधा, ताय (पत्र) भरीया "जैत"-तणै ॥२॥
खपीया जठै अठारै खोयण, आधी रहीया तेण अवाह।
चौसट खपर पूरिया चळुअळ, हेकण कमध तणै हथवाह ॥३॥
सुरां नरां पतगरियौ समहर, हिंदू नमौ तुहाळा हाथ।
"सलखा" हरा तणै अत सहलां, सगत तणौ सो धायौ साथ ॥४॥

(अज्ञात)

गीत पंखाळो २*

रांणी म म रोय "प्रथै" रण रीधल, रण भाजे स तिके भड़ रोय।
घण-जूझा रिडमाल तणै घर, हुअै मरण जद मंगळ होय ॥१॥
"पीथल" तणी म कर दुख पचियत, दढ तज गया तीयां कर दुख।
आद-जुगाद "अखा" हर आगै, सार-मरण घण-घणौ सुख ॥२॥
म कर अदोह "जैतवत" मरतै, आया भाज-स रोय अयार।
आ कुळवाट सदा "अखै-राजां", चडतां कूंतां मंगळ-चार ॥३॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—जैत – राव जैता। खपीया – समाप्त होगये। अवाह – देवी का खप्पर। चळुअळ – रक्त, खून। हेकण – एक ही। हथवाह – प्रहार। पतगरियौ – प्रशंसा की। समहर – युद्ध। तुहाळा – तेरे। सगत – शक्ति, रणचंडी। तणौ – का। सो – सब। धायौ – तृप्त हुआ।

प्रथै – पृथ्वीराज। रण – युद्ध। रीधल – वीरगति प्राप्त होने पर। भाजे – भग जाते हैं। घण-जूझा – बहुत युद्ध करने वाले। तणै – के। घर – वंश। मंगळ – आनंद। पीथल – पृथ्वीराज जैतावत। पचियत – (?)। दढ – साहस, दृढता। तीयां – उनका। आद-जुगाद – परम्परा से। सार – तलवार। अदोह – दुख, संताप। जैतवत – राव जैता का पुत्र। अयार – शत्रु।

जिससे कुपित होकर राव मालदेव ने मेड़ते पर चढ़ाई कर दी। इसका मुकाबला करने को राव जेमल के प्रतिष्ठित और विश्वासपात्र वीर युद्धार्थ कटिबद्ध हुए। कुछ समय के बाद ही भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में राव मालदेव की ओर से जैमल की सेना से लड़ता हुआ इन तीन गीतों का चरित्र-नायक जैतावत पृथ्वीराज राठोड़ वीरगति को प्राप्त हुआ। प्रस्तुत गीतों में गीत नायक पृथ्वीराज के वीरतापूर्ण कार्यों का अनूठा वर्णन है।

*प्रस्तुत गीत में पृथ्वीराज जेतावत के वीरगति प्राप्त होने के पश्चात् उसके कुटुम्बियों को सान्त्वना देने तथा वीरगति प्राप्त होने के महत्व का दिग्दर्शन मात्र है।

१०. जैतावत भगवानदास राठौड़*

गीत-प्रहास सांणोर

भिड़णि जेम "भगवांन" असमांन अड़ियै त्रिगुट,
भार धरि भुजै गढ सनढ भेळै ।
दळां रा तिके रखपाळ न्याइ दाखिजै,
मुहरि वधि भड़ांहूं सार मेळै ॥१॥

अभनमा "प्रिथीमल" जिही धरियै अधणि,
आवळां - दळां वधि खळ ऊथाळै ।
भुजै बीड़ो तिकै बहसि मांगै भलां,
झूझ भर आवगो सीस झालै ॥२॥

जंगि जूपै धवळ जोध लागां जिही,
जिकै अरि लाख तिल मात जोवै ।
दळां सिरदार ताइ भलां कीजै दुझल,
हुवंतां दळां दळ - थंभ होवै ॥३॥

हैडवै थाट अविआट "जैता" हरै,
सारीखै मरण संसार सीधो ।

शब्दार्थ—भिड़णि – युद्ध । अड़ियै – स्पर्श किए हुए । त्रिगुट – भृकुट, शिर । भार – उत्तरदायित्व । सनढ – वीर । भेळै – लूट लेता है ? रखपाळ – रक्षक । दाखिजै – कहे जाते हैं । मुहरि – हरावल । भडांहूं – योद्धाओं से । सार-मेळै – युद्ध करते हैं । आवळा-दळां – सुसज्जित सेनाएं । खळ – शत्रु । ऊथाळै – गिरा देता है । बहसि – जोश में आकर । भलां – ठीक । झूझ – युद्ध । भर – उत्तरदायित्व । आवगो – पूर्ण, पूरा । दुझल – वीर । हुवंतां – भिड़ने पर । दळ-थंभ – सेना को रोकने वाला वीर । हैडवै – ढकेलता है । थाट – सेना । अविआट – वीर । जैता– राव जैता राठौड़ । हरै – वंशज ।

---

*भगवानदास जैतावत राठौड़ बाघसिंह का पुत्र बगड़ी का ठाकुर था । मूल ग्रंथ पृ० २२५ में इस वीर का नाम महाराजा गजसिंह के प्रमुख योद्धाओं की नामावली में आया है । गीत में प्रदर्शित वीरता का संबंध वि० सं० १६८५ में होने वाले युद्ध से है, जो सीसोदरी (फतैपुर सीकरी के निकट) के किले पर अधिकार करने के लिए हुआ था । इस युद्ध में यह वीर बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

"बाघ" रै रांम रा भींच त्युही वधै,
कमधि जुधि रमायण बियो कीधौ ।।४।।
(अज्ञात)

११. राठौड़ रामसिंह*

गीत बड़ो सांणोर

चढै धार अणियां अड़ै काज चकतां तणै, सूर सूरां तणी वणै भुज सीम ।
पोढणै समर बिच पांतरी पड़ंतां, "भीम" "रांमो" हुआ आंतरो "भीम" ।।१।।
गुडै पाखर गजां नौबतां गड-गड़ी, चौवड़ी भांज गज लोह चड़ियौ ।
लाख सूं अड़ै सीसोद पड़ियौ लड़ै, पाखती झड़ै राठौड़ पड़ियौ ।।२।।
खाग दहुंवै दळां आग लागी खिवण, लाग अंबर मरण बाग लीधौ ।
"अमर" रै घमजगर समर बिच ओरतां, "कमा"-रै बरोबर भली कीधी ।।३।।
अभंग तिल तिल हुओ छात आहुटतै, प्रथी असपत बखत कमध पायौ ।
चढै रथ रंभ इक सरग दिस चालियौ, एक आधा सरग हूंत आयौ ।।४।।
(चतुरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—भींच – योद्धा । कीधौ – किया ।

चकतां तणै – चगताई वंश के । अड़ै – भिड़ गये । पोढणै – शयन । पांतरी – बिछौना ? आंतरो – दूर, दूरी । पाखर – घोड़ा (कवचधारी) । चौवड़ी – चतुरंगिनी । अड़ै – युद्ध करके । पड़ियौ – वीरगति को प्राप्त हुआ । पाखती–पार्श्व में । झड़ै – युद्ध में कट कर । पड़ियौ – धराशायी हुआ । खिवण – चमकने लगी । अंबर – आकाश । लीधौ – ली । अमर – महाराणा अमरसिंह । घमजगर – भयंकर, घमासान । समर – युद्ध । ओरतां – झोंकने पर । कमा-रै – कर्मसेन के पुत्र । कीधी – की । अभंग – वीर । छात – राजा । आहुटतै – युद्ध करते हुए । असपत– बादशाह । रंभ – अप्सरा । हूंत – से ।

---

*राठौड़ रामसिंह जोधपुर के राव चन्द्रसेण के पुत्र उग्रसेण का पौत्र और कर्मसेन का पुत्र था । राव कर्मसेन और महाराजा गजसिंह के अनबन रही अतः राव कर्मसेन को मारवाड़ से खदेड़ कर बूंदी की ओर निकाल दिया था । राव कर्मसेन का विवाह मेवाड़ में महाराणा के कुटुम्ब में हुआ था । अतः उपर्युक्त वीर रामसिंह महाराणा का रिश्ते में भानजा लगता था । इसलिए यह भी कई वर्षों तक उदयपुर में रहा और उसने राजा भीम सीसोदिया के साथ कई युद्धों में भाग लिया । हाजीपुर पट्टन (टौंस नदी) में होने वाले युद्ध में भी वह भीम सीसोदिया की सेना में महाराजा गजसिंह के विरुद्ध घमासान युद्ध करता हुआ घायल हो गया । वीर म वीरगति को प्राप्त हुआ ।

१२. ऊहड अरजुनसिंह गोपालदासोत*

गीत छोटो सांणोर

पह चढ देस छळ मीर पलटतां, कुळवट तें पूछियो किसो ।
इहतो जिसो जनम लग "ऊहड", "अरजुण" अत सांपनो इसो ।।१।।

धरियैं अधरिण आप तन "धूहड", मिळियो सारै निभै मन ।
निहसै खसै ऊससे निग्रहै, वंछतो ताइ जुड़ियो विधन ।।२।।

"पाल" तणो उजवाळण परियां, घट तूटै आवाहै घाव ।
मिळियो दिनि धवळै राव-मारू, पह प्रीणतो तिसो परिजाव ।।३।।

शब्दार्थ—पह – राजा । छळ – लिए । मीर – शाहजादा । पूछियो – पूछा । किसो – कैसा । इहतो – इच्छा करता हुआ । लग – पर्यन्त, भर । सांपनो – प्राप्त किया । इसो – ऐसा । धूहड – राव धूहड़ का वंशज । सारै – तलवारों । निभै-मन – निर्भय वीर । निहसै – जोश करता है । खसै – युद्ध करता है । निग्रहै – युद्ध में । वंछतो – चाहता था । ताइ – वह, उस । जुड़ियो – प्राप्त हुआ । विधन–युद्ध । पाल – गोपालदास । तणो – पुत्र । उजवाळण – उज्ज्वल करने को । परियां–पूर्वजों । घट – शरीर । आवाहै – आवह में, युद्ध में । दिनि धवळै – दिन दहाड़े । राव-मारू – राठोड़ वीर । प्रीणतो – चाहता था । परिजाव – अवसर, मौका ।

उपर्युक्त गीत में कवि चतुरा मोतीसर ने राजा भीम सीसोदिया एवं राठौड़ रामसिंह की तुलना करते हुए भीमसिंह को स्वर्ग प्राप्ति का श्रेय दिया है और रामसिंह को स्वर्ग प्राप्ति से वंचित होने का वर्णन किया है। परन्तु, यहीं वीर धरमत के युद्ध में दारा शुकोह के पक्ष में रहता हुआ औरंगजेब और मुराद के विरुद्ध युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

*अर्जुनसिंह ऊहड शाखा का राठोड़ वीर कोढ़ने का ठाकुर था । वह महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वासपात्र व्यक्ति था। महाराजा गजसिंह ने जब भीम सीसोदिया से युद्ध करने के निमित्त प्रस्थान किया तब अपने सामंतों का एक बड़ा सम्मेलन किया था। उक्त सम्मेलन में मूल पुस्तक के पृ. १५१ पर भी इस वीर का उल्लेख है। भीम से युद्ध करने के समय महाराजा गजसिंह ने इस वीर को महाराजकुमार अमरसिंह व जसवंतसिंह का अभिभावक नियुक्त किया था। अतः यह उस समय जोधपुर में ही रहा। गीत में वर्णित इतिहास का ठीक-ठीक पता नहीं चल सका ।

जिमई "माल" अभिनमै "जैमल", हालियौ दिलि दळ-थंभ हुऔ।
"कोढणे" जळ चाढै नवकोटै, मोटै प्रबि सांपनो मुऔ ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—माल – जैतमाल ऊहड़, जो राव चंद्रसेण की सेना का एक प्रमुख योद्धा था। वह वि०सं० १६१६ सरवाड़ के बादशाही थाने पर अधिकार करते समय बादशाही सेना से मुकाबला करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। अभिनमै – पुत्र। जैमल – ऊहड़ नेतसी का पुत्र तथा ऊहड़ जैतमाल का पिता था। यह वीर भी अपने पुत्र जैतमाल के साथ ही बादशाही सेना से युद्ध करता हुआ वि०सं० १६३६ में वीरगति को प्राप्त हुआ। हालियौ– चलने पर। दळथंभ – सेना को रोकने वाला वीर। नवकोटै – राठौड़। मोटै – महान। प्रबि – पर्व, अवसर। सांपनो – प्राप्त होने पर।

परिशिष्ट ३

सीसोदियों के गीत

१ भीम सीसोदिया*

दूहो

अमर गरज्जै अमर-पुर, घर लज्जै जहांगीर ।
"भीमाजळ" भज्जै नहीं, भज्जै खुरम अधीर ॥

गीत छोटो सांणोर १*

खित लागा बाद बिन्है खूंदाळम, सूता अणी सनाहै साथ ।
थापै खुरम जेहडा थांणा, "भीम" करै तिहड़ा भाराथ ॥१॥

हूआ प्रवाडा हाथ हिंदुआं, असुर सिंघार हुअै आरांण ।
साह आलम मुकै साहिजादो, राइजादो थापलियो रांण ॥२॥

मंडियो वाद दिली मेवाड़ां, समहर तिको दिहाड़ै सींव ।
भवस न पैठा किसा भाखरां, भाखर किसै न विढियो "भींव" ॥३॥

आरंभ-रांम "अमर" घर ऊपर, लड़ै "अमर" छळतां अलंग ।
आवटियो घटियो असुरायण, खूंमांणै मांजियो खग ॥४॥

(अज्ञात)

शब्दार्थ—खित – पृथ्वी । बाद – युद्ध । बिन्है – दोनों । खूंदाळम – बादशाह । थापै – स्थापित करता है । जेहडा – जैसे । तेहडा – वैसे । भाराथ – युद्ध । प्रवाडा – युद्ध, कीर्ति के कार्य । असुर – यवन । सिंघार – संहार । आरांण – युद्ध । आलम – दुनिया । मुकै – भेजता है । राइजादो – राजपुत्र, (भीम) । थापलियो – पीठ ठोकी, उत्साहित किया । रांण – महाराणा । मंडियो – रचा गया । समहर – युद्ध । दिहाड़ै – दिन में । सींव – सीमा । भवस – यवन । विढियो – युद्ध किया । भींव – भीम सीसोदिया । आरंभ-रांम – राम के समान ही कार्य प्रारम्भ करने वाला । अमर – महाराणा अमरसिंह । आवटियो – कुढ़ कर या जल कर कम हो गया । असुरायण – बादशाह । खूंमांणै – रावल खुमान का वंशज भीम सीसोदिया । मांजियो– मार्जन किया । खग – तलवार ।

---

*भीम सीसोदिया महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था ।

*वि०सं० १६७० में बादशाह जहांगीर के आदेश से खुर्रम और अब्दुल्ला खां ने बड़ी भारी सेना से मेवाड़ राज्य पर आक्रमण किया । खुर्रम विजय प्राप्त करता हुआ जहां-तहां मेवाड़ में बादशाही चौकियां स्थापित करता था, वीर भीम सीसोदिया खुर्रम की सेना का पीछा करता हुआ बादशाही थानों को उठा देता था । प्रस्तुत गीत में भीम का बादशाही चौकियों को नष्ट करने तथा उठा देने का किसी समसामयिक कवि ने उपर्युक्त गीत में बड़ा ़न्दर वर्णन किया है ।

गीत बडो सांणोर २

इसा रूप सूं भीम खग वाहतो आवियो,
बिखम भारत तणी वणी वेळा।
भांज दळ सैद जैसींघ सू भेळिया,
भांज गजसींघ जैसींघ भेळा ॥१॥

खत्री-वट प्रगट "अमरेस" रौ खेलतौ,
ठेलतौ थाट रहिया न कूं ठाह।
मार तुरकां दिया सार कमधां मही,
मार कमधां दिया कुरमां माह ॥२॥

असंख दळ दिली रा भुजां उछांडतौ,
सबळ भड़ "भीम" दीठौ सबांही।
घेच बछ बारहौ मंडोवर घातिया,
मंडोवर घेच आंबेर मांही ॥३॥

"भीम" "सांगा" हरौ विखंड करतौ भड़ां,
आवरत सावरत खगां उभाळौ।
पछै असुरै सुरै घणू माथौ पटक,
कटक भर मारियौ नीठ काळौ ॥४॥

(चतरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—वाहतो – चलाता हुआ, वार करता हुआ। आवियो – आया। बिखम– विषम, भयंकर। भारत – युद्ध। तणी – की। वणी – हुई। वेळा – समय। सैद – सैयद, यवन, मुसलमान। भेळिया – मिला दिये। भेळा – साथ। ठेलतौ– धकेलता हुआ। थाट – सेना। ठाह – ज्ञान। कमधां – राठौड़ों। मही – में। कुरमां – कछवाहों। माह – में। उछांडतौ – पराजित करता हुआ। दीठौ – देखा। घेच – खदेड़ कर। घातिया – मिला दिये। मांही – में। सांगा – महाराणा संग्राम-सिंह। हरौ – वंशज। विखंड – संहार, मार-काट। भड़ां – योद्धाओं। आवरत – संहार, ध्वंस। सावरत – लाल। उभाळौ – (?)। पछै – बाद में। असुरै – यवनों। सुरै – हिंदुओं माथो-पटक – बहुत प्रयत्न करके। नीठ–कठिनता से। मारियौ – मार डाला। काळौ – वीर।

गीत पंखाळो ३

भाखै धिन मरण तुहाळो "भीमा", मुडि संचरता भाग मिठै ।
जळ झूलियां मिटै ग्रभ जेथी, तूं धारा झीलियौ तठै ॥१॥
अंत अखिआत वात "अमरा" सुत, अवरै नरे न होय आंन ।
वार सनांन जठै जगि वांछै, सार तठै तै कियौ सनांन ॥२॥
सीसोदिया सुभ्रित कीत सारीख, घण दळ हुओ वहंतै घाय ।
तातै लोह छोह गंगा तट, मंजन कियौ महा-रिण माय ॥३॥

(चतरौ मोतीसर)

गीत छोटो-साणोर ४

जुग चार हुआ मो भारत जोतां, अरक कहै आ वात अथाह ।
"भीम" तणौ घड़ भांजै भवसां, माथौ साबैसै रण मांह ॥१॥
सीसोदिया तणौ सूरापण, भांण गयण-पत साख भरै ।
दळ अफड़ै दळां दहुं दुजड़ी, कमळ कळह बाखांण करै ॥२॥
विढतौ "भीम" साथियां वधतौ, साखी सूर उडंतै सास ।
घड़ वढियौ घड़च्छै अरि धारां, सिर पड़ियौ आखै साबास ॥३॥
अै बातां अखिआत "अमरावत", कैरवां पांडवां जेम कर ।
पड़तौ धड़ पाड़तौ पंचाहर, सिव बींधियौ बोलतौ सर ॥४॥

(कल्यांणदास महड़ू)

शब्दार्थ—धिन – धन्य । तुहाळो – तेरा । मुडि – मोड खाने पर । संचरता – गमन करने पर । भाग – दुष्कर्म । मिठै – नाश होते हैं । झूलियां – स्नान करने पर । झीलियौ – स्नान किया । धारा – तलवार । तठै – वहां । अखिआत – अद्भुत । वार– वारि, जल । सनांन – स्नान । जठै – जहां पर । जगि – संसार में । वांछै – इच्छा करते हैं । सार – तलवार । तैं – तूने । मंजन – स्नान ।

अरक – सूर्य । अथाह – अद्भुत, विचित्र । भवसां – यवनों । माथौ – मस्तक । साबासै – धन्य धन्य करता है । गयण-पत – गगनपति, सूर्य । साख भरै – साक्षी देता है । दळ – शरीर । अफड़ै – युद्ध करता है । दळां – सेनाओं । दुहुं – दोनों । दुजड़ी – तलवार । कमळ – मुख । कळह – युद्ध । बाखांण – प्रशंसा । विढतौ – युद्ध करता हुआ । साथियां – साथ वालों । वधतौ – विशेष । धड़ – शरीर । वढियौ – कटा हुआ । घड़च्छै – काटता है, मारता है । अरि – शत्रु । धारां – तलवारों । आखै – कहता है । साबास – वाह वाह । पाड़तौ – मारता हुआ । पंचाहर – ? बींधियौ – बींधा ।

गीत वडो सांणोर ५*

प्रळै होवै भड़ भिड़ज रिण-ताळ लेखा पखै,
खत्रीपत भीम आवाहतै खाग।
गिरंद वत राखियां तणी परियड़ी गज,
नीजूड़ै सूंड पांखवा-नाग ॥१॥

अरि चंचळ घणा लाखां गण आवटै,
"अमर" रै खाग आवाहतै एम।
ढाळिया सिखर जेम हसती ढहै,
तूंड तूटै वहै परी रह तेम ॥२॥

पिसण हैमर कचर कीधा केलपुरै,
निबह खग पछटतै बळव-नांमी।
गिरंद वत राखिया पांखिया-भुयंग पत,
गज-घड़ां पोगरां गयण-गांमी ॥३॥

मिटतै "खुरम" "भीमेण" व्रत दिन मछर,
वीढै बीछोड़िया खाग बाहै।
पड़ै गज सबळ-घड मंडळ ऊपरा,
मिळै गज-कमळ वाउ-मंडळ मांहै ॥४॥

(चतरौ मोतीस)

शब्दार्थ—भिड़ज – घोड़ा। रिण-ताळ – युद्ध, युद्ध-स्थल। पखै – बिना। गिरंद – पर्वत। वत – समान। नीजूड़ै – कटकर दूर होती है। पांखवा-नाग – पंखों वाले सर्प। चंचळ – घोड़ा। ढाळिया – गिराए। ढहै – गिर गये, गिर पड़ते हैं। पिसण – शत्रु। हैमर – घोड़ा। कचर – ध्वंस। केलपुरै – सीसोदिए भीम। पछटतै – प्रहार करते हुए। बळव-नांमी – भीम। पोगरां – सूंडों। गज-कमळ – हाथियों के मुख। वाउ-मंडळ – वायु-मंडल।

---

*गीत नं० २ से गीत नं० ५ तक में टौंस नदी के तट पर पटना के पास हाजीपुर के मैदान में होने वाले शाहजादा परवेज तथा खुर्रम के युद्ध के संबंध में भीम सीसोदिया के विषय का विस्तृत तथा काव्यात्मक बड़ा सुन्दर वर्णन है।

२. मानसिंह सकतावत

गीत छोटो सांणोर १*

मेवाड़ थकां पूरब गढ माल्है, अइयो "सगत-हरा" उनमांन।
जग परदेस जीववा जावै, मरवा गयो करारो 'मांन' ॥१॥

मांटीपणो तुहाळो "मांना", रहियो घणूं घणां दिन रोस।
कोस हेक मरवा जावै कुण, कवळो गयो हजारां कोस ॥२॥

मानसींघ धन धन मेवाड़ा, अत प्रब "भीम" तणो अवसांण।
जोळा हुऐ घणा नर जीवा, भेळो हुग्रो समो-भ्रम "भांण" ॥३॥

पोह वदियो "जांगीर पातसा", कहीयो धिन्न रांणै "करण"।
ऊगतां सूरज जिम ऊगो, मानसींग वाळो मरण ॥४॥

(दुरसौ आढौ)

गीत सोरठियो २.

सूरा बहसिया कारिमा सूसिया, नहसिया नीसांण।
"मांनड़ा" तो जस मेलियो, आज रो अवसांण ॥१॥

जाळ खाधो साहिजादे, ढाल गज तूं ढाहि।
"मांनड़ा" दळ तणा मंडण, मांडि पग रिण मांही ॥२॥

शब्दार्थ—थकां – होते हुए। माल्है – गया। अइयो – अरे, हे। सगत – महाराणा प्रतापसिंह का छोटा भाई शक्तिसिंह। हरा – वंशज। उनमांन – अनुमान। करारो – वीर। मांन – मानसिंह शक्तावत। मांटीपणो – बहादुरी, पराक्रम। तुहाळो – तेरा। घणू – बहुत। कवळो – वीर। मेवाड़ा – मेवाड़ का, सीसोदिया वंश का। अत – अति, महान। प्रब – पर्व, महोत्सव। जोळा – पृथक् दूर। भेळो – साथ, शामिल। समो-भ्रम – पुत्र। भांण – मानसिंह शक्तावत का पिता। पोह–वीर। वदियो – कहा। जांगीर पातसा – बादशाह जहांगीर। करण – महाराणा करणसिंह।

सूरा – वीर। बहसिया – जोश में आये। कारिमा – कायर। सूसिया–भयभीत हुए। नहसिया – बजे। नीसांण – नगाड़ा। मांनड़ा – हे मानसिंह। मेलियो–भेजा। जाळ – कपट। दळ – सेना। तणा – का। मडण – आभूषण।

---

*गीत नं० १ से गीत नं० ३ का नायक मानसिंह शक्तावत महाराणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिंह का पौत्र तथा भाण शक्तावत का पुत्र था। प्रसिद्ध वीर भीम सीसोदिया का घनिष्ठ मित्र था तथा भीम सीसोदिया के साथ ही हाजीपुर पट्टन के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। विशेष विवरण के लिए ग्रंथसार देखें।

खुरम खां दराब खीसिया, ब्रहसिया ब्रांबाट ।
श्रवियाट दूजा श्रचळा, थोभियो गज-थाट ।।३।।

फिरै मुहडै गजां फौजां, धजां नेजां ढाहि ।
"भांण-रो" गो गयण भेदे, "मांन" हरी-पुर मांहि ।।४।।

(जैतो महियारियो)

गीत प्रहास सांणोर ३.

समंद पूछियो गंग सूं रूप पैखे सुजळ, वहै जमना किसूं नवल वांनै ।
ऊजळी धार पतसाह घड़ श्राछटै, मेळियो रातड़ो नीर "मांनै" ।।१।।

महोदध पूछियो कहो मो सहसमुख, जमन की नवो सणगार जुड़ियो ।
"भांण"-रै लोह सुरतांण घड़ भेळियो, चळोवळ पंड मो पूर चडियो ।।२।।

थागियळ पूछियो भणो भागीरथो, सांवळो नीरज किसो समोहां ।
साहरी फौज "सगता" हरै सींघळी, लाल रंग चढियो मार लोहां ।।३।।

जोय जमना जुगत रीभियो समंद जळ, विगत हेकण बडी गंग वाती ।
हिंदवै-राव श्रोताळियो लोह हद, रगत मेछां तणो नदी राती ।।४।।

(चतरो मोतीसर)

शब्दार्थ—ब्रहसिया – बजे । ब्रांबाट – नगाड़ा । श्रवियाट – वीर । थोभियो – रोका । गज-थाट – हाथियों की सेना । भांण – मानसिंह के पिता का नाम । हरी-पुर – विष्णुलोक ।

पैखे – देखकर । नवळ – नवीन, नया । वांनै – पहनावा, पोशाक । घड़–सेना । श्राछटै – मार कर । मेळियो – मिला दिया । रातड़ो – लाल, रक्त । मांनै – मानसिंह सीसोदिया । महोदध-महोदधि, समुद्र । भणो – कहो । सांवळो–श्याम । समोहां–मोहित करने वाला । साहरी – बादशाह की । सगता – शक्तिसिंह । हरै – वंशज । घळी – वीर । जोय – देख कर, समझ कर । जुगत – युक्ति । रीभियो – प्रसन्न हुआ । विगत – वृत्तान्त । हेकण – एक । हिंदवै-राव-हिंदू राजा । श्रोताळियो – प्रहार किया । लोह – श्रस्त्र-शस्त्र । हद – बहुत । रगत – रक्त, खून । मेछां – यवनों, म्लेच्छों । तणो – के ।

३. गोकलदास सकतावत*

गीत छोटो सांणोर १

"भीमाजळ" मोहोर झेलिया भारत, घणें पेसि गज-बोह घणे ।
लागा "मोकळ"-तणे जे लोहड़, ताह दूखे भागिली तणे ॥१॥

बीजू - झळां खळां बीहरतो, मेलिया घाव पडंतां मार ।
भंजिया अंग तणा भांणावत, साले पहां तजिया त्यां सार ॥२॥

"सगता"-हरा तणे समरांगण, वणिया तन ह्वै खंड विहंड ।
रूक न लागा तियां रावतां, पीड़ा मिटै नह तियां पिंड ॥३॥

कूंत बांण केवांण कटारी, केलपुरै खमिया कंठीर ।
राजा मेल्हे गया तिके रण, साजा नह ह्वै तियां सरीर ॥४॥

(चतरो मोतीसर)

शब्दार्थ—भीमाजळ – भीम सीसोदिया । मोहोर – हरावल, पूर्व । झेलिया – सम्हाला, सहन किया । गज-बोह – गज-व्यूह, हाथी-दल । लोहड़ – शस्त्र प्रहार । ताह – वे । भागिली – भग जाने वाला, कायर । बीजू-झळां – तलवारां । खळां – शत्रुओं । बीहरतो – मारता हुआ । मेलिया – लगाये । हरा – वंशज । समरांगण– युद्ध-स्थल । रूक – तलवार । रावतां – योद्धाओं । तियां – उन । कूंत – भाला । केवांण – तलवार । केलपुरै – सीसोदिये । खमिया – सहन किये । कंठीर – वीर । मेल्हे – छोड़कर । रण – युद्ध । साजा – स्वस्थ ।

*यह वीर गोकुलदास महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का पौत्र, भाण का पुत्र तथा पूर्वोल्लिखित मानसिंह का छोटा भाई था। जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह का दोहिता था । भीम सीसोदिया के साथ यह युद्ध में घायल हो गया था । महाराजा गजसिंह युद्ध-स्थल से इसे उठा कर अपनी सेना में ले आये और उन्होंने इसकी चिकित्सा का प्रबन्ध किया । इसके पूर्ण स्वस्थ होने पर इसे जागीर भी प्रदान की ।

परिशिष्ट ४

ग्रंथ में वर्णित अन्य वीरों के गीत

१. राव रतनसिंह हाडौ (बूंदी)

गीत छुड़व सांणोर*

असिमर आचार भार आवरियै, मेर प्रमांणै कीयै मन।
हींदूकार तणौ ध्रम हाडा, रहीयौ पै आवै "रतन" ॥१॥

पिडि पतसाह भांजिजै पाधरि, सरणै पिडि गाहिजै सुज।
तो सुजाउ वेद मै भाखित, भुजै विराजै इसा भुज ॥२॥

दळां सनाह सगाह दिलीवै, वाह वाह वाधै वयण।
रज छाडियौ बियै राई-तनि, रज ताइ वपि छाजै "रयण" ॥३॥

कळिया असुर तापि अनिकारां, महंगि विलागै वडिम नित।
सबदी वधै कळोधर "सुरिजन", कमळ जिहीं चह्वांण क्रत ॥४॥

शब्दार्थ—असिमर – तलवार। आचार – दान, वदान्यता। पिडि – युद्ध। पाधरि – खुला मैदान। भाखित – कहा गया है। दिलीवै – बादशाह। वाह वाह – धन्य-धन्य, शाबाश। बाधै – बढते हैं। वयण – वचन। रज – क्षत्रियत्व, शौर्य। छाडियौ – छोड़ दिया। बियै – दूसरे। राइ-तनि – राजाओं। ताइ–तेरे। वपि–शरीर में। छाजै – शोभित होता है। रयण – रतनसिंह। कळिया – फँस गये। असुर – यवन। तापि – भय, आतंक। अनिकारां – वीरों। नहंगि – आकाश में। विलागै – लगता है। वडिम – बड़ा। कळोधर – वंशज, कुल को धारण करने वाला।

---

*प्रस्तुत गीत में राव रतन हाडा के शौर्य और पराक्रम का वर्णन मात्र है।

२. मिर्जा राजा जयसिंह महासिंघोत कछवाह

गीत वडो सांणोर*

लड़े मुड़ौ पतिसाह, विमुहा खडौ लसकरां,
रिण पड़ौ घणी धारां तणी रीठ ।
किम फिरै पीठ जैसिंघ कूरम तणी,
प्रिथी चौ भार कूरम तणी पीठ ।।१।।

लोप हिंदवांण पाताळ अणलोपियां,
कोप असुरां सुरां घणौ करतां ।
निज बिन्है मोर फेरै नहीं परम-अंस,
फुरै पुड धरा चौ मोर फिरतां ।।२।।

तदि हुवौ "मांन" हर अडिग "माहव" तणौ,
साह सेनाह जदि पड़े सांसै ।
कछव कछवाह वांसौ पलट करै किम,
वसुह चौ मांड बिहुं भड़ां वांसै ।।३।।

अडग हिंदवांण परसाद तीरथ अनंत,
सहू आलम कलम हुआ साखो ।
कूरमां बिहू रण पूठ अण-फेर करि,
रैंण ऊथल-पथल हुती राखी ।।४।।
(पूरौ महियारियौ)

शब्दार्थ—विमुहा – उलटा, विमुख । खडौ – चलाओ । लसकरां – सेनाओं । तणी – को । रीठ – प्रहार । हिंदवांण – हिन्दुस्तान । बिन्है – दोनों । मोर – पीठ । परम-अंश – कच्छपावतार । फुरै – डोल जाता है । पुड – तह, प्रत । तदि– तब । तणौ – पुत्र । जदि – जब । सांसै – संशय में । कछव – कच्छपावतार । वांसौ – पीठ । वसुह – पृथ्वी, संसार । मांड – रचना । बिहुं – दोनों । भडां – योद्धाओं । वांसै – पीठ पर । परसाद – देवमंदिर । सहू – सब । साखो – साक्षी । रैंण – पृथ्वी ।

---

*इस गीत में भी मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम के शौर्य पराक्रम का ही बड़ा सुन्दर वर्णन है ।

३. जोगीदास भाटी

गीत वेलियो सांणोर*

गजदंतां परै फूटै गज केसरि, गज चै कमळ पडंतै गाढ।
जादव मांहि थकै जमदाढां, "जोगे" आ वाही जमदाढ ॥१॥

गोइंद - उत दाखवै गाढिम, दंत दूवा सूं थकै दळ।
काळ तणै वसि थियै कटारी, काळ तणै वाही कमळ ॥२॥

भांगै डील भलौ राय भाटी, कुंजर थकै भयंकर काळ।
आयै मुख रांणा मुख अंतर, मुख जम तणै जड़ी प्रत माळ ॥३॥

आधंतर काढै अणियाळी, कुंभाथळ वाही कर क्रोध।
अंतक सूं "जोगै" जिम आगै, जुध करि मुवौ नहीं कोई जोध ॥४॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—कमळ – मस्तक। मांहि – भीतर, में। थकै – होते हुए। जमदाढां– यमराज के दांत। जमदाढ – कटार। दाखवै – प्रकट करता है, बताता है। गाढिम– बल, शक्ति। दूवा – दो। दळ – शरीर। भांगै – तोड़ कर। डील – शरीर। प्रत माळ – कटार। आधंतर – आकाश के मध्य। अणियाळी – कटार। अंतक – यमराज। जोध – वीर, योद्धा।

---

*यह जोगीदास भाटी गोइंददास भाटी का पुत्र था। इसको महाराजा सूरसिंहजी ने बींजवाड़िया ग्राम जागीर में दिया था। वि०सं० १६६८ में आंबेर के राजा मानसिंह कछवाह के नौकरों ने किसी कारणवश मस्त हाथी को जोगीदास पर छोड़ दिया। उस समय जोगीदास घोड़े पर सवार था। मस्त हाथी ने जोगीदास को घोड़े पर से सूंड में पकड़ कर अपने मुख में ले लिया। वीर जोगीदास के पास कटार थी, उसने भी कटार के कई वार हाथी के कुंभस्थल पर किये, जिससे हाथी मर गया; परन्तु हाथी ने इसको इस प्रकार से अपने दांतों में दबोच लिया था कि उस के मुख से छूटने पर भी यह वीर जीवित नहीं रहा। उक्त घटना संबंधी गीत में ग्रंथ-रचयिता महाकवि केसोदास गाडण ने जोगीदास की बहादुरी का वर्णन किया है।

४. सादूल पंवार

गीत पंखाळो*

करि लेखणि कूंत पुडि करि कागद, मस करि मांस रुधर करि मूळ ।
मांडै मंडोवर मेड़ता माथै, सबळा खत लिखिया "सादूळ" ॥१॥

कलम छड़ियाळ समर करि पाठौ, घण खळ सुद्रब आखरां घाव ।
साखां तेरह सम्है समरि करि, सल्है वैर धरि "माल" सुजाव ॥२॥

लेख घणौ साबळां लिखांणौ, अंग असि मसि करि दैत अरि ।
धार पुरा लगि कटि धूहड़, कळिनांमौ राखियौ करि ॥३॥

शब्दार्थ—मस – मसि, स्याही । मांडै – लिखकर । खत – पत्र । छड़ियाळ – भाला । समर – युद्धस्थल । पाठौ – कागज । साखां तेरह – राठौडों की तेरह शाखाएं । सुजाव – पुत्र । असि – तलवार । मसि – स्याही । धूहड़ – राव धूहड़ के वंशज । कळिनांमौ – युद्ध का लेख ।

*सादूल-पंवार संबंधी विवरण—भूमिका में देखें ।